रायबहादुर बुधसिंहजी दुधेरिया

जैनधर्मासघुके आश्रयदाता

जैनधर्मसिंधु.

यथामती संशोधन करके

श्रीपूज्याचार्य श्रीनरपतिचंद्र सूरीश्वर

जीकी आज्ञानुसार

रायबहादुर बाबु साहब बुधसिंघजीकी

सहायतासे

संग्रह और प्रकाशकर्त्ता.

यति मनसुखलाल नेमिचंद्रजीने

मुंबई नगरमें

निर्णयसागर प्रेसमें छापकर प्रसिद्ध किया

वीर संवत् २४३४ विक्रम संवत १९६४ सने १९०८

सब हक स्वाधीन

मिलनेका पत्ता

मुंबई

यतिज्ञानचन्द्रजी ठि पायधोणी श्रीशांतिनाथजी जैन मंदिर जैनपत्र ओफीस. ठि कष्टमहाल्स रोड मुंबई

सेठ कस्तुरचंद नानचंद ठि आनाकाटा

अहमदनगर

सेठ वाडीलालहाथीभाई नवी कापडमारकेट.

बालापुर

श्रीजिनमंडली ओफीस नवादेरासर

अर्पण पत्रिका.

रायबहादूर बाबु साहब श्रीयुत बुधसिंघजी डुधेरिया

जो कि अजी मुर्शिदाबादातर्गत अजिमगजमें रहते हैं इनोके आश्रयसें यह पुस्तक प्रकाशित हुवा इस लिए उक्त महोदयका संक्षिप्त जीवन वृत्तात प्रकाशित करनेकी आवश्यकता देखतें हैं

बाबुसाहबके पूर्व पुरषें हरजीमलजी डुधेरिया पहिले मारवाडसे मुर्शिदाबादमे व्यापारके लिए आय बसे थे हरजीमलके पुत्र सवाइसिंघजी और तिनके कुलदीपक सुपुत्र हरखचदजी जो की अपने आश्रय दाता महोदयके पिता थे उन महोदयने व्यापार और जागिरदारीके व्योपार में कितनाक न्यायोपार्जित द्रव्य उपार्जन किया

बाबु साहेब हरखचदजी सने १८६२ में स्वर्गस्थ हुये जब उनको सर्वलोग परिपूर्ण श्रीमत कहते थे और वो अछी नामदारी धारण करतेथे वे महोदय अपने पीछाडी रायबहादुर श्रीयुत बुधसिंघजी और श्रीयुत जिसनसिंघजी डुधेरिया दो सुपुत्रें रख गए थे

यह दोनो सुपुत्रें अपने पिताके मरण समय लघु (बाल्यावस्थामे) थे उन समय अपने पिताकी लक्ष्मी और वस्त्रारी व्यापार उन दोनोके हाथमे आया यह दोनों महोदयें ज्यों ज्यों बढते गए त्यों त्यों ऐक्य और सलाह सपसें रहते थके द्वितीयाके चंद्रवत् अपना अभ्युदयमें और बलबुद्धी पराक्रममें बढते गए- राय बहादुर बुधसिंघजी विनयवान् धैर्यवान् विवेकी और मिलनसार व उद्योगी हुवे

रायबहादुर बाबु बिसनसिंघजी बचपन सेंहि व्यापारी लाइनकी अद्भुत शक्ती धारक जिनोमें बुद्धी कला कुशलता, दृढता परिपूर्ण थी सर्वजनोसे हाजिर जवाबी और विशेषकर बहुत परिणाम दर्शी थे

उनोने धीरधारका धधा बढाया और कलकत्ता, सिराजगज, माइमेनसींग, जगीपोर, अजीमगजमें बेङ्कें खोली

यह बेङ्कोंमें बेङ्करोके अथाग परिश्रमसे अथाग विश्वास आनेसें फतेहमद रीतीसे कार्यवाही चलने लगी रहते रहते जमीनदारो व जागीरदारोकों धनधीरनेका कार्य सिरु किया जिस्के परिणामसे दोना महोदयें बडे जागीरदार होगए

मुर्शीदाबाद, माइमेनसींग, बीरजुम, नदीया, पमीकोट, पूरणीया, दिनाजपुर, राजसाई, मालदा, जागलपुर, कुमका विगरह ग्रामोंकी जमीनके मालेक हुवे

दोनो बधु मात्र द्रव्य सपादान करनेमेंहि प्रवर्त्ते थे एसा नही पर उनके साथ उनोका पुण्यकर्ममेंभी प्रयत्न चालु था

दीन दुःखी और हजारा गरब व लाचारोंकें लिए अन्नक्षेत्र स्थापन कीये जिस्की कार्कीदी अभीभी फलाफल फलकती है

(जैनमदिरे, उपाश्रयें, धर्मस्थानेमें बहुत धन व्यय कीया जिनकी विगत)

प्रथमत अपनी जन्मभूमी मुर्शीदाबादमें श्रीचिंतामणजी, नेमिश्वरजी, श्रीशामलाजी, अष्टापदजी, दादाजीकें मदीरोंका जीर्णोद्धार कराया

नमीश्वरजीके मदिरमें दो रत्नकी प्रतिमा है और सिद्धचक्रजीका गट्टा है सो भी उक्त महोदयने स्थापित किये है

अजीमगजसे ७ मील अतरसे कासम बजारमे श्रीनेमिनाथजीका मदिरकाभी जीर्णोद्धार कराया जिसमे रत्नकी प्रतिमाजी विशेष दर्शनके लायक है

रायबहादुरजीकी सखावत इकिले बंगालेमेंही नही है परं यत्र यत्र उनोकों आवश्यकीय लगा उहा धर्म धन खर्चनेमेंभी पीछी पानी भरी नही

सुरत पासके कतार गामके जीर्णोद्धारके वास्तेभी बहुत प्रशंसा पात्र मदद किई

क्षत्रीयकुंड और सुविधिनाथ भगवंतके चयन, जन्म, ज्ञान, कल्याणकवाले काकदीनगरीके तीर्थमे शीखरबंधी मंदीर बनाये

महावीर स्वामीकी निर्वाणभूमी पावापुरीमें और जहा बीस तीर्थंकर मोक्ष पधारेथे एसे श्रीसमेत शिखरजी तीर्थमें जानेके स्टेसन गरेडीमेभी मंदिरजी बनाया

जंगीपुरमेंभी नया मंदीर बनाया जाता है और मारवाड, राजपुताना, अजीमगंज, शीखरजी, पावापुरी, काकंदी, राणीगाम, आबुराज, उपरात मुबइमेभी जैन यात्रालुयोंको आश्रयदायी धर्मशालायें उक्त महोदयकी फलाफल अचल कीर्ति स्वरूप सुशोभित है

तीर्थाधिराज श्रीशत्रुंजय तीर्थकी तलहटीमें सदावत दीया जाता है और सिद्धाचलजी, तलाजा, मला, प्रमुख कीतनेहि स्थानोंपर उक्त महोदयके नामकी जैनपाठशालायें स्थापित होके ज्ञानवृद्धीका उद्योगभी सिर किया गया है

तदुपरांत उक्त महोदयने श्रीसिद्धाचलजी, पावापुरी, समेत शिखरजी, अयोध्याजी विगेरह स्थानोपर तीर्थयात्रा लेजानेका श्रीसंघभी निकालके संघवी तिलकभी करायेथे

उक्त महोदय एसे पुण्य प्रतापी है की जिनकी संपूर्ण प्रशंसा लिखनेमें कलमकी ताकत नही है

उक्त महोदयने १९०४ में बडोदे वाली तीसरी जैन श्वेतांबर कॉनफरन्सके प्रमुख होके समस्त जैनोमे एक अग्रेसरपद लियाथा

उक्त महोदयके धार्मिक और सार्वजनीक हितकार्यकी उदार

वृत्तिकी प्रतिष्ठा बिजलीकी माफक प्रकाशक होती रही जिनका प्रत्यक्ष दृष्टांत यह है की सने १८८८ ता २ जानेवारीके रोज बंगालाके सरकारने अत्यंत प्रसन्न चित्त होके रायबहादुरका मानवंता खिताब समर्पित कीया और मुर्शीदाबाद लालबागकी कचेरीमें ओनररी मेजीष्ट्रेटका मानवंता होदा इनायत किया और अपनी बख्तावर मर्हुम श्रीमती महाराणीकी कायमकुनीलीकि यादगारीके प्रसंगमे ता २० मी जुन स १९९७ के रोज बादशाही मानका "खरीता" दीया गया था तैसेंहि ता १ ली जानेवारी स १९०३ के रोज अपने नामदार शेहेनशाह सातवे एडवरने हिंदुस्थानकी बादशाही स्वीकारी जिस्की यादगारीमें देहली दरबारके भव्य समारंभके समय रायबहादुरकी उदारता और अपने लोकोपयोगी सार्वजनीक हितकार्यकी पीछानमे दुसरी बार "खरीत्ता" दिया गया था यह राजमान होदेकोभी अछी तोरसें दीपातेहें

इस दरम्यान सने १८९७ में दोनो भाइयोने सलाह सपसे अपना अपना व्यापार भिन्नभिन्न चलाना सिरु किया हे पर जमीन जागीरोंका हिस्सा ज्योंका त्यों रक्खा हे

यद्यपि व्यापारादि कार्य भिन्नथे तथापि पारस्परीय सलाह सपसें अभिन्नता समानहि प्रवर्तनथा

सने १८९४ मे रायबहादुर बाबु बिसनचंदजी अपनी पीछे १४ वर्षकी उमरके राजा विजयसिंघजी नामक कुमारको छोडके यह फानी दुनियाको छोड गएथे

श्रीयुत बाबु बिसनचंदजीके गएबाद अपने छोटे भतीजे और उनकी बडी दोलत समालनेका और जोखमदारीका कार्य उक्त महोदयके सिरपर आय पडाथा

कायदेकी रीतसेंभी मुर्शीदाबाद जिल्ले जज्जकी कोर्टसेंभीउक्त

महोदयही राजा विजयसिंघजी और उनकी दोलतके रक्षक निमाये गएथे.

उक्त महोदयने अपनी बहादुरी और चालाकीसे उस काममें अपनी फर्ज बहुतहि अछी तरहसे बजायके उनकी रूहीमें अधिकता करी और राजा विजयसिंघजीको इंग्लिश, बंगाली, जैनधर्म प्रमुखकी अछी केलवणी देके आगे बढाये

बाबु विजयसिंघजीकों सने १९०० मे ता २२ नीसनरके रोज लायक उमरवान होनेसे उनकी मिलकतका कबजा सूपरत कर दीया

अछी जैसी आशायी वेसेहि बाबु विजयसिंघजी एक युवक बुद्धीमान् पराक्रमी पुरुष हुए

बाबु विजयसिंघजीका स्वभाव उनके पिताके माफक सद्गुणी व परोपकारी और धर्मकार्यमेंजी बहुत सतत प्रयत्नशील हुवा

उपरोक्त दोनो महोदयोंने पुण्यानुबंधी प्राग्भार पुण्यके उदयसे जो जो आवश्यकीय कार्य किये है जिनका पूरेपुरा वर्णन करनेमें हमारी कलमको पूरे तोरके शब्दकोश देखनेका अवसर देखना पडता है

हमारे लोंके गछके श्रीमत श्रावक गणमे देशणोकवाले रायबहादुर चांदमलजी ढढा, रींयावाले राय सेठजी चादमलजी, अजमेरवाले रायबाहादुर सेठजी शोभागमलजी ढढा, जयपुरवाले राजमान्य सेठजी लक्ष्मीचदजी व गुलाबचदजीढढा,एम ए रायबहादुर गणपतसिंघजी दुगड, रायबहादुर महाराज बहादुर सिंघजी दुगड,रायबहादुर नरपतसिंघजी दुगड, राय लक्ष्मीपति सिंघजी छत्रसिंघजी दुगड, रायबहादुर शताबचदजी नाहार विगरह विगरह पुण्यवतोने यद्यपि अनेकानेक धार्मिक व्यवहारीक कार्यो करके जैन धर्मको अनेकवार दीपाया है विशेषकर बाबु लक्ष्मीपति सिंघजीनेंजी अनेकानेक स्थानोंपर जिन मंदिर बन

वाये और रायबहादुर श्रीधनपतसिंघजीने तो श्रीसिद्धाचलजीकी तलहट्टीपर तीर्थनायककी स्थापना समय अंजनशलाका करवा-यके लोंकेगछपर आय पडता अपजेरोंका आरोप दूर कराय दियाथा जिनसे इन महोदयाका इस अवसरपर उपकार मानना दुरस्त धारते हैं उपर लिखें महाशयोने यद्यपि लोंके गछको शोभाया पर रायबहादुर श्रीमत महोदय श्रीबुधसिंघजी बुधेरियाने तो अनेक तीर्थस्थानोपर अपने पुण्यकर्मोपार्जित न्याय लक्ष्मीको सफल करनेमें अत्यतहि अगवानी करी है इतनाहि नहि पर लोंके गछवाले ढूढक हैं एसा जो आरोप था उनको परास्त कर जैन धर्मको अत्यत दीप्यमान करश्रीसंघमें (तीसरी कोन्फरन्समें) अग्रणीय पद धारण कीया इत्यादि इत्यादि कोटिक गुणगण सपन्न प्राग्भार पुण्यवत सेठजी रायबहादुर श्रीबुधसिंघजी बुधेरियाकेहि हस्तकमलमें यह अनेकानेक जन मनानद प्रद यह ग्रथ समर्पण कर महोदयके अचल कीर्ति स्थ भेक साथ इनकोभी अचल कीर्तिवत करते हैं जिनके वाचन मनन श्रवण कर अनेकानेक भव्य सत्वोंको अनतानद अक्षय ज्ञानपदकी प्राप्ति हो यह हमारी अभीष्टार्थ सिद्धी है तथास्तु

प्रथमपरिच्छेदस्य विषयानुक्रमणिका

नवकारमंत्र
पंचिंदिअ
खमासमण
सुगुरुकों सुखशातापृच्छा
इरियावहिय २
तस्स उत्तरि २
अन्नत्थ ३
लोगस्स ३
करेमि भंते ४
सामाइयवयजुत्तो ४
जगचिंतामणि ५
जंकिंचि ६
नमुत्थुण ६
जावंति चेइयाइ ७
जावंत केवी साहु ७
उवसग्गहर ८
जय वियराय ८
अरिहंत चेइयाणं ९
कल्लाणकंद ९
संतिकरं १०
संसारदावानल ११
पुक्खर वरदीवड्ढे १२
सिद्धाण बुद्धाण १३
वेयावच्च गराण १३

भगवानादि वदन	१३
सवस्सवि	१४
इच्छामि ठामि	१४
अतिचार आठ गाथा	१४
सुगुरु वादणा	१५
देवसिअ आलोएमि	१६
सातलाख	१७
अढार पाप स्थान	१७
वदिता सूत्र	१८
अब्भुट्ठिउं	२३
आयरिय उवझाय	२४
नमोस्तु वर्द्धमानाय	२४
विशाल लोचन	२५
सुअदेवया	२५
खित्त देवया	२५
कमलदल	२६
भुवनदेवया	२६
ज्ञानादि गुणयुताना	२६
अड्ढाइज्जेसु	२८
धरकनक	२७
लघुशाति	२७
चउकसाय	२९
भरहेसर	३०
मन्हजिणाण	३१
तीर्थवदना	३२
सकलार्हत्	३४
अजियसता	३८

मोहोटी शांति ४९
मतिकर ४९
अतिचार ५१
नवकारसहि पच्चक्खाण ७२
पोरसी साढ पोरसी ७३
एकासणा बीयासणा ७३
आयंबिल पच्चक्खाण ७४
तिविहार उपवास ७५
चउविहार उपवास ७५
पाणहार पच्चक्खाण ७६
चउविहार पच्चक्खाण ७६
तिविहार पच्चक्खाण ७६
दुविहार पच्चक्खाण ७७
देसावगासी पच्चक्खाण ७७
पोसह पच्चक्खाण ७७
पोसहपारणगाथा ७८
सथारा पोरसी ७८
सीमधर चैत्यवदन ८०
सिद्धाचलचैत्य निमल केवल ८१
सिद्धाचलचैत्य शत्रुंजयसिद्धक्षेत्र. ८२
परमात्मा चैत्यवदन ८३
सीमधर स्तवन सुणोचदाजी ८३
सिद्धाचलस्तवन यात्रानवाणु ८४
सिद्धाचल स्तवन शेत्रुंजो दीठोरे ८५
शखेश्वरपासजी पुजीयें ८६
जीयवारु तु मोरा वालमा ८७
श्रेणिकराय हुवे अनाथी निग्रंथ ८८

सामायिक लेवानो विधि	८९
सामायिक पारवानो विधि	९१
पच्चक्खाण पारवानो विधि	९१
पडिलेहण विधि	९२
देवसि प्रतिक्रमण विधि	९३
राइ प्रतिक्रमण विधि	९९
पक्खी प्रतिक्रमणविधि	१०२
चउम्मासी प्रतिक्रमण विधि	१०६
संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि	१०६
पोसह ग्रहण विधि	१०७
पोसह पारण विधि	११०
पोसह मंडला विधि	११०
जय तिहुण चैत्यवंदन	११३
जय महाजस	११९
खरतर प्रात सामायक विधि	११९
खरतर देवसी प्रतिक्रमण विधि	१२१
खरतर राइ प्रतिक्रमण विधि	१२४
खरतर पक्खी प्रतिक्रमणविधि	१२७
अचल गच्छ प्रतिक्रमणविधि.	१२७
अचलगच्छ गमणागमण	१३०
अचलगच्छ द्रव्यक्षेत्र कालभाव	१३१
अचलगच्छ लघुअतिचार	१३३
अचलगच्छ जयजय महाप्रभु चैत्यव	१४०
अचलगच्छ गुरुवंदणा	१४३
अचलगच्छ सज्झाय	१४
अचलगच्छ सामायक पारणगाथा	१४
अचलगच्छ राइप्रतिक्रमण विधि	१४

लोकागच्छ सामायक विधि १५०
लोकागच्छ सामायक पारण विधि १५१
लोंकेगच्छ प्रतिक्रमण विधि १५२
लोंकेगच्छ लघुअतिचार १५३
लोंकागच्छ राइप्रतिक्रमण विधि १६०
लोंकेगच्छ पाक्षिकप्रतिक्रमणविधि १६१
लोंकेगच्छ चोमासी प्रतिक्रमणविधि १६२
लोंकेगच्छ सवत्सरी प्रतिक्रमणविधि १६२
लोंकेगच्छ तपचिंतवणी काउस्सग्ग १६३
लोंकेगच्छ नदिका पाठ १६६
सागरगच्छ प्रतिक्रमणविधि १६७
आनंदसूरियगच्छ प्रतिक्रमणविधि १६७
वडगच्छ प्रतिक्रमणविधि १६७
राजसूरीयगच्छ प्रतिक्रमणविधि १६७
लहुनी पोसाल गच्छ प्रतिक्रमणविधि १६८
कमलकलसा गच्छ प्रतिक्रमणविधि १६८
कवलेगच्छ प्रतिक्रमणविधि १६८
विजयगच्छ प्रतिक्रमणविधि १६८
पायचद्रगच्छ प्रतिक्रमणविधि १६८
विमलकेवल सिद्धाचल चैत्यव १६९
सुरकीन्नरनागनरिंदनत २४ जिन चैत्यव १६९
आजदेव अरिहत पचतीर्थी चैत्यव १७०
सुविध धर्म जीन चैत्यवदन १७१
त्रिगडे बेठा वीरजिन पचमी चैत्यवदन १७१
महाशुदी आठम अष्टमी चैत्यवदन १७२
शासननायकवीरजी एकादशी चैत्यव १७३
विशस्थानक चैत्यव पहिले पद अरिहत १७४

विशस्थानक चैत्यव चोवीस पनर	१७४
रोहिणी चैत्यव रोहिणीतपआरा	१७५
तीर्थवदनचैत्यव० सीमधर प्रमुखनमु	१७५
तीर्थंकरराशी चैत्यव० शातिनमी०	१७६
अरिहतनमो भगवनमो चैत्यव	१७६
जिनवर्ण चैत्यव प्रद्मप्रभने वासुपूज्य	१७७
जिनभवगणना चैत्यव प्रथम तीर्थकर	१७८
जिनगणधर चैत्यव गणधरचोराशी	१७८
परमेष्टीगुण चैत्यव बारगुण अरिहतदेव	१७९
सीमधरस्तुति श्रीसीमधरजिनवर	१७९
सीमधरस्तुति श्रीसीमधर देवसुहकर	१७९
बीजीतिथीस्तुति दिन मकखमनोहर	१८०
पचमीस्तुति श्रावणसुदिनपचमीए	१८१
अष्टमीस्तुति मगलआठकरीजस	१८२
एकादशीस्तुति एकादशीअतिरूअडी	१८२
शातिजिनस्तुति शातिजिनेसरसमरियें	१८३
आदिजिनस्तुति आदिजिनवरराया	१८४
सिद्धचक्रस्तुति जिनशासनवच्छित	१८५
पर्युपणस्तुति सत्तरभेदि	१८५
पुण्यनुपोपण	१८६
सिद्धाचलस्तुति श्रीसिद्धाचलतीर्थसार	१८७
पार्श्वजिनस्तुति सखेसरपासजी	१८८
सिद्धाचलस्तुति पुडरिगिरी महिमा	१८९
सिद्धचक्रस्तुति नितप्रतिहुप्रणमु	१८९
पार्श्वस्तुति ऊँऊँकीधपमप	१९०
पर्युपणस्तुति वलिवत्रिहुध्याउ	१९१
तीर्थमालाचैत्यव सद्भक्त्या देवलोके	१९१

नवपदओलीकरण विधि
अर्हत्पद खमासमण
सिद्धपद खमासमण
आचार्यपद खमासमण
उपाध्यायपद खमासमण
साधुपद खमासमण
दर्शनपद खमासमण
ज्ञानपद खमासमण
चारित्रपद खमासमण २०७
तपपद खमासमण २११
तपग्रहण विधि २१४
छजमणा विधि २१४
विसस्थानक तप विधि २१५
विसस्थानक गुणणाकाउस्सग २१५
मोक्षकरडक तपविधि २१९
स्वर्ग करडक ,, २२०
सौभाग्यसुदर ,, २२०
चौसठिया ,, २२०
अष्टान्हिका ,, २२०
उत्तुजिन ,, २२०
अष्टमी ,, २२०
अष्टापदपाहुडी ,, २२१
अशोकवृक्ष ,, २२१
चाउमायण ,, २२१
सूर्यायनतप २२१
वर्द्धमानतप २२२
कनकतप २२२

निगोदायुतप २२२
कमलवेली ,, २२२
मेरुकल्याणक ,, २२३
वृत्ततप २२३
पदकर्मीतप २२४
सिद्धचक्रोद्धारणतप २२४
आगम केवलीतप २२५
अगविशुद्धीतप २२५
परतपालीतप २३१
त्रिपर्यंतघनतप २३१
वर्गतप २३१
श्रेणितप २३२
घनतप २३२
निर्वाणदीपकतप २३२
बत्रीसकल्याणकतप २३३
कर्मचक्रवालतप ,,
शिवकुमारवेलातप ,,
कर्मसुडनतप ,,
अखंडदशमीतप २३४
अमृताष्टमीतप ,,
सत्तरीसयजिनतप ,,
अक्षु खक्षु खितप ,,
पचमेरुतप २३५
षडासमवसरणतप ,,
मोक्षदडतप २३६
दमयतीतप ,,
ऊणोदरीतप ,,

निर्वाणतप.	२३७
केवलज्ञानतप	,,
जिनदीक्षातप	२३८
जिनचवन जन्मकल्याणकतप	,,
गौतमपडघातप	,,
लघुपचमीतप	,,
पचमीतप	२३९
पुडरीकतप.	,,
गुणरत्नसवत्सरतप	,,
आयबिलवर्द्धमानतप.	२४०
अक्षयनिधितप	,,
षांडायणतप.	२४१
श्रावकदिनचर्या	२४२
मगलाष्टक	२४५
अत्र द्वितीय वर्ग	२४९
अष्ट प्रकार पूजा विधि	२५१
एकविसप्रकारी पुजाकिविधि	२५४
पूजाकाफल	२५४
अत्रत्रितीयवर्ग	२५८
अथचतुर्थवर्ग	२६२
अथपचमवर्ग	२६८
अथषष्टमवर्ग	२७३
पार्पिकचर्या	२७७
आजन्मकृत्य	२७८
सीमधरजिन स्तवन.	२८१
युगमधरजिन स्तवन	२८२
बीजनु स्तवन	२८३

पचमीनुस्तवन	२०४
ज्ञानपचमीनु स्तवन	२०५
अष्टमीनु स्तवन	२९३
एकादशी स्तवन	२९७
आराधनानुं स्तवन	३०१
सिद्धचक्रजीनु स्तवन समरीसारदमाय	३११
नवपदजीनु स्तवन, नवपदध्यान	३१२
मङ्गलमुरतपाशकी	३१३
आजमहोछवरगरखीरी	"
मङ्गलराजेगिरनार	"
गावोमङ्गलचार	३१४
कीजेमगलाचार	"
आजकीरेणसोहाई	३१५
पोढोपोढोजीरुपजप्यारे	"
राखोनाथजडाइ	"
आवोगावोवधाईमोरीसाथनीया	"
आजतोवधाई राजानाजिकेदरबार	३१६
मगखरेगावत सकखसुरनार	"
आजकीरेणसोहानि	३१७
प्रभुकोनामअमोखहे	"
बलिहारीमरुदेविनन्दकी	"
जगदीशतुमेराप्रभु	३१८
आजप्रभुतेरेचरणखाग	"
नेमजिनदसुआखकखी	"
दृगनजररीदेखनदेमुखचद	"
मेरीखागीखगन	३१९
रातगई अबप्रातहोनजयो.	"

आदीजिनद ... ,,
नवरीया मोरी कोन उतारे बेडापार ... ३२०
नरलावेकटोराकेसरका ... ,,
ह्मारोमुनेंकबमिलस्यैमनमेलु ... ,,
ईन्द्राणीप्रभुकेवेगीआज्यो कजरा- ... ,,
नयनापीहरवागयेनयनावदल- ... ३२१
सखीरीह्मारोनेमगयोगिरनार ... ,,
मेतोदासीतुमारीविनादामकी- ... ३२२
वस्तुगतवस्तुनोलक्षण ... ,,
वसोजीमेरेनेननमेमहाराज ... ३२३
दिनकेनाथदयालसबनकी ... ,,
प्रभुजीमोसेकघनबहानेबोलो- ... ,,
भविकनरसेवोशातिजिनन्द ... ,,
मेरेजाईजुईगुलाबरी ... ३२४
कुणनबीरसमोमर्या ... ,,
आदिनाथजिनप्याराहो ... ३२५
समझपरीमोहेसमझपरी ... ,,
चितमेधरोप्यारो ... ,,
दोनु दसतोमे अगीया रचावो ... ३२६
मेरोमनलागीरह्योमहावीरचरणमे ... ,,
प्रभुमेरीविनतडीअरधारो ... ३२७
नाथभयेवैरागीहमारे ... ,,
तारियेमोहेशीतलस्वामी ... ,,
क्योंकरभक्तिकरूप्रभूतेरी ... ३२८
ससारनामजिस्का ... ३२८
मेअरजकरूसुनोमाहाराज ... ३२९
सुमतीजिनदाप्रभुआजजुहारो- ... ३२९

नेमिजिनतुमरो दरसनलागेप्यारोरे	,,
सूरतएसीसावरी	३३०
सुमतीजिनमुजरोहमारोप्रभुलीजेजी	,,
हजुरतुमसैकहुमेंदिलकीवेजार	३३०
साहिबतेरीबदगीमेंजुलतानही,	३३१
हीखेनादानकुसमझायाचायके,	३३२
आवोनेमरहजावोसदन	३३२
कधीप्रभुपदमेमनलायातोहोता	३३३
शातीवदनकजदेखनैनमधुकरमनलीनोरे	३३३
दियानातेरेदरसकायारमेंहु	३३३
ध्यानमेंजिनकेसदालयलीनहोनाचाहीये	३३४
आदीनाथजीदेखदरस,	३३४
जीनदकीमेवारीछबीप्यारी	३३५
एहालअपनाकहुमैकासे	३३५
पचतीर्थजिनस्तुति	३३३
आदिनाथनुस्तवन	३३६
सजयनाथजिनस्तवन	३३७
अभिनन्दनजिनस्तवन	३३८
सुमतिनाथजिनस्तवन	,,
पद्मप्रभुजिनस्तवन	३३९
सुपार्श्वनाथनुस्तवन	,,
चद्रप्रभुजीनुस्तवन	३४०
सुविधिनाथस्तवन	,,
शीतलनाथस्तवन	३४१
श्रेयासजिनस्तवन	,,
वासुपुज्यस्वामीनुस्तवन	३४२
विमलनाथस्तवन,	३४२

वैरागीपद	३४३
अनन्तनाथजिनुंस्तवन	३४३
धर्मनाथनुस्तवन	३४४
शांतिनाथजिनस्तवन	३४५
कुथुनाथजिनस्तवन	,,
अरनाथजिनुस्तवन	,,
मल्लीनाथजिनुस्तवन	३४६
मुनीसुव्रतजिनुस्तवन	३४६
नमीनाथजिनस्तवन	३४७
नेमनाथजीनुस्तवन	३४८
पार्श्वनाथजीनुस्तवन	,,
महावीरस्वामीनुस्तवन	३४९
मुठालामहावीरस्तवन	३५०
तोविनाऔरनजाचुजिनदराय	३५१
साचुछेजिनदनामअवरनेनराचु	,,
धनयुवतीपरमनलललचाणु	,,
अकलस्वरूपीघटघटव्यापी	३५२
दीलधरमनकरजिनवरपूजन करवाजईयेंआज	३५२
प्रभुतारहवेमारूअहींसुयेसरे	,,
श्रीचराचरविश्ववरा	३५३
निहारयार सारतु विचार दारहे	३५३
देखानही कनुसार जगतमे	३५४
दरीसन विनअखियातरसरही	३५४
जबलगविषयघटान घटी	३५५
जयजय नवपदा आपसपदा	३५५
प्रभुदीजेदरस वडी बेरजइ	३५६
प्रभुमेरो ज्ञानकी ज्योती	३५६

गोडी गाइयें मनरग ३५६
सकल कर्म मलक्षय करके मुगत पुरगए गएरे ३५७
कहाकीनो नर जव पाके ३५७
अजिहोकहो ज्ञानी ३५८
जिनरायाना दरिसन पायारे. ३५८
तुज्य नमस्ते स्वामी शाति जिनदाजी ३५९
वीरप्रभुतेरी दोस्तिमे ३५९
तुमतोजले विराजोजी ३६०
नाथकेसे जबुको मेरु कपायो ३६०
सामरियाजसे बने तेसें तारो ३६१
आगीनी रचनाछे बहु सारी ३६२
सामरो सुख दाई ३६२
सामकहियो विनती मोरी ३६३
पावापुरजिनगीत अरीया मेरी ३६३
जिनराज नाम तेरा ३६४
अबतो उधारो मोहे चहिये ३६४
गुण अनत अपार प्रभु तेरे ३६५
माई मेरो मन तेरो नद हरे ३६५
इन्द्राणी सन ठमक ठमक जन्म मोत्सव ३६५
घननननन घननननन घट सुघोषा ३६६
कहु कहालां वारु नणदलवीर ३६६
होजी आली जाने मनेथारी चाहघणी ले ३६६
रुपज जिणद आनद कद कदा ३६६
प्रभु नेमकुमरजी आप विराजो गीरनार मे ३६७
किसविध किये कर्म चकचूर ३६७
जनक सुताहु नाम धरावु सीता सज्झाय ३६९
नरजन नयर सोहामणु वणजारारे ३७०

सुणसोदागर वे दिलकी वात हमेरी	३७१
आप स्वभावमारे अनघु सदा मगन	३७१
सहजानदीरे आतमा	३७२
साजल सयणा साची सुणावु	३७४
प्राणी रात्रिभोजन वारो	३७५
जोवनियानी मोजा फोजा	३७६
निंदा मकरशो कोड पारकीरे	३७७
सुणकतारे शीख शोहामणी	३७८
नारी सीखामणनी	३८०
धोनीनानी सद्याय	३८३
भरत चक्रीनी सद्याय	३८४
वैराग्य सद्याय.	३८४
बाहुबलजीनी सद्याय	३८५
ढंढणऋषिजीनी सद्याय	३८५
अईमताजीनी सद्याय	३८६
करकडू प्रत्येक बुधजीनी सद्याय	३८७
मनोरमा सतीनी सद्याय	३८८
क्रोधनी सद्याय	३८९
माननी सद्याय	३८९
मायानी सद्याय	३८९
आचारगसूत्रनी सद्याय	३९०
कलियुगनी सद्याय	३९१
शियल स्वाध्याय	३९२
निद्रडीनी सद्याय	३९३
आत्मबोध सद्याय	३९४
पाचमा आरानो सद्याय	३९५
अमल वर्जन स्वाध्याय.	३९७

काया उपर सद्याय ३९९
तेरकाठीयानी सद्याय ४००
मोहोटीहास नकरवाआश्रयी सद्याय ४०१
मधुबिंदुकादृष्टात सद्याय ४०२
वैराग्य सद्याय ४०३
स्त्रीवर्जन शिखामण सद्याय ४०४
परस्त्री वर्जन सद्याय ४०५
जीवने समता विशे शिखामण ४०६
दान शिल तप भाव स्वाध्याय ४०७
सामायिक लाभ सद्याय ४०८
ठींक विचार सद्याय ४०९
वैराग्योपदेशक सद्याय ४१०
भाव स्वाध्याय ४११
विशस्थानकना तपनो सद्याय ४१२
शियलविषे शिखामणनो सद्याय ४१३
प्रभाते पाणखागावानो सद्याय ४१४
काठ काज न आवेरे ४१६
चैतन्यशिक्षाभास आपविचारजोरे ४१६
किसको सबदिन सरखे न होय ४१७
निशानी सद्याय वेटीमोहनरींदकी ४१८
कायामायाकारमी ४१९
सारवोखनी सद्याय ४२०
सामायिकनाबत्रीशदोष सद्याय ४२१
अश्मताजीनी सद्याय ४२२
समकेतनी चोपड ४२३
आत्मशिक्षा सद्याय ४२६

माया सद्याय ४२७
शीलत्रिशे सद्याय ४२८
कर्मनी सद्याय ४२८
सुमति विलाप सद्याय ४२९
मेघरथ राजानी सद्याय ४३०
पदर तिथिनी पंदर सद्याय. ४३३
प्रतिपदानी सद्याय ४३४
द्वितीयानी सद्याय ४३५
तृतियानी सद्याय ४३६
चतुर्थानी सद्याय ४३६
पचमीनी सद्याय ४३७
षष्ठीनी सद्याय ४३८
सप्तमीनी सद्याय ४३९
अष्टमीनी सद्याय ४४१
नवमीनी सद्याय ४४२
दशमीनी सद्याय ४४३
एकादशीनी सद्याय ४४४
द्वादशीनी सद्याय ४४५
त्रयोदशीनी सद्याय ४४६
चतुर्दशीनी सद्याय ४४७
पूर्णिमानी सद्याय ४४८
उपदेशी पद ४५०
जाग जाग रेन गई ४५१
मे परदेसी मुरका ४५१
मन खोजी तेरो कुन पतियारो ४५१
रेमन क्युजिन नाम विसार्यो ४५२
जगमे नही तेरा कोई ४५२

जुठी जगतकी माया	४५३
मान कहा अब मेरा	४५३
भुड्योभमत कहारे	४५४
जागर जटाउ	४५४
निणसत वार न लागे	४५४
जुठी जगमाया नर केरी	४५७
मेरे घट ज्ञान भान भयो	४५७
यापुदगलका क्या विश्वासा	४५६
गौतमाष्टक छद	४५७
तिजयपहुत	४५८
नमिऊणनामक स्मरण	४५९
भक्तामर स्मरण	४६१
कल्याण मंदिर स्तोत्रम्	४६७
वृद्ध गोतम स्वामीनो रास	४७३
महावीरजिन छद	४८१
नवकारनो छद	४८३
शोलसतिनो छद	४८६
नवकार लघु छद	४८७
जिनपजर स्तोत्र	४८९
महशान्तिस्तोत्रम्	४९१
मत्राधिराज स्तोत्रम्	४९२
लघुजिनसहस्रनाम	४९५
पार्श्वजिन स्तुति	४९८
शखेश्वर जिनस्तव	४९९
पार्श्वजिन स्तोत्रम्	५००
परमात्मा स्तोत्रम्	५०२
नमस्कार स्तोत्रम्	५०३

ऋषिमंडल स्तोत्रम्	५०४
गौडीपार्श्वजिन वृद्ध स्तवन वाणीब्रह्मा	५०९
त्रीडत्रजन पार्श्वनाथ छंद	५१४
सरस्वती अष्टक	५१७
क्रोध मान माया लोभनो छंद	५१९
मणिभद्रजिनो छंद	५२२
मणिभद्रजिनी आरती	५२३
ज्वर (ताव) छंद	५२४
यंत्र महिमा वर्णन छंद	५२६
मंगलउच्चार	६२८
त्रीडत्रजन पार्श्वनाथनो छंद	५३०
गौतम गुरु प्रभात छंद	५३१
पार्श्वनाथ छंद	५३२
गोडी पार्श्वनाथनो छंद	५३२
चोत्रीस अतिसयनो छंद	५३३
शिखामणनो छंद	५३५
अंतरिक पार्श्वनाथ छंद	५३७
शांतिजिन विनतिरूप छंद	५३९
पार्श्वनाथनो छंद	५४०
शनीश्वरनो छंद	५४४
गौतम प्रभाति स्तवन	५४७
दोधक बावनी	५४८
साधुसाध्वी योग्य आवश्यक क्रियाके सूत्रें	५५३
करमि भंते	५५३
इच्छामि ठामि	५७३
देवसिक अतिचार	५५४
रात्रिक अतिचार	५५४

श्रीश्रमण सूत्र पगामसज्झाय	५५५
पाक्षिक अतिचार	५६१
पाक्षिक सूत्र	५६६
पाक्षिक खामणा	५७३
प्रात पडिलेहणकी विधि	५७९
सध्या पडिलेहण विधि	५९०
पोरसी विधि	५९१
पच्चखाण पारणेकि विधि	५९१
गोचरीआलोयण विधि	५९४
स्थडिलशुद्धिका विधि	५९५
सझारापोरसिकी विधि	५९६
पाक्षिक प्रतिक्रमण छीकनी थुई	५९६
उमासि काउसग करनेकि विधि	५९७
अतिम देव वदनकि विधि	५९८
सोल सस्कार नाम	६०१
सस्कार करानेयोग्य गुरु	६०१
गर्भाधान सस्कार विधि	६०२
शातिदेवीमत्र	६०४
शातिदेवीस्तोत्र	६०५
ग्रथियोजनमत्र	६०६
ग्रथिवियोजनमत्र	६०७
जैनवेदमत्रोत्पत्ति	६०७
पुसवनसस्कारविधि	६१०
जन्मसस्कारविधि	६१३
जजमत्र	६१४
रक्षामत्र	६१५
चन्द्रसूर्यदर्शनसस्कारविधि	६१६

सूर्यमन्त्र		६१६
चन्द्रमन्त्र		६१७
क्षीराशनसंस्कारविधि		६१९
षष्ठीसंस्कारविधि		६२०
मातृकापूजन		६२१
सूचिकर्मसंस्कारविधि		६२४
नामकरणसंस्कारविधि		६२६
अन्नप्राशनसंस्कारविधि		६२९
कर्णवेधसंस्कारविधि		६३७
क्षौरकरणसंस्कारविधि		३३४
उपनयनसंस्कारविधि		६३६
चारों वर्णकी चिन्हता		६४१
जिनोपवीतस्वरूप		६४१
उपनयनार्थ		६४२
उपनयनारंभ		६४७
मेखलामन्त्र		६४७
कोपीनमन्त्र		६४९
उपनयनधारणमन्त्र		६४९
व्रतबंधनविधि	(नमस्कारमहिमा)	६५१
व्रतादेशविधि		६५२
ब्राह्मणव्रतादेश		६५५
क्षत्रियव्रतादेश		६५८
वैश्यव्रतादेश		६६०
चातुर्वर्ण्यव्रतादेश		६६१
व्रतविसर्गविधि		६६६
गोदानविधि		६६९
दानग्रहणमन्त्र		६७२

शङ्कों उत्तरीय	६७३
वटु करण विधि	६७६
विद्यारम्भ संस्कार विधि	६८१
विवाहसंस्कारविधि	६८३
ब्राह्मविवाहप्रकार	६८५
प्राजापत्यविवाहप्रकार	६८६
आर्षविवाहप्रकार	६८६
दैवतविवाहप्रकार	६८६
कन्यादानविधि	६८७
कुलकरस्थापना	६७१
रक्षाबंधनमंत्र	६७३
वेदिप्रतिष्ठा	६७८
तोरणप्रतिष्ठा	६७७
अग्निस्थापनमंत्र	६७७
हवनमंत्र	७००
मधुपर्कादिविधि	७०१
प्रथमलाजाकर्म (प्रथम प्रदक्षिणा)	७०२
द्वितीयलाजाकर्म (द्वितीय प्रदक्षिणा)	७०४
तृतीयलाजाकर्म (तृतीय प्रदक्षिणा)	७०५
चतुर्थलाजाकर्म (चतुर्थ प्रदक्षिणा)	७०६
करमोचन	७०७
वरवधूविसर्जन	७०७
कुलकरविसर्जन	७१०
व्रतारोपसंस्कारविधि	७११
गुरुलक्षण	७१२
गुरु छत्रीसगुण	७१३
श्रावक इक्कीसगुण	७१४

सम्यक्तारोपण ७१७
देववंदन ७१९
अर्हणादिस्तोत्र (स्नवन) ७२२
सम्यक्तदंडक ७२६
नियमप्रदान ७२९
देवतत्वस्वरूप ७३१
मिथ्यात्वस्वरूप ७३३
अदेवलक्षण ७३७
गुरुलक्षण ७३९
अगुरुलक्षण ७४०
धर्मलक्षण ७४१
अधर्मलक्षण ७४१
देशविरतीसामायिकारोपण ७४४
द्वादशव्रतारोपणविधि ७४५
प्रतिमावहनविधि ७५९
उपधानविधि ७५९
नवकारउपधान ७६०
इरियावहीउपधान १६२
शक्रस्तव (नमुत्थुण) उपधान. ७६४
चैत्यस्तव (अरिहंतचेइआण) उपधान ७६६
लोगस्सउपधान ७६६
पुक्खरवरदीउपधान ७६७
सिद्धाणबुद्धाणंउपधान ७६७
मालारोपणविधि ७७१
श्रावकदिनचर्या ७८०
कल्पोक्तजिनपूजनविधि ७८०
अंत्यसंस्कारविधि ८०९

इत्आराधनविधि	८०६
मरणविधि	८१७
उत्सर्गविधि	८१६
अनशनविधि	८२०
अग्निसंस्कारविधि	८२१
कालज्ञानस्वरूप	८२१
समाप्तिमंगल	८२५

जाहिर खबर

हमारा तर्फसें "जैन विवेक प्रकाश" मासिक पुस्तक प्रत्येक मास प्रसिद्ध होता है जिस्मे बालबोध लिपी, हिंदी भाषामें धार्मिक, व्यावहारीक, नैतीक, सामाजिक त्रिविध विषयें प्रत्येक मास प्रगट होतेहैं वार्षिक खर्चाजम टपालसह एक रुपया तीन आना

(१) पंच प्रतिक्रमण सूत्र	किमत	एकरुपया
(२) जैन संस्कार विधि	किमत	एकरुपया
(३) चपक चंद्रावती, गुजराती	किमत	बारे आना
(४) जैन गर्भावली	किमत	तीन आना
(५) बालमित्रस्तवनावली भागपहिला	,	दो आना
(६) ,, भाग दुसरा	,,	चार आना
(७) , भाग तिसरा	,,	चार आना
(८) प्राचीन मासिक गुजरातीवार्ता	,,	एक आना
(९) प्रश्नोत्तररत्नमाला, व, मूर्खशतक हिंदी टीका		एक आना
(१०) मूर्त्ती पूजा मंडन हिंदी भाषा	किमत	एक आना
(११) विदेशी खाडकी झूंटता	,,	एक आना

मिलनेका पत्ता मुंबई पायधोणी श्री शांतिनाथजी मंदिर

यतिज्ञानचंद्र

॥ जैनधर्मसिंधु.

॥ श्रीश्रावकस्य पंचप्रतिक्रमणादि सूत्राणि ॥

॥ १ ॥ प्रथमनवकार पंचमंगलरूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं॥१॥नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ २ ॥ अथ पंचिंदिअ ॥

॥पंचिंदिअ संवरणो ॥ तह नवविह बंभचेर गुत्ति धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को ॥ इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महव्वय जुत्तो॥ पंचविहायार पालणसमत्थो ॥ पंच समिउं ति गुत्तो ॥ छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥२॥ इति ॥२॥

॥ ३ ॥ अथ खमासमण ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं॥जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥३॥

॥४॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकारि सुहराइ सुहदेवसी ॥ सुख तप शरीर निराबाध ॥ सुख संजम यात्रा निर्वहो छोजी ॥ स्वामी शाता छेजी ॥ भात पाणीनो लाभ देजो जी ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् ॥ इरियावहियंपडिक्कमामि ॥ इछं इछामि पडिक्कमिउं॥१॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उंसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउंठाणं संकामिया जीवियाउं ववरोविया ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥५॥

॥ ६ ॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥पायछित्तकरणेणं॥ विसोहीकरणेण ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं

कम्माणं ॥ निग्घायणठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उडुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुछाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं॥सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहि दिठिसंचालेहि ॥२ ॥ एवमाइएहिं आगारेहि ॥ अभग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरेजिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं च वंदे ॥ संभव मभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासुपुज्ज च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं

च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वय नमि जिणं च ॥ वंदा
मि रिठनेमि ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं
मए अभिथुआ ॥ विहूय रयमला पहीण जर
मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरामे प
सीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जेए
लोगस्सउत्तमासिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं ॥
समाहिवर मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मल-
यरा ॥ आइच्चेसु अहिय पयासयरा ॥ सागर
वर गंभीरा ॥ सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ६ ॥
सव्वलोए० ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ ९ ॥ अथ सामायिकनु पच्चक्खाण ॥

॥ करेमि भंते सामाइय सावज्जं जोगं पच्च
क्खामि ॥ जाव नियम पज्जुवासामि ॥ दुविहं ति
विहेणं मणेण वायाए काएण ॥ न करेमि, न
कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरि
हामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ १० ॥ अथ सामायिक पारवानुं ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो ॥ जाव मणे होइ निय
म संजुत्तो ॥ छिन्नइ असुह कम्म ॥ सामाइअ
जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइअमि उ कए ॥ स

मणो इव सावज्जं हवइ जम्हा ॥ एएण कारणे णं ॥ बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ १ ॥ सामायिक विधि लीधुं विधिं पारिउं ॥ विधि करतां जे कोइ अविधि हुउं होय ते सवि हुं मन वचन कायाये करी ॥ मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥१८॥

॥११॥अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करुं ॥ इछं ॥ जगचिंतामणि जगनाह ॥ जगगुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह॥जगभाव विअक्खण ॥ अठावय संठविअ ॥ रुव कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर ॥ जयंतु अप्पडिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहि कम्मभूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरिसय ॥ जिणवराण विहरंत लब्भइ ॥ नव कोडिहिं केवलिण॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवरवीसमुणि ॥ विहुं कोडिहि वरनाण॥समणह कोडि सहस दुअ ॥ थुणि जिअनिच्च विहाणि॥२॥जयउ सामी जयउ सामी॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जिंत पहु नेमिजिण॥ जयउ वीर सच्चउरि मंडण ॥ भरुअछहिं मुणिसुव्वय ॥

मुहरिपास डुह डुरिअखंमण ॥ अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥ ती अणागय सपइअ ॥ वंडं जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा ॥ लक्खा छप्पन्न अठकोडि उ ॥ बत्तीस वासिआइं ॥ तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरस कोमि सयाइं ॥ कोमी बायाल लक्ख अमवन्ना ॥ छत्तीस सहस असिआइं ॥ सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ १२ ॥ अथ जकिंचि ॥

॥ ज किंचि नाम तित्थ ॥ सग्गे पायालि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण बिंबाइं ॥ ताइं सव्वाइ वदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुण अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराण, तित्थयराण, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसोत्तमाणं, पुरिससीहाण पुरिसवरपुंमरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगोत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जो अगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाण ॥ मग्गदयाण, सरणदयाणं,

बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्कय मव्वाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ भयाणं ॥९॥ जेअ अईआ जेअ सिद्धा ॥ जेअ भविस्सति णागए काले ॥ संपइअ वट्टमाणा॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

॥१४॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ तिरिअलोएअ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥१५॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जावंत केवि साहू ॥ भरहेरवय माहाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसि पणउं ॥ तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥

॥१६॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य इति ॥ १६ ॥

॥१७॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पास वंदामि कम्म घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नास ॥ मंगलक ल्लाणआवास ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउं ॥ तस्स गहरोगमा री दुठजरा जति उवसाम ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर ति रिएसुवि जीवा ॥ पावंती न दुक्ख दोहग्गं ॥३॥ तुह सम्मत्तेलद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥ पावंति अविग्घेण ॥ जीवा अयरामर ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउं महायस ॥ भत्तिभरनिब्भिरे णहिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥१८॥ अथ जयवीअराय

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुह पभावउं भयव ॥ भवनिव्वेउं मग्गा ॥ णु सारि आ हइ फलसिद्धि ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाउ ॥

गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो तव्वयण ॥ सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ वारि जइ जइवि निआण ॥ बंधणं वीअराय तुह समए ॥ तहवि मम हुज्ज सेवा ॥ भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खउ कम्मक्खउ ॥ समाहि मरणं च बोहिलाभो अ ॥ संपज्जउ मह एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व मंगलमांगल्यं ॥ सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणा ॥ जैनं जयति शासनम् ॥५॥१८॥

॥ १९ ॥ अथ अरिहत चेइआण ॥

॥ अरिहंत चेइआण ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहि लाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥धारणाए अणुप्पेहाए॥ वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं॥३॥ अन्नत्थ०इति

॥ २० ॥ अथ कल्लाणकंदं स्तुति ॥

॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं ॥ संति तओ नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिक्कठाणं ॥ भत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ सं

सारसमुद्दपारं ॥ पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ।
सव्वे जिणंदा सुरविंदवंदा ॥ कल्लाणवल्लीणवि
सालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वर जाणकप्पा
पणासिया सेस कुवाइदप्प ॥ मयं जिणाणं स
रण बुद्धाण ॥ नमामि निच्च तिजग प्पहाणं॥३॥
कुदिङ्गोक्कीरतुसारवन्ना ॥ सरोजहत्था कमले
निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था ॥ सुहाय
साअह्म सया पसत्था ॥ ४ ॥

॥ २१ ॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति ॥

॥ स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्याविभो शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मयाहृतरस,भ्रांत्याभ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्ट नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशकया ॥ वक्रं यस्य पुनः पुन सजयति, श्रीवर्द्धमानो जिन ॥ १ ॥ हसासाहत पद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवाम्भोभृते ॥ कुंभैरप्सरसा पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभि काचनै ॥ येषामदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेक कृत ॥ सर्वे सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषा नतोऽह क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्भक्तप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशाल, चित्र बह्वर्थयुक्त मुनिगणवृषभैर्धारित बुद्धि

मद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं, भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं वालचन्द्राभदंष्ट्रं, मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी, यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरजिनचतुर्दशीस्तुतिः ॥ २१ ॥

॥ अथ संसारदावानी स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं ॥ संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीरं ॥ नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन ॥ चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि ॥ कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं ॥ जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं ॥ सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमू

लालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला॥
ऊकारारावसारामलदलकमलागारभूमिनिवासे॥
गायासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरा
मे ॥ वाणीसदोहदेहे भवविरहवर देहि मे देवि
सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥२३॥ अथ पुक्करवरदी ॥

॥ पुक्करवरदीवड्ढे ॥ धायइसंडे अ जंबुदी
वे अ ॥ भरहे रवय विदेहे ॥ धम्माइगरे नमं
सामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसण,
स्स ॥ सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधर
स्स वंदे ॥ पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥
जाई जरामरणसोगपणासणस्स ॥ कल्लाण
पुक्खलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवन
रिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार मुवलभ
करे पमाय ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणम
ए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न कि
न्नर गण, स्सब्भूअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइ
ठिओ जगमिण, तेलुक्कमच्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ
सासवओ, विजयओ, धम्मुत्तर वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स
भगवओ करेमि काउस्सग्ग वंदणवत्तिआए० ॥

॥२४॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं, बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउं तारेइ नरंव नारिंवा ॥३॥ उज्जिंत सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्क वट्टि,अरिठनेमिं नमसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दसदो य, वदिया जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअठा,सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति२४

॥२५॥ अथ वेयावच्चं गराणं ॥

॥ वेयावच्चगराण संतिगराण ॥ सम्मद्दिठि समाहि गराणं ॥ इति ॥ २५ ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नउ० ॥

॥२६॥ अथ भगवानादि वंदन ॥

॥ भगवान् हं ॥ आचार्य हं ॥ उपाध्याय हं ॥ सर्वसाधु हं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥२७॥ अथ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् ॥ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउ ॥ इछ सवस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ ॥ दुब्भासिअ दुच्चिठिअ ॥ तस्स मि छामि दुक्कड ॥ इति ॥ २७ ॥

॥२८॥ अथ इछामि ठामि ॥

॥ इछामि ठामि काउस्सग्ग ॥ जो मे देव सिउं अइआरो कउं ॥ काइउं वाइउं माणसिउं उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो दुज्झाउं ॥ दुविचिंतिउं अणायारो ॥ अणिछिअव्वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणेतह दसणे चरित्ता चरित्ते ॥ सुए समाइए ॥ तिन्हं गुत्तीण ॥ चउन्हं कसायण ॥ पचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्ह गुण व्वयाणं ॥ चउन्ह सिक्खावयाण ॥ बारसवि हस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खडिअ जं विराहिअ ॥ तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २८ ॥

॥२९॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

॥ नाणमि दसणंमि अ, चरणमि तवंमित हय विरियमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पचहा भणिउं ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे

उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभ ए, अठविहो नाणमायारो ॥ १ ॥ निस्संकि अ निक्कंखिअ, निव्वितिगिछा अमूढ दिठीअ॥ उववूह थिरीकरणें, वछल पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥ पणिहाणजोगजुत्तो पंचहि समिईहिं तीहि गुत्तीहि ॥ एस चारित्तायारो, अठविहो होइ ना यव्वो ॥ ४ ॥ वारसविहंमि वि तवे, सब्भितरबा हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, ना यव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअरि या, वित्ती संखेवण रसच्चाउ ॥ कायकिलेसो सलीं, ण याय वव्वो तवो होई ॥ ६ ॥ पाय छित्त विणउं, वेयावच्चं तहेव सच्चाउं ॥ झाण उ स्सग्गो विय, अब्भितरउं तवो होई ॥७॥ अण गूहिअ बल विरिउं, पडिक्कमइ जो जुहुत्त मा उत्तो ॥ जुजइअ जहाथामं, नायव्वो वीरिआया रो ॥ ८ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥३०॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं, जावणि ज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मि उग्ग हं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खम

णिज्जो ऋे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं वहु सुभे ण ऋे, दिवसो वइक्कंतो जत्ता ऋे ॥ जवणिज्जं च ऋे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिआए वइक्कमं आवसिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए ज किंचि मिछाए, मणडुक्कडाए वयडुक्कडए ॥ कायडुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए ॥ सव मिछोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ वीजीवारने वादणे आवसिआए ए पद न कहेवुं अने रात्रियें राइउवइक्कतो, तथा चउमासीये चउमासी वइक्कतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो संवछरीयें सवछरो वइक्कंतो ॥ एवी रीतें पाठ कहेवो ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥ अथ देवणिअं अलोउं ॥

॥ इछाकारेणसंदिसह भगवन्देवसिअं आलोउ इछ ॥ आलोएमि जोमे० ॥ इति ॥ ३१ ॥

॥३२॥ अथ सातलाख ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ वे लाख बेइंद्रिय॥वे लाख तेंद्रिय ॥ वे लाख चौरिंद्रिय॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पचेंद्रिय ॥ चौद लाख मनुष्य ॥ एवं कारे चौराशीलाख जीवायोनिमांहि, माहारे जीवे जे कोइजीव हण्यो होय,हणाव्यो होय,हणता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सद्देहुं मनेवचने कायायें करीतस्स मिछामि दुक्कडं ॥इति॥ ३२ ॥

॥३३॥ अथ अढार पापस्थानक ॥

॥ पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद त्रीजे अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमें पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पा

पस्थानमाहे, म्हारे जीवें जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेंवराव्युं होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्युं होय, ते सवे हु मनें, वचने, कायाये करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥३४॥ अथ सवस्सवि ॥

॥ सवस्सवि देवसिअ डुचिंतिअ, डुब्भासी अ डुचिठिअ ॥ इछाकारेण सदिसह भगवन् इछ० ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥३५॥ अथ श्रावकवदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सव्व सिद्धे, धम्मायरिएअ सव्व साहूअ ॥ इछामि पडिक्कमिउ, सावगधम्माइ आरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दसणे चरित्तेअ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, त नि दे त च गरिहामि ॥२॥ डुविहेपरिग्गहम्मि, सा वज्जे वहुविहेअ आरभे ॥ कारावणेअ करणे,प डिक्कमे देसिअ सव्व ॥ ३ ॥ ज वद्धमिदिएहि, चउहि कसाएहि अप्पसत्थेहि॥रागेण व दोसे ण व, त निदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥ अभि उंगेअ निउंगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ सका कख वि

गिहा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्त स्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणेय जे दोसा ॥ अत्तठाय पर ठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्व याणं, गुणव्वयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिक्खा णं च चउण्ह, पडिक्कमे० ॥८॥ पढमे अणुव्वयं मि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसक्षे, इह पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंध छविछेए, अइ भारे भत्त पाण वुछेए ॥ पढम व यस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्व यंमि, परिथूलगअलिवयणविरईउ ॥ आ यरिअमप्पसक्षे, इह पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीय वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरणविरईउ॥ आयरिअ मप्पस्सक्षे, इह पमायप्पसंगेणं ॥ ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध ग मणे अ ॥ कूडतूल कूडमाणे, पडिक्कमे०॥१४॥ चउछे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पस्सक्षे, इह पमायप्पसगेणं

॥ १५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पचममि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिछेए, इत्थ पमाय प्पसंगेण ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि,पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअ च ॥ वुड्ढिसइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसमिअ, पुप्फे अ फले अ गधमल्लेअ ॥ उवभोगे परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पमिबद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअ च आहारे ॥ तुछोसंहि भक्खणया, पमिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्म ॥ वाणिज्जं चेवय दंत, लक्ख रस केस विसविसय ॥ २२ ॥ एव खु जंतपिल्लण, कम्म निल्लंछणं च दवदाण ॥ सरदह तलाय सोसं, असई पोस च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सउग्गि मुसल जंतग, तणकठे मंत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविए वा, पमिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणुव्वट्टण वन्नग, वि

लेवणे सद्दरूव रस गंधे ॥ वत्थासणआभर णे, पडिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते ॥ दंडंमि अणठाए, तइअंमि गुणवए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणि हाणे, अणवठाणे तहा सइविहूणे ॥ सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ॥ देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणा भोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खाव ए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ दुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव, तं निंदे तच गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहू सु संविभागो, न कउ तव चरणकरणजुत्तेसु ॥ सते फासु अ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपउंगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मझ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइणस्स, पडि

क्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअ स्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्खागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्ती सुअ समिईसुअ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिठी जीवो, जइ विहु पाव समा यरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निंद धसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपम्मिक्कमण, सप्प रिआव सउत्तरगुणं च॥ खिप्प उवसामेइ वाहि व सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठ गयं, मत मूल विसरया ॥ विज्जा हणति मंते हि, तो त हवइ निव्विस ॥ ३० ॥ एव अठविहं कम्म, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोअतो अ निंदंतो, खिप्प हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुस गासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, ओहरिअ भरुव भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ दुक्खाण मंत किरिअ, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसभरिआ पम्मिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, त निंदे त च गरिहामि॥४२॥

तस्स धम्मस केवलि पन्नत्तस्स ॥ अब्भुठिउंमि आरा, हणाए विरउंमि विराहणाए ॥ तिविहेण पम्हिकंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिरसंचिय पाव पणासणीइ, भवसय सहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ॥सम्म हिठी देवा, दिंतु समाहिं च वोहिं च ॥४७॥ पमिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पम्हिकमणं ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पम्हिकंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥ अथ अब्भुठिउं ॥

॥ इछाकरेण संदिसह भगवन्, अब्भुठिउंमि, अब्भिंतर देवसिअखामेउं ॥ इछं खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं ॥ भ

त्ते पाणे विणए वेआवच्चे, आलावे संलावे उ
च्चासणे ॥ समासणे अंतरभासाए, उवरिभासा
ए जं किंचि ॥ मज्झ विणय परीहिण, सुहुमं
वा बायर वा ॥ तुब्भेजाणह, अहं न याणामि॥
तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवझाए ॥

॥ आयरिअ उवझाए, सीसे साहम्मिए
कुलगणेअ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण
खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण सघस्स, भगव
ओ अजलिं करिअ सीसे ॥ सव खमावइत्ता,
खमामि सवस्स अहयपि ॥ २ ॥ सघस्स जीव
रासिस्स, भावओ धम्मो निहिअ निअचित्तो ॥
सघ खमावइत्ता, खमामि सघस्सअहयपि ॥३॥

॥३७॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ इछामो अणुसठि, नमो खमासमणाणं ॥
नमोर्हत्० ॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय
कर्म्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुती
र्थिनाम् ॥ १ ॥ येषा विकचारविंदराज्या, ज्याय
क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति सगत
प्रशस्य, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्रा·

॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिवृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोऽत. ॥ सशुक्रमासोऽभवदृष्टि सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

॥३९॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंताशुकेशरम् ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु व ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रात· संतु शिवाय ते जिनेंद्रा. ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्त ममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अ पूर्वचंद्रं जिनचंद्रभाषितं, दिनागमे नौमि बुधै र्नमस्कृतम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥४०॥ अथ सूत्रदेवक्षेत्रदेव स्तुति· ॥

॥ सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्ग० ॥ सुअ देवया भगवई, नाणा वरणीअ कम्म संघायं॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती॥१॥

॥४१॥ अथ खित्तदेवयाए करेमि० ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुक्कमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआई ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥४२॥ अथ कमलदलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ ॥१॥ इति ॥ ४२॥

॥४३॥ अथ भुवणदेवयादिस्तुति ॥

॥ भुवण देवयाए करेमि काउस्सग्ग० ॥ यस्या क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभि साध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्न सुखदायिनी ॥ १ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥४४॥ अथ ज्ञानादिगुणयुतानां ॥

॥ ज्ञानादिगुणयुताना, नित्यं स्वाध्याय संयमरताना ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥४५॥ अथ अढाइजेसु मुनिवदन ॥

॥ अढाइजेसु दीव मुसद्देसु, पन्नरसु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केविसाहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गह धारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठारस सहस्स सीलगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥इति॥४५॥

॥ ४६ ॥ अथ वरकनक ॥

॥ वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निभंवि गतमोहम् ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥४७॥ अथ लघुशांतिस्तव ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांता शिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ ३ ॥ ॐमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिक संपूजिताय निजिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहभूतपिशा, च शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भ

गवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपरा
जिते जगत्या, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥
सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलप्रददे
॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे
जीया ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृत्ति
निर्वाणजननि सत्त्वानाम् ॥ अभयप्रदाननिर
ते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां
जंतूना शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग्
दृष्टीना धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥
जिनशासननिरताना, शातिनताना च जग
ति जनतानाम् ॥ श्रीसपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविष
विषधर, दुष्टग्रहराजरोगरणभयत ॥ राक्ष
सरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादिभ्य ॥ १२ ॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिव, कुरु कुरु शाति च कुरु
कुरु सदेति ॥ तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि, कुरु कुरु स्व
स्ति च कुरु कुरु त्व ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति
शिवशा, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जना
नाम् ॥ ॐ मिति नमो नमो ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्रः ॥
य क्ष ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्ना

माक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवि ॥ कुरुते शांति नमता, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तव शांतेः ॥ सलिलादिभयविनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपद यायात्, सूरिश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमांगल्याम्, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ ॥ इति श्री लघुशांतिस्तवः ॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥ अथ श्री चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लूल्लुरणु, दुज्जय मयण बाणु मुसुमूरणु ॥ सरस पिअंगु वन्नुगयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कांति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणि मणि किरणालिद्धउ ॥ नं नव जलहर तडिल्लय लंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥ इति चउक्कसाय ॥ ४८ ॥

॥ ४९ ॥ अथ श्री भरहेसरनी सद्याय ॥

॥ भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढण कुमारो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिभद्दो, वयर रिसी नदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिउ केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदसण, साल महासाल सालिभद्दो अ ॥ भद्दो दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धनोइलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो आ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो अद्दकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिज्जंस कुरगडु अ सिज्जभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा सत्ता, दितु सुह गुणगणेहि सजुत्ता ॥ जेसि नाम ग्गहणे पावपबधा विलयंजति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयती ॥ नमयासुंदरी सीया, नदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता, पउमावइ अजणा सिरी दे

वी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पभावई चिल्लणा देवी ॥ ए ॥ वंभी सुंदरी रुप्पिणि, रेवई कुंती सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धारिणी, कलावई पुप्फचूला य ॥ १० ॥ पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ॥ जंबूवइ सच्चभामा, रुप्पिणि कन्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेवभूअदिन्ना य ॥ सेणा वेणा रेणा, भयणीउ थूलिभद्दस्स ॥१२॥ इच्चाइ महासइउ, जयंति अकलंकसीलकलिआउ ॥ अज्जवि वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ ॥ इति सता सतीयोनी सद्याय ॥ ४ए ॥

॥ ५० ॥ अथ श्री मन्हजिणाणं सद्याय ॥

॥ मन्हजिणाणं आण, मिठं परिहरह धर सम्मत्तं ॥ बविह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥ १ ॥ पवेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ॥ सझाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिनथूणिणं, गुरुथुअ साहम्मिआणा वछल्लं ॥ ववहारस्स य सुद्धी, रहजुत्ता तिठजुत्ता य ॥ ३ ॥ उव

॥ ४९ ॥ अथ श्री भरहेसरनी सज्झाय ॥

॥ भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढण कुमारो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिभद्दो, वयर रिसी नंदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नो अ सुकोसल, पुंमरिउं केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदसण, साल महासाल सालिभद्दो अ ॥ भद्दो दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धनोइलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो आ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो अद्दकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिज्जंस कुरगडू अ सिज्जभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा सत्ता, दिंतु सुह गुणगणेहि सजुत्ता ॥ जेसि नाम ग्गहणे पावपबंधा विलयंजति ॥ ७ ॥ सुलसा चदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयती ॥ नमयासुदरी सीया, नदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता, पउमावइ अजणा सिरी दे

वी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पभावई चिल्लणा देवी ॥ ए ॥ वंभी सुंदरी रुप्पिणि, रेवई कुंती सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धारिणी, कलावई पुप्फचूला य ॥ १० ॥ पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ॥ जंबूवइ सच्चभामा, रुप्पिणि कन्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेवभूअदिन्ना य ॥ सेणा वेणा रेणा, भयणीउ थूलिभद्दस्स ॥१२॥ इच्चाइ महासइउ, जयंति अकलंकसीलकलिआउ ॥ अजवि वजइ जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ ॥ इति सता सतीयोनी सद्याय ॥ ४ए ॥

॥ ५० ॥ अथ श्री मन्हजिणाणं सद्याय ॥

॥ मन्हजिणाणं आण, मिछं परिहरह धर सम्मत्तं ॥ छविह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ॥ सझाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिनथूणिणं, गुरुथुअ साहम्मिआणा वछल्लं ॥ ववहारस्स य सुद्धी, रहजुत्ता तिछजुत्ता य ॥ ३ ॥ उव

सम विवेक संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ॥ धम्मिअ जण ससग्गो, करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहु मानो, पुव्वय लिहण पभावणा तित्थे ॥ सट्ठाण किच्च मेअं नि च्च सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ अथ श्री तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंदु करजोड्य, जिनवरना मे मगल कोड्य ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निशदीस ॥ १ ॥ बीजे लाख अठाविश कह्या, त्रीजे बार लाख सर्दह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अठ लख धार, पाचमे वंदु लाख ज चार, ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दसमे वंदु शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमे त्रणशे सार, नवग्रैवेयके त्रणशे अठार ॥ पाच अणुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेविश सार, जिनवर भुवन तणो अधिकार ॥ लांबां शो जोजन विस्तार, पचास उचां बोहोतेर धार ॥ ॥ ५ ॥ एकशो एशी बिंब परिमाण, सभासहि

त एक चैत्ये जाण ॥ गो कोम वावन कोम स
भाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥ सा
तशें उपर साठ विशाल, सवि विंब प्रणमु
त्रण काल ॥ सात कोमि ने बोहोतेर लाख ॥
भुवनपतिमा देवल भाख ॥ ७ ॥ एकशो एं
शी विंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण
॥ तेरशे कोम नेव्याशी कोम, साठ लाख वंदूं
कर जोमि ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने उंगणसाठ, ति
र्छलोकमा चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं
हजार, त्रणशे वीश ते विंब जुहार ॥ ९ ॥
व्यंतर जोतिषिमां वली जेह शाश्वता जिनवर
वंदुं तेह ॥ रुषभ चंडानन वारिखेण, वर्द्धमान
नामे गुणश्रेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदूं जि
न वीश, अष्टापद वंदुं चोवीश ॥ विमलाचल
ने गढ गिरनार, आबु ऊपर जिनवर जुहारा
॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्री
अजित जुहार ॥ अतरीक वरकाणो पास, जीरा
वलो ने थंभण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पा
टण जेह, जिनवर चैत्य नमु गुणगेह ॥ विहर
मान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशि

दीस ॥ १ ३॥ अढीद्वीपमा जे अणगार, अ ढार सहस सिलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सु मिती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदुं गु णमणि माल॥नित नित ऊठी कीर्त्ति करूं,जीव कहे भवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥५२॥ अथ श्री सकलार्हत् ॥

॥ सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानं शिवश्रियः ॥ भूर्भुव स्वस्त्रयीशान, मार्हत्यं प्रणिदध्म हे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यभावै., पुनतस्त्रिजगज्ज न ॥ क्षेत्रे काले च सर्वस्मि, न्नर्हत समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं नि परि ग्रहम् ॥ आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुम ॥ ३ ॥ अर्हतमजित विश्व, कमलाकर भास्करम् ॥ अम्लानकेवलादर्श, सक्रांतजगतं स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वभव्यजनाराम, कुल्यातुल्या जयंतु ता ॥ देशनासमये वाच·, श्रीसंभवज गत्पते ॥ ५ ॥ अनेकांतमताभोधि, समुल्लास नचंद्रमा· ॥ दद्यादमंदमानंदं, भगवानभिनद न ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजिताङ्घ्रिन

खावलिः ॥ भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिम तानि वः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभप्रभोर्देह, भासः पु ष्णंतु व. श्रियम् ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटो पादिवारुणा. ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महें द्रमहितांघ्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघगगनाभो गभास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचि निचयोज्ज्वला ॥ मूर्त्तिर्मूर्त्तसितध्यान, निर्मितेव श्रियेऽस्तु व· ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल यन् केवलश्रिया ॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिःसुवि धिर्बोधयेऽस्तु व· ॥ ११ ॥ सत्त्वाना परमानंद, कंदोद्भेदनवाबुद· ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीत लः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ भवरोगार्त्तजंतुना, मगदकारदर्शन ॥ नि·श्रेयसश्रीरमण·, श्रे यास श्रेयसेऽस्तु व ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकी भूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मिति·॥ सुरासुरनरै· पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु व ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो वाच , कतकक्षोदसोदरा. ॥ जयंति त्रिजगच्चे तो, जलनैर्मल्यहेतव ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमण स्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंतां व·, प्रयछतु सुखश्रियां ॥१६॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,

मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ॥ चतुर्थं धर्मदेष्टारं, ध र्म्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्यो त्स्ना, निर्म्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः शान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु व. ॥ १८ ॥ श्री कुंथुनाथो भगवान्, सनाथोतिशयर्द्धिभिः ॥ सु रासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥ अरनाथस्तु भगवा, श्चतुर्थारनभोरवि ॥ चतु र्थपुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु व ॥ २० ॥ सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदम् ॥ कर्म्मद्रून्मू लनेहस्ति, मल्ल मल्लिमभिष्टुम ॥ २१ ॥ जग न्महामोहनिद्रा, प्रत्यूपसमयोपमम् ॥ मुनिसुव्र तनाथस्य, देशनावचनं स्तुम ॥२२॥ लुठतो नमता मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणम् ॥ वारिप्ल वाइव नमे , पातु पादनखाशव ॥२३॥ यदुवंश समुद्भूत कर्म्मकक्षहुताशन ॥ अरिष्टनेमिर्भ गवान्, भूयाद्भोऽरिष्टनाशन. ॥२४॥ कमठे धर णीडे च, स्वोचित कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यम नोवृत्ति पार्श्वनाथ श्रियेऽस्तु व ॥ २५ ॥ श्री मते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानं दसरोराज, मरालायार्हते नम ॥ २६ ॥ कृता

पराधेपि जने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्बाष्पार्द्र योर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥ जयति विजितान्यतेजा', सुरासुराधीशसेवित' श्रीमान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचुडामणिर्भगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिता', वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं नम ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे श्रीधृतिकीर्त्तिकांतिनिचय' श्रीवीरभद्रं दिश ॥ २९ ॥ अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानांदिव्यवैमानिकानाम् ॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां भावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ सर्वेषा वेधसामाद्य, मादिमं परमेष्ठितम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३१ ॥ देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहापापप्रदीपानलो, देव'सिद्धिवधूविशाल हृदयाऽलंकारहारोपम ॥ देवोष्टादशदोषसिंधुरघटानिर्भेदपचाननो, भव्यानां विदधातु वाञ्छितफलं श्रीवीतरागो जिन' ॥ ३२ ॥ ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपद सम्मेतशैलाभिध', श्रीमान् रैव

तकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंडपः ॥ वैभारः कनकाचलोऽर्बुदिगिरिः श्रीचित्रकूटादय, स्तत्र श्रीऋषभादयोजिनवराः कुर्वंतु वोमंगलम्॥३३॥

॥ ५३ ॥ अथ श्री अजितशांतिस्तवन ॥

॥ अजिअं जिअसव्वभयं, संति च पसंत सव्वगयपावं ॥ जयगुरु संति गुणकरे, दोविजि णवरे पणिवयामि ॥१॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल भावे, तेहिं विउल तवनिम्मल सहावे॥ निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिठ सब्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्वदुक्खप्पसंतीण, सव्व पावप्पसं तिण॥ सया अजियसंतीण, नमो अजिअसं तिण ॥३॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पव त्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तहय धिइ मइ प्पवत्तण, तवय जणुत्तम संतिकित्तण ॥४॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अजिअ निचिअं च गु णेहिं महामुणि सिद्धिगय ॥ अजिअस्स य स ति महामुणिणोवि अ संतिअरं, संयय मम नि वुइ कारणयंचनमंसणय ॥ ५ ॥ आलिंगणयं॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइअ विमग्गह सु

रकारणं ॥ अजिअं संतिं च भावउ, अभ यकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अ रइ रइतिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुड भुअगवइ पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महमविअ सुनय नय निउण मभय करं, सरण मुवसरिअ भुवि दिविजमहिअं सयय मुवणमे ॥७॥ संगययं ॥ तंच जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंतिविमु त्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, सति मुणी मम संति समाहिवरं दिसऊ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्थ विहिन्न सथिअं, थिर सरिच्छ वच्छं मयगल लीलायमान वर गंध हत्थि पत्थाण प त्थियं संथवारिहं॥हत्थिहत्थ बाहुं धंतकणग रुअ ग निरुवहय पिंजर, पवर लक्खणो वचिअ सो मचारु रूवं, सुइ सुहमणाभिराम परम रमणि ज्ज वरदेव दुंदुहि निनाय महुरयरय सुहगिरं ॥९॥ वेढ्ढउ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ स व्वभयं भवो हरिउ ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासालु-हउ ॥ कुरु

जणवयदक्खिणाउर, नरीसरो पढमं तउ महाच क्कवट्टिओए महप्पभावो, जोबावत्तरि पुरवर सह स्स वर णगर निगम जणवय वइ,बत्तीसा राय वर सहस्साणुजाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण नव महानिहि चऊसठि सहस्स पवर जुवइण सुदरवइ, चुलसी हय गय रह सयं सहस्स सामी, छन्नवइ गाम कोडि सामी आसिज्जो भा रहमि भयव ॥ ११ ॥ वेढ्ढउ ॥ त संतिं संतिअरं संतिणं सव्व भया ॥ संति थुणामि जिणं, संतिं विहेउमे ॥ १२ ॥ रासानंदिअय ॥ इक्खाग' वि देहनरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अ जियउत्तम तेअ गुणेहि महामुणि,अमिअबला विऊलकुला ॥ पणमामि ते भवभय मूरण, जग सरणा मम सरणं॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दा णविद चंद सूरवद दठ तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दं तपति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअ विंदधेअ सवलोअ भाविअप्पभाव णे अ पईअसमे समाहि ॥ १४ ॥ नारायउ ॥

विमल ससिकलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर क लाइरेअ तेअं ॥ तिअसवइ गणाइरेअ रूवं, धरणीधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुम लया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अवले अजिअं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस थु णामि जिणमजिअं ॥ १६ ॥ भुअंगपरिरिंगि अं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, ते अ गुणेहि पावई न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणे हिंपावइ नतं तिहसगणवइ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई, ॥१७॥ खिज्जिअयं ॥ तिठवर पवत्तयं तमरयरहिअं धीरजण थु अ चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयउं, संतिमहं महामुणिं सरण मुवण मे ॥ १८ ॥ ललिअय ॥ विणउंणय सिरिरय अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहा हिव धणवइनरवइ, थुअमहिअचिअं बहु सो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ, सप्पभंतवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमा ला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरगन

ज्ज गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवन ट्ठिआहिं ॥ हावभाव विब्भमप्पगारएहिं न च्चिउण अंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुवि क्कमाक्कमा ॥ तयंतिलोअ सव्व सत्त संतिकारय पसत्त सव्व पाव दोस मेस ह नमामि संतिमुत्त मं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउं ॥ छत्त चामर पमाग जूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सि रिवच्छ सुलक्खणा ॥ दीवसमुद्द मदिरदिसाग यसोहिया, सहिअवसहसीहणासिरिवच्छसुलंछ णा ॥३२॥ ललिअय ॥ सद्दावलंछा समप्पइछा, अदोस डछा गुणेहिं जिछा ॥ पसायसिछा तवे ण पुछा, सिरीइ इछा रिसीहि जुछा ॥३३॥ वा णवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्व लोअहिअ मूल पावया ॥ सथुआ अजिअसंति पायया, हुतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरातिका ॥ एवं तव वल विउल, थुअं मए अजिअ सति जिणजुअल ॥ ववगय कम्म रयमल, गय गयं सासय विमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ त बहुगुणप्पसाय, मुक्क सुहेण परमे

ण अविसायं ॥ नासेउ मेविसायं, कुणउ अ प
रिसाविअ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउअ
नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसा
विय सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं॥३७॥
गाहा ॥ पक्खिअ चाउमासे, संवछरिए अव
स्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग नि
वारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअ निसुण
इ, उभउ कालंपि अजिअ संतिथुयं॥न हु हुति
तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९॥ जइइ
छह परम पयं, अहवा कित्ती सुविछड़ा भुवणे॥
ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह॥४०॥

॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं ॥ ५३ ॥

॥ ५४ ॥ अथ श्री मोहोटी शांति ॥

॥ भो भो भव्या गृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व
मेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभा
जः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरीक्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥
भोभो भव्यलोका इहहि भरतैरावतविदेहसं
भवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकं पानं
तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा

घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सहसमागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शातिमुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः सपथा इति न व्यजनै सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधायशातिमुद्घोषयामितत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानतरमिति कृत्वा कर्णे दत्वा निशम्यतां निशम्यता स्वाहा ॥ ॐ पुण्याह पुण्याहं प्रीयंता प्रीयंता भगवतोर्हत सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकरा ॥ ॐ १ श्री ऋषभ,२ अजित,३ संभव,४ अभिनदन,५ सुमति, ६ पद्मप्रभ,७ सुपार्श्व,८ चद्रप्रभ,९ सुविधि,१० शीतल,११ श्रेयास,१२ वासुपूज्य,१३ विमल, १४ अनत,१५ धर्म्म,१६ शाति,१७ कुंथु,१८ अर,१९ मल्लि,२० मुनिसुव्रत,२१ नमि,२२ नेमि २३ वर्द्धमानाता २४ जिना शाता शातिकरा स्वाहा ॥ ॐ मुनयोमुनिप्रवरा रिपु [illegible] वो नित्यं [illegible] कीर्त्ति, कार्ति,

बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या साधन, प्रवेग निवग नेषु ॥ सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रांशृंखला, वज्रांकुशी, अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गोरी, गांधारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरुट्या, अच्छूप्ता, मानसी, महामानसी, (एता) षोडश विद्यादेव्यो रक्षतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य ॥ श्रीश्रमणसंघस्य ॥ शांतिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिता सलोकपालाः सोमयमवरुण कुबेर वासवादित्यस्कंद विनायकोपेताः येचान्येपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्तेसर्वे प्रीयंतांप्रीयंताम् ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारानर पतयश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र, मित्र, भ्रातृ, कलत्र, सुहृद्, स्वजन, संबंधि, बंधुवर्ग, सहिताः नित्य चामोदप्रमोदकारिणो भवतु अस्मिंश्च भूमंडलायतननिवासीनां साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणा रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि पु

ष्टि ऋद्धि, वृद्धि, मांगल्योत्सवा· ॥ सदा प्रादु र्भूतानि पापानि शम्यंतु दुरितानि ॥ शत्रव· पराङ्मुखा भवतु स्वाहा ॥ श्रीमते शांतिना थाय,नम· शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामरा धीश, मुकुटाभ्यर्चिताह्वये ॥ १ ॥ शांति शांति कर· श्रीमान्, शांति दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट, ग्रहगति दु·स्वप्न दुर्निमित्तादि ॥ संपादितहित संप, नामग्रहणं जयति शांते· ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराजसन्नि वेशानाम् ॥ गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याह रेच्छांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु श्रीजनपदाना शा तिर्भवतु ॥ श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु ॥ श्री राजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीगोष्ठिकाना शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरमुख्याना शांतिर्भवतु ॥ श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ ह्रीं श्री श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्नात्राद्यवसानेषु ॥ शांतिक लशं गृहीत्वा,कुंकुम चंदन कर्पूरागरु धूप वास

कुसुमांजलिसमेतः ॥ स्नात्रचतुष्किकाया श्री संघसमेतः शुचिशुचिवपु. पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृत, पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा ॥ शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति॥ नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्ष, सृजंति गायंति च मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगत', परहितनिरता भवंतु भूतगणा ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तित्थयरमाया शिवादेवी तुम्हनयर निवासिनी ॥ अम्हशिवं तुम्ह शिवं अशिवोपशमंशिवं भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं याति, छिद्यंते विघ्नवल्लय' ॥ मन. प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व मंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधान सर्वधर्माणा, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति श्री बृहच्छांति स्तव संपूर्ण ॥ ५४ ॥

॥५५॥ अथ श्री संतिकरस्तवन ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं ॥ समरामि भत्त पालग, निव्वाणी ग

रुडक्कय सेव ॥ १ ॥ ॐ सनमो विप्पोसहि पत्ता ण संति सामिपायाणं, ॐ स्वाहा मतेणं, सव्वा सिवडुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐ सति नमुक्कारो, खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताण ॥ सौ ॐ नमोस व्वो सहि, पत्ताण च देइसिरीं॥३॥वाणी तिहुअ ण सामिणि, सिरि देवी जक्करायगणिपिडगा ॥ गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणच न्ते ॥ ४ ॥ रक्खतु मम रोहिणी, पन्नतीवज्जासिख ला सया ॥ वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गधारी महजाला माणवीअ वइरुट्टा ॥ अच्चुत्ता माणसिया, महा माणसियाउ देवीउ ॥ ६ ॥ जक्का गोमुह मह जक्का, तिमुह जक्केस तुवरू कुसुमो ॥ मायगो वि जयाजिय, बंभो मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह पयाल किन्नर, गरुलो गंधव्व तहय ज क्खिदो ॥ कुवेर वरुणो भिउडी, गोमेहो पासमा यगो ॥ ८ ॥ देवीउ चक्केसरि, अजिआ डरिआ री कालि महाकाली ॥ अच्चुअ सता जाला, सु तारयासोय सिरिवच्छा ॥ ९ ॥ चडा विजयंकुसि प, नइति निव्वाणि अच्चुआ धरणी ॥ वइरुट्ट वुत्त

गंधा, रिअंव पउमावईसिद्धा ॥१०॥ इअ तिउ रक्कण रया, अन्नेवि सुरासुरी चउहावि ॥ वंतर जोइणी पमुहा, कुणंतु रक्कसया अम्हं॥११॥ एवं सुद्दिठि सुरण, सहिउं संघस्स संति जिण चंदो ॥ मऊवि करेउ रक्क, मुणिसुंदर सूरियुअ महिमा ॥ १२ ॥ इअ संतिनाह सम्म, द्दिठि रक्क सरइ ति कालं जो ॥ सवोवद्दवरहिउं, स लहइ सुहसंपयं परम ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिणयर, जुगवर सिरिसोमसुंदरगुरुणं ॥ सुपसाय लद्धगणहर, विद्यासिद्धिभणइसीसो ॥१४॥ इति श्रीसतिकरस्तवनम् ॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥ अथ पाक्षिकादि अतिचार ॥

॥ नाणमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इय एसो पंचहा भणिउं ॥ १ ॥ ज्ञानाचार दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार ॥ ए पंचविध आचारमाहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, बादर, जाणता अजाणतां हुउं होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायाये करीतस्स मिछामिदुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारें आठ अतिचार ॥ कालेवि णए वहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वज ण अत्थ तदुभए अठविहोनाण मायारो॥ १ ॥ ज्ञान काल वेलाये भण्यो गुण्यो नहि अकाले भण्यो, विनयहीन, वहुमानहीन, योगउपधान हीन, अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो, देव गुरु वादणे, पडिक्कमणे, सद्याय करतां भणता, गुणता, कूमो अक्षर कानेमात्रायें अधिको उंगो भण्यो, सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तदुभ य कूडां कह्यां, भणीने विसार्यां, साधु तणे धर्म काजे काजो अणउ ऊरया दाडो अणपमिलेहे, वसति अणगोधे, अणपवेसे, असझाइ, अणो झाइमाहे श्री दशवैकालिकप्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, श्रावकतणे धर्मे थिविरावलि, प डिक्कमणा, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, काल वेला काजो अणउऊखे पढियो ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सापडा सापडी, दस्तरी, वही, उंलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूक लाग्यु, थूके करी अक्षर माज्यो, उंशीसे

धर्यो, कने व्रता आहार निहार कीधो, ज्ञानद्र व्य भक्ता उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधे विणसतो विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो, व्रती शक्तियें सार सभाल न कीधी, ज्ञानवतप्रत्यें द्वेष, मत्स र, चिंतव्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोइ प्रत्ये भणता गणतां अंतराय कीधो, आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मन. पर्यवज्ञान, केवल ज्ञान ए पंच ज्ञान तणी असद्दहणा कीधी- कोइ तोतलो वोवडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचार व्रत विषइउं अ नेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय,निव्वितिगिछा अमूढदिठीअ ॥ उववू ह थिरीकरणे, वछल प्पभावणे अठ ॥१॥ देव गुरू धर्म तणे विषे नि शंकपणुं न कीधुं तथा ए कात निश्चय न कीधो धर्म संबंधीया फल तणे विषे नि संदेह बुद्धि धरी नही साधु साधवीना मल मलिन गात्र देखी डुगछा निपजावी कुचा रित्रीया देखी चारित्रीयाऊपर अभाव हुउं. मि

ध्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणु कीधुं तथा संघमाहे गुणवंत तणी अनुपवृहणा कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति निपजावी, अवहुमान कीधुं तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो उती शक्तिये सार संभाल न कीधी तथा साधर्मिक साथें कलह कर्मवध कीधो अधोती, अष्टपड मुखकोश, पाखे देव पूजा कीधी विवप्रत्ये वासकूपी, धूपधाणुं कलगतणो उवको लाग्यो विव हाथथकी पाडयु उसास नि सास लाग्यो, देहरे, उपासरे, मलश्लेष्मादिक लोह्यु देहरामाहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार निहार कीधा, पान, सोपारी, निवेदीया खाधा उवणहारी हाथथकी पाडी, पडिलेहवुं विसाख्यु, जिनभुवने चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी होय, गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युनही ॥ [illegible] २५ अनेरो जे [illegible] अतिचार

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहि समिईहि तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ १॥ ईर्या समिति ते अणजोए हिड्या, भाषासमिति ते सावद्य वचन बोल्या, एषणा समिति ते तृण, मगल, अन्न, पाणी, अमूछतु लीधु, आदानभंडमत्तनिखेवणा समिति ते अशन शयन, उपकरण मातरुं प्रमुख अणपूजी जीवाकुलभूमिकाये मूक्युं लीधुं, परिष्ठापनिकासमिति ते मल, मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजि जीवाकुल भूमिकायें परठव्युं मनोगुप्ति, मनमा आर्त्त रौद्रध्यान ध्यायां, वचनगुप्ति, सावद्य वचन बोल्यु, कायगुप्ति ते शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा, ए अष्टप्रवचन माता ते, सदैव साधुतणे धर्मे अने श्रावकतणे धर्मे, सामायिक पोसह लीधे, रूडीपरे पाल्या नही, खंडणा विराधना हुइ ॥ चारित्राचार व्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस माही सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणता हुउं होय, ते सवि हु मने,वचने,कायाये करी तस्समिछामि

विशेषत श्राकतणे धर्मे श्रीसम्यकत्व मूल वारव्रत, सम्यक्त्व तणा पाच अतिचार ॥ शका कखविगिछा० ॥ शंका श्रीअरिहंत तणा बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गाभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयाना चारित्र, श्रीजिनवचन तणो सदेह कीधो ॥ आकाश ! ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी जूजूआ देव, देहरा ना प्रभाव देखी रोग आतककष्ट आवे इह लोकपरलोकार्थे पूज्या मान्या, सिद्ध विनायक जी राउलाने मान्यु, इव्यु, बौद्ध, साख्यादिक सन्यासी, भरडा, भगत, लिंगिया, जोगीया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मत्र, चमत्कार देखी परमार्थ जाणयाविना भूलाव्या, मोहिया कुशास्त्र शीख्या, साभल्या श्राद्ध, सवछरी, होली, वलेव, माहिपूनम, अजापमवा, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायकचोथ, नागपाचमी, झूलणाग्ठ, शीलसातमी, ध्रुवआठमी,

नौली नोमी, अहवा दशमी, व्रतअग्यारशी, वछवारशी, धनतेरशी, अनंतचउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण नैवेद्य कीधां. नवोदक, याग, भोग, उतारणा कीधां, कराव्या अनुमोद्यां. पिपले पाणी घाल्या, घलाव्या, घरबाहिर क्षेत्र, खले, कूवे, तलावे, नदीये, ऊहे वाविये, समुद्रे, कुंडे, पुण्यहेतुस्नान कीधां, कराव्या अनुमोद्या. दान दीधां, ग्रहण, शनिश्चर माहमासें नवरात्रि, नाहायां अजाणना आप्यां अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधा; कराव्यां ॥ विति गिछा धर्म संबंधीया फलतणे विषे संदेह कीधो जिन अरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुणभणी न मान्या, न पूज्या, महासती, माहात्मानी इहलोक परलोक संबधी या भोग वांछित, पूजा कीधी, रोग, आतंक कष्ट आवे खीण वचन भोग मान्या, माहात्मानां भात, पाणी, मल शोभातणी निंदा कीधी, कुचारित्रिया देखी, चारित्रिया उपर कुभाव हुउं, मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी, दा

र, भूमिसंबंधी लेहणे देणे व्यवसायें वाद वढ वाम करता मोटकुं जूठुं बोल्या हाथ पग तणी गाल दीधी करडका मोड्या मर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइ उं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ३ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमण व्रते पाच अतिचार ॥ तेनाहडप्पयोगे० ॥ घर बाहिर खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी बावरी, चोराइ वस्तु मोललीधी, चोर धाडप्रत्यें संकेत कीधो तेहने सबल दीधु तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्धराज्यातिक्रम कीधो नवा, पुराणा, सरस विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना भेल सं भेल कीधा कूडे काटले, तोले, माने, मापे, व होरा दाणचोरी कीधी, किणहीने लेखे वरांस्यो साटे लाच लीधी कूडो करहो काढ्यो विश्वासघात कीधो. परवचना कीधी पाशंग कूडा कीधा झाझी चढावी. लहके त्रहके कूडा काटला मान, मापा कीधा माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वची किणहीने दीधु जूदी गाठ कीधी, थापण उलवी किणहीने लेखे पलेखे

भूलव्युं पमी वस्तु उंलवीलीधी ॥ त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ८ ॥

चोथे स्वदारासंतोष. परस्त्री गमन विरमण व्रतें पाच अतिचार ॥ अपरिग्गहीया इतर०॥ अपरिगृहीतागमन इत्वर ॥ अपरिगृहीता गमन कीधुं विधवा, वेश्या परस्त्री, कुलागना,स्वदारागोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कधो. सराग वचन बोल्या. आठम, चउदश, अनेराइ पर्व तिथें नियम लइ भांग्या घरघरेणा कीधा करावयां वर वहू वखाण्या कुविकल्प चिंतव्यो अनंग क्रीडा कीधी, स्त्रीना अगोपांग निरख्या पराया विवाह जोड्या. ढिगला ढिगली परणावया कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नातरें हुआ कुस्वप्न लाधा नट, विट, पुरुषाशु हासु कीधु॥चोथा स्वदारासंतोषव्रतविषयिउं अनेरा जे कोइ अतिचार पक्ष०॥४॥

पाचमे स्थूल परिग्रह परिमणव्रते पांच अतिचार॥ खित्तवहू०॥धन, धान्य

वस्तु, रूप्प, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरात वृद्धि देखी मूर्छालगे सक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधु नही, लेइने पढिउं नही पढिउ विसार्युं. अ लीधुं मेल्यु नियम विसर्या ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अति चार पक्ष दिवसमाहि० ॥ ५ ॥

छठें दिग्परिमाणव्रते पाच अतिचार ॥ गम णस्सय परिमाणे० ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशियें जावा आववातणा निमम लेइ भाग्या अनाभोगे विस्मृत लगे अधिक भुमि गया पाठवणी आघी पाछी मोकली वहाण व्यवसाय कीधो वर्षाकालें गामतरू कीधुं, भु मिका एकगमा संखेपी,बीजीगमा वधारी ॥ छठे दिगपरिमाणव्रतविषयिउं अनेरो जे कोइ अ तिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ६ ॥

सातमे भोगोपभोग विरमण व्रते भोजन आश्री पाच अतिचार अने कर्महुती पदर अ तिचार एव वीश अतिचार॥सच्चित्तेपडिबद्धे० ॥

सचित्त नियम लीधे, अधिक सचित्त लीधुं ॥ अपक्काहार, डुपक्काहार, तुछोषधि तणुं भक्षण कीधुं. उंला, उंबी, पोक, पापडी कीधा ॥ सच्चित्त दव्वविगइ, पाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभदिसि न्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनगतरात्रिगत लीधा नहीं लेइने भाग्या. बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमाहि आडुं, मूला, गाजर, पिंड, पिंडालू, कचुरो, मूरण, कुलि आवली, गलो, वाघरडा खाधा. बाशी, कठोल, पोली, रोट, ली त्रण दिवसनु उंदन लीधु मधु, महुडा, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवडा, अजाण्या फल, टिंबरु, गुदां, महोर अथाणुं, आमणवोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, काचा कोठिंबडा खाधां रात्रि भोजन कीधो लगभग वेलायें व्यालुं कीधुं. दिवस विणउगे शीराव्या तथा कर्मत पंदरक र्मादान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडिकम्मे, भाडिकम्मे, फोडिकम्मे, ए पांचकर्म ॥ दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे,

विसवाणिज्जे, ए पाच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लण कम्मे, निल्लछणकम्मे, दवग्गि दावणया, सर दह तलाय सोसणया, असइ पोसणया, ए पाच सामान्य, ॥ ए पांच कर्म्म, पाचवाणिज्य पाच सामान्य, एवं पदर कर्मादान बहुसावद्य, महारंभ, रागण, लीहाला, कराव्या. इट, नि भामा पचाव्या धाणी, चणा पक्कान्न करी वेच्या वाशी माखण तपाव्या तिलवहोरया फागण मास उपरात राख्या दलीदो कीधो. अगीठा कराव्या श्वान, बिल्लाडा, शूडा, सालहि, पोश्या अनेरा जे काइ बहु सावद्य खरकर्मादिक समा चरया वाशीगार राखी लीपणें, धूपणे, माहा रंभ कीधो अणशोध्या चूला सधूक्या घीतेल, गोल, गाश तणाभाजन उघाडा मूक्या तेमाहि माखी, कुति, उदर, गिरोली पडी कीडी, चढी तेनी, जयणा न कीधी ॥ सातमे भोगोपभोग विरमणव्रतविषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि० ॥ ७ ॥

आठमे अनर्थदंड विरमणव्रतें पाच अति चार ॥ कदप्पे कुक्कुए० ॥ कदर्प्पलगे विटचेष्टा,

हास्य, खेल, कूतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव भाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राज कथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी. पराइ वात कीधी तथा पैशुन्यपणुं कीधुं,आर्त्त रौद्रध्यान ध्यायां. खामां, कटार, कोश, कुहाडा, रथ उखल, मुशल, अग्नि, घरटी, निसाह, दातरडां, प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण लगें माग्यां आप्यां पापोपदेश दीधो अष्टमी चतुर्दशीये खांडवा दलवा तणानियम भाग्या. मूरखपणा लगे असंबद्ध वाक्य बोल्या. प्रमादाचरण सेव्या अंघोले नाहणे, दातणे, पग धोअणे, खेलपाणि, तेल अकिध गांठ्यां ऊलणे ऊल्या जूवटें रम्या, हिंचोले हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोया, कण कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां कर्कश वचन बोल्यां, आक्रोश कीधा, अबोला लीधा. करकडा मोड्या मछर धर्यो संजेडा लगाड्या. सराप दीधा. भेसा, शाढ, हुडु, कूकडा, श्वानादिक जुझाव्या, जूझता जोया. खादिलगें अदेखाइ चितवी, माटी, मीठुं कण, कपाशीया, काजविण चाप्या तेउपर बेठा.

आली वनस्पति खुंदी, सुइ शस्त्रादिक निपजा व्या घणी निद्रा कीधी राग द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वाधी एकने मृत्यु हानी वाधी ॥ आठमे अनर्थ दंडविरमणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि ॥ ८ ॥

नवमे सामायिकव्रते पाच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट, दोहट्ट, चितव्यु सावद्य वचन बोल्या. शरीर अणपडिलेह्यु हलाव्युं ठती वेलाये सामायिक न लीधु सामायिक लेइ उघाडे मुखे बोल्या उंघ आवी, वात विकथा घरतणी चिंता कीधी वीज दीवा तणी उज्जोहि हुइ, कण कपाशीया, माटी, मीठु, खडी, धावडी, अरणेटो पापाण प्रमुख चाप्या, पाणी, नील, फुल, सेवाल हरीयकाय, बीयकाय, इत्यादिक आभड्या, स्त्री तिर्यंच् तणा निरतर परस्पर संघट्ट हुआ, मुहुपत्तियो सघट्टि, सामायिक अणपूर्युं पाखु, पारवु विसाखु ॥ नवमे सामायिकव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस ० ॥ ९ ॥

दशमे देशावगाशिकव्रते पाच अतिचार ॥

आणवणे पेसवणे०॥ आणवणप्पउंगे, पेसवण प्पउंगे, सद्दाणुवाई रूवाणुवाई, वहिया, पुग्गल पक्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहे वाहेरथी कांई अणाव्युं आपण कन्हेथकी वाहेर काइ मोक ल्यु अथवा रूप देखामी, कांकरो नाखी, साद करीआपपणुं वतु जणाव्युं ॥ दशमे देशावगा शिक व्रत विपयिउं अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि० ॥ १० ॥

इग्यारमे पोपधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि० ॥ अप्पडि लेहिय डुप्पडि लेहिय सज्जासंथारए ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडि लेहिय उच्चार पासवण भूमि ॥ पोसह लीधे सं थारा तणी भूमि न पूंजी. वाहिरला लहुडा वडा स्थंडिल दिवसें शोध्यां नही. पडीलेह्यां नही मातरूं अणपूंज्युं हलाव्युं अणपूंजी भू मिकाये परठव्युं परठवतां "अणुजाणहजस्स ग्गो" न कह्यो. परठव्या पूठें वारत्रण "वोसिरे वोसिरे" न कह्यो. पोसह सालामांही पेसतां "निसिही" निसरता "आवस्सहि" वार त्रण भणी नही. पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति,

त्रसकाय तणा संघट्टपरिताप, उपद्रव, हुआ. संथारा पोरिसी तणो विधि भणवो विसार्यो. पोरिसीमाहे उठ्या अविधें संथारोपाथर्यो पारणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलाये देव न वाद्या पडिक्कमणु न कीधु पोसह असूरों लीधो सवेरो पाख्यो पर्वतिथे पोसह लीधो नही॥ इग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषयिउं अनेरो जे कोई अतिचार पढ ० ॥ ११॥

बारमेअतिथिसंविभाग व्रते पाच अतिचार॥ सच्चित्ते निक्खिवणे ० ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपरठता महात्मा महासती प्रत्ये असूझतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धे असूझतुं फेडी सूझतु कीधु, देवानी बुद्धे परायु फेडी आपणुं कीधुं, अणदेवानी बुद्धे सूझतु फेडी असूझतु कीधुं, अणदेवानी बुद्धे आपणु फेडी परायु कीधु, वहोरवा वेला टली रह्या, असूरे करी महात्मा तेड्या मठर धरी दान दीधु, गुणवंत आवे भक्ति न साचवी, ठती शक्ते साहम्मी वात्सल्य न कीधु अनेराई धर्मक्षेत्र सीदाता ठती शक्तियें उद्धरया नही, दीन हीण प्रत्यें अनुकंपादान न दीधु॥

वारमे अतिथिसंविभागव्रत विषयिउं अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १२ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पउंगे, परलोगासंपप्पउंगे, जीवियासंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे कामभोगासंसप्पउंगे ॥ इहलोके धर्मना प्रभावलगें राजऋद्धि, सुख,सौभाग्य,परिवार, वांछ्यां परलोकें देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्ति तणी पदवी वांछी, सुख आवे जीवितव्य वाछ्युं, दुःख आवे मरण वाछ्युं, काम भोग तणी वाछा कीधी ॥ संलेषणाव्रत विषयिउं अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १३ ॥

तपाचार बार भेद छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसण मूणोयरिआ० ॥ अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथें छती शक्तियें कीधो नहीं, ऊणोदरीव्रत ते कोलिया पांच सात ऊणा रह्या नही, वृत्तिसंक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुनो सक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग तथा विगयत्याग न कीधो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट कस्या नही, संलीनता अंगोपांग संकोची राख्या नहीं-

पच्चक्खाण भांग्यां,पाटलो भगभगतो फेड्यो नहीं, गठसी, पोरसी, साढ्ढपोरिसि, पुरिमड्ढ, एकासणुं, बेआसणुं नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवुं विसार्युं, बेसता नवकार न भण्यो, उठता पच्चक्खाण करवुं विसार्युं, गंठसीउं भाग्यु, नीवी, आंबिल, उपवासादिक, तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन हुउं, बाह्य तप विषयिउं अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥ १४ ॥

अभ्यंतरतप ॥ पायछित्त विणउं० ॥ मन शुद्धें गुरु कन्हे आलोअणालीधी नहीं, गुरु दत्त प्रायश्चित्त तप लेखा शुद्धे पहुचाड्यो नही, देव, गुरु, सघ, साहम्मी प्रत्ये विनय साचव्यो नही, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं, वाचना, पृछना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथालक्षण पचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याया, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया, कर्म क्षय निमित्तें लोगस्स दशवीशनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यतर तप विषयीउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि० ॥ १५ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणगूहिअ बलविरउं० ॥ पढवे, गुणवे, विनय वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, काया तणु जतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडा पंचांग खमा समण न दीधां, वांदणा तणा आवर्त्तविधिसाचव्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणें बेठा, उतावलुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार विषयियो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष०॥१६॥

नाणाइअठ पइवय,समसंलेहणु पण पनरकम्मेसु बारस तव विरिअतिगं, चउवीसंसय अइयारा ॥१॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥ जिन प्रतिषेध अभक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीजभक्षण, महारंभ परिग्रहादिक कीधा, जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दह्या नही, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानक कीधं

कराव्यां, अनुमोद्यां होय, दिनकृत्यप्रतिक्रमण, विनय, वैयावच न कीधा, अनेरु जे कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय ॥ ए चिहु प्रकारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणता हुउं होय ते सवि हुं मने, वचने, कायाये करी तस्स मिछामि दुक्कडं ॥१८॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री समकित मूल बारव्रत, एकसो चोवीस अतिचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि सूक्ष्म, बादर, जाणता अजाणता हुउं होय ते सवि हुं मने वचने कायायें करी तस्स मिछामि दुक्कडं॥ इति श्रीश्रावकपक्खी, चोमासी, सवछरी अतिचार समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ अथ प्रभातना पच्चक्खाण ॥

॥५७॥ प्रथम नमुक्कार सहि मुठसहितुं ॥

॥ उग्गय सुरे, नमुक्कार सहिअं, मुठिसहिअ पच्चक्खाइ॥चउविहपि आहार, असणं पाण खाइम, साइमं॥अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे॥६७॥

॥५८॥ बीजुं पोरिसि, साड्ढपोरिसीनुं ॥

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुठिसहिअ, पच्चक्काइ॥ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि, आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणा भोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥५८॥

॥५९॥ त्रीजुं बीयासणा एकासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं, पोरिसि, मुठिसहिअं पच्चक्काइ ॥ उग्गए सूरे, चउविहंपि आहार, असणं, पाणं, खाइम, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेण दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं ॥ विगइउं पच्चक्काइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेण, पडुच्चमक्खिएण पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेण वियासणं, पच्चक्काइ तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, सागारियागारेणं,

आउंटण पसारेण, गुरु अभ्भुठाणेणं, पारिठा वणियागारेणं, महत्तरागारेण, सव्व समाहिव त्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा अलेवेणवा अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससिछेणवा, अ सिछेणवा, वोसिरे ॥ जो एकासणानुं पच्चक्काण करवुं होय तो, बियासणांने ठेकाणे एकासणं नो पाठ केहवो ॥ इति बियासणा एकासणानुं पच्चक्काण समाप्त ॥ ५९ ॥

॥६०॥ चोथुं आयबिलनु पच्चक्काण ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअ पोरिसिं, सा ढपोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चक्काइ ॥ उग्गए सूरे चउविहपि आहार, असण, पाणं, खाइमं, सा इमं, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पछन्नका लेण दिसामोहेण, साहुवयणेण महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण ॥ आयंबिल पच्चक्काइ ॥ अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, लेवालेवेणं गिहत्थसंसठेण,उक्खित्तविवेगेण, पारिठावणिया गारेण, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तिगारे ण ॥ एगासण पच्चक्काइ ॥ तिविहपि आहार असण, खाइम साइम ॥ अन्नत्थणाभोगेणं

सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटण प सारेणं, गुरुअब्भुठाणेणं, पारिठवणियागारेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पा णस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछे णवा, बहु लेवेणवा, ससिछेण वा, असिछे णवा॥ वोसिरे ॥ इति आयंबिलनुं पच्चखाण ॥ ६० ॥

॥६१॥ पांचमुं तिविहार उपवासनुं ॥

॥उग्गए सूरे,अब्भत्तठं पच्चखाइ ॥ तिविहंपि आहार, असणं, खाइमं, साइम ॥ अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पा णहार पोरिसि, साढ पोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चखाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पछन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं मह त्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेणवा, अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे ॥ इति तिविहार उपवासनुं पच्चखाण ॥ ६१ ॥

॥६२॥ छठ्ठुं चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अब्भत्तठ पच्चखाइ ॥ चउव्वि

दंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न त्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणियागा रेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति चउविहारउपवासनुं ॥ ६२ ॥

॥ अथ सांझनां पच्चक्काण ॥

तहा प्रथम बीयासण, एकासणं, आयं बिल, तिविहार उपवास, अने छठ जे करे तो तेणे पाणहारनुं पच्चक्काण करवुं ते आवी रीते—

॥६३॥पाणहार दिवसचरिम पच्चक्काइ ॥ अन्नत्थ णाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरे ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥६४॥ बीजुं चउविहारनुं पच्चक्काण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चक्काइ॥ चउविहंपि आ हार, असण, पाण, खाइम, साइम ॥ अन्नत्थणा भोगेण, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वस माहिवत्तियागारेण, वोसिरे ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥६५॥ त्रीजु तिविहारनुं पच्चक्काण ॥

॥ दिवस चरिम पच्चक्काइ॥तिविहंपि आहा रं, असण, खाइम, साइम, अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति

यागारेणं, वोसिरे ॥ इति तिविहारनुं ॥ ६५ ॥

॥६६॥ चोथुं डुविहारनुं पच्चख्काण ॥

॥दिवस चरिमं पच्चख्काइ ॥ डुविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेण, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागागारेण वोसिरे इति ॥ ६६ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगासियनु पच्चख्काण करवुं तेनो पाठ कहे छे ॥

॥६७॥ देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चख्काइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरे ६७

॥६८॥ छठु पोसहनुं पच्चख्काण ॥

॥ करेमि भंते पोसहं, आहारपोसहं देसउं सव्वउं, सरीर सक्कार, पोसहं सव्वउं, बंभचेर पोसहं सव्वउं, अव्वावारपोसहं सव्वउं, चउव्विहे पोसहं ठामि ॥ जाव दिवस अहोरतं पज्जुवासामि ॥ डुविहं तिविहेणं ॥ मणेण, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति पच्चखाणानि संपूर्णानि ॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥ अथ पोसह पारतां गाथा ॥

॥ सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो ॥ जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीविअं तेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवाय ॥ जेसि पसंसइ भयवं, दढवय त महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधे लीधउं विधे पारीउं विधि करता जे कोइ अविधि हुउं होइ, ते सवि हुं मने वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ६९ ॥

॥ ७० ॥ अथ संथारापोरिसी ॥

॥ निसिही निसिही निसिही ॥ नमो खमासमणाणं, गोयमाइणं ॥ महामुणीणं ॥ ए पाठ तथा नवकार तथा करेमि भंते समाइअ ॥ एटला सर्व पाठ त्रण वार कहीने ॥ अणुजाणहजिठिज्जा ॥ अणुजाणह परमगुरू, गुरुगुणरयणेहि मंडियसरीरा ॥ बहुपडिपुन्नापोरिसि, राइय संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं बाहुवहाणेण वामपासेण ॥ कुक्कुडिपायपसारण अतरत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ संडासा, उवट्टते अ काय पडिलेहा ॥ दव्वइ उ

गोमे सासउं अप्पा, नाण दंसण संजुउं॥सेसा मे वाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खण ॥ १२ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता डुक्खपरपरा ॥ तम्हा सजोग सवंध, सव्वं तिविहेण वोसिरिअ॥१३॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीव सु साहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्त तत्त, इअ सम्मत्तं मए गहिअ ॥ १४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धह साख आलोयण ह, मुझह वइर न भाव ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा कम्म वस्स चउदह राज भमंत ॥ ते मे सव्व खमाविआ, मुझवि तेह खमंत ॥ १६ ॥ ज जं मणेण वद्ध, ज ज वाएण भासिअ पावं ॥ ज जं काएण कय, मिछामि डुक्कड तस्स ॥ १७ ॥

॥ इति सथारा पोरिसी ॥ ७० ॥

॥ अथ चैत्यवदन

॥ तत्र प्रथम सीमधरजिनचैत्यवदन ॥

॥ सीमधर परमातमा, शिव सुखना दाता ॥ पुक्खल वइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुडरीगिणी, नयरीये शोहे॥ श्री श्रेयास राजा तिहा, भविअणना मन मो

किन्नर कोडि सवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करती ना
टक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरम् ॥
निर्जरावली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥पुरु
रिक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि म
नहरम्॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सिद्धा॥नमो०
॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडि
नंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्ति रमणी वश्या रगे ॥ न
मो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक माही, विमल
गिरिवरतोपरम् ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति
कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शि
खर मडण, दुःख विहंडण ध्याईयें ॥ निज शुद्ध
सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइये ॥ ७ ॥
जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थित
जयकरम् ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मवि
जय सुहित करम् ॥ ८ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथ सिद्धाचलनुं चैत्यवदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्ध खेत्र, दीठे दुर्गति वारे॥
भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥ १ ॥
अनत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनोराय॥
पूर्व नवाणु ऋखभदेव, ज्या ठविआ प्रभुपाय

॥ २ ॥ सूरज कुंभ सोहामणो, कविड जक्ष अ
भिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं
प्रणाम ॥ ३ ॥ इति चैत्य० ॥ ७४ ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मानुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेसर परमातमा, पावन परमिष्ठ ॥
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे मे दिष्ठ ॥ १ ॥
अचल अकल अविकार सार, करुणा रसासि
धु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु
॥२॥ गुण अनंत प्रभु ताहारा ए, किमही क
ह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदा
नंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ७५ ॥

अथ सीमधर जिनस्तवनं ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे
जावजो ॥ मुज विनतडी, प्रेमधरीने एणि परे
तुमें संभलावजो ॥ ए आकणी ॥ जे त्रण्य भुव
ननो नायक छे ॥ जस चोसठ इंद्रें पायक छे॥
नाण दरिसण जेहने खायक छे ॥ सुणो०॥१॥
जेनी कंचन वरणी काया छे ॥ जस धोरी लंछन
पाया छे ॥ पुंडरीगिणि नगरीनो राया छे ॥ सु
णो० ॥ २ ॥ बार पर्षदामिहिं विराजे छे ॥ जस

चोत्रीश अतिशय गाजे छे ॥ गुण पांत्रीश वा णीए गाजे छे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥भविजनने ते प डिबोहे छे ॥ तुम अधिक शितल गुण शोहे छे॥ रूप देखी भविजन मोहे छे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीयो छुं ॥ पण भरतमा डुरे वसीयो छुं ॥ महामोह राय कर फसीयो छु ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिबचित्तमा धरीयो छे॥ तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयो छे ॥ पण काईक मुजथी मरीयो छे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंछे हुवे पूरो॥ कहे पद्मविजय थाउं शूरो ॥ तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवन ॥

॥ जशोदा मावडी ॥ ए देशी ॥

॥ जात्रा नवाणु करीये विमलगिरी ॥ जात्रा नवाणुं करिये ॥ ए आकणी ॥ पूरव नवाणुं वा र शेत्रुजगिरि, ऋखभ जिणद समोसरीये ॥ वि० ॥ १ ॥ कोडि सहस भव पातक त्रूटे॥शेत्रुं ज साहामो मग भरीये ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छठ दोय अठम तपस्या, करी चढीये गिरिवरीये ॥ वि० ॥ ३ ॥ पुडरीक पद जपीये हरखे, अध्य

वसाय शुभ धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अभव्यी न नजरे देखे, हिंसक पण उ०हरीये ॥वि०॥ ॥४॥ भुइं संथारो ने नारी तणो संग, दूरथकी परिहरीयें ॥वि०॥६॥ सचित्त परिहारीनें एकल आहारी, गुरु साथे पद चरीये ॥वि०॥७॥ पडिक्कमणा दोय विधिशुं करीयें,पाप पमल विखहरीयें ॥ वि०॥८॥ कलिकालें एतीरथमोटुं, प्रवहण जिम भव दरीए ॥वि०॥ए॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंता, पद्मकहे भव तरीये॥विमल०॥१०॥

॥ अथ श्री सि०हाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ आखडीये रे में आज, शत्रुंजो दीठोरे ॥ सवा लाख टकानो दहाडो रे, लागे मुने मीठो रे ॥ ए आकणी॥ सफल थयो मारा मननो ऊमाहो ॥ वाला मारा ॥ भवनो संशय भांग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीने लाग्यो रे ॥ शत्रुं० ॥ १ ॥ मानवभवनो लाहो लीधो ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपाने फूलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षीणा दीधी रे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥ दुधडे पखालीने केशर घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वरपूज्यारे ॥ श्रीसि,

ऽाचल नयणें जोता, पापमेवासि धुज्यारे ॥ श
त्रु०॥३॥ स्वयमुखसुधर्मा सुरपति आगे ॥वा०॥
वीरजिणंद इम बोले रे ॥ त्रण भुवनमा तीरथ
मोटु, नहि कोइ शत्रुजा तोले रे ॥शत्रुं०॥४॥
इंद्र सरीखा ए तीरथनी ॥ वा०॥ चाकरी चित्त
मा चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरज
कुडमा नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ काकरे काकरे
श्रीसिद्ध खेत्रे ॥वा०॥ साधु अनंता सीधा रे ॥
ते माटे ए तीरथ मोटु, उऽार अनंता कीधारे
॥शत्रु०॥६॥नाभिराया सुत नयणे जोता ॥वा०॥
मेह अमीरस वूठ्यारे ॥ उदयरतन कहे आज
मारे पोते, श्रीआदीश्वर तूठ्यारे ॥ शत्रु० ॥७॥
इति स्तवनं ॥ ८० ॥

॥ अथ श्रीशखेश्वरपार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ शखेश्वर पासजी पूजिये, नरभवनो ला
हो लीजिये ॥ मन वछित पूरण सुततरु, जय वा
मासुत अलवेसरु॥१॥ दोय राता जिनवर अति
भला, दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय
लीला दोय सामल कह्या, शोले जिन कचन व
र्ण लह्या ॥२॥ आगम ते जिनवरें भाखीयो, ग

णधर ते हीयमे राखीयो॥ तेहनो रस जेणे चाखी यो, ते हुउं शिव सुख साखीयो ॥ ३ ॥ धरणी धर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणा गुण गाव ती ॥ सहु संघना संकट चूरती, नयविमलना वंछित पूरती ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥ ८५ ॥

॥ अथ शिखामण सझाय ॥

॥ जीव वारुं छुं मोरा वालमां, परनारीथी प्रीति म जोम ॥ परनारीनी सगत नही भली, तारा कुलमा लागशे खोड ॥ जीव० ॥ १ ॥ जीव आ ससार छे कारमो, दीसे छे आल पंपाल॥ जीव एहवुं जाणी चेतजो, आगल माठीमे नाखी छे जाल ॥ जी० ॥ २ ॥ जीव मात पिता भाइ वेनडी, सहु कुटुंब तणो परिवार ॥ जीव वेती वारे सहु सगु, पछे लांबा कीधा छुहार ॥ जीव० ॥ ३ ॥ देहली लगें सगो आगणो, शेरीअ लगें सगीमाय ॥ जीव सीम लगे साजन भलो, पछें हस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥ जीव जाता थकां नवि जाणीयुं, नवि जाण्यो वार कुवार ॥ जीव गाडुं भरीयुं ईंधणे, वली खोखरी हाडलीसार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठ

म पाखि न उंलखी, जीव वहुला कीधा पाप जीव सुमतिविजय मुनि एम भणे, जीव आ वागमण निवार ॥ जीव० ॥ ६ ॥ इति ॥ ८७॥

॥ अथ श्री अनाथी मुनिनी सद्याय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखीयो मुनि ए कत॥वररूप काते मोहीउं, राय पूछे ए कहोनें विरतत ॥ १ ॥ श्रेणिक राय हुरे अनाथी नि ग्रथ ॥ तिणे मे लीधोरे साधुजीनो पथ ॥श्रेणि क० ॥ ए आकणी ॥ इणे कोसवी नयरी वसे, सुऊ पिता परिगलधन्न ॥ परिवार पूरें परिवर्यो, हु हुं तेहनो रे पुत्ररतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दिवस सुऊ वेदना, ऊपनी मे न खमाय ॥ मात पिता सहु झूरी रह्या, पण समाधि किणे नवि थाय, ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मणिउंरमी, चोरमी अवला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, कोणे न कीधी मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ वहु राज्य वैद्य वोलाविया, कीधला कोडि उपाय ॥ वावना चदन चरचिया, तोहिपण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ जगमाहि को केहनो न हीं, ते भणी हु रे अनाथ ॥ वीतरागना धरम सा

रिखो, नहीं कोइवीजो रे मुक्तिनो साथ ॥ श्रे०॥ ॥ ६ ॥ वेदना जो मुझ उपशमे,तो लेउं संजम भा र ॥ इम चितवता वेदन गई, व्रत लीधुं में हर्ष अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोडी राय गुण स्त वे, धन धन ए अणगार ॥ श्रेणिक समकित पामीयो, वादी पोहोतो रे नगर मझार ॥ श्रे०॥ ॥ ८ ॥ मुनि अनाथी गावतां तूटे कर्मनीकोड गणि समय सुदर तेहना, पाय वदे रे वे कर जोड॥श्रे०॥९॥इति अनाथीनी सद्याय ॥८८॥

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि

॥ प्रथम उंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मूकी श्रावक श्राविका कटासणुं, मुहपत्ती, चरवलो लेइ, शुद्ध वस्त्र, जग्या पूंजी, कटासणा उपरबे सी, मुहपत्ती डावा हाथमा मुख पासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी, एक न वकार गणी, पचिंदिअ कहीयें; अने जो आ गलथी ते स्थानके आचार्यप्रमुखनी स्थापना क रेली होय, तो तिहा पंचिंदिय न कहेवु,पछी इ छामि खमासमण देइ, इरियावहिया०तथा त स्स उत्तरी० अने अन्नत्थ उससीएणं कही,एक

लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, "इछाकारेण सदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ॥इछं"॥ एम कही मुहपत्ति तथा अगनी पडिलेहणना पच्चास बोल कही, मुहपत्ती पडिलेहीयें, पछी खमासमण देइ, "इछाकारेण सदिसह भगवन् सामायिक, सदिसाहुं ॥ इछ॥ कही खमा० इछा० ॥ सामायिक ठाउं, इछ" एम कही, बेहाथ जोडी, एक नवकार गणी, इछाकार भगवन् पसाय करी,सामायिक दडक उच्चरावो जी तेवारें वडिल, करेमि भंते कहे, पछी खमासमण देइ इछा० ॥ बेसणे सदिसाहुं ॥ इछं ॥ खमा०॥ इछ० ॥ बेसणें ठाउ ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इछा०॥ सज्झाय सदिसाहुं ॥ इछ ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ सज्झाय

(खमा० होय, त्या खमासमण देवु इच्छा० होय, त्या इच्छाकारेण सदिसह भगवन् कहेवु, तथा ए सर्व विधि जे लख्यो छे, ते स्थापनाजी सन्मुख क्रिया करवा आश्रयी समजवो, परतु साक्षात् गुरु विराजमान होय तो इच्छाकारेण सदिसह भगवन् सज्झाय सदिसाहु, एम शिष्य कहे तेवारें गुरु कहे "सदिसह" तथा इरियावहि पडिक्कमवाना आदेशमा गुरु "पडिक्कमेह" कहे, एम सर्व स्थानके समजी लेवु)

करुं ॥ इछं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा॥ पछी चे घडी सज्झाय धर्मध्यान करवुं॥इति॥९६॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ॥ इरियावहिपडिक्कमवाथी यावत्लोगस्स सुधी कही ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ मुहपत्ती पडीलेहुं एम कहीमुहपत्ती पडिलेही, खमासमण देइ ॥ इछा० ॥ सामायिक पारुं ॥ यथाशक्ति ॥ वली खमा० इछा० ॥ सामायिक पार्युं ॥तहत्ति॥ कही पछी जमणो हाथ चरवला उपर अथवा कटासणाउपर थापी एक नवकार गणी " सामाइयवयजुत्तो " कहियें ॥ पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणी उठवुं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि समाप्त ॥ ९७ ॥

॥ अथ पाच्चरकाण परवानो विधि ॥

॥ प्रथम "इरियावहियाए" पडिक्कमी यावत् "जगचिंतामणि" नुं चैत्यवंदन "जयवीयराय" सुधी करवुं ॥ पछी "मन्हजिणाण" नीस ज्झाय कही मुहपत्ति पडिलेहवी ॥ पछी खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह भगवन् पच्च

रकाण पारु यथाशक्ति "इच्छामि० इच्छा० पच्चरकाण पारुं "तहत्ति" एम कही जमणो हाथ कटासणा अथवा चरवला उपर थापी, एक "नवकार" गणी, पच्चरकाण करयुं होय तेनु नाम कहीने पारवु. ते लखीये छैयेः— उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, साडपोरिसिं, गंठिसहिअ, मुठिसहिअं, पच्चरकाण करयुं, चउविहार, आविल, निवी, एकासणु, बे आसणु करयुं, तिविहार पच्चरकाण, फासिअ, पालिअ, सोहिअ, तीरिअं, कट्टिअ, आराहिअ, जं च न आराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कड, एम कही एक नवकार गणवो ॥ इति ॥ ९८ ॥

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पचिदिअं कही, इरियावहियाए कहेवु, थापना होय तो नवकार पंचिदिअ न कहेवो. पछी तस्स उत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, उभे पगें बेसी मुहपत्ती, चरवलो कटासणुं, उत्तरासणु, धोती, कदोरो आदिनुं पडिलेहण करवुं। ...ी, जीव

पारी बीजी थोय कहेवी ॥ पछी पुक्खरवरदी कही, "सुअस्स भगवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए" कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, त्रीजी थोय कहेवी ॥ पछी सिद्धाणं बुद्धाण० वेयावच्चगराण० करेमिकाउस्सग्ग अन्न उ० नो पाठ कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी "नमोऽर्हत्" कही, चोथी थोय कहेवी ॥ पछी बेशी हाथ जोडीने "नमुत्थुणं" कही खमासमण देइ, "भगवानहं" कहेवु वली बीजु खमासमण देइ, "आचार्यह" कहेवुं, वलीत्रीजुं खमासमण देइ, "उपाध्यायह" कहेवुं वली चोथुं खमासमण देइ, सर्व साधुभ्योऽहं" कहेवु, ए रीते चार खमासमण देवापूर्वक भगवानादि चारने थोभ वदन करीये ॥ पछी खमासमण आपी इच्छाकारेण सदिसह भगवन् "देवसिप्रतिक्रमणें ठाउ" एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने, इच्छं सव्वस्सवि देवसिअ० नो पाठ कही ऊभा थई, करेमि भंते०इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउ० तस्स उत्तरि० कही अतिचारनी आठ

गाथानो काउस्सग्ग करवो, जो आठ गाथा न आवडती होय तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो, ते पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो॥ पछी वेशीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीने वांदणां बे देवा ॥ पछी ऊभा थईने इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं इच्छं आलोएमि कही जो मे देवसिउं कहेवुं, पछी सात लाख० कही, अढार पापस्थानक आलोइने, "सव्वस्सवि देवसियं" कहेवुं ॥ पछी नीचे बेसी जमणो ढीचण ऊभो राखी, एक नवकार गणी, करेमिभंते० इच्छामि पडिक्कमिउं०कही वंदितासूत्र संपूर्ण कहीने वादणां बे देवां ॥ पछी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुठिउंहं अब्भिंतर देवसियं खामेउं एम कही, अब्भुठिउं खामीने वादणां बेवार देवा ॥ पछी ऊभा थई "आयरिय उवज्झाय" कही करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिउं० कह "तस्स उत्तरी" कही बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी सव्व

उं निमित्तं काउस्सग्ग करुं, इहं डुक्कडउं क म्मक्खउं निमित्त करेमि काउस्सग्गं "अन्नत्थ०" कही "संपूर्ण चार लोगस्स अथवा शोल न वकार" नो काउस्सग्ग करवो, ते जेने लघु शां ति कहेवी होय एवो एक वडेरो, अथवा पोते शाति कहेवावालो होय तो पोतेज पारीने "नमोऽर्हत्०" कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे ॥ पछी इरियावही अने तस्स उ त्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी चउक्कसाय कही, नमुथ्थुणं कही, जावंति चेइआइं कही खमासमण देइ जावंति केवि साहु कही उवसग्गहरं कही हाथ जोडी मस्तकें राखी जयवीयराय कही खमासमण देइ मुहप त्ति पडिलेहवी ॥ पछी खमासमण देई इछाका रेण संदिसह भगवन् सामायिक पारुं. आ स्थानकें जो साक्षात्गुरु विराजमान होय तो ते कहे के "पुणोवि कायव्व" तेवारे शिष्य "यथाश क्ति" कही फरी खमासमण देई इछाकारेण संदि सह भगवन् सामायिक पार्युं तेवारें गुरु कहे

" आयरं न मुत्तवं " ते सांभली शिष्य तहत्ति कहे ॥ पछी जमणो हाथ चवला अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी " सामाइयवयजुत्तो० ' कहीने थापेली थापना होय तो तेनी सामो जमणो हाथ राखी एक नवकार गणी ऊठे ॥ ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि सामान्य पणे कह्यो, बाकी अंतर्विधि वगेराथी समजवो ॥ इति ॥ १०१ ॥

॥ अथ राइप्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम पूर्वली रीते सामायिक लेवुं तेज्यां सुधी त्रण नवकार गणीयें तिहां सुधी सर्व विधि जाणवो ॥ पछी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् कुसुमिण डुसुमिण राइअवइणि पायछित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं इच्छं करेमि काउस्सग्ग "अन्नत्थ उससिएणं० " कही चार लोगस्स अथवा गोलनवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी, कहवुं ॥ पछी पूर्वोक्त देवसीनी रीतें भगवान

सहिं नमो गमासमणाणं कही नमोऽर्हत्०कही यें॥पछी विशाललोचन,०नमुत्थुणं,०अरिहंत चे इयाणं,०कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्०कही कल्लाणकंदनी प्रथम थोय क हेवी पछी लोगस्स० पुक्खरवरदी,०सिद्धाण बु द्धाण,०कही अनुक्रमें चार थोयो कहीये छैये, तिहा सुधी सर्व कहेवुं॥ पछी नमुत्थुणं०कही भ गवान् आदि चारने चार खमासमणे वादवा॥ पछी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी "अड्ढाइ ज्जेसु" कहेवुं॥ पछी ईशान खुणानी सन्मुख श्रीसीमधरस्वामीनु चैत्यवंदन, स्तवन, जयवी यराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें, तिहा सुधी सर्व करवुं॥ पछी खमासमण देई श्रीसि द्धाचलजीनु चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीये छैये, तिहा सुधी सर्व करवुं॥ पछी सामायिक पारवाना विधिनी रीतें सामायिक पारवा सुधीनो सर्व विधि करवो॥

इति राइप्रतिक्रमणविधि. समाप्त. ॥ २ ० २॥

॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम दैवसिकप्रतिक्रमणमा वदित्तु कही

रहियें तिहां सुधी सर्व कहेवुं, पण चैत्यवंदनस कलाऽर्हत्नुं कहेवुं, अने थोयो स्नातस्यानीक देवी. पछी खमासमण देईने इछाकारेण सदि सह भगवन् देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इ छाकारेण० पछी मुहपत्ति पडिलेहुं एम क ही मुहपत्ति पडिलेहियें पछी वादणां वे दीजें, पछी इछाकार० संवुद्धा खामणेण अभुठिउंहुं अभिंतर पक्खिअं खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं पनरस दिवसाणं, पनरस राइआणं, जंकिंचि अपत्तियं० ॥ कही इछाकारेणसं० ॥ पक्खिअं आलोएमि इछं आलोएमि जो मे पक्खिउ अ इआरो कउ०कही इछाकारेण सं० ॥ पखीअ तिचार आलोउं एम कही अतिचार कहियें. प छी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकित मूल बा रव्रत, एकशो चोवीश अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहे सूक्ष्म,बादर, जाणतां अजाणता हुउं होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायाये करी मिछामि डुक्कडं॥सव्वसवि पक्खिअ डुचिंत्तिअं, डुब्भासिय, डुचिठिअ, इछाकारेण संदिस्सह भगवन् तस्स मिछामि डुक्कडं॥इछाका

रि भगवन् पसाउ करि पक्खि तपप्रसाद करो जी. एम उच्चार करीने आवी रीतें कहियें.–च उद्देणं एक उपवास, बेआबिल, त्रण नीवि, चार एकासणा, आठ बे आसणां, बे हजार स झाय,यथाशक्ति तप करी (प्रवेश) कर्यो होय तो पइठी कहियें, अने करवो होय तो तहत्ति कही यें, तथा न करवो होय तो अणबोल्या रहीये. पछी वादणां बे दीजें पछी इछाका० ॥ पत्तेअ खामणेणं अब्भुठिउंह अब्भितर पक्खिअं खामे उ इछं खामेमि पक्खिअ पनरस दिवसाणं पन रस राइआणं जंकिंचि अपत्तियं० पछी वांदणां बे दीजे पछी देवसिअ आलोइअ पडिक्कता इ छाका० ॥ भगवन्० पक्खिअ पडिक्कमुं समपडि क्कमामि इछं एम कही करेमि भंते सामाइयं०॥ कही इछामि पडिक्कमिउ जो मे पक्खिउ० कहे वुं पछी खमासमण देइ इछाकारेणसंदि०॥ प क्खिसूत्र पढ एम कही त्रण नवकारगणी सा धु होय तो पक्खिसूत्र कहे अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तुं कहे पछी सुअदेवयानी थोय केहेवी. पछी हेठा वेसी

जमणो ढिंचण उभो राखी एक नवकार गणी करेमि भंते० ॥ इछामि पडि० ॥ कही वंदित्तुं कहेवुं पछी करेमि भंते० इछामि ठामि काउस्सग्गं जोमे पक्खिउं० ॥ तस्सउत्तरी० ॥ अन्नत्थ० ॥ कहीने वार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा. अथवा अडतालीश नवकारनो काउस्सग्ग करी पारवो. पारीने प्रगट लोगस्स कही मुहपत्ति पडिलेहिनें वांदणां वे दीजें, पछी इछाका०॥समाप्त खामणेणं अब्भुठिउंहं अब्भिंतर० ॥ पक्खिअं० ॥ खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं एक पक्खाणं पनरस दिवसाणं पनरस राइयाणं जंकिंचि अपत्तिअं कही पछी खमासमण देइनें इछाका० ॥ पक्खि खापणां खामुं. एम कही एक खमासण देई तीन तीन नवकार गुणी एम खामणां चार खामवा. पछी देवसि प्रतिक्रमणामां वंदित्तुं कह्या. पछी वे वांदणा देइने तिहांथी ते सामायिक पारीयें तिहा सुधी सर्व देवसीनी पेठे जाणवुं, पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे "ज्ञानादि"नी थोयो कहेवी.स्तवन अजि

खमा० इछा० सामायिक संदिसाहुं? इछं. ख मा०इछा० सामायिक ठाउं? इछं कही बे हाथ जोडी नवकार गणी इछाकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दडक उच्चारावोजी, गुरु 'करेमि भंते सामाइय' नो पाठ कहे तेमा एटलुं विशे ष जे जावनियमं ने ठेकाणे जावपोसहं कहेवुं. पछी खमा० इछा० वेसणे संदिसाहुं? इछं ख मा० इछा० वेसणे ठाउ? इछा. खमा० इछा० सज्झाय संदिसाहु? इछं. खमा० इछा० सज्झाय करु? इछं कही,त्रण नवकार गणवा पछी खमा० इछा० बहुवेल संदिसाहु? इछा० बहुवेल इछं. खमा० इछा० बहुवेल करशु इछं खमा० इछा० पडिलेहण करुं? इछं कहीने मुहपत्ति विगेरे पा चवाना पडिलेहवा. [1]मुहपत्ति ५० बोलथी, चर वलो १० बोलथी, कटासणुं २५ बोलथी [2]सुत्र नो कदोरो १० बोलथी अने धोतीयुं २५ बोल

---

१ मुहपत्तिना ५० बोल पाछल लख्या छे उंचा बोल होय त्या ते ५० माहेना प्रथमना ग्रहण करवा

२ पोसहमा आभूषण पहेरवा न जोइये कदोरो सुत्रनो जोइ ये ते छोडी, पडिलेही, पाछो बाधीने ते सबधना इरियावहीतेज वखत पडिकमवा (वन्ने टकनी पडिलेहणामा समजवु

थी पडिलेहवु पछी खमासमण दइ, इछाकारी भगवन् पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी. एम कही वडीलनुं अण पडिलेह्युं एक वस्त्र उत्तरासन पडिलेहवुं. पछी खमा० इछा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? इछं कही मुहपत्ति पडिलेहवी पछी खमा०इछा०उपधि संदिसाहुं? इछं खमा० इछा० उपधि पडिलेहुं? इछं कहीने पूर्वे पडिलेहतां बाकी रहेल उत्तरासण,मात्रु करवा जवानुं वस्त्र अने रात्री पोसह करवो होय तो कामली विगेरे २५ पचीस बोलथी पडिलेहवा पछी एक जणे डंडासण जाची लेवुं तेने पडिलेही, इरियावही पडिक्कमीने काजो लेवो.काजो[1]शुद्ध एटले तपासीत्यांज स्थापनाचार्यनी सन्मुख उभडक बेसीने इरियावही पडिकमवा. पछी काजो यथा योग्य स्थानके अणुजाणह जस्सग्गो कहीने परठववो. परठव्या पछी त्रणवार वोसिरे क हेवुं. पछी मूल स्थानके आवीने सौ साथे देव वांदे अने सझाय करे

---

१ काजामा सचित्त एकेंद्री नीकले तो गुरु पासे आलोयण लेवी त्रस जीव नीकले तो यतना करवी.

॥ पोसह पारवानी विधि ॥

खमा० दइ इरियावही पडिक्कमी, चउक्कसा यथी जयवियराय पर्यंत कहीने, खमा० इछा० मुहपत्ति पडीलेहुं ? इछं कही मुहपत्ति पडीलेहवी. पछी खमा० इछा० पोसह पारुं ? यथाशक्ति खमा० इछा० पोसह पार्यो. तहत्ति कही नवकार गणी चरवला उपर जमणो हाथ स्थापीने सागरचंदो० कहे ॥

पछी खमा ०इछा० मुहपति पडिहु ? इछं कही मुहपत्ति पडिलेहीने खमा०इछा सामायिकपारु? यथाशक्ति खमा० इछा० सामायिक पार्युं. तहत्ति कही,चरवळा उपर हात स्थापी नवकार गणीने सामाइय वयजुत्तो कहे पछी विधि करता जे काइ अविधि थइ होय तस्समिछामी डुक्कडं कहे इति

हवे जेणे सवारे आठ पहोरनोज पोसह लीधो होय ते साजना देव वांद्या पछी[1] कुंडल लीधा न होय तो लइने तथा झंझासण अने रात्री

---

१ कुडल–रना पुजमा ते वे कानमा राखे जो गुमावेतो आळोयण आवे

ने माटे अचित्त पाणी चुनो नाखेलुं जाची रा खीने पछी खमा० दइ इरियावही पडिक्कमीने खमा० इछा० स्थडिल पडिलेहुं ? इछं कही चोवीश माडला करे ते आ प्रमाणे–

आ मांडला वडी नीति लघु नीति विगेरे प रठववा योग्य जग्या प्रतिलेखण निमित्ते कर वाना छे तेमा प्रथम संथारापासेनी जग्याए छ मांडला करवा–

१ आघामें आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे,
३ आघामे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे.
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे,
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे,
१ आघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे,
२ आघामे आसन्ने पासवणे अहियासे,
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे,
४ आघामे मज्झे पासवणे अहियासे,
५ आघामे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे
६ आघामे दूरे पासवणे अहियासे,

१ अघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे आणाघाडे,
२ आघामे आसन्ने पासवणे आणाघामे,
३ आघाडे मझे उच्चारे पासवणे आणाघामे,
४ आघाडे मझे पासवणे आणाघामे,
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे आणाघामे,
६ आगामे दूरे पासवणे आणाघामे,

बीजा ७ उपाश्रयना वारणानी माहेनी तर फना मामला उपर प्रमाणेज कहेवा.

त्रीजा ७ मामला उपाश्रयना वारणा बहार नजीक रहीने करवाना तथा चोथा ७ मामला उपाश्रयथी सो हाथने आशरे दूर रहीने कर वाना तेमां पण त्रीजा ७ मामला प्रमाणे अ णाघामे शब्द कहेवो बाकीना शब्दो उपरना त्रण माडला प्रमाणे

ए प्रमाणे २४ मामला कह्या पछी इरियाव ही पडिक्कमीने चैत्यवदन पूर्वक प्रतिक्रमण पूर्ववत करे. इति श्रीतपगच्छ प्रतिक्रमणविधि॥

॥ अथखरतरगच्छप्रति०

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस डरिअक्करिकेसरि॥ तिहुअण जण अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेसपास थंभणय पुरठिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंति भत्तिवर पुत्त कलत्तहि, धण सुवन्न हिरण पुण जणभुंजहि रज्जहि ॥ पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासपसाइण, इयतिहुअण वरकप्परुक्ख सुरकहि कुण महजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण कणुणहु ठ सुकुठिण, चरकुरकीणखएणखुड्डुनरसल्लिअ सूलिण॥ तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुतिपुणणव, जय धणंतरिपास महवि तुहुं रोगहरो भव॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मत तंत सिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणभुअ अठविह सिद्धि सिझइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरल गहुग्गखग्ग रिउवग्ग

गंजइ, डुहियसह अणह घह निहारइ दय करि, डरिअइं हरह सुपासदेव डरिअकरिके सरि ॥५॥ तुह आणाथभेइ भीमदप्पु हर सुरव र, रक्कस जक्क फणिद विद चोरानलजलहर॥ जलथलचारिरहदखुह पसुजोइणि जोइअ, इय तिहुअणअविलघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पहिअ अह अणहहिहभत्तिभरनिभर, रोम चचिअचारुकाय किण्णरनरसुरवर ॥ जसु सेवहि कमकमलजुअल परकालिअकलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास महमहउ रिउवलु॥७॥ जय जोइअ मणकमलभसल भय पजरकुजर, तिहुअणजणआणदचंद भुवणत्तयदिणयर॥ज य मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंभ णयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ वहु विहवसुअवसु सुसु वणिउ उप्पणहि,सुरकधम्मु कामउकाम नर नियनिय सह हि ॥ ज जायइ वहु दरिसणह वहु नाम पसिद्धउ, सो जोइ अ मण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥९॥ भय विभल रणकणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर लिअ नयणविसमुसुगग्गिरगिरकरुणय॥ तइ

सहसत्तिसरंति हुंतिनरनासिअ गुरुदर, महवि
ज्जविसज्जसइपास भय पंजरकुंजर॥ १० ॥ पइं
पासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाह
पवूढरूढ डुहदाहसुपुलइय ॥ मसहिमसुसउस
पुसअप्पाणं सुरनर,इयतिहुअण आणंदचंदज
य पास जिणेसर॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंट
टकारव पिल्लिअ, वल्लरमल्ल महल्लभत्ति सुरवर
गजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भवणेहि
महूसव, इय तिहुअण आणंदचंद जयपाससुहु
भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहु
रिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्थसत्थविथरि
अ पहाभर॥ कलिकलुसिअ जण घूअलोयलो
यणहअगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह भुव
णत्तय दिणयर॥१३॥ तुह समरणजलवरिससि
त्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थवोह कं
दलदल रेइणि॥जायइ फलभरभरिय हरिय डु
हदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि
पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणव
ल्लिउल्लूरियडुहवणु, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डु
ग्गइगम वारणुं॥जयजंतुहजणएणतुल्लजंजणि

यहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जं तुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणारणनिवासदरिअ परदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दा सुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंठुल चिठहि, इय तिहुअण वणसीह पास पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कररं जिअनहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निल्लुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग अगजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास थभणयपुर ठिअ ॥ १७ ॥ महमणुतरलपमाणनेय वायावि विसठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव आल सविहिलघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुण्ण पवत्तउ, इयमहमाअवहीरपासपालहिविलवं तउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणुकिंकिंवनज पिउ, किं वनचिठिउकिठदेवदीणय भविलंबिउ ॥ कासुनकियनिप्पल्लललुअहोहिंडहत्तइ, तह विनपत्तउताण किंपि पइ पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहु सामिहुतुहुमाय वप्पतुहु मित्तपियंकरु, तुहुग इतुहुं मइतुहिज ताण तुहु गुरु खेमंकरु ॥ हउ डहभरभारिअवराउ राउलनिभग्गउ, लीणउ तुह

कमकमल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ प
इंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि
विमइं मंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि
वि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल,
मइं अवहीरहि केणपाससरणागयवछल ॥२१॥
पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पण्णपयोअण,तुहुं जिण
पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम
चित्तवित्तिनयनिंदिअसममण,माअवहीरिअजु
ग्गउविमइं पासनिरंजण ॥२२ ॥ हउं बहुविहउ
हतत्तगत्ततुहुं उहनासणपरु,हउं सुयणहकरुणि
कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउं जिणपासअ
सामिसाहुतुहुं तिहुअणसामिअ,जं अवहीरहि
मइं ऊखंतइय पासनसोहिअ॥२३॥जुग्गाजुग्ग
विभागनाहनहुजोअणतुहसमभवणुवयारसहा
वभाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किघण
नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय उहवंधवपासनाह
मइं पालयुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुए
विअसविकिविजुग्गय, ज जोइयउवयारुकरइउ
वयारसमुज्जय ॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुहनाह
णचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चं

गउ ॥२५॥ अहअणविजुग्गयविसेसकिविमण हि दीणह, जं पास विउवयारुकरइ तुहनाहसम ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प सीयह, कि असुंण तंचेव देव मामइअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पउण नहु होइ विहल जिणजाण उ किं पुण,हउ डुक्किउ निरुसत्तचत्तडुक्कउ उस्सु यमण ॥ त मसउ निमिसेण एण एउविज्जाइ ल भइ, सच्च ज चुक्कियवसेण कि उंवरु पच्चइ ॥ ॥ २७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप यासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपि उ ॥ असु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिसदयास उ, जइ अवगिणसि तुहिजअहहकिहोइसहया सउ ॥२८॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवे लविउ, तउजाणुजिणपासतुह्महउअगीकरिअ उ ॥ इयमहइछिअ जं न होइ सातुहउहावण, रक्कतह नियकित्तिणेयजुज्जइअवहीरण ॥२९॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्दवणमहूसउ, जं अण लिय गुणगहण तुह्म मुणिजणअणिसिद्धउ ॥ इय मइ पसियसुपासनाहथभणयपुरठिअ, इय मुणिवर सिरि अभयदेव विसवइ अणिदिअ॥

॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनक तीर्थराज श्रीपार्श्व नाथस्तवनम् ॥

॥ पीछे जय महायस कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभ. ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभा ग जय चितिय सुह फलय ॥ जय समह परम ह जाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय ड हत्त सत्ताण ताणय, थभणयठिय पासजिण ॥ भवियह भीम भवुहु, भव अवणता णत गुण तुझ त्तिसंझ नमोहु ॥ १ ॥ इति ॥

अथ सदाकालका अवश्य कर्तव्य सामायक पडिक्कमणा शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥

॥ प्रणम्य श्री जिनाधीशं सद्गुरुं च विशेषत श्राद्धाहोरात्रकृत्यानि लिख्यन्ते लोक भाषया ॥ १ ॥

॥ श्रावक दोय घडी रात्र रह्या पोशह शा लाये (अथवा) गुरुकने अथवा घरने एक प्र देशे (आवी) प्रथम दिवस संध्याये पहिले ह्या वस्त्र पहिरी (जो) गुरुनो जोग न हुवे (तो) आप प्रमार्जित थानके खमासमणपूर्वक तीन

नवकार गुणी थापनाजी थापै (पछै)खमासमण देई कहे इछाकारेण संदिस्सह भगवनसामाय कमुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पडिलेह) पछै इछं कही, दूजीखमासमण देई मुहपत्ती पडिले है उभो होय खमा० कहै ॥ इछा० स ॥ भ० सामायक सदिस्साऊं (गुरुकहै संदिस्सावेह) पछै इछ कही, वलेख० देने कहे इछाका० सं भ० ॥ सामायिक ठाउ (गुरु कहै ठाएह)इछं कही खमासमण देई अर्द्धावनतकाय उभो रही तीन नवकार गुणी कहै इछकार भगवन पसा व करी सामायक दंड उच्चरावोजी (गुरु कहै उचरावे मो)पछै करेमि भंतेसामाइयं(इत्यादि) सामायक सूत्र गुरु वचन अनुभापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई॥ इछा० सं० भ० इरियावहिय पडिक्कमामि (गुरु कहै पडिक्कम है) पछै इछ कही ॥ इछामि पडिक्क मिउ इरियावहियाए (इत्यादि पाठ कहे) इ रियावही पडिक्कमि ॥ एक लोगस्सनो काउसग्ग करी णमो अरिहंताणं कही काउसग्ग पारीमुखे प्रगट लोगस्स कही खमा० देई ॥ इछा० सं०

भ० वेसणो संदिस्साउं(गुरु कहै संदिस्सावेह) पछै इछं कही खमा० देई इछा० सं० भ० वे सणोठाउं (गुरु कहै ठाए है) पछै इछं कही खमासमण देई ॥ इछा० सं० भ० सिझाय सं दिस्साउं (गुरु कहे सदिस्सावेह) पछै इछ कही ॥ पांगरणोपडिग्घाउं (गुरु कहै पडिग्घा एह) पछै ॥ इछं ॥ कही ॥ वस्त्र ग्रहण करै. इति प्रभातसामायक ग्रहणविधि ॥

॥ अथ देवसी प्रतिक्रमण ॥

॥ प्रथम चैत्यवंदन ॥ जयतिहुणनी पांच गाथा पहलाथी और दोय गाथा ठेडानी कही जय महाशय १ कहीने सक्रस्तव आदि चारे थोभ देववंदन करीनीचा वैसीने नमोत्थणं० कहे पछे वादणापूर्वक श्री आचर्यमिश्र १ श्रीउपा ध्यायजी मिश्र २ श्री वर्तमानभट्टारक श्री पूज्य जीनो नाम लेइ वादीये ३ सर्व साधु साध्वी वाडं ॥ पछे सव्वसवि राईय देवशिय० करेमि भंते० इछामि ठामि० तस्सुतरी० अन्नत्थू० आठ नवकारनो काउसग्गकरे मुंहडे लोगस्स कहे पछे तीजे आवश्य करी मुहपत्ती पडिले

हवी ॥ दोय वांदणा देवे देवसियं आलोएमी० पछें ठाणेकमणे० पछे चौपुरा दिवसना लघु अतिचार ॥ अढार पापस्थानक आलोई सव्व सविदेवसिय० पछे तीन नवकार तीन करेमि० पछे वंदेतूसूत्र कहे पछे वांदणा दोय देवे ॥ पछे अब्भुठिउमि कही फेर २ वादणा देई ॥ आयरिउं उवझाए० करेमि० तस्सुतरी० अन्नत्थू० दोय लोगस्सनो काउसग करे मुंहमे लोगस्स कहे ॥ वदण० अन्नत्थू० पछे एक लोगस्सनो काउसग ॥ मुंहडे पुष्करवरदी वड्ढे० वंदण० अन्न० एक लोगस्सनो काउसग्ग मुंहडे सिद्धाण बुद्धण० पछे सुहदेवीयाए करेमि काउसग्गं॥अन्न० १ नवकारनो काउसग्ग करे ॥ सुवर्णसालिनीदेयात्० एक गाथा कहे पछे क्षेत्रदेवीयाए करेमि काउस्सग अन्न० १ नवकारनो काउसग करे पछे यासापेत्रगतासति गाथा १ कहे १ नवकारगुणी उठे आवश्य करी मुहपत्ती पडिलेहे दोय वार वादणा देवे ॥ इच्छामो अणुसठियं नमोखमासमणाण ॥ नमोस्तुवर्द्धमानाय० तीन गाथा कहे ॥ नमोत्थुण कही वमोतवन कहे,

पछे श्री आचार्यजी मिश्र १ श्रीउपाध्यायमिश्र २ सर्वसाधु साध्वी वांदुं अढ्ढा इज्जे सु० कह ना फेर खमासमण देइ ॥ पछे देवसीप्रायश्चित्त विसोधवानिमित्तं करेमि काउसग्गं अन्न० ४ लो गस्सनो काउस्सग करे पछे मुंहमे लोगस्स कहे पछे दशोपउव उद्दाहनिमित्तं करेमि काउसग्गं अन्न० ४ लोगस्सनो काउस्सग करे मुंहडे लो गस्स कहे ॥ पछे सिज्झायं संदिस्साएमि सिज्झाय करेमि ॥ पछे श्रीसेट्ठी कहे ॥ पछे नमोत्थुणं० कही छोटो तवन कहे पछे जयवीराय कहे पछे सिरथं भणहियपाससामिणो० कहै पछे श्रीथंभना पा र्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्स ग्ग वंदण० अन्न० ४ लोगस्सनो काउसग्ग करे पछे श्रीखरतरगच्छशृणगारहारजंयमयुगप्र धानभट्टारक दादाजी श्रीजिन दत्तसूरिजी महा राज चारित्र चूडामणी आराधवानिमित्तं करेमि काउसग्गं अन्न० १ लोगस्सनो काउसग्ग करे॥ इणीहीतरे दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिनो १ लो गस्सनो काउसग्ग पारी एक नवकार गुणी चै त्यवंदन करे चउक्कसाय० कहै ॥ नमोत्थुण जय

वीरायसूधी पछै लघु शाति कहै पछे सामायक पारै

॥ हवे राईप्रतिक्रमण विधि ॥

॥ एक खमासमण देई ॥इछा० सं०भ०॥ चै त्यवदन करुं (गुरु कहै करेह) इछ ॥ कही जय उसामी १ रिसहसेत्रुंज उजित पहुनेमि जिण जयउ वीरसच्चउरमंडण भरुअछहिमुणिसुव्वयम हुरिपास डुहडुरियखडण अवरविदेहितित्थयर चिहु दिशिविदिशि जंकेवि तीआणागयसं पयं वउंजिणसव्वेवि कम्मभुमिहि २ पढमसंघयण उक्कोसउ सत्तरिस उजिणवराणविहरत लब्भई नवकोडिकेवलिण कोडिसहस्सनव साहू संपय सं पइ जिणवरवीसमुणिउयको डिवरनाण समणा कोडिसहस्सउयथुणिजयणिच्च विहाण सत्ताण वइ सहस्सा लक्खा उपन्न अछकोडिउ चउसय छयासिया तिल्लुके चेइये वदे वंदेनवकोडिसयं पणवीस कोडि लक्ख तेपन्ना अछावीस सहस्सा चउसय अछासिया पडिमा॥जं किंचि इत्यादि जयवीरायसूधी चैत्यवंदन करै ॥ पछै खमा० देई ॥ इछाकारेण सदिस्सहै भ० कुसुमिण उ स्समिणराई प्रायछित्त विसोहणत्थ करेमि काउ

सग्गं (गुरु कहें करेह) अन्न० ॥च्यार०॥४॥ लोगस्सनो काउस्सग करी पारी प्रगट लो गस्स कहै ॥ पडिक्कमणो ठाववानो अवसर हूवां१ खमासमण देई॥ (श्री आचार्यजीमिश्र) कही वादियेफेर खमासमण देई॥(श्रीउपाध्याय जी मिश्र)पछै वांदणा दई(जंगमयुग प्रधानभ्ट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम कही वांदिये ॥ वले खमासमण देई साधूजी वांदीये ॥ इम च्यार खमासमणें पडिक्कमण ठावी॥इछकार समस्त श्रावको वादूं(कही)गोमा लिये वेसी मस्तक नमावी दोय हाथे मुहपती मुखे देई सव्वसविराईय (इत्यादि कहै) पिण इछाकारेण संदिस्सह (इसो न कहै) पछै सक्रस्तव कही ॥ ऊभो थई करेमि० इछामि ठाउ काउस्सग्गं० (इत्यादि पाठ कही) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० चारित्र शुद्ध निमित्तें १ लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्ते लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करमि काउसग्गं इत्यादि कही १ लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी) ज्ञानातिचारनिमित्ते पुक्खरवरदी वड्ढे (कही)

सुयस्स भगवउ करेमि का० वंदणवतीयाए (इ त्यादि कही) काउस्सग्ग करे काउस्सग्गमाहे चौपुहरी रात्रि माहे सातलाख इत्यादि आलोय णचितवे(अथवा) आठ नवकार चिंतवे (पछी) काउसग्ग पारी ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं कही सडा साप्रमार्जनपूर्वक वेसी मुहपती पडिलेह पछेदो वादणा देई अब्भुठिउमि खामि वादणा वेदीजे तेविधि देवसीनी परे जा णवुं पछे सव्वसवि० ॥ इछा० भ० ए पद क हवे करी आलोया अतीचारनो प्रायछित मागे पछे इछ तस्समिछामि डुकडं ॥ पछे जीमणो गोडो उंचो करी तीन नवकार तीन करेमि० इछामि पडिक्कमिउ जोमेराईयो इत्यादि कही वंदितूसूत्र तनिदे तच गरिहामि सूधी कहे ॥ पछे वादणा देवे । पेछे अब्भुठि० कही फर वा दणां वेदेवा पछे०आयरिउंउ वज्जए० करेमिभं ते० इछा मिछामि काउसग्गं । तस्सुतरी०अन्न त्थु० ६ लोगस्सनो काउसग्ग अथवा चौवी न वकारनो काउसग्ग करे ।पछे मुहमे लोगस्स क हे पछे मुहपत्ती पडिलहे वादणां देवे सग

ला तीर्थानें याद करै पछै पच्चख्काण करै पछै इच्छामो अणुसठ्ठिं (इसोपद कहै,) पछै नमोख मा समणाणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व सा धुभ्य पछै संसारदावा० (अथवा) परसमय तिमिरतरणं तीनगाथा कहै नमोत्थुण० अरि हंतचे ईयाणं करेमिकाउसग्गं वंदण० अन्न त्थू० १ नवकारनो काउसग्गकरे पछै थूईरी १ गाथा कहै पछै लोगस्स कही वंदण० अन्नत्थु १ नवकारनो काउसग्ग पछै थूईरीउजी गाथा कहै पछै पुष्करवरदी वढे०वंदण०अन्नत्थ०१ न वकारनो काउसग्ग थुईरी तीजी गाथा कहै पछै सिचाण बुद्धाणं कहै पछै १ नवकारनोकाउस ग्ग करी पछै थूईरी चौथी गाथा कहै पछै श्री आचार्यजी मिअ१ श्रीउपाध्यायजी मिश्र० स र्वसाधूवाडं ॥ इतिराई प्रतिक्रमण॥पछै श्रीसीमं धर चैत्यवदन करवो पछै सिद्धगिरीनौचैत्यवंद न करी सामायकपारवा ॥

॥ हवे पाखी पडिक्कमणो लि०॥ तिहां प्रथम वं दिउ सूत्र पर्यंत देवसी पडिक्कमी पछै इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलोईयं पडिकंतं

पस्की मुहपती पडिलेह पछे दो वांदणा देवे ॥ पाखी पडिक्कमणो हुवे तो पाखीरो नाम लेवे अथवा चोमाशी वा संवत्सरी, होय तो सोही नाम लेवे पस्कोवइ कत्तो कहणो ॥ पछे वादणा दिया पछे पुन्यवंतो ठींक जयणा करज्यो मधुर श्वरे पडिक्कमज्यो ॥ खासे सुविवरा करी खासज्यो मारूल माहे सावचेतसावधान रहिज्यो देवसीरे (थानके) पाखी चोमासी छमछरी भणज्यो ॥ पछे इछाकारेण संदिस्सह भगवन संबुद्धाखाम णेणं ॥ अब्भुठिउमि अब्भितर पखीयं खामेमि इछ खामेमि ॥ पखियं पन्नरसदिवसाणं पनरस राईणं (चोमासी) माहे चउन्हं मासाणं अठन्हं पखाणं एकसोवीसराय दियाण (संवत्सरी) पडि क्कमणो हुवे तो छवालसन्नमासाणं चोवीसन्ने पखाणं तीनसे साठ राय दियाण जंकिंचिपतियं सर्वकहणो पछे इछाकारेण सदिस्सह भगवन पखियं (३) आलोउं जोमे पखिउं अयारोकउं० सर्वकहणो पछे नाणंमिदंसणंमिअ० वृ६ अ तिचार आलोयणा कहणा सव्व सवि पखिय ३ सर्व कहणो पछे वादणा वे देवे पछे इछाकारेण

संदिस्सह भगवन् देवसिय आलोइय पडिक्कंतं पत्तेय खामणेणं अब्भुठिउमि अब्भितरपखियं खारेकह्यो जिण रीतें सगलोकहणो पछे वांदणा देवे पछे (पाखी) सूत्र कहे श्रावक श्राविका वंदेत् कहे पडिक्कमे देवसियं के ठिकाणे पखीयं ३ इसो कहणो तीन नवकार तीन करेमि भंते कहीने वंदेतु कहे मूलगुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धनिमित्तं करेमि काउसग इछामि ठा मि काउसगं जोम० पछै तस्सुतरी० अ न्नत्थ० पछे पाखी पडिक्कमणे १२ चोमासे २० संवत्सरी ४० लोगस्सनो काउसग करे पछे प्रगट लोगस्स कहे पछे मुहपत्ती पडिलेह दोय वांदणा देवे पछे इछाकारेण सदिस्सह भगवन् समाप्त खामणेणं अब्भुठिउमि अब्भितर पखीयं ३ खारे कह्यो जिणतरे कहे पछे इछा० भ० खाम णाखामु पुन्यवंतो एकखमासमण देई तीन तीन नवकार गुणी चार वार पाखीसमाप्त खामणापा मो पछे खामणा खामी पछे पुन्यवतोपाखीने लेषे एक उपवास अथवा दोय आंबिल तीन नीवी (अथवा) चार एकासणा (अथवा) दोय हजा

र सिज्झाय करी पाखीनी पेठ पूरज्यो पाषीने स्थानके देवसी भणज्यो इम ऊणाऊण चोमासि (अने) त्रिगुण सवत्सरीये सर्व कहवो पछे देवसी प्रतिक्रमण गोड्यो ज्याथी वांदणा अभ्भ ठिउंमि फेर वादणा इत्यादि सर्व करणो देवसी कीरीते समझणो ॥ इति खरतरगछसामायिक (तथा) पच प्रतीक्रमण वीधी समाप्त

॥ अथ आचलगछ प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ प्रथम नवकार कही एक ख० देई इछकार सुहराई सुह देवसी कही गुरुनेसुखसाता पूछी इरिया वही० तस्सोत्तरी० अन्नछ० कही एक लोगस्सनो उसग्ग करी(प्रगट)लोगस्सक हे (पछी) इछाका०सं०भग० गमणागमण आलोउं तेकहे छे

॥ गमणा गमण ॥

मारगनेविषे जाता आव ता पृथ्वी काय अप काय तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय,त्रसकाय, नील,फूलमाटी,पाणी,कण,कपाशिया, स्त्रीआदी तणो सघट्ट हुवो होय ते सविहुमन वचन कायाये करी तस्स मिछामिडुक्कड ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् सामायिकठा वा त्रण नवकार गणुजी एम कही नीचा वैसी तीन नवकार कहे पछी उभा थई इछा० भ० जीवराशी खमाउं पछे सात लाख कही अठार पाप स्थानक आलोवे पछी इछा० भ० गुरु स्थापनाक रुजी एम कही पचेडिय कहे इति (प्र थम)खमासमण ॥ खमासमण पूर्वक नीचे वैसी ने इछा० भ० द्रव्य, क्षेत्र काल भाव धारुंजी १

॥ अथ द्रव्य क्षेत्र काल भाव ॥

॥ द्रव्य थकी लूगमां,लत्ता, घरेणां,गाठा पा थरणुंनोकरवाली,धाख्या प्रमाणें मोकलां छे. क्षेत्र थकी उपाशराना वारणानी माहेली कोरें काल थकी समायिक,निपजे,तिहासुधी,भावथकी यथा शक्तिने राग द्वेष रहित व्रतीसंघातें बोलवुं गुर्वा दिक संघातें बोलवानो आगार छे अव्रती संघातें बोलवानु पच्चरकाण छे ए रीतें छे कोटिये करी सामायिक करुं. सामायिक व्रत उच्चार करवा (एक)नवकारनो काउसग्गकरुंजी.एम कही उभा थइनेएक नवकार गणीये ॥ पछी इछाकारेण संदिसह भगवन्! सामा यिक व्रत उच्चार करावो

जी पछी गुरु (तथा) वडेरो करेमि भंते कहे ॥ पछी इछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण सदिसह भगवन्! बीजा आवश्यक भणी इरियावहिय पडिक्कमु जी. एम कही इरियावहि पडिक्कमी, पछी तसउत्तरी०कहेवी पछी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, लोगस्स प्रगट कहे लोगस्स कहेतां दर्शनाचार निर्मल थाय ए बीजु आवश्यक अने त्रीजुं खमसमण थयु,पछी इछामि खमासमण पूर्वक हेठा बेसीने इछाकारेण सदिस्सह भगवन् ठेमानु पडिलेहण करुं जी एम कही उत्तरासगना ठेमानु पडिलेहण करवु पछीइछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन् त्रीजा आवश्यक भणी आवश्यक वादणा करु जी पछे वादणा देवे एम गुरु समीपें वादणा बे वार दीजे, त्या बीजी वारने वादणे आवस्सिआए, ए पद न कहेवुं, अने राइपडिक्कमणे, राइउं वइक्कतो कहेवुं (परकीये) पक्खिउं वइक्कतो कहेवु(चउमासिये) चउमासिउं वइक्कंतोकहेवु (सवत्सरिये) संवछरोवइक्कंतो कहेवुं ए वादणा देता ज्ञानादि त्रण निर्मल थाय. ए

त्रीजुं आवश्यक अनेचोथु खमासणथयुं. इहा पोंताने मुखें, संध्या होय तो चउविहार अने सवार होय तो नवकारसी प्रमुखनु पच्चरकाण मनने भावें धारे, तेथी तपाचार निर्मल थाय ॥ पछी एक जण उभोथइने इछामि खमास मण पूर्वक इछाका० सं० भगवन् ! चोथा आवश्यक भणी लघु अतिचार आलोउं जी. ॥

॥ अथ लघु अतिचार ॥

॥ प्रथम नवकार कहीने, इछं अरिहंतदेव, सुसाधु गुरु, जिनप्रणीतधर्म, भावतो समकित प्रतिपाल्युं, द्रव्यतो लौकिक लोकोत्तर देवगत, गुरुगत, पर्वगत मिथ्यात्वविषे जयणा करुं ए श्रीसमकित तणा पाच अतिचार शोधुं शंका, कंखा, वितिगिछा, परपाखंमीपरसंसा, परपाखंडी संथुउं. ए पाच अतिचार मांहे जे कोई अतिचार हुउं होय, ते सवि हुं, मने, वचने कायायें करी मिछामि डुक्कड ॥

१ ए वार व्रतमाहे पहेलुं प्राणातिपात विरमण व्रतस्थूल बेइंद्रियादिक त्रस जीव निरपराध उपेतकरण संकल्पी करी हणवा नियम, आरं

जी पछी गुरु (तथा) वडेरो करेमि भंते कहे ॥ पछी इछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन्! बीजा आवश्यक भणी इरियावहिय पडिक्कमु जी एम कही इरियावहि पडिक्कमी, पछी तसउत्तरी०कहेवी पछी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, लोगस्स प्रगट कहे लोगस्स कहेता दर्शनाचार निर्मल थाय ए बीजुं आवश्यक अने त्रीजुं खमसमण थयु,पछी इछामि खमासमण पूर्वक हेठा बेसीने इछाकारेण संदिस्सह भगवन् ठेमानुं पडिलेहण करुं जी एम कही उत्तरासंगना ठेमानु पडिलेहण करवुं पछीइछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन् त्रीजा आवश्यक भणी आवश्यक वांदणा करुं जी पछे वादणा देवै एम गुरु समीपे वादणा बे वार दीजें, त्या बीजी वारने वांदणे आवस्सिआए, ए पद न कहेवु, अने राइपडिक्कमणे, राइउं वइकतो कहेवुं (परकीये) परिकउं वइक्कंतो कहेवु(चउमासिये) चउमासिउं वइक्कंतोकहेवु (सवत्सरिये) सवछरोवइक्कतो कहेवु ए वादणा देता ज्ञानादि त्रण निर्मल थाय. ए

त्रीजा स्थूलअदत्तादान व्रत तणा पांच अति चार शोधु तेनाहमे, तक्करप्पउगे, विरुद्धरज्जाइ क्कमे,कूम तुल्लकूडमाणे, तप्पमिरूअगववहारे॥ ए पाच अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार हुउं होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मि छामि डुक्कडं ॥ ३ ॥

४ चोथुं शीलव्रत. यथाशक्तें स्वदारासंतोष, परदाराविवर्जनारूप ए चोथा शीलव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ इत्तरपरिग्गहियागम णे, अपरपरिग्गहियागमणे, अनगक्रीडा, पर विवाहकरणे, कामभोगतिव्वाभिलासे ॥ ए पाच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुउं होय, ते सवि हुं,मने वचने,कायायें करी मिछामि डुक्कडं.

५ पांचमुं परिग्रहपरिमाणव्रत नवविध. खि त्त, घर, हट्ट, वाडिय, कुविय, धण, धन्न, हिर ण्ण, सुवण्ण, अइपरिमाण डुप्पय, चउप्पयमिय. नवविह परिग्गह वयंतो ॥ ए पाचमा परिग्रह परिमाणव्रततणा पाच अतिचार शोधुं खित्त वहुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे, धणधन्नप्पमाणाइक्कमे, डुप्पय चउप्पयप्पमा

नें जयणा, ए पहेला प्राणातिपातविरमणव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ वंधे, वहे, छविछेए, अइभारे, भत्तपाणवुछे ए ॥ ए पाच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सविहुं मन, वचने,कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥१॥

२ बीजु स्थूलमृषावादविरमणव्रत पंचविध, कन्नालीए, गोवालीए, भूमालीए, नासावहारे, कूडसरिकज्जे ए पाच मोटकां कूडा आपणने काजे, स्वजनने काजें धर्मने काजे मूकी, परकाजें कूडुं बोलवा नियम, सूक्ष्म अलिक तणी जयणा करु ॥ ए बीजा स्थूलमृषावादविरमण व्रततणा पाच अतिचार शोधुं सहस्साभक्खाणे, रहस्साभक्खाणे, सदारामंतभेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे ॥ ए पाच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुउ होय, ते सविहु मने, वचने, कायाये करी मिछामि डुक्कड ॥ २ ॥

३ त्रीजु स्थूल अदत्तादानविरमणव्रत. सचित्त, अचित्त, राजनिग्रह कारीउ पियारुं अणदीधु लेवा नियम. सूक्ष्म तृण, इधण, पथिपतित ववहार नियोगे, दाणचोरी जयणा ॥ ए

हें जे कोइ अतिचार हुउं होय, ते सवि हुं म
ने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥ ७ ॥

॥ कर्मतो पन्नरे कर्मादान. इंगालकम्मे, वण
कम्मे, साडी कम्मे, भाडी कम्मे, फोडीकम्मे, दंत
वाणिज्जे, लख वाणिज्जे, रस वाणिज्जे, विस वा
णिज्जे, केस वाणिज्जे, जतपीलण, कम्मे निल्लंछ
ण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाय सो
सणया, असई पोसणया. ए पन्नर कर्मादांन
स्थूल नियम, सूक्ष्म तणी जयणा ॥ ए पन्नर क
र्मादांनमाहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, तेस
वि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं.

८ आठमुं अनर्थदंडविरमणव्रत, चतुर्विध.
अवझाणायरिए, प्पमायायरिए, हिंसप्पणयाणे,
पावकम्मोवएसे॥ए आठमा अनर्थ दंडविरमण
व्रततणा पाच अतिचार शोधु ॥ कंदप्पे कुक्कुई
ए, मुहरिए, संजुत्ताअहिगरणे, उवभोगपरिभो
ग, अइरेगे ॥ ए पाच अतिचारमाहे जे कोइ
अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने,
कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ८ ॥

९ नवमुं सामायिकव्रत. सामइय नाम साव

णाइक्कमे,कुवियप्पमाणाइक्कमे ॥ ए पांच अति चारमाहेजे कोइ अतिहार हुउं होय, ते सवि हु मने, वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

६ छठु दिशिव्रत त्रिविधें जाणवु उड्ढदिसि वए, अहोदिसिवए, तिरियदिसिवए ॥ ए छठा दिशिव्रततणा पाच अतिचार शोधुं ॥ उड्ढदि सिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, ति रियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढि,सयतरधा ॥ ए पाचअति चार मांहे जे कोइ अतिचार हु वो होय, ते सवि हु मने, वचने, कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ ६ ॥

७ सातमु भोगोपभोगव्रत द्विविध भोजन त कर्मतश्च तत्र भोजनत. "सच्चित्तदव्व विग इ, उवाण तवोल चीर कुसुमेसु ॥ वाहण सय ण विलेवण, बभ दिसिन्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए सातमा भोगोपभोग व्रत तणा पाच अतिचार शोधु ॥ सचित्त आहारे, सचित्त पडिवद्धआ हारे, अप्पोसहि भक्खणया डुप्पोसहि भक्खण या तुछो सहिभक्खणया ॥ ए पाच अतिचार मा

ज्जिय सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहि यउच्चारपासवणभुमि, अप्पमज्जिअ डुप्पमज्जि अउच्चारपावसण भूमि, पोसहोववासस्स सम्मं असमुपालणया ॥ ए पांच अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारमुं अतिथिसंविभागव्रत, अतिथि संविभागोनाम. नाया गयाणं, कप्पणिज्जाणं, अन्न पाणाइणं, दवाणं, देस, काल, सद्धास कार कम्मजोए पराइ भत्तीए आयाणुग्गह बु द्धिए संजयाण दाणं ॥ए बारमा अतिथि संवि भाग व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ स चित्त निरकेवणया, सचित्त पिहणया, काला इक्कमदाणे परोवएसे, मछरया ॥ ए पांचअ तिजारमाहे जे कोइ अतिजार हुवो होय तेसवि हुं मने वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं १२

॥ संलेषणा तणा पांच अतिचार शोधु. इ ह लोगासंसप्पउंगे, परलोगासंसप्पउंगे, जि विआसंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे कामभोगा

द्यजोगपरिवज्जाण,निरवज्जजोग आसेवणं च॥ए नवमा सामायिकव्रततणा पांच अतिचार शोधुं मण डुप्पणिहाणे,वयडुप्पणिहाणे कायडुप्पणिहाणे,सामाइयस्स अकरणया, सामाइयस्स अणवुठिअस्स करणया ॥ ए पांच अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥९॥

१०दशमु देशावगाशिकव्रत ॥ दिसिवयगहियस्स, दिसापरिमाणस्स पइदिणं परिमाणकरण ॥ ए दशमा देशावकाशिकव्रत तणा पाच अतिचार शोधुं ॥ आणवणप्पउगे पेसवणप्पउगे सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ वहियापुग्गलपरखेवे ॥ ए पाच अतिचार माहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कड ॥ १० ॥

११ इग्यारमुं पौषधव्रत, चिहुं भेदे जाणवुं आहारपोसहे, सरीर सक्करपोसहे, बम्भचेरपोसहे, अवार पोसहे ॥ ए इग्यारमापौषध व्रत तणा पाच अतिचार शोधु ॥ अप्पमिलेहिय डुप्पमिलेहिय सिज्जासथारे, अप्पमज्जिय डुप्पम

ज्जिय सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहि यउच्चारपासवणभुमि, अप्पमज्जिअ डुप्पमज्जि अउच्चारपावसण भूमि, पोसहोववासस्स सम्मं असमुपालणया ॥ ए पांच अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारमुं अतिथिसंविभागव्रत, अतिथि संविभागोनाम. नाया गयाणं, कप्पणिज्जाणं, अन्न पाणाइणं, दव्वाणं, देस, काल, सद्धास क्कार कम्मजोए पराइ भत्तीए आयाणुग्गह बु द्धिए संजयाण दाणं ॥ए बारमा अतिथि संवि भाग व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ स चित्त निरकेवणया, सचित्त पिहणया, काला इक्कमदाणे परोवएसे, मछरया ॥ ए पाचअ तिजारमाहे जे कोइ अतिजार हुवो होय तेसवि हु मने वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं १२

॥ संलेषणा तणा पाच अतिचार शोधु. इ ह लोगासंसप्पउंगे, परलोगासंसप्पउंगे, जि विआसंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे कामभोगा

संसप्पउंगे ॥ ए पाच अतिचारमांहे जे को इ अतिचार हुवो होय ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं

॥ एवंकारे श्री समकित मूल वार व्रतविषे पंच्याशी अतिचारमाहे जे कोइ अतिचार, अनाचर, अतिक्रम, व्यतिक्रम, हुउं होय त था जाणते, अजाणते, सूक्ष्म, वादर, कानो, मा त्रा, मिमी पद, अक्षर, उंगो, अधिको, हलवो, भारी, आगल, पाछल, कह्यो कहेवाणो होय ते सविहु मने वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं॥

॥ देसावगासिअ उवभोग परिभोग पच्च खामि अन्नछणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरा गारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ॥ इति लघु अतिचार संपूर्णम्. ॥

॥ ए पडिक्कमणनामें चोथु आवश्यक, अने पांचमु खमासमण थयुं पछी इछामि खमास मण पूर्वक हेठा वेसीने इछाकारे० संदिस्सह भगवन् चैत्यवदन करु जी ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ इछ ॥ जय जय महाप्रभु, देवाधिदेव, स

वंझ, श्रीवीतराग देव ॥ मुह दीठुं परमेसर, सुंदर सोम सहाव ॥ भूरि भवंतर सचिउं,नठो सो सवि पाव ॥ जे में पाप किया वालपणे, अहवा अन्नाणे ॥ अणभवंतर सो सोखंडजयो परमेसर तुह मुंह दिठं सिरि पास जिणेसर ॥ पास पसी पसाउ करी वीनतमी अवधार ॥ संसारडो वीहामणो स्वामीआवा गमणनिवार॥ हवडाते सुलक्खणा जेजिनवर पूजंत॥ एके पुस्से वाहिरा सो परघर काम करंत कवणेवामीवाविया कवणे गुंथ्या फूल ॥ कवणे जिनवर चाढिया भाव सरीसां मुल ॥ वामी वेलो महोरीयो सोवन कुंपलीए ॥ पास जिणेसर पूजिये पंचेअंगुलीए ॥ दो धोला दो सामला दो रत्तोपल वन्न मरगय वन्ना मुन्नि जिण सोलस कंचनवन्न ॥ नियनिय मान कराविया, भरहेस रनयणानद ॥ ते में भावें वदिया, ए चोवीसे जिणंद ॥

॥ वहु ॥ कम्मभूमीहिं, कम्म भुमीहिं, पढम संघयणि, उक्कोसयसत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भई,नवकोमीहिं केवलीण ॥ कोमीसहस्स नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि,

विहु कोडीहिं वरनाण, समणह कोडी सहस्स डुअ, थुणिसु निच्च विहाण ॥ जयउ सामीश्रिरि सह सिरि सित्तुंजी उजंतपहु नेमिजिण; जयउ वीर सच्चउरिमंडण ॥ भरुअछेहिं मुणिसुव्वय मुहरि पास डुह डुरिय खंमण, अवरविदेहि तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि, तीअणागय सपइय,वदू जिण सव्वेवि ॥ सत्तावणइ सहस्सा, लक्खा छपन्न अठकोडीउ ॥ पंचसयं चउत्तीसा, तियलोए चेइए वंदे ॥ इति चैत्यवंदन ॥

इहा चार स्तवन अथवा अछोत्तरी कहेवी - पछीउभा थइने उवसग्गहरं कहेवुं पछी, बेसीनें जंकिंचि नाम तित्थंसग्गे पायालि माणुसे लोए॥ जाइ जिणविवाइं, ताइ सव्वाइ वंदामि ॥ पछी नमुत्थुण (नमो जिणाणं) सुधी कहेवुं,

(ए छहु खमासमण)पछी इछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण सदिसह भगवन् ! गुरुवंदना करु जी एम कही गुरुवंदना कहीयें ॥ ॥

॥ अथ गुरुवंदना ॥

॥ अढाजेइसु दीव समुद्देसु, पनरससु कम्म भूमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण गुछ पडि

ग्गह धारा ॥ १ ॥ पंचमहव्वय धारा, अठार स हस्स सीलंग धारा, अखयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ २ ॥ पुज्ज सि रिअज्जरक्खिय, गुरुणो तप्पट्टिय पुज्जजयसिंहा ॥ सूरिसिरि धम्मघोसा, महिंद सिंहा तउ गुरु णो ॥ ३ ॥ तप्पयसिरिसिंहपहा, तेसि पइअ जियसिंह वरगुरुणो ॥देविंद सिंहगुरुणो तप्पय सिरिधम्मपह सूरि ॥ ४ ॥ सिरिसिहतिलसूरी, तप्पइ सिरिमहिंद्रपह गुरुणो ॥ सिरिमेरुतुंग गुरुणो, तप्पय जयकित्तिगुरुराउ ॥ ५ ॥ सिरि जयकेसरिसूरी, तप्पइ सिद्धंत सायरो सुगुरु ॥ सिरिभावसायर गुरु, तप्पय सूरि गुण निहाणो ॥ ६ ॥ सिरिधम्ममुत्तिसूरी, तप्पइ कल्लाण सा यर मुणिंदो ॥ सिरि अमर सार गुरु, कल्लाण कुणउ संघस्स ॥ ७ ॥ तप्पट्ठि पुव्व पुव्वय नाणु विज्जाय सायरं सूरि ॥ सिरिउदय सायर सूरि, तप्पय गुणमणि रुहाणं ॥ ८ ॥श्रीकीर्तिसागर सूरि, श्री पुण्यसागरसूरि, श्रीराजेंद्रसागरसूरि श्री मुक्तिसागर सूरियं वंदे, विहरमान श्री वि वेकसागर सूरियं वदे, अचल गच्छनायकं वदे.

विधिपक्षगच्छनायकं वंदे पहेले पाटें सुधर्मास्वामी, बीजे पाटें जंबूस्वामी, त्रीजे पाटें प्रभवस्वामी, चोथे पाटे सिज्जंभवसूरि, पांचमे पाटें यशोभद्रसुरि, छठे पाटें संभूतिविजय सुरि, सातमे पाटे भद्रबाहु स्वामी, आठमे पाटे थूलिभद्र स्वामी, एवा पाटानु पाट थेला श्री डुप्पसहना मा आचार्य थाशे, तेने मदारी एकशो ने आठ वार त्रिकाल वंदना होजो ॥ इति विधिपक्षगुरु वंदन ॥ ए सातमुं (खमासमण.)

पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण सदिसह भगवन् सज्झाय कहुं, सज्झाय सांभलु जी. अहीं नवकार कहीने सज्झाय कहेवी, ॥

॥ अथ सज्झाय ॥

॥ अरिहंता मंगल मुज्झ, अरिहंता मुज्झ देवाव ॥ अरिहंता कित्तियं ताण, वोसिरामित्ति पावग॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मुज्झ सिद्धायमुज्झ देवया ॥ सिद्धाय कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मगल मुज्झ आयरियामुज्झ देवया ॥ आयरिया कि त्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावग ॥ ३ ॥ उवज्झाया मंगलं

मुझ, उवझाया मुझ देवया ॥ उवझाया कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहु मंगलं मुझ, साहु मुझ देवया ॥ साहु कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ ए पंचे मंगल मुझ, ए पचे मुझ देवया ॥ ए पचें कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ६ ॥ एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो ॥ मगलाण च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगल ॥ ७ ॥ इति स झाय ॥ ए आठमु खमासमण ॥ ॥

पछीइछामि खमा० इछाकारेण संदिसह भगवन् पांचमा आवश्यक भणी दैवसिक प्रायश्चित्त विशोधनार्थ करेमि काउस्सगं. अन्नत्थ० इत्यादिककहीने चदेसुनिम्मलयरा सुधी चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो पछी नमों अरिहंताणं, कहीने काउसग्ग पारी पछी प्रगट लोगस्स कहीये. ए (नवमुं) खमासमण फरी इछामि खमासमण पूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन् अभिभव काउस्सग्ग ठाउं. (इछं) अभिभव अशेष दुक्करकय कम्मरकय निमित्तं करेमि काउस्सग्ग अन्न०

इत्यादिक कहिने " सिद्धा सिद्धिं ममदिसतुं " पर्यंत (पांच) लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो पछी नमो अरिहंताणं ए पद कहीने काउस्सग्ग पारवो, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो ए (दशमुं) खमासमण (अने) पाचमु आवश्यक पूरु थयु, एणें करी पडिक्कमणामांजे अशुद्ध आचार रह्या ते आचार ए पांचे लोगस्सना कउस्सग्गथी शुद्ध थाय छे ॥

पछी खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वंदा आवश्यकभणीपच्चरकाण वांदणा करू जी एम कही बे वार वादणां दीजे पछीगुरु मुखें पच्चरकाण करवुं ए अगीयारमुं खमासमण अने छठ्ठु आवश्यक पूरु थयु

पछी खमासमणपूर्वक हेठा बेशी ने इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिकीपारवा त्रण नवकार मनमा गणवा पछी नमो अरिहंताणं ए एक पद प्रगट कहीने इच्छाकारेण संदिसह भगवन्(सामायिक पारवा गाथा भणुंजी

॥ अथ सामायिक पारवानी ॥

॥ ज ज मणेण बद्ध, जं ज वायाय भासियं

पावं ॥ काएण वि डुठकयं, मिछामि डुकडं त स्स ॥ १ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह रज्ज भ मंत ॥ ते में सव्व खमाविया, मुझवि तेह खमं त ॥ २ ॥ खमी खमावी मेंखमी, छव्विह जीव निकाय ॥ शुद्ध मनें आलोवतां, मुझ मन वेरन थाय ॥३॥ दिवसें दिवसें लखकं, देइ सुव्वन्नस्स खंमियंएगो एगोपुणसामाइयकरेइन पुहुप्पएत स्स ॥४॥ कुणे पमाए वोलीउं, हुई विरुइबुद्धि॥ जिण सासण मे वोलउं, मिछा मुक्कड सुद्धि ॥५॥ ॥ सामायिक व्रत फासिअं, पालिअं, पूरिअं, तीरिअं,किट्तिअं,आराहिअं,विधें,लीधु,विधेकी, धुं, विधें पाल्यु, विधें करता कीसी अविधि,अशा तना हुइ होय, ते सवि हूं मनें, चनवें कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥पाटी, पोथी, कवली, ठवणी, नोकरवली कागलें पग लगाड्यो, होय गुरुने आसने,वेसने,उपगरनेपग लगाड्यो,होय ज्ञान उव्यतणी आशातना थइ होय. ते सवि हुं मनें, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कडं. अ ढी द्वीपने विषे साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका,

जे कोइ प्रभु श्री वीतराग देवनी आज्ञा पाले पलावे, भणे भणावे, अनुमोदे, तेहने महारी त्रीकाल वदना होजो सीमंधर प्रमुख वीश विहरमान जिनने महारी त्रिकाल वदना होजो, अतीत चोवीशी, अनागत चोवीशी, वर्त्तमान चोवीशीने महारी त्रिकाल वदना होजो. ऋषभानन, चद्रानन, वर्द्धमान, वारीषेण, ऐ चार शाश्वता जिनने महारी त्रिकाल वंदना होजो, दश मनना, दश वचनना वार कायाना ए बत्रीश दोषमांहेलो सामायिकव्रतमाहे जे कोइ दोष लाग्यो होय, ते सवि हु, मनें, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कड, साचानी सद्दहणा, जूठाना मिछामि डुक्कड पछी त्रण नवकार मनमा गणी त्रण खमासमण देइजयणावर्पूक उठवु ए (वारमु) खमासमण ॥ इति देवसीप्रतिक्रमण

॥ अथ राइपडिक्कमण ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण आपी इछाकार० कहीने इरियावही० पडिक्कमी पछी तस्स उत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउस्सग करी

प्रगट लोगस्स कही गमणागमण आलोववुं एटले मार्गनेविषे जाता आवतां० ॥ ए कही पछी सामायिक ठावा त्रण नवकार गुणीयें. पछी जीवराशि खमावी अढार पाप स्थानक आलोइ पछी गुरुस्थापना निमित्त पंचिंदिय कही द्रव्य, क्षेत्र,काल, भाव धारवा पछी एक नवकार गुणी सामायिक व्रत उच्चार करीयें. पछी फरी बीजा आवश्यक भणी इरियावही० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ कही पछी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी लोगस्स प्रगट कही पछी त्रीजा आवश्यक भणी इछं अभिभव अशेष डरकरकय कम्मरकय निमित्त(पाच)लोगस्स नो काउस्सग्ग करवो. पछी लोगस्स एक प्रगट कही, पछी कुसुमिण डुसुमिण उद्दामि निमित्त करेमि काउस्सग्गं एम कही(४) लोगस्स नो काउस्सग्ग करवो.पछी एक लोगस्स प्रगट कही पछी उत्तरासंगनोछेहमो पडिलेहीपछीचोथा आवश्यकभणी वेवार वादणां देइने पछी एकजण उभोरही पांचमाआवश्यक भणी लघु अतिचार कहे. पछी चैत्यवंदन कही (चार) स्तवन कहेवां. पछी

उवस ग्गहरं० नमुत्थुणं०कही गुरु वंदन करी सज्झाय कहीयें, पछी छठा आवश्यक भणी वा दणा वे वार देइने पच्चरकाण करीये. पछी सा मायिक पारवा त्रण नवकार गणीयें पछी 'जंजं मणेण बहु' इत्यादिक गाथा कही प्रतिक्रमण समाप्त करीये ॥ इति विधिपक्ष प्रतिक्रमण. स०

॥ अथ लोकागच्छ प्रतिक्रमण विधि ॥

सामायक लेवानी विधिः

प्रथम पोंछाणाना सर्व वस्त्र पडिलेहवां त था यत्नायें आसनियुं पाथरवुं, ते पछी गुरुने इच्छामि खमासमणो० ॥ इत्यादिक त्रण वा दणा देवा, पछी श्रीमधरजीनें त्रणवांदणादेई पछी नीचे बेसीने नवकार गणवो, पछी पचें दिअनो पाठ कहेवो पछी इरियावहि० तस्स उत्तरी० कही (एक) लोग्गस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो, पछी नमो अ रिहं ताण कही काउस्सग्ग पारवो प्रगट लो ग्गस्स कही गुरुनी पासे सामायिकनी आज्ञा मागवी (कदापि) गुरु न होय तो सीमंधर स्वामी पासेथी आज्ञा मागीने करेमी भते

नो पाठ कहेवो पछी डावो ढींचण उंचो राखी ने नमोहुणंकहेवुं ॥ इति सामायिक विधि.

॥ अथ सामायिक पारवान विधि ॥

प्रथम नककार गणी, इरियावहि० तस्स उत्तरी०कही, एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग करी नमो अरिहंताणं पूर्वक काउस्सग्ग पारी प्रगट लोग्गस्स कहीने डावो ढीचण उंचो करी नमोहुणंनो पाठ कहेवो. पछी सामाइय वयजुत्तो कही, दश मननना, दश वचनना, बार कायाना, इत्यादि पाठ कहेवा ॥ इति सामायिक पारवाविधि॥

॥ अथ दैवसिक प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागीये छैये, तेवी रीते आज्ञा मागीने पछी नवकार गणी, लोगस्स कही, डावो ढींचण उंचो करी, नमोहुणंनो पाठ कही बे खामणां देवा, तिहा बीजे खामणे आवसिआए ए पाठ न कहेवो पछी पडिक्कमण ठावुं तेमा आवस्सइच्छाकारेण ए पाठ भणवो पछी उभा थइ(नवकार गणवो.) पछी करेभीभंते कहीने इच्छामिठामि०पछी तस्स

उत्तरी० कही आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो पछी नमोअरि हताण कही काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्सकही वली बे खामणा देवां, देइने पछी अतिचारनां बे स्थुल तेमा एक तो श्री ज्ञानने विषे अने बीजो दर्शन (ए टले)सम्यकत्व रत्नने विषे ऐ बे पाठ गुरु पासे कहेवरावबा,(अने गुरु न होय)तो पोते कहेवा, ते पछी श्रावकना अतिचार कहेवा.

अथ अतीचार लिख्यते

श्री ज्ञानने विषे जे अतिचार लगा होय ते आलोउ जं वाइद्ध वच्चा मेलिअं, हिणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं जोगहीण घोसहीणं, सुट्ठु दिन्न डुट्ठु पडिच्छियं अकाले, कउ सज्झाउ काले न कउ सज्झाउ, असज्झाएं सज्झायं सज्झाएन स ज्झाय, जे कोइ ज्ञानना चउद अतिचारने विषे, दिवस सबधि दोष लागो होय तस्स मिछा मि डुक्कड ॥ १ ॥

दर्शन श्री समकेत रत्नने विषे जे, अतिचार लागो होय, ते आलोऊ, श्री जिन वचन समा सर्द्दह्या न होय, प्रतीत्या न होय, रोचवा न

होय, परदर्शनीनी आकांक्षा कीधी होय, फल प्रत्यें संदेह आण्यो होय, पर पाखंमीनी प्रशंसा कीधी होय, परपाखंडीनो संस्तव, परिचय कीधो होय परपाखमी संघाते आलाप संलाप कीधा होय, जे कांइ समकित रत्नने विषे आठ प्रकारे, जाणतां अजाणता दिवस सवंधि, दोष लगाड्यो होय तस्स मिछामि डुक्कम॥ २ ॥

पहेलुं स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउ. रीशवशें गाढो घाव घाल्यो होय, गाढे वंधनें वांध्यो होय, अवयवनो छेद कीधो होय अतिभार भर्यो होय, भात पाणीनो विछेद कीधो होय, जे काइ दिवस सवंधि दोष लागो होय, तस्स मिछामि डुक्कमं ॥ ३ ॥

वीजुं स्थूल मृषावाद विरमण व्रतनेविषे, जे अतिचार दोष लागो होय, ते आलोउं छुं. सहसात्कारे कोइ प्रत्यें कूडा आल दीधां होय, रहस्य गनी वात प्रगट कीधी होय,स्त्रीपुरुषना मर्म प्रकाश्यां होय,कोइने अपाय पाडवा भणी मृषा उपदेश दीधो होय कूडा लेख लख्या

लक्खवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे केसवा णिज्जे एवंखुजत पिल्लणकम्मं निल्लछण कम्म, द वनुं देवुं सरदह तलाय सोसंच, असयंती जन ना भरण, पोषण कीधा होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय, त० ॥ १० ॥

आठमां अनर्थ दंड विरमण व्रतने विषे जे अ तिचार लागा होय, ते आलोउ ठु. कंदर्पनी कथा कीधी होय, भाम्कुचेष्टा कीधी होय, मुखरी वचन बोल्यां होय, पापना अधिकरण जोगी मूक्या होय उवजोग परिजोग अधिका वधाख्या होय जे कोइ दिवस सबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ ११ ॥

नवमा श्री सामायिक व्रतने विषे जे अति चार दोष लागा होय, ते आलोउ ठु मन, वचन, कायाना जोग पामुवे ध्याने प्रवर्ताव्या हो य, सामायक माहे समतान कीधी होय अणपू ग्युं पाखुं होय, पारता वीसाखु होय जे कोइ दि वस संबंधि दोष लागो होय, तस्स मिछा० १२

दसमा देसावगासिक व्रतने विषे जे अ० नीमि भुमिका बाहेरथी वस्तु अणावी होय त था मोकलावी होय, शब्द करी रूप देखाडी पु

दूगल नाखी आपणपुं वतुं जणाव्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय त०॥१३॥

अगीआरमुं पोषध व्रतने विषे जे अ० ला० सज्जा संथारो अप्रति लेख्यो होय, दुःप्रति लेख्यो होय, अप्रमार्ज्यो दुःप्रमार्ज्यो होय, उच्चार पासवण भुमिका अप्रति लेखी होय, दुःप्रति लेखी होय, अप्रमार्जि होय, दुःप्रमार्जि होय, पोसह मांहें वात विकथा निद्रा प्रमादें करी काल निर्गम्यो होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ १४ ॥

वारमां अतिथिसंविभाग व्रतने विषे जे अ० सूजती वस्तु सचित्त उपर मूकी होय, सचित्तें करी ढांकी होय, काल अतिक्रम्यो होय, आपणी वस्तु परायी कीधी होय, मछर सहित दान दीधुं होय, भाणे वेठां साधु, साधवीनी चिंतवणा न कीधी होय, नवकार नमोथ्थुण भण्या गण्या विना व्रत पच्चक्खाण पाख्यु होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥

संलेषणा व्रतना पाच अतिचार लागा० इह

लोगा संसप्पओगे परलोगा संसप्पओगे जीवि
आ ससंप्पओगे मरणीया संसप्पओगे काम
भोगनी वाछा कीधी होय, जे कोई दिवस संबं
धि दोष लागो होय, तस्स० ॥ १६ ॥

अढारे पापस्थानक लागा होय, ते आलोउ
पहेलु प्राणातिपात ॥ १ ॥ बीजु मृषावाद ॥२॥
त्रीजु अदत्ता दान ॥ ३ ॥ चोथु मैथुन ॥ ४ ॥
पाचमुं परिग्रह ॥५॥ छठुं क्रोध ॥६॥ मान ॥७॥
माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥९॥ राग ॥१०॥ द्वेष ॥११॥
कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य
॥१४॥परपरिवाद ॥ १४ ॥ रतिअरति ॥ १६ ॥
माया मोसो॥१७॥मिथ्या दरसण शल्य॥१८॥ ए
अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय
सेवता प्रत्ये अनुमोद्या होय जे कोइ दिवस सं
बंधि दोष लागो होय तस्स मिछामि दु० ॥१७॥

अतिक्रम. व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार
[illegible] उत्तर दिवस संवं
[illegible] १८ ॥

म्मग्गो इत्यादि यावत् जंखंमियं जं विराहिअं तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १९ ॥

सव्वस्सवि दिवसिअ डुच्चिंतिअ डुब्भासिय डुच्चिट्ठिअ तस्समि० सूत्रभणेमि सूत्र साभलेमि सूत्रनो आदेस. ॥ इति अतिचार ॥

पछी नवकारकही करेमि भंते कहेवुं पछी इछा मिछामि कहेवुं. पछी वंदितुं सूत्र कहेवुं ते कही रह्या पछी पूर्वोक्त रीते बे खामणा देवा पछी अ भुठिउमि० कहीने खमाववु पछी सात लाख क हेवा पछी आयरिय उवझाए कहेवुं पछी आ वस्सइछाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं प्रा यछित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ए पाठ कही(१)नवकार गणी करेमिभंते कहेवुंपछी इछा मिछामि० तस्सउत्तरी० कही (चार) लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो काउसग्ग करी नमो अरिहताणं कही काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहीने वली पूर्वोक्त रीते बेखा मणा देवा. पछी चउविहारनुं पच्चखाण लेवुं पछी सामायिक, चउविसछो, वांदणां पडिक्कम णुं काउस्सग्ग, अने पच्चखाण, ए छ आवश्य

तेवारे चउविहारने स्थानके धारणा प्रमाणे प-च्चख्खाण लेवुं, त्यांथी पाछो आलोअंतो निं-दंतो पख्खिअं आलोएमि देवसिअं भणेमि कहिने तेवार पछीतो वंदिता सूत्र कही रह्या पछी जे बे खामणां आपीये छैये, त्यांथी सर्वदे-वसि पडिक्कमणानी पेठे चलाववुं ॥ इति ॥

अथ चोमासी प्रतिक्रमण विधि.

पख्खीनी पेठे चोमासी प्रतिक्रमणनो सर्व विधि जाणवो, परंतु जे ठेकाणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे छे, ते ठेकाणे वीश लोगस्स-नो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके प-क्खीयं पाठ आवे ते ते स्थानके चउम्मासियं पाठ कहेवो. ॥ इति ॥

अथ सवछरी प्रतिक्रमण विधि.

पाखीनी पेठे संवत्सरी पडिक्कमणानो पण सर्व विधि जाणवो परंतु एटलु विशेष के जे ठे-काणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे छे, ते ठेकाणे अही चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके पक्खियं पाठ आवे, ते स्थानके सवछरियं पाठ कहेवो ॥ इति॥

अथ वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ ॥

अणसण मूणोअरिया, वत्ति संखेवणं रस-च्चाउ ॥ कायकिलेसो संलीं, ए आय वद्यो तवो होइ ॥ १ ॥ पायछित्तं विणउ, वेआवच्चं तहेव सज्झाउ ॥ झाणं उस्सग्गोविय, अब्भिंतरउ तवो होइ ॥ २ ॥ धन्य श्री ऋषभदेव स्वामीने जेणे वरसी तप कर्युं, धन्य श्री महावीरस्वा-मीने जेणे छम्मासी तप कर्युं, एमज जे पंच-मासी तप करे, तेने धन्य, जे चार मासी तप करे, तेने धन्य, जे त्रीमासि तप करे, तेने धन्य, जे वे मासी तप करे, तेने धन्य, जे पच्चावन उ-पवास करे, तेने धन्य, जे पच्चास उपवास करे, तेने धन्य, जे पिस्तालीश आगमना पीस्तालीश उपवास करे, तेने धन्य, जे चालीश उपवास करे, तेने धन्य, जे पांत्रीश वाणी रूप सत्य व-चनना पांत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे चो-त्रीश अतिशयना चोत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे तेत्रीश आशातना टालवा निमित्त ते-त्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे बत्रीश योग संग्रहना बत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे ए-

कत्रीश सिद्धना गुण पामवाने एकत्रीश उप-
वास करे, तेने धन्य, जे त्रीश प्रकारें महा मो-
हनीय कर्म टालवाना त्रीश उपवास करे, तेने
धन्य, जे उंगणत्रीश पापशास्त्र टालवाना उं-
गणत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुनी
अठावीस लब्धिना अठावीश उपवास करे,
तेने धन्य, जे साधुना सत्तावीश गुणना सत्ता-
वीश उपवास करे, तेने धन्य, जे छवीश दशा
कल्पना छवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे प-
च्चीश क्रिया टालवाना पच्चीश उपवास करे तेने
धन्य, जे चोवीश तीर्थंकरना नामना चोवीश
उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूय गडागना
त्रेवीश अध्ययनना त्रेवीश उपवास करे, तेने
धन्य, जे वावीश परिसह जीतवाना वावीश उ-
पवास करे, तेने धन्य, जे एकवीश सवल दोप
टालवाने एकवीश उपवास करे तेने धन्य, जे
वीश असमाधिना स्थानक टालवाने वीश उ-
पवास करे तेने धन्य, जे श्री ज्ञाता सूत्रना
प्रथम श्रुतस्कंधना उंगणीश अध्ययनना उं-
गणीश उपवास करे, तेने धन्य, जे अढार पा-

पस्थानक टालवाना अढार उपवास करे, तेने धन्य, जे सत्तर प्रकारे संयम पालवाना सत्तर उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूय गडांगना प्रथम श्रुतस्कंधना शोल अध्यनना शोल उपवास करे, तेने धन्य, जे पंदर परमाधामिना कर्म निवारवाना पंदर उपवास करे, तेने धन्य, जे चौद प्रकारना जीवनी दया पालवाना चौद उपवास करे, तेने धन्य, जे तेर काठीआ निवारवाना तेर उपवास करे, तेने धन्य, जे भीखुनी वार पडिमाना वार उपवास करे, तेने धन्य, जे श्रावकनी अगीआर पडिमाना अगीआर उपवास करे, तेने धन्य, जे दशविध यति धर्म पामवाना दश उपवास करे, तेने धन्य, जे नव प्रकारे ब्रह्मचर्य पालवाना नव उपवास करे, तेने धन्य, जे आठ कर्म टालवाना आठ उपवास करे, तेने धन्य, जे सात व्यसन निवारवाना सात उपवास करे तेने धन्य, जे छकायनी रक्षाना छ उपवास करे, तेने धन्य, जे पांच प्रमाद टालवाना पांच उपवास करे, तेने धन्य, जे चार कषाय टालवाना चार उप-

वास करे, तेने धन्य, जे त्रण दम टालवाना त्रण उपवास करे, तेने धन्य, जे राग द्वेष टालवाना बे उपवास करे, तेने धन्य, जे एक उपवास करे, तेने धन्य, आयबिल करे, तेने धन्य, एकासणुं करे, तेने धन्य, जे एक टाणुं करे, तेने धन्य, जे पूरिमार्ड करे, तेने धन्य, जे पोरसि करे, तेने धन्य, जे नवकारसि करे, तेने धन्य, जे गंठसीउं मुठ सीउं करे, जे कोइ श्री जिनाज्ञा प्रमाणे चाले ते जीवने धन्य छे, धन्य धन्य धन्य धन्य धन्य नमो अरिहंताण ॥ इति वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ संपूर्ण ॥

अथ नंदीनो पाठ.

जयइ जगजीव जोणी, विआणउं जग गुरु जगाणंदो, जगनाहो जगबंधू, जयइ जगप्पिया महो भयवं ॥ १ ॥ जयइ सुआणं प्पभवो तित्थयराण अपछिमो जयइ, जयइ गुरुलोगाणं जयइ महप्पा महा वीरो॥२॥भद्दं सव्व जगुज्जो, यगस्स भद्दं जिणस्स वीरस्स, भद्दं सुरा सुर नम, सियस्स भद्द धूयरयस्स ॥ ३ ॥ गुण भवण गहण सुयरयण, भरिय दंसण विसुद्द

रङ्गागा, संघ नयर भदंते, अखंड चरित्त पागारा ॥ ४ ॥ संजम तवं तु वारस्स, नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥ अप्पडिचक्क सजउं. दोउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥ भद सील पडा गुसियस्स, तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ संघरहस्स भगवउं, सफडाय सुंनदि घोसस्स ॥ ६ ॥ नंदि आनंदि सदा संघने जय जय कारणी आनंद कारणी, कल्याण कारणी, श्री जिनेंद्र देव श्री-गुरुदेवने त्रिकाल वंदना. ॥

सागर गछ प्रतिक्रमण विधि.

सागरगछ प्रतिक्रमण विधि तपे गछ समान जाणना परं विशेष मात्र इतनाहे की प्रतिक्रमणपारनेकी समय इर्यावही न प्रतिक्रमतेहें.

आनंद सूरीयगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछ प्रतिक्रमण समान जाणना विशेष मात्र सागरगछ प्रमाण जाणना.

वडगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगछके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना बिलकुल फरकनही.

राजसूरीय गच्छ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगच्छ समान जाणना.

लहुडी पोसाल गच्छ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगच्छ प्रतिक्रमण समानजाणना

कमल कलसा गच्छ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगच्छके प्रतिक्रमणके विधि समान जाणना.

कवलागच्छ प्रतिक्रमणविधि

समग्रविधि तपेगच्छके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना

विजयगच्छ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगच्छके प्रतिक्रमण समान जाणना विशेष मात्र इतना हे की कर्मक्षय निमित्त काउसग्गके पश्चात् शांतिलोगस्स कहके कहते.

पायचंदगच्छ प्रतिक्रमण

तमामविधि तपगच्छ समान जाणना परं विशेष मात्र यहहे की प्रथम देव वदनके समय पुरकरवरदीवड्ढे प्रमुख न कहते चारों थुइ मात्र एक साथ कहदेतेहे. और कितनीक सकलनामात्र भिन्न हे

॥ अथ सिद्धाचलजीनु चैत्यवंदनप्रारंभ ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिभुवन, हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपकज नमो आदि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृगमडण, प्रवरगुण गणभूधरं ॥ सुर असुर किन्नर, कोडिसेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्झरा वली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुडरीक गणपति सिद्धि साधि, कोडि पण मुनि मनहर ॥ श्रीविमलगिरिवर शृग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर, कोडीनंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रगें ॥ नमो० ॥५॥ पाताल नर सुर लोकमाहि, विमलगिरिवर तोपर ॥ नहिं अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमडण, सुखविहंडण ध्याइयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइये ॥ जितमोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ७ ॥ इति चैत्यवंदन समाप्त ॥

॥ अथ चोवीसजीननु चैत्यवंदन ॥

॥ सुर किन्नरनागनरिंदनतं, प्रणमामि युगादिम जिनमजितं ॥ संभवमभिनंदनमथ सुमतिं, पद्मप्रभ-

राजसूरीय गच्छ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगच्छ समान जाणना.

लहुडी पोसाल गच्छ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगच्छ प्रतिक्रमण समानजाणना.

कमल कलसा गच्छ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगच्छके प्रतिक्रमणके विधि समान जाणना.

कवलागच्छ प्रतिक्रमणविधि

समग्रविधि तपेगच्छके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना

विजयगच्छ प्रतिक्रमण विधि

समग्रविधि तपेगच्छके प्रतिक्रमण समान जाणना विशेष मात्र इतना हे की कर्मक्षय निमित्त काउसग्गके पश्चात शातिलोगस्स कहके कहते.

पायचंडगच्छ प्रतिक्रमण

तमामविधि तपगच्छ समान जाणना परं विशेष मात्र यहहे की प्रथम देव वदनके समय पुरकरवरदीवड्ढे प्रमुख न कहते चारों थुइ मात्र एक साथ कहदेतेहे. और कितनीक सकलना-मात्र भिन्न हे.

॥ अथ सिद्धाचलजीनु चैत्यवंदनप्रारंभः ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिभुवन, हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपंकज नमो आदि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृगमंडण, प्रवरगुण गणभूधर ॥ सुर असुर किन्नर, कोडिसेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्झरा वली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुडरीक गणपति सिद्धि साधि, कोडि पण मुनि मनहर ॥ श्रीविमलगिरिवर शृग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर, कोडीनंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥५॥ पाताल नर सुर लोकमाहि, विमलगिरिवर तोपर ॥ नहि अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंडण, सुखविहंडण ध्याइये ॥ निज शुद्ध सत्ताराधनार्थ, परम ज्योति निपाइये ॥ जिन[illegible] कोइ विठोह निद्रा, परम पदस्थि[illegible] राज सेवा करण तत्पर, प[illegible] इति चैत्यवंदनं समाप्त ॥

॥ अथ चोवीसजी[illegible]

॥ सुर किन्नरनागनरिंद[illegible] जिनमजितं ॥ संभवनाथ[illegible]

मुज्ज्वलधीरमति ॥ १ ॥ वंदे च सुपार्श्व जिनेंद्र महं, चंद्रप्रभमष्टकुकर्मदह ॥ सुविधिप्रभुशीतल जिनयुग ल, श्रेयांसमसशयमतुलबलम् ॥२॥ प्रभुमर्चय नृपव सुपूज्यसुतं, जिनविमलमनतमजिङ्गनतम् ॥ नम धर्म मधर्मनिवारिगुण, श्रीशातिमनुत्तरकांतिगुणम् ॥ ३ ॥ कुथू श्रीअर मल्लीश जिनान्, मुनिसुव्रतनमिनेमिस्तम- सिदिनान् ॥ श्रीपार्श्वजिनेंद्रमिनेंद्रसमं, वदे जिन- धीरमजीरुतम ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इति नागकिन्नर, नरपुदर, वंदितक्रम, पंकजा ॥ निर्जिनमहा[illegible]रिपु, मोहमत्सर, मानमदमकरध्वजा ॥ [illegible], सकलमगल, केलिकानन, सन्निजा, [illegible], हृदयकमले, राजहंस, समप्रजा ॥ ५ ॥ [illegible]वेयेवदन सपूर्णम् ॥

[illegible] ॥ अथपचतीर्थी चैत्यवंदन ॥

[illegible] समरु तारु नाम ॥ ज्यां [illegible]तिमा जिनतणी, त्या त्या करू प्रणाम ॥ १ ॥ त[illegible] श्रीआदिदेव [illegible] ॥ तारगे मानित नाथ. [illegible] ॥ २ ॥ आ

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदनप्रारंभः ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिभुवन, हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपंकज नमो आदि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृंगमंडण, प्रवरगुण गणभूधरं ॥ सुर असुर किन्नर, कोडिसेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्झरा वहती नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधि, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमलगिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर, कोडीनत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥५॥ पाताल नर सुर लोकमांहि, विमलगिरिवर तोपर ॥ नहिं अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंडण, दुखविहंडण ध्याइयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइयें ॥ जितमोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ७ ॥ इति चैत्यवंदनं समाप्त ॥

॥ अथ चोवीसजीननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सुर किन्नरनागनरिंदनतं, प्रणमामि जिनमजित ॥ संभवमभिनंदनमपि च

आराधनथी लह्युं, शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सा सोछ्वासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोडी वरसां लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान ॥ ६ ॥ पच मास लघु पचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पच वरस पच मासनी, पचमी करो शुभदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पचनोए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणु करो भावशु, टाले भवफेरो ॥८॥ एणी पेरे पचमी आराहीयेए, आणी भाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परे, रगविजय लहो सार ॥९॥ इति पचमीचैत्यवंदन ॥

॥ अथ अष्टमीनु चैत्यवदन ॥

॥ माहा शुदि आठमने दिनें, विजया सुत जायो ॥ तेम फागुण शुदि आठमे, सभव चवि आयो॥१॥ चइतर वदनी आठमें, जन्म्या ऋषभ जिणद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचद ॥ २॥ माधवशुदि आठमदिनें, [illegible] कर्म कर्या दुर ॥ [illegible] भरपूर ॥ ३ ॥ अभिनदन चोथ [illegible] जिणद ॥ एहिज आठम [illegible] ॥ ४ ॥ आठ जाति कलश [illegible] जन्म्या जेठ वदि [illegible]

आषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जगभाण ॥
तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥६॥
भाद्रवा वदि आठमदिने, चविया स्वामी सुपास ॥
जिन उत्तम पदपद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनु चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध थापवा, महसेनवन आयो ॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमल द्वीज यज्ञ ॥ इंद्रभू तिआदें मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वदीये, जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वरचरण विलासी ॥ रुषभ अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिववास पास, भवभवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं कालना, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अग लखावीये, एकादश पाठां ॥ पूजणी ठवणी विटणी, मशी कागल काठां ॥ ८ ॥ अगीयार अव्रत ठांमवां ए, वहो

आराधनथी लह्युं, शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोच्छ्वासमे, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोडी वरसा लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान ॥ ६ ॥ पच मास लघु पचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पच वरस पच मासनी, पचमी करो शुभदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पचनोए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणु करो भावशु, टाले भवफेरो ॥८॥ एणी पेरे पचमी आराहीयेंए, आणी भाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परे, रगविजय लहो सार ॥९॥ इति पचमीचैत्यवदन ॥

॥ अथ अष्टमीनु चैत्यवंदन ॥

॥ माहा शुदि आठमने दिनें, विजया सुत जायो ॥ तेम फागुण शुदि आठमे, सभव चवि आयो॥१॥ चइतर वदनी आठमें, जन्म्या कृपज जिणद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचद ॥ २॥ माधवशुदि आठमदिने, आठ कर्म कस्या दुर ॥ अभिनदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥ एहिज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिणद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हवरावे सुर इद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी ॥ नेम

आषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जगभाण ॥
तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥६॥
भाद्रवा वदि आठमदिने, चविया स्वामी सुपास ॥
जिन उत्तम पदपद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनु चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध थापवा, महसेनवन आयो ॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमल द्वीज यज्ञ ॥ इंद्रभूतिआदे मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरे थाप्या वंदीये, जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वरचरण विलासी ॥ रुषभ अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिववास पास, भवभवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग सार एकादश पाठां ॥ विंटणी गल काठां ॥ ८ ॥ अव्रत

पडिमा अगियार ॥ खिमाविजय जिन शासनें, सफ ल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीविशस्थानकनु चैत्यवंदन ॥

॥ पहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥ त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ न मोथेराण पांचमे, पाठक गुण ठठे ॥ नमो लोए स व्वसाहुणं, जे छे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन भावो ॥ विनय करो गुणवतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंभ वयधारीण, तेर मे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाण ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सने ए, नमो तित्थस्स जाणी ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमता हो ये सुखखाणी ॥ ५ ॥

॥ अथ विशस्थानकना काउस्सगनु चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पदर पिसतालीशनो, छत्रीशनो करी यें ॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, काउस्सग्ग मन ध यें ॥१॥ पच सडसठने दश वली, सीत्तेर नव पणवी श ॥ बार अडवीश लोगस्स तणो, काउस्सग्ग धरो गुणीश ॥२॥ विश सत्तर भगवन, द्वादश ने पच ॥ एणी परे काउस्सग्ग जो करे, तो जाये भव सच ॥ ३ ॥ अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो, गुणी लेजो वीश ॥ विश थानक एम जाणीयें, सक्षेपथी लेश ॥ ४ ॥ भाव धरी मनमां घणो ए, जो एक पद

आराधे ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमी निज का रज साधे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री रोहिणीतपचैत्यवंदन ॥

॥ रोहिणी तप आराधीये, श्रीश्री वासुपूज्य ॥ दुख दोहग दूरें टले, पूजक होये पूज्य ॥ १ ॥ पहेला कीजे वासक्षेप, प्रह उठीने प्रेम ॥ मध्यान्हे करी धोतीया, मन वच काया खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ भावे भावना भावीये, कीजे जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहु कालें लेइ धूप दीप, प्रभु आगल कीजे ॥ जिनवर केरी भक्तिशु, अविचल सुख लीजे ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जिननो कीजे जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइये, जिम नावे संताप ॥५॥ कोड कोड गुण फल दीये, उत्तर उत्तर भेद ॥ मान कहे ए विधि करो, ज्यु होये भवनो छेद ॥ ६ ॥

॥ अथ तीर्थवंदननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सीमधर प्रमुख नमु, विहरमान जिन वीश ॥ रिखभादिक वली वंदीयें, सपइ जिन चोवीश ॥१॥ सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वलि सार ॥ समेतशिखर ए पचतीर्थ, पचमी गति दातार ॥ २ ॥ ऊर्ध्व लोके जिनहर नमु, ते चोराशी लाख ॥ सहस सत्ताणु ऊपरें, त्रेविश जिनवर भाख ॥ ३ ॥ एकशो बावन कोडि वली, लाख चोराणु सार ॥ सहस

चुम्माली सातशें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिनभवन नमु, सात कोडि बोहोतेर लाख ॥ तेरशे कोडि नेव्याशी कोडी शाठ लाख चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यतर ज्योतिषीमा वली ए, जिन भवन अपार ॥ ते भवि नित्य वदन करो, जेम पामो भवपार ॥ ६ ॥ तिर्छा लोके शाश्वता, श्रीजिनभवनविशाल ॥ बत्रीशशें ने उंगणशाठ, वडुं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणु सहस, त्रणशें विश मनोहार ॥ जिनपडिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य करु जुहार ॥८॥ त्रण भुवनमाहे वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनता वदीयें, महोदय पद दातार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश तिर्थंकरनी राशिनु चैत्यवंदन ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष छे, कुथु अजित वृषभाति ॥ सभव अभिनदन मिथुन, धर्म करक सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रभ नेम वीर, पास सुपास तुला ए ॥ शशि वृश्चिक धन ऋषभदेव, सुविधि शीतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयासने ए, बारमा घट मीन लील ॥ विमल अनत अर नामथी, सुखीया श्री शुभवीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचदकेवलीना रासमाथी चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहत नमो, भगवत नमो, परमेसर जिन

राज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सिद्धा सघलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रभु पारगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमयक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुअण नविगण जण मण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पायनमुं हु नालें, कर जोडीनें त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तू जग जन सज्जन, नय नानदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर वर नायक, सारे अहो निश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तू तीर्थंकर सुखकर साहिब, तू निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत नविने हितवत्सल, तूही कृपारसासिंधु नमो अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोकस्वभाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण दुरित उपद्रवजाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहित, कारक जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार नवो दधितारण, तू शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण, शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीजे अनुपम दाने सर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीचोवीश जिननावर्णनु चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रभ ने वासुपूज्य दोय राता कहीये ॥ चंद्रप्रभ ने सुविधिनाथ, दो उज्ज्वल लहीये ॥१॥

मल्लिनाथ, ने पार्श्वनाथ,दो नीला निरख्या ॥ मुनि सुव्रत ने नेमनाथ, दो अजन सरिखा ॥२॥ शोले जिन कचनसमा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीरविमल प डित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चोविश जिन समकितभव गण ॥ तीनु चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा, भव तेर कही जे ॥ शांतितणा भव चार सार, नव भव नेम लहीजे ॥ १ ॥ दश भव पासजिणदने, सत्तावीश श्रीवीर ॥ शेष तीर्थंकर त्रिहु भवे, पाम्या भवजल तीर ॥२॥ ज्याथी समकित फरसीयु, त्यांथी गणीएं तेह ॥ धीरविमल पडित तणो,ज्ञानविमल गुण गेह॥३॥इति॥

॥ अथ चउदशे बावन गणधरनु चैत्यवदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पचाणु ठेक ॥ दोय अधिक इग सय गणा, शोल अधिक शत एक ॥ १ ॥ शत सुमतिने गणधरा, एक सय अधिका सात ॥ पचाणु त्राणु तथा, अडसी इगसी त्रात॥२॥ ठोहोतेर ठासठ सगवन, पचास तेतालीस ॥ छत्तिस पणतिस कुथने, अर गणधर तेत्रीश ॥ ३ ॥ अडवीस अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिख भादिक चोविशना, एक सहस्स सय चार ॥ अधिकेरा बावन कह्या, सर्व मली गणधार ॥ ५ ॥ अक्षय

पद वरिया सवे, सादि अनत निवास ॥ करीये शु
भ चित्त वंदना, जव लग घटमां शास ॥६॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपंच परमेष्टि चैत्यवदन ॥

॥ चार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजे भावे ॥ सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १॥ आचारज गुण छत्रीस, पचवीश उवझाय ॥ सत्ता वीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टो त्तर सय गुण मली ए, एम समरो नवकार ॥ धीर विमल पडित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥३॥इति॥

॥ अथ श्री सीमधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमधर जिनवर, सुखकर साहेब देव ॥ अरिहत सकलनी, भाव धरी करु सेव ॥ सकल आगम पारग, गणधर भाखित वाणी ॥ जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (ए थोय चार वखत पण कहेवाय छे)

॥ अथ श्री सीमधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहकर, मुनि मन पकज ह साजी ॥ कुथु अर जिन अतर जनम्या तिहुअण जश परगसा जी ॥ सुव्रत नमि अतर वरदीक्षा, शिक्षा जगत निरासेजी ॥ उदय पेढाल जिनातर मा प्रभु, जाशे शिव वहु पासेंजी ॥ १ ॥ वत्रीश च उसठी चउसठी मलिया, इग सय सठि उक्किठा जी ॥ चउ अम [illegible] मली मध्यम कालें, विश जि

नेश्वर जिहाजी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जघु, धायइ पुक्कर मोकारेजी ॥ पूजो प्रणमो आचारा गे, प्रवचन सार उकारेजी ॥ २ ॥ सीमधर वर केवल पामी, जिनपद सवण निमित्ते जी ॥ अर्थ निदेशन वस्तु निवेशन, देता सुणत विनीतेजी ॥ द्वादश अग पूरवयुत रचिया, गणधर लब्धि विकसियां जी ॥ अप्पज्झवसिय जिनागम वंदो, अक्षरपदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आणारगी समकितसंगी, विविध भग व्रतधारीजी ॥ चउविह सघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पचागुली सूरि शासन देवी, देती तस जस ऋद्धिजी ॥ श्रीशुभवीर कहे शिव साधन, कार्य सकलमा सिद्धिजी ॥ ४ ॥

॥ अथ बीजतिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥ राय राणा प्रणमे, चद्र तणी ज्या रेख ॥ तिहा चद्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह, हु बीज तणे दिन, प्रणमु, आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनदन चदन, शीतल शीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमतिजिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निर्वाण ॥ हु बीज तणे दिन, प्रणमु ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजे, दुविध धर्म भगवंत ॥ जेम विमल कमल दोय, विउल नयन विकसत ॥ आगम अति अनुपम, जिहानिश्चय व्यवहार ॥ बीजे सवि

कीजे, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केसरी, सरस सुगध शरीर ॥ कर जोडी वीजे हु प्रणमु तस पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ४

॥ अथ पचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पचमी ए, जन्म्या नेम जिणद तो ॥ श्यामवरण तन शोभतु ए, मुख शारदको चद तो ॥ सहस वरस प्रभु आयुखु ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो ॥ अष्ट करम हेलं हणी ए, पहोता मुक्ति महत तो ॥ १ ॥ अष्टापदपर आदि जिन ए,पहोता मुक्ति मोझार तो ॥ वासुपूज्य चपापुरी ए नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी माहे वलि ए श्रीवीरतणु निर्वाण तो ॥ समेत शिखर विश सिद्ध हुआ ए, शिर वहु तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमना थङ्गानी हुवा ए, भांखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलडी ए, कीजे तास जतन्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष भलो ए, देवी श्री अविका नाम तो ॥ शासन सान्निध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां काम तो ॥ तपगछ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयसैन्य सूरिराय तो ॥ रिखभदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, भाव धरी सुरराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे जिनराज जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनु तप करतां अम घर, मगल कमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगजन, अष्टापद परे वलीया जी ॥ आठमे आठ स्वरूप विचारी, मद आठे तस गलीया जी ॥ अष्टमी गति पहोता जे जिनवर, फरस आठ नहिं अग जी ॥ आठमनु तप करता अम घर, नित्य नित्य वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ विराजे समवसरण जिन राजे जी ॥ आठमे आठशो आगम भाखी, भवि मन सशय भांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारो जी ॥ आठमने दिन अष्टप्रकारें, जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्टप्रकारी पूजा करीने, मानव भवफल लीजे जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजे जी ॥ आठमनु तप करता लीजे, निर्मल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोडि कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ एकादशी अति रूअडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व महोटु, कहो मुझशु तेम ॥ जि

नवर कल्याणक अति घणा, एकशोने पचास ॥ ते णे कारण ए पर्व महोटु, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगियार श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिम रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतरु चंग ॥ जेम गग निर्मल नीर जेहवु, करो जिनशुं रग ॥ २ ॥ अगीआर अग लखावियें, अगीयार पाठां सार ॥ अगिआर कवली वीटणां, ठवणी पूजणी सार ॥ चावखी चगी विविध रगी, शास्त्र तणे अनुसार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामिये नवपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुकोमलकाय ॥ भुजदड चक्र अखड जेहने, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पडित शिस ॥ शासन देवी विघन निवारो,संघ तणांनिशदीस

॥ अथ शातिजिन स्तुति ॥

॥ शांति जिणेसर समरियें, जेहनी अचिरा माय ॥ विश्वसेन कुल उपना मृग लंछन पाय ॥ गजपुर नयरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष चालिस जस देहनी, वरस लाखनु आय ॥ १ ॥ शाति जिनेसर सोलमा, चक्री पचम जाणु ॥ कुथुनाथ चक्री ठगा, अर नाथ वखाणु ॥ एत्रिणे चक्री सही, देखी आणदू ॥ संयम लइ मुते गया, नित्य उठीने वंदू ॥ २ ॥ शानि जिनेसर केवली, वेठा धर्म प्रकाशे ॥

दान शील तप भावना, नर सोहे अभ्यासे ॥ एह वचन जिनजी तणा, जेणे हियडे धरिया ॥ सुणता शिवगती निर्मली, दिसे केवल वरिया ॥ ३ ॥ समेत शिखर गिरि उपरे, जइने अण सण कीधु ॥ काउ सग्ग मुद्राये रह्या, तिणे मुक्तीज लीधु ॥ गरुयदा सेवु सदा, देवी निरवाणी ॥ भविक जीव तुमे साभलो, ऋषभदासनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया ॥ मरुदेवी जस माया, धोरी लछन पाया ॥ जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया ॥ केवल सिरि राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥ १ ॥ सविजन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी ॥ दुरगति दुख भारी, शोकसताप वारी ॥ श्रेणि क्षपक सुधारी, केवलानतधारी ॥ नमिये नरनारी जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समव सरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा ॥ करे गणप ठ्ठा, छठ्ठ चठ्ठादि दीठा ॥ द्वादशागी वरीठा ग्रथना गाले रीठा ॥ भविजन होय हिठा, देखी [illegible] कल्या[illegible] ॥ ३ ॥ गुर समकितवता, जेहशुद्ध [illegible] जन सता, टालिये मुजचिता ॥ जिनवर [illegible] जिनउत्तम थुणता, पद्मने

नवर कल्याणक अति घणा, एकशोने पचास ॥ ते णे कारण ए पर्व महोटु, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगियार श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अविक सेवो, वन गजा जिम रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरत रु चंग ॥ जेम गग निर्मल नीर जेहवु, करो जिनशुं रंग ॥ २ ॥ अगीआर अग लखावियें, अगीयार पाठां सार ॥ अगिआर कवली वीटणां, ठवणी पूजणी सार ॥ चावली चगी विविध रंगी, शास्त्र तणे अनुसार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामिये नवपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुकोमलकाय ॥ भुजदंड चरु अखड जेहने, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पमित शिस ॥ शासन देवी विघन निवारो, संघ तणा निशदीस

॥ अथ शातिजिन स्तुति ॥

॥ शाति जिणेसर समरियें, जेहनी अचिरा माय ॥ विश्वसेन कुल उपना मृग लछन पाय ॥ गजपुर नयरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष चालिस जस देहनी, वरस लाखनु आय ॥ १ ॥ शाति जिनेसर सोलमा, चक्री पचम जाणु ॥ कुमारावी, मानव ठगा, अर नाथ वखाणु ॥ एत्रिणे चउरव पुण्ये, आआणदू ॥ सयम लइ मुक्ते गया, स पास वली द- ॥ २ ॥ शाति जिनेसर केवली, नेजेंजी ॥ उपर वली

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेजी ॥ वमा कलपनो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पडवेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मगल वरतीजेजी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमारी पलावी, अठमनु तप करियें ॥ नागकेतु नी परे केवल लहियें, जो शुन्न भावे रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याणक गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अतर त्रीजें, रुपन्न चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ वारसे सूत्रने सामाचारी, सवछरी पडिक्कमियेजी ॥ चैत्य प्रवाडी विधिसु कीजे, सयल जतु स्वामीयेंजी ॥ पारणाने दिन स्वामी वछल, कीजे अधिक वमाइजी ॥ मान विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी॥४॥

॥ अथ पर्यूषण स्तुति ॥

पुण्यनु पोषण, पापनु शोसण, पर्व पजूसण पामीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी ॥ कुवर गयवर स्कंध चढावी, ढोल निसाण वजडावोजी ॥ सदगुरु सगे चढते रगे, वीर चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम वखाण धरम सार थी पद, बीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पाठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे दीक्षा ठठे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आठमे स्थिविरावली सजलावी, पिउडा पूरो जगीश- ॥ २ ॥ ठठ अठम अठाई कीजे, जिनवर चैत्य

नमीजेजी ॥ वरसी पडिक्कमणु मुनिवंदन, संघसयल खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रभावना, दान सुपात्रें दीजेजी ॥ भद्रबाहु गुरु वयण सूणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल गिरिमां, मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवरमांहि जिनवर मोहोटा, पर्व पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी स्वामी वछल, बहु पकवान बनाईजी ॥ खिमा विजय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचल तीरथ सार, गिरिवरमा जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहें नवकारज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधरमांहें जल जाणु ॥ पखीमांहि जेम उत्तम हंस, कुलमांहे जिम क्षत्रनो वंश, नाभि तणो जे अंस ॥ क्षमावंतमांहे जिम अरिहंता, तप सूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥१॥ क्षत्र अजितसंभव अभिनंदा, सुमतीनाथ मुख पुनमचंदा,पद्मप्रभ सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि,शितल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धि, वासु पूज्य मती शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत शुद्ध पथी ॥ नमी पासने वीर चोवीस, नेम विना ए जिन त्रेवीस, सिद्धगिरि आव्याईश ॥ २ ॥ भ

रतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुंजय कुण तोले, जिननु वचन अमोले ॥ ऋषभ कहे सुणो भरतराय, ठहरी पालता जे नर जाय, पातक भूको थाय॥ पशुपंखी जे इण गिरि आवे, भव त्रीजे ते सिद्ध थाय, अजरामरपद पावे ॥ जिनमतमें शेत्रुजो वखाण्यो, तेमें आगम दिलमाहें आण्यो, सुणता सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरती ठावे॥ नाभिराया मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेन विख्याता, मूर्त्ति नवाणु भ्राता ॥ गोमुखने चक्रेसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगछ उपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, ऋषभदास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंखेश्वर जिन स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजिये ॥ नर भवनो लाहो लीजियें ॥ मन वंछित पूरण सुरतरू ॥ जय वामा सुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अतिभला ॥ दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला दोय सामल कह्या ॥ शोले जिन कंचन वर्ण लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर भाखियो ॥ गणधरे ते हियडे राखियो॥तेहनो रस जेणेंचाखियो॥ते हुउं शिव सुख सा[illegible] ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती ॥

प्रभु पार्श्व तणा गुण गावती ॥ सहु संघना सकट चूरती ॥ नयविमलना वंछित पूरती ॥ ४ ॥ इति०॥

॥ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

पुहर गिरि महिमां आगममा प्रसिद्ध ॥
विमलाचल भेटी लहिये अविचल ऋद्धि ॥
पचमी गती पोहोता मुनिवर कोडा कोड ॥
इण तीर्थे आवी कर्म विपातिक छोड ॥ १ ॥

(आ स्तुति चार वार पण कहेवाय छे)

॥ अथ नवपद थुईलि० ॥

॥ नित प्रति हु प्रणमुं सिद्धचक्र सुभ भाव। हिवकारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुझ नाम पसाये अरति व्याधि पुलाय। इग तुझ अनुग्रहथी सुख संपति मुझ थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहत नमिये सिद्ध सूरी उवझाय। मुनिवर त्रिण करणें दसण नांण सुहाय। दुगविधि चारित्तें बुधविध तप मन भाय। ये नवपद ध्याता निरुपम शिव सुख थाय ॥ २ ॥ विद्या प्रवादे जाणो ए अधिकार॥ श्रीगुरु उपदेशे सिद्धचक्र उद्धार। प्रवचन अनुसारे भाष्यो एह विचार, भविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणभार॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्रे सरि सुखकार। सेवकनें आपे सुख सपति परिवार। हिव निद्धि उदयकरि चारित्र नदी मन भाय। जिनचंद सूरीसर खरतर पति सुपसाय ॥ इति ॥ नवपदस्तुति ॥

रतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुंजय कुण तोले, जिननु वचन अमोले ॥ ऋषभ कहे सुणो भरतराय, छहरी पालता जे नर जाय, पातक भूको थाय॥ पशुपखी जे इण गिरि आवे, भव त्रीजे ते सिद्ध थाय, अजरामरपद पावे ॥ जिनमतमें शेत्रुंजो वखाण्यो, तेमे आगम दिलमाहे आण्यो, सुणता सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरती ठावे॥ नाभिराया मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी वेन विख्याता, मूर्त्ति नवाणु भ्राता ॥ गोमुखने चक्रेसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगछ उपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, ऋषभदास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंखेश्वर जिन स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजिये ॥ नर भवनो लाहो लीजिये ॥ मन वंछित पूरण सुरतरू ॥ जय वामा सुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अतिभला ॥ दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला दोय सामल कह्या ॥ शोले जिन कंचन वर्ण लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर भाखियो ॥ गणधरे ते हियडे राखियो॥तेहनो रस जेणेचाखियो॥ते हुउं शिव सुख साखियो ॥ ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती ॥

करिये भलभावें भरिये पुण्यभडार । वलिचैत्यप्रवाडे फिरतां लाभअनंत । इह परवपजूसण सहुमें महि भावंत ॥ २ ॥ पुस्तकपूजावी नव वाचनायें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परभावन धूपअगर उखेवो । इम भवियण प्राणी परवपजूसणसेवो ॥ ३ ॥ वलिसामी वच्छल करिये वारं वार । केइ भावनाभावे केइ तपसी सीलधार । अड दीहपजूसण इमसेवत आणद । सुयदेवी सानिध कहे जिनलाभ सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपर्जूषणा पर्व्व स्तुति. ॥

अथ तीर्थ माला चैत्यवंदन

सद्भक्त्यादेवलोके रविशशिभुवने व्यतराणां निकाये, नक्षत्राणांनिवासे ग्रहगणपटले तारकाणांविमाने, पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणेध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरेवरे कुंडले हस्तिदंते, वक्षारे स्फुटनंदीश्वर कनक गिरे नैषधे नीलवंते, चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थंकराणां० ॥ २ ॥ श्रीशैले व्यध्यशृंगे विमलगिरिवरे अर्बुदे पावके वा, संमेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले, सत्याद्रौ चोंजयंते विपुलगिरिवरे गूर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीर्थंकराणां० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमु

॥ अथ पार्श्व जिनस्तुति ॥

ङेंङेंकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकि धरधप धौ रव । दोदोकि दोदों दागिडदि दागिरुदिकि ङमकि-ङणरण ङेणव । ऋऋिऋेंकि ऋेंऋें ऋणणरणरण निज-कि निज जन रंजन । सुरशैलशिखरे भवति सुखद पार्श्व जिनपति मज्जन ॥ १ ॥ कटरेगि थोंगिनि किटति गिगरुदा धुधुकि धुटनटपाटवं । गुणगणण गुणगण रणकि णेणे गुणणगुण गण गौरव । ऋऋिऋेंकि ऋेंऋें ऋणण रणरण निजकि निज जन सज्जना । कल यति कमला कलितकलमल मुकलमीस महे जिना ॥ २ ॥ वूकि वूकि वूवूव ञ्चिव ञ्चिक व ञ्चिपट्टा ताड्यते । तललोंकि लोलो त्रेपित्रेपिनि केपिकेंपिनि वाद्यति । ॐॐ किॐॐ थुगि थु गिनि धोगि धो गिनि कलरवे । जिन मतमनत महिमतनुतानमतिसुरनर मुष्ठवे ॥३॥ पुदाकि पुपुदा पुपुरुदि पुदां पुपुडदि दोंदो श्रवरे, चाचपट चच पट रणकि णे णे रुणण रुरु रुवरे । तिहां-सरगमपधुनि निधपमगरस सस ससस सुरसेवता । जिननाटयरंगे कुशल मनिश दिसतु शासन देवता ॥ ४ ॥ इति ॥

वद्धि वद्धिहु ध्यावु गाऊ जिणवरवीर । जिण पर वपजूसण दारयाधरमनी सीर । आसाढचोमासे हु तीदिनपचास । पडिक्कमणोसवछरी करियेत्रिणउप वास ॥ १ ॥ चोवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार ।

(अथवा) पहिले आरती प्रमुख करिके। पीछे पडिक्कमणो करै। (सोणेंके समय) इरिया वही पडिक्कमके चैत्यवदन करिकेराई सथारा गाथागुणके सोवै।निद्रा न आवे जहांतक नवपदका गुण स्मरण करै ॥ इति प्रथम दिवसविधिः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधिलि० ॥

॥ अब इसीतरे दूसरे दिन प्रभाति करणी सब करिके सिद्धपदको लालवर्ण है।(इसीसे) गहुंकी रोटीको अविल करै ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण (इसपदको) गुणणो दो हजार करै। सिद्धपदके आठगुण। सो (८) गुणा को गुरु नमस्कार करावे (सो लिखते हैं)।

१ अनन्तज्ञानसयुताय श्रीसिद्धाय नम.०।
२ अनन्तदर्शन संयुताय श्रीसि०।
३ अव्याबाध गुणसंयुताय श्रीसि०।
४ अनन्तसम्यक्त चारित्रगुण संयुताय श्रीसि०।
५ अक्षयस्थितिगुण संयुताय श्रीसि०।
६ अरूपी निरजनगुण सयुताय श्रीसि०।
७ अगुरुलघु गुणसयुताय श्रीसि०।
८ अनन्तवीर्यगुण संयुताय श्रीसि०।

॥ इतिसिद्धोके अष्टौ गुणा ॥

॥ यह आठे नमस्कार करिके। अन्नत्थूससि० आठलोगस्सनो काउसग्ग करै। एकलोगस्स कहिके

१ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंतायनम।
२ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरि०।
३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
४ चामरयुग प्रातिहार्यसयुताय श्रीअरि०।
५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्यसयुताय श्री० अरि०।
६ भामंडल प्रातिहार्यसयुताय श्रीअरि०।
७ दुंदुभिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरि०।
८ छत्रत्रय प्रातिहार्यसयुताय श्रीअरि०।
९ ज्ञानातिशय सयुताय श्रीअरि०।
१० पूजातिशयसयुताय श्रीअरि०।
११ वचनातिशय सयुताय श्रीअरि०।
१२ अपायापगमातिशयसयुताय श्रीअरि०।

॥ इति द्वादश अरिहंतगुणा. ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करिके। अन्नत्थू ससियेण। (कहिके) (१२) बारे लोगस्सनो काउसग्ग करे। एकलो गस्स प्रगट कहे। पीछेस्वस्थानक जाके। चैत्यवदन करे पचरकाण पारिके आविल करे। पहले जल पीवे (जब) चैत्यवदन करिके पीवे। पीछेफेर चैत्यवदन करिके तिवि हार पच्चरकाण करे गुणणो(२०००)ॐ ह्रीं० णमो अरि हंताण। इस पदको करे। श्रीपालका चरित्र नवपद महिमा सुणे। पूण पहिर दिन रहणेसे (तीसरीवेर) पाच शक्रस्तवे देव वादे। सामायिक लेके दिन ठते पडिक मणो करे। आरतीके समय दीप धूप कुसम पूजा करे।

१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ।
१६ ऋजुगुण सयुताय श्रीआ० ।
१७ मृदुगुण संयुताय श्रीआ० ।
१८ सर्व सगमुक्तिगुण सयुताय श्रीआ० ।
१९ द्वादश विधतपगुण सयुताय श्रीआ० ।
२० सप्तदशविध संयमगुण सयुताय श्रीआ० ।
२१ सत्यव्रतगुण सयुताय श्रीआ० ।
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ।
२३ अकिंचन गुण सयुताय श्रीआ० ,
२४ ब्रह्मचर्यगुण सयुताय श्रीआ० ।
२५ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ० ।
२६ असरण भावना भावकाय श्रीआ० ।
२७ ससार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
२८ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
२९ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआ० ।
३० अशुचि भावना भावकाय श्रीआ० ।
३१ आश्रव भावना भावकाय श्रीआ० ।
३२ सवर भावना भावकाय श्रीआ० ।
३३ निर्जरा भावना भावकाय श्रीआ० ।
३४ लोकस्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
३५ बोधिदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ।
३६ धर्म्म दुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० । इति

पारे पीछे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसें करै ॥ इति द्वितीय दिवसविधि ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय दिवसविधि लि० ॥

॥ पूर्वोक्त विधिसे प्रभातकर्त्तव्य करै आचार्यपद पीले वर्ण है (इसीसें) चिणाकी दालका आंबिल करै । (ॐ ह्रीं णमो आयरियाण) इस पदको गुणणो दोहजार करे । आचार्य पदके (३६) गुण याद करके छत्तीस नमस्कार करै ।

॥ अथ आचार्य पदके (३६) गुण लि० ॥

१ ॥ प्रतिरूप गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम. ।
२ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
३ युगप्रधानागम सयुताय श्रीआचार्याय नम ।
४ मधुरवाक्य गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
५ गाम्भीर्य गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
६ धैर्यगुण सयुताय श्रीआ० ।
७ उपदेश गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
८ अपरिश्रावी गुणसयुताय श्रीआचा० ।
९ सौम्यप्रकृति गुणसयुताय श्रीआ० ।
१० शीलगुणसयुताय श्री० ।
११ अविग्रह गुणसयुताय श्री० ।
१२ अविकथक गुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ।
१३ अचपल गुणसयुताय श्रीआ० ।
१४ प्रसन्न वदनगुण सयुताय श्रीआ० ।

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ।
१३ आग्रायणी पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१४ वीर्यप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१५ अस्तिप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ताय० ।
१६ ज्ञानप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ता० ।
१७ सत्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
१८ आत्मप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१९ कर्म्म प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२१ विद्याप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२२ अविध्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२३ प्राणायामप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२४ क्रियाविसाल पूर्व पठनगुण यु० ।
२५ लोकविडुसार पूर्व पठनगुण यु० ।

॥ इति पचविंशति उपाध्याय गुणा ॥

इस रीतसें पचवीस नमस्कार करें (खमाहोके) अन्नत्थूस० इत्यादि कहिके पचवीस लोगस्सका का उस्सग्ग करें। पारके एक लोगस्स कहके । (पीछे) पूर्वोक्त करणी करें ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि. ॥

अथ पचमदिवस विधि

॥ (ॐ ह्रीं णमो लो ए सवसाहूण) इस पदका (२) हजार गुणनो करें । साधुपद काले वर्णहे इस सें उडदका आवल करें । सर्व साधुपदके सत्ताईस गुण चिंतवके नमस्कार करें ॥ ॥ ॥

॥ इति षट्त्रिंशदाचार्य गुणा ॥

यह छत्तीस नमस्कार करिके । अन्नत्थउससिएणं (इत्यादि कहिके) छत्तीस (३६) लोगस्सनो का उसग्ग करे । पारिके एक लोगस्स ऊंचे स्वरसें कहि यथोक्त करणी । अनुक्रमसे करे । इति तृतीय दिवस विधि ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीणमो उवज्झायाण) इस पदको (१) हजार गुणणो करे । हस्या मूंगकी दाल प्रमुखनो आंबिल करे । उपाध्याय पदके (२५) गुण याद करि के । नमस्कार करे ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ उपाध्याय पदके २५ गुणलि० ॥

१आचारांगसूत्रपठनगुणयुक्तायश्रीउपाध्यायेभ्योनम
२ सुयगडांगसूत्र पठन गुणयुक्ताय श्रीउपाध्या०
३ श्रीठाणागसूत्र पठनगुणयुक्ताय श्रीउ० ।
४ श्रीसमवायांगसूत्र पठगुण युक्ताय० ।
५ श्रीभगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
६ श्रीज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय० ।
७ श्रीउपासकदशासूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
८ श्रीअन्तगडदशासूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्र पठनगुण युक्ताय० ।
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठन यु० ।
११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण यु० ।

२३ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा०।
२४ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा०।
२५ कायगुप्ति युक्ताय श्रीसा०।
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसहसहण तत्पराय०।
२७ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा०।

॥ इति सप्तविंशति साधु गुणा ॥ ५ ॥

इस रीतसे सतावीस नमस्कार करे। (खडा हो के अन्नत्थू स० (इत्यादि कहिके) सातवीस लोग स्सकाकाउस्सग्ग करे। पारके एक लोगस्स कहके (पीछे) पूर्वोक्तकरणी करे। (यह पच परमेष्टि पदके सब गुण मिलाणें सें (१००) होय (इसीसें) मालाके दाणे (१००) होते है। इति पचम दिवस विधि ॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधिलि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं नमो दसणस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करे। दर्शनपद सपेदवर्णहे (इससें) तंडुलका आंबिल करे। सम्यक्तके सडसठिगुण चितवके नमस्कार करे ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठि भेदलि० ॥

१ परमार्थ संस्तवरूप श्री सद्दर्शनाय नम.।
२ परमार्थ ज्ञातृसेवनरूप सद्दर्शनाय नम.।
३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः।
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नम।

॥ अथ साधुपदके (२७) गुणलि० ॥

१प्राणातिपात विरमणव्रत गुण युक्ताय श्रीसाधवेनम
२ मृषावाद विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
३ अदत्तादान विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
४ मैथुन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
५ परिग्रह विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
६ रात्रिभोजन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
१० वाऊकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ।
१३ एकेंद्री जीवरक्षकाय श्रीसा० ।
१४ बेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१६ चौरिंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१७ पचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।
१८ लोभनिग्रहकारकाय श्रीसा० ।
१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ।
२० शुभभावना भावकाय श्रीसा० ।
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ।
२२ सयम योगयुक्ताय श्रीसा० ।

२८ वादी प्रभावक० स० ।
२९ नैमित्तक प्रभावक० स० ।
३० तपस्वी प्रभावक० सद्द० ।
३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्या भृत्प्रभावक० स० ।
३२ चूर्णां जनादि सिद्धप्रभावक० स० ।
३३ कविप्रभावकरूप सद्दर्शनाय नम ।
३४ जिनशासने कौसल्यता भूषण० स० ।
३५ प्रभावना भूषणरूप स० ।
३६ तीर्थसेवा भूषण० स० ।
३७ स्थैर्यता भूषणरूप सद्दर्शनाय नम ।
३८ जिनशासने भक्ति भूषण० ।
३९ उपशम गुणरूप सद्दर्शनाय नम ।
४० सवेग गुणरूप श्रीस०
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नम ।
४२ अनुकपा गुणरूप श्रीस० ।
४३ आस्तिक्यता गुणरूप श्रीस० ।
४४ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ।
४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जन० श्रीस०
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जन० ।
४७ परतीर्थकादि सलाप वर्जन० ।
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन० श्रीस० ।
४९ परतीर्थकादि गधपुष्पादि प्रेषण वर्जन० श्रीस०।
५० राजाभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।

५ शुश्रूषारूप सद्दर्शनाय नम. ।
६ धर्मरागरूप सद्दर्शनाय नम. ।
७ वैयावृत्तरूप सद्दर्शनाय नम ।
८ अर्हद्विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
९ सिद्धविनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१० चैत्यविनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
११ श्रुतविनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१२ धर्मविनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१३ साधुवर्ग विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१४ आचार्य विनयरूप सद्दर्शनाय नम' ।
१५ उपाध्याय विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१६ प्रवचन विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१७ दर्शन विनयरूप सद्दर्शनाय नम ।
१८ ससारे जिनमतसार मिति चितनरूप सद्द० ।
१९ ससारे जिनमतिसार मिति चितन० ।
२० ससारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति० ।
२१ शका दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नम ।
२२ काक्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नम ।
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय० ।
२४ कुदृष्टि प्रसंसा दूषणरहिताय० ।
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय० ।
२६ प्रवचन प्रभावकरूप सद्द ।
२७ धर्मकथा प्रभावकरूप स० ।

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं नमो नाणस्स) इस पदको (२) हु गुणनो करै । ज्ञानपद उज्वल वर्ण । तंडुलका आविल करै । इक्कावन भेद ग्यानपदके चितवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके (५१) भेदलि० ॥

१ स्पर्शनेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
२ रसनेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
३ घ्राणेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
४ श्रोत्रेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
५ स्पर्शनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम. ।
६ रसनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
७ घ्राणेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
१० मनऽर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
११ स्पर्शनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१२ रसनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१३ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१४ चक्षुरिंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१५ श्रोत्रेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१६ मनें करी ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१७ स्पर्शनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम ।

५१ गणाभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५२ बलाभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५३ सुराभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५४ कांतारवृत्याकार युक्ताय श्री० ।
५५ गुरु निग्रहाकार युक्ताय श्रीस० ।
५६ सम्यक्त चारित्रधर्मस्य मूलमिति चितन० श्री० ।
५७ चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमितिचितन० श्रीस० ।
५८ चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चितन० श्रीस० ।
५९ चारित्र धर्मस्याधारमिति चितन श्रीस० ।
६० चारित्र धर्मस्य भाजनमिति चितन० श्री० ।
६१ चारित्र धर्मस्य निधिसन्निभमिति चि० श्रीस०
६२ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान यु० श्रीस० ।
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ।
६४ सचजीव कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान यु० ।
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्था० ।
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान यु० ।
६७ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धानस्थान यु० श्री० ।

॥ इति सप्तषष्टि दर्शनस्य गुणा ॥

॥ इस रीतिसें सडसठि नमस्कार करे । (खडा-होके) अन्नत्थू ससि एण० (इत्यादि कहिके) (६७) लोगस्स (अथवा) ४ लोगस्स नो काउस्सग्ग करे । एक लोगस्स कहके । (पीछे) पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति षष्ट दिवस विधि ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं नमो नाणस्स) इस पदको (२) हु गुणनो करै । ज्ञानपद उज्वल वर्ण । तंडुलका आंबिल करै । इक्कावन भेद ग्यानपदके चितवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके (५१) भेदलि० ॥

१ स्पर्शनेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
२ रसनेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम. ।
३ घ्राणेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
४ श्रोत्रेंद्रीय व्यजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
५ स्पर्शनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
६ रसनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
७ घ्राणेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
१० मनऽर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम ।
११ स्पर्शनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१२ रसनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१३ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१४ चक्षुरिंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१५ श्रोत्रेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१६ मनें करी ईहा मतिज्ञानाय नम ।
१७ स्पर्शनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम. ।

१८ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम ।
१९ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम ।
२० चक्षुरिंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम ।
२१ श्रोत्रेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम ।
२२ मनेकरी अपाय मतिज्ञानाय नम ।
२३ स्पर्शनेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नम ।
२४ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नम ।
२५ घ्राणेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नम ।
२६ चक्षुरिंद्री धारणा मति० ।
२७ श्रोत्रेंद्रीधारणा मति० ।
२८ मनो धारणामति ज्ञानाय नम ।
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नम ।
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नम ।
३१ सज्ञी श्रुतज्ञानाय नम ।
३२ असज्ञी श्रुतज्ञानाय नम ।
३३ सम्यक् श्रुतज्ञानाय नम ।
३४ मिथ्या श्रुतज्ञानाय नम ।
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नम ।
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नम ।
३७ सपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नम ।
३८ अपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नम ।
३९ गमिक श्रुतज्ञानाय नम ।
४० अगमिक श्रुतज्ञानाय नम ।

४१ अगप्रविष्ट श्रुत० ।
४२ अनग प्रविष्ट श्रुत० ।
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नम ।
४४ अननुगामि अवधिज्ञानाय नम ।
४५ वर्द्धमान अवधि० ।
४६ ह्रियमान अवधि० ।
४७ प्रतिपाती अवधि० ।
४८ अप्रतिपाती अवधि० ।
४९ ऋजुमति मन पर्यवज्ञाय नम ।
५० विपुलमति मन पर्यवज्ञानाय नम ।
५१ लोकालोक प्रकाशक श्री केवलज्ञानाय नम* ।

॥ इति एकपंचासत ज्ञानभेदा ॥

इस रीतसें (५१) नमस्कार करे। (खडा होके) अन्नत्थ उससिएण० (इत्यादि कहे) (५१) लोग स्सके काउ सग्ग करिके। प्रगट लोगस्स कहे। पीछे सब पूर्वोक्त करणी करे। इतिसप्तम दिवस विधि ॥७॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करे। चारित्रपदका उज्वल वर्णहे। (इसीसें) तडुलका आविल करे। सित्तर भेद चारित्रपदके। चितवके नमस्कार करे ॥

॥ अथ चारित्रपदके (७०) भेदलि० ॥

१ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्राय नम ।

२ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नम ।
३ अदत्तादान विरमणरूप चारित्राय नम ।
४ मैथुनविरमणरूप चारित्राय० ।
५ परिग्रह विरमणरूप चारित्रा० ।
६ क्षमा धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
७ आर्यव धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
८ मृदुता धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
९ मुक्ति धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
१० तपो धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नम ।
११ संयमधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नम ।
१२ सत्यधर्म रूप चारि० ।
१३ सौच धर्म्मरूप चारि० ।
१४ अकिंचनधर्म्मरूप चारि० ।
१५ ब्रह्मचर्यधर्म्मरूप चारि० ।
१६ प्रथवी रक्षासयम चारित्रेभ्यो नम
१७ उदग रक्षासयम चारि० ।
१८ तेऊ रक्षा सयम चारि० ।
१९ वाऊ रक्षासयम चारि० ।
२० वनस्पति रक्षासयम चारि० ।
२१ वेइ ंद्री रक्षासयम चारि० ।
२२ तेइ ंद्री रक्षासयम चारि० ।
२३ चौरिं ंद्रीरक्षा सयम चारि० ।
२४ पंचेन्द्री रक्षासयम चारि० ।

२५ अजीव रक्षासयम चारि० ।
२६ प्रेक्षासयम चारि० ।
२७ उत्पेक्षासयम चारि० ।
२८ अतिरिक्तवस्त्रपात्रादिपरठणत्यागरूपसय चारि०
२९ प्रमार्जन रूप संम चारि० ।
३० मनसयम चारि० ।
३१ वाक्सयम चारि० ।
३२ कायासंयम चारि० ।
३३ आचार्य वैयावृत्यरूप सयम चारि० ।
३४ उपाध्याय वैयावृत्यरूप सयम चारि० ।
३५ तपस्वी वैयावृत्य रूप चारि० ।
३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूपचारि० ।
३७ गिलाणसाधु वैयावृत्यरूप चा० ।
३८ साधु वैयावृत्यरूप चारि० ।
३९ श्रमणोपासक वैयावृत्यरूप चा० ।
४० संघ वैयावृत्यरूप चारि० ।
४१ कुल वैयावृत्यरूप चारित्रे० ।
४२ गण वैयावृत्य रूप चारि० ।
४३ पशुपरुगादि रहित वशति वसण ब्रह्मगुप्तचारि०।
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४५ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४६ स्त्रीअगोपाग निरीक्षणवर्जन ब्रह्म० ।
४७ कुड्यतर सहित स्त्रीहाव भावश्रवण वर्जन ब्रह्म० ।

४८ पूर्वस्त्रीसंजोग चिंतनवर्जन ब्रह्म० ।
४९ अति सरसआहार वर्जन ब्रह्म० ।
५० अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ।
५१ अग विभूषावर्जन ब्रह्म० ।
५२ अणसण तपोरूप चा० ।
५३ ऊणोदरी तपो रूप चा० ।
५४ वृत्तिसंक्षेप तपोरूप चा० ।
५५ रसत्याग तपो रूप चा० ।
५६ कायक्लेस तपोरूप चा० ।
५७ सलेखणा तपोरूप चा० ।
५८ प्रायश्चित्ततपो रूपचा० ।
५९ विनय तपोरूप चा० ।
६० वेयावच्चतपो रूप चा० ।
६१ स्वाध्यायतपो रूप चा० ।
६२ ध्यानतपो रूप चा० ।
६३ उपसर्ग तपो रूप चा० ।
६४ अनत ज्ञान सयुक्त चा० ।
६५ अनत दर्शन सयुक्त चा० ।
६६ अनत चारित्र सयुक्त चा० ।
६७ क्रोधनिग्रह करण चा० ।
६८ माननिग्रह करण चा० ।
६९ मायानिग्रह करण चा० ।
७० लोभनिग्रह करण चारित्रेभ्यो नम ।

॥ इति सित्तर चारित्र भेदा ॥

॥ इस रीतसें (७०) नमस्कार करे। (खडा हो के) अन्नथू ससि एणं० (इत्यादि कहे) (७०) लोगस्सका काउसग्ग करिके । एक लोगस्स कहे । (पीछे) पूर्वोक्त करणी सब करे। इति अष्टम दिवस विधि ॥

॥ अथ नवम दिवस विधिलि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं णमो तवस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करे। तपपदके उज्वल वर्ण (इसीसें) तंदुलका आंबिल करे। पच्चास भेद तपपदके चित्त वके नमस्कार करे ॥

॥ अथ तपपदके (५०) भेदलि० ॥

१ यावत कथिक तपसे नम ।
२ इत्वर तपभेद तपसे नम ।
३ बाह्यऊणोदरी तपभेद तपसे नम ।
४ अभ्यंतर ऊणोदरी तपभेद तपसे नम ।
५ द्रव्यतप वृत्तिसंक्षेप तपभेद तपसे नम. ।
६ क्षेत्रतप वृत्तिसंक्षेप तपभेद तपसे नम ।
७ कालतप वृत्तिसंक्षेप तपभेद तपभेद नम ।
८ भावतप वृत्तिसंक्षेप तपभेद तपसे नम ।
९ कायक्लेस तपभेद तपसे नम ।
१० रसत्याग तपभेद तपसे नम. ।
११ इंद्री कषाय जोग विषयक सलीणता तपसे नम।

१२ स्त्रीपशुपडकादि वर्जितस्थान अवस्थित संलीन ।
१३ आलोयण प्रायछित्त तपसे नम ।
१४ प्रतिक्रमण प्रायछित्त तपसे नम ।
१५ मिश्र प्रायछित्त तपसे नम ।
१६ विवेक प्राछित तपसे नम ।
१७ उपसर्ग प्रायछित्त तपसे नम ।
१८ तप प्रायछित्त तपसे नम ।
१९ भेद प्रायछित्त तपसे नम ।
२० मूल प्रायछित्त तपसे नम ।
२१ अणवस्थित प्रायछित्त उपसे नम ।
२२ पारचिय प्रायछित्त तपसे नम ।
२३ ज्ञान विनयरूप तपसे नम ।
२४ दर्शन विनयरूप तपसे नम ।
२५ चारित्र विनयरूप तपसे नम ।
२६ गुर्वादिक मनविनयरूप तपसे नम ।
२७ वचनविनयरूप तपसे नम ।
२८ काय विनयरूप तपसे नम ।
२९ उपचारिक विनयरूप तपसे नम ।
३० आचार्यवेयावच्च तपसे नम ।
३१ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नम ।
३२ साधु वेयावच्च तपसे नम ।
३३ तपस्वी वियावच्च तपसे नम ।
३४ लघुसिष्यादि वेयावच्च तपसे नम ।

३५ ग्लान साधु वेयावच्च तपसे नम ।
३६ श्रमणोपासक वेमावच्च तपसे नम ।
३७ संघ वेयावच्च तपसे नम ।
३८ कुल वेयावच्च तपसे नम ।
३९ गण वेयावच्च तपसे नम ।
४० वायणा तपसे नम ।
४१ प्रछना तपसे नम ।
४२ परावर्त्तना तपसे नम ।
४३ अनुप्रेक्षा तपसे नम ।
४४ धर्म्म कथा तपसे नम ।
४५ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नम ।
४६ रोद्रध्यान निवृत्त तपसे नम ।
४७ धर्म्मध्यान चितन तपसे नम ।
४८ शुक्लध्यान चितन तपसे नम ।
४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नम ।
५० अभ्यतर उपसर्ग तपसे नम ।

॥ इति पंचासत् तपभेदा ॥

॥ इस रीतसें (५०) नमस्कार करे । (खमा होके) अन्नत्थ उससि एणं० (इत्यादि कहे) (५०) लोगस्सके काउस्सग्ग करिके । एक लोगस्स कहे । (पीछे) पूर्वोक्त करणी करे।इति नवम दिवस विधि

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणें कों गुरुके पास जाणेकी विधि लि० ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घडी देखके । अछा वस्त्र आभूषण पहरे । लिलाटमे तिलक करे । दोव । सरखु । मस्तकमे धारण करे । हाथके मोली बांधके । अक्षत । सुपारी । श्रीफल । नेवेद्य । यथाशक्ति रोक नाणो लेके । नवकार गुणतो थको । गुरुके पास जावे । द्वादशावर्त्त वादणा करके । ज्ञान पूजा करे पीछे बहुत प्रमोदवंत होके । गुरुके मुखसे तप ग्रहण करे

॥ अथ संक्षेप ऊजमणाविधि लि० ॥

॥ पच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रका मंडल करे । सिद्धचक्रजी के चौतरफ तीन गढ चूकीके आकार बनावें पहिलै गढमाहे । अष्टदल कमलके आकार नव पद स्थापन करे । पद पद के वर्ण गुण प्रमाणै । रक्तादिक चढावे । (और) पचवर्णके धान्य । नवनालेर प्रमुखके गोटा रगके । जिसपदके जैसे वर्णके होइ (तैसे ही) रगका गोला चढावे । पच वर्णी (९) धजा चढावे । दूसरे वलयमें । सोले श्री फल (अथवा) पूगी फल चढावे । तीसरें वलयमें (४८) तुहारा सारक चढावे । नव निधानके ठिकाणे (९) नव वडा फल चढावे दश दिग्पाल । नवग्रहको । पकान्न प्रमुख चढावे । इत्यादिक विधिसयुक्त । सिद्ध चक्र स्थापना । घर देहरासर आगे करे । और जि

नमंदिर मांहे । वाह्य मरुपै ५ ॥ ७ हाथ प्रमणे मं डल रचना करे । विस्तारसे सव विधि गुरुके वचन से करके । नव पदजी की पूजा पढायके कलस ढाले । धवल मगल गीतगान गावे । वाजिल वजा वे । (इसी तरे) महामोहछव । उदारचित्तसें करे । मगल दीप आरती प्रमुख करे । दुसरे दिन विस र्जन करे । इति सखेप सिद्धचक्र मंडल विधि ।

उद्यापनमें ज्ञान भक्तिके कारण । ए पूठा । ए । वीटांगणा । ए पुस्तक ए लेखण । ए ठवणी । नव तोरण । ए रुमाल । ए दोरा । ए कटासणा । ए थापना ए चडआ । ए पूठिआ । ए आर ती ए । कलश ए जापमाला । ए मंदर । ए प्रतिमा । ए तिलक । ए मुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज वणावे । शक्ति न होय तो यथाके रोकनाणो चढावे । देव पदको देवद्रव्यमें देवे । गुरु पदको गुरु कों देवे । ग्यानपद को ग्यानखाते लगावे । इत्या दिकयथाजोग्य शुभ क्षेत्रे खरच करे । इति सिद्धच क्र सक्षेप उद्यापनविधि ॥

॥ अथ वीस स्थानक तपकरण विधि लि० ॥

॥ तिहां प्रथम सुभ महुर्त्तके दिन । नंदी स्था- पना पूर्वक । सुविहित गुरुके समीप । वीश स्थानक तप । विधि पूर्वक उच्चरे । उंली दो माससें लेके (या वत्) छम्मामें पूरी करे । (कदाचित्) छम्मास मध्ये

पूरी न कर सके (तो) वा उंली गिणती मे । न हीं । और नवी करणी पडे । एक उंलीके वीस पद हे (तिहां) कोई वीस दिनसें । वीसो पद जूदा २ गिणे । कोई वीसों दिन मे एकज पद गिणे । दूसरे वीसों दिनमे दूसरो पद । (ऐसें) वीसों पद-की वीस उंली करे । तिहा पदाराधनके दिन प्रवल शक्तिवंत । अठम तप करिकें आराधे । वीस अठ-में एक उंली होय । ऐसें वीसउंली (४००) अठमे आराधे । और तिसमे हीनशक्ति छठ तप करके आ राधें । तिससे हीनशक्ति चौविहार उपवास करके आराधे । तिससें हीन शक्ति त्रिविहार उपवास क रके आराधे । हीन शक्ति आविल (तथा) त्रिवि हार एकासण करके आराधे । तिहा शक्तिवान प्रा णी । सव तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे । (हीन शक्ति) दिन पोसह करे । वीसों पद पोसह सेती आराधे (जो) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो (तो) आचार्य पदे १ उपाध्याम पदे २ थिवर पदे ३ साधू पदे ४ चारित्र पदे ५ गौतम पदे ६ तीर्थ पदे ७ यह सात थानक तो पोसहज करके आरा धे । तथापि शक्ति नही (तो) तिस दिन देसाव गासिक करे । सावद्य व्यापार त्यजे । सो पिण न होइ (तो) यथाशक्ति तप करी आराधे । अपणी हीनताजावे (तथा) मृतक जातक का सूतकमें उ

पवासादि तप गिणे न जावे । स्त्रीयां पिण ऋतु समय का तप न गिणे (तथा) तपके दिन पोसह सहित करे (तो) वहोत श्रेयकारी हे । सो नही होसके (तो) तपके दिन उभय टक पडिक्कमणा करे। तीन टक देव वदन करे । दो सहस्र (२०००) एक पदका जप करे । ब्रह्मचर्य पाले । भूमि शयन करे। तपके दिन अतिसावद्य आरंभ व्यापार न करे। असत्य न बोले । सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमे रहे । (तथा) तपके दिन पोसह करे । (तो) पारणे के दिन जिन भक्ति करके पारणो करे। करावे । भावना भावे । (तथा) तपके दिन पदके गुण भेद प्रमाण संख्याइं काउसग्ग करे। (तावन्मात्र) तिणकेगुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदनाकरे। उस पदका महिमा गुण याद करके उदात्त स्वरे स्तवना करे । हर्षित रहे ॥

॥ अब वीस स्थानक गुणनो और काउसग्गका प्रमाण लिखते है ॥

॥ (णमो अरिहंताण) (२०००) गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमो सिद्धाण) (२०००) गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ७ काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरियाण) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ काउसग्ग ॥ ४ ॥

(णमो थेराण) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स १५५ काउसग्ग ॥ ५॥ (णमोउवज्झायाण) दो हजार गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए सव्वसाहूण) (२०००) गुणनो । लोगस्स २७ काउसग्ग ॥ ७ ॥ (णमो नाणस्स) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) (२०००) गुणनो । लोगस्स ६७ काउसग्ग ॥ ९ ॥ (नमो विनयसपन्नाण) (२०००) गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥ (णमो चारित्रस्स) (२०००) गुणनो । लोगस्स ६ काउसग्ग ॥ ११ ॥ (णमो बंभवयधारीण) (२०००) गुणनो । लोगस्स ९ काउसग्ग ॥ १२ ॥ (णमो किरियाण) (२०००) गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ १३ ॥ (णमो तवस्सीण) २००० गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स) २००० गुणनो । लोगस्स २८ काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो जिणाण) २००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग॥१६॥ (णमो चरणस्स) दो हजा[illegible] स १२ काउसग्ग ॥ १७ ॥ ([illegible] करके आरा नो । लोगस्स ५ काउसग्ग [illegible] दिन देसावणस्स) २००० गुणनो लो[illegible] । सो पिण न (णमो तित्थस्स) २०० [illegible] आराधे । अपणी [illegible]

इत्यादि विधिसंयुक्त वीसों उंलीमें सब पदके उछव महोछव प्रभावना ऊजमणा पूर्वक करे। जिन साशनके उन्नति के कारण करे। इतनी शक्ति न हो (तो) एक उंली (तो) विशेष उछवादि सहित करणी चाहिये ॥ इहा विधि प्रपाक ग्रंथसे वीस स्थानक सेवनविधि सक्षेप मात्र लिखीहै (जो) गुरुको संयोग हय। तबतो विस्तारसें वीसो पदकी जूदी विधि। गुरुके मुखसें समझके करे जो गुरुका जोग न हो (तो) विवेक संयुक्त इस विधिको देखके वीस स्थानक तप सेवन करे। वीस स्थानक तवन पढे (वा) सुणे। वीस स्थानकजी की पूजा करावे। अपनी शक्ति माफक वीस वीस ज्ञानोपगरण करावे। देव पदको देव खाते लगावे। ज्ञान पदको ज्ञान खाते लगावे। गुरु पदको गुरु महाराजकोदेवे। सब तीर्थों की यात्रा करे। साहमी वछल करे ॥ इति वीसस्थानक तप विधि समाप्ता ॥

॥ मोक्ष करडक तप ॥ उपवास, आयबिल, नीवी, एकाशना, पुरिमड्ढ ए एक उंली हुइ एसें पांच वारउंली करनेसें पच्चीस दिनसे यह तप पुरा करना इस्मे नमो सिद्धाण पदकी वीस नवकारवाली गुणनी. उद्यापनमे एक रुव्वेमें नैवेद्य भरके जिनमदिरमे ढोकना पूजा पढानी ॥

स्वर्ग करंडक तप ॥ प्रथम वारे एकाशना, नव नी वी, पाच आयविल, एक उपवास, एसे २७ दिनसे यह तप पुरा होता हे सिद्धाण पदका गुणणा गुनना ॥

॥ सौभाग्य सुदर तप ॥ एक उपवास और एक आयविलकी एक ओली एसें सोले ओली करनी अर्थात् वत्तीस दिनसे यह तप पूरा करना ॥ सिद्ध पद गुणना ॥ उद्यापन उपर प्रमाणे करना.

॥ चोसठिया तप ॥ एकासना आंयविलकी एक ओली एसी वत्तीस ओली करनेसे तप पूरा होय ॥ इस्मे सिद्धाण पद गुणणा ॥

॥ अष्टाहिका तप ॥ एकेक जिनवरके पांच पांच कल्याणक के एकासने करनेसे चोवीस जिनके ९६० एकासने करने ॥ जिस तीर्थंकरका कल्याणक होवे उसी जिनके नामकी नवकारवाली वीस गुणनी । यह कल्याणक तप जेसा तप हे परं अनुक्रम भिन्न हे ॥ उद्यापनमे चोवीश प्रकारके पक्वान्न चोवीश तिलक, प्रभुजिके सन्मुख रखना ॥ सघ पूजा करनी ॥

॥ ठन्नुजिन तप ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान मीलके तीन चोवीशी तथा सीमधरादिक वीश विहरमान जिन और चार शास्वते जिन मील ठन्नु जिन आश्रयि एकेक उपवास करना और तिस तिस जिनके नामकी नवकार वाली गुणनी ठन्नु दिनसे यह

तप पूरा होता हे उद्यापनमे छन्नवे मोदक मंदिरमे ढोकना गुरु भक्ति करना

॥ अष्टमी तप ॥ अष्टमी अष्टमीके दिन उपवास अथवा आयविल करके आराधना करनी उद्यापनमे दूधसे भरा हुवा कलसके उपर श्वेत वस्त्र ढांकके तिसके उपर सकरके आठ मोदक रखके और ज्ञानोपकरण सहित कर्म क्षय निमित्त प्रतिमा वा पुस्तककी पास रखनेसे उद्यापन होताहे इस्मे तपके दिन चऊप्रन्न जिनाय नमः ए गुणना गुणना॥

॥ अष्टापद पाहुडी तप ॥ आशोज अष्टमीसे पूर्णिमा तक आठ दिन एकाशना करना ॥ अष्टापद तीर्थायनम ए पद गुणना उद्यायनमें जिन पूजा पढावी और नैवेद्यादिक ढोकन करना ॥

॥ अशोक वृक्ष तप ॥ आशोजके मासमें एक उपवास एक एकासणा एसे तीस दिनका यह तप हे सिऊपदको गुणना. उद्यापनमे अशोक वृक्ष चांदिका बनाके मंदीरमे स्थापनकर पूजा पढानी

॥ चांऊायण तप ॥ सुदि प्रतिपदासें एक उपवास एक आयविल एसे पनरादिनका यहतपहे. सिऊपद गुणना उद्यापनमे पनरे लाडु और चादीकी चऊ मूर्त्ति मंदरमे रखे और पूजा पढावे ॥

॥ सूरायन तप ॥ कृष्ण पक्षके प्रतिपदासे उपवास आयविल पनरेदिन तक करे सिऊाणं पद गूणे

उद्यापनमें पनर लाडु और सोना अथवा चांदीकी सूर्य मूर्त्ति रखके पूजा पढावे ॥

॥ तीर्थंकर वर्द्धमान तप ॥ यह तप आयंबिल अथवा नीवीसे किया जाताहे प्रथम तीर्थंकरका एक आंयबिल, दुसरे के दो, तीसरेके तीन चोथेके चार चोवीसमे के चोवीस करने फिर चोवीसमेका एक, तेवीसमे के दो, बाईसमें के तीन यों पहिले भगवानके चोवीस आयबिल करे जो जो भगवानकी उंली होय उस्के नामकी नवकारवा ली गुणे और पूजा करे उद्यापनमे नैवेद्य चढावे। सघ पूजा करे देवगुरु भक्ति करे

॥ जैन जनक तप ॥ निरतर बत्तीस आयबिल करनेसें यह तप पूरा होता हे। उद्यापनमे बडे ठा ठमाठसे जिन पूजा करनी ॥

॥ निगोदायुक्य तप ॥ एक उपवास एकासणा दो उपवास एकासना तीनउपवास एकासना दो उपवास एकासना० एक उपववास एकासना सिद्ध पद गुणना। उद्यानमे चोंदा मोदक बाटने और चौदा मोदक मदरजीमे चढाने और पूजा करानी॥

॥ कमल उंलीतप ॥ एकातर आठ उपवासकी एक उंली करनी एसी नव उंली एकहि वर्षमे कर नी चहीये सिद्धपद गुणणा और उद्यापनमे सोना चादीके नव नव कमल ढोकना गुरुभक्ति करनी.

॥ मेरू कल्याणक तप ॥ एक तेला एक विआसणा एक तेला एक विआसणा एसे तीन तेले करने पीछे एकांतर छे उपवास करना पारणेके दिन विआसना करना० जो पहिले तीन तेला न कर शके तो पहिले दो तेले करके वीचमे ठ उपवास करके छेल्ला एक तेला कर देवे परं यहसव एकहि वर्षमे करना इसमे यह नियमहेकी मेरु त्रयोदशीके दिन छेल्ला तप होना चाहिये इसमे श्रीऋषभदेव पारगताय नम ए पद गुणना चहिये यथाशक्ती उद्यापन अवश्य करना चाहिये

॥ ठ८ तप ॥ इसमे २२९ वेला करना और पारणामे विआसणा करणा सव मील इस्के ४५० उपवास गिने जाते हे सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे ४५० मोदक ढोकना

॥ पद कर्मी तप ॥ पहिले एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा एक उपवास पारणा ॥ प्रथम उंली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा एक उपवास पारणा ॥ दुसरी उंली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा तीन उपवास पारणा दो उपवास पारणा एक उपवास पारणा ॥ तीसरी उंली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा तीन उपवास पारणा चार उपवास पारणा तीन उपवास पारणा दो उपवास पारणा एक उपवास

पारणा सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे मोति ओंर प्रवाल चढावना । पुजा पढाना गुरुभक्ति करना ॥

सिद्धि वधू कंठाभरण तप ॥ प्रथम दो उपवास (वेला) पारणा एक उपवास पारणा तीन उपवास पारणा दो उपवास पारणा एक उपवास पारणा एसे नव उपवास करनेसे तप पूरा होता हे सि, द्धपद गुणना गुरु ज्ञान भक्ति करना ॥

॥ रत्नारोहण तप ॥ एकाशन एक, नीवी एक आयबिल एक उपवास एक ॥ प्रथमावली ॥ नीवी, आयबिल, उपवास, एकासन ॥ द्वितीयावली ॥ आयबिल, उपवास, एकाशन, नीवि तृतीयावली ॥ उपवास, एकासण, नीवी, आयबिल ॥ चतुर्थावली ॥ एक उपवास विगई, निविता रहित नीवी, आयबिल ॥ पचमावली ॥ इसतरे पाच आवलीसे रत्नारोहण तप होता हे सिद्धपद गुणना उद्यापनमें रत्नमय नवकारवाली पाच, रत्नमय स्थापनाचार्य पांच, रत्नमय जिन बिंब पाच, मोदक वीस, इतनी वस्तु पुस्तकके पास ढोकना तप के दिन ब्रह्मचर्य पालना ज्ञान दर्शन चारित्रका आराधन करना पारणाके दिन गुरु भक्ति करनी अष्ट प्रकारी पूजा करनी इस तपसे संतान प्राप्ती होती हे गर्भश्राव होना बंध होता हे आशोज सुदिपचमीसे ए तप सरु करना

॥ आगमोक्त केवली तप ॥ आयंबिल निरतर दश, उपर एक उपवास, सिद्धपद गुणणा उद्यापन मे इग्यारे मोदक, इग्यारे श्रीफल, पुस्तकके पास ढोकना अष्टप्रकारी पूजा पढानी गुरु भक्ति करनी॥

॥ अगविशुद्धी तप ॥ आयबिल तीन, नीवी तीन, एकासणा तीन, एक उपवास अतमे करना सिद्धपद गुणणा उद्यापनमे तेरे तेरे वस्तु पुस्तक के आगे ढोकना पूजा पढानी गुरु भक्ति करनी

॥ पद्मोत्तरतप॥नव पांखडीके कमलको पद्मकहतेहे इस्मे नव उंली करनी चढिये एकेक उंली के निरंतर अथवा एकातर आठ आठ उपवास करना एसी नव उंली करनी सिद्धपदगुणणा. उद्यापनमें अष्ट दल कमल सुवर्णका अथवा चादीका नया बनाकर बिचमे गोतमस्वामीकी प्रतिमाका आकार करके स्थापन करना और अष्ट प्रकारी पूजा करना श्रीसघ औरगुरुभक्तिकरे ॥

॥ गणधरतप॥वर्धमान स्वामीके इग्यारे गण धरके इग्यारह उपवास अथवा आयबिल करना उनके नामकी नवकार वाली गुणना उद्यापनमे गुरुको इग्यारह वेश (चारित्रोपकरण) वेहेराना संघभक्ति गुरुभक्ति और पूजा पढानी

॥ माणिक्य प्रस्तारिका तप ॥ आशोज सुदी इग्यारसको उपवास बारसकों एकासणा तेरसकी

नीवी चौदशका आयविल पुनमका उपवास करना पाठांतरमे दुसरी रीती यहहे की आशोसुदी वारसका आयविल तेरसकी नीवी चोदशका एकासणा पुनमका उपवास पुनमके उपवासके दिन उद्यापन करना सो यहरीतसे की पुनमके दिन सूर्योदय पहिले पवित्रहोके अपनी पसलीमे आभूषण श्रीफल, अक्षत लेके वाजित्रादि महोत्सव पूर्वक जिनप्रसादमे जाना प्रथम प्रदक्षिना करके उपरोक्त वस्तु ढोकना दुसरी प्रदक्षिणामें बिजोरा ढोकनां तीसरी प्रदक्षणामे तावूलपत्र सहित सुपारी ढोकनी चतुर्थ प्रदक्षिणामे ठकको (द्रव्य) ढोकना सात जातिके धान ढोकनां लवण कापरु कसुव क पास पुरी १०० तावे पीतलका वेहेमा ढोकना एकसो सोले दीपक करने एक दीपकमे चादीकी दीवट सुवर्णका कोडिया ढोकना गुरुभक्तिस घभक्ति करना

॥ श्रुत देवता तप ॥ सुदपक्षकी एकादशीका उपवासकरना और मौनरहना एसी इग्यारह एकादशी करनी श्रुतदेवताकी पूजा करनी उद्यानमे अपने घर सरस्वतीकी प्रतिमाकी प्रतिष्टाकराय के पधरावनी और ठाठमाठसे पूजा पढानी ज्ञान ज्ञानीकी और सघकीभक्ति करनी

॥ अविकातप ॥ कृष्ण पचमीके दिन श्रीनेम

नाथजीकी पूजा पूर्वक अंबिका देवीकी स्थापना करके एकाशन तप करके पूजा करनी नैवेद्यफल ढोकना एसे पांचवार करना उद्यापनमे साधुजी-को वस्त्र, अन्न, पान, वेहेराना अंबिकाकी मुर्त्ति दोपुत्रसहित आम्र वृक्षकेनीचे होय एसे देखा वकी करानी

॥ मुकुट सप्तमी तप ॥ आषाढवदि सप्तमीके दिन उपवास करके श्रीविमल नाथजीकी पूजा क-रनी कार्त्तिकवदि सप्तमी के दिन उपवास करके श्रीआदिनाथजी की पुजा करनी मिगसर वदि स-प्तमीके दिने उपवास करके श्रीमहावीर स्वामीकी पूजा करना पोषवदि सप्तमीका उपवास करके श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी पूजा करनी उद्यापनमे लोक नालकी स्थापना करके मुकुट स्थानमे रहि जिना वलिको रत्न जडित मुकुट चढाना ठाठसें पुजा प ढाना एकेक जिनको सात सात वस्तु चढाना ज्ञा-न गुरु सधकी भक्ति करना

॥ स्वर्गस्वस्तिक तप ॥ चार एकासणा निरंतर करके उपर एक उपवास करना उद्यापनमे पांच जातिके एकएकमण धानके स्वस्तिक जिन मंदिरमे करा के पूजा पढावी ज्ञान गुरु सघभक्ति करना

॥ शत्रुंजयमोदक तप ॥ पुरीमढ, एकासणा, नीवी आयविल, उपवास निरतर पाच दिन तक करना,

शत्रुजय नाम गुणना उद्यापनमें पांचशेरगोधुमका एक लाडु एसे पांच लाडु चढावना ज्ञानगुरु सघ भक्तिकरना

॥ सात सौख्य तप ॥ निरतर सात एकासणा करके उपर एक उपवासकरना उद्यापनमे सात मोदक ढोकना आठमा मोदक चतुर्गुण बनाकरना। सोलजातिके पकवान चढाना ज्ञानगुरु भक्तिकरना

॥ क्षीर समुद्र तप॥ श्रावणमासमे करना। निरंतर आठ एकासणा करके उपर एक उपवास करना उद्यापनमे क्षीर खाड और घृतसे भरा हुवा थाल प्रभुकों ढोकना ज्ञानगुरु सघ भक्तिकरनी

॥ छमासी तप ॥ एकाशनातरित यथाशक्ति१८० उपवास करना उद्यापनमे एकसो अस्सी मोदक मदरमे चढाना ज्ञान गुरु भक्ति करना महावीर स्वामीके नामकी नवकार वाली तपके दिन गुणनी

॥ सवत्सरी तप ॥ एकाशना तरीत ३६० उपवास करना ॥ ऋषभ देवजीके नामकी नवकारवाली गुणनी उद्यापनमे चादीका घट सेलडीके रससें भरके मदीरमे चढाना अक्षयतृतीयाके दिनपारणा आवे तेसे तप आदरना। ज्ञानगुरु सघकी भक्ति करनी ॥

॥ अष्ट मासिक तप ॥ मध्यम बावीस तिर्थंकर आश्रयिक एकातरीत २४० उपवास करना। जिस जिस जिन कातप आवे उन उनके नामकी नव-

कार वाली गुणना उद्यापनमे २४० मोदक चढाना ज्ञान गुरु भक्ति करे

॥ चतुर्विध श्री सघ तप ॥ प्रथम दो उपवास (वेला) करके एकातरीत साठ उपवास करने। उद्यापनमे चतुर्विध श्री संघकी और ज्ञान गुरु भक्ति करनी.

॥ अष्ट कर्मोत्तर प्रकृति तप ॥ ज्ञानावरणीनी उत्तर प्रकृति ५, दर्शना वर्णीनी नव, वेदनीकी दो, मोहिनी कर्मकी अठाइस, आयुकर्मकी चार, नाम कर्मकी एकशोतीन, गोत्र कर्मकी दो, अतरायकर्मकी पाच, सब मील १५८ प्रकृतिके १५८ उपवास एकाशनांत्तरित करना एसे करनेसे एक उंली हुइ एसी आठउंली करनेसे यह तप पुरा होताहे सिद्ध पद गुणणा उद्यापनमे १५८ मोदक जिनमंदिरमे चढावणा ज्ञानपूजा गुरुपूजा सघपूजा करनी पूजा पटावणी ॥

॥ हार तप ॥ प्रथम दो उपवास करके एकाशनांतरित सात उपवास करना. पीछे उपवास तीन (तेला) करके एकाशनातरित सात उपवास करना अंतमे वेला करना एवं तपो दिन एक वीस और पारणा सत्तर होय. सिद्ध पद गुणना उद्यापनमे सुवर्ण, माणक, मोति, विद्रुम, रजत, पदक काहलीका सहित हार वनाके वर्द्धमान स्वामीको

चढाना. अथवा सुवर्ण हार बनाके कठारोपित करना। ज्ञानभक्ति गुरुभक्ति सघभक्ति करना

॥ अहव दशमी तप ॥ प्रत्येक वर्षकी भाद्रवा सुद दशमीके दिन यथा शक्ति उपवासादि तप करके अविकादेवी के पास सगीतादिक करके रात्रि जागरण करना मोदक फल पुष्पादिक ढोकना धूप दीपादिक करना अगले दिन स्वामी वत्सलकरके मुनिको दान देके पारणा करना रेशमी चुनरी चढानी एसे दशवर्ष करना दूसरे वर्ष फलादिक दुगुने चढाने तीसरे वर्ष तीगुने चोथेवर्ष चोगुने चढाने ज्ञान गुरु सघभक्ति करना

॥ लघु ससार तारण तप ॥ निरतर तीन आयबिल करके एक उपवास करणा सिद्धपद गुणना एसे तीन ओली करते बारे दिनसे तप पुराहोय

॥ वृद्धससार तारण तप ॥ निरतर तीन उपवास (तेला) करके एक आयबिल करना सिद्धपद गुणना एसी तीन ओली करनी इस्मे नव उपवास तीन आयबिलसे तप पूरा होय उद्यापनमे चादी का जाहाज बनाके एक थालीमे दुधभरके दुधमे जहाज तिराना जहाजमे मोतिमुगा रखना स्वामीवछल ज्ञानगुरु भक्ति करना पूजा पढाना ॥

लाखी पूनवा तप ॥ कार्त्तिक सुदि प्रतिपदाकेदिन गौतमस्वामीके नामका उपवास करना गौतम स्वामी-

के नामकी नवकार वाली गुणनी ॥ एक वर्षकी बा रे सुद पडवाको इसीतरे तपकरना । द्वितीयाको दुध चावलसे पारणा करना समाप्तीके उद्यानमे पाच पाचसेर सवजातिके धान मंदिरजीमे ढोकना पूजा पढानी ज्ञान गुरु संघभक्ति यथा शक्ति महो त्सव करना यह तप करनेसे सौभाग्यकी प्राप्ति होय अठावीस लब्धीकी प्राप्ती होती हे ॥

॥ परतपाली तप ॥ पचवर्ष यावत् श्रीवीर नि- र्वाणसे प्रारंभ कर तीन उपवास करना पीछे बत्री स नीवी करनी समाप्तिमे तीन उपवास करना प्र- तिवर्ष पांचसेरकी लापसी सुगधीदार बनाके स्थाल मे भरके महोत्सव पूर्वक ढोकना ज्ञान गुरु संघभ क्ति प्रभावना करना वीरनामगुणना ॥

॥ त्रिपर्यंत घन तप ॥ १ २- ३ ए प्रथमउंली २ १ ३ ए द्वितीयाउंली ३ २ १ ए त्रतीया उं- ली १ ३ २ ए चतुर्था उंली २ ३ १ ए पचमी उंली ३ १ २ ए छठी उंली १ २ ३ ए सा- तमी उंली ३ २ १ अष्टमी उंली २ ३ १ नवमी उंली सवमीस तपोदिन ५४ पारणे दिन २७ सर्व दिन ८१ उद्यापनमे ज्ञानगुरु साधर्मिक भक्ति०

॥ वर्ग तप ॥ १ २ २ १ २ १ १ २ ए उप वाससे प्रथमउंली. २ १ १ २ १ २ २ १ दूसरी उंली २ १ १. २ १. २ २ १ तीसरी उंली १. २

२ १ २ १ १ २ चौथी उंली २ १ १ २ १ २ २ १ पचम उंली- १ २ २ १ २ १ १ २ छठी उंली १ २ २ १ २ १ १ २ सातमी उंली २ १ १ २ १ २ २ १ अष्टमी उंली सिद्धपद गुण ना तपोदिन ९६ पारणा ६४ पांचमास दश दिनको यह तप पुरा होता हे उद्यापनमे जिन पूजा गुरु भक्ति साधर्मिक वात्सल्य करना

॥ श्रेणितप ॥ १ २ प्रथम पक्ति. १ २ ३ दुसरी पक्ति १ २ ३ ४ तिसरी पक्ति १ २ ३ ४ ५ चतुर्थ पक्ति १ २ ३ ४ ५ ६ पचम पक्ति १ २ ३ ४ ५ ६ ७ छठी पक्ति छश्रेणिमे उपवास ७३ आवे पारणा २७ सवमीलि ११० दिवसे तप पुरोहोय उद्यापनमें सात कोणेका धवल गृह करना, सुवर्णमय निसरणी करणी जिनमंदिरमे ढोकना उद्यापनमेंज्ञानगुरु साधर्मिक भक्ति करना

॥ घन तप ॥ १ २, १ २, २ १, १ २ एसे वारे उपवास और आठ पारणासे वीस दिनमे यह तप पुरा होय सिद्धपद गुणे उद्यापनमे २० मोदक चढावे ज्ञानगुरु साधर्मिक भक्ति करें

॥ निर्वाणदीपक तप ॥ तीनवर्षतक। दीपमालिकाकी चौदश अमासका उपवासकरे अहोरात्री अखंदीपक रखे रात्रिजागरणकरे। वीर प्रभुके नामकी नवकारवाली गुणे उद्यापनमे ज्ञान गुरु भगति करे

॥ बत्रीस कल्यानक तप ॥ प्रथम एक अठम करके पीछे बत्तीस एकांतर उपवास करना और अतमे एक अठम करना इस तपमे आडतीस उपवास और चोत्तीस पारणे होते हे दोमास बारे दिनसे तप पूरा होताहे सिद्ध पदगुणना उद्यापनमे जिनगृहमे बत्तीस बत्तीस वस्तु ढोकनी ज्ञान गुरु संघ भक्ति करनी यह तप वसुदेवहिंडीमें लिखाहे

॥ कर्म चक्रवाल तव ॥ प्रथम एक अठम करके एकांतर एक शठ उपवास करने और अतमे एक अठमकरना. ६१ उपवास और ६३ पारणेसें चारमास दशदिनको तप पूरा होताहे सिद्धपदगुणणा उद्यापनमे आठ आठ वस्तुजिन मदिरमे ढोकना ज्ञान गुरु संघ भक्ति करना

॥ शिव कुमार वेला तप ॥ इसमे बारे वेला (छठ) निरंतर अथवा सांतर करना सिद्धपदगुणना पारणेमे यथा शक्ति आयबिल करना. उद्यापनमें बारबारे वस्तुजिन मंदिरमे ढोकना ज्ञान गुरु संघकीभक्ति करना

॥ कर्म चूरन तप ॥ प्रथम एक अठम करके सात एकांतर उपवास करना और अतमे एक अठम करना. ६६ उपवास और ६२ पारणा चारमास आठ दिनको यह तप पुरा होताहे उद्यापनमे आठशाखा सहित चांदीके वृक्षको सुवर्ण कुलाकी-

से छेदन करना सिद्धपदगुणना ज्ञान गुरु सघ भक्ति करना

॥ अखंड दशमी तप ॥ सुक्ल पक्षकी दशमीके दिन एकाशनादि तपकरनां सिद्धपदगुणना एसी दश एकादशी करनी तपके दिन अखड अन्नका भोजन करना उद्यापनमें दश जातिके धान्य फल पकवान जिनमदिरमें ढोकन करना शुध्ध वस्त्र चढाना ज्ञान गुरु भक्ति करना यह तपके करनेसें विधवा न होय एसा महिमा हे

॥ अमृताष्टमी तप ॥ सुक्ल पक्षकी अष्टमीके दिन आयबिल करनां एसी आठ अष्टमी करना सिद्धपदगुणना देवपूजा करनी उद्यापनमें दूधसे भरा कलस एक, कचुकी नवीन एक, मोदक एक, जल घट एक, जिन मंदिरमें चढाना ज्ञान गुरु सघ भक्ति करना

॥ सत्तरी सय जिन तप ॥ सित्तेरसय जिन आश्रयि एकसो सित्तर एकांतर उपवास वा एकासना करना । गुणणा गुरु मुखसे धारके जपना उद्यापनमें एकसो सितर श्राविकाको जिमाना ज्ञान गुरु भक्ति करना

॥ अडु ख डु.खित तप ॥ सुद पक्षकी प्रतिपदाको पहिला उपवास, सुद डुजका डुसरा, सुद तीजका तीसरा उपवास, यह प्रथम उली एसी

पाच ओली करनी सिद्धपद गुणना तपके दिन ऋषभदेवकी मूर्तिको अखंड पुष्प माला चढानी नवीन नवीन नेवेद्य ढोकना उद्यापनमे एक चांदीका वृक्ष बनाके उस्की शाखामे सोनेका पारणा लटकावे रेसमकी पाटसे रेसमी तलाइ रखके उसमे सुवर्ण मय पुतली रखके जिन मंदीरमे ढोकना ऋषदेवकी पूजा करना ज्ञान गुरु संघभक्ति करना

॥ पचमेरु तप ॥ एक मेरुके एकांतर पांच उपवास करना सुदर्शन मेरुका नाम गुणणा दुसरे वखत पांच उपवासमे विजय मेरु गीणना तीसरे पांच उपवासमे अचल मेरु गिणना। चोथी वारके पांच उपवासमे मदिर मेरु नाम गिणना पांचमी वार पांच उपवासमें विद्युन्माली मेरु नाम गिणना इस्मे निरंतर करेतो २५ उपवास और २५ पारणा मिलके पचास दिनमे तप पूरा होय उद्यापनमे सुवर्ण मय मेरु बनाके मंदीरमे रखना २५ २५ वस्तु ढोकना ज्ञान गुरु संघ भक्ति करना

॥ बडा समवसरण तप ॥ प्रथम चार उपवास करके पारणे एकासणा न बनेतो बियासणा करणा एसी चार ओली करते पजुषणकी पचमीके दिन पारणा आवे तेसें तप करणा एसे चार वर्ष करनेसे ए तप पुरा होताहे उद्यापनमे यथा शक्ति ज्ञान गुरु सघभक्ति करे

॥ मोक्ष दंडक तप ॥ गुरुके हाथमे रखनेका दंडक अपने हाथमे लेके अपनी मुठीसे भरना जितनी मुठी होय उत्तना एकातर उपवास करना अथवा दूसरी विधि यह हे की एकासणा बार, नीवी नव, आयबिल पाच, उपवास एक, एवं सत्तावीस दीन तप करना सिद्ध पद गुणना उद्यापनमें छेल्ले उपवासके दिन एक थालमे चावल भर श्रीफल रोकम द्रव्य रखके वाजित्र सहित गीतगाते गुरुके पास जाके दंडकी पूजा करके थाल भेट करना वस्त्रादिक वेराना ज्ञानकी सघकी भक्ति करनी

॥ दवयती तप ॥ एकेक जिन आश्रयी वीस आयबिल करना एसी चोवीस ओली करना यह धन्ना तप होनेसे एक पच्चीसमी ओली शासन देवीके नामकी करनी और गुणणा अनुक्रमसे जिस जिस जिनकी ओली होय तिस्का नाम गुणणा और शासना देवीकी ओलीमे शासना देवीका नाम गुणणा इस्मे पांचसें आयबिल और [illegible] होतेहे उद्यापनमें चोवीश जिनकी [illegible] चोवीश तिलकचढाने
यथाशक्ती ज्ञान गुरु सा[illegible]

॥ ऊणोदरी तप ॥

अठावीस कवलका [illegible] न्यून करना [illegible]

तप कहते हे प्रथमदिन आठ दूसरे दिन बारे तीसरे दिन शोले, चोथे दिन चोवीस, पांचमे दिन एकत्रीस, कवलका आहार करणा और एकासणा का पचखान करना सिद्ध पद गुणणा सब मिलके पुरुषको ७१ स्त्रीको ७७ कवल आहार पांच दिनमें लेणा उद्यापनमे कवलकी सख्या प्रमाण मोदक चढाना ज्ञान गुरु सघभक्ति करना.

॥ निर्वाण तप ॥ आदि नाथजीके निर्वाणके ठ उपवास करना वीर प्रभुके निर्वाण पर उपवास दो करने शेष तीर्थं करके निर्वाणके एकांतर उपवास तीस तीस करने जिन जिन तीर्थं करके निर्वाणका तप, चलता होय तब उन उन तीर्थं करके नाम की नोकार वाली गुणनी उद्यापनमे चोवीस तीलक, चोवी पकान, चोवीस फल, चोवीस संख्यामे सर्व वस्तुये ढोकनी ज्ञान गुरु श्री सघकी भक्ति करनी

॥ केवल ज्ञान तप ॥ श्रीआदिनाथजी, मल्लीनाथजी, पार्श्वनाथजी, नेमनाथजी ए चार तीर्थंकरोके केवलज्ञान कल्याणक के तीन तीन उपवास करने. वासुपूज्यज्यस्वामीका एक उपवास और सब उन्नीस तीर्थंकरोके दोदो उपवास करने सबमील ५१ उपवास करने उद्यापनमे ५१ मोदक फल, फूल, नैवेद्य, ढोकना गुरुभक्ति करना

॥ जिन दीक्षा तप ॥ वीस तिर्थंकरोने दीक्षा समय छठ कीये तिस्के वेले करने वासुपूज्यका एक उपवास मल्लीनाथ पार्श्वनाथजीके तीन तिन उपवास करना सुमतिनाथ स्वामीके नामका एकाशना करना सबमिल ४७ उपवास एक एकाशणा होताहे उद्यापनमे ४७ मोदकादिक चढावने अष्ट प्रकारी पूजा ज्ञान गुरु भक्तिकरना

॥ जिन चवन जन्म कल्याणकतप ॥ एके के जिनके चवन कल्याणक के उपवास करणा जिनजिन तीर्थंरका तप होय तिसदिन तिनके नामकी नवकारवाली गुणे उद्यापनमे चोवीस चोवीस चीजे चढावे ज्ञानगुरु भक्ति करे

॥ गौतमपडघातप ॥ पदरे पूर्णिमा पर्यंत एकाशनादितप करना गौतमस्वामिकी प्रतिमाके पास क्षीरका पात्र भरके ढोकना अष्टप्रकारी पूजा करनी गौतमस्वामीकी प्रतिमाके अभावे महावीर स्वामीकी पूजाकरनी उद्यापनमे चादीका पडघा (पात्रें) क्षीरभर के गौतमस्वामी अथवा महावीरस्वामिके पास ढोकना गुरुजीको झोली पात्रे प्रमुख देनां

॥ लघुपचमी तप ॥ सुदी और वदीकी पंचमीका उपवास करना नमोनाणस्स गुणणा एक वर्षके चोवीस और एक उपर उपवास करके २५ उपवाससे यह तप पूराकरना यथाशक्ति उद्यापन करना।

यह तप पौष अथवा चैत मासमे सरु नहि करना

पचमी तप ॥ पांच वर्ष और पांच मास तक सुदि पांचमीका चोवी हार उपवासकरना नमोनाण स्स पद गुणना यथाशक्ति उद्यापन करना यहतप कार्त्तिक मिगसर, माघ, फाल्गुन, वैशाख, जेष्ट, आषाढ, ए सात मासमेसे हरेक माससें सिरु कीया जाता हे । अखड करना उद्यापन करना

॥ पुंडरीक तप ॥ चैत्री पुनमके दिन उपवास करके पुंडरीक गण धरके नामकी नवकार वाली गुणे और पुजा करें एसे सात वर्ष करे उद्यापनमे अगणित श्रावकोको जिमावे अथवा प्रभावना करे अगणित द्रव्यसे ज्ञान भक्ति करे अगणित अन्न पान मुनिको वेरावे । जो चिज दीजावे सो गिणनानहि योंहि पसली भरके वेरावे । और प्रभावनाभि पसली भरके देवेपरंगिनेनही

॥ गुणरत्न संवत्सर तप ॥ यह तप के सेवन करने वालोंको दिवसमें उकडु आसनमे रहना और रात्रिको वीरासनसें रहना चहिये (वस्त्र रहित रहना) यह तप शोलेमासतक करना तिस्मे प्रथम मासमे एकांतर उपवास करनां दुसरे मासमें दो दो उपवास पारणा करनां तीसरे मासें तीन तीन उपवास पारणा करना. चोथा मासें चार चार उपवास उपर पारणा करना एसें एकेक मासें एकेक

दिन तपका वढाते जानां एसे शोल मास तप करनां शोले मासमे सव मिल ४७७ दिन उपवास आवेगे सव मिलके ७३ पारणा होतेहे. सिद्ध पद गुणणां उद्यापन यथाशक्ती॥

आयविलवर्द्ध मान तप ॥ प्रथम एक आयंविल करके एक उपवास, दो आयविल करके एक उपवास, तीन आयविल करके एक उपवास, चार आयंविल करके एक उपवास एसे एकेक आयविल वढाते जांनां यावत् एकसो आयविल पर्यंत वढानां. सों आयंविल उपर एक उपवास करें यह तपमे सव मिल एकसो उपवास आवें और पांचहजार पचास आयविल होतेहे ए महा तपका सेवन चौदेवर्ष, तीनमास और वीस दिनसें पूरा होताहे उद्यापन यथा शक्ती करे.

॥ अक्षयनिधि तप ॥ घर देरासरमे अथवा उपाश्रयादि उत्तम स्थानमे विचित्र चित्रित घटस्थापन करें तीस्मे प्रतिदिन मुठीभरके चावल और यथाशक्ति द्रव्य मालतें जाय एकाशनादिक तपकरे पजुसणके पनरे सरुकरे पजुसणमे तप समाप्ति हे पजुसणमे घटपूर्ण भर और होनेसें ऊपर श्रीफल महोत्सव पूर्वक मन्दि

पूजा पढावें ज्ञान पूजा गुरू पूजा करे एसें चारवर्ष पर्यंत करे उद्यापनमे त्रिपक्षिणी करके देव आगे ढोकना यथाशक्ती महोत्सव करना ॥

चांड्रायण तप ॥ चड्रमाजेसें सुक्लपक्षमे एकमके दिनसे चढता हें तेसें पडवाके दिन एक कवल, दुजके दिन दो कवल, तीजके दिन तीन कवल, चोथके दिन चार कवल एसें एकैक कवल पुनमतक चढावे पुनमके दिन पनरे कवल आहार करे कृष्णपक्षके चड्रमाकी रीतिसे एके क कवल घटाते यावत् अमावास्याकों एककवल आहार करे एसें यवमध्य प्रतिमां तपत्नी इस्को कहते हे यह चाड्रायण, यवमध्य तप एक मासकाहे उद्यापनमें चांदीका चड्र और सोनाके वत्तीस यव बनाके मदिरमे चढावे और ज्ञान पुजा गुरू पूजा सघ पूजाकरे। अष्टप्रकारी पूजा पढावे

तृतीय परिछेद प्रारंभ ।

अथ श्रावकोंकी दिन चर्या कहते हैं

॥ चिदानद स्वरूप, रूपसे रहित, रक्षक और परम ज्योतिरूप, एसे सिद्ध परमात्माको मेरा नमस्कार हो मन शुद्धिको धरने वाले योगीश्वरो, ध्यान रूपी दृष्टि करके जिस्का स्वरुपकों देखतेहें, एसे परमेश्वरकी में स्तवना करताहु प्राणिगण सुख समूहको चाहतेहे और सर्व सुख समूह मोक्षमेहे वो मोक्षपदकी प्राप्ति ध्यानसें होतीहे और ध्यान मनकी शुद्धीसे होताहे मनोशुद्धी कषायोके जयसें होतीहे कषायोका जय इंद्रियोंके विजयसें होताहे इंद्रियोका विजय सदाचारसे होताहे गुणोंका निबंधन करानेवाला सदाचार सदुपदेशसे प्राप्त होताहे सदुपदेशोसें समृद्धिकी प्राप्ति होतीहे समृद्धि प्राप्त होनेसे सर्वत्र गुण प्राप्त होनेका उदय होताहे सद्गुणोके उदयकी प्राप्तिके लिए आचारोपदेश नामक ग्रथकी रचना करी जातिहे सदाचारके विचारोका निरूपण करनेमें रुचिकारक, विचक्षण पुरुषोको मनन करने योग्य, देवानु प्रियोंकों आत्यानदकारी, यह ग्रथ, पुण्यवत प्राणियोको, विशेष श्रवण करने लायकहै

अनत पुद्गल परावर्तो करके पुन दुष्प्राप्य यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके विवेकी प्राणिकों धर्म

उपर अवश्य आदरवंत होना चहिये क्योकी सुननेसे, देखनेसें, करनेसें, दूसरोसें करानेसे, अनुमोदनेसें यह धर्म सातों कुलकों निश्चय पवित्र करताहे धर्म, अर्थ, काम, यह तीन वर्गके साधन विना यह मनुष्य जन्म पशुवत् निष्फलहे तीन वर्गके साधनमेंभी धर्म वर्गको अधिक साधन करना क्योकी धर्मवर्ग विना अर्थ और काम न प्राप्त होशक्तेंहे मनुष्यभव, आर्यदेश, उत्तमजाति, सर्व इंद्रियोकी सुदृढता, परिपूर्ण दीर्घायुष, इतनी चिजे विना पुण्य प्राप्त न होशक्तीहे कदापि पुण्ययोगसे उपरोक्त मील शक्तेहें तथापि वीतरागके वचन पर श्रद्धा होनी दुर्लभहे कदापि श्रद्धा होतीहे तथापि सुगुरुका योग सुपुण्य विना मिल शक्ता नहीहे

न्यायसें राजा, सुगधसे पुष्प, उत्तम पदार्थसें, भोजन ज्यों शोभनीक होताहे त्यों उपरोक्त वस्तु भी सदाचारसेंहि शोभनीक होतीहे सदाचार तत्पर पुरुष शास्त्रोक्त विधिसें परस्पर अविरोध करके तीनो वर्गका खुसीसें साधन कर शक्ताहे

पंडित पुरुष रात्रिके चतुर्थ प्रहरसें वा पीछली दो घडी रात्रिसें उठे. निद्राकों त्याग कर पंचपरमेष्टी मंत्र पढे दक्षिण अथवा वाम दोनोमेंसें जो नाशिका वहती होय उस तरफका पग शय्यासे उठती वख्त प्रथम धरती पर धरे शय्याकों और शयनके वस्त्रोका करके दूसरे शुद्ध वस्त्र

पहिन सुस्थान पर वेठके पंचपरमेंष्टीका ध्यान करे. पूर्व अथवा उत्तर दिशा सन्मुख वेठके शरीर और स्थानकी शुद्धि करके मन समाधिसे जाप करे

पवित्र हो किंवा अपवित्र हो सुस्थित हो वा दुःस्थित हो परं पचपरमेष्टी नवकारमत्रके जपनेसें प्राणि सर्व पापसें रहित होता हे अगुलीके अग्र भागसे, मेरुकों उल्लघन करके, संख्यारहित, जो जाप करे सो प्राय अल्प फल कारक होताहे

उत्कृष्ट, मध्यम, अधम ए तीन प्रकारके जाप कहे जातेहे उसमें कमलादिक विधिसे जाप किया जायसो उत्कृष्टहे जपमालासे जाप किया जाय सो मध्यमहे विना मौन, विना सरया, विना चित्त स्थिर रखे, विना अचल आसन, विना ध्यान जो जाप किया जाय सो अधम जाप कहा जाताहे पीछे गुरुके पास जाके अथवा अपने घरमें अपने पापकी शुद्धीके वास्ते आवश्यक (प्रतिक्रमण) करे

रात्रिके पापकी शुद्धीके वास्ते राई, दिनके पापकी शुद्धीके वास्ते दैवसिक, पनरे दिनकी शुद्धीके वास्ते पाक्षीक, चारमासके पाप शुद्धीके वास्ते चोमासी, बारमासके पापकी शुद्धीके वास्ते सावत्सरीक, एसें पाच प्रतिक्रमण कहेहे प्रतिक्रमण करके, कुल क्रमकों याद करके, हर्षित चित होके मगल स्तुतिका पाठकों याद करे

मंगलाष्टक

मंगल भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभु ॥
मंगलं थूलिभद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगल ॥ १ ॥
नाभेयाद्याः जिना' सर्वे, भरताद्या श्च चक्रिण ॥
कुर्वंतु मंगलं सर्वे, विष्णवः प्रति विष्णव ॥ २ ॥
नाभि सिद्धार्थ भूपाद्या, जिनानां पितर स मे ॥
पालिताखण्ड साम्राज्या, जनयतु जयं मम ॥ ३ ॥
मरुदेवी त्रिशलाद्या, विख्याता जिन मातर ।
त्रिजगद्भानितानंदा, मङ्गलाय भवंतु मे ॥ ४ ॥
श्रीपुण्डरीकेंद्रभूति, प्रमुखा गण धारिण ।
श्रुत केवलिनो पीह, मंगलानि दिशतु मे ॥ ५ ॥
ब्राह्मी चदन बालाद्या, महासत्यो महत्तरा ।
अखंड शील लीलाद्या, यछतु मम मगलं ॥ ६ ॥
चक्रेश्वरी सिद्धायिका, मुख्य शासन देवताः ।
सम्यग्दृशां विघ्नहरा, रचयतु जयस्त्रिय ॥ ७ ॥
कपर्दी मातंग मुख्या, यक्षा विख्यात विक्रमा ।
जैन विघ्नहरा नित्य, दिशतु मंगलानि मे ॥ ८ ॥
यो मंगलाष्टक मिद पटुधी रधीते,
प्रातर्नर सुकृत भावित चित्त वृत्ति ॥
सौभाग्य भाग्य कलिता धुत सर्वविघ्नो,
नित्य स मगल मलं लभते जगत्याम् ॥ ९ ॥

पीछे मंदिरजीमे जाके निःसही कहके सर्व आशातनाका त्याग करके तीन प्रदक्षिणा देवे विलाश,

हास्य, थुक (वलगम) का गिराना, निद्रा, कलह, विकथा, चार प्रकारका आहार, जिनमंदिरमे नहि करना "हे जगन्नाथ तुमकों नमस्कार हो' इत्यादि स्तुतिका पाठ बोलके फल, अक्षत, सुपारी, जिन राजके सन्मुख रखे राजा, देव, गुरु, निमित्त शास्त्र वेत्ता इनके पास खाली हाथसे नहि जाना क्योंकी फलसें फल मीलताहे जगवंतके दक्षिण भागमे पुरुष, दहिने भागमे स्त्री नव अथवा साठ हाथ दूर रहकर वंदना करे पीछे उत्तरासण लगाके, योगमुद्रासे बेठके, मधुर ध्वनीसे चैत्य वंदन करे पेटके उपर दो हाथकी कोणी रखकर, कमल डो-डाके आकार दोहाथकी दश अंगुलीयों संयोजित करे उनको योगमुद्रा कहतेहे पीछे अपने घर जाके प्रात: क्रिया करे (भोजन, वस्त्र, घरके परिवा रकी यथायोग्य व्यवस्था करे) बांधव, नोकरों प्रमु-खोंकों अपने अपने कार्योमे नियोजित करके बुद्धिके आठ गुण धारक पोषध शालामें जावे शुश्रुषा (गुरुकी सेवा) श्रवण (उपदेशका सुनना) ग्रहण (स्वीकार करना) धारणा (याद रखना) उहा (तर्क करना) अपोह (समाधान करना) अर्थ (अभिप्राय समजना) तत्वज्ञान (तत्वसमजना) यह बुद्धीके आठ गुण हे धर्मका जाणकार होना, दु-र्बोद्धका त्याग करना, ज्ञानको प्राप्त होना और

वैराग आना ए सब सुननेसे प्राप्त होतेंहे आचार्य और साधुओंकों पचांग नमस्कार करके आशातना त्याग करके गुरुके सन्मुख बेठना. दों ढीचण, और दो हाथ लगाया हुवा मस्तक, धरतीपर टिकायके नमस्कार करनेको पचाग नमस्कार कहतेहें

पलाठी बाधके, लबे पग पसारके, पग उपर पग चढाके, दो कांख दिखाते, अगाडी, पीछाडी, बरो बर दोनु तर्फ, गुरुके पास बेठना नहीं अपनेंसे पूर्व आए हुवेकी बातें पूर्ण हुवे विना गुरुको बुलाना नही आशयका समजदार गुरुके मुख सामने दृष्टि रखकर चित्तकी एकाग्रतासें धर्म शास्त्र सुने. वाख्यान पूर्ण हुवे पीछे अपनी शंकाका समाधान करे (पुछे) और देव गुरुके गुण गाने वाले (भाट भोजक) को यथोचित दान देवे. जिस्ने प्रात प्रतिक्रमण न किया होय सो बांदणा देके गुरुको वादे। धर्मप्रिय श्रावक नवकारसहीत प्रमुख यथाशक्ती पच्चरकाण करे दान देनेवालेजी जोमत पच्चरकाण न करेतो तिर्यंच योनीमे उत्पन्न होतेहे हाथी घोडा प्रमुखमे उत्पन्न होकेजी बधनमें पडतेहे. जो दाताहे सो नरकमे न जाय जो व्रत पच्चरकाण करता हे सो तिर्यंच न होय जो दयावत होय सो हीन आयुष्य न होय. सत्यवादी होय सो डुखर (डुष्ट अवाजवाला)

न होय तपश्चर्या हे सो सर्व इंद्रियों रुप मृगको वश्यकरनेमे जाल (फांसा) समान हे और कषाय रुप तापको मिटानेके लिऐ ऊक्कासमान ह फिर कर्म रूप अजीर्णको मिटानेके लिए जातिवंत उत्तम हरडे समान हे जो दूरहे, दुराराध्य (दुःखसें मिलने लायक) हे, देवताओकोंभी जो दुर्लभहे, सो सब तपसें मिल शक्ताहे क्यो कि तपको कोई उल्लघन करने समर्थ नही पीछे बजारमें जाके अपने अपने कुलके उचित द्रव्यो पार्जनका उद्यम करे मित्रोके उपकारके वास्ते, बाधवोके उदयके वास्ते, न्यायवंत न्याय लक्ष्मीका उपार्जन करे क्योंकी केवल अपना पेट कोन नही भर शक्ता हे?

नीच जनोचित व्यापार करना नही और दूसरोंसें भी कराना नही क्योंकि सपदा पुण्यकर्मसे बढतीहे पर पापसे बढती नहि कदापि पाप व्यापारसे लक्ष्मी बढे पर उसका परिणाम अछा नहीहे. जिस व्यापारमे बहुत आरंभहोय, महापापहोय, लोकमे निंद्याहोवे एसा होय, इह लोक परलोकसे विरुद्ध होय एसे व्यापार (काम) नही करने लोहार, चमार, मदिराकार, तेली, प्रमुख नीच जनो से अधिक लाभ होय तोभी व्यवहार नही ॥

एव चरन् प्रथम याम विधि समग्रं ।
श्राद्धो विशुद्ध विनयो नय ॥

विज्ञान मान जन रजन सावधानो ।
जन्म द्रुय विरचये त्सकल स्वकीयम् ॥ १ ॥

इति दिनचर्याया प्रथम वर्ग समाप्त ॥

॥ अथद्वितीय वर्ग । प्रारब्यते ॥

दूसरा प्रहरदिन चढते अपने घर आयके विचक्षण जन जहा जीवाकुल भूमी नहोय एसे स्थान पर पूर्वदिशा सन्मुख बेठके स्नान करे स्नान करनेके लिए चार पगवाला, जिस्मे नल लगाया होय एसा, एक बाजोट (पट्टा) बनावे जिस्का पाणी दुसरे बासणमे लेके निर्जीव स्थानमे डाला जाता होय तो जीवकी ठीक यत्ना होशकतीहे रजस्वला अथवा नीच जातिका स्पर्श हुवा होय, अथवा सूतक आया होय, घरमे कोइका मरण हुवा होय तो मस्तकसे सर्वांग स्नान करना उपरोक्त कारण सीवाय देव पूजाके वास्ते बुद्धिवत मस्तक वर्जित उष्ण जलसें स्नान करे योगी पुरुष कहतेहें की चद्र, सूर्यके किरणोके स्पर्शसे समग्र जगत शुद्ध होजाताहे तों मस्तकजी उनके किरणोसे स्पर्शित होनेसें सदा पवित्र गिना जाताहे

हर रोज शिर जीजोनेसें जीवघात होताहे इसलिए नही जिजोना. दया एहि हे सार जिस्मे एसे

दिकसें पूजा करे केशर चदन चढाते नीचे लिखित काव्य उच्चार करके चढावे

सच्चंदनेन घनसार विमिश्रितेन,
कस्तूरिका द्रव युतेन मनोहरेण ।
रागादि दोष रहित महितं सुरेंद्रै,
श्रीमज्जिन त्रिजगत पति मर्चयामि ॥

पुष्प चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले

जाति जपा बकुल चपक पाटलाद्यै,
मंदार कुंद शत पत्र वरारविंदै ।
ससार नाश करण करुणा प्रधानं,
पुष्पै: परैरपि जिनेंद्र महं यजामि ॥

धूप करने समय नीचे लिखित काव्य बोले

कृष्णागुरु प्रचुरिता सितया समेतं,
कर्पूर पूरमहितं विहितं सुयत्नात् ।
धूप जिनेंद्र पुरतो गुरुतोष पोष,
भक्त्योत्क्षिपामि निज दुष्कृत नाशनाय ॥

अक्षत चढानेके समय नीचे लिखित श्लोक बोले

ज्ञानच दर्शन मथो चरण विचित्य,
पुज त्रयच पुरत प्रविधाय भक्त्या ।
चोक्षाक्षतै कणगणै: रपरै रपीह,
श्रीमतमादि पुरुष जिन मर्चयामि ॥

फल चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

सन्नालिकेर पनसामल बीजपूर,

सदाचार हैं सो सब धर्मके हेतुहे अर्थात् कृपा धर्मका परिपालनके लिए सदाचार पालाजाताहे निर्मल तेजका धारण करने वाला आत्मा सदा मस्तकमे रहताहे इस लिए और सदा वस्त्रसें वेष्टित रहनेसे मस्तक कभी अपवित्र होता नही अज्ञ जन स्नानके लिए जास्ति पाणी ढोलतेहे और उससे बहुत जीवकी विराधना करतेहे, एसा स्नान करके शरीरकों पवित्र और आत्माको मलीन करतेहे स्नान करनेंमे जीजोया वस्त्र दूरकरके दूसरा वस्त्र पहिनके जहां तक पेर भीने रहे तहां तक अर्हत्का स्मरण करता उहाहि खडा रहे जो खडा न रहेतो पगमें मेल लगेगा और पग अपवित्र होवेंगे फिर कितनेक जीवोके घातकाभी सभव होवेगा इससे पापका भागीभी होवेगा गृहमंदिर (घरदेरासर) में जाके प्रथमसे प्रमार्जना करके पूजा करने लायक वस्त्र पहिनके अष्टपट मुखकोश बांधे मन, वचन, काया, वस्त्र, भूमि पूजाके उपकरण, स्थिति (स्थिरता) यह सात प्रकारकी शुद्धी पूजाके समय करनी स्त्रीका पहिना हुवा वस्त्र पुरुष पूजा समय नहि पहिरे और पुरुषका पहिना हुवा वस्त्र स्त्री नहि पहिरे क्योंकी उससे कामरागकी वृद्धि होतीहै उत्तम कलसमे भरा जलसें जगतकों जलका अभिषेक करे और पीछे उत्तम वस्त्रसे अग लुछन करके चदना

दिकसें पूजा करे केशर चदन चढाते नीचे लिखित काव्य उच्चार करके चढावे

सच्चंदनेन घनसार विमिश्रितेन,
कस्तूरिका द्रव युतेन मनोहरेण ।
रागादि दोष रहित महित सुरेंद्रै,
श्रीमज्जिन त्रिजगत पति मर्चयामि ॥

पुष्प चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

जाति जपा बकुल चपक पाटलाद्यै,
मंदार कुद शत पत्र वरारविंदै ।
संसार नाश करण करुणा प्रधानं,
पुष्पै परैरपि जिनेंद्र महं यजामि ॥

धूप करने समय नीचे लिखित काव्य बोले

कृष्णागुरु प्रचुरिता सितया समेत,
कर्पूर पूरमहितं विहितं सुयत्नात् ।
धूप जिनेंद्र पुरतो गुरुतोष पोष,
भक्त्योत्क्षिपामि निज दुष्कृत नाशनाय ॥

अक्षत चढानेके समय नीचे लिखित श्लोक बोले

ज्ञानच दर्शन मथो चरण विचित्य,
पुज त्रयच पुरत प्रविधाय भक्त्या ।
चोक्षाक्षतै कणगणै रपरै रपीह,
श्रीमतमादि पुरुष जिन मर्चयामि ॥

फल चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

सन्नालिकेर पनसामल बीजपूर,

जंबीर पूग सहकार मुखै फलैस्ते ।
स्वर्गाद्यनल्प फलद प्रमदा प्रमोदं,
देवाधिदेव मधुना प्रशमं महामि ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके नैवेद्य चढावे

सन्मोदकै र्वटक मक्क शालि दालि,
मुख्यै रसंरयरस शालिनि रत्नभोज्यै ।
क्षुत्व्रद्व्यथाविरहित स्वहिताय नित्य,
तीर्थाधिराज महमादरतो यजामि ॥

नीचे लिखा काव्य बोलके दीपक चढावे

विध्वस्त पाप पटलस्य सदोदितस्य,
विश्वावलोकन कला कलितस्य भक्त्या ।
उद्योतयामि पुरतो जिननायकस्य,
दीपतम प्रशमनाय शमाबुराशे ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके जल चढावे

तीर्थोदकै र्धुतमलै रमलस्वभाव,
शश्वन्नदी ह्रदसरोवर सागरोद्भै ।
दुर्वार मार मद मोह महाहितार्थं,
ससार ताप शमन जिनमर्चयामि ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके हाथ जोड नमस्कार करे

पूजाष्टक स्तुति मिमा मसमा मधीत्य,
योनेन चारु विधिना वितनोति पूजा ।
भुक्त्वा नरामरसुखान्यविसर्मितानि,
धन्य सुवास मचिराद्भजते शिवेपि ॥

नया मंदिर बनाना चाहे तो अपने घरमे प्रवेश करते नाये हाथपर जमीनसें देढ हाथ उंचे शल्य रहित पवित्र स्थानपर मंदिर बनावे पूजा करनेवाला पूर्व अथवा उत्तर दिशाके सन्मुख बेठे परं विदिशामें न बेठे और दक्षिण दिशातो सर्व कार्यमें वर्जितहे

पूर्व दिशा सामने बेठके पुजा करनेसें लक्ष्मीका लाभ होय अग्नि दिशामे बेठेतो संताप उपजावे दक्षिण दिशामे मृत्यु कारक नैरुतमें बेठेतो उपद्रव करे पश्चिम और वायव्य दिशामे बेठेतो संतानकी हानी करे. दो पांव, दो ढीचण, दोहाथ, दो स्कंध (खभा) एक मस्तक यह नव स्थान पर अनुक्रमसे भगवंतकी प्रथम पूजा करे उत्तम चंदन और केशर विना पूजा न करनी ललाट, मस्तक कंठ, हृदय, पेट, इतने स्थानपर अपने तिलक करना

प्रभाते शुध्ध वाससे,मध्यान्हें पुष्पादिकसे संध्या समय धूप दीपसें भगवंतकी पूजा करनी एक पुष्पके दो विभाग नहि करना कलिको छेदनानहि पत्र,पांखडि, कलिकों छेदन करनेसे हिंसा जेसा पाप लगताहे हस्तसें गिरा,पेरकोलगा, जमीन पर पडा, शीर पर धरा एसे पुष्पोसे कहि पूजा न करनी गंध रहित, तीव्र सुगंध वाला, नीच जातिजन फर्शित, कीटक दंशित, मलीन वस्त्रसे वेष्टित, एसे पुष्पसें पूजा कर-

नी नही भगवंतके वामांगमें धूप रखना. जल पात्र सन्मुख रखना पान अथवा फल हस्तमे रखना उपरोक्त अष्ट प्रकारी पूजा हररोज करनी और नीचे लिखि एक वीस प्रकारी कोइ पर्व तिथीमे अथवा तीर्थ स्थानोंपर अवश्य करनी

एकीस प्रकारी पूजाके नाम

स्नात्र, चदन, दीप, धूप, पुष्प, नैवेद्य, जल, ध्वजा, वासक्षेप, अक्षत, सुपारी, तांबुल, भंडारवृद्धि, फल, वाजित्र, गीत, नाटक, स्तुति, छत्र, चामर, आभूषण

विशेष लाभार्थी श्रावक शुध्ध वस्त्रसे सुशोभित होके अशुचि मार्गको छोडके अच्छे मार्गसे ग्रामचैत्य (पचायतीमंदिर) दर्शनके लिए जाय

पूजाका फल विषे

मदिरमे दर्शनके लिए जाउगा एसा विचार करनेसें एक उपवासका, जानेको उठेतो दो उपवासका, मदिरके मार्गमे चलेतो तीन उपवासका, मदिरको देखनेसे चार उपवासका, मदिरके दरवाजेपर आनेसे छउपवासका, मदिरके अदर जाके दर्शन करनेसे पदरे उपवासका, जिन पूजा करनेसें एक मासके उपवासका फल मीले तीन वार "नि सीही" शब्दकों उच्चारके मदिरमें प्रवेश करना मदिरकी प्रथम सारसभाल (देखरेख)करके पीछे पूजा करना

मूलनायककी प्रथम पूजा करके पीछे अदर वाहार सव जिनविंवकी पूजा करना अवग्रहसें वाहिर नीकलके पीछे भक्ति सहित वंदना करे फिर सामने वेठके चैत्य वंदना करे एक नमुथ्थुणका पाठसें जघन्य, दो नमुथ्थुणसे मध्यम, पांच नमुथ्थुणसे उत्तम चैत्य वंदना जाणनी फिरभी दुसरी प्रकारसेंभी तीन प्रकारकी चैत्य वदना होतीहे स्तुति पाठ वोलते योग मुद्रा, वंदना करते जिनमुद्रा, प्रणिधानके समय मुक्ताशुक्ति मुद्रा, करनी (नमुथ्थुणका पाठ उच्चरते योग मुद्रा, जावंति चेइयाइं यहपाठ वखत जिनमुद्रा, जयवियराय उच्चरते मुक्ताशुक्ति मुद्रा करी जातीहे.) (यह परंपरागत आम्नायहे) पेटके उपर दो हाथकी कुणी स्थापन करके, कमल डोडाके अकार दोहाथको एकिठे संयोजित करके परस्पर अगुलियोको योजित करनेकों "योग मुद्रा' कहते हे (यह चैत्यवदन करनेके वखत होती हे) चार आंगुली आगे, और तीन आंगुली पीछें, पिहुलि (पोहोली) रखे, फिर दोहाथ अपने घुटणके पास टटार रखके,नीची दृष्टीसें खडा रहनेको "जिनमुद्रा" कहते हे (यह कायोत्सर्ग समय होतीहे) दो घोटणके विचमे रहे हुवे, मोति पकनेकी दो छीपके समान दोनु हाथ परस्पर जुडे हुवे होय, एसे आकारवाले दो हाथोको अप

नी ललाट (कपाल) पर लगाना उसकों "मुक्ता शुक्ती" मुद्रा कहते हे (यह मुद्रा जय वीयराय कहती वख्त करी जाती हे)
भगवंतको नमस्कार करके मंदिजीसे वहार निकलती वख्त "आवस्सही" एशा उच्चार करके निकले फिर घर जायके अपने भाइ मित्रोंको साथ लेके भक्ष्य अभक्ष्यका (विचारवाला) भोजन करे (२२

पग धोया सिवाय, क्रोधाध होके, दुर्वचन बोलता दक्षीण दिशाके सन्मुख बेठके भोजन करेसो राक्षस भोजन कहा जाताहे
पवित्र वस्त्र और शरीरसें अछे स्थानपर बेठके स्थिरतासें देव गुरुको याद करके, भोजन किया जाय सो मानुष्य भोजन गिना जाताहे स्नानादिकसें शरीर शुद्ध करके, जिनपूजाकरके पूज्य जनो (माता पिता) कों प्रसन्न करके, मुनिजनोंकों और सत्पात्रों को दानादिक देके पीछे भोजन किया जाय सो उत्तम भोजन गिना जाताहे

भोजन, मैथुन, वमन(कय उलटी) दातण, लघु नीति, वडीनीति (झाडा पेसाव) करनेके समय बुद्धिमानोंकों मौन रहना चहिये क्यों की ज्ञान आशातना होतीहे अग्नि कोन, नैरुत कोंन,और दक्षिण दिशि यह तीन दिशा भोजनके वास्ते वर्जित हे सूर्यके उदय और अस्त समय, चंद्रसूर्यके ग्रहण

मय अपने विरादरोका शव (मुरदा) पडा होय,, तहा तक, भोजन नही करना

सपदा ठते भोजन में लोभ रखे सो वमा मूर्ख है मानो वो पुरुष अन्य जनोंके लिए धन कमाताहै

अशुद्ध और अज्ञात भाजनमे, जाति वाहिरके घरका वा उनके हाथका, अज्ञात और निषिद्ध अन्न पान फलादिक खाना नही

वाल, स्त्री, गर्भपात, गो, ए चार हत्याके करने वालेकी, आचार भ्रष्टो की, कुलमर्यादाका उलघन करनेवालोकी पक्ति मे वेठ के जाणकार होके भोजन करना नही

मदिरा, मास, सेहेत, भ्रक्षण (लुणी मसका) वड पीपल उवर वृक्षादि पाच जाति के फल, अनतकाय, अज्ञात फल, फूल, साक, पत्र, रात्रि भोजन, कच्चे गोरससें मीला हुवा विदल, फूग लगाहुवा अन्न, दोदिन उपरात का दहि, विगरा हुवा अन्न, जिस्मे जीव पडे होय एसे फल, पत्र, पुष्प, औरभी जिस्मे जीव उत्पन्न होनेका सभव होय एसे अचारादिक सव अभक्ष्यो कों धर्मवत प्राणी वर्जित करे भोजन उंर वडीनीतिमे विशेष देरलगाना नहि पाणी पीनेमे और स्नान करनेमें उतावल करना नहि

पानी पीना भोजनकी आदिमे विष समान अतमे शिल्लासमान और मध्यमे अमृत समान जाणना

अजीर्ण हुवा होय तहां तक भोजन नही करना पूर्ण क्षुधाकालमे अपने को रूचे सो भोजन करना भोजन किये पीछे मुख शुद्धि जल सुपारी ताबूलादिकसे करनी

विवेकी जन रस्तेमे चलते तावूल न खाय सुपारी प्रमुख अक्षत फल दातोंसें भागना नही क्यों की उससें जीव घात होता हे

भोजन कीये पीछे उष्णकाल सिवाय सोना नही क्यों की सोनेसे शरीरमे व्याधिका सभव होता हे इति दिनचर्यायां द्वितीय वर्ग समाप्त

॥ अथ तृतीय वर्ग प्रारभ ॥

भोजन किये पीछे अपने घरकी शोभा देखता, विचक्षणोसें वार्त्तालाप करता, पुत्रादिकोकों शिखावन देता थका सुखसे दो घडी वार विवेकी जन अपने घरमे ठहरे

गुणकी प्राप्तिकरनी यह अपने स्वाधीन हे धनादिकका सुख दैवाधीन हे एसे तत्ववेत्तोओको कभी गुणकी हानी नहि होती हे

कुल हीन पुरुषभी अपने गुणसें उच्च दशाको प्राप्त कर शक्ताहे देखिये किचडसें उत्पन्न होने वाला पकज (कमल) कों सब अपने शिरपर धारण करतेहे और पक (कादा किचड) पेरसें घिसा जाता हे

गुण उत्पन्न होनेके लिए कोइ कुल वा खांण न-ही हे पर उत्तम प्राणि अपने गुण करके प्रख्यात और उच्चदशा प्राप्त होता हे जेसें सत्वादि गुण युक्त प्राणी राज्य योग्य हो जातेंहे तेसे एक विश शति गुण युक्त होनेसें प्राणिगण धर्म योग्यहो शक्ते हे

(१) जिस्का हृदय क्षुद्र (तुछ) नहो, (२) सौम्य होय, (३) रूपवत हो (४) जन वल्लभ हो (५) क्रुर न हो, (६) भवभीरु (ससारसें जन्म जरामरणादि-कसे करताहो)(७) मूर्ख न हो (८) दाक्षिणतावाला हो (९) लज्जावंत हो (१०) दया सहित हो (११) मध्यस्थ हो (१२) सौम्यदृष्टि हो (१३) गुणरागी हो (१४) सद्भक्ता हो (१५) सुपरिवारयुक्त हो (१६) दीर्घदृष्टी हो (१७) कुल परंपराको माननेवाला हो (१८) विनीत हो (१९) गुणकों भूलनेवाला न हो-(२०) परहित हितार्थी हो (२१) सब वातोका समजदार हो यह इकिस गुण युक्त प्राणी धर्म रत्नके योग्य हो शक्ताहे

पडित पुरुषोने वहुत करके राज कथा, देशक था, स्त्री कथा, भक्त कथा नही करनी क्यों की एसी विकथा करनेसें कुछ लाभ तो होता नही पर अनर्थका तो वरोवर सभव हे

धर्म कथाभी अपने सुमित्रो और वधवोसें कर-

नी धर्मशास्त्रके रहस्य के जाणकारोंके साथ धर्म (तात्वीक) विचार जरूर करना चाहये

जिससें पाप (अधर्म) बुद्धिकी वृद्धि होय एसे लोगोमे मित्रता और सहवासजी नहि रखना को इका कोप, वचन सहन करना पर अपने न्याय को न छोडना

अवर्णवाद तो कोइकाजी विचक्षणने बोलना नही और पिता गुरु, स्वामी, राजादिकका तो अ वर्णवाद जरूर बोलनाहि नही

मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलीनजातिवाला, धर्म-निंदक, कुशीलिया, लोभि, चोर, इतनेकी सगती कजी नहि करनी

"अज्ञात जनकी प्रसशा करनी,अज्ञातको अपने घरमे स्थान (उतारा) देना, अज्ञात कुलसे सादी करना, अज्ञातकों नोकर रखना, अपनेसे बडे लो-गोंसें कोप वा विरोध करना, गुणिजनसे तकरार क रनी, अपनेसे अधिक दरजेवालेंकों नोकर रखना, करजा करके धर्ममे धन लगाना, अपनी दु खी अ वस्थामेजी अपना धन पराये हाथमे होयसों नही याचना, अपने बिरादरोमे विरोध करना, स्वजनों कों छोडकर अन्यजनोंसें मैत्री करना, शक्ति छते ध र्ममे उद्यम नही करना, नोकरोका दड करके उस धनसे अपने मजा उडानी, दु खी अवस्थामे अप

ने वाधवोंका साहाय याचना, अपने मुखसे अपने गुणका वर्णन करना, अपने बोलते बोलते हसना, जिस तिसका खाना," यह सब कार्य लोक विरूद्धहे और मुर्खताके चिन्हहे सो त्याग करना न्यायसे धन उपार्जन करना अपनी रीत रीवाजोमे देश, कालके विरुद्धका त्याग करना राज विरोधियोका संग और महाजनसे विरोध न करना कुल,शील,आचारमे अपने समान जनसे और भिन्न गोत्रवालेसें व्यावसादी करना अपनी जातिवालोंके पडोसमे अपना निवास रखना जहा उपद्रव होवे एसें स्थानका त्याग करना अपनी पेदासीके प्रमाणमे खर्चरखना लोकमे निंदा न होय एसा अपनी सपदानुसार वेष रखना अपने देशका आचारको और अपने धर्मको न छोडना

जो अपना आश्रय चाहे उनकें हितमें रहना अपना बलाबलका विचार रखना अपने हित अहितका विशेष विचार रखके कार्यमे प्रवर्त्तना अपनी इंद्रियोको वश्य रखना देव व गुरुमे बडा भक्ति भाव रखना स्वजन, दीन हीन दुःखी, अतिथी की यथायोग्य आगता स्वागता करनी यह विचार चातुर्यताकों अपनें चित्तमे रखना विचक्षणोसे शास्त्रसुनता, वा सीखता थका विचक्षण कितनाक समय को व्यतीत करे नसीब पर विश्वास रखकर निरु

द्यम बेठा न रहे परं धन उपार्जनका उपाय करे क्यो की उद्यम विना नसीब कभी फल देता नही हे कूरा तोल, कूडा माप, कूरालेख प्रमुख अनर्थ कार्योको त्याग करके शुद्ध व्यवहारसे व्यापारमे स दा प्रवर्त्ते अंगारकर्म, वनकर्म, शकटकर्म, भाटक कर्म, स्फोटककर्म, दतवाणिज्य, लाक्षावाणिज्य, रस वाणिज्य, केशवाणिज्य, विषवाणिज्य, यन्त्रपीलन, नि र्लांछन, (बेलके कर्ण नाक अंड नख रोम छेदना) असतीजन पोष (कुत्ते बिल्ले तोते प्रमुख जानवरोसे आजीविका करनी) दवदान (दव लगाना) सर द्र ह तलाव शोषण करना यह पदरे कर्मादानका व्या पार श्रावक न करे

लोखरु, महुडाके पुष्प, मदिरा, सेहेत (मधु) कद, मूल, पान, फल, प्रमुख वस्तुका आजीविका निमित्त श्रावक व्यापार न करे

उष्ण कालमे बहुत जीव विराधना होनेके भय से विचक्षण श्रावक फाल्गुण मासमें उपरात तिल, गुड, टोपरा, द्राक्षा प्रमुख मेवा प्रमुखका व्या पार न करे

चातुर्मासमे श्रावक गाडीमे घोडे बेलोकों जोडे नही बहुत आरम्भ प्रवर्त्तक कृषि कर्म श्रावक करे करावे नही

योग्य मोल मिलता होय तो लेण देण करना बहु

त लाभके लिए अधिक लोभ न करना क्यों की अधिक लाभके लोभसें कोइ समय मूल धनकाभी नाश हो जाता हे विशेष लाभ होता होय तथापि उधार कोइको न देना दगिने रखेके सिवाय धनके लोभसें कोइकों व्याजसें धन न देना

चोरीका माल निश्चय हुवे पीछे थोडे मोलसे मिलता होय तो भी न लेना सरस निरस वस्तुका मेल सेल न करना चोर, चमाल, मलीन परिणाम वाला, धर्मभ्रष्ट, इनोके साथ इह लोक परलोकके सुख वांछकोने व्यवहार न करना

विवेकी जन विक्रय समय असत्य न बोले और लेनेके समय अपने वचनकीकबुलातको लोपनही करे

अदृष्ट वस्तुका सट्टा नहि करना सोना, चांदी हीरा मणि प्रमुख पदार्थोंकी सत्यसत्य परिक्षा कीये विना लेना नही

राज बल सिवाय अनर्थ और विपत्तीका निवारण होशक्ता नही इस्के लिए राज्यमें मैत्रता, परिचय, रखनी चाहिये पर राज्यमे पराधीन न होना (स्वाधीन रहना योग्य हे)

तपस्वी, कवि, वैद्य, मर्मका जानकार, रसोइ करनेवाला, मंत्रवादी, अपने पूज्य (माता पिता धर्म गुरु विद्यागुरु) इनपर क्रोध न करना द्रव्यार्थी पुरु

पको अतिक्लेश, धर्मका उल्लघन, नीचकी नोकरी, विश्वास घात, न करना

लेण देणके कार्यमे अपने वचनका लोप करना नहि क्यों की अपने वचन पालनेवालोकी वडी प्रतिष्टा होती हे

विचक्षणोंको अपना धन मालका नुखसान होते छते भी अपने वचन पालनेकी वडि जरूरत हे स्वल्प लाभके वास्ते अपने वचनका लोप करनेवाले वसुराजाके न्याय दु खी होते हे

एसे एसे व्यवहारमे तत्पर पुरुषो तीसरा और चोथा प्रहर दिन वितावे और सध्या समय व्यालु करनेको अपनें घरजावे एकाशनादिक तप जिसनें किया होय उनोने सध्या समय प्रतिक्रमणके वास्ते अपने गुरुके पास जाना

दिवसके अष्टम भागमे (चार घडी दिन छते) व्यालु करना सूर्यास्त समय और रात्रिकों विवेकीने भोजन करना नही आहार, मैथुन, निद्रा, स्वाध्याय (पठन पाठन) यह चार कृत्य सध्या समय प्राणिगणको विशेषकरके त्यागने चाहिये

क्यों की सूर्यास्त समय भोजन करनेसें व्याधि होती हे मैथुन करे तो दुष्ट गर्भ होता हे निद्रा करे तो भूतादिकोंका उपद्रव होता हे पढन पाठनसे निर्बुद्धी होता हे

हि नही वैयावच्च (गुरुसेवा, पगचपी) करनेंसें अ क्षय सुख, मगल, श्रेयकी प्राप्ति होतीहे इसलिए प्रतिक्रमण समाप्ति पीछे विवेकी गुरुकी विश्रामणा करे गुरुकी विश्रामणा समय मुखपर वस्त्र लपेटनां, गुरुको अपने पगका स्पर्श न होने देना एसे गुरुके सर्व शारीरीक खेदको मीटावे उपाश्रयसे निकलके रस्तेमें जो जो जिनमदिर आवे उनमे दर्शन करता थका अपने घर जाय तिहा पग धोयके पचपरमेष्टी मत्रका जाप करे

मेरेको अरिहतका, श्रीसिद्धजी महाराजका, केवली भाषित धर्मका, साधुजी महाराजका शरण हो

मगलके करनेवाले, दुःखगणसें दूर रखनेवाले, शीलसन्नाह (बकतर) को पेहेनके काम कदर्पको जितनेवाले थूलीभद्र मुनि कों नमस्कार हो

गृहस्थ छतेभी जिस्की बडी शील लीलाथी और सम्यक्त के प्रभावसे जिस्की विशेष शोभाथी एसे सुदर्शन सेठको नमस्कार हो

कामकदर्पकों जितनेवाले, आजन्मपर्यत अति चार रहित ब्रह्मचर्यकों परिपालन करनेवाले एसे मुनियोको धन्य, कृत पुण्यसे नमस्कार हो

एसे पच परमेष्टीका स्मर्ण करके कामोदयके लिए नीचे प्रमाणे विचार करे जिस्ने अपनी इद्रियोका जय कियाहि नहि एसे बहुल कर्मी, निःसत्व, जीव,

सत्क्रिया सहित ज्ञान मोक्ष साधक होता है एसा जाणके सध्या समय पुन आवश्यक करे

क्रियाहे सोहि फल दायक होतीहे पर एकिला ज्ञान फल दायक नही हो शक्ता है देखिये स्त्रीको भोगे विना और भोजनको खाए विना एकिले उस्के सुखके जाननेसे सुख न होता है

गुरुका योग न होय तो अपने घरमे स्थापनाचार्य अथवा नवकारवाली प्रमुख की स्थापना करके उस्के पास अवश्य प्रतिक्रमण करना

धर्मसेंहि सर्व कार्य सिद्ध होतेहे एसा हृदयमे जाणके सर्वकाल तद्गत चित्त रहना और धर्म समयकों न उल्लघन करना कारणकी धर्मका साधनके समय गए पीछे अथवा समय न हुवे पहिले जोजप तपादिक धर्म क्रिया किइ जाय सो अनवसरपर उखर क्षेत्रमे वोए वीजके न्याय निष्फल हो जाताहे

पन्डित पुरुष जो धर्म क्रिया करताहे उस्मे सम्यक् विधि करताहे क्यो कि न्यूनाधिक विधि करनेसे मत्रजापके न्याय न्यूनाधिक करनेसे लाभके बदले अधिक दोष लगताहे अर्थात् न्युनाधिक क्रिया करनी नहि औषधीजी लेनेकी विधिमे चूक कीइ जाय तो अनेक अनर्थको उपजा शक्तीहे तेसें धर्म क्रियाजी अविधिसे सेवनकीइ जायतो अनेक अनर्थ उपजाती हे वास्ते विधिमे विलकुल चूक करना

हि नहीं वैयावच्च (गुरुसेवा, पगचपी) करनेसे अ क्षय सुख, मंगल, श्रेयकी प्राप्ति होतीहे इसलिए प्रतिक्रमण समाप्ति पीछे विवेकी गुरुकी विश्रामणा करे गुरुकी विश्रामणा समय मुखपर वस्त्र लपेटना, गुरुको अपने पगका स्पर्श न होने देना एसे गुरुके सर्व शारीरीक खेदको मीटावे उपाश्रयसें निकलके रस्तेमें जो जो जिनमदिर आवे उनमे दर्शन करता थका अपने घर जाय तिहा पग धोयके पचपरमेष्टी मंत्रका जाप करे

मेरेको अरिहंतका, श्रीसिद्धजी महाराजका, केवली भाषित धर्मका, साधुजी महाराजका शरण हो

मगलके करनेवाले, दुःखगणसें दूर रखनेवाले, शीलसन्नाह (बकतर) को पेहेनके काम कदर्पको जितनेवाले थूलीभद्र मुनि को नमस्कार हो

गृहस्थ छतेभी जिस्की बडी शील लीलाथी और सम्यक्त के प्रभावसे जिस्की विशेष शोभाथी एसे सुदर्शन सेठको नमस्कार हो

कामकदर्पकों जितनेवाले, आजन्मपर्यंत अति चार रहित ब्रह्मचर्यको परिपालन करनेवाले एसे मुनियोको धन्य, कृत पुण्यसे नमस्कार हो

एसे पच परमेष्टीका स्मर्ण करके कामोदयके लिए नीचे प्रमाणे विचार करे जिस्ने अपनी इंद्रियोका जय कियाहि नहि एसे बहुल कर्मी, ति सत्व, जीव,

एक दिन मात्रजी शील पालनेको समर्थ नहो शक्ते हे हे ससार समुद्र मदिराजेसेमदयुक्त नेत्रोवाली स्त्रीरूप दुस्तर पहाड विचमें न होते तो तेरा पार को प्राप्त करना कुछ दूर नथा मुक्ति पदको अतराय करनेवाली स्त्रीये प्राणिगणको अवश्यमेव एक शि क्षारूपहि गिणनी चहिये असत्य, साहस (उतावल) माया (कपट) मूर्खता, लोभकी अधिकता, अपवित्रता, दया रहितता, इतने दोष स्त्रीयोंमे स्वभावसेंहि होतें हे

जो स्त्री (मुक्ति) रागी उपरजी वैरागी होती हे एसी स्त्रीको कोन भोगवेगा ? जो पडित होगा सोहि भोगवेगा क्यो कि मुक्ति रूपिणी स्त्री वैरागी उपर बरोबर रागी हे पर रागी उपर रागी नहीहे

एसा स्त्रीयोके विषयमे असारता विचारता थका समाधिमे कितनाक काल निद्रा करे परतु पर्वति थी प्रमुख उत्तम दिनोमे उत्तम श्रावक स्त्रीयोसे वि षय भोग करे नही

विवेकीगण बहुत काल निद्रामें व्यतीत न करे क्यों की विशेष निद्रा करनेसे धर्म अर्थ और सुख ए तीनोंका नाश होता हे

जो प्राणी स्वल्प (थोडी) निद्रा करे, स्वल्प आहार लेवे, स्वल्प आरभ करे, स्वल्प परिग्रही, स्वल्प क्रोध करनेवाला होय एसे लक्षणवालोको अ वश्यमेव स्वल्प ससार होता हे

निद्रा, आहार, भय, स्नेह, लज्जा, काम, कलि (लडाइ) क्रोध यह चिजे ज्यों ज्यो अधिक कीये जाय त्यों त्यो अधिक वढती जाती हे

विघ्न रूप वल्लिका समुदायकों छेदनेमे साक्षात् कुहाडा समान श्री नेमिनाथ भगवतको याद कर के सयन करे तिनको अवश्यमेव दुष्ट स्वप्नोंका पराभव न हो शक्ता हे

अश्वसेन राजा और वामादेवी राणीके पुत्र, श्रीपार्श्वनाथजीका नाम स्मर्ण करके सोवे तो अवश्य मेव अनर्थ कारक दुष्ट स्वप्न न देखे महसेन राजा और लक्ष्मणा नाम राणीके पुत्र श्री चन्द्रप्रभ स्वामीका स्मरण करनेसें सुखसें निद्रा आती हे सर्व विघ्नरूपी सर्पके दूर करनेमे साक्षात् गरुड समान, परम सर्व सिद्धिके प्रदायक, श्री शातिनाथ स्वामीका जो ध्यान करताहे उनको बिलकुल भय न हो शक्ता हे

॥ इति दिनचर्याया चतुर्थ वर्ग ॥

सर्व भवोमे उत्तममे उत्तम यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके प्राणि गणने उसे सुकृत करके सकल सफल करना निरतर धर्मके सेवनसे सुखभी तदनुसार अचल मिल शक्ता हे वास्ते दान, विद्याध्ययन, शुभध्यान जप तपादिक सुकृत्योमे अपने दिन अवंध्य (अफल) करना

आयुषके तीसरे भागमे अथवा अत्य समयमे

जीव आगतुक भवका शुभाशुभ आयुष्य बांधताहे. आयुष्य बधका तीसरा भाग बहुत करके पच पर्वी की तिथीयोके दिन आताहे इसलिए पच पर्वणीमे आरभ त्यागादिक सुकृत्यो कीये जाय तो अवश्य शुभ आयुष्य बध होय वास्ते पच पर्वणीमे अवश्य विशेष धर्म कृत्य करना उचित हे

प्राणी द्वितीया तिथीके आराधनसे रागद्वेषकों जय करके आगतुक भवमे साधु श्रावक यह दो प्रकारके धर्मकी प्राप्ति कर शक्ताहे

पचमीके आराधनसे पच ज्ञानकों प्राप्त करके फिर पंच विध प्रमादका त्याग होनेसे शुद्ध चारित्र धर्मकों प्राप्त हो शक्ता हे

दुष्ट अष्ट कर्मोंके नाश करनेके लिए और अष्ट मदका जय करनेके लिए पुन अष्ट प्रवचन माता का परिपालनके लिए अष्टमी तिथीकी आराधना करना ठीक हे

एकादशीके आराधनसे ग्यारह अगके ज्ञानकी प्राप्ति होतीहे और ग्यारह श्रावककी प्रतिमाकों वहनेकी योग्यता प्राप्त होती हे

चतुर्दशीके आराधनसे प्राणी चउद पूर्वके ज्ञान योग्य होके चउदे राजके उपर सिद्धत्वावस्थाकों प्राप्त होता हे

यह पच पर्वणीका महिमा याद करके पच पर्व

णीमे जो धर्माराधन करेतो अवश्य शुभ फलको प्राप्त कर शक्ता हे

अतएव पच पर्वणीमे विशेष धर्माराधन तप जपादिक करना और उत्तर गुणकी वृद्धिके लिए स्नान, मैथुनादिकका अवश्य त्याग करना पर्वणीमे अवश्य पौषध करना न बन शके तोभी प्रतिक्रमण सामायक जप तपादि अवश्य करना

पर्वणीमे कल्याणकादि तप करना उपवास एकाशणा, आयबिल, बियाशणा, नीवी प्रमुख तपसे विशति स्थानक तप आराधना

जो विधि पूर्वक यह तप आराधन किया जाय तो परम सुखके प्रदायक, सर्वोत्कृष्ट तीर्थंकर गोत्र उपार्जन हो शक्ता हे

पचम्यादि तपका उद्यापन करनेसे प्रणिधानकी पूर्णाहुती होतीहे और विशिष्ट फलकी प्राप्ति हो शक्ती हे वास्ते उद्यापन अवश्य सब तपके करना उपवास करके जो प्राणी पाक्षिक प्रतिक्रमण करताहे सो अवश्य पदरे दिनके पापकी शुद्धी करता हे और उनके उभय पक्ष शुद्ध होशक्ते हें तीन चोमासीमे (आषाढ, फाल्गुण, कार्तिक की चउदसीमे) अवश्य षष्ट (बेला) करना चहियें

आठम चउदश पचमीकेदिन उपवास, प्रतिक्रमण, आरंभवर्जन, अवश्य करना जादोंकी—श्रीपर्यू

पणपर्वणीम अवश्य कल्पसूत्र सुनना और यथा शक्ती विशेष धर्म कर्म करना श्रावक धर्म क र्ममे सतोष न करे पर आरजादिकमे सतोष करके अवश्यत्याग करे उत्तम श्रावक एकवीस वार जो कल्प सूत्रको सुनेतो अवश्य आठभवम सिद्धि पदको प्राप्त हो शक्ता हे निरतर सम्यक्तके और ब्रह्मचर्यके पालनेसे जो लाभ होताहे उससे अधिक कल्प सूत्र सुननेंसे होशक्ता हे दान देनेसे विचित्र तप करनेसे, सत्तीर्थके सेवन करनेसे, जो प्राणिगणके पाप क्षय होते हे सो सब शास्त्र श्रवण का महिमा हे मुक्तिसे कोई अधिक तप, शत्रुजय से अधिक कोई तीर्थ, सम्यक्तसे कोई तत्व, कल्प सूत्रसें अधिक महिमावत कोइ सूत्र नही हे दीवा लीकी अमावास्याकी रात्रिको भगवत महावीर स्वामी मोक्ष गए और उसी प्रतिपदाके प्रात काल श्री गौतम स्वामीजी केवल ज्ञान पाये हे इसलिए यह दोदीन अतीव पवित्र हे वास्ते उपरोक्त महा पुरु षोंका उसदिन ध्यान स्मर्ण करना दीवालीमे दोउ पवास, करके धूप, दीप, करके अखड चावलसे गौ तम स्वामीके नामका वा मत्रका जाप करे तो इह लोक परलोकमे महोदय सुख पामें अपने घरमे वा ग्राम चेत्यमे विधि पूर्वक पूजा करके आरती मंगल दीपक करके अपने घर जायके अपने भाइ मित्र

पुत्रादिक को साथ लेके भोजन करना भगवंतके पंचकल्याणकों के दिनमे यथाशक्ती सत्पात्रोंकों और याचकों को दानदेना

॥ इति दिन चर्याया पचम वर्ग ॥

उत्तम श्रावक धर्म कर्ममे प्रवृत्ति रखता थका पूर्ण निवृत्तिको प्राप्त कर शक्ताहे इसलिए अतृप्त मनसे निरतर धर्म कर्म अवश्यमेव करना

जिस धर्मसें यह सपदाको प्राप्त हुवा हे तो अवश्य उस अपने उपकारीकों सेवन किये विना कोन रहेगा एसा कोन मूर्ख होय की जिससें आगामी कालमे लाभ होने वालाहे एसे स्वामी (धर्म) को सेवन करनेमे प्रमाद रखके आप स्वामी द्रोहीका पातकी वने ?

दान, शील, तप, भाव यह चतुर्विध धर्मकों धीर पुरुष आराधके (पुण्यानुवधिपुण्य) और मोक्ष सुखकों प्राप्त करलेता हे थोडामेंसेभी थोडा दानदेना परं वहुत मिलनेकी अपेक्षा न रखनी,क्योंकी इच्छानुसारी लक्ष्मी क्या मालम कव मिलेगी ?

ज्ञानदानसे ज्ञानवान् होता हे अभयदानसें निर्भय होता हे अन्नदानसें सुखी होता हे औषध दानसें प्राणि अवश्य निरोगी होता हे

पुण्यकर्मसे कीर्त्ति होतीहे दान हे सो मात्र कीर्त्तिके लिए नही हे पर मोक्ष सुखके वास्ते दिया

जाताहे मात्र कीर्त्तिके लिए जो प्राणी दान देतें हें सो दान धर्म नही हे परतु वो व्यसन हे (विनोद मात्र हे एसा जाणना) व्याजमे धन दुगुणा होता हे व्यापारसे चोगुणा लाभ होता हे क्षेत्रसे सो गुणा लाभ होता हे पर पात्रदानमे अनतगुण लाभ हो शक्ता हे

साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, प्रतिमाजी, मदिरजी, ज्ञान यह सात क्षेत्रमे धनका बोना बीजके न्याय विशेष लाभ दायक होता हे जो प्राणि भक्ति भावसे जिन मदिर नया बनाताहे उस्मे बहुत लाभहे क्यो की नये बनाये मदिरके जितने परमाणु (रजकण) की सख्या होती हे तितने पल्योपम प्रमाण देव सुख भोगता हे

औरभी यह हे कि जितने दिन नया मदिर रहता हे तितने हजार वर्ष मदिर बनानेवाला देवायु भोक्ता होसक्ता हे

सोना, चादी, पाषाण, रत्न, मृत्तिका प्रमुखकी यथाशक्ति जो प्राणी नयी प्रतिमा भरावे तो भराने वाला प्राणी तीर्थंकर पद पामताहे कमसे कम एक अगुष्टमात्रकीभी जो प्राणी नयी प्रतिमा भरावे सो प्राणी अवश्य देवादि सुख भोगके परमानद पद प्राप्त होता हे मोक्षफलका देनेवाला धर्मरूप वृक्ष का मूल समान यह जैनागमको जो प्राणी लिखा

ताहे वांचताहे और भावसे सुनताहे तो उनको अत्यत भावकी (सम्यक्तकी) विशुद्धी होती हे

जो प्राणि जैनागम लिखाके गुणिजनोंको वांचने के लिए समर्पण कताहे उनकों उस शास्त्रके वर्ण मात्र अक्षरकी सख्या जितने वर्ष देवलोक गति प्राप्त होती हैं।

जो ज्ञानकी भक्ति करी जातीहे वो ज्ञान विज्ञानसे शोभनीक होताहे ज्ञान विज्ञानकी प्राप्तिकरने वाला अन्नदानहे इसलिए उत्तमजन हर वर्ष यथाशक्ती एकेक स्वामीवछल करे बांधव कुटुंबको जिमाना यह संसार हेतुहे पर उसमेभी साधर्मीक वछल किया जायतो अवश्यमेव विशेष लाभ प्रद होता हे अर्थात् भवसंसारसे तारकता गुणनिष्पादक हो सक्ता हे

हर वर्ष सर्व प्राणीने अपने अपने तरफसे अवश्यमेव एक वार तो स्वामी वछल करना हि चहिये विवेक वान् श्रावक हर वर्ष एक वार तो अवश्यमेव श्रीसघपूजा (प्रभावना) यथाशक्ति करे योग्य आहार वस्त्र प्रमुख श्रीगुरुको भलीभक्ति भावसें देवे यद्यपि अपनी विशेष शक्ति न होय तथापि यथाशक्ती सत्पात्रोंकों असन, पान, खादिम स्वादिम, वस्त्र, पात्र औषध प्रमुख अवश्य मेव

कूवा, आराम, वगीचा, वृक्ष, तलाव, गौ प्रमुख जो दान करते हे तथापि उनका जल प्रमुखको हानी नही आती हे प्रत्युत उनकी वृद्धि होतीहे तेसें सत्पात्रमे दान देनेसें धन जाता नही हे पर प्रत्युत उनकी वृद्धि करता हे एसा समजना चहिये

प्रत्यक्ष देखिये की दान देने मे और भुक्तभो गी होनेमे कितना वडा अतर(फरक) देखाजाताहे भुक्त भोग (खायापीया) दुसरे दिनहि विष्टारूप होजाता हे और दान दिया अक्षत होता हे (वृद्धि पामताहे) वास्तव मे विचार किजीयें की देनेमे अधिक लाभ हुवा कीखाय खरचाय वेठनेमें अधिक लाभ होता हे?सो विचारवत आपहि समज सक्ते हे

शतस प्रयाश करके प्राप्त किया और प्राणसेंभी अधिक वल्लभ, यह धन हे उनकी गती (कार्य)मात्र एकदानहि हे अन्य गतिजो देखिजाती हे सो मात्र विपत्ती समजीजाती हे न्यायमार्गसे उपार्जित किये धनको जो विवेकी जन सत्त क्षेत्रमे नियोजित करते हे सो श्रावक अपने धन और जीवितकों सफल कर सक्ते हे

॥ इति दिनचर्याया षष्ठ वर्ग समाप्त ॥

इति चारित्रसुंदर गणि विरचित आचार ग्रंथ समाप्त

अथ वार्षिकचर्या माह

जैनोंको वर्षदिनमे अवश्य ग्यारह कृत्य करने चहिये सो बताते हे प्रथम सघपूजा करनी सो यथाशक्ती नवकारवालीसें लेके सोंनामोहोर प्रमुख सब श्रावकोंमे अथवा अपने अपने गछमे वाटनी अन्नी वर्त्तमानकालमे जिस्को (पहिरावनी) कहते हे सो यथाशक्ती वर्षमे एक दो चार वार अवश्य करना चाहिये (इससे महालाभ होता हे)

दूसरा कृत्य साधर्मीक वात्सल्य दरवर्षमे एकवारतो अवश्यमेव करना दु.खी जैनोंका यथायोग्य यथाशक्ती समुद्धरण करना गुप्त दान करना श्रावकोंको आमंत्रण करके अतरग भक्तिभावसे जिमाना और तांबुल पुष्पादिक देके प्रणाम करके सबका सत्कार करना इससें तीर्थंकर गोत्र बध होता हे

तीसरा कृत्यमे अष्टाहिक यात्रा सो अष्टान्हिका महोत्सव मदरजीमे करना नही बनेतो एक वर्षमे एक वार पूजा तो अवश्य पढानी ॥ चोथा कृत्यमे रथयात्रा सो एक वर्षमे एक वार अवश्य रथ निकालना एकिलेसे नबनेतो कितनेक समुदाय मिलकेन्नी अवश्य करना ॥ पाचमां कृत्यमे तीर्थयात्रा सो पचतीर्थी वा हर कोइन्नी तीर्थकी समुदायसहित यथाशक्ती हरएकवर्ष एक यात्रा तो अवश्यकरनी

छठे कृत्यमे देवद्रव्य वृद्धि करना यथाशक्ती य-थायोग्य एकवार तो भडार ढोकना चढावा बोलना

सातमे कृत्यमे स्नात्रादि पूजा पढाना पुण्यवान प्राणी नित्य स्नात्र पढातेहे यदि न बनेतोभी पर्वणी प्रमुखमे पढानी और एकवर्षमे जघन्यसे एकवारता अवश्यमेव स्नात्रपूजा पढानीइससेंभी अधिक लाभहे

आठमे कृत्यमे हरवर्ष एकवारतो अवश्य विशेष विधिसे श्रुत ज्ञान पूजा करना यद्यपि ज्ञान पूजा हरहमेशका कर्तव्य हे तथापि ज्ञान पचमी प्रमुख सब पचमीके दिन यथाशक्ती वासक्षेप धूप दीप नैवेद्य रोकनाणा वस्त्रादिकसे ज्ञानपूजा अवश्य करनी

॥ नवमे कृत्यमे हरवर्ष एक उद्यापन करना इसमे यह विचारहे की हरेक प्राणीकों हरवर्ष एकेक तपतो नया जघन्यसें करनाहि चहिये जो तप करना उस्का उद्यापन अवश्य करना यद्यपि सब तपके उद्यापन नहि बन शके तो एक तपका तो जरूर करना

॥ दशमे कृत्यमे तीर्थ प्रभावना करना इस्मे रथ नीकालना गुर्वादीकोका नगर प्रवेश मोछव करना ग्यारमे कृत्यमे हरवर्ष पापकी शुद्धीकेलिए, गुरुके पास वार्षिक पापकी आलोयणा लेणी वर्ष दिवसमे अपने जाणता अणजाता जो कुछ पाप हुवे होय सो गुरुकों कहना और उन पापकी शुद्धीकेवास्ते जो

प्रायश्चित (तप) करना कहेसो स्विकार करना ॥
इति दिनचर्याया वार्षिक कृत्यानि ॥

॥ अथ आजन्म कृत्यान्याह ॥

त्रिवर्ग सिद्धिकेलिए सर्व प्राणिमात्रने अपने ज न्मसे जीवित पर्यंत अठारह कृत्य करना सो कहते हे

प्रथम कृत्य यहहे की जैनोने धर्म, अर्थ, काम यह तीन वर्ग यथायोग्य साधन हो शके एसे स्थान पर निवास करना क्योकी जहा जिनमदिर, अपने स्वजातीयजन, अपने गुरुकी जोगवाई, खान पान शु द्धी न होय एसे स्थानपर रहनेसें सुख न हो सकेगा

डुसरा कृत्य यहहे की त्रिवर्गसिद्धिके लिए य- थायोग्य विद्याभ्यास करणा क्यो की सपूर्ण विद्या न होय तो सर्व प्रकारसे हानी प्राप्त होवेगी त्रिवर्ग ससिद्धि न हो शकेगी

तीसरा कृत्य उत्तम स्त्रीसे लग्न करना क्यों की स्त्री विना त्रिवर्गका सुख साधन न हो सक्ता हे

चोथा कृत्यमे सन्मित्रोंसें मित्रता रखणी क्यों की सन्मित्रोके सहवाससे कइकइ वातोका लाभ मिल शक्ता हे नहिवणे तोभी एक दो धर्ममित्रतो अवश्य रखना चाहिये

पंचम कृत्य यहहे की उत्तम प्राणीने यथाशक्ती एक जिन महिर अवश्य करना क्यों की इससे ल क्ष्मी की साफल्यता और जन्म सफल होता हे

तमें लेजामां ते लहो ॥ मा० ॥ मुझ मन पूरे छे साख ॥ जइ० ॥ ७ ॥ लोका लोक सरूपना ॥ मा० ॥ जगमां तुमे छो जाण ॥ जइ० ॥ जाण आगे शु जणावीये ॥ मा० ॥ आखर अमे अजाण ॥ जइ० ॥ ॥ ८ ॥ वाचक उदयनी विनति ॥ मा० ॥ ससिहर कह्या सदेश ॥ जइ० ॥ मानी लेजो महारी ॥ मा० ॥ वस्ति दूर विदेश ॥ जइ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमधर जिन स्तवन ॥

मधुकरनी देशीमा ॥

॥ काया पामी अति कूडी, पाख नहींरे आवु ऊडी, लब्धि नही कोये रूडीरे ॥ श्रीयुग मधरने केजो ॥ दधिसुत विनतडी सुणजो रे ॥ १ ॥ श्रीयु ग० ॥ ए आंकणी ॥ तुम सेवामांहे सुरकोडी, ते इहा आवे एक दोडी, आश फले पातक मोडीरे ॥ श्रीयु० ॥ २ ॥ दुखम समयमां एणे भरते, अतिशय नाणी नवि वरते ॥ कहीयें कहो कोण साभल तेरे ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणे सुखीया तुम नामे, नयणा दरिसणनवि पामे, एतो ऊगमानो ठामेंरे ॥ श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आगल अतर रहेवु, शोकरू लीनी परे दुख सहेवु, प्रभु विना कोण आगल कहेवु रे ॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ महोटा मेहेल करी आपे, वेहुने तोल करी थापे, सज्जन जस जगमा व्यापे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ वेहुनो एक मतो थावे,

केवल नाण जुगल पावे, तो सविवात वनी आवे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ गजलछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ मात सुताराये जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पमित जिनविजये गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ इति ॥

॥अथ वीजनु स्तवन ॥ फतमल पाणीमाने जाय,
॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहं करू जी ॥ वीज तिथि गुणगेह, आदरो भवियण सुदरू जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहु ते सुणो जी ॥ माहा शुदि वीजें जाण, जन्म अभिनंदन तणो जी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो वीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण भवोदधि तेह, तस पद सेवे सुरथोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुभठाण, दशमा शीतल जिन गणु जी ॥ चैत्र व दिनी हो वीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणु जी ॥४॥ फाल्गुन पासनी वीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षये तव पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि वीजें वासुपूज्यनोजी ॥ एहिज दिन केवल नाण ॥ शरण करो जीनराजनोजी ॥६॥ करणी रूप करो खेत, समकित वीज रोपो तिहा जी ॥ खातर किरियाहो

जाण, खेड शमता करी जिहाजी ॥ ७ ॥ उपशम तडुप नीर, समकित ठोर प्रगट होवे जी ॥ संतोष केरी हो वारु, पच्चख्काण व्रत चोकी सोहे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहा जी ॥ मांजर अनुभव रूप, उतरे चारित्र फल जिहा जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारस वारी, पान करी सुख लीजीये जी ॥ तबोल सम ल्या स्वाद, जीवने संतोष रस किजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश उत्कृष्टी बावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास पालिये शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीये जी ॥ देववदन त्रण काल, मन वच कायायें कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊजमणु शुभ चित्त, करी धरीयें सयोगथी जी ॥ जिन वाणी रस एम, पीजीयें श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो बीज, रागने द्वेष दूरे करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिन पूजा गुरु भक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख सपदा जी ॥१५॥ इति श्री बीज तिथिनु स्तवन ॥

॥ अथ श्री पचमीनु लघुस्तवन लिख्यते ॥

॥ पचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञान रे ॥ पहेलु ज्ञानने पछी क्रिया, नहि कोइ ज्ञानसमान रे ॥ पचमी० ॥ १ ॥ नदीसूत्रमा ज्ञा

न वखाण्यु, ज्ञानना पाच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अ वधि ने मन पर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत चउदह विह, अवधि असख्य प्रकार रे ॥ दोय भेदे मन पर्यव दाख्यु, के वल एक उदार रे ॥ पचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, जेहवो तेज आकाश ॥ केवलज्ञान स मु नहि कोइ, लोकालो प्रकाश रे ॥ पचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, ह्मारी पूरो उमेद रे ॥ स मयसुदर कहे हु पण पामु, ज्ञाननो पाचमो भेद रे ॥ पचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ज्ञानपचमी स्तवन

॥ पुण्य प्रशसीये ॥ एदे शी ॥ सुत सिद्धारथ भूपनोरे ॥ सिद्धारथ भगवान ॥ वारह परषदा आगलें रे ॥ भाषे श्रीवर्द्धमानोरे ॥ १ ॥ भवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे ॥ ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनत आतम तणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमा पण ज्ञानज वडुरे ॥ जिणथी दसण होयरे ॥ २ ॥ भ० ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधेरे, ज्ञान उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने स्थिरिपणुं लहेरे, आचारज उवझायरे ॥ ३ ॥ भ० ॥ ज्ञानी श्वासो श्वासमांरे, कठिण करम करे नाश ॥ वन्हि जिम इंधण दहे रे, क्षणमा ज्योति प्र काशो रे ॥ ४ ॥ भ० ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया

रे, सवर मोह विनाश ॥ गुण ठाणग पग थालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ मइ सुअ उहि मणपज्जवा रे, पचम केवल ज्ञान ॥ चउ मुगा श्रुत एक छे रे, स्वपर प्रकाश निदान रे ॥६॥ ज० ॥ तेहनां साधन जे कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, ज्ञ णता करे अतराय ॥ अधा बहेरा बोवडा रे, मुंगा पांगुला थायरे ॥ ८ ॥ ज० ॥ जणतां गुणता न आवडे रे, न मले वल्लज चीज ॥ गुण मजरी वरदत्त परेंरे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ९॥ ज० ॥ प्रेमे पूछे परखदा रे, प्रणमी जग गुरु पाय ॥ गुणमंजरी वर दत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति उजलोरे ए देशी ॥

॥ जबुद्वीपना भरतमा रे, नयर पदम पुरखास ॥ अजितसेन राजा तिहा रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्ति निदान रे ॥ प्राणी० ॥ ए आकणी ॥ वरदत्त कुवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवत ॥ पितरे भणवा मूकि उरे, आठ वरस जब हुत रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पमित यत्न करे घणो रे छात्र भणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवडे रे, अथतणी शी चेत रे ॥ ३ ॥प्रा०॥

कोढे व्यापी देहमी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमा रे, सिहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥प्रा०॥ कपूरतिलका गेहिनी रे, शीले शोभित अग ॥ गुण मजरी तस बेटडी रे, मुगी रोगे व्यग रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ शोल वरषनी सा थइ रे, पामी यौवन वेश॥ दुर्भग पण परणे नहीं रे, मात पिता थरे खेद रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणे अवसरे उद्यानमा रे, विजयसे न गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक भूपालने रे, दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना साभले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकसित नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन परभवे रे, मूरख परआधीन ॥ रोगे पीड्या टलवले रे, दीसे दुःखीया दीन रे, ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार ससारमा रे, ज्ञान परमसुखहेत ॥ ज्ञान विना जग जीवमा रे, न लहे तत्व सकेत रे ॥ ११ ॥प्रा०॥ श्रेष्ठी पूछे मुणींदने रे, भाखो करुणावत ॥ गुण मजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीना ॥

॥ धातकी खडना भरतमा, खेटक नयर सुठाम ॥ व्यवहारी जिन देव छे, घरणी सुदरी नाम ॥

अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंडित पासें शीखवा, तातें मुक्या कुमार ॥ २ ॥ बालखेला वे रामत, करता दहाडा जाय ॥ पंडित मारे त्यारे, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी शीखवे, भणवानु नहीं काम ॥ पड्यो आवे तेमवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खडिया लेखण, वाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने ड्राख ॥ ५ ॥ पाडापरे महोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी भाखे भामिनी ॥ बेटा बाप ना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छे सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापिणी सापिणी, सामा बोल म बोल॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठे मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटी उपनी, ज्ञानविराधन हेव ॥ ९ ॥ मूठांगत गुणमंजरी, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिरनामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वठित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वस पचमी सेवो, पंच वरस पच मास ॥ 'नमो नाणस्स' गणणु गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मुख, जपियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादिउदार ॥ १३ ॥ दीवो पच दीवट तणो, सा

थियो मगल गेह ॥ पोसहमा न करी शके, तेणवि धि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौभाग्य पंचमी, उ ज्वल कार्त्तिकमास ॥ जावज्जीव लगे सेवीयें, उजम णा विधि खास ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमा ॥

॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥ चावखी दोरा रे, पाटी पाटला वतरणां ॥ म सी कागल रे, कांवी खडीआ लेखणी ॥ कवली डा वली रे, चंद्रआ झरमर पुजणी ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ प्रा साद प्रतिमा तास छुपण, केसर चंदन मावली ॥ वासकूपि वालाकूची, अग लूहणां ठावडी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरतीने धूपणां ॥ चरवला मुह पत्ती साहमीवछल, नोकरवाली थापना ॥ २ ॥ ढाल ॥ ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या ॥ तप संयुत रे, गुणमजरीयें सद्दह्या ॥ नृप पूछे रे, वरदत्त कुवरनें अग रे ॥ रोग उपनो रे, क वण करमना जग रे ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ मुनिराज जा से जबु द्वीपे, भरत सिहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु तास नदन, वसु सार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमता दोय वधव, पुण्य योगे गुरु मल्या ॥ वे राग्य पामी भोग वामी, धर्मधामी सवर्या ॥ ४ ॥ ढाल ॥ लघु वाधव रे, गुणवत गुरु पदवी लहे ॥ प णसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिए ॥ कर्म

योगे रे, अशुभ उदय थयो अन्यदा ॥ संथारे रे पोरिसी भणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ त्रूटक ॥ सर्वघा निद व्यापी, साधु मागे वायणा ॥ उघमां अंतराय थातां, सूरि हुआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या भूतको ॥ पुण्य अमृत ढोली नाख्यु, भर्यो पाप तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मन चितवे रे, कां मुज लागु पाप रे ॥ श्रुत अभ्यास्यो रे, तो एवडो संताप रे ॥ मुजबाध वरे भोयण सयण सुखे करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ वार वासर कोइ मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥ अशुभ ध्यानें आयु पूरी, भूप तुज नदन सही ॥ ज्ञानविराधन मूढ जरूपणु, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्धबाधव मान सरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥ ढाल ॥ वरदत्तने रे, जातिस्मरण उपनु ॥ भव दीठो रे, गुरु प्रणमी कहे शुभमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञानजगत्रय दीवको ॥ गुण अवगुण रे, भासन जे जग परवडो ॥ ९ ॥ त्रू० ॥ ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम आवडे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावकें ॥ भूप पभणें पुत्रने प्रभु, तपनी शक्ति न एवडी ॥ गुरु कहे पचमी तप आराधो, संपदा ल्यो वेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ सद्गुरुवयण सुधारसें रे, भेदी साते धात ॥ त पशुं रग नागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रो गमिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पचमी तप महिमा घणो रे, पसर्यो महीयल मांही ॥ त० ॥कन्यासहस सयं वरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ भूपे कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि भूप ॥ त० ॥ भी म कांत गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, भोगवे भोग अ खंड ॥ त० ॥ वरसें वरसे उजवे रे, पचमी तेज प्रचड ॥ त० ॥ ४ ॥ भुक्तभोगी थयो संयमी रे, पा ले व्रत खट काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचद्रनेरे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमर सेन राजा घरें रे, गुणवत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्ष ण लक्षित रायने रे, पुण्ये कीधो भेट ॥ त० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, शो कन्या भरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ तिहा पण ते तप आदर्यु रे, लोक सहित, भूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले रा ज्य उदार ॥ त० ॥ ए ॥ चार महाव्रत चोपशु रे श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो

रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी वि जय शुभापुरी रे, जबु विदेह मझार ॥ त० ॥ अम रसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंतथकी चवी रे, गुणमजरीनो जीव ॥ त० ॥ मान सरस जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसें राजवि रे, सहस चोरा शी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पुरव समता धरे रे, केवल ज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पचमीतप महिमाविषे रे, नांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें जेहथी सु ख लह्यु रे, तेहने तस उपकार ॥१४॥ त० ॥ इति ॥

॥ढाल छठी ॥ करकडुने करुं वदना ॥ ए देशी ॥

॥ चोवीश दडक वारवा ॥ हु वारी लाल ॥ चो वीशमो जिनचदरे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राण त स्वर्गथी ॥ हु० ॥ त्रिशला उर सुखकदरे ॥ हु० ॥ १ ॥ महावीरने करु वदना ॥ हु० ॥ ए आंकणी ॥ पचमी गतिने साधवा ॥ हु० ॥ पचम नाण विलास रे ॥ हु० ॥ माहानिशीथ सिद्धातमां ॥ हु० ॥ पच मी तप प्रकाश रे ॥ हु० ॥ २ ॥ अपराधी पण उद्ध र्यो ॥ हु० ॥ चंड कोशियो साप रे ॥ हु० ॥ यज्ञ करता ब्रामणो ॥ हुं० ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ देवानदा ब्राह्मणी ॥ हु० ॥ रिखभदत्त वली विप्ररे ॥ हुं० ॥ व्याशी दिवस सवधथी ॥ हु० ॥ कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हु० ॥ ४ ॥ कर्म रोगने

टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे ॥ हु० ॥ आदर्यो में आशा धरी ॥ हु० ॥ मुज उपर हित आणिरे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्रीविजयसिंह सूरीशनो ॥ हु० ॥ सत्यविजय पन्यासरे ॥ हु० ॥ शिष्यकपूरविजय कवि ॥ हु० ॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ पास पचासरा सान्निध्यें ॥ हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ हु० ॥ जिनविजय कहे मुज ह जो ॥ हुं० ॥ पचमी तप परिणाम रे ॥ हु० ॥ ७ ॥ कलश ॥ इय वीर नायक, विश्वनायक, सिद्धि दायक, सस्तव्यो ॥ पचमी तप सस्तवन टोमर, गुथी निज कते ठव्यो ॥ पुण्य पाटण, क्षेत्रमाहे, सत्तर त्राणु संवत्सरे ॥ श्रीपार्श्व जन्म, कल्याण दिवसे, सकल जवि, मंगल करे ॥८॥ इति श्रीपंचमीस्तवनम् ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनु स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश जो ॥ दीपे रे त्या देश मगध सहुमां शिरे रेलो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमा राजगृही सुविशेष जो ॥ राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परें रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो ॥ विचरंतां तिहा आवी वीर समोसर्या रे लो ॥हां०॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथें साथ जो ॥ सुधारे तप संयम शियले अलकर्यारे लो ॥ २ ॥ हा० ॥ फूल्या रस भर फूल्या अव कदव जो ॥ जाणु रे गुणशील

वन हसि रोमंचीयो रे लो ॥ हां० ॥ वाया वाय सुवाय तिहा अविलंब जो ॥ वासें रे परि मल चिहुं पासें संचियो रे लो ॥३॥ हा० ॥ देव चतुर्विध आवे कोडा कोड जो ॥ त्रिगडुरे मणि हेम रजतनु ते रचे रे लो ॥ हा० ॥ चोशठ सुरपति सेवे होडाहोड जो ॥ आगे रे रस लागे, इंद्राणी नचे रे लो ॥४॥ हा० ॥ मणिमय हेम सिंहासन वेठा आप जो ॥ ढाले रे सुर चामर मणि रत्ने जड्या रे लो ॥ हां० ॥ सुणता डुडुजि नाद टले सवि ताप जो ॥ वरसे रे सुर फूल सरस जानू अड्यां रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे तेजे गाजे घन जेम लुब जो ॥ राजे रे जिन राज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जनमन लुब जो ॥ पोपे रे रस न पडे धोंखे नर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हा० ॥ आगम जाणि जिननों श्रेणिक रायजो ॥ आव्योरे परवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हा० ॥ दइ प्रदक्षिणा वदी बेठो ठाय जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मोटे नायगे रे लो ॥७॥हां०॥ त्रिभुवन नायक लायक तव नगवत जो ॥ आणीरे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हा० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जत जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मनमा गह गहेरे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालम वहेलारे
आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिनवर एम उपदिशे, सांभलो चतुर सु
जाण रे ॥ मोहनी निंदमा का पमो, उंलखो धर्मना
ठाण रे ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ ए
आंकणी ॥ परिहरो विषय कषाय रे, वापमा पच
परमादथी ॥ कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥ वि० ॥२॥
करी सको धर्मकरणी सदा, तो करो ए उपदेश रे॥
सर्वकाले करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेषरे
॥ वि० ॥ ३ ॥ जू जूआ पर्व पट्ना कह्या, फल घणां
आगमे जोय रे ॥ वचन अनुसारे आराधता, सर्वथा
सिद्धिफल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवनें आयु परभ
व तणु, तिथिदिने वध होय प्रायरे ॥ तेह भणि
एह आराधता, प्राणिउं सद्गति जाय रे ॥ वि०॥५॥
तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतम स्वामरे ॥ भ
विक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रभु तामरे ॥
वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, सपदा
आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एह
थी आठ गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाभ होय
आठ पडिहारनो, अठ पवयण फल होंयरे ॥ नाश
अष्ट कर्मनो मूलथी, अष्टमीनु फल जोय रे ॥
वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजि-
तनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संभव तणो एह

तिथे, अभिनंदन निर्वाण रे ॥ वि० ॥९॥ सुमति सु व्रत नमि जनमीया, नेमनों मुक्तिदिन जाणरे ॥ पास जिन एह तिथे सिद्धला, सातमा जिनच्यवन माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि सावतो राजिउं, दंडवीरज लह्यो मुक्तिरे ॥ कर्म हणवा भणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ ११ ॥ अतीत अनागत का लना, जिन तणां केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वली घणा सयमी, पामशे पद निर्वाणरे ॥ वि० ॥ १ ॥ धर्मवासित पशु पखिआ, एह तिथे करे उपवास रे ॥ व्रत धारि जीव पोसों करे, जेहने धर्म अभ्यास रे वि० ॥ १३ ॥ भाखियो वीरे आठम तणो, भविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखे उच्चरी प्राणिया, पामशे भव तणो पार रे ॥ वि० ॥ ॥ १४ एहथी सपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोड रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे काति करजोड रे ॥ वि० ॥ १५ कलश ॥ एम त्रिजग भासन, अ चल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेमगुरु, सुपसाय पामी, सथूण्यो अल वेसरू ॥ जिन गुण प्रसगे, भण्यो रगे, स्तवन ए, आठमी तणो ॥ जे भ विक भावे, सुणे गावे, कांति सुख, पावे घणो ॥१॥

इति अष्टमी स्तवन समाप्त ॥

॥ अथ श्री एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसर्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव कोरुशु परिवर्या ॥ १ ॥ जगपति द्वीगुण फुल अमूल, भक्तिगुणे माला रची ॥ जगपति पूजी पूठे कृष्ण, क्षायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंभ परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुक्त नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताव, जेमकरे शिववधू कतलो ॥४॥ नरपति उज्ज्वलमागशिर मास आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशोने पचाश,कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवु जिनना कल्याण, विवरी कहु आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्लिजन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्त्तमान चोवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढशो जप माला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सूणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंड, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अभिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ९ ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नर

पति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार भूषण चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायिक पोषध वरे ॥ नरपति देववदन आवश्यक, काल वेलाये अनुसरे ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधु तणा री ॥ विनयें विनवे शेठ, मुनिवर करी करुणा री ॥ १ ॥ दाखो मुझ दिन एक, थोडो पुण्य कीयो री ॥ वावे जिम वड बीज, शुभ अनुवधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि भासे महाभाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमा सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तपशु वगे री ॥ ४ ॥ साभलि सद्गुरु वेण, आनद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी उजविय, आरण स्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकविश सागर आय, पाली पुण्य वसें री ॥ साभल केशवराय, आगल जेह यशे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमा शेठ, समुद्रदत्त वडो री ॥ प्रीतिमति प्रिया तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखे अवतार, सूचित शुभ स्वपनें री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ नालनिक्षेप निधान, भूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्भदोहद अनुभाव, सुव्रत नाम

उव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अ नेक भण्यो री ॥ यौवनवय अगीयार, रूपवती स्त्री परण्यो री ॥ १० ॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत प च्चक्काण धरे री ॥ अगीयार कचन कोम, नायक पुण्य भरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अ धिकार कहे री ॥ साजलि सुव्रत शेठ, जाति स्मरण लहे री ॥ १२ ॥ निजप्रत्यय मुनि शाख, भक्ते तप उच्चरे री ॥ एकादशी दिन आठ, पहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुत पोसह लीधो, सु-व्रत शेठे अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आ व्या, घरमां धन लुटे तदा जी ॥ १ ॥ शासन भक्ते देवि शक्ते, थभाणा ते वापरा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, भूप आगल धर्या रांकडा जी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ भेटणो जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठें कीधो पार-णों जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सो रीपुरमां आकरो जी ॥ शेठजी पोसह समरस वेठा, लोक कहे इठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्ये हाट व खारो शेठनी, उगरी सहु प्रशसा करे जी ॥ हरखे शेठजी तपउजणु, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो भार भलावी, सवेगी शिर सेहरोजी ॥ चउनाणी विजयशेखर सूरि, पासे तपव्रत आदरे जी

॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चौमासी, दोसय छठ सो अठम करे जी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुन-त, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपा-र्जित कर्म उदेरी, अगे वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्मे नडीयो पापें जडीयो, सुर कहे जाउं औषध जणीजी ॥ साधु न जाये रोष जराये, पाटु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन काय त्रि योगे, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जिन पद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामने जी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयपे नेमने ए, धन्य धन्य यादव वंश ॥ जिहा प्रभु अवतर्या ए ॥ मुज मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शि वा देवी मावडी ए, समुद्रविजय धन्य तात ॥ सु-जात जगतगुरु ए, रत्नत्रयी अवदात ॥ जयो० ॥ २ ॥ चरण विराधीउपनो ए, हु नवमो वासुदेव ॥जयो०॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ जयो० ॥ तो पण हु न करी शकु ए दुष्ट कर्मना जेय ॥ जयो० ॥ ४ ॥ पण सरणो व लियातणो ए, कीजे सीजे काज ॥ जयो० ॥ एहवा वचनने साजली ए ॥ वांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आरा

ध ॥ जयो०॥ थाईश जिनवर वारमो ए, जावि चो वीशियें लाध ॥ जयो० ॥ ६ ॥ कलश ॥ इय नेमि जिनवर, नित्य पुरंदर, रेवताचल, मंडणो ॥ वाण नदमुनि, चंद वरसें राजनगरें, सथुण्यो ॥ सवेग रंग, तरग जलनिधि, सत्यविजय, गुरु, अनुसरी ॥ कपूरविजय कवि, क्षमा विजय गणि, जिन विजय जय, सिरि वरी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री आराधनानु स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सहगुरु सामिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिजुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वरवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणदने, चरणे करि परणाम ॥ जविक जीवना हित जणी, पूछे गौतम स्वामि ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधिये, कहो किण परें अरिहंत ॥ सुधां सरस तव वचन रस, जाखे श्री जगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइये, व्रत धरीयें गुरु शाख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशु वली वोसिराविये, पाप स्थान अढार ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो दुरित आचार ॥ ६ ॥ शुजकरणी अनुमोदिये, जाव जलो मन आण ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुजगति आराधन तणा, ए ठे दश

अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जेम पामो वत्र पार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए ठिंकि किहा राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसन चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एह तणा इह भव परभवना, आलोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान भणो गुणखाणी ॥ वीरवदे एम वाणी रे प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ए आकणी गुरु उलविये नहि गुरु विनये, कालें धरी बहुमान॥ सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधां, भणीये वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान भक्ति न सभाली रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्यु जेह ॥ आ भव परभव वलिय भवोभवे, मिछाडुक्कड तेह रे ॥ ॥ ४ ॥ प्राणी समकित छ्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आकणी ॥ जिनवचने शका नवि कीजे, नवि पर मत अभिलाख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फलसंदेह म राख रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ मूढपणु ठको परसंसा गुणवंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्मे करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीये रे ॥६॥ प्रा० ॥ ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद म न लेख्यो ॥ द्रव्य देवको जेविणसाड्यो, विणसता

उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खड्यु जेह ॥ आत्रव० ॥ मिछा० ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ चारित्रल्यो चित्त आणी ॥ ए आंकणी ॥ पाच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय ॥ साधुतणे धर्मे परमादे, अशुद्ध वचनमन काय रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमा मन वाली ॥ जे जयणा पूर्वक जे आवे, प्रवचन माय न पाली रे ॥१०॥ प्रा० ॥ चा०॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोड्यु जेह ॥ आत्रव० ॥ मिछा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारें भेदें तप नवि कीधु, छते योगे निज शक्ति ॥ धर्मे मनवचन काया वीरज, नवि फेरवियो भगते रे ॥ ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारे एणी परे विविध विराध्या जेह ॥ आत्रव० ॥ मिछा० ॥ १३॥ प्रा० ॥ चा० ॥ वलीय विशेषे चारित्र केरा, अतिचार आलोइये ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि धोइये रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ ॥ ढाल बीजी ॥ पामी सुगुरुपसाय रे ॥ ए देशी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ रे, वाउ वनस्पति ॥ एपांचे थावर कह्या ए ॥ करि करसण आरंभ, खेत्र जे खेडीयां ॥ कूवा तलाव खणावीयां ए ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक, टांका भोंयरां ॥ मेडी माल चणावीयाए ॥ लिंपण धूपण काज, एणी परे परपरे ॥ पृथि

वी काय विराधीया ए ॥२॥ धोयण नाहण पाणी, जील ण अपकाय ॥ ठोतीधोती करी दूहव्यां ए ॥ नाठी गर कुनार, लोह सोवनगरा ॥ नाम्रुंजा लिहाला गरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काजे, वस्त्र निखारण ॥ रगण राधण रसवतीए ॥ एणी परे कर्मादान, परे परि केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥४॥ वाडीवन आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चुटीया ए ॥ पोहक पापडी शाक, शेम्या शूकव्यां ॥ हुंद्या ठेव्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ आलसीनें एरंड, घाणी घालीने ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलु माहि, पीली सेलडी ॥ कद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्या हणाविया ॥ हणता जे अनु मोदीया ए ॥ आ नव परनव जेह, वलिय, नवोनवे ॥ ते मुझ मिछामि डुक्कड ॥ ७ ॥ क्रमी सरमीया कीडा, गाडर गडोला ॥इयल पूरा अ लसीयां ए ॥ वाला जलो चुडेल, विचलित रसत णा ॥ वली अथाणा प्रमुखना ए ॥ ७ ॥ एम बे इ द्रिय जीव, जे मे दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ उद्देही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कुथुआ ए ॥९॥ गद्दहीया घीमेल, कान खजूरडा ॥ गींगोडाधनेडी या ए ॥ एम तेइंद्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मु झ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर डास, मसा पतगीया ॥ कसारी कोडियावडाए ॥ डींकणवीछु तीड, नमरा

जमरीयो ॥ कोंता वग सरुमाकरी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंद्रिय जीव, जे मे दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमा मृग संतापी या ए ॥ १२ ॥ पीड्या पखी जीव, पाकी पासमा ॥ पोपट घाल्या पाजरे ए ॥ एम पचेंद्रिय जीव, जे मे दुहव्या ॥ ते मुझ० ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे भवे जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोभ भय हास्यथी जी, बोल्या वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछादुक्कड आज, तुज साखे महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारूकाज रे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ ए आकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयरस लंपटपणे जी, घणु विटव्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, भव भव मेली आथ ॥ जे जिहानी ते तिहा रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणी भोजन जे कर्या जी, कीधा भक्ष्य अभक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचे जी, पाप कर्या प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥४॥मि०॥ व्रत लेई विसारीयां जी, वली भांग्यां पच्चख्काण ॥ कपटहेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ त्रण ढाल आठे दुहे जी, आलोया

अतिचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत वार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां सजारीये ॥ सा० ॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥२॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोराशी लाख तो ॥ मन शुद्धे करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइशु रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चितवों ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजे जन्म पवित्रतो ॥ ४ ॥ साहम्मी सघ खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमिये ने खमावियें ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्नतो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निदा कलह न किजीये ॥ सा० ॥ कूडा न दीजे आल तो ॥ रति अरतिमिथ्या तजो ॥सा०॥ माया मोह जजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वो

सिरावियें ॥ सा० ॥ पापस्थान आढार तो ॥ शिव गति आराधन तणो॥सा०॥ए चोथो अविकार तो ॥ए॥ ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए एदेशी ॥ जनम जरा मरणे करीए, ए ससार असार तो ॥ कर्यां कर्म सहु अनुभवे ए, कोइ न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण सिद्ध भगवत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए ए पाचमा अविकार तो ॥ ३ ॥ आ भव परभव जे कर्यां ए, पापकर्म केई लाख तो ॥ आत्मसाखे ते निंदीये ए, पडिक्कमिये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्तावियां ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्या उत्सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्या घडाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथीयार तो ॥ भव भव मेली मूकीयां ए, करता जीव सहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषिया ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जनमातर पहोता पछी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ भव परभव जे कर्यां ए, एम अधिकरण अनेकतो ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावीये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुष्कृत निंदा एम करी ए पाप कर्या परिहार ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए छठो अधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाल छठी ॥ आदर तु जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहा कीधो धर्म॥ दान शीयल तप आचरी, टाल्या दुष्कर्म ॥ ध०॥१॥ शत्रुजयादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिन वर पूजीया, वली पोरया पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ सघ चतुर्वि ध सांचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणा सुपरें कर्या, अनुकपा दान ॥ साधु सूरि उवझायने दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदि ये, एम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सा तमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ भाव भलो मन आ णीये, चित्तआणी ठाम ॥ समता भावे भावीये, ए आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दु ख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचर्या, भो गवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यना काम ॥ ठारउपर ते लीपणु, झाखर चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ भाव भली परे भावीये, ए ध र्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीये सलेषण सार ॥ अ णसण आदरीये, पच्चख्खी चार आहार ॥ लघुता स नि मूकी, छाडी ममता सग ॥ ए आतम रेखे, स-

मता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनत नि शक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लाल चीयो रंक ॥ ढुलह्यो ए वली वली, अणसणनो प रिणाम ॥ एथी पामीजे, जिवपद सुरपद ठाम ॥२॥ धनधन्नाशालिभद्र, खधोमेघकुमार ॥ अणसण आ राधी, पाम्या भवनोपार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपता जा थे, दुर्गति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चउद पू रवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जातां, जो पामे नवका र ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मत्र न को ससार॥इह भवने पर भवे, सु ख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुउं भीलने भीलडी रा जा राणी थाय ॥ नव पद महिमाथी, राजसिंह म हाराय ॥ राणी रतनवती वेहु, पाम्या छे सुरभोग ॥ एक भवथी लेशे, सिद्धि वधू सयोग ॥ ६ ॥ श्रीम ती ने ए वली, मत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फी टीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी, सोव नपुरिसो कीध ॥ एम एणे मत्रे, काज घणानां सि द्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेसर भांख्यो॥ आराधन केरो, विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे

पाप पखाली, भव भय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंता, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो भवि भावशु ए ॥ ए देशी ॥

सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशलामात मल्हार तो ॥ अवनीतले तुमे अवतर्या ए करवा अम उपगार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आकणी ॥ में अपराध कर्या घणा ए, कहेतां न लहु पार तो॥ तुम चरणे आव्या भणी ए, जो तारे तो तार ॥२॥ ज० ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे माहाराज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज ॥ कर्म अलुजण आकरा ए, जन्म मरण जजाल तो ॥ हु तु एहथी उजग्यो ए, छोडावो देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठा दुःख दंदोल तो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ भव भव विनय तुमारनो ए, भाव भक्ति तुम पाय तो॥ देव दया करी दीजिये ए, बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, दुःखनिवारण, जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण थुणता, अधिक मन, उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव, सुरींद पटधर, तीरथ जगम, इणि जगे ॥ तपगछपति श्रीविजयप्रभ सूरि, सूरितेजे, झगमगे ॥२॥

श्रीहीरविजय सूरि, शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय, सुरगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक, विनयविजये, थुएयो, जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ इस सत्तर संवत्, उंगण त्रीशे, रही रादेर चोमास ए ॥ विजय दशमी, विजय कारण, किउं गुण अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आराधन, सिद्धि साधन, सुकृत लील, विलास ए ॥ निर्जरा हेतें स्तवन रचियु, नामे पुएय, प्रकाशए ॥ ५ ॥ इति श्रीपुण्यप्रकाशस्तवनं समाप्त ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरुपाय ॥ आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशु जी ॥ ए सिद्ध चक्र आधार, नवि उतरे भवपार ॥ आ० ॥ ते भणी नवपद ध्यायशु जी ॥ १ ॥ सिद्ध चक्र गुणगेह, जस गुण अनंत अछेह ॥ आ० ॥ समर्यां संकट उपशमेजी ॥ लहिये वंछित भोग, पामी सवि संजोग ॥ ॥ आ० ॥ सुरनर आवी वहु नमेजी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोग रहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणासुदरी श्रीपालनेजी ॥ ए सिद्ध चक्र पसाय, आपदा दूरे जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगल मालने जी ॥ ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करीजी ॥ नव आविल तप सार, पडिक्कमणु दोय वार ॥ आ० ॥ देव

वदन त्रण टकना जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रणवार, ग णणु ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल पणजी ॥ आराधे सिद्ध चक्र, सान्निध्य करे तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगे भणे जी ॥ ५ ॥ ए सेवो निशिदीस, कहीये वीशवा वीश ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चितामणी रत्न, एहना कीजे यत्न ॥ आ० ॥ मत्र नही एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्रीविमलेसर यक्ष, हो जो मुझ परतक्ष ॥ आ० ॥ हु किंकर हु ताहरो जी ॥ पाम्यो तुहिज देव, निरतर करु हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरोजी ॥ ७ ॥ विनति करु हु एह, धरजो मुजशु नेह ॥ आ० ॥ तमनें शु कहियें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मी विजय गुरुराय, शिष्य केसर गुण गाय ॥आ०॥ अमर नमे तुझ लली ललीजी ॥८

॥ नवपदजीनु स्तवन ॥

नवपद ध्यान सदाजयकारी ॥ ए आकणी ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नवपद० ॥ १॥ दरशन ज्ञान चारित्रहे उत्तम, तप दोअभेदे हृदयविचारी ॥ नवपद० ॥ २ ॥ मत्रजडी उंर तत्र घणेरा, उन सबकु हमदूर विसारी ॥ नवपद०॥३॥ बहुत जीव भवजलसे तारे, गुण गावत हे बहु नरना री ॥ नवपद० ॥४॥ श्रीजीन भक्त मोहन मुनी वदत, दिनदिन चमते हरख अपारी ॥ नव० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ मङ्गल ॥

रागिणी कालेगरा

मङ्गल मूरत पाशकी या ॥ मङ्ग० ॥ दारुण पङ्क सकल दुखहारी, दायकहे सुखरासकी या ॥ मङ्ग० १॥ सेवन इन्द्र चन्द्र रवी सुरगुरु, चाहत हैं नित जासकी या ॥ मङ्ग० २ ॥ निरखत नैन सफल भई आस्या, करण चरणके दासकी या ॥ मङ्ग० ३ ॥ इति ॥

रागिणी वाहार

आज महोछव रंग रलीरी, जायो सुत त्रिसलादे राणी, कामित पूरण काम कलिरी ॥ आ० ॥ सजि सिन गार सकल सूर वनिता, आपन आपन मेल चलिरी ॥ आवत सिद्धारथके आङ्गण, पूरत मोतीयन चोक मीलिरी ॥ आ० १ ॥ इन्द्र हुकुम करी धनद पठायो सब वसुधा धन धान्य भरिरी ॥ कनक रत्नमणि पच वरणके, कुसुम विखेरत गलीय गलीरी ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी मिल मङ्गलगावे, नाचत नाटक सूर कुमरीरी ॥ वाजत गहर शवद कर दुन्दुभी, वीणा वेणु मृदङ्ग भलीरी ॥ आ० ३ ॥ जय जय कार भयो तिहुं जगमे, व्याधि व्यथा सब दूर टलीरी ॥ हरखचद जनमे प्रभु मेरे, मनकी आस्या सफल फलिरी आ० ४ ॥ इति ॥

चैतावरकी चाल

मङ्गल राजे गिरनार, नेमपद मङ्गल है ॥ देवा० ॥

राजमती पद पङ्कज, मंगल रहे नेमी राय ॥ ने० १॥ मंगल धन धन्या मुनिनायक, सब तपसि विच सार ने० २ ॥ मगल गणपति मंगल पाठक मंगल सब अनगार ॥ ने० ३ ॥ जयजय २ खेम कुशल गुरू, आनन्द घन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

रागिणी काफि

गावो मङ्गलचार, सखीरी वीर प्रभुको जन्म भयो है । अवधी ज्ञान कर इन्द्र हूकमदीयो, करहु महोत्सव सार ॥ स०॥ १ ॥ मेरुशिखर पर देव सकल मिल, करत सुभक्ति अपार ॥ स० २ ॥ वसु विधि पूज रचत प्रभुजीकि, सफल करत अवतार ॥स०३॥ जय जय शब्द करत सूर नर वर, जय जय जगदाधार ॥ स० ४ ॥ अजर अमर पद दायक प्रभुजी, सेवो शिव सुखकार ॥ स० ५ इति ॥

रागिणी ईमन कल्यान

कीजे मङ्गलचार, आज घर नाथ पधारे ॥ की० ॥ पहले मङ्गल जीनजीकी पूजा, घस केशर घन सार॥ आ० १ ॥ दुजे मङ्गल धुप जो खेऊ, और चढाऊ पुष्प हार ॥ आ० २ ॥ तिजे मङ्गल घण्टा बजाउ, झाझनकी झङ्कार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मङ्गल आरती उतारू, नाचु थेई थेई तार ॥आ०४॥ रूप चन्द कहे कहा लग वरणु, शिव लहिये भव पार ॥ आ० की० ५ ॥ इति ॥

रागिणी सोहिनी–ताल यत

आज की रेण सोहाई, दरस मोहनकी मे पाई॥ आ० ॥ पद पङ्कज तेरो मन मधुकर मेरो, सदा रहत लपटाई ॥ द० १ ॥ नवपद ध्यान सदा मे चाहुं, अवर नही दील जाई द० ॥ २ ॥ अजर अमर पद चाहत तुमसे, आनन्द मङ्गल वधाई ॥ द०॥३॥इति

रागिणी काफी

पोढो पोढोजी ऋषभ पीयारे, निद्रा वस नयन तिहारे ॥ पोढो० ॥ प्रभु आलस अती ललसानी, पुठे मरुदेव्या माई ॥ पोढो० ॥ १ ॥ प्रभु सुनन्द सुमङ्गला राणी, जिनरुच रुच सेज सवारी ॥ पोढो० ॥ २ प्रभु नवल साजन्य सनेही, तुंतो मन वंछित फल देही ॥ पोढो ॥ ३ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी

राखो नाथ वडाई, हमारी ॥ रा० सेवा चोर सदा मोहे जानो, दरसन देवोने गुसांई हमारे ॥ रा० १ ॥ अनाथनके नाथ जगत जन वछल, सुन्दर वदन सुहाई हमारे ॥ रा० २ ॥ भानु चन्द प्रभु जल थल अम्बर, जहां देखो तहां सहाई हमारे॥३॥इति

रागिणी कालगरा ॥

आवो गावो वधाई मोरी साथनीया॥ आवो० ॥ नृप सुमित्रके पदमा देवी, सुत जायो सुखदाईरी ॥ आवो० १ ॥ जन्म कल्याणक करीये जाको, मुनि

सुव्रत जिन राईरी ॥ आवो० २ ॥ तीन लोकके हित कर प्रगट्यो, नाना रूपि हरपाईरी ॥ आवो० ३॥इति॥

रागिणी भैरवी–ताल धिमे तेताला

आजतो वधाई राजा नाभिके दरवाररे ॥ आ० ॥ मरु देवाजीने बेटो जायो, नाम रूपन कुमाररे ॥ आ० १ अयोध्यामे उछव होवे, मुख बोले जयजयकाररे ॥ घनन २ घण्टा बाजे, देव करे थेथे कररे ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी सब मङ्गल गावे, लावे मोती मालरे । चन्दन चरची पाये लागे, प्रभु जीवो चिरकालरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ नाभि राजा दानदेवे, वरसे अखण्डित धाररे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे, देवे मणि भंडाररे आ० ४ ॥ हाथी देवे साथी देवे, रथ देवे तुखारे । हीर चीर पिताम्बर देवे, देवे सब सिनगाररे ॥ आ० ५ ॥ तिन लोक को दिनकर प्रगट्यो, घर घर मङ्गल-चाररे । केवल कमला रूप निरञ्जन, आवागमन निवाररे ॥ आ० ६ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी–ताल धिमे तेताला

मङ्गलरे गावत सकल सुरनार ॥ टेर ॥ मोती यन थाल भरी जाय वधावत गावत गीत रसाल ॥ म० १ केशर चन्दन [illegible] कर लीय कंचन थाल ॥ म० २ ॥ [illegible] अरज है रे, भर[illegible]

चैतावरकी चाल

आजकी रेण सोहानि, देखो आजकी रतियां ॥ आ० ॥ पारस प्रभुजीको जनम भयो है, हरष भई देवा हरष भई वामा राणी ॥ देखो० १ ॥ अश्वसेन घर वटत वधाई, घर २ अरी देवा घर २ मङ्गल मांनी ॥ दे० आ० २ ॥ द्वार २ सब तोरण थभ है, चोखे मुख सेज सेगानी ॥ दे० आ० ३ ॥ रतन थाल मुगताफल भरके, चोक पुरे इन्द्रानी ॥ दे० आ० ४ ॥ सुमन अधमको निज पद दीजे, सुध समकित सहनानी ॥ देखो० आ० ॥ ५ ॥ इति

॥ भैरवीका दूहा ॥

प्रभुको नाम अमोल है, जामे लगत न मोल ।
नफा वहोत तोटा नही, भर भरके मन तोल ॥
ए जीव भूला फीरत है, ममताके कल्लोल ।
अश्वसेनके लाडले, श्रीपारस मुख बोल ॥

रागिणी भैरवी—ताल यत्

वलिहारीमरु देवी नन्दकी, भज भाविके नन्दन अवध विहारी ॥ वलि० १ ॥ तिन लोक तिन पावन कीन्हे, आनन्द लहर सुनन्दकी ॥ वलि० २ ॥ कोशलपूर निकट सरजु तट, पूरण कला सो चन्दकी ॥ वलि० ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, जयजय रूपभ जिनन्दकी ॥ वलि० ४ ॥ इति ॥

पुन –ताल तेताल

जगदीश तु मेरा प्रभु प्यारावे, तेरी आंखियांदी मानु अजब बनी है, सुन्दर श्याम दीदारावे ॥ जग० १ ॥ घडि २ पल २ सुमरण तेरो, कबहु न दीलसे न्यारावे ॥ जग० २ ॥ जो तुझ ध्याया तिन सुख पावा, दरशन ज्ञान आधारावे ॥ जग०३॥इति॥

पुन –ताल तेताला

आज प्रभु तेरे चरण लाग, मिथ्यातनींद मै खोईरे। दर्शन कर परशन मन मेरे, आनन्द चित अब होइरे ॥ आज० १ ॥ तुम बिन देव अवर नही दुजो, देखा त्रिभुवन जोइरे ॥ आज० २ ॥ दास तुमारो करत विनती, तुम विन मेरो न कोइरे॥ आज० ३ ॥ इति ॥

पुन ताल कवाली

नेम जिनन्दजीसे आखडली, मोरी रैन दिवस नीत लग रहीरे ॥ने० ॥१॥ पहले आय उन दोस्ती कीन्ही, ले पीछे छिटकाय दईरे ॥ ने० ॥ १ ॥ पसु यन पर प्रभु दया करीने, शिव रमणीने वर लईरे ॥ ने० ३ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्न विम ल पद पाय लई रे ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

पन

इगन भररी देखन दे मुखन चन्द, मोरा देवी माता श्रीधन धन, जायोछे कृपज जिनन्द ॥ इ० १

याकु पूजत अती सुख उपजत, सब जीवन सुख कद ॥ ऊ० २ ॥ यातें हीतकर अरज करत है, चीरंजी रहो तेरानंद ॥ ऊ० ३ ॥ इति

पुन

मेरी लागी लगन, नेम प्यारेसे ॥ मे० ॥ सुनरी सखीएक बात हमारी, कहीयो कन्त हमारे से ॥ मे० १ ॥ जोगन होकर सङ्ग चलुङ्गी, प्रीत तजुं जग सारेसे ॥ मे० २ ॥ नाम लीयासें आनन्द उपजे, कीरत होत उर धारेसे ॥ मे० ३ ॥ इति

पुन

रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोवे जिया जागरे रा० ॥ दोय घडी तडको अब रहियो, ऊठ धरममे लागरे ॥ रा० १ ॥ जिन वानी ऊर बीच धारले, और भरम सब त्यागरे ॥ रा० २ ॥ आनन्द सुगुरु वचन हित मानो, ए सुधा शिव मार्गरे॥ रा० ४ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी

आदि जिनन्द, मेरो आदि जिनन्द । दरसन तेरो है सुखकन्द ॥ मे० १ ॥ तुम दरशन विन कल न परत है, छिन मे तो दीन हीन पकड्यो सरण ॥ मे० २ ॥ दास तिहारो अरज करत है जिनजी अबतो छुडावो भवफन्द ॥ मे० ३ ॥

पुन

नवरिया मोरा कोन उतारे वेगा पार। इह संसार समुद्र गंभीरा, किसविध उतरुंगा पार ॥ न० ॥ १ ॥ राग द्वेष दोनु नदियां वहत हे। भमर पडत गति च्यार ॥ न० ॥ २ ॥ रूपचन्द दासको दरसन चहिये। ए वीनती अवधार ॥ न० ३

रागिणी भैरवी–ताल दादरा

भरलावोरे कटोरा केशरका, मैं नव अंग पूजुं परमेश्वरका ॥ भ० ॥ मरुदेवी कुखे जन्म लियो हे। कुमर नाभि रत्नेसरका ॥ भ० १ ॥ केशर चन्दन पुष्प चढाउ ॥ मुख निरखु रूपचन्देसरका ॥ भ० २ ॥ रत्न जड़ितकी आरती उतारुं। नृत्य करु परमेश्वरका ॥ भ० ३॥ मोती चंदकी एहिज वीनती, चरणन ठोरु परमेश्वरका ॥ भ० ४ ॥ इति

पुन

म्हारो मुने कब मिलस्यै मन मेलू ॥ मन मेलू विन केलि न कलिए। वालै कवल कोई वेलु ॥ म० १ ॥ आप मिलाथी अंतर राषै ॥ सुमनुष ते नहि लेलू ॥म०॥२॥ आनन्द घन प्रभु मन मिलियाविन ॥ को नवि विलगैंचेलू ॥ म० ३ ॥

भैरवी–ताल दादरा

इन्द्राणी प्रभुके वेगी आज्यो कजरा। मे तो नवन करि कर लेही, तु करले इयाकी जाप जीरा

॥ १ ॥ ई॥ में पहिराती भुज भुजवंध, पहरा देतु वाली कपमा॥ई०॥२॥ में तो मुगट धरु सीर उपर तु पहरा दे फूलुके गजरा ॥ ई० ॥ ३ ॥ नयनानन्द सुर इन्द्र भगति लख, भविजन सम्यक दृष्टि खरा॥ ई० ॥ ४ ॥

ताल दादरा ।

नयना पीहर वा गये नयना वदल॥नयना वदल गये वनकुं निकल गये, वृतलीना सुधर॥नय१॥व्याह नकुं, आये मेरे डुला कहाए ॥ दे दरस गये तोरणसे फिर ॥नय० ॥१॥ जोमारथ परमारथ कारण, ककणको तोड लीया सजमको धर ॥ न० ॥२॥ पशु पुकारे प्रभुजी नीहारे । दुखिया विचार छोडे वन्धन कतर ॥नय०॥३॥ लेलो प्यारी छीमा हमारि।मुझे वेगी वता दो गिरनार कीमगर ॥ ने० ॥४॥ करुगी नयन सुखकारी तपस्या में तो लोंगी प्रभुके पद पकज पकर ॥ न० ॥

पुन.

सखीरी म्हारो, नेम गयो गिरनार । तारि हे राजुलनार सखिरी० ॥ तोरनसे रथ पीछो फेरयो, पशुवारी सुनिठे पुकार सखिरी० ॥ १ ॥ सहसा व-लकी कुंज गलिनमे, पच महाव्रतधार सखिरी० ॥२॥ राजुल उभी अर्ज करत है, आवागमन निवार स खिरी० ॥ ३ ॥ चंद कपुरा कहे कर जोडी, चरण सरण आधार सखिरी० ॥ इति ॥

पुन

मैंतो दासी 'तुमारी विना दामकि । निजरमें जो ठहरुं किसी कामकि ॥ १ ॥ और देवसे काम नही मेरे । दिलमें वसि है सूरत स्यामकी ॥ २ ॥ मे० ॥ घडि घडि पल पल छिन छिन निस दिन । रटन लगी है तेरे नामकी ॥ ३ ॥ मे० ॥ राखूगी आखुमें सुरमें से बढके, जो पांउगी रजमे तेरे धामकी ४ मे ॥४॥ तप जप सजममें चित लावो, जेसे मिले राज शिववामकी॥५॥ जैन धरम मानव भव पाके । करले भलाई आतम रामकी ॥६॥ मे०॥ दास गुलावकी एहि अरज है। सार करो मुझ नामकी ॥ मे० ७ ॥इति॥

रागिणी गारा भैरवी

वस्तुगतेवस्तुनोलक्षण, गुरुगम विनानहीपावेरे । गुरुगमविन नहीपावेकोऊ, भटकत भरमावेरे॥भवन आरिशे श्वानकुकना निजप्रतिविबनिहालेरे ॥ इतर रूपमनमाहि विचारी,महाशुध विस्तारेरे॥व०१॥निर मलफिटक शिलाअतरगत, करिबर लक्षपर छाहिरे॥ दशनकुराय अधिक दुखपावे, द्वेषधरत दिलमाहिरे व० ॥ २ ॥ सश लेजाय सिघकु पकडे । कुवोदिठ दिखाईरे ॥ निरख हरितेजाणदुसरो । पड्यो कूप तिहा खाईरे ॥ व० ॥ ३ ॥ निजछायावेताल भरमधर ॥ कर तवाल चित माहिरे ॥ रजु सर्प करि कोउ मानत॥ ज्योखोंसमझत नाहिरे ॥ व० ॥ ४ ॥ नलनी भ्रम

मर्कट मुठीजिम ॥ भ्रमवशअतिदुखपावेरे ॥ चिदानंद चेतनगुरुगमविना, मृग भ्रमाधरीधावेरे॥५॥इति

रागिणी भैरवी–ताल मध्यमान

वसोजी मेरे नेननमें महाराज, सामलि सूरत मोहनि मूरत ॥ तारण तरण जिहाज ॥भ०॥ वानी सुधारस दरस ऊपन्यो ॥ करता अगम अपार ॥भ०॥ चंन विजय करजोडी वीनवे, चरण कमल सिरताज ॥भ०॥इति॥

रागिणी गारा भैरवी

दीनके नाथ दयाल सवन की । तें काहेकु कृपा विसारीरे दीन० ॥ मैं हु दीन अनाथ जगत मे, तू साहिव उपकारीरे ।दीन०। पण अपनेकी रीत निव हिये । दो सपद सुखकारीरे दी० ॥ दास चुनी सेव ककी अरजी । सुनिये प्रभु जसधारीरे ॥ दी०॥ इति

पुन

प्रभु मोसे कवन वहाने बोलो, रैन दिहा मानु ध्यान तुमारा, अतर दी पट खोलो ॥ प्र० ॥ हाल असाना तुझनु मालुम, जो स्वामि टुक जोलो ॥प्र०॥ आस पुरावो दासको स्वामी, झटपट सङ्ग मिला लो ॥ दास चुनी पायो रत्न अमोलक, वेर श भयु तोलो ॥

रागिणी भैरवी–ताल तेताल

भविकनरसेवोशातिजिनन्द ॥ कञ्चन वरन मनोहरमुरती, दीपत तेजदिनन्द । रभ० ॥ पञ्चम चक्रधर सोलमजिनवर, विश्वसेननृपकुलचन्द ॥ श भ० ॥

भवदुख भजन जन मनरजन, लछन मृग सुखकन्द ॥ ३ भ० ॥ गुनविलासपदपङ्कजभेटत ॥ पायोपरमानंद ॥ ४ भ० ॥ इति

रागिणी भैरवीमे होली—ताल कवाली

मेरे जाई जुई गुलाबरी ॥ आज प्रभु पूजनको हरख भयो ॥ एटेक ॥ केतकीचपक मरुउ मोघरा ॥ फूलकी पगर भरावरी ॥ आज प्रभु० ॥ १ ॥ मुकट कुण्डल शिरछत्रविराजे ॥ आंगीशोहे जमावरे ॥ आज० २ ॥ संत सबे मिली भावना भावो ॥ माछल ताल मिलावरी ॥ आज ३ ॥ अनन्तनाथ जीके गुणगाउ ॥ लालगुलाल उमावरी । आज० ४ ॥ कर जोरी प्रभुआगे अरजी ॥ भवदुखसे छोडावरी ॥ आ० ५ आछोपोहोरहे नाम तुह्मारा ॥ ध्यानधरु शुभभावरी ॥ आ० ६ आनन्द हरष वधाई उनको ॥ विनय सहित गुणगावरी ॥ आज० ७ ॥ इति

रागिणी सिन्धभैरवी

कुण वन वीर समोसर्या मैतोसुणिहे श्रवनधुनि आजरी कुण ॥ जगम तीरथ सुरतरु,जगनायक, श्री जिनराजरी ॥ १ कुण० ॥ गोतमगधर सारिषा, साथे एकादश गणधारी ॥ मुनिचऊदसहससाथेभला,गुरु तारणतरणजिहाजरी ॥ २ कुण० ॥ शमव सरण रचना रची, मिलचउसठसुरराजरी ॥ सूर नर विद्याधर मिली ॥ मिलचउविहसघ समाजरी ॥ ३ कुण०॥ घ

णारे दीवशनी भावना ह्मारी, सफल फली सव आज री। चलो सखी विलॅवनकीजीये, वदीजेश्रीजिनराज री ॥ ४ कुण० । भावभगति दिलमे घणी, सजि सा थे सामग्रीसाजरी ॥ हरखचद राणी चेलना ॥ साख्या निज आतमकाजरी ॥ ५ कूण० ॥ इति

रागिणी सिन्धु

आदिनाथ जिन प्यारा हो, तेरो दरशन आन न्दकारा १ ॥ नाभि राय मारुदेविके नदा । तुम ता रण ससारा ॥हो ते०॥ तुमरे गुणको पार न पावे, भ जन करे जगसारा ॥हो ते०३॥ वरस दिवसने पारणे, स्वामी पीयोरस अपारा हो ते० ॥ ४ इन्द्रचन्द्रनी आस्या पुरो । मेटो कष्ट हमारा, होते० ५ ॥ इति

रागिणी भैरवी

समझ परी मोहे समझ परी जगमाया सव झु ठी ज० ॥ १ ॥ आजकाल तु कहा करे मूरख, नाहि भरोसा दिन एक घरी ज० ॥ २ ॥ गाफिल छिन भर नाहि रहो तुम, सिर पर घुमे तेरे काल अरी ज० ॥ ३ ॥ चिदानद ये वात हमारी प्यारे, जाणो हो नित्त दिल माहि खरी ज० ॥ ४ इति

पुन.

चितमे धरो प्यारे चितमे धरो ये सीख हमारी अव चितमें धरो, थोडासा जीवना काज अरे नर, काहेकु छलपर पंच करो ये० ॥ १ ॥ कूड कपट पर

ड्रोह करण तुम, अरे मन पर जब थाह भरो ॥ए०॥ ॥ २ ॥ चिदानंद जोए नहीं मानो तो, जनम मरन जब दुखमें परो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति

ताल दादरा

दोनु दसतो में अगीया रचावो सखी, नयना हमारी प्रभुसेलगी ॥दोनु०॥ जालीकी अगीया प्रभुकी रचावो ॥ मस्तक मुगट पहनावो सखी ॥ नय० १॥ चलो सखी बागोमें जईये ॥ चुन २ कलिया चढावो सखी ॥ नय० २ ॥ चलो सखीजिनवदन जईयें ॥ नृत्य करो सब मिलके सखी नय० ॥ ३ ॥ सावरी मूरत खूब रची है, देखतही मन नीहारो सखी ॥ नय० ४ ॥ सवत ऊनीसे चऊदेकी साले, माघ वदि तीथ नवमी सखी ॥ नय० ॥ सुन्दर विजयजीकी एहिअरज है ॥ नित उठ चरण पखालो सखी ॥ नय० ६ ॥ इति

रागिणी भैरवी

मेरो मन लागी रह्यो महावीर चरणमें जाय ॥ सिद्धारथके नन्दन एसे ॥ मातात्रिसला देवीमाय ॥ मे० १ ॥ जनमतही स्वामी मेरुकपायो, ससयदीया है मिटाय ॥ मे० ॥ क्षत्रीकुम स्वामि जनम लिया है, मुगत पावा पुरी जाय । मे० जो कोई ध्यावे स्वामी सो फल पावे, चद किरत गुण गाय मे० ॥ इति

पुनः

प्रभु मेरी विनतडीऊर धारो। तुम तारण तिहुं लोकके स्वामी। मोहे भरोसो तीहारो ॥ १ ॥ मोसे पतीत न आ जगमें कोई। मे हेख्यो जग सारो ॥२॥ तुम प्रभु तारण पतीत ऊधारण । भवसागरथी तारो ॥ ३ ॥ भुल सेवककी चित्त न दींजे, अपनी ओर नीहारो ॥ प्र० ॥ इति

पुन

नाथ भये वैरागी हमारे ॥ कासे जाय कहुं मेरी सजनी । वीन अवगुन मोहे त्यागी ॥ हमा० ॥ परवस तुती जांय पनी हे तुहिं तुहिं रटणा लागी॥ ह० ना० लाल विनोदी ईह रुपको नीरखत । वीर ह व्यथा तन भागी॥ ह० ना ॥ इति

पुन

सीतलनाथनु स्तवन

तारिये मोहे शीतल स्वामी ॥ शीतल स्वामी अन्तर जामी ॥ आंकडी ॥ काल अनादि पुदगलके सग, भटकत भयो हुं निकामी ॥ तारि० ॥ १ ॥ एसो न रहियो कोई थानक, मरण विनाको अंतरजामी ॥ २ ॥ ओर फीर सुक्ष्म वादर पुदगल ॥ परावरत कीयो सीरनामी ॥ ३ ॥ तारी० अधम उधारण विरुद तिहांरो, कृपा करी तारो भव्यजानी । भानु

चंद कहे प्रभुजीकी सेवा, सिवसुख की है यही निशानी ॥ ४ ॥ तारी० इति

पुन

अध्यातम स्तवन

क्योकर भक्ति करु प्रभु तेरी ॥ क्यों० ॥ काम क्रोध मद मान विषय रस, छोडत गेल न मेरी प्र० ॥ करम नचावत तिमहि नाचत, माया वस नट चेरी प्र० ॥ दृष्टि राग दृढबधन बाध्यो, निकसत न लहे सेरी ॥ प्र० ॥ करत प्रसशा सब मिल अपणी ॥ परनिंदा अधिकेरी ॥ कहत मान जिन भाव भगत विन, शिव गत होत न नेरी ॥ प्र० ॥ इति

पुन

संसार नाम जिस्का, जो सारा असार है, इस जगमें न कोई मेरा ॥ तेरा नांम सार है ॥ भवजल अगम अथाहरे इसका न पार है ॥ चारो गतिकी भवरा, पडती अपार है ॥ से० ॥ १ ॥ जिया देख डरा मेरारे, तुमसे नहीं छिपा ॥ तेरे हाथ मेरारे अबतो उधार है ॥ स० ॥ तुम सिवाय देव मै, ध्याउं न दूसरा, मैंनेतो अपने दिलमें किया करार हैं ॥ स० ॥ ३ ॥ अब छोड सकल वातकु तेरी शरन गही, जिनदास हाथ जोडके करता पुकार हे ॥ स० ॥ ४ ॥

पुन (थियेटर)

मे अरज करुं, सुनो महाराज । पायो मे चरण सरण राखोने प्रभुजी लाज ॥ सु० १ ॥ सुमति जिनन्दा मेरे । सुरत सुहानी तेरे । कुमति न आवे नेडे, महिमा कहालो देखो, सफल घडीहे आज ॥ सु० २ ॥ वैशाख मास जो आया । सहु लोग हरष पाया । रोग शोग दुख पुलाया । शुक्ल पक्ष देखो सोहे । पचमी तिथि हे आज ॥ सु० ३ ॥ नविन मंदिर छाजे । जहां प्रभुजी विराजे । मानु शशि सूरज लाजे । चलो सखी सब मिलि । प्रभु जीकु पुजु आज ॥ सु० ४ ॥ इति

पुन

सुमति जिनन्दा प्रभु आज जुहारो । अष्टद्रव्य लेके आय ॥ पुजु प्रभुजीके पाय । मनहिमे हरष अति भयोही मेरो ॥ सु० १ ॥ आयो मे तुमारे पास । पुरो मेरी अभिलाष । दीन बन्धु दिनानाथ जगत उजियारो । नामिलेगो एसो दाव काज सुधारो ॥ सु० ॥ २ ॥ इति

पुन (ठुमरि)

नेमि जिन तुमरो दरस लागे प्यारोरे । दरस देख मन आनन्द आवे । पातिक हर गयो सारोरे ॥ ने० १ ॥ मे हु दीन अनाथ प्रभुजी । नाथ गरिब नेवाज हो तुमहि । कृपा करी मोहे तारोरे ॥ने०२॥

सेवककी प्रभु एहि अरज है । भव सङ्कटसे निवारोरे ॥ ने० ३ ॥ इति

पुन

सूरत एसी सावरी । मे जाउ वारि २ । प्रभुजी एक अरज सुनो मोरी ॥ टेर० ॥ समुद्र विजेजीके नन्दन प्रभुजी, सेवा देवी माता जिके नयननको प्रये गुलजारी ॥ सु० १ ॥ राजुलको परनीजन आये । पशुयनको निरख रथ फेरके चले गये गिरनारी ॥ सु० २ ॥ नव भव प्रीत छिनमे तोडी । नेम राजुल मिल हुवे जव मुगतिके अधिकारी ॥ सु० ३ ॥ दास आस कर अरज करतु है, मे हर मोहे कीजे दरस मोहे दीजे । चरनणकी में जांउ वलिहारी ॥ सु० ४ ॥ इति

पुन

सुमति जिन मुजरो हमारो प्रभु लीजेजी ॥ मेघ नृपति जीके नन्दन स्वामी मात सुमङ्गलाके प्यारो जी ॥ सु० १ ॥ ऐसो नर भव पायके प्राणि । नित नित वन्दन किजेजी ॥ सु० २ ॥ ऐसे जिनजीको पूजत प्राणी । भव भव पातिक छिजेजी ॥ सु० ३ ॥ दास तूमारो करत वीनति अजर अमर पद दीजे जी ॥ सु० ४ इति

पुन

हजूर तुमसे कहु मैं दिलकी वेजार पनमे जो

वीती वतियां । ह० टेर । न धीर तनमें खुसी न दिलमें वेहाल पनमे नराई छतियां ॥ ह० १ ॥ सि द्धार्थ तिसला के नन्द सुनिये कृपाके सिधु हेवी रस्वामी, संसार वनमे कीयो भ्रमन मे, चोरासि दलकी यह च्यार गतियां ॥ ह० २ ॥ कषाय कुमति कुकर्म मिलके दे मार च्यारु तरफसे घेरयो । सदासे इनकी वेजासही हे मैं मेरे दमसे उपाधि अतिया॥ ॥ ह० ३ ॥ रही न वाकी विपतकी वातें न जानुं तुम क्या विशाल ज्ञानी, रहु सरणमें निहाल कीजै अजेकी लागी चरनसे मतिया ॥ ह० ४ ॥

पुन.

साहिव तेरी वदगी मैं भुलता नही, भुलता न ही साहव विसरता नही ॥ सा० टेर ॥ अष्टादश दोष रहित देव है सहि औरदेव अन्यदेव मानता नही ॥ मा० सा० १ ॥ मुनि है निग्रथ सो तो गुरु है सहि और गुरु भेसधारी मानता नही ॥सा०२॥ जीव दया सुद्ध सो तो शास्त्र है सहि और शास्त्र आस्या रुपी मानता नही ॥ सा० ॥ ३ दान शिय ल तप जप धर्म हे सहि और धर्म विषय मानता नही । सा० ४ ॥ मुक्ति रुपी सिद्ध शिला वाछता सहि ससार दुखजाल रूपी मेटीए सहि ॥ सा० ५ ॥ कहत मुनि खेत माल तारिये मोहि आवाग मन मोरी मेटिये सहि ॥ सा० ६ इति

पुन

दीले नादानकु समझाया चायगें । हालमें हमकु नगनि नली हुवे । सुन शीयल संजमकु सजवाय लायेगे ॥ दी० ॥ अष्टकर्मोकी प्रकृतिका सञ्चय होए जाहिल । बध वा उदय उदीरण सत्तामें तू गाफिल । महाराजा मोहकी गति जाति से उलझा सा मिल । सागर कोका कोकी सतरे काठीया नव सा मिल । चउनाणी अनगार जिनोके हीये इस धाई ल । ऐसे कर्म मोह मदनकु जीतावी चायेगे ॥ दिल० २ ॥ इति

पुन

आवो नेम रह जावो सदन, हमको न सता वोरे । आ० (टेर ॥ व्याहन आए सजके सज्जन, पशुवनकी सुन देख रुदन। गिरनारी चले निज ठाड वतन् तकसीर वतावोरे ॥ ये० १ ॥ पूनम जैसे चद वदन, मोहन मुरति श्याम वरण, मेरी निकी लागी नव जवकी लगन, मत छेह दिखावोरे ॥ २ ॥ ये रिहम्० ॥ सजम दूती लागि श्रवन्, प्रभुको सिखाए नीके फिरन् । प्रभु तारण ना म तुह्मारो तरण । रथ फेरिन जावोरे येरिर० ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरन् राजुल मन वेराग धरण लेउ दोम नेमि जिनजीकी सरण, शिवपूरतो दिखा वोरे ॥ येरिशि० ४ ॥ इति

पुन (पहाडी)

कधी प्रभु पदमे मन लाया तो होता, अरे निरगुनका गुण गाया तो होता। पडा है वेखवर माथाके फदमे, जगतजजालसु लजाया तो होता॥ ज क० १॥ अब अवसर आमिला, टुक सोच प्यारे, आतम हितकार प्रभु ध्याया तो होता॥क०२॥ तु है मनमोहनके त्रिशलानद प्यारा। जिन सेवामे सुख पाया तो होता, पुरायो आश चुनीकी प्रभुजी, दिल भर दरस दिखलाया तो होता॥ क० ३॥ इति

पुन

शाति वदनकज देख नैन मधुकर मन लीनोरे॥ भलाम० टेर॥ श्रीजिनके मकरंद वैन। विरमी भव दुरगन्ध रैंण शिवपुरके सदासुख कद वैन। समकितरस भीनोरे॥ भ० १ कामित पूरण काम धेन। मद मोहके चूरण ठाम फेन, लहे मनको अती आराम चेन, गुंजे अति झीनोरे॥ भ० २॥ कपूर कहे जिनपदका अैन। उरधारो भवि तारलैंन। होय मुक्ति सेऊ पर सार सैंन। आगम कह दीनोरे॥ भला॥ इति

पुन

दिवाना तेरे दरसका यार मे हुं। जो रखता हु तुझसे सरोकार मे हु॥ दि०॥ तेरा ध्यान रहता है हरदम् मुझको। टुक एक महर कीजो लाचार

श्री पंच तीर्थ जिन स्तुति

नृपतनयेवर हे मन माके ए राह

श्री जिनराज सदा सुखकारी,दास नमे शिर न मनकर्र
तुम शरणागत आव्या बालक, तारो हे प्रभु मेहर करी

आदि जिनवरा, अजित प्रभु खरा,
शांतिनाथजी, शांति करो खरा,
पार्श्वनाथने, वीर जीनवरा,
बालमित्रनें, साथ करो खरा,
जिनवरजी, करु अरजी--श्री जीनराज १
तुमे दया करी, अम पाप परहरी,
शिववधु प्रभु, आपजो खरी,
तुम विना विजो, देवठे वृथा,
जाणी एम अमे, छोडीये मिथ्या
शिवरमणी, मनहरणी--श्री जिनराज० २
नगरमा रही, अर्ज करे सही,
तारक तुमविना, बीजो कोई नही,
सकल सघना, कष्ट कापजो,
मनसुखलालने, मग्न राखजो,
सुख करजी दु ख हरजी--श्री जिनराज ३

श्री आदिनाथनु स्तवन

आदिजिनेश्वर--अर्ज स्विकारो, कर ग्रही सेवकने प्रभु तारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥१॥ प्रथम नरेश्वर,--प्रथम जिनेश्वर, प्रथम युगल तुमे धर्मनिवार्यो ॥

आदिजिनेश्वर० ॥ २ ॥ आजनी आंगी—अजव बनी छे ॥ सुदर मुख शोभे प्रभु सारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ३ ॥ रोहिणी पतिथी—कोटी गुणो प्रभु वदन आनदी दिसेछे तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ४ ॥ मृगपतिथी पण अधिक गुणोछे, लक कटीनो प्रभु जी तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ५ ॥ नाथ निरंजन— भव दुःखभंजन, भवो भव होजो शरण तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ६ ॥ युगम् भाव स्तवना वली करवा, बालमित्रनी बुद्धिवधारां ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ७ ॥

श्रीसंभवनाथजिनु स्तवन ।

त्रिताल चोपाइ—प्रभु पासनु मुखडु ॥

सभवजिनजीनु मुखडु शोहे, नयणा देखी जग सहु मोहे रोहिणीपतिसम वदन विशाल, तस अर्द्धाकारे दीसे भाल, कांति कनकसरीखी सारी, इंद्र चंद्ररूप जायहारी;

सावथ्यीमा हतो दूकाल, प्रभू जनमतां थयो सुगाल, धान्यना तिहा सभव थाय, द्रव्य सभवथी नयरी साहाय फल फूल संभवथया सार, तेथी वर त्यो त्यां जयजयकार; राय जितारी वीचारी आम, सभवथी पाड्यु सभव नाम, एवा संभव करजो अमने, बालमित्र अरज करे तुमने, अहमदनगरमां रहेतां उल्हास मनसुखनी पूरोआस ।

श्री अजिनन्दन जिन स्तवन ।

गजल, आज आवी राज हजुरमां ए राह ।

अजिनन्दन आज आनन्दमां, तुम दर्शनें थइ सु मती, एक दुष्ट कुलटा छे सही, पूर्व जवनु वेर काढ्यु अही, अहोनिश मारे पाठलपडी, मतीभ्रष्ट कीधी मारी अति ॥१॥ एवी दुष्ट छे जे कुमती,जस सोवते होय दुर्गति । ते दुष्टा दुर निवारिनें, आपो अमोने सुमती । अ ॥२॥ रही नगरमा मन मगन थइ, वालमित्र अति आनन्दथी, मागे मुखें थी एम कही, आपो अमोने शिवगती । ३

श्रीसुमतिनाथजिनु स्तवन ।

अवर मदन अलवेलो–ए राहमां ।

सुमति जिनेश्वर तारो जवाब्धिथी सुमति जिनेश्वर तारो । नयरी कोशल्या धन तुज धरणी, जन्म्यो सुमति जिन प्यारो । जवा० १ कुल दीपक मेघरथ राजाना, त्रण जगत्रने तारो ॥२॥ मङ्गला माता मङ्गल उदरी,प्रसवे सुमति जिन सारो । जवा ॥३॥शशी सम सोहे वदन प्रजुनु, क्रौंच लंछन हितकारो । ज ॥४॥ सुमती दाता समकित आपो, कुमती दूर निवारो ॥ज ५॥ आप हजूरे लेजो अमने, तुटे आ जनमारो । ज ६॥ वालमित्रना प्यारा प्रजुजी, मनसुखदास तुमारो । ज ॥ ७ ॥

श्रीपदम प्रभु स्तवन

होरीनी राह सांवरेसे कहियो—ए राह ॥

प्रभु पद्म प्रभ जिन प्यारा ॥ ए टेक ॥ सुशिमा माता उदरे आव्या, चउद सूपन गुणसारा, लंछन शोहे रक्त कमलनु, नयरी कोसंवी वशनारा, प्रभु जीतो मोहन गारा ॥ प्रभु पद्म प्रभ जिनप्यारा ॥१॥ द्वादशी कार्तिक वदनी सोहे, जनम तिथी ग्रह सारा, कुल इक्ष्वाकु दिणयर प्रगट्या, श्रीधरकुल शणगारा, प्रभु सव जन हितकारा॥ प्रभु पद्म प्रभ जिन प्यारा ॥२॥ अहमदनगरे आज आनन्दे, गावे गुण तुम सारा, वालमित्र करजोडी विनवे, पावे भवोदधि पारा, भव भव शरण तुमारा ॥ प्रभु पद्म प्रभ जिनप्यारा ॥ ३ ॥

श्रीसुपार्श्वनाथनु स्तवन ॥

वनकारानी राह ।

सुपार्श्वजिनन्दप्रभु प्यारा, मुज स्वामी मोहनगारा, ए टेक॥ वणारशीनां तुमे वाशी, माता पृथवीमन उल्हाशीजि, रायप्रतिष्ठित कुल श्रगारा, मुज स्वामी मोहनगरा ॥ १ ॥ जेष्ठ शुक्लद्वादशी सार, जन्म्या त्रीजगदाधारजी, तुलरासींना धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ २ ॥ मध्यम ग्रैवेयकथी आव्या, वान कचनसम सोहाव्याजी ॥ उचा द्विशतधनुष ठे सारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ ३ ॥ वि

शलाख पुरवनु आयु, दिनकरथी तेज सवायुंजी, छो स्वस्तिकलंछन धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ ४ ॥ प्रभु तुम दरशन मनभावे, मुनिमनसुख तुम गुणगावेजी ॥ छोवालमित्रना प्यारा ॥ मुज स्वामी मोहन गारा ॥ ५ ॥

श्रीचन्द्रप्रभुजीनु स्तवन ॥

राग माढ—मेवाडो मली—ए राह ॥

चद प्रभु चित चोरी लीधु,देखाडी दीदार ॥मन मोहाव्यु माहरु मने देखाडी दीदार॥ चन्द्रपूरी न यरी विषे, महासेन राजान॥ लक्ष्मणा माता उदरे, प्रभु आव्या पुरुष प्रधानरे म० ॥ १ ॥ लछन शोभे चन्द्रनु कांई गुण अनन्त प्रधान ॥ दर्शन करता आपजो, कांई शिवरमणीनुं दानरे म० ॥ २ ॥ नयणा कमल कचौलडा काई, नाशा शुक समसार ॥ सम्य क्त दृष्टि जीवने प्रभु, ताहरो छे आधाररे॥म०॥३॥चि तमा लागी चटपटी प्रभु, लटपट मन लोभाय ॥ खट पट शिव वधुने माटे, आवे छे मुजदाथरे॥म० ॥ ४ ॥ एकला आप वरीने वेगा, करीये सेवक सार ॥ बाल मित्र शुभ वन्दन करता, विनवे वारवाररे म० ॥५॥

श्रीसुविधिनाथ स्तवन ॥

छे अधर सुधारस पान चतुर नर प्रेम थकी करीये॥ ए राह ॥

नवरगी आगी आज दीलमा धरीये, रस अमृ

त भक्ती पान चतुर नर प्रेम थकी करिये ॥ जइ जिन मदिरमां आगी नव नव रचिये,पल पल वारे जिन नाम हृदयमा धरीये, तो मोक्षालयनु द्वार सत्वरे वरीये ॥ रस अ० ॥ १ ॥ रुम झुम ठुम दू म पग थकीनृत्यने करीये, त्यां चैत्यालयमां गीत ज्ञान,आदरीये, तो भव सागरनो पार शीघ्रथी त रीये ॥ रस अ० ॥ रही अहमदनगरे वालमित्र गुण गाइयें, प्रभु भक्ती करता अनन्त सुखने पाइये, तो सुविधि जिनेश्वर भजतां सुखीया थईये रस० ॥ ३

शीतल नाथ स्तवन ।

शीतलनाथनी शीतलता भारी, दरशन करता जाय कषायहारी॥कमल सम नेत्र तेज भारी । शीतलना नी ॥ १ ॥ शशिसम वदन शीतल कारी, कटी केश री लकारी, रुपे इन्द्र चन्द्र जाये वारी । शीतल नाथनी ॥२॥ कातिकेवि दिशे कामणगारी ॥ मुरती प्रभुजीनी मनोहारी ॥ जगतवत्सल प्रभु जयकारी॥ शीतलनाथनी ॥ ३ ॥ भवी जीवने शीतलकारी, अ रजी मनसुखनी स्वीकारी ॥ वालमित्रने लेजो तारी॥ शीतलनाथनी ॥ ४ ॥

श्रेयासजिनस्तवन ।

मातु लगाडो तो मारा सम छे सलुनीरे—ए राग। श्रेयास प्रभुजी तुमे सहाय करोमारीरे, आपणों किं कर जाणी उतारो [illegible]रीरे, श्रे० ॥१॥ विष्णु

ता कुलें आव्या विष्णु माता तारीरे ॥ जगतवच्छल प्रभु तु छे आनन्दकारीरे ॥ श्रे० ॥ २ ॥ खडगीलंछन प्रभु सोहे सुखकारीरे, करु एक अरजी स्वीकारो प्रभु मारीरे, ॥ श्रे०॥३॥ दुष्ट एक रामा मारी, पाछल पडी भारीरे ॥ लीधुं लुंटी द्रव्य मने बहु मार मारीरे, ॥श्रे० ४॥ लोकोमा लज्जावी मने कर्यो छे खुवारीरे, नामे छे कुमती तेने काढो प्रभु न्यारीरे, श्रे०॥ ५ ॥ अहमद नगरे रही करे अर्ज सारीरे, वालमित्र गाय छे आनन्द हितकारीरे । श्रे० ॥ ६ ॥

श्रीवासुपुज्य स्वामीनु स्तवन ।

गमका तराना ए राह ।

वासुपुज्य विलाशी, चपाना वाशी, पुरो अमारि आश ॥ करु पुजाहु खाशी ॥ केशरघासी, पुष्प सुवासी, पुरो । ए टेक ॥

चैत्यवदंन करु चित्तथी प्रभुजी, गावु गीतारसाल ॥ एम पूजा करी विनती करु तुं, आपो मोक्ष दयाल । दियो कर्मने फासी, काढो कुवाशी, जेम जाय नाशी । पू ॥१॥ ससार घोर महो दधिथी, काढो अमने वहार ॥ स्वारथना सहु कोइ सगा छे, मात पिता परिवार, वालमित्र उल्लाशी, विनय विलाशी अर्जि खाशी पुरो० ॥ १ ॥

विमल नाथ स्तवन ।

पूजो देव करो तुम सेव कुकर्मो तन न न न न त्रुटे।

जगतमां सार रुप एक जैन धरम, ऐसा जाण मि थ्यात्वकु छोडेगें हम, तनका क्या भरोसा निकल जावेगा दम । पूजो० ॥ १ ॥ भजो भजो प्रभुकु क्या लगता है दाम॥सबसे आगे प्रभुका हम लेवेगें नाम सेवे जो विमल नाथ होवेगा काम । पूजो देव०२ बालमित्र पूजे चन्दन केशरचग, चालो२पूजो प्रभुजी के नव अग, कहे करजोडी मनसुख मनरङ्ग । पूजो देव० ॥ ३ ॥

वैरागीपद

छवि छवि वदन निहार निहार ॥ छ० ॥ प्रोखि तपति अगमा गम कीनो विसरी विगत विहार ॥ छ० ॥ १ ॥ गये अनादि कालमें ऐसे दीठी न हिय दिदार, निरुपम निजर निहार निहारत, रंजिय रूप रिझ वार ॥ छ० ॥ २ ॥ अतर एक महूरत अंतर प्यार करी अणगार, लीने ज्ञान सारपद भीतर, चे तनता भरतार ॥ छ० ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीअनन्तनाथजिनु स्तवन ।

भेखरे उतारो राजा भरथरी॥ ए राह । अनंन्त प्र भु मुज तारजो० ए टेक। अवगुण मुजमा अनन्त छे, तुम गुण अनत अनंतजी, मोहराय वश हुं पड्यो तुमे तो कीधो तस अतजी॥१॥अनत॥ हुं रागी घणो लालची, तुमें तो थया वीत रागजी । राग द्वेष मु ज टालीये, चार कषायनो त्यागजी। अनत॥२॥ पाप

अनन्ता में कर्या, कुरु कपटनो हुं गेहजी ॥ आ पापी नै उद्धारशो ॥ ठो तारक निसदेहजी । अनंत ॥३॥ तुम सम तारक कोई नही, मुज सम पापी न अन्यजी ॥ करुणा नजर हवे कीजीये, तो थाउ धन्य धन्यजी॥अ ॥ ४ ॥ भवभव भटक्यो तुम विना, मलीया हवे भगवंतजी, बालमित्रने दीजिये, अक्षय ज्ञान अनंतजी । अ. ॥ ५ ॥

श्रीधर्मनाथनु स्तवन ।

प्रभु धर्म नाथ (२) तुमें धर्मतणा ठो दाता, तुम विना अनंत भव रखड्यो पण मली नहीं काई शाता प्र० ॥ १ ॥ हवे तुम ठेडो (२) पकड्योठे करो एक काम, मम घरमां जे तस्वर ठे ते काढो तमे तमाम प्र ॥ २ ॥ महा मेहेनतथी (२) हुं मेलवु द्रव्य अपार ॥ चार चोर लुटी करी मारे ठे मने बहु मार, प्र ॥ ३ ॥ तेनि पाच भग्नी (२) ठे दुष्ट कृत्य करनारी, ते तस भ्रातनी साथे मली बहु पाप करावे भारी प्र ॥ ४ ॥ मम मित्र आवे (२) मुज घर मांहे कोई वार, भ्रात भग्नी भेगा थई काढे ठे तेने बाहार प्र ॥ ५ ॥मुज घर केरो (२) मे अश्व महामद मातो ते पण तेणें कबजकर्यो ठे कहुं केटली वातो प्र ॥ ६ ॥ दरशन करतां (२) में ओलखीया भगवान, बालमित्रनी अरज स्वीकारो देजो अक्षय ज्ञान प्र ॥ ६ ॥

शांतिनाथ जिन स्तवन ।

प्यारी वेनी शोक तमे समावजो–ए राह ॥ प्रभु शांतिनाथने समरजो, जिनराज प्रभुनु ध्यान सदा तुमे मनथी, धारजो ॥ शांतिनाथ ध्यावो, सुखी थावो, ल्यो लावो, श्रावक कुलमांआवी रुडा गुणथी गाज जो ॥ प्र ॥ १ ॥ पाप त्यजजो प्रभु भजजो अरिदम जो॥कर्म रिपुने मारी जलदी शिवमां जावजो प्र २ गुण गावे, भगति भावे बहु ध्यावे, अहमदनगरना बालमित्रने प्रेमे पालजो प्र ॥ ३ ॥

श्रीकुथुनाथजिन स्तवन ।

मुखथीरे मागु प्रभु तुम पाशे, आपो मोक्ष रत न, शिवरमणी नहीं छोडु प्रभुजी नीश्चे एह वचन, मोक्ष वधु नहि मुकु प्रभुजी निश्चे एह वचन शिव वधु वरवा, मोजने करवा, मनमा राखु मान, भव स्थिति पाके, समकित सांखे, आवीस करतो गम न । शिव० ॥ १ ॥ क्रोध तजवजो, मान हरवजो मायाने मारजो मार, लोभ न वारो भव भव टालो, मुज पर राखी मन । शिव० ॥ २ ॥ सुखने करजो दुखने हरजो लेजो आप हजूर, कुन्थु जिनवरजी बालमित्र अरजी, स्वीकारो थाउ मगन । शिव० ३

श्रीअरनाथजीनु स्तवन ।

जैन धर्म हृदय धरो छे चितामणी, मारो कर्म करो छार वरो शिवरमणी, ए टेक । दुर देशातर थी तुमें

छवि देखी जाउ वारी । मो ॥ १ ॥ आङ्गी चमीज मावनी ॥ हीरामणि झलकंत, मुख छवि कोटि चन्द्र मां॥ नयणा अति विकसत, जगत शोभानी हरनारी, देखी वदे छे नरनारी । मो २ समकीत दे दातार तु, देतु अक्षय ज्ञान, पद २ ताहरी वदना, श्रीपति श्रीभगवान, वालमित्र भक्ति तारी, सकल सुखनीछे देनारी । मो ॥ ३ ॥

श्रीनेमनाथजी स्तवन ।

प्यारा नेम मानो, नही पाछा आवो, दीन दयाल कृपा करी आवो, लियो २ ससारनो, लाव्हो, नहीं पाछा आवो । टेक ॥ (राजुल)–तुम विन आ ससारमा ॥ अवर न को आधार, आमी आवी उभी रहु, क्या जाशो आवार । (नेमनाथ)–सारथी चाल नहीं ऊभु रहेवायछे, (राजुल)–परण्या विना जोऊ केम जवाय छे । प्यारा ॥ १ ॥

कर ग्रहीने भले पछी जाजो, मानो मानो जादव पति जासो । नहीं० (नेमनाथ)–अष्ट भवातर हु रह्यो, तुज साथे सुण नार, नवमे भव तुमे हवे, आवो अमारी लार, (राजुल)–मुजथी साथे पण हवे अवाय छे, वाल मित्र मन राजी वहु थाय छे । प्यारा ॥२॥

श्रीपार्श्वनाथजी स्तवन,

प्रभु पुरो मारी आस ॥ एटेक ॥ वसों नयरी वनारसी वास॥ त्रेवीसमा जिनश्री पास॥ अहि लंछन धरी

उल्लासरे. प्रभु० ॥१॥ वाह. वदन तुमारुं पास ॥ करे दिनकर सम उजास॥तुम दर्शनथी पापनो नासरे॥प्रभु० २ कर्यां चोरासी प्रवास ॥ भमी आव्यो हवे तुम पास॥ तु आप चरणनो दासरे प्रभु० ॥३॥ क्रोध मान मोहनो त्रास॥ वली लोभे कीधो लास॥ कर जोडी करु अरदासरे प्रभु० ॥४॥ सह्या नर्क निगोदना त्रास, करोकूर कर्मनो नास, हवे आपो मोक्ष आवासरे प्रभु० ॥ ५ ॥ बालमित्रनी अरजी खास, कहे मनमुख मन उल्लास तु पास प्रभुनो दासरे प्रभु०६

श्रीमहावीर स्वामीनो स्तवन ।

जपती प्रीतमनी जपमाल ए राह करता जिनवरना गुणग्राम पूजा करू बहुसारी । पूजा करतां बहु प्यारी ॥भक्ती भाव थकी मेधारी॥वरसूं प्रेमथी शिवसुन्दरी नारी । करता ॥ टेक ॥ चार अने चोराशीना, चक्रे चढयो बहूवार । कूप अरट सम भ्रमणनो ॥ कदीयें न पाम्योपार । मलिया महावीर उपगारी,तसआणा शिरधारी॥वरसू ॥१॥ मनमहारू लागी रह्यु॥ सुंदरी तारी पास । तुज रूप नयणे निरखवा ॥ मनमा बहू उल्लास । भवोभव सेवना सारी भेटवाभक्ति छे भारी । वरसु ॥२॥ नार कुमती यें भोलव्यो॥ प्रीत थी पारावर । ये नारीना सङ्गमा ॥ काइये नदीछोसार । कुमती न ठारी नारी॥ तेथी गयोहुं हारी । वरसु ॥३॥ तुज-मम प्रियआजगतमा ॥ अब

निंदा, छल प्रपंचथी हृदय भराणु ॥ धन ॥ ३ ॥ भव भव एवा पाप करता, पापनां भारथी पिंड भराणु ॥ धन ॥ ४ ॥ तु तारक पण हु बहु पापी, मारो उध्धार करोतो हु जाणु ॥५॥धन॥ श्रीशंखेश्वर ताहरी कृपा थी, अक्षय ज्ञाननु पेढेरु घराणु ॥ धन ॥६॥ इति ॥

मराठी चालनी साखी

अकल स्वरुपी घट घट व्यापी, अनंत गुणी भगवान लोका लोक प्रकाशक भास्कर, केवल ज्ञान निधान ॥ जग हितवछल करुणासागर, गुण रत्नाकर स्वामी शिव सुख पामी बहु दुःख वामी, त्रिभुवन जन विश्रामी ॥ १ ॥ अशरण शरणा भव भय हरणा तु प्रभुतारण तरणा ॥ अजर अमरणा, शिवसुख करणा, प्रभु बहु तुज चरणा तुजगत्राता तु पितु माता, दे सुख शाता दाता तुजगत्राता विश्व विख्याता, अक्षय ज्ञान प्रदाता ॥ २ ॥

थियेटर

दीलधर मनकर जिनवर पूजन करवा जइये आज ॥ एटेक ॥ भाव धरीने पूजे जिनने तेहने धन्य धन्य॥ पूजा करतां शिवपूरजावा प्राणी बांधे पुण्य, साची भक्ति रीजी स्वामी देजो दरिसन॥

रागणी गुजराती गरबी

प्रभुतार हवे मारु अहि शु थसेरे ॥ कर्यां पाप ते अनंत मारा क्यम जसेरे ॥ १ ॥ प्र० ॥ ताहरुं

शरण मारे हवे अहीं एक ठेरे, ताहरा ध्यानथी अ नत पाप क्षय जसेरे ॥ २ ॥ प्र ॥ जैन गायन मड ली नित्य गाय ठेरे ॥ तेथी अक्षय ज्ञान मने आप सेरे ॥ ३ ॥ प्रभु ॥ इति ॥

रागणी दक्षणी थीयेटर

श्री चराचर विश्वत्रा, शिवसौख्यकरा, भयभी रु हरा, सुरासुरेश्वर वद्य तरा ॥ शि ॥ एटेक ॥ भ व तारक तु जगनो त्राता, भय वारक त्रिभुविश्व विख्याता, तु सुखशाता, देपितुमाता, अनंतगुणो तुजमां प्रवरा, जय धैर्य धरा ॥ १ ॥ शि ॥ अखूट खजानो छे प्रभु ताहरो, हुंतु सेवक प्रभुजी ताहरो, भवसागरथी पार उतारो, काइक मुजपर करण करा भय शोक हरा, ॥२॥ शि ॥ ताहरु ध्यान धरु नित्य रगे, हुं पण थाइस प्रभु तुज सगे, अक्षय ज्ञान दे दान उमगे. नाभिनदन नाम धरा, जयविजय करा ॥३॥

गजल

उंमा निसा सा नाखती रे दीकरी दुखी ॥ ए राह ॥ निहार यार तार तु विचार दारहे ॥ गुनेगा रकु उतार पार तुहि दिलदार हे ॥१॥ नि ॥ अव्य क्तमे अजाणते यह कर्ममें करे, कृपाकरें प्रभु अहो कृपावतारहे ॥ २ ॥ नि ॥ शरणहे प्रभुजी तुं शर ण दीजीये मुजे, अक्षय ज्ञान दानदे त्रैलोक्य सार हे ॥ ३ ॥ [illegible] ॥

राजुलगीत

देखा नही कछु सार जगतमे देखा नही कछु सार, आससार असार ॥ज॥ तु तारे तो तार ॥ ज ॥ माहारे तु अधार ॥ ज ॥ दे । एटेक ॥ मेणा दइ दइ हवेहु थाकी ॥ सदेसानो नही पार ॥ हाय हाय हायरे हवे ॥ ठेक वनी लाचार ॥ ठे ॥ ज ॥ दे ॥१॥ रझिरडिहु आसुडे भीनी ॥ गमे नही शृगार ॥ हाय हाय हायरे हवे॥अंगवले अगार॥ अं । ज । दे ॥२॥ झुरी झुरी पिंजर थयु अग ॥ वियोगडु खअपार ॥ हाय हाय हायरे हवे ॥ दीहालउं आवार । दी॥ज॥दे ॥ ३ ॥ जैन गायक मंडली गावे ॥ राजुलगीत उचा र ॥ जाय जाय जायरे एतो । मोक्ष मदिरमा पधा र ॥ मो ॥ ज ॥ दे ॥ ४ ॥

रागणी खमाच ठुमरी ॥

दरीमन विन अखियां तरस रही ॥ ए राह ॥ नव पदसें मेरे विघन कटे । ज्यौं श्री पालके अघ वि घटे ॥ एटेक॥ ध्यान स्मरण जो करते तिनके॥ स्पष्ट अस्पष्ट सव कष्ट कटे ॥ १ ॥ न ॥ नट विट लपट सवहि सुधारे, मोह सुभटका जोर हटे ॥२॥ न ॥ दान शियल तप भाव प्रमुख गुण॥ विनय नयादिक गुण प्रगटे ॥ ३ ॥ न । अघट विघट घटना इह ज गकी ॥ नव पद ध्यानसें सव सुलटे ॥४॥ न ॥ पुना जैन गायक मडलीकु॥ अक्षय ज्ञान दशा प्रगटे ॥ ५ ॥

धनासिरी

जवलग विषय घटा न घटी ॥ एटेक ॥ तवलग तप जप संयम क्रिया ॥ कहा करत कपटी ॥ लोक दिखावन करत हे क्रिया ॥ पहिरत पीत पटी ॥ १ ॥ ज ॥ ध्यान धरी योगी होय वेठत ॥ वक वृत्ति कपटी ॥ वेठ तखत ज्ञानी होय वेठत ॥ करे उपदेश अती ॥ २ ॥ ज ॥ उग्रविहार धरत आडंबर ॥ मुख सें कहत यति ॥ वनवासी तनजस्म लगावत ॥ शिर पर धरत जटी ॥ ३ ॥ ज ॥ नग्न रहत पचाग्नी सेवत, साधत योगहठी॥ शठ हठ कष्ट करे पण मनतो, नाचत नृत्यनटी ॥४॥ जवगल विषय घटा न घटी

तवलग तु क्या फलपावेगो, विषयवल्लीनकटी ॥ जैन गायन मंगल ताकु वंदत ॥ जाकी अक्षयज्ञान दशा प्रगटी ॥ ५ ॥ जवलग ॥ इति ॥

राग कल्याण

जय जय नव पदा आप सपदा ॥ काप आपदा ते शुभ ध्यानथी सदा ॥ एटेक ॥ श्वेतरग अरिहंता वंदो, रातासिद्धमहंत ॥ आचारजपीला ने लीला, उवझायाजगवंत ॥१॥ज॥ सुदरश्याम सलूणा साधु॥ धवलाठे पद चार ॥ दशणनाण चरण तपवंदो, सिद्ध चक्र एसार ॥ २ ॥ ज ॥ पांच गुणी चउ गुण छे एमां, आधारा आधेय ॥ गुणसेव्याथी गुणीयल थाये, जाणोनि. सदेह ॥ ३ ॥ज॥ शातिसारे विघन

निवारे, उतारे भवपार ॥ अक्षय ज्ञान प्रचारक मंडल ॥ वंदेवारवार ॥ ४ ॥

रागणी वरवा

॥ अरे दहि माहरी तुरकवाने घेर लई ॥ एराह ॥ प्रभुदीजे दरस वली देर भई ॥ टेक ॥ लखचो रासी फेराफिरता ॥ दु खसहन करे मेनें केइ केई ॥ १ ॥ प्र ॥ भवभव भटकत सरणेहु आयो ॥ अब तो राखो समकित दान दई ॥ २ ॥ प्र ॥ पुना जेन गायक मंडली तो ॥ अक्षय ज्ञान पद चाहाय रही ॥ ३ ॥ प्र ॥

ठुमरी

॥ हजारों मेरे कानके मोती ॥ एराह ॥ प्रभु मेरो ज्ञानकी ज्योती ॥ मानों सुर्यकिरण कोटी ॥ टेक ॥ घटघट व्यापक ज्ञान कला छे, निजगुणता मोटी ॥ १ ॥ प्र ॥ अनत गुणीना गुणनी गणना ॥ करवी ते खोटी ॥ २ ॥प्र॥ ए प्रभुने तो रूप न रेखा, वर्णादिक नोती ॥ २ ॥ प्र ॥ गुणीयनकों भजते गुणी होवे ॥ केवलता मोटी ॥ ४ ॥प्र॥ अक्षयज्ञान दशा प्रगटावे ॥ कर्ममलीन धोती ॥ ५ ॥ इति ॥

राग गोडी

गोडी गाइयें मनरग ॥ एटेक ॥ एक ध्याने एक ताने ॥ कर केदारो सग ॥१॥ गोडी ॥ यात्रा कीजे अमृत पीजे ॥ नीर वहे जिम गग ॥ रोग शोक भय

क्लेस नासे ॥ आलस नावे अग ॥ २ ॥ गोमी ॥ पोढता प्रभुनाम लीजे ॥ आणी मन उछरग ॥ अ भय तेहने नीद माहे ॥ कदिय न होवे चित्त भग ॥ ३ ॥ गोमी ॥ इति ॥

ठुमरी

सकल मर्म मल क्षय करके मुगत पुर गए गए रे ॥ मु ॥ एटेक ॥ अविनाशी अविकारहे ॥ परमातम शिव धामरे ॥ समाधान सर्वांग अरुपी ॥ मेरेमन रहेरहे रे ॥ १ ॥ स ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुहे ॥ रहे अनादि अनंतरे ॥ वीरप्रभुके आगे गौतम ॥ अमृत पद लहे लहेरे ॥ २ ॥ स ॥ इति ॥

वैरागी पद

कहा कीनो नर भव पाके ॥ रहा मोहमद छाके ॥ टेक ॥ वृद्ध अवस्था आयलगी तव ॥ वेठो बुद्धि गुमाके ॥ क ॥ जुठ बोल धन जोड लीयो हे ॥ जो ले जीवनको समजाके ॥ कुमतीनार सग राच रह्यो हे ॥ सुमती गुनकों नसाके ॥ २ ॥ क ॥ मात तात सुता सुत नारी ॥ इनसे नेह लगाके ॥ ए सब अपने घरकों आवे ॥ तेरी देह जलाके ॥ ३ ॥ क ॥ सतगुरु कहे पर भव सुख करले॥चरनन चित्त लगाके ॥ अब सुनले फिर कोन सुनावे ॥ श्रवनन सुद्ध कराके ॥ ४ ॥ क ॥ इति ॥

राग माढ ताल पंजाबी

अजिहो कहो ज्ञानी, कोठे थाको देश ॥ साची तो कहोने ॥ कोठे ॥ एटेक ॥ जन्म लियो तमहो ज्ञानी, जुरा होता केस ॥ स्याइकी सपेदी आई ॥ अज हु क्यु नहिचेत ॥ १ ॥ कोठे ॥
कोठेका सगाती तुम ॥ इठे आया एक ॥ कठिने जावोला हो ज्ञानी ॥ जमता एका एक ॥२॥ कोठे॥ सुखमे संगाती घणा ॥ दुखमे न एक ॥ व्यथाहिपचो ठो ज्ञानी ॥ नीका कर देख ॥ ३ ॥ को ॥ धर्म तो सगातीसाचो ॥ जुठातो अनेक ॥ अमीचद साहेब ने समरो ॥ राखे थांकीटेक ॥ ४ ॥ को ॥ इति ॥

जजनी पद

जिन रायाना दरिसन पायारे ॥ जलेजले जिन द गुण गाया ॥ तने वदेठे सुरनररायारे ॥ज॥ तुने व व्याथी गुणीमां गणायारे ॥ ज ॥ एटेक ॥ अश्वसेन नृपनंदन राया ॥ वामाराणीना ठो जाया ॥ चितामणीजी प्रजु चिता चूरोने ॥ जवजवनी जावठहरायारे ॥ ज ॥ १ ॥ स्वप्नाना सुखने अजनी ठाया ॥ एवी ससारनी ठे माया ॥ एवो उपदेश ठे साचो तुमारो पण ॥ ठासे जगत जरमाया रे ॥ २ ॥ जले ॥ जिणद वाणी अमीय समाणी ॥ साची जाणे ठे जवि प्राणी ॥ ठास ठासतो जवि ठाडी देजो ने तुमे ॥ माखण लेजो ताणीरे ॥ ३ ॥ जले ॥ धन्य

सफल दिन आज घडिपल ॥ आजनी सुकृत कमा णी ॥ वीर्य उल्लास विनानी जे करणी ते ॥ पाणी मां जेम लीटी तांणीरे ॥ ४ ॥ चले ॥ साचीतो वा णी तेणेज जाणी ॥ जेणें करी ते प्रमाणी ॥ अक्षय ज्ञान मुनी स्पर्श ज्ञानविण ॥ वीजु वधु धुल धाणी रे ॥ ५ ॥ चले ॥ इति ॥

॥ श्रीशांति नाथजी स्तवन ॥

तुज्य नमस्ते स्वामी ॥ शांति जिनंदाजी ॥ दृग देखे परमानंदा, ॥ मुख पुनमचंदाजी ॥ शां ॥ एटे क ॥ जन्मे प्रभु शांति सुधारी ॥ जग मरी निवारी जी ॥ प्रभु शांति नाम हितकारी ॥ मैंने सेवा धारी जी ॥ १ ॥ तुज्य ॥ तुमविना कोन हे मेरा ॥ तु साहेब हेराजी ॥ हरो मिथ्या रोग अंधेरा ॥ हठो भव फेराजी ॥२॥ तुज्य ॥ तुम दीन दयालाजी ॥ शासनके लालाजी ॥ मे सदा जपुं जप माला ॥ घर खेम खयालाजी॥३॥तुज्य ॥ तुम कल्पवृक्ष हित कारी ॥ चिंतामन धारीजी ॥ प्रभु आतम शरण तु मारी॥ द्यो हमे सुधारीजी ॥ अब खुसी तुमारीजी ॥ ॥ ४ ॥ तुज्य ॥ इति ॥

ठुमरी

वीर प्रभुजी तेरी दोस्तिमे ॥ मेरी समता सखी मे रवान भइरे ॥ एटेक ॥ आप न आए बोध पढाए ॥ तेरी सुरत[illegible] भइरे ॥ १ ॥ वीर ॥

नायक एहि अरज हे ॥ दीजे दरस वली वेर नइ रे ॥ २ ॥ वीर ॥ आशा दासकी पुरन कीजे ॥ चरण शरण लपटाय रहरे ॥ ३ ॥ वीर ॥

॥ समेत शिखरथी स्तवन ॥

तुमतो चले विराजोजी ॥ सांवरिया महाराज शिखरपर चले विराजोजी ॥ तेरे घाटे चोकी लागे॥ यात्री जाण न पावे ॥ हुकुम कियो श्रीपार्श्वजिनेश्वर ॥ वाह पकडलेजावे ॥१॥ तु ॥ उचा नीचा पर्वतसो हे ॥ तले नीलका वासा॥ पेरुपेरु पर सिंह धडुके ॥ जिहा लिया तुम वासा ॥ २ ॥ तु ॥ टुक टुक पर धजाविराजे ॥ झालरका झणकारा ॥ झालरका झण कारासेती ॥ गुजे परवत सारा ॥ तुम ॥३॥ दूरदेस के जात्री आवे ॥ पूजा थान रचावे ॥ अष्ट द्रव्य पूजामे लावे॥मन वछित फलपावे ॥तु॥४॥ सुरनरमुनि जनवंदन आवे ॥ महा परम सुखपावे ॥ चंद खुसाल चरणको सेवक हरख हरख गुणगावे ॥ तुम ॥५॥ इति॥

॥ विरजिनस्तवन ॥

नाथ कैसें जबुको मेरु कपायो ॥ ना ॥ सिद्धा रथ सुत नाम धराया ॥ त्रिसला राणीनो जायो ॥ छप्पन दिशि कुमरी मील आई ॥ सुची कर्म करायो ॥ १ ॥ ना ॥ इंद्र महोत्सव जबतिहा प्रग टयो ॥ मेरु शिखरले ,आयो ॥ इंद्र सिहासन पर ले वेठो ॥ ॥ २ ॥ ना ॥ अब

धि ज्ञानसे तवतिहा देरयो ॥ अंगुठे मेरु चपायो ॥ संशय हरण चरण प्रभुजीके, कलस हजारु ढरायो ॥ ना ॥ ३ ॥ सिद्धारथ घर आयकेरे ॥ मंगल चार गवायो ॥ सुमन अधमकों निजपद दीजे, मन वंछित फल पायो ॥ ४ ॥ इति ॥

समेत शिखर ॥

सांवरिया जैसें वने तेसें तारो ॥ मेरी करणी कछु न विचारो ॥ सा ॥ नागनागनी व्याकुल दोनु ॥ जरत अगनीसे उवारो ॥ उनको राजदियो सुर पुरको ॥ मुजकों क्योंन उधारो ॥ १ ॥ सा ॥ अश्व सेनके नदन कहिये ॥ माता वामा देवी प्यारो ॥ वाल आवस्थामे जोग लियो हे ॥ चार महाव्रत धारो ॥ २ ॥ सां ॥ योग निरोधी दसलख श्रावक ॥ अष्ट करमको पठारो ॥ काया गाल गए सिवपुरकों ॥ लोका लोकनिहारो ॥ ३ ॥ सा ॥ धन्यधनी धन्य भाग हमारो ॥ शिखर समेत जुहारो ॥ मनवचका नमत बुध गगा ॥ चरण कमल वलि हारो ॥

रागणी माढ

मेवाडोरे मली ॥ एराह ॥ प्रभु जीव जीवन आधाररे, तुमने खमारे खमा ॥ एटेक ॥ श्रीसिद्धाचल मंडन साहेव, तु प्रभु आनंद कद ॥ भव्य कमल प्रति वोधन दिनमणि, मुखडु पुनम चद रे ॥ १ ॥ तु ॥ तुज वाणी अमृत करेरे, सागर जेम

गंभीर ॥ दीन दयाल कृपाकर मुजपर, तारक भव जल तीररे ॥२॥ तु ॥ भवभव भटकत शरणेहुं आव्यो, भागो भवनी भीर ॥ मारां तारां सु करो प्रभु, तारक छो वडवीररे ॥ ३ ॥ तुं ॥ मरुदेवीने तारिया प्रभु, तार्या सोये पुत्र ॥ तार्या विना केम चालसे प्रभु, हु पणहुं घर सूत्ररे ॥ ४ ॥ तु ॥ दीना नाथ दयाल दयाकरी, राखो मुजने पास ॥ पुना जैन गायक मण्डलीने ॥ अक्षय ज्ञाननी आशरे ॥ ५ ॥

पद

जगतनी घटना छे अतिन्यारी ॥ एराह ॥ आंगीनी रचना छे बहुसारी ॥ करतां अनुमोदन पुण्यथाय भारी ॥ एटेक ॥ हीरामणि माणक जडेलां, मुख छवी तेज देखी जाय चन्द्रहारी ॥ १ ॥ आं ॥ मस्तक मुकुट कानेछे कुण्डल, झलक झलक तेज पुंज वलिहारी ॥ २ ॥ आं ॥ बांहे बाजुबंध हार गलामा, मुक्ताफलना वदेछे नरनारी ॥ ३ ॥ आं ॥ सर्वांगे प्रभुतेज अनतु, चन्द्रसूर्य कोटी तेज जायहारी ॥४॥ आ ॥ पुना जैनगायन मडलीने दीजे ॥ अक्षय ज्ञानदशा विस्तारी ॥ ५ ॥ आं इति ॥

होरी

॥ सामरो सुख दाई, जाकी छवी वरनी नजाई ॥ सा ॥ एटेक ॥ श्रीअश्वसेन वामा नदनकी, कीर्ति त्रिभुवन छाई ॥ समेत शिखर गिरि मगन प्र-

जुको, देख दरस हरखाई ॥ हृदय मेरो अति उल साई ॥ १ ॥ सा ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगटे, आज आनद वधाई ॥ तिन लोकको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुण्याई, सफल मेरो जन्म कहाई ॥ २ ॥ सा ॥प्रजुके सरस दरस विनुपाए,जव जव जटक्योंमे जाई ॥ अवतो प्रजुके चरण चित्तलाग्यो, वाल कहे गुणगाई, प्रजु सग लगन लगाई ॥३॥ सा ॥ इति ॥

होरी

राग उपर प्रमाणे ॥ सामपे कहियो वीनती मोरी ॥ एटेक ॥ राजुल चड्डानकों वोले, आइ वसंत रीतु होरी, वाणुमें फाग केसीमे खेलु ॥ सव सखियनकी टोरी ॥ प्रिया गए हमको ठोरी ॥ १ ॥ सा॥ सज सिनगार सग लइ सिखरे, अवीर गुलालकी झोरी, अपने पिया सग खेलखेलत हे, केशरको रस घोरी, वाजे झफ ताल टकोरी ॥ २ ॥ ॥ सा ॥ एते कारन वालम घर आवो, खेलुमे रंगभर होरी॥ ए वीनती सुन प्रजुने राजुलकी ॥ दीने सव दुख तोरी ॥ रत्नकहे जइ वरजोरी ॥ ३ ॥ सा ॥ इति ॥

॥ पावा पुर जिन गीत ॥

अखियां मेरी प्रजुजीसे आज लगी ॥ टेर ॥ पावा पुर श्रीवीरजिनेश्वर ॥ देखत दुरगति दुरटली॥ अ ॥ १ ॥ मस्तक मुकुटसोहे मनमोहन ॥ विचविच हीरा मोतिलालजडि ॥ २ ॥ अ ॥ रत्नजडि-

त दोयकुंडलसोहे ॥ ॥ गले विच मोतियन माल-
पेंडी ॥ ३ ॥ अ ॥ हरखचंद के तुम प्रभुसाहेब ॥
चरण न छोडु पल एक घरी अ ॥ इति ॥

॥ पद ॥

जिन राज नाम तेरा ॥ हो राखुरे हमारा घटमे
॥ टेक ॥ जाके प्रभाव मेरा॥अज्ञानका अंधेरा ॥ भा
गा भया उजेरा ॥ १ ॥ रा ॥ सुरत तेरी रागें ॥ दे-
ख्या विभाव त्यागे ॥ अध्यात्म रूप जागे ॥२॥ रा ॥
मुद्रा प्रमोद कारी ॥ रूपभेस ज्यु तिहारी ॥ लाग
त मोहे प्यारी ॥३॥ रा ॥ त्रैलोकनाथ तुमही ॥ ह-
महें अनाथ गुनही ॥ करिये सनाथ अबहि ॥४॥
रा ॥ प्रभुजी तिहारी सांखे ॥ जिन हर्ष सुरी भा-
षे ॥ दिल माहिं येहि राखेहो ॥ ५ ॥ इति ॥

पीलु बरवा

अबतो उंधार्यो मोहे चहिये ॥ जिनंदराय, राखुं
भरोसो मे प्रभुके चरणको ॥ एटेक ॥सुनो श्रीश्रेयां
सनाथ ॥ साचो शिव पुर साथ ॥विरुद तुमारो प्रभु
तारन तरनको ॥ १ ॥ अ॥ सिंह पुरी जन्म ठाम ॥
पिता विष्णुसेन नाम ॥ विष्णुराणी कुखे जायो ॥
कंचन वरनको ॥ २ ॥ अ ॥ वरस चोरासी लाख ॥
आयुष्य परम भाख ॥ लछन चरन
रनको ॥ ३ ॥ अ ॥ हुतोहु अनाथ
नाथ प्रभु ॥ तुमविना और मेरे

॥ ४ ॥ रा ॥ प्रभुके चरणारविंद पुजत हरषचंद ॥ काटिये करम दु खमेटिये मरनको ॥ ५ ॥ अ ॥ इति

पद

गुण अनंत अपार प्रभुतेरे ॥ गु ॥ टेक ॥ सहस र सना करत सुरगुरु ॥ तोउ न पायोपार ॥ १ ॥ प्र ॥ कोन अंबर गिने तारा ॥ मेरु गिरको भार ॥ चरम सागर लहर माला ॥ करत कोन विचार ॥ २ ॥ प्र ॥ भक्ति गुण लवलेस भाखें ॥ सुविधिजिन सुखकार ॥ समय सुदर कहत हमको॥स्वामी तुम आधार ॥प्र०॥

राग कल्याण

माइ मेरो मन तेरो नंद हरें ॥ एटेक ॥ कंचन वरण कमल दल लोचन ॥ निरखत नयन ठरे ॥१॥ पचवरण मनहरण धरनपर, ठम ठम पांव धरे ॥रत-न जडित कचन घुघरियां ॥रुण झुणकार करे ॥२॥ मा ॥ हलत लसत मुगता फल माला ॥ पीत वसन उपरे ॥ मानु चलिहे मान शिखरते ॥ गगप्रवाह खिरे ॥ ३ ॥ मा ॥ धन त्रिसलादे भाग्य तिहारो ॥ लुतिहुं भवन शिरे ॥ तीन भवनको नायक तेरे ॥ आंगनमे विचरे ॥ ४ ॥ मा ॥ श्रीवर्द्धमान जिनंकी मूरत ॥ विनु देखे न सरे ॥ हरखचद प्रभु वदन विलोकत ॥ सवहि काजसरे ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी

इंद्रानी सब ठमक ठमक जन्म महोत्सव आवे ॥

घनननननन घनननननन, घटा सुघोखा वाजे ॥एटेक॥ ॥गान तान नाच रग॥इद्रासन थाय ॥ धन्य धन्य आजको दिवस, प्रभुजीको दरिसन पाय ॥ इ ॥ १॥ वीर काया लघु देखी ॥ इद्र मन अकलाय ॥ अवधि देखी वीर मेरु अगुठे दबाय ॥२॥ इ ॥ जन्म महोत्सव जिनको करी, इद्र देव लोक जाय ॥ दास नर प्रभु तणा, हरसेन गुन गाय ॥३॥ इंद्र॥ इति

॥ राग सोरठ ॥

॥ कहु कहालोवारु नणदलवीर ॥ क० ॥ मिथ्या गणकि पूजीपाइ, वनगए जनम फकीर ॥ क० ॥१॥ गईय गई सो नलीय रहीसो, धर धर मनको धीर॥ कहांलो धीर धरु धीरज धर,विरह जनमवहीर॥ क० ॥२॥ नालनाल विदी नही नावे,आभुषण नही वीर ॥ ग्यानसार वालो आयमिलै घर,तोन रहै कोई पीर॥

॥ राग पुन ॥

॥ होजी आली जानै मानै थारी
वहिला वेग पधारो ॥ ह
किस्थिति, कोकम
१ ॥ के ते दिन चि
ठे ॥ २ ॥
तो घरको धणी ठै,
प्रीत अतरको

॥ राग भैरु ॥

॥ कृपन जिणंद आणद कदकदा, याहीते चरण सेवे कोट सुर इंदा ॥ कृ० ॥१॥ मरुदेवा नाजि नद, अनुभवचकोर चद ॥ आपरूपकोस्वरूप, कोटज्यु दिणदा ॥ कृ० ॥ २ ॥ शिवशक्ती न चाहु चाहु न गोविदा ॥ ग्यानसार भक्तिचाहु, मे हुं तेरा वदा ॥

आयो हलकारो गोपी मदको अे राह

प्रभु नेम कुमरजी आप वीराजो गीरनारमे एटेक। गीरनारी गीरवररे उपर उची टुकां शात ॥ शातो टुके चरण पादुका मे वंदु दिनरातरे प्रभु नेमकुमरजी ॥ १ ॥ शंख लंछन दश धनुपरीकाया आयु वरस हजार॥ श्याम वरण शीवादेवी नंदन, वदो वार हजाररे॥प्रभु नेमकुरजी ॥ २ ॥ काती वद बारश चवी आयो सौरी नयरी मजार ॥ श्रावण सुद पचमि दिन जनम्या वरत्यो जयजय कार रे॥प्रभु नेमकु ॥ ३ ॥ शहशावन जइ शयम लीनो ठांडी राजुलनार ॥ श्रावणवद षष्टी दीन दीक्षा प्रभुजी बालकुमाररे प्रभु नेमकुमरजी ॥ ४ ॥ चोपन दीन छदमस्थ रहीने आशो वद्य अमाश ॥ वेरुश वृक्ष तले प्रभु पायो केवल ज्ञान प्रकाशरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी ॥ ५ ॥ सुदी आषाढ अष्टमी रुडी, शलेखन एकमास ॥ पदमाशन प्रभु मोक्ष पधारे अविनाशी आवासरे ॥ प्रभु नेमकुरजी ॥ ६ ॥ कल्याणक पांचो इम

थुणतां पामो अक्षय ज्ञान ॥ वालमित्रकी अरजी इणवीध प्रभुको शरण प्रधांनरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी ॥

पद

किसविध किये कर्म चकचूर ॥ उतम क्षमापे अचंभो मने आवे ॥कि॥ एक तो प्रभु तुम परम दयालु रोसन तिलतुष मात्र हजूर ॥ दुजे जीव दयाके सागर॥ तीजे संतोषी भरपुर ॥ उ ॥ १ ॥ चोथे प्रभुतुमही तत्वपदेशी ॥ तारन तरन जगत मसहुर ॥ कोमल वचन सरन सत वक्ता ॥ निर्लोभी संजम तपसूर॥२॥ केसे मोह मल्लतुमजीत्यो ॥ अंतराय केसेकियो निरमूल ॥ केसेज्ञाना वरण निवार्यो ॥ केसे कियेंचा रोघातिया दूर ॥३ ॥ त्यागी वैरागी हो तुमसाहेब ॥ अकिंचनव्रत धारकभूर ॥ सुरनर मुनी सेवेचर्नतुमारे तोभीनहि प्रभुजीकेगरुर ॥ ४ ॥ करत आसअरदास नेनसुख ॥ दीजेअब मोहेदान जरुर ॥ जन्मजन्म पद पकज सेवु ॥ ओरन कबुचित चाहेहजूर ॥ ५ ॥

॥ इति चतुर्थ परिछेद समाप्त ॥

॥ अथ पंचम परिछेद प्रारभ्यते ॥

॥ अथ श्री सीताजीनी सद्याय प्रारंभ ॥

॥ जनक सुता हु नाम धरावुं, राम छे अंतरजामी ॥ पालव मारो मेलने पापी, कुलने लागे छे खामी ॥ अकशो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ० ॥ महारो नाहलीउं हुहवाय ॥ अ० ॥ मने संग केनो न सुहाय ॥ अ० ॥ माहारु मन माहेथी अकुलाय ॥ अ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठाम तजे जो, पछर पकज ऊगे ॥ जो जलधि मर्यादा मूके, पांगलो अवर पूगे ॥ अ० ॥ २ ॥ तो पण तुं सांभल रेरावण, निश्चय शील न खंडु ॥ प्राण अमारो परलोक जाये, तो पण सत्य न छडु ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ कुण मणिधरनी मणि लेवाने, हैडे घाले हाम ॥ सती सघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ परदारानो सग करीने, आखर कोण उगरियो ॥ उडु तो तु जोवे आलोची, सही तुज दाहामो फरियो ॥ अ० ॥ ५ ॥ जनकसुता हु जग सहु जाणे, नामकल छे जाई ॥ दशरथ नंदन शिर छे स्वामी, लखमण करशे लडाई ॥ अ० ॥ ६॥ हुं धणीयाती पीउ गुणराती, हाथ छे महारे छाती ॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलु, का कुलें वाये छे काती ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन कहे धन्य ए अव

ला, सीता जेहनु नाम ॥ सतीयो मांहे शिरोमणि कहीये, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ वणकारानी सद्याय ॥

॥ नरभव नयर सोहामणु ॥ वणकारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायक रे ॥ सत्तावन सवर तणी ॥ व० ॥ पोठी भरजे उदार ॥ १ ॥ ॥ अ० ॥ शुभ परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मूल ॥ अ० ॥ मोक्ष नगर जावा भणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥१॥ क्रोध दावानल उलवे ॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ उलघजे हलवे करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंश जाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम ॥ अ० ॥ खाली मनोरथ भट तणी ॥ व० ॥ पूरणनु नही काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटा ॥ व० ॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ०॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हणजे शिरछाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ इम सवि विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहोंचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥ खय उपशम जे भावना ॥ व० ॥ पोठी भरया गुण राश ॥ अ० ॥६॥ खायिकभावें ते थशे ॥ व० ॥ लाभ होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणज जे एम करे ॥ व० ॥ पद्म नमे वारवार ॥अ०॥७॥ इति ॥ वणकारानी सद्याय॥

॥ अथ सोदागरनी सद्याय ॥

॥ लावो लोवोने राज, मोघां मुलनां मोती ॥

॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर वे, दिलकी वात हमेरी ॥ तें सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मोस म आये माल सवाया, रतनपुरीमां गया ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ तिनु दलालकु हर समजाया, जिनसें वहोत न फाया ॥ पांचु दीवानु पाऊ जमाया, एककु चो की विठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल वि हरणां, चुआ कटे न युं धरना ॥ दोनु दगावाजी डुर करनां, दीपकी ज्योंतसें फिरना ॥ सु० ॥ ३ ॥ औरदिन वली मेहेलमें रहना, वदरकु न हलानां ॥ दश सेरसें दोस्तिहि करना, उनसें चित्त मिलाना ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ जनहर तजनां, जिनवर भजनां, स जना जिनकुं दलाइ ॥ नवसरहार गलेमें रखना, ज खनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुकुट चमर ढोलाइ, अम घर रग वधाई ॥ श्रीशुभवीर विजय घर जाइ, होत सतावी सगाइ ॥सु० ॥६॥ ॥ अथ श्री आपस्वभावनी सद्याय ॥

॥ आप स्वभावमां रे, अवधु सदा मगनमे रहे नां ॥ जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा कोइ नही तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा है सो तेरी पासे,

अवर सवे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तु अविनाशी, अव हे इनकुं विलासी ॥ वपु सग जव दूर निकासी, तव तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दु खका दीसा ॥ ॥ जव तुम उनकु दूर करीसा, तव तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग जन पासा ॥ ते काटनकु करो अभ्यासा, ल हो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कवहींक काजी कवहींक पाजी, कवहीक हुआ अपभ्राजी ॥ कवहींक जगमें कीर्त्ति गाजी, सव पुद्गलकी वाजी ॥ आ० ॥ ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ध्यान ज्ञान मनोहारी ॥ कर्म कलंककु दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥७॥ इति आपस्वभाव सज्झाय ॥

॥ अथ श्री सहजानदीनी सज्झाय ॥
वीजी अशरण भावना ॥ ए देशी ॥

॥ सहजानदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चित रे ॥ मोह तणा रणीया भमे, जाग जाग मतिवंत रे, लूटे जगतना जत रे, नाखी वाक अत्यत रे, नरका वास ठवत रे, कोइ विरला उगरत रे ॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष परिणति भजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कुसुम परें जीवको, फोगट जनम गमाय रे, माथे भय जम राय रे, श्योमन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥

॥ स० ॥ २ ॥ रावण सरीखा रे राजवी, नागा चा ल्या विण धाग रे ॥ दश माथा रण रूवड्यां, चांच दीए शिर काग रे, देव गया सवि जागरे, न रह्यो माननो ठागरे, हरि हाथें हरिनाग रे, जोजो भाइ ना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चाल्या केइ चालशे, केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नित्य प्रत्ये, जोतां लग्न हजार रे, देश विदेश साधार रे, ते नर इणें संसार रे, जातां जम दरबार रे, न जुवे वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायणपुरी द्वारिकां, व लती मेली निराश रे ॥ रोता रणमा ते एकला, ना ठा देव आकाश रे, किहा तरु छाया आवास रे, ज ल जल करी गयो सास रे, वल जड सरोवर पास रे, सुणी पांडव शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥ गाजी गाजीने बोलता, करता हुकम हेरान रे ॥ पोढ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे, जेवु पीपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥ वालेसर विना एक घडी, नवि सहातु लगार रे ॥ ते विना जनमारो वही गयो, नही कागल समाचार रे, नहीं कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीयो परिवार रे, माता मरुदेवी सार रे, पहोता मोक्ष मोझार रे ॥ स०॥ ७ ॥ माता पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंठे विष

य गमार रे, जुवो सूरिकांता जे नार रे, विष देती भरतार रे, नृप जिनधर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ हसी हसी देती रे ताली यो, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर अते माटी थया, लोक चणे घर वारर्रे, घरुता पात्र कुभार रे, एहवु जाणी असार रे, छोडे विषय विकार रे, धन्य तेहतो अवतार रे ॥ स० ॥ ए ॥ थावच्चासुत शिव वख्या, वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली मोह जजा लरे, घर रमे केवल वाल रे, धन्य करकडु भूपाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री शुभविजय सुगुरु लही, धर्म रयण धरी छेक रे ॥ वीर वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर भेक रे धारता धर्म नी टेक रे, भवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥ इति सहजानदी सद्याय ॥

॥ अथ साभल सयणानी सद्याय ॥

॥ लाभल सयणा साची सुणावु, पूरवपूण्ये तु पाम्यो रे भाइ ॥ नरक निगोदमा भमता नरभव, तें नि फल केम वाम्यो रे भाइ ॥ सा० ॥ १ ॥ जैनधर्म जयवंतो जगमा, धारी धर्म न साध्यो रे भाइ ॥ मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दभ घरमा वाध्यो रे भाइ ॥ सा० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कूहाडे कापी, धतुरो घेर धारे रे भाइ ॥ चितामणि चितित पूरण ते, का

ग उमाडण डारे रें भाइ ॥ सां ॥ ३ ॥ इम जाणी जावा नवि दीजे, नर नारी नरभवनें रे भाइ ॥ उं लखी शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मनने रे भाइ ॥ सा० ॥ ४ ॥ जे विभाव परभावमा भजीयें, रमण स्वभावमां करीये रे भाइ ॥ उत्तम पदपद्मने अवलवी, भवियण भवजल तरीये रे भाइ ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ इति श्रीआतम हित सद्याय ॥

॥ अथ रात्रिभोजननी सद्याय प्रारभ ॥

॥ पुण्य संजोगे नरभव लाधो, साधो आतम काज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, इम भांखे जिनराज रे प्राणी ॥ रात्रिभोजन वारो ॥ १ ॥ आगम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ए आंकणी ॥ अभक्ष्य वावी शमां रयणीभोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणे कारण रातें मत जमजो, जो हुवे हडडे शान रे ॥ ॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुधने भोजन, एटला रातें न कीजे ॥ ए करवा सूरजनी साखें, नितिवच न समजीजें रे ॥प्रा०॥३॥ उत्तम पशु पखी पण रातें, टाले भोजन टाणो ॥ तुमे तो मानवी नाम धरावो, केम सतोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू कीडी कोली आवको, भोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ ठनुं भव जीवहत्या करता, पातक जेह उपा

थु ॥ एक तलाव फोडंता तेटलु, दूषण सुगुरु बतायु रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर भव सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर भव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ ॥ एक शो ने चुम्मालीश भव लगे, कुवणिजना जे दोष ॥ कडु एक कलक दियता, तेहवो पापनो पोष रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एक शो एकावन भव लगे दीधां, कूडा कलक अपार ॥ एक वार शील खंड्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ एकशो नवाणु भव लगे खड्यां, शीयल विषय सबध ॥ एके रात्रि भोजनें तेहवो, कर्म निकाचित बध रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १० ॥ रात्रिभोजनमा दोष घणा छे, श्यो कहियें विस्तार ॥ केवली केंहता पार न पावे, पूरव कोडी मझार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रातें नित्य चोविहार करीने, शुभ परिणाम धरीजे ॥ मासें मासें पासखमणनो, लाभ छणे विध लीजे रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाले नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीने होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति रात्रिभोजननी सद्याय ॥

॥ अथ जोबन अस्थिरनी सद्याय ॥

॥ राग प्रभाति ॥

जोवनीयानी मोजा फोजा, जाय नगारां देती रे ॥ धमि धमि धमियाला वाजे, तोय न जागे तेथी

रे ॥ १ ॥ जो ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे ॥ आवी अवधे उशके नहीं, लखपतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माले वेठा मोज करे छे, खातें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सेंती रे ॥ ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने शरणें जाउं, जोरालो को न जेथी रे ॥ दुनीयामा दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ॥ ४ ॥ दत पड्याने कोसो थयो, काज सखुं नहीं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहीयें वातो केती रे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ अथ निदावारक सद्याय ॥

॥ निदा म करजो कोइ पारकी रे, निदानां बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय वाप रे ॥ निदा ॥ १ ॥ दूर वलती कां देखो तुम्हे रे, पगमां वलती जुवो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोया लूगडा रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप सचालो सहुको आपणो रे, निदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु भर्या रे, केहना नलिया चुए केहेना नेव रे ॥ नि० ॥३॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधु सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छुटकवारो थाय रे ॥ नि० ॥ ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो

एक विचार रे ॥ कृष्णपरे सुख पामशो रे, समयसु दर सुखकार रे नि० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहा मणी ॥ प्रीत न कीजे रे, परनारी तणी ॥ उथलो ॥ परनारी साथे प्रीत पिउडा, कहो किण परे कीजी यें ॥ उघ वेची आपणी, उजागरो केम लीजीये ॥ काठडीतुटो कहे लंपट, लोकमाहे लाजीये ॥ कुल विषय खपण रखे लागे, सगामां केम गाजीये ॥ १ ॥ चाल ॥ प्रीति करता रे, पहेलां वीहीजीये ॥ रखे कोइ जाणे रे मनशु धुजीयें ॥ उ० ॥ धुजीयें मनशु फुरीयें पण, जोग मलवो छे नहीं ॥ रात दिन विल पत जाये, अवटाइ मरवु सही, ॥ निज नारीथी सतोष न वल्यो, परनारीथी कहो शु हशे ॥ जो न थें जाणे तृप्ति न वली तो, एठ चाटे शु हशे ॥ २ ॥ मृग तृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टले ॥ वेलु पील्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उ० ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश माखणनो वली ॥ बुडता वाचक नयां पाणी ते, तस्या वात नसांभली ॥ तेम नार रमतां पर तणी सतोष न वल्यो एक घडी ॥ चित्त चट पटी उचाट लागे, नयणें नावे निद्रडी ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे रग पतगनो ॥ तेवो चटको रे, परस्त्रीसग नो ॥ उ० ॥ परनारी साथें प्रेम पिउ

का, रखे तु जाणे खरो ॥ दिन चार रग सुरंग रू डो, पछी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथे नेह मांडे ठाम तेहशुं प्रीतकी ॥ एम जाणी म म कर नाहला, परनारि साथे प्रीतकी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे पति वाहालो रे, वचे पापिणी ॥ परशु प्रेमेंरे राचे सापिणी ॥ उ० ॥ सापिणी सरखी वयण निरखी, रखे शीयलथकी चले ॥ आंखने मटके अग लटके, देव दानवने छले ॥ ए मांहे काली अति रसाली, वाणी मीठी शेलकी ॥ साजली रे जोला रखे भूले जाणजे विष वेलकी ॥ ५ ॥ चाल ॥ सग निवारो रे, पररामा तणो ॥ शोक न कीजे रे, मन मिलवा तणो ॥ उ० ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवु पण दोहि लु ॥ क्षण मेलियें क्षण सेरीये, ममता न लागे सो हिलुं ॥ उश्वासने नि श्वास आवे, अग भाजे मन भमे ॥ वली कामिनी देखी देह दाझे, अन्न दीठुं नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलाले रे, मनशु कल मले ॥ उन्मत्त थइने रे, अलल पलल लवे ॥ ॥ उ० ॥ लवे अलल पलल जाणे, मोहगहिला मन रडे ॥ महा मदन कठिन कारी, मरण वारु त्रेवडे ॥ ए दश आवस्था काम केरी, कत कायानेदहे ॥ एम चित्त जाणी तजेराणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ परनारीनां रे, परीचव सांजलो ॥ कता की जे रे, भाव ते निर्मलो ॥ उ० ॥ निर्मलें भावे नाह

समजों, परवधू रस परिहरो ॥ चांपीउ कीचक जी मसेनें, शिला हेठल सांजलो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक रुड वड्यां ग्रथे कह्यां ॥ तेम मूंजपति हु खपुज पाम्यो, अपजश जग मांहे लह्यां ॥ ८ ॥ ॥ चाल ॥ शीयल सलूणा रे, माणस सोहीये ॥ विण आभरणें रे, जग मन मोहीये ॥ उ० ॥ मोहीये सुर नर करे सेवा, विष अमिय थई संचरे ॥ केसरी सिह शीयाल थाये, अनल तिम शीतल करे ॥ साप थाए फूलमाला, लछी घरे पाणी भरे ॥ परनारी परिहरी, शीयल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ए ॥ चाल ॥ ते माटे हु रे, वालम विनवु ॥ पाए लागीने रे, मधुर वयणे स्तवु ॥ उ० ॥वयण महारु मानीये, परनारीथी रहो वेग ला ॥ अपवाद माथे चढे मोटा, नरकें थइये दोहि ला ॥ धन्य धन्य ते नर नारि जे दृढ, शीयल पाले कुल तिलो, ते पामशे यश जगतमाहि, कुमुद चद सम ऊजलो ॥ १ ॥

॥ अथ नारी शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखामण खरी ॥ स मजी लेजो रे, सघली सुदरी ॥ उ० ॥ सुंदरी सहे जें हृदह हेजें, पर सेजें नवि वेसीये ॥ चित्तथकी चूकी लाज मूकी, परमदिर नवि पेसीयें ॥ वहु घेर हींडी, नार निर्लज, शास्त्रे पण, तजवी कही ॥ जेम

प्रेत दृष्टें, पड्यु भोजन, जमवु ते, जुग तु नहीं ॥ १ ॥ चाल ॥ परशु प्रेमे रे, हसीय न बोलीयें ॥ दा त देखाडी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ उ० ॥ गुह्य घरनु, परनी आगे, कहोने केम प्रकाशीये ॥ वली वात जे, विपरीत भाखे तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा, अने अगोचर, एकला नवि, जाइयें ॥ सहसात्कारे, काम करतां, सहेजे शील गमावीये ॥ २ ॥ चाल ॥ नट विट नरशु रे नयण न जोडीये ॥ मारग जाता रे, आघुं उंढीये ॥ उ० ॥ आघु ते उंढी, वात करता, घणुज रूडा, शोभीयें ॥ सासू अने, माना जण्या विण, पलक पास न, थोभीये ॥ सुख दुःख सरज्यु, पामीयें पण, कुलाचार, न मूकीयें ॥ परवश वसता, प्राण तजतां, शीयलथी, नवि चूकीये ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथे रे, वात न कीजीये ॥परनर हाथेरे, ताली न लीजीये ॥उ॥ ताली न लीजे, नजर न दीजें चचल चाल न चालिये ॥एक विषयबुद्धें, वस्तु केहनी हाथे पण नवि झालिये ॥ कोटी कदर्प,रूप सुदर,पुरुष पेखीन मोहिये ॥ तणखला तोले गणिय तेहने, फरिय सामुं न जोइयें ॥४॥ चाल ॥ पुरुष पीयारो रे, वलि न व खाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीये ॥ उ०॥ जाणीयें पीयु विण, पुरुष सघला, सहोदर,समो वडे ॥ पतिव्रतानो, धर्म जोता, नावे कोइ तडोवडे॥कुरूप कुष्टी कूबडोने दुष्ट दुर्बल निर्गुणो ॥ भरतार पामी,

भामिनी ते इंद्रथी अधिको गणो ॥ चाल ॥ अमर कुमारे रे,तजी सुर सुदरी ॥ पवनंजये रे, अजनापरि हरी ॥उ०॥ परिहरी रामेवनमां सीता,नले दमयति वली ॥ महा सती माथे, कष्ट पड्यां पण शीयलथी ते,नवि चली ॥ कसोटीनी परे,कसीअ जोतां कंतशु विहडे नही ॥ तन मन्न वचने, शीयल राखे, सती ते जाणो सही ॥ ६॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीये ॥ व्याकुल थइने रे मन न वगाडीये ॥ ॥ उ० ॥ मन न वगाडीये, पर पुरुषनु, जोग जोता, नवि मले ॥ कलक माथे, चढे कूडा सगा सहु, दूरे टले ॥ अणसरज्यो, उच्चाट, थाये, प्राण तिहा, लागी रहे ॥ इह लोक पामे आपदा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधु रे, अने इजत खोइ ॥ उ० ॥ इजत खोइ देख अन्नया, शेठ सुदर्शन, नवि चल्यो ॥ भरतार आगल, पडी जोठी, अपवाद सघले, उछल्यो ॥ कामिनी देखी, कामनी बुद्धे, वकचूल, वाह्यो घणु ॥ पणशीयलथी, चुकी नहीं, दृष्टांत एम, केतां भणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीयल प्रभावे रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिभुवनमांहे रे, जेह थई छती ॥ उ०॥ सती थईने, शीयल राख्यु, कल्पना, कीधी नहीं ॥ नाम तेहना, जगत् जाणे विश्वमा ऊगी रही ॥ विविध रत्ने, जटित भूषण, रूपसदरि, किन्नरी ॥ एक

शियल विण शोभे नही ते सत्य गणजो सुंदरी ॥ण॥ चाल ॥ शीयल प्रभावे रे, सुर सेवा करे ॥ नव वा रेंरे जेह निर्मल धरे ॥ धरें निर्मल, शीयल उज्वल, तास कीर्त्ति फलहले ॥ मनकामना, सवि सिद्धि पामे, अष्ट भय, दुरे टले ॥ धन्य धन्य ते, जाणो धरा, जे शीयल चोखु, आदरे, ॥ आनदना ते, उंध पामे उदय महा जस, विस्तरे ॥ १० ॥ इति नारीने

॥ अथ धोवीकानी सद्यय ॥

॥ धोवीका तुं धोजे मननु धोतीयु रे, रखे राख तो मेल लगार रे ॥ एणेंमेले जग मेलो कर्यो रे, विण धोयु न राखे लगार रे ॥ धो० ॥१॥ जिनशासन सरो वर सोहामणु रे, सम कित तणी रूडी पाल रे ॥ दानादिक चार वारणां रे, माहि नव तत्व कमल विशाल रे ॥ धो० ॥२॥ तिहा झीले मुनीवर हसला रे, पी ये छे तप जप नीर रे॥शम दम आदि जे शील रे, तिहा खाले आपणु चीर रे॥धो०॥३॥तपवजे तप तडके करी रे,जालवजे नव तत्व वाम रे॥ठांटा उकाडे रखे पाप अटारना रे,एम उजलु होशे ततकाल रे॥ धो० ॥४॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे,रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चे प वित्रपणु राखजे रे, पछे आपण नीमी सचाल रे ॥ धो०॥५॥ रखे मूकतो मन मोकलु रे॥चल मेलीनें सकेल रे॥ समयसुदरनी शीखडी रे, सुखडी अमृत वेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री भरतचक्रीनी सद्याय ॥

॥ मनहीमे वैरागी भरतजी, मनहीमे वैरागी ॥ सहस्स बत्रीश मुकुट बध राजा, सेवा करे वडवागी ॥ चोशठ सहस्स अतेउरी जाके, तोहि न हुवा अनुरागी ॥ भ० ॥ १ लाख चोराशी तुरगम जाके, छन्नु कोम हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सो हिये, सुरता धर्मशु लागी ॥ भ० ॥ २ ॥ चार करो ड मण अन्नज उपडे, लूण दश लाख मण लागे ॥ तीन कोम गोकुल हुजे,एक कोम हल सागी ॥भ०॥ ॥ ३ ॥ सहस्स बत्रीश देश वमभागी, भये सरवके त्यागी ॥ छन्नु कोम गामके अधिपति ॥ तोहे न हुआ सरागी ॥ भ० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगडा वा जे, मन चिता सव भागी ॥ कनक कीरत मुनिवर वदत हे, देजो मुक्ति मे मागी ॥ भ० ॥

चेत चतुरनर निज मनमाहि॥क्षण क्षण आयुष जायजी कांइ निचित थइने सुतो,नरभव ए ले जाय जी॥१॥चे॥काम क्रोध तृष्णारसें रातो,तेणें न जाण्यु, काय जी॥लागे घरे किम कूप खणासेसाझे न बांधि पालजी॥२॥चे॥आयु अ स्थिर जिम जल पपोटो मर ण तें आवे निदानजी ॥ राय रक केहने नवि बोडे, पडित जाण अजाणजी ॥३॥चे॥पुण्य पाप दोय साथे आवे, अवर न आवे कोयजी ॥ कहे नारायण धर्म करो जिम,आवागमण न होयजी ॥४॥चे॥ इति॥

॥ अथ श्री बाहुबलजीनी सद्याय ॥

॥ वहेनी बोले हो बाहुबल साजलो जी ॥ रूडा रूडा रगनिधान ॥ गयवर चढिया हो, केवल केम हुवे जी ॥ जाण्यु जाण्यु पुरुष प्रधान ॥ व० ॥ १ ॥ तुज सम उपशम जगमां कुण गणेजी, अकल निरंजन देव ॥ भाइ भरतेसर वाहाला विनवे जी, तुझ करे सुर नर सेव ॥ व० ॥ २ ॥ भर वरसालो हो वनमा वेठीछं जी, जिहां घणा पाणीना पूर ॥ झर मर वरसे हो, मेहुलो घणु जी, प्रगट्या पुण्य अकूर ॥ व० ॥ ३ ॥ चिहु दिशि वींट्यो हो वेलडीये घणुं जी, जेम वादल छायो सूर ॥ श्री आदिनाथे हो, अमने मोकल्या जी ॥ तुम प्रतिबोधन नूर ॥ व० ॥ ॥ ४ ॥ वर संवेगरसे हो, मुनि भल्या जी ॥ पाम्यु पाम्यु केवल नाण ॥ माणकमुनि जस नामे हो, हरख्यो घणु जी ॥ दिन दिन चढते रे, वान ॥ व० ॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री ढढण झषिजीनी सद्याय ॥

॥ ढढण झषिजीने वदणा ॥ हु वारी लाल ॥ उत्कृष्टो अणगार रे ॥ हु वारी लाल ॥ अभिग्रह लीधो आकरो ॥ हुं वारी० ॥ लब्धे लेशुं आहार रे ॥ हु वारी लाल ढ० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी ॥ हु० ॥ न मले शुद्ध आहार रे हुं० ॥ न लीये मूल असूझतो ॥ [illegible] जर हुवो गात रे ॥ हुं० ॥

ढ० ॥ २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस्स अढार रे ॥ हु० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥ ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ३ ॥ ढढण अधिको दाखीयो ॥ हु० ॥ श्रीमुख नेम जिणद रे ॥ हु० ॥ कृष्ण उमाह्यो यादवा ॥ हु० ॥ धन्य जादवकुल चंद रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ४ ॥ गलीआ रे मुनिवर मल्या हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हु० ॥ किणही मीथ्यात्वी देखिने ॥ हु० ॥ आव्यो भाव विशेष रे ॥ हु ॥ ढ० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधुजी ॥ हु० दयो मोदक छे शुद्ध रे ॥ हु० ॥ रिषीजी लइ आवीया ॥ हु० ॥ प्रभुजी पास विशुद्ध रे ॥ ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ६ ॥ मुज लब्धे मोदक मिल्या ॥ ॥ हु० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ लब्धि नहिं वत्स ताहरी ॥ हु० ॥ श्रीपति लब्धि निहाल रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं ॥ हु० ॥ चाल्यो परठण काज रे ॥ हु० ॥ इट निंभाडे जाइने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ८॥ आवी सूधी भावना ॥ हु० ॥ पाम्यो केवल नाण रे ॥ हु० ॥ ढढण ऋषि मुगते गया हु० ॥ कहे जिन हर्ष सुजाण रे ॥ हु० ॥ ढ० ॥ ९ ॥ इति ढढण ऋषिनी सद्याय ॥

॥ अथ श्री अइमंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अइमता मुनिवरजूके, करणीकी वलि हा

री वे ॥ खट वर्षनके सजम लीनो, वीरवचन चित्त धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्रीदेवी नद न, कोलासपुर अवतारी वे ॥ अग अग्यार पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥ ॥ २ ॥ तपगुण रयण सवत्सर आदिक, करकें काय उद्धारीवे ॥ प्रभु आदेशें विपुलाचल परि, करी अ णसण अति भारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलक निवारी वे ॥ अढा र अमताले तिहि गिरि उपर, कीनी थापना सारी वे ॥श्री०॥४॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसाये, सुवि चारी वे ॥ शिष्य क्षमाकल्याण हरख धर,गावे आति जयकारी वे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री करकडू प्रत्येक बुधजीनी सद्या ॥

॥ चपा नगरी अति भली ॥ हु वारी लाल ॥ दधिवाहन भूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कूखे उपनो ॥ हु० ॥ कर्मे कीधो चकाल रे ॥ हु०॥ ॥१॥ करकडुने करु वंदणा ॥ हु० ॥ पहिला प्रत्येक बुध रे ॥ हुं० ॥ गिरुवाना गुण गावता ॥ हुं० ॥ स मकित थाये शुद्ध रे ॥ हु० ॥ २ ॥ लाधी वाशनी लाकडी ॥ हुं० ॥ थयो कचनपुर राय रे ॥ हु० ॥ वापसु सग्राम मांडीउं ॥ हु० ॥ साधवी लीउं सम जाय रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ वृषभ रूप देखी करी ॥ हु० ॥ प्रतिबोध पाम्यो नरेश रे ॥ हु० ॥ उत्तम संजम

आदर्यो ॥ हुं० ॥ देवतादीधो वेश रे ॥ हुं० ॥ ४॥ कर्म खपाय मुगते गया ॥ हुं० ॥ करकंडू ऋषि राय रे ॥ हु० ॥ समयसुंदर कहे साधुने ॥ हु० ॥ प्रणम्या पातक जाय रे ॥ हु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मनोरमा सतीनी सद्याय ॥

॥ मोहनगारी मनोरमा, शेठ सुदर्शन नरीरे ॥ शील प्रभावे शासनसुरी, थइ जस सान्निध्यकारी रे ॥ मो०॥१॥ दधिवाहन नृपनी प्रिया अभया दीए कलक रे कोप्यो चपापति कहे, शूली रोपण वंक रे ॥ मो० ॥ २ ॥ ते निसुणीने मनोरमा, करे काउस्स ग्ग धरी ध्यान रे ॥ दपती शील जो निरमलु, तो वधो शासन मामरे ॥मो०॥३॥ शूली सिंहासन थयुं शासन देवी हजूर रे ॥सजम ग्रही थया केवली, दपती दोय सनूर रे ॥ मो० ॥ ४॥ ज्ञानविमल गुण शीलथी, शासन शोभ चढावे रें सुर नर सवि तस किंकरा, शिव सुंदरी ते पावे रे ॥ मो० ॥५॥ इति॥

॥ अथ क्रोधनी सद्याय ॥

॥ कडवा फल छे क्रोधना, ज्ञानी एम बोले ॥ रीशतणो रस जाणीये, हलाहल तोले ॥ क० ॥ ॥ १ ॥ क्रोधे क्रोड पूरव तणु, सजम फल जाय ॥ क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय ॥क०॥२॥ साधु घणो तपीयो हुतो,धर तो मन वैराग ॥ शिष्य ते क्रोधथकी थयो, चरुकोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥

आग उठे जे घरथकी, ते पहेलु घर बाले ॥ जल नो जोग जो नवि मले, ते पासेंनुं परजाले ॥ क० ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ ॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो निर्मली, उपशम रस नाही ॥ क० ॥ ६ इति क्रोधनी सद्याय ॥

॥ अथ माननी सद्याय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीये, माने विनय न आवे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिना सुख छे शाश्वता, ते केम लहिये जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वडो ससारमा, गुणमा अधिकारी रे ॥ मानें गुण जाये गली, प्राणी, जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कर्युं जो रावणे, तेतो रामे मार्यो रे ॥ दुर्योधन गरवे करी, ते अते सवि हार्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥ शूकां लाकडा सारिखो, दु खदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे माननें, देजो तमे देशवटो रे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ मायानी सद्याय ॥

॥ समकितनु मुल जाणीये जी, सत्य वचन साक्षात ॥ साचामा समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥

ए आकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी, कूड कपट नो रे कोट ॥ जीत्रे तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजे आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशु राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशु वाधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न ठडे मन तणोजी, ए माया नु मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधु माया करी जी, मित्रशुं रारो रे भेद ॥ मल्लि जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांभलो जी, मेलो मायानी बुद्धि ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मारग छे शुद्ध रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ आचारांग सूत्रनी चाय ॥

॥ कोइलो पर्वत धूधलो रेलो ॥ ए देशी ॥

आचारांग पहेलु कह्युं रेलो अग इग्यार मझार रे ॥ चतुरनर ॥ अढार हजार पदे जिहा रेलो, दाख्यो मुनि आचार रे ॥ च० ॥ १ ॥ भावधरीने साभलोरेलो जिम भाजे भव भीति रे ॥ च० ॥ पूजा भक्ति प्रभावना रेलो, साचवियें सवि रीति रे ॥ च० ॥ भाव० ॥ ए आंकणी ॥ दो सुअवध सुहामणा रेलो, अझयणा पणवीस रे ॥ च० ॥ शाश्वता अर्थे इहां कहे रेलो, युक्ति श्रीजगदीश रे ॥ च०॥ भा० ॥ २ ॥ मीठडेवयणें गुरु कह्यु रेलो, मीठडु अ

गज एह रे ॥ च० ॥ मीठडीरीते सांभले रेलो, सु ख लहे मीठडां तेह रे ॥ च० ॥ भा० ॥ ३ ॥ सुर तरु सुरमणि सुरगवी रेलो, सुरघट पूरे काम रे ॥ च० ॥ सांभलवु सिद्धांतनु रेलो, तेहथी अति अ भिराम रे ॥ च० ॥ भा० ॥ ४ ॥ श्रीनयविजयविबु ध तणो रेलो, वाचक जस कहे शीश रे ॥ च० तुम ने पहिला अगनो रेलो, शरण होयो निशदीश रे ॥ च० ॥ भा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥

॥ अथ कलियुगनी सज्झाय ॥

॥ सरसती सामिनी पाय नमीने, उलट मनमां हे आयो ॥ तीरथ नहीं कोइ इण संसारे, तेणे ए कलियुग आयो ॥ देखो वे यारो कूको कलियुग आयो ॥ एआंकणी ॥ बावो कहे मारी नानकी बेटी, दिन दिन मूल्य सवायो ॥ यारो कूको कलियु ग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम भलायो ॥ बोल वध नहि मत्रीने, गोचर खेत्र खे मायो ॥ वे यारो ॥२॥ गुरुने गाल दिये नित चेलो, वेद पुराण पढायो ॥ सासु चूले ने वहु खाटलडे, फुके शरीर जलायो ॥ वे यारो ॥ ३ ॥ एशी वरस नो हींडे होंशे, मूठे हाथ घलाये ॥ पच तणी साखे परणीने, अवला अर्थ गमायो ॥ वे यारो ॥४॥जोगी जंगम ने सन्यासी भांग भखे मदवाहो ॥चोर चाड परधनने खाये, साधु जन सीदायो ॥ वे यारो ॥५॥

निर्धनने वहु वेटा वेटी धनवंत एक न पायो ॥ नीच तणे घर अति घणी लखमी उत्तम जन सीदा यो ॥ वे यारो ॥ ६ ॥ न मले वाप सगाते वेटो, घणेरे मनोर्थे जायो ॥ हाथउपाडे मायने मारे, परणी शु उमाह्यो ॥ वे यारो ॥ ७ ॥ घरमाने घेलो कहे वेटो, आद तणो मद वाह्यो ॥ वहु सूतीने वर हींमोले, सासरे सूवाने धायो ॥ वे यारो ॥ ८ ॥ हलखेडे ब्राह्मण गौ जोत्ति, निर्दय नाक फमायो ॥ मा वापे वेटी वेचीने, वेटाने परणायो ॥ वे यारो ॥ ए ॥ राग तणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे परा यो ॥ कागानी पेरे कलहो मांमी, कुल गुरु नाम धरायो ॥ वे यारो ॥ १० ॥ वेयर वार वरसनीने वेटो, दीठो गोद खेलायो ॥ मांग्यां मेह न वरसे महीयल, लाज धर्यो सनायो ॥ वे यारो ॥ ११ ॥ कूमा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो ॥ पन्नणे प्रीति विमल परमारथ, जीन वचने सुख पायो ॥ वे यारो कूमो ॥ १२ ॥

॥ अथ शियल स्वाध्याय ॥

धन्य धन्य ते दीन माहारो ॥ ए देशी ॥ शियल समुव्रत को नहि, श्री जीनवर भाखे रे ॥ सुख आपे जे शाश्वता, दुर्गति पडता राखेरे ॥शि०॥१॥ व्रत पचरकाण विना जुओ, नव नारद जेहरे ॥ एक ज शियल तणे वले, गया मुकतें तेहरे ॥ शि० ॥

॥ २ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत छे सुखदायीरे शियल विना व्रत जाणजो, कुशका सम जाइरे ॥ ॥ शि० ॥ ३ ॥ तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण लाल कमानरे ॥ शियल विना व्रत एहवु, कहे वीर भगवानरे ॥ शि० ॥ ४ ॥ नव वाडें करी निर्मलु, पहेलु शीलज धरजोरे ॥ उदय रत्न कहे ते पछी, व्रतनो खप करजोरे ॥ शि० ॥ ५ ॥

॥ निद्रमीनी सज्झाय ॥

निद्रमी वेरण हुइ रही, कीम कीजे हो सा पुरुश निदानके, चोर फरे चिहु पासथी, किम सूता हो काइ दिनने रात के ॥ नि० ॥ १ ॥ वीर कहे सूणो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमादके ॥ जरा आवे यौवन गले, किम सूता हो कांइ कवण सवादके ॥ नि० ॥ २ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा निद्रा करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनतो अनत काल तिहारहे, इम वगडे हो, कांइ धरमनो मोदके ॥ नि० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यम राजा हो कांइ सबल करुरके ॥ नीज सेन्या लइ चिहु दिशे, किम जागता हो नर कहिये शूर के ॥ नि० ॥ ४ ॥ जागतडा गजे नहि, छेतराये हो नर सूतो नेटके ॥ सूतारीणी पाग जण्या, किम कीजे हो शा पुरुषनी भेटके ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्री वीरे इम भाखीयु, पखी भारड हो न करे परमाद के, तेह

तणी परें विचारजो, परिहरजो, हो गोयम परमाद के ॥ नि० ॥ ६ ॥ वीर वचन इम सांभली, परिहरीयो हो गोयमे परमाद के, लीला सुख लाधां घणां, धीर रहियो हो जगमा जसवादके, ॥ नि० ॥ ७ ॥ निंद निडमी मत आणजो, सूइ रहेजो हो सावधान के, ध्यान धरम हियें धारजो, इम भाखे हो मुनि कनक निदान के ॥ नि० ॥ ८ ॥

॥ अथ आत्मबोध सद्याय ॥

जीव क्रोध म करजो, लोभ म धरजे, मान मलाइश भाइ ॥ कूडां कर्म म बाधीश, धर्म म चूकीश, विनय म मूकीश ॥ भाइरे जीवडा ॥ दोहिलो मानवभव लाधो, तुमे कांइ करी तत्वने साधो रे भोला ॥ दोहिला० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ घर पडवाडे दे रासर जतां, वीश विमासण थाय ॥ भूख्यो तरस्यो राउल राते, माथे सहेतो घाय रे ॥ जीवधा दोहि० ॥ २ ॥ धर्म तणी पोशाले चाल्या, सूणवा सद्गुरु वाणी ॥ एक वात करे बीजो उठी जाये, नयणे निद भराणीरे ॥ जीव० ॥३॥ नामे बेठो लोभे पेठो, चार पोहोर निशि जाग्यो ॥ वे घडीनु पडि क्रमणु करता,चोखो चित्त न राख्योरे ॥ जीव० ॥ ४ ॥ आठम चउदश पुनम पाखी, पर्व पर्युसण सारो ॥ वे घडीनु पचखाण करता, एक बीजाने वारो रे ॥ रे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ कीर्ति कारण पगरण माडी, अ

रथ गरथ सवि लूटे ॥ पुण्यने काजे पारकु पोतानु, गाठडीए नवि छूटे रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ घर घरणीने घाट घडाव्या, पहेरण आठा वाघा ॥ दश आंगली दश वेढज पहर्या, निर्वाणे जावु छे नागांरे ॥ जीव का० ॥ ७ ॥ वाको अक्षर माथे मीडु, नीलवट आ धो चढो ॥ मुनि लावण्य समय इम बोधे, ए त्रण कालें वंदो ॥ जीवका० ॥ ८ ॥

॥अथ श्री जीनहर्षजीकृत पांचमा आरानो सद्याय॥

॥ वीर कहे गौतम सुणो, पाचमा आरना भाव रे ॥ दुखीया प्राणी अतिघणा, सांभल गौतम सु भावरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ शहेर होशे ते गामडा, गामडां, होशे समशान रे ॥ विण गोवालें रे धण चरे, ज्ञानी नहि निरवाण रे ॥ वी० ॥ २ ॥ मु ज केडे कुमती घणा, होशे ते निरधार रे ॥ जिनम तिनी रुचि नवि गमे, थापशे निजमति सार रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ कुमति ऊडा कदाग्रही, थायशे आप णा बोलरे ॥ शास्त्र मारग सवि मूकशे, करशे जि न मत मोल रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ पाखडी घणा जाग शे, भागशे धरमना पथ रे ॥ आगम मत मरडी करी, करशे नवा वली ग्रथ रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ चाल णीनी परें चालशे, धर्म न जाणे लेशरे आगम शा खाने टालशे, पालशे निज उपदेश रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ चोर चरड बहु लागशे, बोली न पाले बोल रे ॥ सा

धुजन सीदा यशे, दुर्जन वहुला मोल रे ॥वी०॥७॥ राजा प्रजाने पीडशे, हिडशे निरधन लोक रे ॥ मागया न वरसशे मेहुला, मिथ्यात्व होशे वहु थोक रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ संवत् ओगणीश चौदोत्तरें, होशे कलंकी राय रे ॥ माता ब्राह्मणी जाणीये, बाप चमाल कहेवाय रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ ठ्यासी वरषनु आउखु, पाम्लीपुरमां होशे रे, तसु सुत दत्त नामें भलो, श्रावककुल शुभ होपे रे ॥ वी १० ॥ कौतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोय रे ॥ चोथ लेशे भिक्षा तणी, महा आकरा कर होय रे ॥ वी० ॥ ॥ ११ ॥इंद्र अवधिये जोयता, देखशे एह स्वरुप रे ॥ द्विजरुपे आवी करी, हणशे कलंकी भूप रे ॥ ॥ १२ ॥ दत्तने राज्य थापी करी, इंद्र सुर लोकें जय रे ॥ दत्त धरम पाले सदा, भेटशे शेत्रुज गिरिराय रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ पृथ्वी जीन मंडित करी पामशे सुख अपार रे ॥ देव लोके सुख भोगवे, नामे जयजयकार रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ पाचमा आराने छेडुले, चतुर्विध श्रीसघ होशे रे ॥ छठो आरो वेसतां, जीनधर्म पहिलो जाशे रे ॥ वीर० ॥ १५ ॥ वीजे अगनी जायशे, त्रीजे राय न कोय रे ॥ चोथे पोहरे लोपना, छठे आरे ते होय रे ॥ १६ ॥ दोहा ॥ छठे आरे मानवी, विलवासी सवि होय ॥ वीश वरसनु आउख, पटवर्षेगर्भज होय ॥ १७ ॥ सहस चोराशी

वर्षपणे, भोगवशे भवि कर्म ॥ तीर्थंकर होशे भलो, श्रेणिक जीव सुधर्म ॥ १८ तसु गणधर अति सुदरु, कुमार पाल भूपाल ॥ आगम वाणी जोइने, रचीय रयण रसाल ॥ १९ ॥ पाचमा आराना भाव ए, आगमे भाख्या वीर ॥ ग्रथ बोल विचार कह्या, सांभलजो भवि धीर ॥ २० ॥ भणतां समकित सं पजे, सुणतां मंगल माल ॥ जीनहर्षे कही जोड ए, भाख्यां वयण रसाल ॥ २१ ॥ इति ॥

॥अथ अमल वर्जन स्वाध्याय कथ तमाकू परिहरो॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजीनवाणी मन धरी, सद्गुरु दीये उपदेश मेरे लाल ॥ बावीश अभक्ष्यमांहे कह्युं, अमल अ भक्ष्य विशेष ॥ मे० ॥ अमल म खाउं साजना ॥१॥ अमल विगोवे तन ॥ मे०उघ वगासा घेरणी, आवे आखो दिन ॥ मे० ॥ अ० ॥ २ ॥ अमली अमलने सारिखो, आवे आनंद थाय ॥ मे० ॥ उतरतां आ रति घणी, धीरज जीव न धराय ॥ मे० ॥ अ० ॥३॥ आलस ने उजागरो, बेठो ढवका खाय ॥ मे० ॥ अकल नकांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ काला अहिथी उपनु, नामें जे अहि फीण ॥ मे० ॥ सग करे कोण एहनो, पडित लोक प्रवीण ॥ मे० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पहेलु मुख कडवु हु वे; वली घाटो घेराय ॥ मे० ॥ उदर व्यथा नित्य

आकरो, इणथी अवगुण थाये ॥ मे० ॥ अ० ॥६॥ नाक वधाये बोलता, आधु वचन बोलाय ॥ मे० ॥ अमी सुकाये जीभनुं, एहने खाय वलाय ॥ मे० ॥ ७ ॥ दाढीने मूछादिशि, उगे नही अंकूर ॥ मे० ॥ काया काली मिश हुए, गावकी गाले नूर ॥ मे० ॥ अ० ॥ ॥ ८ ॥ पलक अवेरु जो लीए, तो आतम अकुलाय ॥ मे० ॥ नाक चूए नयणां ऊरे, काम करी न शकाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ ए ॥ अधविच मारगमां पडे, जीवन मृत्यु समान ॥ मे० ॥ हाथ पगोनी नस गले, अमली आवी शान ॥ मे० ॥ अ० ॥ १० ॥ आगराइ आठो कह्यो, मालवी मांहे भेल ॥ मे० ॥ आपदशुं सखरुं नही, मिशरीशु मन मेल ॥ मे० ॥ अ० ॥ ११ ॥ नवटाक जे नर जीरवे, तसु अहि विष न जणाय ॥ मे० ॥ अमल घणु खाधाथकी, कदर्प बल मिट जाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १२ ॥ अमलीने उन्हुं रुचे, टाढु नावे दाय ॥ मे० ॥ खोनी रोटी खाम धी, उपर दूध सुहाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १३ ॥ कुलवंती जे कामनी, जाणे जुगति सुजाण ॥ मे० ॥ काति विखी इण करी, अमलीने दीए आण ॥ ॥ मे० ॥ १४ ॥ प्रीतम आशा पूरती, न करे रीश लगार ॥ मे० ॥ कथन न लोपे कथनु, ते विरली ससार ॥ मे० ॥ अ० ॥ १५ ॥ दुर्भागणी नारी जीका, बोले कर्कश वाण ॥ मे० ॥ रे रे अधम अफी

णिया, आलसवंत अजाण ॥ मे० ॥ अ० ॥ १६ ॥ परणी जाइ पारकी, शुं कीधु तें धीठ ॥ मे० ॥ पोतानुं पण पेट ए, निठुर भराय न नीठ ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ १७ ॥ कान कोट भूषण सहु, वेची खाधु तेह ॥ मे० ॥ निर्लज तुज घरवासमां, कहे सुख पाम्युं जेह ॥ मे० ॥ अ० ॥ १८ ॥ अमल समो असुगो नही, मानो एमुज शीख ॥ मे० ॥ वाले सुंदर देहनी, अते मगावे भीख ॥ मे० ॥ अ० ॥ १९॥ दालिद्रीने दोहिलु, सुर उग्यानु शाल ॥ मे० ॥ श्रीमंतने पण नहीं भलु, जोता ए जजाल ॥ मे० ॥ ॥ अ० ॥ २० ॥ सासु वहु वढतां उता, रीसे अमल भखंत ॥ मे० वालक खाये अजाणतां, जो घर अमल हवंत ॥ मे० ॥ अ० ॥ २१ ॥ प्राणी वध जिणशु हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे० ॥ कर्मादान दशमु कह्यु, विष व्यापार पकुर ॥ मे० ॥ अ० ॥ २२ ॥ चतुर विचार ए चित्त धरी, कीजे अमल परिहार ॥ ॥ मे० ॥ खिमाविजय पडित तणो, कहे माणिक मनोहार ॥ मे० ॥ अ० ॥

॥ अथ काया उपर सद्याय ॥

॥ काया रे वाडी कारमी, सीचतारे शूके ॥ उठ कोड रोमा- वली, फल फूल न मूके ॥ का० ॥ काया माया कारमी, जोवंतां जाशे ॥ मारग लेजो मोक्षनो, जीवडो सुख पाशे ॥ का० ॥ १ ॥ अरिहंत

आंबो मोरीयो, सामायिक थाणे मत्र नवकार संभा रजो समकित सुधठाणे ॥ का० ॥ ३ ॥ वाडी करो विरता तणी, सवि लोभ निवारो ॥ शील सयम दोनु एकठा, भली पेरे पारो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच पुरुष देशावरी, वेठा एणी डाली ॥ फल चुटीने चोरीआ, न करी रखवाली ॥ का० ॥ ५ ॥ इण वाडी एक सूकलो, सुख पिंजर वेठो ॥ बहुत जतन करी राखजो, जातो किणही न दीठो ॥ का० ॥६॥ का भोलपणे भव हारियो, मती मोडी सभाली ॥ रत्न चिंता मणि सारीखी, काइ गाठ न वाली ॥ ॥ का० ॥ ७ ॥ रत्न तिलक सेवक भणे, सुणेजो वनमाली ॥ वाड भली परें पालजो, करजो ढग वाली ॥ का० ॥ ८ ॥

॥ अथ तेर काठीयानी सज्झाय ॥

॥ आलस पहेलो जी काठियो, धर्मे ढील कराय रे, निवारोजी काठिया तेर दूरें करो ॥ बीजो ते मोह पुत्र कलत्रशु, रगे रहे लपटाय रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ १ ॥ त्रीजो ते अवरण धर्ममा, बोले अवरण वादरे ॥ निवारोजी ॥ क० ॥ चोथो ते दभज काठियो, न लहे विनयें सवाद रे ॥ निवारोजी ॥ ॥ का० ॥ २ ॥ क्रोध ते काठियो पाचमो, रीसे रहे अमलाय रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ छठा प्रमाद ते कठियो, व्यसनें विगूतो थाय रे ॥ निवारोजी ॥

॥ का० ॥ ३ ॥ कृपण काठियो सातमो, न गमे दा-
ननी वातरे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ आठमो भयथी
नवी सुणे, नरकादिक अवदात रे ॥ निवारोजी
॥ ४ ॥ नवमो ते शोक नामे कह्यो, शोकें ठाडे धर्म
रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ दशमो अज्ञाने ते नवि
लहे, धर्म अधर्मनो मर्म रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥
॥ ५ ॥ विकथा नामे अग्यारमो, लोक वातें धरे
प्रीत रे ॥ निवारोजी ॥ क० ॥ कुतुहल काठियो
बारमो, कौतुक जोवा धरे चित्त रे ॥ निवारोजी ॥
॥ का० ॥ ६ ॥ विषय ते काठियो, तेरमो, नारि
साथें धरे नेहरे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ७ ॥ इति
श्री तेर काठियानी सद्याय ॥

॥ अथ महोटी होंस न करवा आश्रयी सद्याय ॥

होंशीमा जाइ (प्राणि) होंश न कीजे महोटी
वावी छे वटी बाजरी, तो शाली केम लहिये मोटी रे
॥हो०॥ प्राणी जेणे दीधु तेणे लीधु जे देशे तेलेशेरे॥
जेणे नवि दीधु तेणे नविलीधु, दीधा विना केम
लेशे रे ॥ हो० ॥ १ ॥ वाव्या विना कर्षण केम ल
हिये, सेव्या विना केम उरीये ॥ पुण्य विना मनो
रथ मोटा, दीधा विण केम करिये रे ॥ हो० ॥
॥२॥ सीसानी अकोटी आपी, आपी तरुवानी त्रोटी ॥
ते सोनार कने केम मागीश, सोनानी करी मोटी
रे ॥ हो० ॥ ३ ॥ शालिभद्र धन्नो कयवन्नो, मूलदे

व धनसार ॥ पुण्य विशेषे प्रत्यक्ष पाम्या, अलवेस र अवतार रे ॥ हों० ॥ ४ ॥ एवु जाणी रुडु पामी, करजो धर्म सखाइ ॥ साधु हर्ष कर जोडी विनवे, दीधुं लेशे लाइरे ॥हों० ॥५॥ इति हींसीका सद्याय॥

॥ अथ मधुविंदुआ दृष्टांत सद्याय प्रारंभ ॥

॥ ढाल ॥ सरसती मुज रे, माता द्यो वरदान रे ॥ पूछे गौतम रे, भाखे श्रीवर्द्धमान रे ॥ ठंडो गिरुआ रे, विरुआ विषयनु ध्यान रे ॥ विषयारस रे, छे मधुविंदु समान रे ॥ त्रुटक ॥ मधुविंदु सरिखो विषय निरखो, जाइ परखो, चित्त शु॥नर जनम हारयो मोह गारयो, पिंड जारयो पापशु ॥ कतार पडियो नाग नडियो, कोइ देवाणुप्पियो ॥ वडवृक्ष जडियो वेगे चडीयो करडियो ठप्पियो ॥ १ ॥ ढाल॥ वड हेठल रे, कूप अछे असराल रे ॥ दोय अजगर रे,मगर जिश्या विकराल रे ॥ चिहु पासे रे, चार भुयगम काल रे ॥ वली उपर रे, मोटो छे महुयाल रे ॥ त्रुटक ॥ महुयाल माखी रगत चाखी, चचु राखीनें रही ॥ धधोलतो गजराज धायो, पडत वडवाइ ग्रही ॥ वडवाइ कापे उदर आपे, ताप सतापे ग्रह्यो ॥ मधु थकी गलीयो विंदु ढलीयो, तेणे सुखलीणो रह्यो ॥ २ ॥ ढाल॥एह सकट रे, छोडण देव दयाल रे ॥ दुख हरवा रे, विद्याधर ततकाल रे ॥ उडरवा रे, धरियु तास विमान रे ॥ ओ आवे रे, मधुविंदु करे

सान रे ॥ त्रूटक ॥ मधुविंदु चाखे, वचन नाखें, करे लालच लखवली ॥ वार वार राखे सान पाखे, रहो क्षणएक पर रली ॥ तस खेचर मलीयो वेगे वलियो, रंक रुलीयो ते नरु ॥ मधुविंदु चाटे विषय साटे कह्यो उपनय जगगुरु ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोराशी लख रे, गतिवासी कातार रे ॥ मिथ्यामति रे, भूलो भमे संसार रे जरा मरणारे, अवतरणा ये कूप रे,॥ आठ खाणी रे, पाणी पगइ सरुप रे ॥ त्रुटक ॥ आठ कर्म खाणी दोय जाणी, तिरिय निरय अजगरा ॥ चारे कषाया मोह माया, लंबकाया विषहरा ॥ दोय पक्ष उदर मरण गयवर, आयुवरुवाड वटा ॥ चटका वियोगा रोगशोगा, भोग योगा सामटा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ विद्याधर रे, सद्गुरु करे सभाल रे ॥ तेणें धरीयु रे, धर्म विमान विशाल रे ॥ विषया रस रे, मीठो जेम महुयाल रे ॥ पमखावे रे, बाल यौवन वयकाल रे ॥ त्रुटक ॥ रह्यो बाल यौवन काल तरुणी, चित्तहरणी निरखतो ॥ घरभार युत्तो पक खुत्तो, मदवगुत्तो पोषतो ॥ आनंद आणी जैनवाणी, चित्त जाणी जागीये ॥ चरण प्रमोद सुशिष्य जपे, अचल सुख एम मागीये ॥५॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय प्रारभ ॥

॥ श्रीसीमधर साहेब साभलो ॥ ए देशी ॥

॥ का नवि [illegible]तें हो चित्तमें जीवमा, आयु गले

दिन रात ॥ वात विचारी रे पूरवभव तणी, कुण कुण ताहरी रे जात ॥ कां० ॥ १ ॥ तु मत जाणे रे ए सहु महारा, कुण माता कुण भ्रात ॥ आप स्वारथ ए सहु को मल्या, म कर पराइ रे वात ॥ ॥ का० ॥ २ ॥ दोहिलो दीसे रे भव माणस तणो श्रावक कुल अवतार ॥ प्राप्ति पूरी रे गुरु गिरुआ तणी, नहीं तुज वारो रे वार ॥ कां० ॥ ३ ॥ पुण्य विहूणो रे दुःख पामे घणु, दोष दीये किरतार ॥ आप कमाइ रे पूरव भवतणी, नवि सभारे गमार ॥ ॥का०॥४॥ कठिन कर्मने रे अहनिश तु करे, जेहना सबल विपाक ॥ हुनवि जाणु रे कुण गति ताहरी, ते जाणे वीतराग ॥ का० ॥ ५ ॥ तुज देखतां रे जोने ते जीवडा, केइ केइ गया नर नार ॥ एम जाणीनेरे निश्चे जांयवु, चेतन चेतो गमार ॥ का० ॥ ६ ॥ सुख पाम्या रे वहु रमणीतणा, अनत अनती रे वार ॥ लब्ध कहेरे जो जिनशु रमे, तो सुख पामे अपार॥७॥

॥ अथ स्त्रीवर्जन शिखामण सज्झाय ॥

॥ धर्म भणी जाता धरा, वचमाहे पाडे वाट ॥ लठि लीए सर्व लूटीने, व्रतनी जे वहे उवाट ॥ व ला हो, वहु वहु वोली ए वाल, जे अठता उपाये आल, जे वाघणथी विकराल, जे आपे मरण अ काल ॥ व० ॥ १ ॥ ससारे सहु सरिखु नहीं, जोने वसता जोय ॥ एक वाको एक पाधरो, वोरडीये

कांटा जिम होय ॥ व० ॥ २ ॥ वला वला सहुको कहे, बीजी नला वलवत ॥ ए जेवी एके नहीं, जे ठले पाछी ठलत ॥ व० ॥ ३ ॥ आस्वाढो गाढो ठ ल्यो केइ ठल्या नर कोइ ॥ गुणवतनु पण नहीं ग जु, जे क्षणमा लगाडे खोड ॥ व० ॥ ४ ॥ उलाले आकासमा, एक आंखे उलाले अनेक ॥ महींयें पग मंडे नहीं वली, नासे विनय विवेक ॥ व० ॥ ॥ ५ ॥ जशोधर जिस्या खानमी, वली मुंज जिस्या महाराज ॥ पुण्यवत परदेशी सारिखा, ते कांता हण्या निजकाज ॥ व० ॥ ६ ॥ जोरावर जबू जिस्या, वक चूल सरिखा वीर ॥ समर्थ थूलिभद्र सारिखा, जेह ना नारिये न उतारया नीर ॥ व० ॥ ७ ॥ शोल स ती आदे थइ महासतीओ जग हितकार ॥ अने क नर तेणें उद्धरया, रहनेमि आदे निरधार ॥व०॥ ॥ ८ ॥ सुदर्शन ठलला नवि ठल्यो, थयो केवल क मलाकत ॥ परमोदय पामे सही, जे पास एहने न पर्मत ॥ व० ॥ ए ॥ इति स्त्री वर्जन सज्झाय ॥

॥ अथ परस्त्री वर्जन सज्झाय ॥

॥ धणरा ढोला ए देशी ॥

॥ शीख सुणो पीउ माहरी रे, तुजने कहुं कर जोड ॥ धणरा ढोला ॥ प्रीत म कर परनारी शु रे, आवे पग पग खोड ॥ ध० ॥ कह्युं मानोरे सुजाण कह्युं मानो ॥ वरज्या वर्जो, मारा लाल, वरज्यां

वर्जो, परनारीनो नेहलको निवार ॥ धणरा ढला ॥ ॥ १ ॥ जीव तपे जिम वीजली रे, मनडु न रहे ठाम ॥ ध० ॥ काया दाह मिटे नही रे, गांठे न रहे दाम ॥ ध० ॥ २ ॥ नयणें नावे निद्रकी रे, आठे पोहोर उद्वेग ॥ ध० ॥ गलीआरे भमतो रहे रे, लागू लोक अनेक ॥ ध० ॥ ३ ॥ धान न खाये ड्रापतो रे, दीठु न रुचे नीर ॥ ध० ॥ नीसासा ना खे घणा रे, साजल नणदीना वीर ॥ ध० ॥ ४ ॥ भूतलमें निसि नीसरे रे, कुरी कुरी पिजर होय ॥ ध० ॥ प्रेमतणे वश जे पडे रे, नेह गमे तव दोय ॥ ध० ॥ ५ ॥ रात दिवस मनमा रहे रे, जिणशुं अविहड नेह ॥ ध० ॥ वीसांख्या नवि वीसरें रे, दाझे क्षण क्षण देह ॥ ध० ॥ ६ ॥ माथे वदनामी चढे रे, लागे क्रोड कलक ॥ ध० ॥ जीवितनो स शयथकैरे, जूवोरावण पतिलक ॥ध० ॥७॥ परनारीना सगथीरे, भलो न थाये नेठ ॥ ध० ॥ जूवो कीचक भीमडे रे, दीधो कुजी हेठ ॥ ध० ॥ ८ ॥ थाये लं पट लालची रे, घटती जाये ज्योत ॥ ध० ॥ जीत न थायेतेहनी रे, जिम रायचद प्रद्योत ॥ ध० ॥९॥ परनारी विषवेलकी रे, विषफल भोग सयोग ॥ ॥ ध० ॥ आदर करी जे आदरे रे, तेहने भवभय शोग ॥ ध० ॥ १० ॥ वाहाला महरी विनति रे, सा ची करीने जाण ॥ ध० ॥ कहे जिन हरष तुमे सा

नलो रे, हियडे आणि मुज वाण ॥ ध० ॥ ११॥
इति परस्त्री वर्जन स्वाध्याय ॥

॥ अथ जीवने समता विषे शिखामण ॥

॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत तजी चित्त धारीयें, हो वालमजी वचन तणो अति उमो मरम विचारीयें ॥ ए आंकणी ॥ हांरे तुमे कुमतिके घेर जावो छो, तुमें कुलमां खोट लगावोछो, धिक्क ऐठ ज गतनी खावो छो॥हो०॥१॥अमृत त्यागी विष पीउंछो, कुमतिनो मारग लियोछो, ए तो काज अयुक्त की योछो ॥ हो० ॥ २ ॥ ए तो मोह रायकी चेटी छे, शीव सपत्ति एथी छेटी छे, एतो साकर गलती पे टी छे ॥ हो० ॥ ३ ॥ एक शंका मेरे मन आवी छे, किण विध ए चित्त जावी छे, एतो दाहण जगमा चावी छे ॥ हो० ॥ ४ ॥ सह ऋद्धि तमारी खाए छे, करी कामण चित्त जरमाए छे, तुम पुण्ययोगे ए पाए छे ॥ हो० ॥ ५ ॥ मत आवल काज बाउल थोवो, अनुपम जव विरथा नवि खोवो, अब खोल नयण प्रगटी जोवो ॥ हो० ॥६॥ इण विध समता बहु समजाए, गुण अवगुण कइ सहु दरशाए, सुणी चिदानद निज घर आये ॥ हो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ दान, शील, तप, जाव स्वाध्याय ॥

॥ श्री महावीरे जांखीया, दानना चार प्रकार रे ॥ दान शियल तप जावना, सखी पचम गति दा

तार रे ॥ श्री महा० ॥ १ ॥ दानें दोलत पामीयें सखी दाने क्रोड कल्याणरे ॥ दान सुपात्र प्रभाव थी, सखी कयवन्नो शालिभद्र जाणरे ॥ श्री महा० ॥ २ ॥ शियले संकट सवि टले, सखी शिलें वदित सिद्धरे ॥ शियले सुर सेवा करे, सखी सोल सति परसिद्धरे ॥ श्री महा० ॥ ३ ॥ तप तपो भवि भाव शु, तपे निर्मल तन्नरे ॥ वर्षोपवासी ऋषभजी, सखी धन्नादिक धन्य धन्यरे ॥ श्री महा० ॥ ४ ॥ भरता दिक शुभ भावथी, सखी पाम्यो पचम ठाम रे ॥ उदयरत्न मुनि तेहने, सखी नित्य किरे प्रणामरे ॥ श्री महावीरे ॥ ५ ॥

॥ सामायिक लाभ सद्याय ॥

॥ कर पडिक्कमणु भावशु, दोय घडी शुभ ध्यान ॥ लालरे ॥ परभव जाता जीवने, सबल साचू जा ण ॥ लालरे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्री वीर मुख इम उ चरे, श्रेणिक राय प्रत्ये जाण ॥ लालरे ॥ लाख खांडी सोना तणी, दिये दिन प्रत्ये दान ॥ लालरे ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ लाख वरस लगे ते वली, एम दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ एक सामायिकने तोले, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ सामायिक चउविस त्थो, देव वदन दोयवार ॥ ला० ॥ व्रत सभारो रे आपणा, ते भव कर्म निवार ॥ ला० ॥ कर० ॥ ४ ॥ कर काउस्सग्ग शुभ ध्यानथी, पचखाण सुधुं वि

चार ॥ ला० ॥ दोय सद्याये ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ ला० ॥ कर ॥ ५ ॥ श्री सामायिक प्रतापथी, लहिये अमर विमान ॥ लाखरे ॥ धर्म सिह मुनि एम भणे, ए छे मुकित निदान ॥ ला खरे ॥ कर० ॥ ६ ॥

॥ अथ छींक विचार सद्याय ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ छींक शुकननो कहुं विचार, सुगुरु समीप सूण्यो में सार ॥ आगलमा जो छींकज होय, अशुभ तणी जाणे जे, कोय ॥१॥ पहेला शुकन हुवा शुभ घणा ॥ छींकज हुआ निष्फल तेतणां पछी कज हुआ पछी जे जाण, शुकन हुआ ते करो प्रमा ण ॥ २ ॥ नावी छींक होय अर्ध फली कहे, जमणी छींक बुरी सउ कहे ॥ पूठे छींक सुखदायक सही, घणी छींक ते नि.फल कही ॥ ३ ॥ हासे भय उपा धीयें करी, हठ घणो मनमाहे धरी ॥ एक छींक ते नि फल जाण, कुतर छींक तो नि खर आण ॥ ४ ॥ मजार छींक ते मरणज करे, इसी छींक कष्टकारी सरे, ॥ वस्तु वेचतां छींकज होय, आण्यु करीयाणु मोघु होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेता छींकज होय, वमणो लाभ सघलानो जोय ॥ गइ वस्तु जो जोवा जाय, छींक होय तो लाभ न थाय ॥ ६ ॥ नवा वस्त्र वली पेहेरता, छींक होये आगल अण छता ॥ भोजन होम पूजानु [illegible] क जेधर्म सुठाम ॥ ७ ॥

काम एटलां कीधानी अत, वली क्रिया करावे खत ॥ रति स्नान करीने रहे, ठीक होय तो पुत्रज लहे ॥ ८ ॥ ऋतुवतीने दीवे दान, पठी होवे पुत्र निदान ॥ वैरी जीती जाशु जोये, ठींके वैरी सबलो होय ॥ ए ॥ रोगी काज वैद्य तेडवा, जाता ठींके जो नव नवा ॥ ते रोगीने मृत्यु जाणीये, काम विन वैद्ये नाणीये ॥ १० ॥ वैद्य रोगीने घरे आवता, ठींक होये औषध आपतां ॥ रोगी तणो रोग ते समे, आहार लेते जमवु गमे ॥ ११ ॥ व्यापारे लीधे व्यापार, ठींक होय तो वृद्धि अपार ॥ लेखु शुद्ध दीधु रायने, ठींक फोक थाये तेहने ॥१२॥ पाणीपीतां अथ संवाद, ठींक दृष्टि दोष अनिवाद नवे घरे वसवा आवीये, ठींक होये तो उचालीयें ॥ १३ ॥ व्याजे द्रव्य केहने आपता, वली पृथवीमा वन दाटता ॥ कर्पण जोवा जाता वली, वृष्टि होय पुहवी मन रुली ॥ १४ ॥ ठींक शुकन नर जाणे जेह, पग पग सपद पामे तेह ॥ ठींक विचार जाणे जो कोइ, ऋद्धि वृद्धि कल्याणक होइ ॥१५॥ इति ठींक विचार॥

॥ अथ वैराग्योपदेशक सद्याय ॥

॥ हक मरना हक जाना यारो, मत को करो गुमाना॥ह०॥ ए आकणी ॥ उंढण माटी, पेरण माटी, माटीका सराना ॥ वसतीमेंसे वहार निकाला, जगल किया ठिकाना ॥ ह० ॥१॥ हाथी चडते घोडे च

रुते, उंर आगे निशाना ॥ नीली पीली वेरख चल ती, उत्तर किया पयाना ॥ ह० ॥ २ ॥ नरपति हो के तखतपर वेठे, भरिया भारी खजाना ॥ सांज स वारे मुजरा लेते, उपर हाथ वेकाना ॥ ह०॥ ३ ॥ पोथी पढ पढ हिंदु भूले, मुसलमान कुराना ॥ रुपचंद कहे अरे भाइ सतो, हरदम प्रभु गुण गाना ॥ ह० ॥ ४ ॥

॥ अथ भाव स्वाध्याय ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन महारो ॥ ए देशी ॥

॥ रे भवि भाव हृदय धरो, जे छे धर्मनो धोरी एकल मल्ल अखरु जे, कापे कर्मनी दोरी ॥ रे भवि० ॥ १ ॥ दान शियल तप भण ए, पातक मल धोवे ॥ भाव जो चोथो नवि मले, तो ते निष्फल होवे ॥ रे भवि० ॥ २ ॥ वेद पुराण सिद्धातमां, षट् दर्शन भाखे ॥ भाव विना भव सतति, परुता को ण राखे ॥ रे भवि० ॥ ३ ॥ तारक रुप ए विश्वमां, ऊपे जग भाण ॥ भरतादिक शुभ भावथी, पाम्या पद निर्वाण ॥ रे भवि० ॥ ४ ॥ औषध आय उपाय जे, मंत्र यत्रने मूली, भावे सिद्ध होवे सदा, भाव विण सहु धूली ॥ रे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ उदय रत्न क हे भावथी, कोण केण नर तरिया ॥ शोधी जोजो सूत्रमा सज्जन गुण दरिया ॥ रे भवि० ॥ ६ ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनो सद्याय ॥

॥ श्रीसीमंध साहेब आगे ॥ ए देशी ॥ अरिहंत पहेले थानक गणीये, बीजे पद सिद्धाण ॥ त्रीजे पवयण आयरिय चोथे, पांचमे पद थे राण रे ॥ भविया ॥ वीश थानक तप कीजे ॥ ओली वीश करीजे रे ॥ भ० ॥ गणणु एह गणीजे रे ॥ भ० ॥ जिम जिनपद पामीजे रे ॥ भ० ॥ नर भव लाहो लीजे रे ॥भ०॥वी०॥१॥ ए आकणी ॥ उवझाए छठे सव्वसाहूण, सातमे आठमे नाण नवमे दसण दसमे विणयस्स, चारित्र अगियारमे जाण रे ॥ भ० ॥ ॥ वा० ॥ २ ॥ बारमे बंभवय धारीण, तेरस मे किरियाण ॥ चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोलसमे नमो जीणाण रे ॥ भ० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीगें, अढारसमे नाणस्स ॥ उंगणीशमे नमो सुयस्स सजारो, वीशमे नमो तित्थस्स रे ॥ भ० ॥ ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देव वदन, गणणु दोय हजार ॥ सध विनय बुध शिष्य सुदर्शन, जपे एह विचारो रे ॥ भ० ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ शीयल विषे शीखामणनो सद्याय ॥

॥ ढाल ॥ एतो नारी रे, वारी छे दुर्गति तणी॥ ठाम सगत रे मूरख तु परस्त्री तणी ॥ जीव भोला रे, भोला तेहशु मम करे ॥ शीख मानी रे, ठानी वात तु परिहरे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जो वात करीश

परनारी साथे, लोक सहु हेरे अठे ॥ राय रांक थ इ ने रह्या रानें, सुखे नहीं वेसे पठे ॥ ए मदनमा ती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहेलु तो वली सुख देखाडे पठे, पछाडे जामिनी ॥२॥ ढाल कर पगना रे, नयण वयण चाला करी ॥ बोलावी रे, नर लेइ धाइ सुदरी ॥ जोलावी रे,हाव भाव देखाडशे ॥ पगे लागी रे, मरकलडे पठे पाडशे ॥३॥ त्रुटक ॥ ए पास पाडे धन गमाडे, मान खडे ले लठी ॥ बोलं ती रुडी चित्त कूडी, कूरु कपटनी कोथली ॥ ए नर अमूलक वस्य पडिउं, पठे नपोसाये पायको दीवा नमडे मानखमे मारसहे पठे रायको॥ ४ ॥ ढाल ॥ ठाकी लेशे रे, वेश्याना लपट नरा ॥ सहु सधवा रे, विधवा दासी दूरें करा जा नाशी रे, रुप देखी जीव एह तणु ॥ उजो रही रे, एह साहामु, मम जो धणु ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ धणु म जोइश एह साहा मु, कुलस्त्री दीठे नवि गमे ॥ जीम शूनी पूठे श्वान हींडे, तिम परनारि पूठे का भमे ॥ जिम बिलाडो दूध देखे, मोलें डाग न देख ए, परनारि वेधो पुरुष पापी किसो भय नवि, लेख ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फु ल वेणी रे, शिर सिंदूर सेथोभस्यो ॥ ते देखी रे, फट मूरख मन कां कस्यो ॥ देखी टीला रे, ढीलां छडिय करी गह गह्यो ॥ शिर राखडी रे, आंखे दे इ तु का रह्यो ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ का रह्यो मूरख आ

खें देइ, शणगार नार एणें धस्या ॥ ए उली जीहा आखे पीहा, कान कूपा मल नस्या ॥ नारी अग्नि पुरुष माखण, बोलतां बीगरे ॥ स्त्री देहमां शु सार दीठो, मूढ महिआका करे ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इंद्रिय वाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापिउं ॥ माने नरगह रे, सरग करी विष व्यापीउं ॥ का भूलो रे, शणगार देखी एहना ॥ जाणी प्राणी रे, ए छे दुःखनी अगना ॥९॥त्रुटक॥ अगना तु छोडी जो करे,तो जश कीर्ति सघले लहे ॥ कुशीलनु जो नाम लियेको, परलोक दुरगति दुखसहे, विजय नड बोले जे न मोले, शीयल थकीजे नरवरा ॥ तस पायें लागु सेवा मागु, जे जगमाहे जयकरा॥१०॥इति॥शील सद्याय॥

॥ अथ प्रभाते वाहाणला गावानो सद्याय ॥

॥ मिथ्यामति रे रजनी असरालके ॥ वाहाणला चले वायारे ॥ जीहा उघे रे प्राणी वहुकाल के ॥ वहाणां० ॥ नवि जाणे रे जीहा यमनी फाल के ॥ ॥ वा० ॥ तिहां पामे रे पग पग जजाल के ॥ वा० ॥ १ ॥ जीहा ऊरुपे रे क्रोध दवनी झाल के ॥वा०॥ मानरुपी रे अजगर विकराल के ॥ वा० ॥ डसे माया रे सापणी रोपाल के ॥ वा० ॥ जीहा चावो रे लोभ रुप चमाल के ॥ वा० ॥२॥ रागादिक रे राक्षस महावृद के ॥ वा० आठ कर्मना रे जीहां माड्या फद के ॥वा०॥ जीहा देखे रे दुर्गति दुःख दंद के

॥ वा० ॥ नवी दीसे रे जीहा ज्ञान दिणंद के ॥ ॥ वा० ॥ ३ ॥ धसमसता रे जीहां विषयनी जाल के ॥ वा० ॥ लीये लूटी रे नगणे पलिवाल के ॥ ॥ वा० ॥ अटवी अनती रे जीहा विकट उजाड के ॥ वा० ॥ चाले नही रे जीहा व्रतनी वाड के ॥ ॥ वा० ॥ ४ ॥ निरखंतारे श्रीजिनमुख नूर के ॥ ॥ वा० ॥ हवे उग्यो रे महासमकेत सूर के ॥वा०॥ दुखदायी रे दोषि गया दूर के ॥वा०॥ वली प्रगट्या रे पुण्यतणा अंकूर के ॥ वा० ॥ ५ ॥ सुता जागो रे देसविरतिना कत के ॥ वा० ॥ वली जागो रे सर्व विरति गुणवत के ॥वा०॥ तमे भेटो रे भावे भगवत के ॥वा०॥ पडिक्कमणा रे करो पुण्यवत के ॥वा०॥६॥ तमे लेजो रें देवगुरुनु नाम के ॥वा०॥ वली करजो रे तमे धर्मना काम के ॥ वा० ॥ गुरुजन नारे गावो गुण ग्रामको ॥वा०॥ प्रेम धरीने रे करो पूज्य प्रणाम के ॥वा०॥७॥ तमे करजो रे दशविध पच्चखाण के ॥ वा० ॥ तुमे सुणजो रे श्रीसूत्रवखाण के ॥ वा०॥ आराधो रे श्री जिननी आण के ॥ वा० ॥ जिम पामो रे शिवपुर संठाणके ॥ वा० ॥ ८ ॥ साभलीने रे श्रीमुखनी वाण के ॥ वा० ॥ तमे करजो रे सही सफल विहाण के ॥ वा० ॥ वदे वाचक रे उदयरत्न सुजाण के ॥ वा० ॥ एह भणता रे लहीये कोड कल्याण के ॥ वा० ॥ ९ ॥ इति ॥ वाहला ॥

॥ अथ वैराग्य सज्झाय ॥

कोउ काज न आवे रे दुनियाके लोको, कोउ काज न आवे ॥ जूठी वातका आनि भरोसा, पीछे से पस्तावे रे ॥ दु० ॥ १ ॥ मतलबकी सब मिलि लोकाइ, बहोतहिं रंग बनावे रे ॥ दु० ॥ २ ॥ अपना अर्थ न देखे सो तो, पलकमे पीठ देखावे रे ॥ दु० ॥ ३ ॥ बाजीगरकी बाजी जेसा, अजब दिमाक देखावे रे ॥दु०॥ ४ ॥ देखो दुनिया सकल खीली है, युही मन ललचावे रे ॥ दु० ॥ ५ ॥ जिने जान्या तिने आप पिछान्या, वे खबरी दुःख पावे रे ॥ दु० ॥ ६ ॥ हस सयाने एक साइशु ठरे, काहेकु चित्त न लावे रे ॥ दु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चैतन्य शिक्षाभास प्रारभ ॥

॥ आप विचारजो आतमा, भ्राते शुं भूले, अथिर पदारथ उपरे, फोगट शुं फूले ॥ आ० ॥ १ ॥ घटमाहे छे घरधणी, मेलो मननो भ्रामो ॥ बोले ते बीजो नथी, जोने धरी तामो ॥ आ० ॥ २ ॥ पामीश तु पासेंथकी, बाहेर शु खोले ॥ वेसे का तु बूरुवा, मायानी उंले ॥ आ० ॥ ३ ॥ प्रीछा विण केम पामीये, सुण मूरख प्राणी ॥ पीवाये किम पशलीयें, झाझवाना पाणी ॥ आ० ॥ ४ ॥ आप स्वरुप न ओलखे, मायामाहे झूले ॥ गरथ पोतानी गाठनो, व्याजमा जिम डूले ॥ आ० ॥ ५ ॥ जोता नाम न

जाणिये, नहिं रुप न रेख ॥ जगमांहे ते केम जडे, अरुपी अलेख ॥ आ० ॥ ६ ॥ अध तणी पेरे आ फले, सघला, ससारी ॥ अतरपट आडो रहे, कोण जूवे विचारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पहेले पाडुं करी, पछी जोने निहाली ॥ नजरें देखीश नाथने, तेहशु ले ताली ॥आ०॥८॥ वधण हारो को नथी, नथी ठोका वण हारो ॥ प्रवृत्ते वांधिये पोतें, निवृत्ते निस्तारो ॥ आ०॥९॥ भेदाभेद बुद्ध करी, भासे छे अनेक॥ भेद तजीने जो भजे, तो दीसे एक ॥ आ० ॥१०॥ काले धोलु भेलीये,तो ते थाये वेरंगू वेरंगे बुडे सहि,मन न रहे चगु ॥ आ०॥११॥ मन मरें नहि जिहां लगे, घूमे मद घेख्यो ॥ तव लगे जग भूल्युभमे, न मटे भव फेरो ॥ आ० १२ ॥ उघ तणे जोरे करी, शु मो ह्यो सुहणे ॥ अलगी मेली उघने, खोली जोने खूणे ॥ आ० ॥ १३ ॥ त्यारे जगमा तुज विना, वी जो नवी दीसे ॥ भिन्न भाव मटशे तदा, सेहेजे सुजगीशें ॥ आ० ॥ १४ ॥ मारु तारु नवि करे, स हुथी रहे न्यारो ॥ इणेएहिनाणे उंलीख्यो, प्रभु तेहने प्यारो ॥ आ० ॥ १५ ॥ सिद्धदिशायें सिद्धने, मलीये एकांति ॥ उदयरत्न कहे आतमा, तो भागे भ्रांति ॥आ०॥१६॥ इति चैतन्यशिक्षाभास सपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥ राग आशावरी ॥

॥ किसीकु सब दिन सरखे न होय ॥ प्रहउग

त अस्तंगत दिनकर, दिनमे अवस्था दोय ॥ कि० ॥ १ ॥ हरि बलिभद्र पांडव नल राजा, रहे खट खट रिद्धि खोय ॥ चंडाल के घर पाणी आण्यु, राजा हरिचंद जोय ॥ कि० ॥ २ ॥ गर्व म कर तु मूढ गमारा, चडत पडत सब कोय ॥ समय सुंदर कहे इतर परत सुख, साचो जिनधर्म सोय ॥ कि० ॥ ३ ॥ इति वैराग्य सज्झाय ॥

॥ अथ निद्रानी सज्झाय ॥

॥ बेटी मोह नरिंदकी, निद्रा नामे विख्यात वे ॥ धर्म द्वेषणि पापणी, न गमे धर्मनी वात वे ॥ निद न लहे जे सज्जना, सज्जनां वे दु खभजना वे ॥ टेक ॥ नि० ॥ १ ॥ घेरे सघला जीवने, जिहां जमनो पास वे ॥ जा घडि निद न पाइयें, ता घडि प्रभुको वास वे ॥ नि० ॥ २ ॥ आलस उमराव एहनो, जालिम जोद्ध जुवान वे ॥ दूत बगासू जाणजो, चाले आगेतान वे ॥ नि० ॥ ३ ॥ जाति पांच छे जेहनी पसरी विश्व प्रमाण वे ॥ केवली विना एक जेहनी,कोइ न लोपेआणवे ॥ करमे न आवे टूकडी धर्मे पाके जगाणवे वाजां वाजे जिहां उंघना, तिहा होय सुखनी हाण वे॥नि०॥५॥उदय रत्न कहे उघने, जीत्यानो एह उपाय वे॥ पहेला आहार जो जीतिये, तो निद्रावश थाय वे ॥ ६ ॥ नि० ॥इति॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥

॥ प्राणी काया माया कारमी, कूडो छे कुटुब परिवाररें ॥ जीवकला ॥ समरण कीजे सिद्धनु ॥ माहरुं माहरु म कर रे मानवी, पथ वहेवु परले पार रे जीवकला ॥ सम० ॥ १ ॥ प्राणी सहुने वलावे सांकला मलिया छे मोहने संबध रे जीवकला ॥ प्राणी आयु क्षयें अलगा थयां, धीठो एवो संसारी धध रे जी० ॥ सम० ॥ २ ॥ प्राणी काष्ठ परे रे काया वले, वली केश वले जेम घास रे ॥ जी० ॥ प्राणी मानवी मर्कट वैरागीया, वली पडे माया विश्वास रे जी० ॥ ३ ॥ प्राणी पराइ उडे जीव उपरें, दोरी पवन वले लेइ जाय रे जी० ॥ प्राणी त्रुटी दोरी सधाय छे, आउखु त्रुटुं न सधाय रे जी० ॥ सम०॥ ॥ ४ ॥ प्राणी काचे कुभे पाणी केम रहे, हंस उडी जाय काय रे जी० ॥ प्राणी आशा अतिघणी आट रे, थावा वालो तेहिज थायरे जी० ॥ सम० ॥ ५ ॥ प्राणी जेने घरे नोवत गडगडे, गावे वली खट राग रे जी० ॥ प्राणी गोखे तेहने धूमता, शून्यथये० वली उडे काग रे जी० ॥ सम० ॥ ६ ॥ प्राणी एम ससार असार छे, सारमां श्रीजिनधर्म सार रे जी प्राणी शांति समर समता धरी, चार त्यजी वली आदरो चाररे जी० ॥ सम० ॥ ७ ॥ प्राणी पांचे तजो रे पांचे भजो, त्रण जीपो त्रण गुणधार जीरे ॥

प्राणी रयणी भोजन परिहरो, सात व्यसन तजो सुविचार रे जी० ॥ सम० ॥ ८ ॥ प्राणी समता करो ठ कायानी, साभलो सद्गुरुनी वाण रे ॥ जी० ॥ प्राणी साची शीखामण एह छे, एम कहे छे मुनि कल्याण रे जी० ॥ सम० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ सार बोलनी सद्याय लिख्यते ॥

॥ सरसती सामिनी पय प्रणमेव, सद्गुरुनाम सदा समरेव ॥ बोलिश एणि परे आचार, जोइ ले जो जाण विचार ॥ १ ॥ पंडित तें जे नाणे गर्व, ज्ञानी ते जे जाणे सर्व ॥ तपस्वी ते जे नाणे क्रोध, कर्म आठ जीते ते जोध ॥२॥ उत्तम ते जे बोले न्याय, धर्मी ते जे मन निरमाय ॥ ठाकुर ते जे पाले वाच, सद्गुरु ते जे भांखे साच ॥ ३ ॥ गिरुअ ते जे गुण आगलो, स्त्री परिहार करे तेभलो ॥ मेलोतेजे निंदा करे, पापी ते हिंसा आचरे ॥ ४ ॥ मूर्ति ते जे जिनवरतणी, कीर्ति ते जे बीजे सुणी लब्धि ते गौतम गणधार, बुद्धिअसिको अभय कुमार ॥ ५ ॥ श्रावक ते जे लहे नवतत्त्व, कायर ते जे मूके सत्व ॥ मंत्र खरो ते श्रीनवकार, देव खरो जे मुक्ति दातार ॥ ६ ॥ पदवी ते तीर्थंकर तणी, मति ते जे उपजे आपणी समकित ते जे साचु गमें, मिथ्यामति ते भूलो भमे ॥ ७ ॥ मोटो जे जाणे परपीड, धनवंतो जे भागे भीड ॥ मनवश आणे ते बलवंत, आ

लसथी अलगो पुण्यवंत ॥ ८ ॥ कामी नर ते कही ये अध, मोहजाल ते मोटो वध ॥ दारीद्री जे धर्मे हीन, दुर्गतिमाहे रुले ते दीन ए ॥ आगम ते ज्यां बोली दया, मुनिवर ते जे पाले क्रिया ॥ संतोषी ते सुखिया थया, दुःखीया ते जे लोभे ग्रह्या ॥ १० ॥ नारी ते जे होये सती, दर्शन ते उंघो मुहुपत्ति ॥ राग द्वेश टाले ते यति, सूधू जाणे ते जिनमती ॥ ११ ॥ काया ते जे शीलें पवित्र, मायारहित होए ते मित्र ॥ वृद्धपणु पाले ते पुत्र, धर्म हाण पाडे ते शत्रु ॥ १२ ॥ वैरागी ते विरमे राग, तारु ते भवतरे अथाग ॥ रौरव नरकतणो ए भाग, ठाग हणीने मागे त्याग ॥ १३ ॥ देहमांहे ते सारी जीह, धर्म थाय ते लेखे दीह ॥ रसमांही उपशम रस लीह, थूलीभद्र मुनिवरमां सिह ॥ १४ ॥ साचु ते जे जिनतु नाम, जिनतु देरु ज्या ते गाम ॥ न्यायवंत कहियें ते राम, योगी ते जे जीते काम ॥ १५ ॥ एह बोल बोल्या में खरा, सार नथी एथी उपरा ॥ कहे पमित लक्ष्मी कल्लोल, धर्म रग मन धरजो चोल ॥ ॥ १६ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ सामायिकना बत्रीश दोषनी सद्याय ॥

॥ चोपाइ ॥ शुभ गुरु चरणें नामी शीश सामायिकना दोष बत्रीश ॥ कहिशुं त्यां मननां दश दोष, दुशमन देखी धारतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक

अविवेकें करे, अर्थ विचार न हेडे धरे ॥ मन उछे ग वछे यश घणो, न करे विनय वडेरातणो ॥ २ ॥ भय आणे चिते व्यापार, फल संशयनी आणुं सार ॥ हवे वचनना दोष विचार, कुवचन बोले करे टुंकार ॥ ३ ॥ ले कुची जा घर उघाड, मुख लवरी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अ पार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरा दूषण बार, चपलासन जोवे दिश चार ॥ ५ ॥ सावद्य काम करे सवात, आलस मोडे उचे हाथ ॥ पग लवे वेसे अवनीत, उठिगन ल्ये थांभो भीत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग उपर चढावे पाय ॥ अति उघाडु मेले अग, ढांके तेम वली अग उपग ॥ ७ ॥ निडाये रस फल निर्गमें, करहा कंटक तरु ए भमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक कर जो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुभवीर वचन पा लती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ अइमताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अइमता मुनिवरजूकी, करणी की बलि हारी वे ॥ खट वर्षनके सजम लीनो, वीरवचन चित धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपत्ति श्री देवी नदन, पोलासपुर अवतारी वे ॥ अग अग्यार

पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ ॥ श्री० ॥ २ ॥ तप गुण रयण सवत्सर आदिक, करकें काय उछारी वे ॥ प्रभु आदेशें विपुलाचल पर, करी अणसण अति भारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर कर्म कलक निवारी वे ॥ अढारसें अमतालें तिहि गिरि, कीनी थापना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य क्षमा कल्याण हरख धर, गुण गावे जयकारी ते ॥ ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति अइमंता मुनिनो सद्याय ॥

॥ अथ समकेतनी चोपाइ ॥

॥ धुर प्रणमु जिनवर चोवीश, सविगणधरने नामुं शीश ॥ तेहनां वयण सुणे जे कान, मन राखे समकितने ध्यान ॥ १ ॥ साचो देव एक वीतराग, धर्म तणो जेणें दाख्यो माग ॥ ते जिनवरनी पालु आण, जे होये साचा सुगुरु सुजाण ॥ २ ॥ पच महाव्रत मनमा धरे, राग द्वेष पेहेलु परिहरे ॥ चारित्र पालेटाले दोष,लीये आहार थोडे संतोष॥३॥ दोषमाहे जे आधाकर्म, टाले ते त्रोडे आठ कर्म ॥ आधाकर्म करे नर नार, ते पण घणुंए रुले ससार ॥ ४ ॥ मूकी देह तणा सुखवास, सहे परीसह बारे मास ॥ तपे करिने जेणे जस लाध, वंदनिक ते त्रिभुवन साध ॥ ५ ॥ एक सयमने बीजी क्षमा,

शत्रु मित्र जेहने वेहु समा ॥ दृष्टिराग तरी उतरी ते जाशे भव सायर तरी ॥ ६ ॥ एकआपणु करी मन ठाम, भणेगुणे सिद्धांत तमाम ॥ सद्गुरुनो उपदेश आचार, जोइ समजो हैये विचार ॥ ७ ॥ एकपहेरे मुनिवरनो वेश, पण साचो न दीये उपदेश ॥ जेह उत्थापे जिनवर वयण, तेहने किहां हियानां नयण ॥ ८ ॥ घर मूकीने थया माहातमा, ममता जड लागा आतमा ॥ मारु मारु एम कहे घणु, तेह मूरख वदनता पणुं ॥ ९ ॥ एक त्यागी दीसे छे इस्या, लोभे शिष्य करे अण कश्या ॥ पंच महाव्रत कहे, उचरे, उपशम रस ते कहो किम गरे ॥ १० ॥ आधाकर्मी वहोरे घणो धरम विगोवे जिन वरतणो यत्र तत्र मूली करी करी, चूरण आपे घर घर फरी ॥ ११ ॥ कुगुरु तणा जाणी अहि नाण, सेवा न करे जे होये जाण ॥ जिनवाणी साभलीये इसी, सोनु गुरु वे लीजे कसी ॥ १२ ॥ सोनाथी होय एकज वहाण कुगुरुकरे भव भवनीहाण, सोने घाठा पण ते मले, कुगुरु पसाये भव भव रुले ॥ १३ ॥ सर्प डसे हुए भवनो अत, कुगुरु करे संसार अनत ॥ एम जाणी वली लीजे साप, कुगुरु नमि नवि बोलियें आप ॥ १४ ॥ एक वहे जिनवरनी आण, वैर वहे तिहा एक अजाण ॥ एह आपणा नही गुरु एम, बोली लीये वदतु तेम ॥ १५ ॥ एक भणे

मारा गुरु देव, मे करवी एहि जनी सेव ॥ पक्ष तणा स्वामीने मान, अवर पक्षने दे अपमान ॥१६॥ एक सगा जाणी माहातमा, गुणपाखें तारे आतमा॥ पात्र जणी पूजे तेहने, समकित केम छे तेहने ॥ ॥ १७ ॥ देखी परखी गुरु गुणवंत, श्रावकने मनसं यमवंत ॥ एह आपणा नही इम जणे, दान मान सघले अवगणे ॥ १८ ॥ एका ने गढनो अनुराग, पण न लहे साचो जिनमाग ॥ वीर वचन लेइने पाधरु, कुगुरु सुगुरु जोइ आदरुं ॥ १९ ॥ जेहने आगमनु वहु मान, तेहना उघडे एणे कान ॥ ए साधारण गुरुनी वात, जइने जोस्ये मुक्ति मात ॥ ॥ २० ॥ हृदय नयन तम जुउं सुजाण, ठमो कुगुरु ए जिन आण ॥ सद्गुरु तणा चरण आचरो, जेम भवसायर लीलाये तरो ॥ २१ ॥ जे जिन आण व हे निशदीश, ते उपर जे नाणे रीश ॥ नवे तत्व निरता सद्दहे, सूधू समकित छेते कहे ॥२२॥ एहवुसम कित सूधुं जाण, धर्मकाजनु म करीश काण ॥ जिनवर पूजासद्गुरु भक्ति, भावें करवी आतम सक्ति ॥ २३ ॥ पडिक्कमणुने फासु नीर, कीजें धर्म कह्यु जे वीर ॥ धर्मे ऋद्धि स्त्रिद्धि घर हूत, धर्मे संकट सवि भाजत ॥२४॥ धर्मे सूर्य निरतो तपे, धर्मे पाप करम सवि खपे ॥ धर्मे होये रुपनो योग, धर्मपसायें सपत्ति भोग ॥२५॥ भणे गुणे ने वहु तप

करे, पण समकित सूधुनादरे ॥ समकित विण ते सहुए फोक, समकित आदर करवु रोक ॥ २५ ॥ समकित माय बाप ससार, समकित सुख सपत्तिनो सार ॥ समकित एह धर्मनु मूल, समकितथी सहुए अनुकूल ॥ २७ ॥ समकित ऋद्धि सिद्धि घर घणी समकित लगे होये सुर धणी ॥ समकित सीजे सघला काज, समकित लगे त्रिजुवननु राज ॥ २८ ॥ समकित सहितनुं सुणो प्रमाण, कृष्णरायनु जुउं मकाण ॥ तपविण श्रेणिक राजह धणी, लेशे पदवी अरिहत तणी ॥ २९ ॥ समकित पालेजे नर नार, वली नआवे ते ससार ॥ एम जाणी समकित आदरो, सिद्धि रमणी जेम लीला वरो ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ आत्मशिक्षा सद्याय ॥ राग रामग्रीमा सहेजानंदी देशी ॥

॥ आतमरामेरे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय रे ॥ ताहारु दीसे न कोय रे, सहु स्वारथी मल्युतोय रे, जन्म मरण करे लोयरे, पूछें सवि मली मली रोय रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि कारिमु, कूमो कुटुव परि वार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म विण नहीं कोइ आधार रे, जिणें पामे भव पार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अनत कलेवर मूकीया, ते कीया सगपण अनत रे ॥ भव उठेगे रे तु

जम्यो तोही न आव्यो तुज अंत रे ॥ चेतो हृदय मां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जोग अनंता तें जोग व्या, देव मणुए गतिमांहे रे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे जीवको, हजी तुज वांछा छे त्यांहिरे, आण संतोष चित्तमांहि रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान करो रे आतम तणुं, परवस्तुथी चित्त वारी रे ॥ अनादि संबंध तुज को नहीं, शुद्ध निश्चे इम धारी रे इणविध नि ज चित्त ठारी रे, मणिचद्र आतम तारी रे॥आ०५

॥ अथ समय सुदरजीकृत मायानी स्वाध्याय ॥

॥ माया कारमी रे, माया म करो चतुर सुजाण ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ मायाये वाह्या जगत विमुह्या, दुखीया थाये अजाण ॥ मा० ॥ १ ॥ न्हाना महोटा नरने माया, नारीने अधिकेरी ॥ वली वि शेषे अतिघणी व्यापे, घरमाने काजेरी ॥ मा० ॥२॥ योगी जगम यती सन्यासी नग्नथइ परवर्या ॥ उधे मस्तक अग्नि धखती, मायाथी नवि फरिया ॥मा०॥ ॥ ३ ॥ माया मेली करी वहु जेती लोजें लक्षण जाय ॥ चोर करें धरतीमा घाले, उपर विमहर थाय ॥ मा० ॥ ४ ॥ माया कारण दुरदेशांतर, अ टवी वनमा जाय,प्रवहण वेसीहो पदि पोतर सायरमा जपाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ शिवभूति सरिखा सत्यवादी, सत्यगोप कहावे ॥ रतन देखी मन तेहनु चलीउ, मरीने दुर्गति जावे ॥ मा० ॥ ६ ॥ लब्धिदत्त मा

याये नरीयो, पडीयो समुद्र मझार ॥ मुख माल णीउ थइने मरीयो, पडीयो नरक दु वार ॥ मा० ॥ ४ ॥ इंद्रे तो सिंहासनथापी, सद्रये माया राखी ॥ नेमीसर तो माया मेली, मुगतीमा थया साखी ॥ मा०॥७॥ मन वचन कायाये माया, महेली वनमा जाय ॥ धन्य धन्य तेह मुनि सर जेहना तीन भवन गुणगाय ॥ मा० ॥ ए ॥ एवु जाणीने भविप्राणी, माया मूको अलगी॥ सम यसुदर कहे सार छे जगमा, धर्म रगशुं वलगी ॥ मा० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शीलविषे सद्याय ॥

॥ रखेकोइ रमणी रागमा, प्राणी मुजाउं ॥ अथिर ए बाला उपरे, थिरशाने थाउं ॥ १ ॥ एतो अनरथनु आश्रम छे, कलेशनो छे कदो ॥ वैरोदधी पूर वधारवा, आवो पूनमचदो ॥ र० ॥ २ ॥ कुलटा नारीने कारणें, केइ कुलवंता ॥ आचरण हीणा आचरे, वहालाशु वेढता ॥ र० ॥ ३ ॥ दुखनी ए सुदरी, दुरगतीनी दाता ॥ आगमथी ल्यो उंलखी, गुण एहना ज्ञाता ॥ र० ॥ ४ ॥ रांम मीठी करी लेखवे' मलता मूढप्राणी ॥ उदेवदे कहीये पछे, जिनमतीये जाणी ॥ र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मुनि दान विजयजी कृत कर्म उपर सज्झाय ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

सुख दु ख सरज्या पामीयें रे, आपद सपद होय ॥

लीला देखी परतणी रे, रोष म धरजो कोय रे, ॥ प्राणी मन नाणों विष वाद ॥ एतो कर्मतणा पर साद रे ॥ प्रा० म० ॥ १ ॥ फलने आहारे जीवीआ रे, बार वसर वन राम ॥ सीता रावण लइ गयो रे कर्म तणां ए काम रे ॥प्रा०॥२॥ नीर पाखे वन एकलो रे मरणपाम्यो मुकुद॥नीच तणे घर जल वह्यो रे,शीसधरी हरिचंद रे॥प्रा०॥३॥नले दमयंति परिहरी रे, रात्रि समय वन बाल ॥ नाम ठाम कुल गोपवी रे, नले निरवाह्यो काल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ रुप आधिक जग जाणीये रे, चक्री सनत कुमार ॥ वरस सातशें जोगवी रे, वेदना सात प्रकार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ रुपें वली सुर सारिखा रे, पांडव पांच विचार ॥ ते वन वासें रुवड्या रे, पाम्या दुःख संसार रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ६ ॥ सुरनर जस सेवा करे रे, त्रीजुवनपति विख्यात ॥ ते पण कर्मविटवीया रे, तो माणस केइ मात रे, ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ दोष न दीजे केहने रे, कर्मविटवण हार ॥ दान मुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुखकार रे ॥प्रा०॥८॥ इति कर्मनी स्वाध्याय ॥

॥ अथ सुमति विलाप सद्याय प्रारंभ ॥

॥ पमजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो मोहमहे राण ॥ वालो महरो निजघरें नावीयो, एणे परघर कीधां प्रयाण ॥ वा० ॥ इम कहे सुमती सुजाण ॥

वा० ॥ १ ॥ दांतपाडुंरे डुती तणा, पाडोसणना लउ प्राण ॥ जेणे महारो जीवन जोंलव्यो ॥ लइ ना ख्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥ मायर्यें मद पाइ रे, वास्यो पोताने वास ॥ माहारोने वासो एणें टा लीयो, इणे मुज कीधी निरास ॥ वा० ॥ ३ ॥ गुण वंतना गुण गोपवी, निगुणाशु माडे गोठ ॥ आप स्वरुप न ओलखे, एतो पापनी चलवे पोठ ॥ वा०॥ ॥ ४ ॥ अपूज्य साथे धरे आसकी, एतो पूज्यना पूजे पाय ॥ परम महोदय पामशे ज्यारें आवशे आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ श्रीदादापास पसाउलें, मेतो कुमतीनो पाम्यो कोट ॥ घरें आण्यो निज घरधणी, मेतो शोकनी चूकवी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥ उदयरतन वाचकवदे, पूजशे जे प्रजुना पाय ॥ ते परमपदें पधारशे, वली सपद लेशे सवाय ॥वा०॥७॥

॥ अथ श्री शांतिनाथनो दशमो भव मेघरथ राजानी सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ दशमें भवेश्रीशांतिजी, मेघरथ जीवडा राय रूडाराजा ॥ पोसह शालामां एकला, पोसह लीयो मन भाय ॥ रूडा राजा ॥ धन्य धन्य मेघरथ राय जी, जीवदया गुण खाण ॥ धर्मी राजा ॥ धन्य० ॥ ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ इशानाधिप इंद्रजी, वखाण्यो मेघरथ राय ॥ रुडा राजा ॥ धर्में चलाव्यो नवि च ले, महासुर देवता आय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य०॥२॥

पारेवुसींचाणा मुखे अवतरी, पडीयु पारेवुं खोला मांय ॥ रुडा राजा ॥ राख राख मुज राजवी, मुज ने सींचाणो खाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ सींचाणो कहे सुणो राजीया, ए छे महारो आहार ॥ रुडा राजा ॥ मेघरथ कहे सुण पखीया, हिंसाथी नरक अवतार ॥ रुडा पखी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ शरणे आव्युं रे पारेवडुं, नहीं आपु निरधार ॥ रुडा पखी ॥ माटी मगावी तुजने देउ, तेहनुं तुं कर आहार ॥ रुडा पखी ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ माटी खपे मुज एह नी, कां वली ताहरी देह ॥ रुडा राजा ॥ जीवदया मेघरथ वसी, सत्य न मेले धर्मी तेह ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ काती लेइ पिम कापीनें, ले मांस तु सींचाण ॥ रुडा पखी ॥ त्राजुए तोलावी मुजने दीउं, ए पारेवा प्रमाण ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥७॥ त्राजुउं मगावी मेघरथ रायजी, कापी कापी मुके छे मस रुडा राजा ॥ देवमाया धारण समी, नावे एकण अंश ॥ रुडा राजा ॥ धन० ॥ ८ ॥ नाइ सुत राणी वलवले, हाथ झाली कहे तेह ॥ घेला राजा ॥ एक पारेवाने कारणे, शुं कापोछो देह ॥ घेला राजा ॥ धन्य० ॥ ए ॥ महाजन लोक वारे सहु, म करो एवडी वात ॥ रुडा राजा मेघरथ कहे धर्म फल नलां, जीवदया मुजधात ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ॥ १० ॥ त्राजुयें वेठा राजवी, जे नावे ते खाय ॥

रुडा पखी ॥ जीवथी पारेवो अधिको गण्यो, धन्य पिता तुज माय ॥ रुडा राजा धन्य० ॥ ११ ॥ चड ते परिणामे राजवी, सुर प्रगट्यो तिहां आय ॥ रुडा राजा ॥ खमावे बहुविधे करी, लली लली लागे छे पाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ इंद्रे प्रशंसा ताहारी करी, तेहवो तु छो राय ॥ रुडा राजा ॥ मेघरथ काया साजी करी, सुर पोहोतो निज ठाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ संयम लीयो मेघरथ रायजी, लाख पूरवनु आय ॥ रुडा राजा ॥ वीशस्थानक विधें सेविया, तीर्थंकर गोत्र बधाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ इग्यारमे भवें श्रीशांतिजी, पोहोता सर्वार्थसिद्ध ॥ रुडा राजा ॥ तेत्रीस सागर आउखु, सुख विलसे सुर रिद्ध ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ एक पारेवा दयाथकी, वे पदवी पाम्या नरिंद ॥ रुडा राजा ॥ पाचमा च क्रवर्त्ति जाणियें, शोलमा शांतिजिणंद ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ बारमे भवे श्रीशांतिजी, अचिरा कूखेअवतार ॥ रुडा राजा ॥ दीक्षालेइने केवल व ख्या, पहोता मुगति मोझार ॥ रुडा राजा ॥ १७ ॥ त्रीजेभवे शिवसुख लह्यो, पाम्या अनंतु ज्ञान ॥ रुडा राजा ॥ तीर्थंकरपदवी लही, लाखवर्ष आयु जाण ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १८ ॥ दयाथकी नव निधि होवे, दया ये सुखनी खाण ॥ रुडा राजा ॥

भव अनंतनी ए सगी, दया ते माता जाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १९ ॥ गजभवे शशलो राखियो, मेघकुमार गुण जाण रुडां राजा ॥ श्रेणिकराय सुत सुख लह्यां, पोहोता अनुत्तर विमान ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ २० ॥ एम जाणी दया पालजो, मनमांहे करुणा आण ॥ रुमा राजा समयसुदर एम वीनवे, दयाथी सुख निरवाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥२१॥

॥ अथ श्री लब्धिविजयजी कृत पंदर तिथिनी पंदर ॥ सद्याय प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमद्गोडी जगधणी, दायक शिवगति जेह ॥ अलिय विघन दूरे हरे, टाले दुरित अठेह ॥ १ ॥ सुधादृष्टि होवे सदा, एहवी जेहनी दृष्टि ॥ उरग तजी सुरपति कह्यो, गिरुउं गुणें गरिष्ट ॥ २ ॥ भावियपद पकज सदा, हुं नित्य प्रणमुं तास ॥ सकल मनोरथ पूरवे, ते वीशमो जिनपाश ॥ ३ ॥ भावे प्रणमू भारती पूरे पूरण आश ॥ मूरखनें पडित करे, आपे वचन विलास ॥ ४ ॥ (पांठांतरें) मूरखने पडित करे, जेवी तुज आरयत ॥ वचन सुधारस पोषवा, वर दे शारद मातु ॥ ४ ॥ शक्ति नहि सिद्धातनी, बुद्धि नही लवलेश ॥ वचन विलास करी कहुं, ते पण नहि सुविशेष ॥ ५ ॥ पण मुज एक आधार छे, सगुरु तणो पसाय ॥ तस अनुभावें उपजे, वचन सदा सुखदाय ॥ ६ ॥ आगमना

अनुसारथी, आणी मन पवित्र ॥ पदर तिथि सात वारना, पजणु तेह चरित्र ॥ ७ ॥ जिम मृग नाद लीनो थको, निसुणे थइ एक रग ॥ तिम सु णजो जवियण तुमें, आणी चित्त अजग ॥ ८ ॥

॥ अथ प्रतिपदानी सद्याय प्रारज ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ पहेली तिथि एणीपरे वदे रे, साजलो प्राणी सार ॥ एक धर्म जग आदरो रे, जाणी अथिर सं सार रे प्राणी ॥ धरजो धर्मशु राग, जिम पामो जवतागो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दश दृष्टांते दोहिलो रे, मानवजव अवतार ॥ पामी धर्मने सद्दहो रे, पामो जिम जयकारो रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ध० ॥ २ ॥ धर्म वको ससारमां रे, जांखे श्रीकी रतार ॥ सुरमणिसम ए धर्म छे रे, अनवकियां आ धारो रे ॥ प्र० ॥ ध० ॥ ३ ॥ धर्मथकी सपद मले रे, धर्मथकी नवनिधि धर्मथकी संकट टले रे, धर्म थकी ऋद्धि वृद्धि रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ४ ॥ जुउं धर्म प्रजावथी रे, चक्री जरत नरेंद्र ॥ अजरामर पद शाश्वता रे, पाम्यो परमाणदो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ॥ ५ ॥ जे नर जिनधर्म पामीने रे, करशे प्रमाद लगार ॥ तो पडवे कहे जीवको रे, पडशे नरक म झारो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ६ ॥ एम जाणी जवि जा

वशुं रे, कीजे अनुत्तर धर्म ॥ विजय लब्धि सदा लहो रे, ठमी मिथ्या भरमो रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वितीयानीसजझाय प्रारंभ ॥

॥ कोडलो वर्वत धुधलो रे लो ॥ ए देशी ॥ वीज कहे भव्य जीवने रे लो, निसुणो आणी रीझ रे ॥ सुगुणनर ॥ सुकृतकरणी खेतमे रे लो, वावो समकित वीज रे ॥ सु० ॥ धरजो धर्मशु प्रीतमी रे लो, करि निश्चय व्यवहार रे ॥ सु० ॥ इह भवे परभवे भवोभवे रे लो, होवे जयु जग ज यकार रे ॥ सु० ॥ धर० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कि रिया ते खातर नाखिये रे लो, समता दिजें खेम रे ॥ सु० ॥ उपशम नीरे सींचीये रे लो, उगे जयुं समकित ठोम रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ २ ॥ वाम करो सं तोपनी रे लो, तस पांखमी चिहु ठोर रे ॥ सु० ॥ व्रत पच्चरकाण चोकी ठवो रे लो, वारे यु कर्मना चोर रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ अनुभव केरे फूलडे रे लो, महोरे समकित वृक्ष रे ॥ सु० ॥ श्रुतिचरित्र फल उतरे रे लो, ते फल चाखो शिक्षरे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ४ ॥ ज्ञानामृत रस पीजीये रे लो, स्वाद ल्यो साम्य तांबूल रे ॥ सु० ॥ इण रसे सतोष पामशो रे लो, लेहशो भवनिधि फूल रे ॥ सु० ॥ ध० ॥५॥ इण विध वीज तमे सद्दहो रे लो, ठांडी राग ने द्वेष रे ॥ सु० ॥ केवल कमला पामीये रे लो, वरि

यें मुक्तिविवेक रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ६ ॥ समकित बी ज ते सद्दहे रे लो, ते टाले नरक निगोद रे ॥सु०॥ विजय लब्धि सदा लहे रे लो, नित नित विविध विनोद रे ॥ सु० ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीयानी सद्याय प्रारंभ ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥ त्रीज कहे मुजउलखी रे, आदरो देवगुरु धर्म ॥ जनम जरा मृत्यु छुटस्यो रे, टालो भवभय कर्म ॥ भविकजन, धरजो धर्मशु राग ॥ जिम पामो भ वनिधि ताग ॥ भ० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोहिनी त्रणे परिहरो रे, राखो मन नि शल्य ॥ गा रव त्रणे मत करो रे, छको त्रएये शल्य ॥ भ० ॥ ध० ॥ २ ॥ मानव भवमां मोटका रें, कहिया तीने रत्न ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र अछे रे, तेहनु करिये य त्न ॥ भ० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ए त्रएये रत्नयोगथी रे, पा मियें त्रीभुवन राज ॥ श्रीभगवत शकारशे रे, सर शे वछित काज ॥ भ० ॥ ध० ॥ ४ ॥ त्रिवर्गनां सुख मेलवो रे, आणी त्रएये योग ॥ मन वचन काया योगथी रे, टालो कर्मना रोग ॥ भ० ॥ ध० ॥ ५ ॥ त्रण गुप्ति सूधी धरे रे, जे नर त्रीज आराधि ॥ वि जयलब्धि ते पामशे रे, दिन दिन सुख समाधि ॥

॥ अथ चतुर्थीनी ..

॥ कपूर हवे अति ७

चोथ कहे भवि सांभलो रे, माहरा गुण अ भिराम ॥ माहरी शीखें चालशो रे, तो लेशो मुक्तिनु ठाम रे ॥ प्राणी, जिनवाणी धरो चित्त ॥ ए तो आणी मन शुभ रीत रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विकथा चारे परिहरो रे, परिहरो चार कषाय ॥ क्षमा रुपी धन सचिये रे भवोभव पातक जाय रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ २ ॥ त्रिगडे बेसी जिनवरें रे, भांख्यो चउविह धर्म ॥ दान शियल तप भावना रे, ए चारे सुखनां हर्म्य रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ३ ॥ दानें ते दोलत पामीयें रे, शीलें जस सौभाग्य ॥ तप करी कर्म विनाशिये रे, भावे भाव ठ भाग रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ४ ॥ भवनिधि पार उतारवा रे, ए चारे नाव समान ॥ सकल पदारथ आपवा रे, ॥ ए चारे प्रगट निधान रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ५ ॥ इम जाणी पुण्य कीजीयें रे, सांभली सदगुरु वाणी ॥ चिहुं गतिनां दुःख टालीये रे, होवे कोडी कल्याण रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ चोथ तणा गुण जाणिने रे, जे धरे चउ धर्मद्वार ॥ विजय लब्धि सदा लहे रे, साधि पदारथ चार रे ॥

॥ अथ पंचमीनी सद्याय प्रारभ्यते ॥

॥ जय जगनायक जगगुरु रे ॥ ए देशी ॥

पुनरपि पांचम एम वदे रे, साभलो प्राणी सुजाण ॥ श्रीजिन अनुमतें चालीये रे, जिम ल

हिये सुखनी खाण ॥ १ ॥ भविक जन, धरजो धर्म शु प्रिति ॥ ए तो आणी मन शुभ रीत ॥ भ० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ आश्रव पच दूरें करी रे, कीजे सवर पंच, सुमिति सखी शुभ पालीने रे, तुमें मेलो शिव वधूसच ॥ भ० ॥ ध० ॥ २ ॥ पच महाव्रत अनुसरी रे, पालों पच आचार ॥ त्रिकरण शुद्धिये ध्याव जो, रे पचपरमेष्टी नवकार ॥ भ० ॥ ध० ॥३॥ समकित पच आजुवालजो रे, धरजों चारित्र पच ॥ पच भूषणनें पडिवजी रे, टालो दुषण पंच ॥ भ० ॥ ध० ॥ ४ ॥ मत करो पच प्रमादनें रे, मत करो पंच अतराय ॥ पचमी तप शुभ आदरो रे, जिम दिन दिन दोलत थाय ॥ भ० ॥ ध० ॥ ५ ॥ पचमी तप महिमा घणो रे, कहेता नावे पार ॥ वरदत्तनें गुणमजरी रे, जुठ पाम्या भवनो पार ॥भ०॥ ध० ॥ ६ ॥ पांचमी एम आराधीये रे, लहिये पच ज नाण ॥ चउद रज्जवात्मक लोकना रे, एतो मनपज्जव शुभ जाण ॥ भ० ॥ ध० ॥ ७ ॥ घनघाति कर्म खपावता रे, वाजे हो मगल शब्द ॥ पचमी गति अविचल लहे रे, तिहा सुख अनत सुलब्द ॥ भ० ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ षष्ठीनी सद्याय प्रारभ ॥

॥ दोहा ॥ इण विध पाचे तिथि भलि बोली शुभ परिणाम ॥ एक एकथी चढते गुणें, मनोहर

छे अभिराम ॥ १ ॥ छठी तणा गुण वर्णवु, मूकी मन अभिमान ॥ हवे भवियण भावे करी, निसुणो थइ सावधान ॥ २ ॥ ढाल ॥ कुवखमानी देशी ॥ छठी कहे मुज उलखी रे, छटको पापथी दूर सनेहा सांभलो छकाय रक्षा कीजीये रे, होवे जयुं सुखसनूर ॥ स० ॥ १ ॥ चार कषाय राग द्वेषने रे, नाखजो दूर विकारि ॥ स० ॥ छए द्रव्यने उलखी रे, पालो निरतिचार ॥ स० ॥ २ ॥ समकित शुद्ध जगावियें रे, भांगिये दुखनी वेलि ॥ स० ॥ मग्न रहो जिनधर्ममें रे, नाखो कुगति उखेलि ॥ ॥ स० ॥ ३ ॥ छठ आराधो भावशु रे भवियण थइ उजमाल ॥ स० ॥ भकित मुकित सदा लहो रे, होवे यु मगल माल ॥ स० ॥ ४ ॥ लब्धि कहे सा जन तुमे रे, म करो प्रमाद लगार ॥ स० ॥ दिन दिन संपदा अभिनवी रेहोवे श्री श्रीकार ॥स०॥५॥

॥ अथ सप्तमीनी सद्याय प्रारभ ॥

॥ लुहारणे जायो दीकरो सो नारी हे ॥ ए देशी ॥ सातम कहे सात आतमा ॥ सुखकारी हे ॥ प्राणी राखीयें सोय ॥ सदा सुखकारी हे ॥ सुख आवे गर्व न कीजीये ॥ सु० ॥ दुःख आवे दीन न होय ॥ स० ॥ १ ॥ सात भय निवारियें ॥ सु० ॥ छमिये मिथ्या शस ॥ स० ॥ सात अमीरस कुरुमां ॥ सु० ॥ झलीये थइने हंस ॥

॥ स० ॥ २ ॥ सातम दिन साखे तमे ॥ सु० ॥ वा वीयें द्रव्य विशेष ॥ स० ॥ सुकृतकर्पण उगीनें ॥ ॥ सु० ॥ उपजे धान्य विवेक ॥ स० ॥ ३ ॥ वाम करो तुमे शीलनी ॥ सु० ॥ तस पांखमी चिहुं छोर ॥ स० ॥ चोकी छवो सही धर्मनी ॥ सु० ॥ अध को न करे जोर ॥ स० ॥४॥ मनरुपी माल वनावियें ॥सु०॥ वेसी यें तिहा सावधान ॥स०॥ विरतिरुपी गोफणे करी ॥ सु० ॥ नाखियें गोला शान ॥ स० ॥ ५॥ दुष्कृत पखी उमाडीये ॥ सु० ॥ करी निश्चयव्यव हारे ॥स०॥ पोंक आरोगिये पुण्यना ॥ सु० भवियण थइ हुशियार ॥ स० ॥ ६ ॥ सात नय जाणी तुमें ॥ सु० ॥ तद्रूपी खलां वनाव ॥ स० ॥ करुणारस जल आणीने ॥ सु० ॥ सात नय खलां पिवराव ॥ ॥ स० ॥ ७ ॥ जीवदया सकटे भरी ॥ सु० ॥ सुकृत कर्पण सार ॥ स० ॥ सवर वलदने जोतरी ॥ सु० ॥ आणिये खला मझार ॥ स० ॥ ८ ॥ ध्यानरुपी थभ रोपीने ॥ सु० ॥ लणिये रूपक सयोग ॥ स० ॥ जि नआण सही भावीये ॥ सु० ॥ हालरुआं अशोक ॥ स० ॥ ९ ॥ दुखरुपी वूरा झाटकी ॥ सु० ॥ ना खियें दूर सुजाण ॥ स० ॥ आतमवल भंडारमें ॥ ॥ सु० ॥ भरजो सुकृत ध्यान ॥१०॥ स० ॥ इह भव परभव भवो भवे ॥सु०॥ पामिये सुख विचित्र ॥स०॥ सतोष राखी आतमा ॥ सु० ॥कीजे पुण्य पवित्र ॥

॥ स० ॥ ११ ॥ लब्धि कहे जविश्ण विधें ॥ सु० ॥ आदरे प्राणी जेह ॥ स० ॥ सात रज्ज्वातम जेदीनें ॥ सु० ॥ सवि सुख लेहेशे तेह ॥ स० ॥१२॥इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ आठम कहे आठ मदनो, प्राणी मूको ते ठाम रे जवियण हित धरी ॥ आठ प्रकारें आतमा, उंलखो तुमें अजिराम रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिक्कमणां पोषा करी, तोडो दुःखना वर्ग रे ॥ ज० ॥ सुमिति गुप्ति सूधां धरी, मेलो सुख अपवर्ग रे ॥ ज० ॥ २ ॥ अष्ट महागुण सिद्धना, ध्यावो ते निश दीस रे ॥ ज० ॥ अष्ट महासिद्ध सपजे, पहोचे मनह जगीश रे ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ जिनदेवनी करो हाजरी, दिल पाक करी मन कोड रे ॥ ज० ॥ मनरुपी घोडो वनावियें, गुरु ज्ञान लगाम जोड रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ शीलनी पाखर नाखीयें, तपरुपी खड्ग लेइ हाथ रे ॥ ज० ॥ क्षमा बक्तर पेहेरीनें, ध्यान कबाण सलोथ रे ॥ ज० ॥ ॥ ५ ॥ विरति तीर चलाविने, अष्ट करम मद मोडि रे ॥ ज० ॥ विषय कषाय जे आकरा, तेहना ते मस्तक तोडि रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ श्रीजिन आगल आवीनें, मजरो करो कर जोडि रे ॥ ज० ॥ श्रीजिन केरा पसायथी, मोक्ष शहेरें जाउं दोडी रे ॥ ज० ॥ ॥ ७ ॥ आठम दिन शुज जाणिनें, धर्मनां करिये

वखाण रे ॥ ज० ॥ कपटनो कोट उमाडियें, वाजे यु जीत निशान रे ॥ ज० ॥७॥ इणि परें अष्टमी जा वशु, आदरे प्राणी जेह रे ॥ ज० ॥ लब्धि कहे ज वि तस घरे, प्रगटी पुण्यनी रेह रे ॥ ज० ॥९॥इति

॥ अथ नवमीनी सद्याय प्रारंज ॥

॥ वन्यो रे विद्याजीनो कलपनो ॥ ए देशी ॥ जीरे नवमी कहे नमीये सदा, एतो श्रीजनकेरां विव हो विशेष ॥ नव अंगे पूजा वनावीये, ए तो मूकी मननो दंज हो ॥ विशे० ॥१॥ ए आकणी ॥ जवियण शुजजावे करी ॥ ठमो विषयकषाय अतीव हो ॥ वि० ॥ स्नात्र महोत्सव कीजीयें, एतो दीजे दान सदीव हो ॥ वि० ॥ ज० ॥२॥ जीरे पूजा ज क्ति प्रजावना, करि रोपे जे कीर्ति थंज हो ॥ वि० ॥ सुख अनता ते वरे, तस जस जणेसुर रग हो ॥ ॥ वि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिरे जिन आगे स्तवना जा वशु, एतो जे करे नाटारंज हो ॥ वि० ॥ लाज अ नतो जिन जणे, जुउ महिमा जाव अचंज हो ॥ ॥ वि० ॥ ज० ॥ ४ ॥ जिरे जिन स्तवना गुण गाव ता, एतो समकित होये उद्योत हो ॥ लकापति रा वण परे, एतो वाधि तीर्थंकर गोत हो ॥ वि० ॥ ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिरे अरिहंत जक्ति प्रजावथी, ए तो जाये जवनां पाप हो ॥ वि० ॥ जिरे नव निधा न सुख सपजे, वली होवे यु अविक प्रताप हो ॥

॥ वि० ॥ ज० ॥ ६ ॥ जिरे नवपद ध्यान सदा ध री, ए तो पालीये नव विध शील हो ॥ वि० नव नोकषायने परहरी, एतो लहीये सुखनी लील हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ ७ ॥ जिरे नवेतत्त्वने ओलखी, ए तो पामी मनुष्य अवतार हो ॥ वि० ॥ शत्रुमित्र स रिखा गणो, एतो सकल जलु निर्धार हो ॥वि०॥ज०॥ ॥ ८ ॥ जिरे उपकार ते कीजीये, ए तो टालीये प रनी पीड हो ॥ वि० ॥ नवमीये नवपुण्य अनुसरी, ए तो जांगीये जवनी जीड हो ॥ वि० ॥ ज० ॥९॥ जिरे इणविध नवमी प्रमोदशु, एतो आदरे प्राणी जेह हो ॥ वि० ॥ लब्धिविजय रंग करी, एतो शि वसुख लेहशे तेह हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ १० ॥ इति॥

॥ अथ दशमीनी सद्याय प्रारंभ ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ दशमीयें डुपमन वारियें काम क्रोध मद जोर रे ॥ दशविध यति धर्म आचरी, कापीये डुख तणी दोर रे, लाल सुरगारे अत्तमा वहिये धर्मनी होररे प्रग टे पुण्यनो तोर रे, लहियें मुक्तितनु ठोर रे, वाधे जस चिहुं ओर रे ॥ ला० ॥ १ ॥ दशविध विनय अभ्यासथी, तोडीये मोहजजाल रे ॥ दशविध मिथ्या त्व परहरी, ठमीयें आल पपाल रे ॥ ला० ॥ मेली ये सुकृतमाल रे, प्रगटे जाग्य विशाल रे, होवे मंग लमाल रे, लहिये सुख ततकाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥

त्रस थावर सर्व जीवने, सज्ञा कही तस रंग रे ॥ सज्ञा प्रत्ये उंलखी, कीजे गुरुनो प्रसंग रे ॥ ला० ॥ सज्ञा धर्म न चग रे, राखीये चित्त अभग रे, सुख तटिनी वहे अग रे, उलटे ज्यु गगरग रे ॥ ला० ॥ ॥ ३ ॥ दशविध प्राण त्रस जीवने, भांखे जिनवर वीर रे ॥ ते दश प्राण तु पामीनें, धरिये, मन दया धीर रे ॥ ला० ॥ दशविध सुख शरीर रे हरियें द श विध पीर रे, तोडीये दु खजजीर रे, पामीये भ वोदधि तीर रे ॥ ला० ॥४॥ दश पच्चरकाण सिद्धांत मे, पाख्यां छे सहि बोल रे ॥ तेहमा नित्य एक भा वशुं, करे पच्चरकाण अमोल रे ॥ ला० ॥ जाण ला भ अतोल रे, मुकितशु करि वध कोल रे, लब्धि भणे दिल खोल रे, वाजे जीतना ढोल रे ॥ला०॥५॥

॥ अथ एकादशीनी सद्याय ॥

॥ दोहा एम दशतिथि अधिकार अथ, किंचित् कह्यो चरित्र ॥ शास्त्र तणा अनुसारथी, वर्णन करी विचित्र ॥ १ ॥ हवे एकादशितिथि तणा, कहे सूरि जन माहाराज ॥ त्रिकरण करीने आतमा, निसुणो थइ मृगरज ॥२॥ ढाल ॥ नथरो नगीनो माहरो ॥ ए देशी ॥ हवे एकादशी इम वदे, भवि, जन ठडी यें विषयासक्त हो ॥ वसन उंढो निर्विकारनां ॥ ॥ भ० ॥ जेहनी छे सबल प्रतीत हो ॥ १ ॥ गुणना न सुख भवी, [illegible] ी सही होइ ऐ ॥ भ० ॥

पामी अनुभव संतहो ॥ एआकणी ॥ ध्यान तणी अ गीठिका ॥भ०॥ भोजन तिम सतोष हो ॥ आस व समता पीवतां ॥ भ० ॥ करजो काया पोष हो ॥ गुण० ॥ अ० ॥ २ ॥ मायानिशादूरे कीजीयें ॥ भ० ॥ शुद्ध स्वभावें क्षीण हो ॥ तैलाभ्यंग तिम उदासीनता ॥ भ० ॥ श्रुत तबोल प्रवीण हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ उचा महेल विवेकना ॥भ०॥ वास करो तेह माहे हो ॥ अग्यार बोल ते धारियें ॥ भ० ॥ रसपोषण छे जेह हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ४॥ अग्यार अंगरस सांभली ॥ भ० ॥ प्रतिमा वहो अ ग्यार हो ॥ कर्म कठिन दूरें करी ॥ भ० ॥ लहिये शु मुक्ति दुवार हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ५ ॥ एकाद शी तप कीजियें ॥ भ० ॥ एम एकादश वर्ष हो ॥ अग्यार अंग वाचक होवे ॥ भ० ॥ पामिये सुजस हर्ष हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ इणविध भवियण आदरो ॥ भ०॥ जाणो एकादशी सार हो ॥ लब्धि कहे भवि सांभलो ॥भ०॥ होवे ज्यु भवनिस्तार हो ॥ गु० ॥७॥

॥ अथ द्वादशीनी सज्झाय प्रारभ्यते ॥

॥ रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥ द्वादशी कहे भविभावशुं, कीजें धर्मनी गोठ लाल रे ॥ विण दा मे रस लीजीये, जिम साकरनी भरी पोठ ॥ लाल रे ॥ १ ॥ भावे भवियण साभलो ॥ ए आंकणी ॥ वा रसें वार उपांगना निसुणो जे कह्या बोल लाल रे

॥ स्वाद ल्यो अमृत तेहना, टालीजरुतानिटोल लाल रे ॥ जा० ॥ २ ॥ वारे व्रत जवि उच्चरी, मेली यें सुकृत माल लाल रे ॥ कर्म मलीन दूरें करी, श्रावक कुल अजुवाल लाल रे ॥ जा० ॥ वारे जेदे तप जे अठे, आदरो छडी क्रोध लाल रे ॥ वारे जावना जावियें ममता वारिये विरोध लाल रे ॥ जा० ॥४॥ कुरस वचन कहेता थका, दिवस तणु तप जाय लाल रे ॥ अधिक खीजता मासनुं, तप तप्यु निष्फल थाय लाल रे ॥ जा० ॥ ५ शाप दियता वर्षनुं, तप जाये सुणो धीर लाल रे ॥ हणता श्रमणपणु हणे, एणी परें बोले वीर लाल रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनवरें हो वर्णवी, जिरकुप्रतिमा वार लाल रे ॥ ते तुमे जवियण पडिवद्यी, पालीये शुद्ध आचार लाल रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ इणविध जे नर द्वादशी, आदरे शुज परिणाम लाल रे ॥ ते नर वछित पामशे, शाश्वतां सुख अजिराम लाल रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ द्वादशी जेह आराधशे, धरशे जिनशु राग लाल रे ॥ लब्धिविजय कहे ते नरा, पामशे जवनो त्याग लाल रे ॥ जा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोदशीनी सद्याय प्रारंज ॥

॥ रगरो रे रसीया रे फुला गुलावरो ॥ ए देशी ॥ ते रस श्रोता आगले, जाखे मन आल्हाद हे ॥ श्रीजिनवाणी सांजाली, ते रस चाखो स्वाद

हे ॥ १ ॥ रसिया रे सूरिजन भावें हे सांभलो ॥ श्रीजिन बिंब भरावियें, कीजें जिन प्रासाद हे ॥ ज्ञानभक्ति सवि साचवो, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ २ ॥ काउसीया तेरे परहरी, कीजे नव पद याद हे ॥ समकित वास सदा लही, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ३ ॥ श्रीजिन अनुमति चालियें, तजीये मिथ्यावाद हे ॥ अनुभवरुपी शेल ही, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ४ ॥ तेरमे गुण ठाणे सचरी, शुक्लिध्यान प्रसाद हे ॥ केवल कमला पामीने, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ५ ॥ ते रसना गुण जाणीने, जे नर तजशे प्रमाद हे ॥ ते नरना गुण बोलशे, सुर नर अमृत वाद हे ॥ र० ॥ ६ ॥ शुभभावे सुकृतपणे, तेरशगुण आराधी हे ॥ लब्धि विजय कहे नेहशुं, लहिये सुख समाधि हे ॥ र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दशीनी सज्झाय प्रारंभ. ॥

॥ प्यारी ते पीयुने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥ हवे चउदशतिथि इम वदे रे हा, एतो सांभलो चतुर सुजाण ॥ भवियां भावशुं ॥ श्रुत सिद्धातना बोलजे रे हां, एतो ते करो वचन प्रमाण ॥ भ० ॥ १ ॥ व मना कुसुम तणी परें रे हां, एतो दोहिलो मनु अवतार ॥ भ० ॥ आर्यदेश पण दोहिलो रे हां, एतो दोहिलु श्रावक कुल सार ॥ भ० ॥ २ ॥ श्रद्धा

ते पण दोहिलु रे हां, एतो दोहिलो ज्ञानसंयोग ॥ ज० ॥ दोहिली जिननी सेवना रे हा, एतो दोहिलो मननो योग ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए सविदुर्लभ पामवां रे हा, जिम रयणतणे दृष्टांत ॥ ज० ॥ ते तुम पुण्यप्रभावथी रे हां, एतो पाम्यो मनुभव सत ॥ ज ॥ ४ ॥ पामी चउदश तप तणो रे हां, एतो खप करो मनने प्रमोद ॥ ज० ॥ चौद नियम सज्जा रजो रे हां, एतो सक्षेपजो तिम चौद ॥ ज० ॥५॥ चौद पूरवना भावथी रे हां, एतो चौदमे चढे गुण ठाण ॥ ज० ॥ अतगम केवली होवे रे हा, एतो अक्षर पच प्रमाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ चौद भुवन ए लोकनां रे हां, एतो देखी जाणे भाव ॥ ज० ॥ चौद रज्ज्वात्मक भेदीने रे हा, एतो शिव सुख ते नित्य पाव ॥ज०॥७॥ चौद लाख मनु योनिना रे हा, ए तो छूटीये दु खथी जीव ॥ ज० ॥ इम जाणी चऊदश आदरो रे हा, एतो दिल करि भाव अतीव ॥ज०॥ ॥ ८ ॥ चउदशना गुण सांभली रे हा, धरिये सुबि हित बुध ॥ ज० ॥ लब्धिविजय रगे करी रे हां, एतो लहिये ऋद्धि समृद्धि रे ॥ ज० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अक पूर्णिमानी सज्झाय प्रारभ ॥

॥ सुमला संदेशो रे कहे माहरा पूज्यनें रे ॥ ए देशी ॥ पूनम कहे भव्य जीवनें रे, साभलो सद्गुरु वाणी रे ॥ अथिर तन धन आउखु रे, जलबुद

परे जाण रे ॥ भावे हे भवियण सांभलो ॥ ए आं
कणी ॥ १ ॥ असार ससारने पेखीनें रे, धर्मशुं ध
रो प्रतिबध रे ॥ बांधव सयण ए जाणजो रे, स्वार्थ
भूत सबध रे ॥ भा० ॥ २ ॥ सकल कुटुबनें पोषवा
रे, जे नर करेय छे पाप रे ॥ तेह तणां रे फल दो
हिलां रे, सहेशे ते एकलो आप रे ॥ भा० ॥ ३ ॥
जिम मृग तृष्णानें कारणे रे, भमतो रणमां धाय रे
॥ भमे पछे ए जीवडो रें, भव भव दु खीयो थायरे
॥ भा० ॥ ४ ॥ ए धन धरणी ए धामने रे, कांइ न
ले गयो साथ रे ॥ जिहा जइने जीव उपनो रे, ति
हां सहि होये तेहने हाथ रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ इम
जाणीने धर्म कीजीयेरे, टाली ते विषय विकार रे
॥ दिन दिन दोलत अभिनवी रे, पामिये हर्ष अ
पार रे भा० ॥ ६ ॥ पूरण जीवितव्य पामीनें रे, आ
दरो पूरण धर्म रे ॥ पूरण शात स्वभावथी रे, पूर
ण छेदो ए कर्म रे ॥ भा० ॥ ७ ॥ पूरण जन्म जरा
थकी रे, पूरण छूटीये दु ख रे ॥ पूरण लीला पा
मीये रे, पूरण सुरनर सुख रे ॥ भा० ॥ ८ ॥ पूरण
पन्नर सिद्धना रे जाणिये पूरण भेद रे ॥ पूरण पद
र योगना रें ते पण भावनिर्वेद रे ॥ भा० ॥ ए ॥
पंदर जातिना भांखियां रे, परमाधामी जोर रे ॥
॥ ते पण दु:खथकी छूटीये रे, टाली ते कर्म अघो
र रे ॥ भा० ॥ १० ॥ पदर कर्म भूमि उलखी रे,

ठमो कषाय ते शोल रे ॥ भवियण दिन दिन पा मीयें रे, सपदा पुण्यरग रोल रे ॥ भा० ॥ ११ ॥ जिम शशी शोलकली सही रे, भांखे जिनवर वाच रे ॥ तिम ए धर्म कला सशी रे, पामीये जगतमा साच रे ॥ भा० ॥ १२ ॥ पूरणमासी ए जाणीने रे, जे स सही करशे ए पुण्य रे ॥ विजयलब्धि ते पामशे रे, दिन दिन निज सुखतन्न रे ॥ भा० ॥ १३ ॥ आठम चउदश पूर्णिमा रे, अग उपांगे अधिकार रे ॥ जिनवरे कहियो माहानिशीथमा रे, वीजप्रमु खनो विचार रे ॥ भा ॥ १४ ॥ ते सवि जाणो व्यव हारथी रे, धर्म उद्यम उपदेश रे ॥ निश्चयमार्गे अ प्रमादी जे होवे रे, ते पाले पदर तिथि विशेष रे ॥ ॥ भा० ॥ १५ ॥ एम जाणीने भवि भाविये रे, द्रव्य ने भावथी धर्म रे ॥ सघली तिथि आराधतां रे, लब्धि कहे सदा सुख शर्म रे भा० ॥ १६ ॥

॥ अथ उपदेशी पद ॥

मे हु मुसाफर आया हो प्यारा, नही कोइ मे रा ॥ नही० ॥ जनम हुवा तव अपना कहावे, न ही रेहेणेका डेरा हो प्यारा ॥ नही० ॥ १ ॥ सजन कुटुव सव अपना कहावे, ज्यु तीरथका मेला हो प्यारा ॥ २ ॥ धन कचन कछु स्थिर नही रेहेणां, ज्यु वादलका घेरा हो प्यारा ॥नही०॥ ३ ॥ रुपचद कहे प्रेमकी वाता, ज्यु धानीका फेरा हो प्यारा॥४

॥ अथ उपदेशी प्रभाती पद ॥

जाग जाग रयण गइ भोर भयो प्यारे ॥ पंचकु प्रपच कर, वश यारे ॥ जाग जाग रयण गइ भोर भयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृपनामे मीन मरे, भोगमे मतंगा ॥ श्रवणमे कुरंग मरे, नयनमें पतंगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें भ्रमर मरे नासा रस लेतां ॥ एक एक इंद्रीसग, मरे जीव केता ॥जा०॥३॥ पचके पड्यो तु फद, कयु कर वश आवे ॥ मार तु मन इछा भूत, ज्यु निरंजन पावे ॥ जाग० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रभाती रागमा पद ॥

मे परदेशी दूरका, प्रभु दरसनकु आया ॥ लाख चोराशी देश फिरया, तेरा दरिसन पाया ॥मे०॥ ॥ १ ॥ सूक्ष्म बादर निगोदमे, वनस्पति वसाया ॥ अप तेज वायुकायमें काल अनंत गमाया ॥ मे० ॥ ॥ २ ॥ स्वर्ग नर्क तिर्यंचमे, केता जन्म गमाया ॥ मनुष्य अनारजमे भम्या, तिहा नही दरिसन पाया ॥ मे० ॥ ३ ॥ तेरो मेरो दरिसन अब भयो, पुरन पुन्य पसाया ॥ रुपचंद कहे भाग्य खुले, निरजन गुण गाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ मनहित शिक्षानु पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ रे मन लोभी तेरो कोण पतियारो ॥ रे मन० ॥ आठ गांठको सांठो मीठो, गांठ गांठ रस न्यारो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ छिनमे उंरे पल

कर्में दूजो, घडी घडी दिलसें न्यारो ॥ रे मन० ॥ ॥ २ ॥ चचल मन वरज्यो नही माने, प्रभुभवपार उतारो ॥ रे मन खोजी ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपद ॥

॥ राग वेलावल ॥ रे मन कयु जिन नाम विसारयो ॥ कयु० ॥ रे मन० ॥ विषय विकार महामद धारयो, जनम जुआ ज्यु हारयो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ जीने तोकु नरदेही दीनी, गर्भकी आंच उद्धारयो ॥ प्रभुजीकु ते शठ मूरख, एक घडी न संभारयों ॥ रे मन० ॥ २ ॥ नही कछु दान शियल तप पूजा, नही जीन नाम उच्चार्यो ॥ जैन धर्म चितामणी सरीखो, काच जाणकर मार्यो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ कर ले सुकृत दया उरले, जो भव चाहत सुधार्यो ॥ हरखचद वर्धमान जीनेसर अवसर माहेन सभार्यो ॥ रे मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग जगलो काफी ॥ जगमें नही तेरा कोइ, नर देखहु निहचें जोइ ॥ जग० ॥ ए आकणी ॥ सुत मात तात अरु नारी, सहु स्वारथके हीतकारी विन स्वारथ शत्रु सोइ ॥ जग० ॥ १ ॥ तु फीरत महा मदमाता, विषयन सग मूरख राता ॥ निज सगकी सुध बुद्ध खोइ ॥ जग० ॥ २ ॥ घट ज्ञानकला नवि जाकु, पर निज मानत सून ताकु ॥ आख

र पछतावा होइ ॥ जग० ॥ ३ ॥ नवि अनुपम नर भव हारो, निज शुद्ध स्वरुप निहारो ॥ अंतर मम ता मल धोइ ॥ जग० ॥ ४ ॥ प्रभु चिदानंदकी वा णी, धार तुं निश्चे जग प्राणी ॥ जिम सफल होत भव दोइ ॥ जग० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ जूठी जूठी जगतकी माया, जिन जाणी भेद तिन पाया ॥ जू० ॥ ए आकणी ॥ तन धन जोवन सुख जेता, सब जाणहु अस्थिर सुख तेता ॥ नर जिम बादलकी छाया ॥ जूठी ॥ १ ॥ जिम अनित्य भाव चित्त आया ॥ लख गलित वृपभकी काया ॥ बूढे कर कछुराया ॥ जूठी ॥ २ ॥ इम चिदानद न मनमाही, कछु करीए ममता नाहीं ॥ सदगुरुए भेद लखाया ॥ जूठी ॥ ३ ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग प्रभाती ॥ मान कहा अब मेरा मधुकर ॥ मान० ॥ ए आकणी ॥ नाभिनदके चरण सरोज मे, कीजे अचल बसेरा रे ॥ परिमल तास लहत मन सेहेजे, त्रिविध पाप उतेरा रे ॥ मान० ॥ १ ॥ उदित निरतर ज्ञान भान जिहा, तिहा न मिथ्यात अधेरा रे ॥ संपुट होत नही ताते कहा, सांज क हा सवेरा रे ॥ मान० ॥ २ ॥ नहितर पछतावोगे

आखर वीतगया यो वेरा रे॥ चिदानद प्रभु पदपक ज सेवत, वहुरि न होय भव फेरारे ॥ मान० ॥३॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग धनाश्री ॥ भूल्यो भमत कहा वे अजा न ॥ भूल्यो० ॥ ए आकणी ॥ आल पपाल सकल तज मूरख, कर अनुभव रस पान ॥ क० १॥ आप कृ तात गहेगो इक दिन, हरि मृग जेम अचान ॥ होयगो तन धनर्थी तु न्यारो, जेम पाको तरु पान ॥ कल्यो० ॥ २ ॥ मात तात तरुणी सुत संती, गर ज न सरत निदान ॥ चिदानद ए वचन हमारो, धर राखो प्यारे कान ॥ कल्यो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यो[illegible]पदेशी पद ॥

॥ राग भैरव ॥ जागरे वटाउ [illegible] भव, जड जोर वेरा ॥ जाग० ए आकणी ॥ भया रविवे[illegible] रा प्रकाश, कुमुदहु थये विकास ॥ गया नाश प्यारे [illegible] मिथ्या, रैनका अंधेरा ॥ जा० ॥ १ ॥ सूता केम आवे [illegible] घाट, चालवी जरुर वाट ॥ कोइ नाहि मित्त परदे[illegible] में ज्यु तेरा ॥ जा० ॥ २ ॥ अवसर वीत जाय, पि[illegible] पिछतावो थाय ॥ चिदानद निहचे, ए मान कहा मेरा ॥ जागरे वटाउ अव जड जोर वेरा ॥३॥ इति

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग आशावरी ॥ उं घट विणसत वार न लागे ॥ उंघट ॥ ए आकणी ॥ याके सग कहा अ

व मूरख, छिन छिन अधिको पागे ॥ ओ० ॥ १ ॥ काया गरा काचकी शीशी, लागत ठणका जागे ॥ उं घट० ॥ २ ॥ आधि व्याधि व्यथा दु ख इण न व, नरकादिक फुनि आगे ॥ मगहु न चलत सग विण पोप्या, मारगहुमे त्यागे ॥ उं० ॥ ३ ॥ मटठक ठाक गहेल तज वीरला, गुरु किरपा कोउ जागे ॥ तनधन नेह निवारी चिदानंद, चलीये ताके सागे ॥ उं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपदेशी पद ॥

॥ राग विजास ॥ जूठी जग माया नर केरी काया, जिम बादरकी छाया माइरी ॥ ए आकणी ॥ ज्ञानजन कर खोल नयण मम, सदगुरु इणे विग प्रगट लखाइरी ॥ जूठी० ॥ मूल विगत विपवेल प्रगटीइक, पत्र रहित त्रिभुवनमें छाइरी ॥ तास पत्र चुण खात मिरगवा, मुखवीन अचरिज देख हुंआइरी ॥ जूठी० ॥ २ ॥ पुरुष एक नारी निपजाइ, तेतो नपुसक घरमें समाइरी ॥ पुत्र जुगल जायेति णवालाते जगमां हे अधिक दु ख दाइरी ॥ जूठी० ॥ ३ ॥ कारण विन कारजकी सिद्धि, केम नइ मुख कही नवि जाइरी ॥ चिदानद एम अकल कलाकी, गति मति कोइ विरले जन पाइरी ॥ जठी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानोपदेशी पद ॥

॥ राग सारग ॥ मेरे घट ग्यात भानु भयो

जोर ॥ मेरे० ॥ चेतन चकवा चेतन चकवी, जागो विहरको सोर ॥ मेरे० ॥ १ ॥ फेली चिहु दीश चतुरा जाव सचि, मिट्यो जरम तम जोर ॥ आपकी चोरी आपही जानत, औरे कहत न चोर ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अमल कमल विकस जये जूतल, मद विपय शशी कोर ॥ आनद घन एक वल्लभ लागत, और न लाख किरोर ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ या पुद्गलका क्या विसवासा, है सुपनेका वासारे ॥ या० ॥ ए आकणी ॥ चमत कार विजुली दे जैसा, पाणी बीच पतासा ॥ या देहीका गर्व न करना, जगल होयगा वासा ॥ या० ॥ १ ॥ जूठे तन धन जूठे जोखन, जूठे है घरवासा ॥ आनद घन कहे सवही जूठे, साचा शिव पुर वासा ॥ या० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ इति पचम परिछेद समाप्त ॥

॥ शष्ठमपरिछेद प्रारंभ ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो, शिष्य, गौतम नाम जपो निशदीश ॥ जो कीजे गौतमनु ध्यान, तोघर विल सें नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरि वर चडे मनोवांछित हेला सपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामें सर्व सजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरूआ वंकडा, तस नामें नावे दुकडा ॥ भूत प्रेत नविमडे प्राण, ते गौतमना करु वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनोवांछित कापरु तंबोल ॥ घरसुघरिणी निर्मल चित, गौतम नामें पुत्र विनित ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ महोटा मदिर मेरुसमान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पहोंचे वांछित कोड ॥ महीयल माने महोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवतं अवधारो सहु, गुरु गौतमना

गुण ठे वहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोड, गौत तूठे संपत्ति कोड ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तिजयपहुत्त प्रारंभ ॥

॥ तिजयपहुत्त पयासय, अठ महापाडिहेरजुत्ताण ॥ समयक्खित्त ठिआण, सरेमि चक्क जिणदाण ॥ १ ॥ पणवीसाय असीआ, पन्नरस पन्नास जिणवर समूहो ॥ नासेउ सयल दुरिअ, भविआण भत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणया लाविय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहभूअ रक्ख साइणि, घोरुवसग्ग पणासतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसाविय, सठी पचेव जिणगणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरि करि, चोरारि महाभय हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्नाय दसेव य, पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्खंतु मे सरीरं देवासुर पणामिआ सिआ ॥ ५ ॥ उ हरहु ह सरसुस, हरहुह तहचेव सरसुस ॥ आलिहिय नाम गप्प, चक्क किर सवउभह ॥ ६ ॥ उ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिखला तहय वज्जअकुसिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गधारी महाजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अछुत्ता ॥ माणसि महमाणसिआ, विद्यादेवीउ रक्खतु ॥ ८ ॥ पचदस कम्म भूमिसु, उप्पन्न सत्तरिं जिणाणसय ॥ विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअ हरउ दुरिआइं ॥ ए ॥ चउतीस अइ सय जुआ, अठ महापाडि

हेर कयसोहा ॥ तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पय त्तेण ॥ १० ॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगयमोह ॥ सत्तरिसय जिणाणं, सव्वामर पूअ वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइ वाण वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ ॥ जे केवि इह देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेण, फलए लिहिऊण खालिअ पीअ ॥ एगंतराइ गहभूअ, साइणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जत्त, सम्म मत्त, दुवारि पडिलिहिअ ॥ दुरिआरि विजयवंत, निप्पतं निच्चमच्चेह ॥ ॥ १४ ॥ इति ॥ ए१ ॥

॥ अथ श्री नमिऊणनामक स्मरणं लिख्यते ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअ मणिणो ॥ चलणजुअलं महाभय, पणासण सयवं बुद्ध ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निवुड्ढ नासा विवन्न लायन्ना ॥ कुठ महा रोगानल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलजलि सेय बुड्ढिय छाया (उव्वहा) वण दव दड्ढा गिरिपा, यव व्व पत्ता पुणो लहीं ॥ ३ ॥ डुवाय खुप्पिय जलनिहि, उप्पन्न कल्लोल जीसणारावे ॥ सभं त भय विसंठुल, निद्दामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अवि दलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअ कूलं ॥ पासजिण चलण जुअल, निच्चंचिअ जेन मंति

नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे ॥ डप्पत मुद्ध मय वहु, भीसणरव भीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निवाविअ सयल तिहु अणाभोअ ॥ जे सुमरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भय तेसि ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण नयण तरल जी हाल ॥ उग्गभुअग नवजलय सद्दह भीसणायार ॥८॥ मन्नति कीड सरिस दूर परिहुड विसम विसवेगा ॥ तुह नामक्खर फुरुसि, रूमत गुरुवा नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु जिह्व तक्कर, पुलिंद सहुल सहभी मासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उल्लुरिअ पहिअ सहासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम मत्त वावोरा ॥ ववगय विग्घासिग्घ, पत्ता हिय इछिय ठाण ॥ ११ ॥ पज्जलि आनलनयण, दूरवियारियमु ह महाकाय ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइद कुभत्थलाभोअ ॥ १२ ॥ पणय ससभम पहिव, नह मणिमाणिक्क पकिअ पकिमस्स ॥ तुह वयणपहरण धरा, सीह कुरूपि न गणति ॥ १३ ॥ ससिधवल दतमुसल, दीहकरुल्लाल वुड्ढि उछाहं ॥ महुपिग नयणजुअल, ससलिल नवजलहराराव ॥ १४ ॥ भीम महागइद, अच्चासन्नपि ते नवि गणति ॥ जे तुह चलण जुअल, मुणिवइ तुग समल्लीणा ॥ १५ ॥

समरम्मि तिक्क खग्गा, जिग्घाय पविरू उरूय कवं धे ॥ कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्कसिक्कार पउर मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुरूर रिउ, नरिंद निवहा नडा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजि ण तुह प्पभावेण ॥१७॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण भयाइ ॥ पासजिण नाम सक्की, तणेण पसमंति सवाइं ॥ १९ ॥ एव महा भयहरं, पासजिणिदस्स सथवमुआर ॥ भविय जणा णदयर, कल्लाण परंपर निहाण ॥ १९ ॥ राय भय जक्खरक्खस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्खपीडासु ॥ संकासु दोसु पथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणकइणो य माणतुग स्स ॥ पासो पावं पसमेउ,सयल जुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गते कमठा, सुरम्मि झाणाउ जोन स चलिउ ॥ सुरनर किन्नर जुवईहि, सयुउ जयउ पा सजिणो ॥२२॥ एअस्स मप्पयारे, अठारस अक्खरेहिं जो मंतो ॥ जो जाणइ सो झायइ, परम पयठ फुरं पासं ॥२३॥ पासह समरण जो कुणइ, सलुठे हिययेण ॥ अबुत्तर सय वाहि भय, नासइ तस्स दूरेण॥२४॥

॥ अथ श्री भक्तामर स्मरण प्रारभ ॥

॥ भक्तामर प्रणत मौलिमणि प्रभाणा, मुद्योतकं दलित पापत मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन पादयुग युगादा, वालंबन भवजले पनता जनानाम्

॥ १ ॥ य संस्तुत सकलवाङ् मयतत्त्वबोधा, उद्भूतबुद्धि पटुभि सुरलोकनाथै ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्त हरैरुदारै स्तोष्येकिलाहमपि त प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पादपीठ, स्तोतुं समुद्यतम तिर्विगतत्रपोऽह ॥ बालं विहाय जलस स्थितमिंदु बिंब, मन्य. क इच्छति जन सहसा ग्रहीतु ॥ ३ ॥ वक्त गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, क स्ते क्षम सुरगुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कल्पांत कालप वनोद्ध तनक्रचक्र, कोवा तरीतुमल मबुनिधि भुजा भ्याम् ॥ ४ ॥ सो ऽह तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश, कर्तुं स्तव विगत शक्तिरपि प्रवृत्त ॥ प्रीत्यात्म वीर्यमविचार्य मृगोमृगेन्द्र, नाभ्येति किंनिजशिशो परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुत श्रुतवतां परिहास धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरु ते बलान्मां ॥ यत्को किल. किल मधौ मधुर विरौति, तच्चारु चूतकलि कानिकरै कहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसततिस न्निबद्ध, पाप क्षणात्क्षय मुपैतिशरीर भाजाम् ॥ आक्रात लोकमलिनी लमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वर मधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवन मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यतिसता नलिनीदलेषु, मुक्ताफल द्युतिमुपैति ननूदबिंदु ॥ ८ ॥ आस्ता तव स्तवन मस्तसमस्त दोष, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति ॥ दूरे सह

स्त्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्मा करेषु जलजानि विका शभाजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुत भुवन भूषणभूतनाथ, भूतै र्गुणैर्भुविभवंतमभिष्टुवंत. ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किंवा, भूत्याश्रितं यइह नात्मसमं करोति ॥१० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीय, नान्यत्र तो षमुपया तिजनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पय. शशिकर द्युतिदुग्धसिंधो , क्षार जल जलनिधेर शितुं कइच्छेत् ॥ ११ ॥ ये. शातराग रुचिभि. परमणुभिस्त्वं, निर्मा पितस्त्रिभुवनै कललामभूत ॥ तावंतएव खलु तेप्य णव पृथिव्यां, यत्ते समानमपर नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्र क्व ते सुरनरोरग नेत्रहारि, नि शेषनिर्जित जगत्त्रित योपमानम् ॥ विंब कलंकमलिनं क्व निशा करस्य, यद्वासरे भवति पांडुप लाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्ण मंडल शशांक कलाकलाप, शुभ्रागुणा स्त्रिभु वन तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रि जगदीश्वर ना थमेक, कस्तान्निवारयति संचरतोय येष्टम ॥ १४ ॥ चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि, र्नीत मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांत कालमरुता चलि ताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलित कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूर कृत्स्न जगत्त्र यमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्योनजातु मरुता चलता चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाश ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि नराहुगम्य , स्पष्टीकरोषि

सहसा युगपज्जगति ॥ नाजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रजा व, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदय दलितमोहम हाधकार, गम्य न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते नव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशाकबिंबम् ॥ १८ ॥ किंशर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेषुदलिते पुतमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृतावकाश, नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्व, नैव तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्ये वर हरिहरादयएव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदय त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य, कश्चिन्मनोहरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता॥सर्वादिशो दधति भानिसहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनय परम पुमांस, मादित्य वर्णममल तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्यु नान्य शिव शिवपदस्य मुनिंद्र पंथा ॥२३॥ त्वय विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्य, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वर विदित योगम[illegible] मनेक मेकं स्वयंभुवमनंतमचिंत्यमेकं प्रवदंति

विबुधा परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभू तिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक्प्रभा दिनकृत प्रहतांधकारा, तादृक्कुतो ग्रहग णस्य विकाशिनोपि ॥३३॥ श्योतन्मदाविलविलोलक पोलकमूल, मत्तभ्रमद भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरा वताभमिभमुद्धतमापतत, दृष्ट्वा भय भवति नो भव दाश्रिता नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्वलशोणि ताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभाग ॥ बद्धक्रम क मगत हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसं श्रित ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकल्प, दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम् विश्वजिघत्सुमि व समुखमापतत, त्वन्नामकीर्तनजल शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षण समदकोकिलकंठनील, क्रोधोद्धत फणिनमुत्फणमापततम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुस ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जित भीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीना ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखा पविद्ध, त्वत्कीर्तनात्तमश्वाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणातु रयोधभीमे ॥ युद्धे जय विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्व [illegible]दपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ [illegible] पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवा [illegible] ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा स्त्रास विहाय

भवत.स्मरणाद्व्रजति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलो दरभारभुग्ना., शोच्या दशामुपगताश्च्युतजीविताशा.॥ त्वत्पादपकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकर ध्वजतुल्यरूपा ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजघा. ॥ त्वन्नाम मंत्रमनिश मनुजा स्मरंत, सद्य. स्वयविगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति भय भियेव, यस्तावक स्तवमिम मतिमान धीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति श्री भक्तामरस्तोत्र सपूर्णं ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्र प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदम निंदितमघ्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वय सुर गुरुर्गरिमांबुराशे , स्तोत्र सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशा कथमधीश भवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिव

विबुधा परिकल्पयति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभू तिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक्प्रभा दिनकृत प्रहताधकारा, तादृक्कुतो ग्रहग णस्य विकाशिनोपि ॥३३॥ श्योतन्मदाविलविलोलक पोलकमूल, मत्तभ्रमद् भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरा वताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भय भवति नो भव दाश्रिता नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्वलशोणि ताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभाग ॥ बद्धक्रम'क मगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसं श्रित ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकल्प, दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम् विश्वजिघत्सुमि व समुखमापतत, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षण समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापततम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंस' ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जित भीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीना ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखा पविद्ध, त्वत्कीर्तनात्तमश्वाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणातु रयोधभीमे ॥ युद्धे जय विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्व त्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवा ग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा स्त्रास विहाय

भवत.स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलो दरभारभुग्ना., शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशा'॥ त्वत्पादपकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकर ध्वजतुल्यरूपा' ॥ ४१ ॥ आपादकठमुरुशृखलवेष्टि तांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजघा. ॥ त्वन्नाम मत्रमनिश मनुजा स्मरत, सद्य स्वयविगतबधभ या भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबधनोद्भम् ॥ तस्याशु नाशमुप याति भय भियेव, यस्तावक स्तवमिमं मतिमान धीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रज तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कठगतामजस्रं, तं मानतुगमवशा समुपैति ल क्ष्मी ॥ ४४ ॥ इति श्री भक्तामरस्तोत्र सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमदिरस्तोत्र प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदम निंदितमघ्रिपद्मम् ॥ ससारसागरनिमज्जदशेषजतु, पो ता यमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वय सुर गुरुर्गरिमाबुराशे , स्तोत्र सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधा तुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेप किल संस्तवन करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्य तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशा. कथमधीश भवत्यधीशा. ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिव

धो, रूप प्ररूपयति कि किल धर्मरश्मे ॥ ३ ॥ मोह क्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवातपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं ननिजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतांकथयति स्वधियाबुराशेः ॥५॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदेव मसमीक्षितकारितेयं, जल्पति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पातिभवतो भवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहत पांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवंति, जंतो क्षणेन निविडा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो भुजंगमयमा इव मध्यभाग, मभ्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रव शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु [illegible] ॥ ९ ॥

तिपति. क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुत भुज पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्न नल्पगरिमाण मपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतव कथमहो हृदये दधाना. ॥ जन्मोदधि लघु तरत्यति लाघवेन, चिंत्यो न हृत महतां यदि वा प्रभाव. ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा बत कथं किल कर्मचौरा ॥ प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरापि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृदयांबुज कोशदेशे ॥ पूत स्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य, दक्षस्य सभवि प दं ननु कर्णिकाय ॥ १४ ॥ ध्याना ज्जिनेश भवतो भविन क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजति ॥ तीव्रानला दुपल भावमपास्य लोके, चामीकरत्वम चिरादिव धातुभेदा ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिनयस्य विभाव्यसेत्वं, भव्यै कथ तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमय ति महानुभावा ॥१६॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद बुद्ध्या, ध्यातो जिनेंद्र! भवतीह भवत्प्रभाव ॥ पा नीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमान,किंनाम नो विषवि कारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादि नोपि, नुन विभो हरिहरा दिधियाप्रपन्ना ॥ कि का चकामलिभि रीश सितो ऽ पि शंखो, नो गृह्यते विवि

धवर्णविपर्य येण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमयें सविधानु भावा, दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोक ॥ अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोपि, किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोक ॥ १९ ॥ चित्र विभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुर पुष्पवृष्टि ॥ त्वद्गोचरे सुमनसा यदि वा मुनीश गच्छंति नूनमधएव हि बंधनानि ॥२०॥ स्थाने गभीर हृदयोदधि संभवाया, पीयूषता तवगिर समुदीरयंति ॥ पीत्वा यत परम समदसंग भाजो, भव्या व्रजंति तरसाप्य जरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूर भवनम्यसमुत्पतंतो, मन्ये वदंति शुचय सुरचामरौघा ॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतय. खलु शुद्धभावा ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरमुज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्य शिखंडिन त्वाम् ॥ आलोकयंतिरभसेन नदंत मुच्चै, श्यामी कराङ्घ्रि शिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युति मंडलेन, लुप्त छदच्छवि रशोक तरुर्बभूव ॥ सान्निध्य तोऽपि यदिवातववीतराग, नीरागतां व्रजतिको न सचेत नोपि ॥ २४ ॥ भोभो प्रमाद म वधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देवजगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभि नभ सुरदुंदुभिस्ते ॥२५॥ उद्द्योतितेषुभवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरय विहताधिकार ॥

लाप कलितोन्नसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुव मभ्युपेत. ॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन, कांतिप्रताप यशसामिव सचयेन ॥ माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ॥ ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजोजिन नमस्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबधान् ॥ पादौ श्रयति भव तो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङमुखोपि, यत्ता रयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्त हि पार्थिवनि पस्य सतस्तवैव, चित्र विभो यदसि कर्मविपाकशून्य ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किवा क्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथचिदेव, ज्ञान त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतु' ॥३०॥ प्राग्भारसभृत नभांसि रजासि शेपाद्युछापि तानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापितैस्तव न नाथ हृताहृताशो, ग्रस्तस्त्वमी भिरयमेव पर दुरात्मा ॥ ॥ ३१ ॥ यदगर्जदुर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्य त्तडिन्मुसलमांसल घोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दु स्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृता कृतिमर्त्यमुंड, प्रालंब भृद् भयदवक्त्र विनिर्यदग्नि ॥ प्रेतव्रज प्रतिभवंतम पीरितोय, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवंन वडु खहेतु' ॥३३॥

यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसध्य, माराधयति

विधिवद्विधुतान्यकृत्या ॥ जन्मयोल्लसत्पुलकपक्ष्मल देहदेशा, पादद्वय तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभवपारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविध समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेऽपि तव पादयुग न देव, मन्ये मया महित मीहित दानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवा ना, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नुन न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभोसकृदपि प्रविलो कितोऽसि ॥ मर्माविधौ विधुरयति हि मामनर्थाः, प्रोद्य त्प्रबंधगतय कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नुन न चेतसि मयाविधृ तोऽसिजातया ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव दुःख पात्र, यस्मात्क्रिया प्रतिफलंति न भावशून्या ॥३८॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य पुण्यज लैर्वशिना वरेण्य, ॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ नि संख्यसारशरण शरण शरण्य, मासाद्य सादितरि पुप्रथितापदानम् ॥ त्वत्पादपद्मजमपि प्रणिधानवं ध्यो, वध्योऽस्मिचेद् भुवन[illegible]ऽस्मि ॥ ४० ॥ [illegible] विभो भुवनाधिनाथ ॥ [illegible] मीदृगस्य [illegible]

नाथ भवदंघ्रिसरोरुहाणा, भक्ते फलं किमपि संतति सचिताया. ॥ तन्मेत्वदेकशरणस्य शरण्य भूया', स्वामीत्वमेव भुवनेऽत्र भवातरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थ समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, साद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांग भागा. ॥ त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजवद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तवविभो रचयति भव्या. ॥ ४३ ॥आर्या॥ जननयनकुमुदचद्र,प्रभास्वरा स्वर्गसपदो भुक्त्वा ॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्ष प्रपद्यंते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरंसंपूर्णं ॥

॥ अथ वृद्ध गोतम स्वामीनो रासलि० ॥ वीर जिणेसर चरण कमल,कमला कय वासो ॥ पणमवि पभणी सुसामिसाल, गोयम गुरुरासो ॥ मण त्तण वयणे एकात करवि, निसुणउ भो भविया ॥ जिम निवसे तुम देह गेह, गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जबूद्विव सिर भरह खित्त, खोणी तल मंडण ॥ मगह देश सेणिय नरेस, रिउ दल बल खडण ॥ धण वर गुबर गाम नाम, जिहा गुणगण सज्जा ॥ विप्प वसै वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवीभज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरी इद भुय,भूवलय पसिद्धो ॥ चउदह विद्या विविह रूव, नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभा वर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण विपंकज जल पाडिय, तेजेहि तारा,

चद सूर, आकास नमाकिय ॥ रूवहिमयण अनं ग करवि मेल्यो निरधाकिय धीरमें मेरु गंभीर सिंधु, चगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण जपे किचिय ॥ एकाकी किल नीत इछ, गुण मेल्या सचिअ अहवा निश्चें पुव्व जम्म, जिणवर इणअंचिय ॥ रंभा पउमा गौरी गगा, रति हा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहि बुद्ध नहि गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउं ॥ पचसया गुणपात्र छात्र, हींडे पर वरिउं ॥ करे निरतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण छल होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु, छद ॥ जबूदीवह जबूदीवह, भरह वासंमि, खो णीतलमंडणो, मगधदेस सेणिय नरे सर ॥ धण वर गुब्बर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुदर, तसु पुहवी भज्जा सयल, गुणगणरुव निहाण ॥ ताणपुतवीया निलउं, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ जाया ॥ चरम जिणेसर केवल नाणी, चउ विहसंघपइठाजाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउ विह देव निकायें जुत्तो ॥८॥ देवे समवसरण तिहां कीजे, जिणे दीठें मिथ्यामति सीजे ॥ त्रिभुवन गुरु सिंहासण बइठा, ततखिण मोह दिगतें पइठा ॥ ॥ ए ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देवदुदुभि आकाशें वाजी, ध

नरेसर आविउं गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेहि जिणवर जग सहु मोहे ॥११॥ उवसम रसभर भरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कतिसमूहें झलझल कला, गयण विमाणें रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अह्म जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरुक जिम ते वहता, समव सरण पुहता गहगहता॥ तो अभिमानें गोयम जपे,इणि अवसरे कोपें तणु कपे ॥ १४॥ मूढा लोक अजाणिउ बोले, सुर जाणता इम काइ मोले ॥ भू आगल कोइ जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजे ॥ १५ ॥ वस्तु छद ॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाण, सपन्न पावा पुरि सुर महिय पत्तनाह ससार तारण ॥ तिहि देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुरुकारण ॥ ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजे करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउं, हुउं सुजयजयकार ॥ १६ ॥ भाषा ॥ तो चढिउं घणमाण गजे, इंद्रभूइ भूय देव तो ॥ हुकारो करी संचरिउं, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंभ तो ॥ दह दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंडधजा, कोसीसे नव

घाट तो ॥ वैरविवर्जित जतुगण, प्रातीहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नरअसुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो ॥ चित्ते चमक्किय चिंतवे ए, सेवंता प्रभुपाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरणस्वामी वीर जिण, पेखवी रूप विसाल तो ॥ एह असजव सजन ए, साचो ए इंद्र जाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख सशय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल्हि मद ठेलि करे, जगतें नामें सीस तो ॥ पचसयाशु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ वधव सजम सुणवि करे,अगनिभूइ आवे इ तो ॥ नाम लेइआजाप करे,ते पण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणे अनुक्रमें गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशें भुवन गुरु, संजमशु व्रत वार तो ॥विहु उपवासें पारणु ए, आपणपे विहरत तो ॥ गोयम सजम जग सयल, जयजयकार करत तो ॥ २१ ॥ वस्तुछद ॥ इदभूइ इदभूइ चढिय बहु मान ॥ हुकारो करि सचरिउ, समवसरण पुह तो, तुरततो ॥ इह ससय सामि सवे चरमनाह फेडे फुरतो ॥ बोधबीज सद्याय मने, गोयम भवह विरत्त ॥ दिक्खा लेइ सिक्खा सहिय, गणहर गुण सपत्त ॥ २२ ॥ भाषा ॥ आज हुउं सुविहाण, अज पचेलिमा पुण्य भरो ॥ दीठा गोयमसामि, जो निय नयणें अमिय भरो ॥ सिरिगोयम गणधार, पचसया

मुनि परिवरिय ॥ भूमिय करय विहार, भवियांजन पडिबोह करे ॥ समवसरण मझार, जे जे ससा उप जे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूठे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजेदिख, तिहा तिहा केव ल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोमय दीजे दान इम ॥ गुरु उपर गुरु भत्ति, सामिय गोयम उप निय ॥ इण बल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥२४॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउविस जिण आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोइ मुनि ॥ इअ देसणानिसुणेइ, गोयम गणहर सचरिउ ॥ तापस पन्नरस एण,तो मुनि दीठो आवतोए ॥ २५ ॥ तवसोसिय निय अंग, अम्ह सक्ति नवि उपजे ए ॥ किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउ ए अभिमान, तापस जो मन चितवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलबवि दिनकर किरण ॥२६॥ कचण मणि निप्पन्न, दंड कलस धज वरुस हिय ॥ पेखवि परमाणद, जिनहर भरहेसर महि अ ॥ नियनिय काय प्रमाण, चउदिसि सठिअजिणह विब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहा वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक् जृभक देव तिहा ॥ प्रतिबोधे पुडरीक, कुडरीक अध्ययन भणी ॥ वलता गोयम सामी, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति

॥ २८ ॥ खीरखम घृत आणि, अमिअ वृठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुसवे ॥ पच सया शुत्त जाव, उज्जल जरिउं खीरमीसें ॥ साचो गुरुसंजोग, कवल ते केवल रूप हुउं ॥ २९ ॥ पच सया जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजती घणमेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआपंचसया ॥ ३० ॥ वस्तुठद ॥ इणे अनुक्रमे इणे अनुक्रमे नाणसपन्न ॥पन्नरह सय परवरिय, हरिय डुरिय जिणनाह वदिय ॥ जाणवी जगगुरु वयण, तिह नाण अप्पाण निदइ ॥ चरम जिणे सर इम जणइ, गोयम मकरिस खेउ ॥ ठेह जइ आपण सही, होसुं तुह्मा वेउ ॥ ३१ ॥ जाया ॥ सामि उं ए वीर जिणद, पूनिम चद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउं ए जरहवासम्मि वरिस बहुत्तर सवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पायकमल सघे सहिअ ॥ आविउं ए नयणाणद, नयर पावापूरिसुरमहिय ॥ ॥ ३२ ॥ पेखीउं ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रति बोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देव, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणिय जिणसमे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि आप कन्हे हु टालिउं, ए ॥ जाणतो ए तिहुअण

नाह, लोक वेवहार न पालिउं ए ॥ अति भलु ए कीधलु सामि, जाणिऊ केवल मागशे ए ॥ चितवि ऊं ए बालक जेम, अहवा केमे लागशे ए ॥ ३४ ॥ हु किम ए वीरजिणद, भगते भोलो भोलविउं ए ॥ आपणो ए अविहल नेह, नाह न सपे सूचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणें लालिउं ए ॥ इण समे ए गोयमचित्त, राग वेरागे वालिउं ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उलट, रहेतो रागे साहिउं ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहेंजे उमाहिउं ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, भवियण भव भ्रम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तुछद ॥ पढम गणहर पढम गहणर वरस पचास गिहिवासें सवसिय ॥ तीस वरिस सजम विभूसिय॥ सिरिकेवल नाण पुण, बार वरिस तिहुयणनमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं ठविअ, बाणवइ वरिसाउं ॥ सामी गोयम गुणनिलो, होशे शिवपुर ठाउं ॥ ३७ ॥ भाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल महेके, जिम चदन सुगधनिधि ॥ जिम गगाजल लहेरें लहके, जिम कणयाचल तेजें झलके, तिम गोयम सौभाग्य निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुर वर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीव वनी ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिमअंबर

तारा गण विकसें, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ३९ ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरवदिसि जिम सहसकरो ॥ पचानन जिम गिरिवर राजे, नरवर घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥४०॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तममुख मधुरी भाखा, जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम भूमिपति भूय वल चमके, जिम जिनमंदिर घटा रणके, तिम गोयम लब्धे गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ आज, सुरतरु सारे वछिय काज, कामकुंभ सवि वश हुउं ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहेलो पभणीजे, मायावीज श्रवण निसुणजें, श्री मती शोभा सभवे ए ॥ देवहधुरि अरिहंत नमीजे, विनयपहु उवझाय थुणीजे, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥४३॥ पुर पुर वसता कांइ करीजें, देश देशांतर काइ भमी जें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह इठी गोयम समरीजे काजसमग्रह ततखण सिझे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह सय वारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसे, किउ कवित उपगारकरो ॥ आदिहिंमगल एहपभणीजे, परव महोछव पहिलो लीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणे ऊयरे धरिया,

धनपिता जिण कुल अवतरिया धन सहगुरु जिणे दिखियाए ॥ विनयवत विद्या भंडार, जसुगुण कोइ न लप्रे पार, विद्यावंत गुरु विनवे ए ॥ गौतमसामीनो रास भणीजे, चउविह सघ रलि थायत कीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुकुम चदन ठमो देव रावो ॥ माणक मोतिनां चोक पुरावो ॥ रयण सिहा सण ॥ वेसणुए ॥ तिहां वेसी प्रभु देसना देसे ॥ भविक जीवनां काज सरसे ॥ नित्य नित्य मगल उदयकरो ॥ इति श्री गोतम स्वामीनो रास सपूर्ण

॥ अथ श्रीमहावीरजिन छद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमा नित्य धारो, अरिक्रोधने मन्नथी दूर वारो ॥ संतोप वृत्ति धरो चित्तमांहि, राग द्वेपथी दूर थाउ उछाहि ॥१॥ पड्यामोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा का गमोछो, जैनमार्ग ठमी भुला को भमो छो ॥२॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो सलोभी समानी सरागी भजो छो ॥ हरि हरादि अ न्यथी शु रमो छो, नदी गगा मूकी गलीमा पमोछो ॥३॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले रुढ मा ला ॥ केइ देवउत्सगे राखे छे वामा, केइ देव साथे रमे वृद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मासभक्षी महावीकराला ॥ केइ योगिणी भोगिणि भोग रागे, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥ ५ ॥

इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुख ने केम चाखे ॥ जदा लोजना थोकलो पार नाव्यो, तदा मधनो विडु उंमन्न जाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवला आपणी आश राखे, तेह पिमने मन्नशु लेअ चारे॥ दीन हीननी जीडते केम जाजे, फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता जजो मोक्ष दाता, अलोजी प्रजूने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलकी काच ना पिमशु मत राचो ॥ ८ ॥ मद बुद्धिसु जेह प्राणी कहे छे, सवि धर्म एकत्व जूलो जमे छे ॥ कीहां सर्षवाने कीहां मेरु धीरं, कीहा कायरा ने कीहा शूर वीर ॥ ए ॥ कीहा स्वर्णथाल कीहा कुजखड ॥ किहा क्रोडवा ने कीहा खीर मरु ॥ कीहा खीरसिंधु कीहां क्षारनीर, कीहा कामधेनु कीहां छाग क्षीर ॥१०॥ कीहा सत्यवाचा कीहा कूडवाणी, कीहा रकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहा नारकीने कीहा देवजोगी, कीहा ऽऽ देही कीहा कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहा कर्मधारी, नमो वीर स्वामी जजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमा स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख ससारमा मन्न माचे, ते जना मूढमा श्रेष्ठशुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोह माया हरो दजरोषी, सजो पुण्य पोषीजजो ते अरोषी ॥ १३ ॥ गतिचा

र संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तुहिं तुहि तुहि प्रभु परम रागी, भव फेरनी शृंखला मोह भागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी अर्ज छे एक मोरी, दीजे दासकु सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुउं गुरु आज मेरो वीवेकें लह्योमे प्रभू दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परे, श्री जिन सासनसार ॥ निश्चय श्रीनकार नित्य, जपतां जयजयकार ॥ १ ॥ अरुशठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वय मुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समख्या सपत्ति थाय ॥ संचित्त सागर सातना, पातिक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सद्गुरु भाषित सार ॥ सो भवियां मन शुद्धशु, नित्य जपीये नवकार॥छंदहाटकी ॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेशर॥ पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिवनाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपता नरक निवारे, पामे भवनो पार ॥ सो भविया भत्ते चोखे चित्ते, नित्य जपीये नवकार ॥ ५ ॥ बांधि वरुशाखा शिके वेसि, देवल कुड हुताश ॥ तस्कर ने मत्र समर्प्यो श्रावके, उड्यो ते आकाश ॥ विधि

रीत जप्यो विषधर विष टाले, टाले अमृतधार ॥ सो० ॥ ६ ॥ वीजोरा कारण राय महाबल, व्यंतर दुष्ट विरोध ॥ जेणे नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपता थाये जिनवर, इस्यो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिष्यो मुनिवर पासे, महामंत्र मन शुद्ध ॥ परभव ते राज सिंह पृथवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥ सन्यासी काशी तप साधतो, पंचाग्नि परजाले ॥ दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाल ॥ संभलाव्यो श्रीनवकार स्वयमुख, इंद्रभुवन अवतार ॥ सो०॥९॥मनशुद्धें जपता मयणा सुंदरी, पामी प्रिय संयोग॥ इण ध्याने कुष्ट टल्यो उंबरनो, रक्त पित्तनो रोग ॥ निश्चें शुद्ध जपता नवनिधि थाये, धर्म तणे आधार॥ सो० ॥ १० ॥ घटमाहि कृष्ण भुजगम घाल्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रभावे हार फूलनो, वसुधामाहि विख्यात ॥ कमलावतीयें पिंगल कीधो, पापतणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणागण जाति राखी गृहिणी, पामीबाणप्रहार ॥ पद पंच सुणता पांडु पति घर, ते थई कुंता नार॥ ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर भवदुःख भंजणहार॥ सो० ॥१२॥ कंबल सबलें कादव काढ्यां, शकट पाचशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देवलोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी

संपत्ति वसुधातलें विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुई अनती, होशे वार अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, एम भांखे अरिहंत ॥ पूरवदिशि चारे आदि प्रपचे, समस्यो संपत्ति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्टि सुरपद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंडरिगिरि उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधर ने एक मोर ॥ सद्गुरु सन्मुख विधि समरता, सफल जनम ससार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लोह खरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठें नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवार्यो, सुरे करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पच परमेष्टि ज्ञानज पचह, पचह दानचारित्र ॥ पच सद्याय महाव्रत पचह, पच समिति समकित ॥ पच प्रमाद विषय तजो पचह, पालो पचाचार ॥ सो० ॥ १७ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ नित्य जपीये नवकार, सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्धमंत्र ए शाश्वतो, एम जपे जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य भणीजें ॥ श्रीउवज्झाय सुसाधु, पचपरमेष्टि थुणीजे ॥ नवकार सार ससार छे, कुशल लाभ वाचक कहे ॥ एक चित्ते आराधता, विविधऋद्धि वांछित लहे ॥ १८ ॥ इति ॥ ११५ ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदिजिनवर वंदी, सफल मनो रथ कीजिये ए ॥ प्रभाते उठी मांगलिक कामें, शोल सतीना नाम लीजिये ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहेनडी ए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥ ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामे रिषभ सुता ए ॥ अग स्वरूपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बाल पणाथी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदनां बाकुला वीर प्रतिलभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नेम वल्लभा ए ॥ जोवन वेगे कामने जीत्यो, संयम लेइ देव हुल्लभाए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपदतनया वखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीरपूराणा, शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें सतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावतीसती, सुरभुवने जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयले न काची, राची नहीं विषयारसे ए ॥ मुख मु जोता पाप पलाए, नाम लेता मन उल्लसे ए ॥

॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जगसहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवाथकी जल काढीयुं ए ॥ कटांक उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा बार उघाडीयु ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंडित, शिवा शिव पदगामिनी ए ॥ जेहने नामे निर्मल थइयें, बलिहारी तस नामनी ए १२ ॥ हस्तिनागपुरें पाडुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांडव माता दसे दसारनी, बहेन पवित्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामे शीलव्रतधारिणी, त्रिविधेतेहने वंदीये ए ॥ नाम जपतां पातक जाए, दरिसण दुरित निकंदीये ए ॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिंदनी, दमयती तस गेहनी ए, ॥ सकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनग अजीता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोलमी सती पदमा वती ए ॥ १६ ॥ वीरेंभांखी शास्त्रे साखी, उद यरतन भांखे मुदा ए ॥ वहाणु वातां जे नर भणशे, ते लेशे सुख सपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकार लघु छंद ॥

॥ सुखकारण भवियण, समरो नित्य नवकार ॥ जिनशासनआगम, चौद पूरवनो सार ॥ ए मंत्रनो

महिमा, कहेतां न लहुं पार सुरतरु जिम चिंतित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव करे करजोड ॥ नुविमंडल विचरे, तारे नवियण कोड ॥ सुर ठदे विलसे, अतिशय जास अनंत ॥ पहेले पद नमियें, अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे नेदे, सिद्ध थया नगवंत ॥ पचमी गति पोहोता, अष्ट करम करि अंत ॥ कल अकल स्वरुपी, पचान तक जेह ॥ जिनवर पय प्रणमुं, बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छनार धुरधर, सुंदर शशिहर सोम ॥ करे सारण वारण, गुण छत्तीसें थोम ॥ सुत्र जाण शिरोमणि, सागर जेम गंनीर ॥ त्रीजे पद नमीयें, आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगर, सूत्र नणावे सार ॥ तपविधि सयोगे, नांखे अर्थ विचार ॥ मुनिवर गुण जुता, कहिये ते उवझाय ॥ चोथे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पचाश्रवटाले, पाले पचाचार ॥ तपसी गुण धारी, वारे विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर, लोकमाहे जे साध ॥ त्रिविधे ते प्रणमु, परमारथ जिणें लाध ॥ ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायणी कायणी नूत वेताल ॥ सवि पाप पणासे, वाधेमंगल माल ॥ एणे समरण संकट, दूर टले ततकाल ॥ इम जपे जिन प्रन, सूरि शिष्य रसाल ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ इति श्री पचपरमेष्टी छंद ॥

॥ श्री ॥

जिनपञ्जरस्तोत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं गौतम प्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनम ॥ १ ॥ एष पञ्चनमस्कार सर्व पाप क्षय करः ॥ मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मनेनम ॥ कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं य पठेदिदम् ॥ मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जित ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्ध चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये उपाध्याय तु नासिके ॥ ६ ॥साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधी सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥ अङ्गसंधिषु सर्वज्ञ, परमेष्ठी शिवंकर. ॥ ८ ॥ पूर्वाशां च जिनो रक्षे-दाग्नेयीं विजितेन्द्रिय ॥ दक्षिणाशां परब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशा जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वर ॥ उत्तरां तीर्थकृत्सर्वमीशानेऽपि निरञ्जन ॥ १० ॥ पाताल भगवा

नर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तम', ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकल कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे दजितोऽपि विलोचनम् ॥ संभव कर्णयुगलेऽभिनन्द नस्तु नासिके ॥ १२ ॥ ओष्ठ श्रीसुमती रक्षेद्दन्तान्प द्मप्रभो विभु ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽय, तालु चन्द्र प्रभाभिध ॥ १३ ॥ कण्ठं श्रीसुविधि रक्षेद्, हृदय श्रीसुशीतल ॥ श्रेयांसो बाहुयुगलं,वासुपूज्य. करद्व यम् ॥१४॥ अगुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ नखानपि ॥ श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाभि मंगलम् ॥१५ श्रीकुन्थुर्गुह्यक रक्षे, दरो लोम कटी तटम् ॥ मल्लिरू रुपृष्ठवंश,जघे च मुनिसुव्रत ॥१६॥ पादागुलीर्नमीरक्षे न्नेमिश्चरणद्वयम् ॥ श्रीपार्श्व नाथ. सर्वांग वर्धमा नश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वा काशमय जगत् ॥ रक्षेदशेष पापेभ्यो, वीतरागो नि रञ्जन ॥ १८ ॥ राजद्वारे स्मशाने च, सग्रामे शत्रु संकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूत प्रेतभयाश्रिते ॥ ॥ १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादु खे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनीशाकिनी ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्ता रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, य स्मरेज्जिनपञ्जरम् ॥ तस्य किञ्चि द्भयं नास्ति, लभते सुखसपद ॥२२॥ जिन पिञ्जरनामेदं,य स्मरेदनुवासर ॥ कमलप्रभ राजेन्द्र- श्रिय सलभते

लसिद्धिदम् ॥ त्रिसंध्य य पठे न्नित्यं, नित्य प्राप्नो ति स श्रियम् ॥ ३३ ॥

अथ लघु जिनसहस्रनाम लिख्यते ॥

॥ नम त्रिलोकनाथाय ॥ सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि ॥ मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मल शाश्वतो शुद्ध. ॥ निर्विकल्पो निरामय ॥ नि.शरीरो निरातंक. ॥ सिद्ध शुद्धो निरंजन ॥ २ ॥ निष्कलको निरालबो ॥ निर्मोहो निर्मलो त्तम ॥ निर्मयो निरहकारो ॥ निर्विकारोथनिष्क्रिय ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुज शांतः ॥ निमद्यो निर्मल. शि व. ॥ निस्तरगो निराकारो ॥ निष्कर्म्मोनिष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपक्षान. ॥ निरागो निरयोजिनः नि शब्द प्रतिमश्लेष्ट ॥ उत्कृष्टो ज्ञानगोचर. ॥ ५ ॥ नि शंगात् प्राप्तकैवल्यो नैष्टक शब्दवर्जित ॥ अनिं द्यो महपूतात्मा ॥ जगत्शिखर शेपर ॥ ६ ॥ नि. शब्दो गुण सपूर्ण ॥ पापतापप्रणाशन ॥ सोपियोगात् शुक्लप्राप्त. कर्मद्योतिवला वहः ॥७॥ अजरो अमर सिद्ध ॥ अर्चित अक्षयो विभु. ॥ अमूर्त्त अच्यु तोब्रह्म ॥ विष्णु रीश प्रजापत ॥ ८ ॥ अनिद्यो वि श्वनाथश्च ॥ अजो अनुपमोभव ॥ अप्रमेयोजगन्ना थ ॥ बोधरूपो जिनात्मक ॥ ९ ॥ अव्ययसकलारा ध्यो ॥ निष्पन्नो ज्ञानलोचन ॥ अछेद्यो निर्मलो नि त्य. ॥ सर्वसल्यविवर्जित ॥१०॥अजेय सर्वतोभद्र. ॥

निष्कषायो भवांतक. ॥ विश्वनाथ स्वयंभुरू' ॥ वीत रागोजिनेश्वर ॥ ११ ॥ अतको सहजा नंद ॥ अवा ङ्मानसगोचर ॥ असाध्यशुद्धश्चैतन्य ॥ कर्मनोकर्म वर्जित ॥ १२ ॥ अनंतविमलज्ञानी ॥ निस्पृहो नि ष्प्रकाशक ॥ कर्माजितो महात्मान. ॥ लोकत्रयशि रोमणि ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वर शंभु ॥ विश्व वे दी पितामह ॥ सर्वभूतहितोदेव ॥ सर्वलोकसरण्य क ॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो ॥ भगवांस्त्रिजगद्गु रु ॥ अनंतानंतधीशक्ति ॥ सत्यव्यक्त व्ययात्मक ॥ १५ ॥ अष्टकर्म विनिर्मुक्त ॥ सप्तधातुविवर्जित गौरवादित्रयावार ॥ सर्वज्ञानादिसंयुत ॥ १६ ॥ अ भय प्राप्तकैवल्य ॥ निर्माणे निरपेक्षक ॥ निष्कलं केवलज्ञानी ॥ मुक्तिसौख्यप्रदायक ॥ १७ ॥ अना मयो महाराध्यो ॥ वरदो ज्ञानपावक ॥ सर्वेश सत् सुखावास ॥ जिनेंद्रोमुनिसंस्तुत ॥ १८ ॥ अन्यून परमज्ञानी ॥ विश्वतत्त्वप्रकाशक ॥ प्रबुद्धो भगवान्ना थ ॥ प्रस्तुत पुण्यकारक ॥ १९ ॥ शंकर सुगतो रौद्र' सर्वज्ञो मदनांतक ॥ ईश्वरो भुवनाधीश ॥ सच्चित्त पुरुषोत्तम २० ॥ सदोजातमहात्मान ॥ वि मुक्तोमुक्तिवल्लभ योगींद्रो नादिससिद्ध ॥ निरीहो ज्ञानगोचर ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्त्र ॥ सत्सौ ख्य त्रिपुरांतक ॥ त्रिनेत्र त्रिजगत्पूज्य ॥ कल्या णकोष्ट मूर्त्तिक ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्य ॥ सर्वपा

पविवर्जित ॥ सर्वदेवाधिकोदेव ॥ सर्वभूतहितंकर ॥२३॥ स्वयविद्यो महात्मानं ॥ प्रसिद्ध पापनाशन तनुमात्रचिदानंद ॥ चैतन्यश्चैत्यवैभव ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव ॥ मुक्तिस्थो महतांमह ॥ मुक्तिकार्यायसतुष्टो ॥ निराग परमेश्वर ॥ २५ ॥ महादेवो महावीरो ॥ महामोहविनाशक ॥ महाभावो महादर्श ॥ महामुक्तिप्रदायक ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी ॥ महातपो महात्मक ॥ महर्द्धिको महावीर्यो महांतिकपदस्थित ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावद्यो ॥ महाविघ्नविनाशक ॥ महासौख्यो महापुसो ॥ महामहिम अच्युत ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसंबोध ॥ एकानेकविनिश्चल सर्वबंधविनिर्मुक्तो ॥ सर्वलोकप्रधानक ॥२९॥महासूरो महाधीरो ॥ महादु ख विनाशक ॥ महामुक्ति प्रदोधीरो ॥ महाहृद्यो महागुरु ॥ ३० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी ॥ निष्कामो विषयाच्युत ॥ भगवंता महाभ्रांतो ॥ शातिकल्याणकारक ॥ ३१ परमात्मापर ज्योति ॥ परमेष्टी परमेश्वर ॥ परमात्मापरानद परपरम आत्मक. ॥३२॥ प्रस्तुतोनत विज्ञानी ॥ संख्यानिर्वाणसयुत ॥ नाकृति-नाक्षरोवर्णी ॥ व्योमरूपो जितात्मक ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंबोध ॥ ससारछेदकारण ॥ निरवद्योमहाराध्य ॥ कर्मजिद्धर्म्मनायक ॥ ३४ ॥ बोधसत्सुजगद्धो ॥ विश्वात्मानरकांतक ॥ स्वयंभूपाप

हृत्पूज्य पुनीतोविश्वस्तुत ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीत ॥ रूपातीतो निरजन ॥ अनंतज्ञानसंपूर्णो ॥ देवदेवेशनायक. ॥ ३६ ॥ वरेण्योभवविध्वंसी ॥ योगिनांज्ञानगोचर ॥ जन्ममृत्यु जरातीत ॥ सर्वविघ्नहरोहर ॥ ३७ ॥ विश्वदृक्भव्यसंवंद्य ॥पवित्रोगुणसागर ॥ प्रसन्न परमाराध्य. लोकालोकप्रकाशक ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भोजगत्स्वामी इंद्रवंद्य सुरार्चित ॥ निष्प्रपचो निरातको ॥ निःशेषक्लेश नाशक ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो ॥ लोकालोकविलोकन ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकीशो ॥ लोकाग्रशिखरस्थित ॥४०॥ नामाष्टकसहस्राणि ॥ ये पठन्ति पुन पुन ते निर्वाणपद यांति ॥ मुच्यते नात्र संशय ॥ ४१ ॥ इति लघुसहस्रनाम संपूर्णं ॥

॥ सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं ॥ सहृदय हृदयं गमदेशन ॥ अजितनोत्तमभक्तसुरेश्वर ॥ नमतशीतलनाथजिनेश्वर ॥ १ ॥ सहजसुन्दरसद्गुणमन्दिर ॥ विमलकेवलबोधविकस्वरं ॥अतिसुवर्णसुवर्णसमद्युत॥ प्रवरवधुरलक्षणसयुत ॥ २ ॥ (युग्म) यदीयभक्तिर्भविना भवे भवे भवेदभीष्टार्थनिदानमद्भुत ॥ स एव नन्दात्मसमुद्भवो जिन ॥ समर्चनीय खलुशीतल प्रभु ॥ ३ ॥ कर्माजितसान् भविन सुशीतलान् ॥ कुर्व मदावाक् सुधया दयापर ॥ सदेव देवो भवतात्सदेव मे ॥ सदिष्टसिद्धै जिनराजशीतल

॥ ४ ॥ अधिगतशिवशर्मा वीतमोहादिकर्मा ॥ दृढ रथ तनुजन्मा सर्वत साधधर्मा ॥ त्रिदशमहितमूर्ति स्फूर्तिमत्पुण्यकीर्ति ॥ जयतु गतजवार्ति शीतल सौम्यमूर्ति ॥ ५ ॥ इति श्रीशीतलजिन स्तोत्रम् ॥

॥ यस्य ज्ञान दयासिन्धो ॥ दर्शन श्रेयसे ध्रुवं ॥ सश्रीमान् पार्श्वतीर्थेशो ॥ निषेव्य सततं सता ॥ १ ॥ वामासूनोर्यश पुंजे रगाधस्यानघागुणा ॥ स्मर्यन्तेयेन स स्मार्यो ॥ जवेत्प्राचीन बर्हिषां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान् ॥ ससारिकसुरासुरान् ॥ सेव्यतामक्ष यो धीरा.पार्श्वं देवोपर प्रजु ॥ ३ ॥ जिना सर्वार्थ दानेन ॥ येन कल्पद्रुमाश्चपि ॥ जवेदभ्यर्चितो लो के ॥ सश्रियेचाम्रतायच ॥४॥ सस्तुतो मधुर श्लोकै॥ जैनलाजप्रदायकः ॥ कल्याणकारको · भूयात् ॥ श्री मान् शंखेश्वर.प्रजु ॥ ५ ॥ इति पार्श्वजिन स्तुति

॥ शालिनीछन्द ॥ ॥ गोरीग्रामे स्तजने चारु तीर्थे ॥ जीरावल्यां पत्तने लोद्रवाख्ये ॥ वाणारस्यांचा पिविख्यातकीर्त्ती श्रीपार्श्वेशनौमि शखेश्वरस्थं॥१॥इष्टा र्थाना स्पर्शने पारिजातं ॥ वामादेव्यानन्दनं देववं द्य ॥ स्वर्गेभूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥ २ ॥ जित्वाजेद्य कर्मजाल विशाल ॥ प्राप्यानन्त ज्ञानर त्नंचिरत्न ॥ लब्धामंदानदनिर्व्वाणसौख्य ॥ श्री पा० ॥ ३ ॥ विश्वधीश विश्वालोकेपवित्र॥ पापागम्य मो क्षलक्ष्मीकलत्रं, अजो जाद्यं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्री

पा० ॥ ४ ॥ वर्षेरम्ये स्व गदो न्नागचंद्र ॥ संख्येमासे माधवे कृष्णपक्षे ॥ प्राप्त पुण्यै र्दर्शन यस्य तंच ॥ श्रीपा० ॥ इति शखेश्वर जिनस्तव ॥

॥ विशदसकुणराजि विराजित ॥ घनघनाघनना दविन्नाजितं ॥ नजतन्नक्तिन्नरेण रमेश्वरं ॥ जगति पार्श्वजिनेशमनश्वर ॥ १ ॥ विविधवर्णविन्नूषितविग्र हा ॥ विहितदूर्दम दर्प्पक निग्रहा ॥ वसुयुगार्कमि ता. सुकृताकरा जिनवरा प्रन्नवंतु शिवंकरा ॥२॥ रु चिरवर्ण निवद्धमनिन्दितं ॥ सुमनसां प्रकरैरन्निवदि तं ॥ निखिलसाधुजना खलुनिर्मिद, जिनमतं नम तांचितशर्मदं ॥३॥ सकलन्नव्यसरोज विकाशिका ॥ कुमत संतमसोच्चयनाशिका ॥ जिनवरानन पद्मग तोन्मुदा ॥ नवतु वाग्जिन लाजशुन्नार्थदा ॥ ४ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रन्ना ॥ नास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनांनोधौ व्यवस्थायिन ॥ ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगतास्ते पाठकासाधव ॥ स्तुत्यायोगिजनेश्च पचगुरव कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममल रत्नत्रय पावन ॥ मुक्तिश्री नगरायन जिनपते स्वर्गापवर्गप्रद धर्म्म सूक्ति सुधाश्च चैत्यमखिल जैनालय श्यालयं प्रोक्ततत्त्रि विध चतुर्विध ममीकुर्वंतु मे मङ्गल ॥ २ ॥ नाभेयादि जिनाधिपास्त्रिजुवनेख्याताश्चतुर्विंशति ॥ श्रीमन्तो

भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥ ये विष्णु प्रतिविष्णुलाङ्गलधरा. सप्ताधिकाविंशति ॥ स्त्रैलो क्ये भयदास्त्रिषष्टिपुरुषा ॥ कुर्वंतुमे मङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी ॥ चपायां वसुपूज्यसज्जिनपते ॥ सम्मेतशैलेर्हता ॥ शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हतो ॥ नि र्वाणाविनय प्रसिद्धविभवा कुर्वंतु मे मङ्गल ॥ ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतर भावनामर गृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिता ॥ जंबूशाल्मलि चैत्यशाखिषु तथावक्षार रूप्यादिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौच कुण्डलनगेद्वीपेच नंदी श्वरे ॥ शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहा कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ५ ॥ यो गर्भावतरोपिजय त्यर्हता जन्माभिषेको त्सवे ॥ यो जात' परिनिष्क्रमेवचभवोय केवलज्ञान भाक् ॥ य' कैमल्यपुरप्रवेशमहिमासंभावित स्वर्गि भि ॥ कल्याणानि च तानि पचसततं कुर्व तु मे मंगलं ॥ ६ ॥ ये पचौषधिऋद्धयः श्रुततयोऋद्धिग ता पचये ॥ येचाष्टांगमहा निमित्तकुशला ये षौवि धाचारणा ॥ पचज्ञानधराश्च येपि वलिनो ये बुद्धि ऋद्धीश्वरा ॥ सर्वे ते सकलाश्च ते गणभृता. कुर्वं तु मे मङ्गल ॥ ७ ॥ देव्यश्चाष्टजयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता ॥ श्रीतीर्थं कर मातृकाश्च जन कायक्षाश्च यक्षीश्वरा ॥ द्वात्रिंशत् त्रिदशाग्रहानिधि सुरादिकन्यकाश्चाष्टधा ॥ दिक्पाला दश इत्यमीसुर

णा' कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्ग
ाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां ॥ पूर्व्वाह्णेपि महोत्स
ेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ ये शृण्वंति पठंति
तेश्च मनुजैर्धर्मार्थकामान्विता ॥ लक्ष्मीराश्रयतेवि
ायरहिता कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ९ ॥ इति श्री ॥

शिवं शुद्ध बुद्ध पर विश्वनाथं ॥ नदेवंनवधुर्नकर्म
नकर्ता नश्रग नसंग नइछा नकामं ॥ चिदानन्दरुप
नमोवीतरग ॥ १ ॥ नवधो नमोक्षो नरागा दिलोकं ॥
नयोगनभोगं नव्याधिर्नशोक ॥ नक्रोध नमानं नमाया
नलोभ चि० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राण नजिह्वा
नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्र ननिद्रा ॥ नस्वाद नखेदं नवर्णं
नमुद्रा ॥ चि० ॥ ३ ॥ नजन्म नमृत्यु नमोदं नचिं
ता ॥ न क्षुत्त्रट् ॥ नभीत नकृष्य नतुदा, नस्वामीन
भृत्य नदेवोनमर्त्य ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदडे त्रिखडेह
रेविश्वव्याप ॥ हृषीकेश विध्वस्त कर्म्मारिजालं ॥ न
पुण्यं नपाप नश्रद्धानप्राण ॥ चि० ॥ ५ ॥ नबालं
नवृद्ध नविद्वान्नमूढा ॥ नठेर्ध्यं नखेद्य नमूर्त्तिर्नमीढा
नकृष्ण नशुक्ल नमोह नतंद्रा ॥ चि० ॥
ध नमध्य नमत्यं नमन्या ॥ नद्रव्य नक्षेत्र
नव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो न
इदज्ञानरुप स्वयतत्ववेदी ।
रूप ॥ न
आत्मारामगुणाकर

भूतगतागते सुखदुखज्ञातात्वयासर्वग ॥त्रैलोक्याधि
पतिस्वयंस्व मनसा ध्यायति योगीश्वरा ॥ वंदे तं हरि
वंश हर्षहृदय श्री मान भू दच्युत ॥ ए ॥ इति
श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य ॥ दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं
स्वर्ग सोपानं ॥ दर्शन मोक्षसाधन ॥ १ ॥ दर्शनेन
जिनेंद्राणां ॥ साधूनां वंदनेनच ॥ नतिष्टतिचिरं पा
पं ॥ छिद्रहस्तेयथोदक ॥ २ दर्शनं जिनसूर्यस्य ॥ सं
सारध्वातनाशनं ॥ वोधनचित्तपद्मस्य समस्तार्थप्रका
शक ॥३॥ दर्शनचजिनेंद्रस्य ॥ सद्धर्म्मामृतवर्षण जन्म
दावविनाशाय ॥ वृद्धणसुखवारिधे ॥४॥ जिनेभक्ति
जिनेभक्ति ॥ जिनेभक्ति दिनेदिने ॥ सदामेस्तु, स
दामेस्तु, सदामेस्तु भवेभवे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहि
त्राता ॥ नहित्राता जगत्त्रये ॥ वीतरागसमोदेवो ॥
न भूतोन भविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरण नास्ति ॥
त्वमेवशरण मम ॥ तस्मात् सर्व्व प्रयत्नेन॥रक्षरक्षजि
नेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागमुखंदृष्ट्वा ॥ पद्मरागसमप्रभ ॥
नै कजन्मकृतंपाप ॥ दर्शनेनविनश्यति ॥८॥ अर्हंतो
मंगलं नित्यं ॥ सिद्धाजगतिमगलं ॥मगलसाधवोमु
ख्य ॥ धर्म्म सर्व्वत्र मंगल ॥९॥ लोकोत्तमा श्रहार्ह
त ॥ सिद्धालोगोत्तमा सदा ॥ लोकोत्तमोयतीशा
ना ॥ धर्मोलोकोत्तमोर्हता ॥१०॥ शरण सर्व्वदार्हत॥

सिद्धाशरणमगल ॥ साधव' शरण लोके ॥ धर्म्म शरणमर्हता ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कार स्तोत्र ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र ॥

॥ आद्यताक्षरसलक्ष्य ॥ मक्षरव्याप्ययत्स्थितं ॥ अग्निज्वालासमनाद ॥ विंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रातं ॥ मनोमलविशोधक ॥ देदीप्यमान हृत्पद्मे ॥ तत्पदंनौमिनिर्मल ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरब्रह्म ॥ वाचक परमेष्ठिन ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीज ॥ सर्वत प्रणिदध्महे ॥३॥ ॐ नमोर्हद्भ्यश्शेभ्य, ॐ सिद्धेभ्योनमोनम ॥ ॐ नम. सर्वसूरिभ्य ॥ उपाध्यायेभ्य ॐ नम ॥४॥ ॐ नम सर्व साधुभ्य ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनम ॥ ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य ॥ श्चारित्रेभ्यस्तु, ॐ नम ॥५॥ श्रेयसेस्तु, श्रियेस्त्वेत ॥ दर्हदाद्यष्टकशुभ्र ॥ स्थानेष्वष्टसुविन्यस्त ॥ पृथग्बीजसमन्वित ॥ ६ ॥ आद्यंपदशिखारक्ते ॥ त्पररक्तेतु मस्तक ॥ तृतीय रक्तेन्नेत्रेद्वे ॥ तुर्ये रक्तेच्चनासिका ॥ ७ ॥ पचमतुमुखरक्तेत् ॥ षष्ठरक्तेच्चघटिकां ॥ नाभ्य तससमरक्ते ॥ रक्तेत्पादातमष्टम ॥ ८ ॥ पूर्वपणवत सात ॥ सरेफोद्यब्धिपचपान् ॥ ससाष्टदशसर्यांकान् ॥ श्रितोविंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्या ॥ पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सातहसमलकृत ॥१०॥ ॐ॥ ह्राँ ॥ ह्रीं॥ ह्रूँ ॥ ह्रूँ ॥ ह्रैं ॥ ह्रौं ॥ ह्राँ ॥ ह्रँ असिआउसा

ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्योनम ॥ जम्बूवृक्षधरोद्वीप ॥क्षारो दधिसमावृत ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्ट ॥ काष्टाधिष्टैरलकृ त. ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरु ॥ कूटलक्षैरलंकृत ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार ॥ स्तारामंडलमण्डित. ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारातं बीजमध्यास्यसर्वग ॥ नमामिवि वमार्हत्यं ॥ ललाटस्थं निरजन ॥ १३ ॥ अक्षय निर्मलशांत ॥ बहुल जाग्रयतो ज्ञित ॥ निरीहं निरहंकारं ॥ सार सारतर घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ्र स्फीतं ॥ सात्विक राजसमत ॥ तामस चिर सबुद्ध ॥ तैजस शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारच निरा कार ॥ सरस विरसपरं ॥ परापर परातीतं ॥ पर पर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्ण द्विवर्णंच ॥ त्रिवर्णं तुर्य वर्णक ॥ पचवर्णं महावर्णं ॥ सपरच परापर ॥ १७ ॥ सकल निष्कलतुष्ट ॥ निवृतं भ्रातिवर्जित ॥ निरंज न निराकार ॥ निर्लेप वीतसश्रय ॥ १८ ॥ ईश्वर ब्रह्मसबुद्ध ॥ बुद्ध सिद्ध मतगुरु ॥ ज्योतीरूप महा देव ॥ लोकालोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु, वर्णांत ॥ सरेफोविंदुमण्डित तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहु धानादमालित ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिता' सर्व्वे ॥ वृषभाद्याजिनोत्तमा ॥ वर्णै निजैनिजैर्यु क्ता ॥ ध्यातव्यास्तत्रसगता ॥ २१ ॥ नादश्चं द्रसमा कारो ॥ विंदुर्नीलसमप्रभ ॥ कलारुणसमासांत' ॥ स्वर्णाभ' सर्वतोमुख' ॥२२॥ शिर. संलीन ईकारो ॥

सिद्धाशरणमंगल ॥ साधव शरण लोके ॥ धर्म्म शरणमर्हता ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कार स्तोत्र ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र ॥

॥ आद्यताक्षरसलक्ष्य ॥ मक्षरव्याप्ययत्स्थितं ॥ अग्निज्वालासमनाद ॥ बिंदुरेखा समन्वित ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांत ॥ मनोमलविशोधक ॥ देदीप्यमान हृत्पद्मे ॥ तत्पदंनौमिनिर्मल ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरब्रह्म ॥ वाचक परमेष्ठिन. ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीज ॥ सर्वत प्रणिदध्महे ॥३॥ ॐ नमोर्हद्भ्यश्शेभ्य, ॐ सिद्धेभ्योनमोनम ॥ ॐ नम सर्वसूरिभ्य ॥ उपाध्यायेभ्य ॐ नम ॥४॥ ॐ नम सर्व साधुभ्य ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनम ॥ ॐ नमस्तत्वदृष्टिभ्य ॥ श्चारित्रेभ्यस्तु, ॐ नम ॥५॥ श्रेयसेस्तु, श्रियेस्त्वेत ॥ दर्हदाद्यष्टकशुभ्र ॥ स्थानेष्वष्टसुविन्यस्त ॥ पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यंपदशिखारक्ते ॥ त्पररक्तेतु मस्तक ॥ तृतीय रक्तेनेत्रेद्वे ॥ तुर्ये रक्तेचनासिका ॥ ७ ॥ पचमलुमुखरक्तेत् ॥ षष्ठरक्तेचघटिका ॥ नाभ्य तसप्तमरक्ते ॥ रक्तेत्पादातमष्टम ॥ ८ ॥ पूर्वपणवत. सात ॥ सरेफोद्यब्धिपचपान् ॥ सप्ताष्टदशसर्यांकान् ॥ श्रितोविंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्या ॥ पचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सातद्दसमलकृत ॥१०॥ ॐ॥ ह्रां ॥ ह्रीं॥ ह्रूं ॥ ह्रूं ॥ ह्रे ॥ ह्रो ॥ ह्रौ ॥ ह्रः. असिआउसा

ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्योनम. ॥ जबूवृक्षधरोद्वीप ॥क्षारो दधिसमावृत ॥ अर्द्धदाद्यष्टकैरष्ट ॥ काष्ठाधिष्टैरलकृत ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरु ॥ कूटलक्षैरलंकृत ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार ॥ स्तारामकलमकितः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारात बीजमध्यास्थसर्वग ॥ नमामिविंबमार्हत्य ॥ ललाटस्थं निरजन ॥ १३ ॥ अक्षय निर्मलशांत ॥ बहुलं जाग्रयतो ज्ञितं ॥ निरीहं निरहंकार ॥ सार सारतर घन ॥ १४ ॥ अनुद्धत शुभ स्फीतं ॥ सात्विक राजसमतं ॥ तामस चिर सबुद्ध ॥ तेजस शर्धरीसम ॥ १५ ॥ साकारच निराकारं ॥ सरस विरसंपर ॥ परापरं परातीत ॥ परं पर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णंच ॥ त्रिवर्णं तुर्य वर्णक ॥ पचवर्णं महावर्णं ॥ सपरच परापर ॥ १७ ॥ सकल निष्कलतुष्ट ॥ निवृतं भ्रातिवर्जितं ॥ निरजन निराकार ॥ निलेप वीतसश्रय ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसबुद्धं ॥ बुद्ध सिद्ध मतगुरु ॥ ज्योतीरूप महादेव ॥ लोकालोक प्रकाशक ॥ १९ ॥ अर्द्धदारयस्तु, वर्णांत ॥ सरेफोबिंदुमकित' तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधानादमालित ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिता' सर्व्वे ॥ वृषभाद्याजिनोत्तमा. ॥ वर्णे निजेनिजेर्युक्ता ॥ ध्यातव्यास्तत्रसंगता ॥ २१ ॥ नादश्चं द्रसमाकारो ॥ बिंदुर्नीलसमप्रभ ॥ कलारुणसमासात' ॥ स्वर्णाभ सर्वतोमुख ॥२२॥ शिर. सलीन ईकारो ॥

विनीलोवर्णत स्मृत॥वर्णानुसारसंलीनं तीर्थकृन्मंगल स्तुम ॥२३॥ चद्रप्रभपुष्पदंतौ॥नादस्थिति समाश्रितौ ॥ विद्रुमध्यगतौनेमि ॥ सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्म प्रभवासुपूज्यौ ॥ कलापदमधिष्टितौ शिरईस्थि तिसंलीनौ ॥ पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषा स्तीर्थकृत सर्वे ॥ हरस्थाने नियोजिता ॥ माया वीजाक्षरप्राप्ता ॥ श्चतुर्विंशतिरर्हतां ॥ २६ गतरागद्वे षमोहा ॥ सर्वपापविवर्जिता ॥ सर्वदा सर्वकालेषु ॥ ते भवतु जिनोत्तमा ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययच्चक्र तस्य चक्रस्ययाविद्या ॥ तयाछादित सर्वाङ्ग मामाहिनस्तु काकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० ॥ मामाहिनस्तु, राकि नी ॥ २९ ॥ देवदे० ॥ मामांहिनस्तु, लाकिनी ॥ ॥ ३० ॥ देव० ॥ मामाहिनस्तु, काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० ॥ मामाहिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० ॥ मामाहिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० ॥ मामाहि नस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० ॥ मामाहिसंतुपन्नगा ॥ ३५ ॥ देव० ॥ मामाहिसतु हस्तिन ॥ ३६ ॥ देवदे० ॥ मामाहिसतुराक्षसा ॥ ३७ ॥ देव० ॥ मामाहिसतुवह्नय ॥ ३८ ॥ देव० ॥ मामाहिसतु सिंहका ॥ ३९ ॥ देव० ॥ मामाहिसतु दुर्ज्जना ॥ ४० ॥ देवदे० ॥ मामाहिसतु भूमिपा ॥ ४१ ॥ श्री गौतमस्ययामुद्रा ॥ तस्यायाजुविलब्धय, ॥ ताभिरभ्यु द्यतज्योति ॥ रहसर्वनिधीश्वर ॥ ४२ ॥ पातालवा

सिनो देवा ॥ देवाभूपीठवासिन ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवा ॥ सर्वे रक्षतु मामित ॥ ४३ ॥ येऽवधिल ब्धयो येतु ॥ परमावधिलब्धय ॥ ते सर्वे मुनयोदे वा ॥ मां सरक्षतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूतवेता ला ॥ पिशाचामुक्षलास्तथा ॥ तेसर्वेप्यु पशाम्यतु दे वदेव प्रभावत ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्चधृतिर्लक्ष्मी ॥ गौ री चंडी सरस्वती ॥ जया वा विजयानित्या ॥ क्लि न्नाजितामद द्रवा ॥ ४६ ॥ कामागाकामवाणाच ॥ सानंदानदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री ॥ क ला कालीकलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एता सर्वामहादेव्यो ॥ वर्त्ततेयाजगत्त्रये ॥ मह्यसर्वा प्रयच्छतु ॥ कांतिकीर्ति धृति मति ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्य सुगु प्राप्यः श्री ऋषिमंडलस्तवः ॥ भाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राण कृ तेनय ॥ ४९ ॥ रणेराजकुलेवह्नौ ॥ जलेदुर्गे गजे ह रौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे ॥ स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निज राज्य ॥ पदभ्रष्टा निजं प द ॥ लक्ष्मीभ्रष्टानिजां लक्ष्मीं ॥ प्राप्नुवंति न संश य ॥ ५१ ॥ भार्यार्थीलभते भार्यां ॥ पुत्रार्थी लभते सुत ॥ वित्तार्थी लभते वित्त ॥ नर स्मरण मात्रत. ॥ ५२ ॥ स्वर्णेरूप्ये पटेकास्ये ॥ लिखित्वा यस्तुपूज येत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धि ॥ गृहेवसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्ज्यपत्रेलिखित्वेद ॥ गलके मूर्ध्नि वाभुज ॥ धारित सर्वदा दिव्य ॥ सर्वभीति विनाशक ॥ ५४ ॥

भूते प्रेतैर्ग्रहै र्यक्षै॰ ॥ पिशाचैर्मुझलैर्मलै ॥ वातपित्त कफोद्रेकै, मुच्यते नात्रसशय ॥५५॥ भूर्भु व. स्वस्त यीपीठ ॥ वर्तिन शाश्वता जिना ॥ तैस्तुतैर्वंदितै र्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलश्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतज्ञोप्यमहा स्तोत्र ॥ नदेय यस्यकस्यचित् ॥ मिथ्यात्व वासिने द त्ते ॥ बालहत्या पदेपदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितप कृत्वा ॥ पूजयित्वाजिनावली ॥ अष्टसाहस्रिको जा प ॥ कार्य स्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरंप्रा त ॥ यैंपठति दिने दिने ॥ तेपा नव्याधयो देहे ॥ प्रभवति नचापद ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधियावत् ॥ प्रात प्रातस्तुय पठेत् ॥ स्तोत्रमेत न्महातेजो ॥ जिन विंब स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतोविंबेभवेसप्त मके ध्रुव ॥ पदप्राप्नोतिशुद्धात्मा ॥ परमानदनदित ॥ ६१ ॥ विश्ववद्यो भवेत् ध्याता ॥ कल्याणानिचसो भुते ॥ गत्वास्थानपर सोपि ॥ भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इद स्तोत्र महास्तोत्र ॥ स्तुतीनामुत्तमंपरं॥ पठनात्स्मरणाद्वापा ह्लभ्यते पदमुत्तम ॥ ६३ ॥ इति श्रीऋषिमंडलस्तोत्रं ॥ क्षेपकश्लोकान्निराकृत्यमूलयं त्रकल्पानुसारेण लिखितं गणिनि श्रीक्षमाकल्या णो पाध्यायै॰ तस्योपरि मयापि लिखित इद स्तोत्रं ॥

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन वृहत्स्तवन लि० ॥

॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादनी ॥ जागै जगवि ख्यात ॥ पासतणा गुणगावता ॥ मुझ मुख वसज्यो

मात ॥ १ ॥ नारगेअणहिलपुरे ॥ अहमदा वादे पास ॥ गौडीजी धणी जागतो ॥ सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ सुभ वेला सुभदिन घडी॥महुरत एकमभाण॥ प्रतिमा ते इह पासनी ॥ थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल) गुणहि विसाला मगलीक माला ॥ वामा नो सुत साचोजी ॥ धण कणकचण मणिमाणकढे ॥ गौडीजी धणी जाचोजी ॥४॥ (गु०) अणहिलपुर पाटणमांहे प्रतिमा ॥ तुरक तणें घर हुतीजी ॥ अश्वनी भूमि अश्वनी पीमा ॥ अश्वनी वालि विगूती जी ॥ ५ ॥ (गु०) जागतो जक्ष जेहनें कहिये ॥ सुहणो तुरकनै आपेजी ॥ पासजिने सर केरी प्रतिमा ॥ सेवक तुझ सतापे जी ॥ ६ ॥ (गु०) प्रह उठीने परगट कर जे ॥ मेघा गोठीनें देजे जी ॥ अधिको मलेजे उंठो मलेजे ॥ टका पाचसै लेजेजी ॥ ७ ॥ (गु०) नहि आपिस तोमारीस मुरमीस ॥ मोर वध वधास्यैजी ॥ पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ ॥ लछि घणी घर जास्यै जी ॥ ए ॥ (गु०) मारग पहिलो तुझने मिलस्यै ॥ सारथवाहजेगोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोड्या ॥ वस्तु वहे तसुपोठी जी ॥ ए ॥ (गु०) (दूहा) मनसुवीहनो तुरकडो ॥ मांनें वचन प्रमाण ॥ वीवीनेंसुहणा तणो ॥ सजलावे सहिनाण ॥ १० ॥ वीवी वोलै तुरकनें ॥ वमा-देव हे कोय॥अवसताव

नहीतो मारै सोय ॥ ११ ॥ पाछलीरात परोढीयै ॥ पहली वंधै पाज ॥ सुहणा माहेंसेठने ॥ संभलावै जक्ष राज ॥ १२ ॥ (ढाल) एम कही यक्ष आयो राते ॥ सारथ वाहुनेसुहणें जी ॥ पासतणी प्रतिमा तुलेजे ॥ लेतो सिरमत धुणे जी ॥१३॥ (एम०) पाचसेटक्का तेहने आपे ॥ अधिको मा आपिस वारूजी ॥ जतन करी पुहचाडे थानकि ॥ प्रतिमा गुण सनारे जी ॥ १४ ॥ (एम०) तुझनें होसी वहु फलदायक ॥ नाई गोठीनें सुणजे जी ॥ पुजी स प्रणमीस तेहनापाया ॥ प्रहउठीनें थुणजे जी ॥ १५ ॥ (ए०) सुहणो देईनें सुरचाल्यो ॥ अपनें थानक पहुतोजो ॥ पाटण माहें सारथवाहु ॥ हींडे तुरकनें जोतोजी ॥ १६ ॥ (ए०) तुरकै जाता दीठो गोठी ॥ चोखा तिलक छिलाडे जी ॥ सकेत पहुतो साचोजाणी ॥ वोलावै वहुलाकेजी ॥ १७ ॥ (ऐ०) मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपु ॥ पास जिणेसर केरीजी ॥ पाचसै टक्का जो मुझ आपै ॥ मोलन मागु फेरीजी ॥ १८ ॥ (ए०) नाणो देई प्रतिमा लेई ॥ थानक पहुतों रंगेजी ॥ केसरचदन मृगमद घोली ॥ विधसु पूजे रगेजी ॥ १९ ॥ (ए०) गादी रूनी रूनी कीधी ॥ ते माहि प्रतिमा राखेजी ॥ अनुक्रम आव्यापारकरमांहे ॥ श्रीसघनें सुर सा खे जी ॥ २० ॥ (ए०) उछव दिनश अधिका

थाये ॥ सत्तर भेद सनात्रो जी ॥ ठामश ना दर सण करवा ॥ आवे लोक प्रभातो जी ॥ २१ ॥ (ए०) (दुहा) इकदिन देखै अवधिसु ॥ पारकर पुरनो भंग ॥ जतनकरु प्रतिमा तणो ॥ तीरथ अठे अभग ॥ २२ ॥ सुहणो आपै सेठनें ॥ थल अटवी उजाड ॥ महिमा थास्यै अति घणी ॥ प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥ २३ ॥ कुसल खेम तिहा अठै ॥ मुझनें तुझनें जाणि ॥ सका ठोकी काम करि ॥ करतो मकरिस काणि ॥ २४ ॥ (ढाल) पास मनोरथ पूराकरे ॥ वाहण एक वृपभ जो तरे ॥ पारकरथी परियाणो करै ॥ इक थलचढ बीजो ऊतरै ॥ २५ ॥ बारै कोस आव्या जेतलै ॥ प्रतिमा नविचालै ते तलै ॥ गोठी मनह विमासण थई ॥ पास भुवन मंमा वू सही ॥ ३६ ॥ आ अटवी किमकरु प्रयाण ॥ कुटको कोइनदीसे पाहण ॥ देवल पास जिनेसर तणो ॥ मंमाबु किम गरथे विणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसघरहस्यै किहां ॥ सिलावटो किम आवै इहा ॥ चितातुर थयो निद्रालहे ॥ यक्षराज आवीने कहे ॥ २८ ॥ गुहली ऊपर नांणो जिहां ॥ गरथघणो जाणीजे तिहा ॥ स्वस्तिक सोपारीने ठाणि ॥ पाहण तणी उघटस्यै खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ ॥ अमृत जलनीसरसी कूओ ॥ खाराकूआ तणो इह-सैनाण ॥ भूम पड्यो छै नीलो

ठाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसे ॥ कोढपरा नवियो किसमिसे ॥ तिहा थकी तू इहा आणजे ॥ सत्यवचन माहरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथिर थापियो ॥ सिलावटनें सुहणो दियो ॥ रोगगमीने पूरु आस ॥ पास तणो मने आवास ॥ ३२ ॥ सुपन माहे मान्यो तेवैण ॥ हेम वरण देखाड्यो नैण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुवा ॥ सिलावटैने गया तेमवा ॥ ३३ ॥ सिला वटो आवे समरो ॥ जीमे खीरखांड घृत चूरमो ॥ घडे घाट करे कोरणी ॥ लगन नले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ यक्षइ कीधी पूतली ॥ नाटक कौतिक करती रली ॥ रग मरूप रलियामणो रसे ॥ जोता मानवनो मन हसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद ॥ स्वर्गसमो मडे सवाद ॥ दिवस विचारी ईंडोधड्यो ॥ ततखिण देवल ऊपर चड्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेलावास ॥ पद्मासण वैठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरुसमान ॥ एकल मल्लवगडे रहे वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी मे साभली ॥ तवन माहि सूधी साकली ॥ गोठी तणा गोतरीया अठे ॥ यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥ (दूहा) विघन विडारण यक्ष जगि ॥ तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीतकरी श्रीसघने ॥ देखाडे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गोमी पासजिन ॥ आपे अरथभकार ॥ सानिध करे श्रीसघने ॥ आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील

पलाणे नीलहय ॥ नीलो थइ असवार ॥ मारग चूकामानवी ॥ वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) वरण अढार तणो लहै जोग ॥ विघन निवारे टालै रोग ॥ पवित्र थई समरै जे जाप ॥ टालै सगला पाप सताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घरि धन नो सूत्र ॥ आपे अपुत्रीयानें पुत्र ॥ कायरनें सूरापण धरै ॥ पार उतारै लछी वरै ॥ ४३ ॥ डो जागीने दै सोजा ग ॥ पगविहूणानें आपै पग ॥ ठामनहीं तेहने थेठा म ॥ वछित पूरै अजिराम ॥ ४४ ॥ निरधास्या ने थे आधार ॥ भवसायर ऊतारै पार ॥ आरतीआनी आर त भग ॥ धरै ध्यान ते लहै सुरग ॥ ४५ ॥ समस्यां सहाय दीयै यक्ष राज ॥ तेहना मोटा अठै दिवाज ॥ बुद्धि हीणनें बुद्धि प्रकास ॥ गूगाने थै वचन विला स ॥ ४६ ॥ दुखियांने सुखनो दातार ॥ भय भजण रजण अवतार ॥ वधन तूटै वेडी तणा ॥ श्रीपार्श्व नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपै ॥ विश्वानर विसराल ॥ हस्ति यूथ दूरेटलै ॥ दुरूरसीह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा भयचकवै ॥ विप अमृत उडकार ॥ विपधरनो विप ऊतरै ॥ सग्रामें जयजयकार ॥ ४९ ॥ रोग दालिद्र दु ख ॥ दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्री पासनो ॥ महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (करूखानीचाल) श्र उजितुं उजितु उज उपसम धरी ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री

पार्श्व अक्षर जपतै ॥ भूतनें प्रेत कोटिंग व्यतर सुरा उपसमै ॥ वार इकवीस गुणते ॥ ५१ ॥ (उ०) कुरा रोग सोगा जरा जतने ॥ ताव एकांतरा कुत्तपतै ॥ गर्नवधन व्रण सर्पविछू विष ॥ चालिका वालमेवा ऊखतै ॥ ५२ ॥ (उं) साइणी माइणी रोहणी रकणी ॥ फोटका मोटका दोपहुंतें ॥ दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी ॥ स्वान सीयाल विक रालदते ॥ ५३ ॥ (उ) धरणेंद्र पदमावती समर सोभावती ॥ वाट आघाट अटवी अटतै ॥ लखमी लीलामिलै सुजस वेला वलै ॥ सयल आस्या फलै मन हसंतें ॥ ५४ ॥ (उ० ॥ अष्टमहाभय हरे कान पीडा टलै ॥ ऊतरै सूल सीसगभणतै ॥ वदत वर प्रीतसु प्रीति विमला प्रभू ॥ श्रीपास जिण नाम अभिराम मतै ॥ ५५ ॥ (उ जितु) इति श्रीगोडी पार्श्वनाथ जी वृद्ध स्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीभीरभजन पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ भुजगी छंदनी चाल ॥

॥ वारु विश्वमा देश काशी विराजे, जिहा जान्हवी नीर गभीर गाजे ॥ पुरी नाम वाराणसी तिहा प्रसिद्धि, शोभा स्वर्गनी जिणे उलाली लीधी ॥ १ ॥ घणु शु वखाणे कवि घाट तेहनो, सहु चित्त चाहे जोवा रूप जेहनो ॥ धराधीश तिहां खड्गधारी धरा ने पाले, प्रेमशु अश्वसेनाभिधाने ॥ २ ॥ वामा तेह

नी गेहनी रूपे रंभा, शीले सर्व नारी जीती ए अचंभा ॥ सदा सुदरी ते सोहे चद्र वयणी, सुती सेज मां एकदा मध्य रयणी ॥ ३ ॥ सुरलोक दशमां थकी जे सनूरे, प्रभुपार्श्व वामाकुखे पुण्यपूरे ॥ चतुर्थिदिने चैत्रनी कृष्ण पक्षे, वस्या गर्भवासे विशाखा सुरक्षे ॥ ४ ॥ देवी चौद सुहणां तदा दिव्य देखे, महामोद पामी माने तेह लेखे ॥ जायो पोश मासे दशमी अधारी, आखाविश्वनो जेह उद्योतकारी ॥ ५ ॥ मलि दिग्कुमारी सुरेंद्रे मलायो, गायो हूलरायो पूजीने वधायो ॥ वधते प्रभु यौवने जाम जायो, प्रभावती राज कन्या प्रणायो ॥ ६ ॥ विषय भोग विलशी वस्या गृहवासे, वरश त्रीशमे व्रत लीधु उल्लासे ॥ त्र्याशी रात्रि मौने रह्या मुक्ति वासी, तपस्या करी शुक्ल ध्यानाभ्यासी, ॥ ७ ॥ चोखे चित्त निर दोष चारित्र पाली, बहु कर्मना वृक्षनां मूल वाली ॥ थया केवली चैत्रनी कृष्ण चोथे, देखे लोक अलोकने ज्ञान ज्योते ॥८॥ मली देवताये महामोदधारी, कर्यो त्रिगडो विश्व व्यामोह कारी ॥ स्वामी दिव्य सिंहासने बेठासोहे ॥ वारे परखदानां बहु मनमोहे ॥ ए ॥ नवे नेहशु एहने जे निहाले ॥त्रिधा ताप सताप ते दूर टाले ॥ अहो एक नजरे जिणे एह दीठो, सुने मानखो तेहनो लागे मीठो ॥ १० ॥ दीये देशना दीन बधु दयानी, प्राणी पुण्य पामी सुणो जैन वाणी ॥

लही दुर्लभं मानवं ए शरीर, मुधा कां गमोठो बुध बोध हीर ॥ ११ ॥ मदे जेह माता पड्या मोह पा से, धने जेह धाता विषयने विलासे ॥ मुंझाया मुग्ध माया तणा फद माही, मिथ्या ते ग्रस्या शुद्धने ते न चाही ॥ १२ ॥ धरे धर्मने जे होइ धर्म धोरी, तजी कर्मने ते कापे कर्म दोरी ॥ भजी शुद्धने ते लहे शुद्ध हेतु, थाय तेह मिथ्यातनो धूम केतु ॥ १३ ॥ वसी वासना जेहनी जैन वयणे, नावे आमलो तेहने को इ नयणे ॥ जेहनां चित्त सिद्धात माहे रमेठे, किम तेह भूला कहोने भमेठे ॥ १४ ॥ मिथ्याते लीना तेहने ते गमेठे, दोषी जीवना ते जिहां तिहा दमे ठे ॥ फरी लाख चोराशीना फेर माहे, विना नाथ तेहने धरे कोण वाहे ॥ १५ ॥ जिणे जैन सिद्धांत नी युक्ति जाणी, कहोनेकोइ तेहने गमे अन्यवाणी ॥ हीरे जे हव्यो उलखी हेत आणी, कहो किम ते सग्रहे काच प्राणी ॥ १६ ॥ देइ देशनाने प्रभु तीर्थ थापे, जग जंतु बधुपणे बोध आपे ॥ महीं म हले विचरे जेम वायु, पुरु भोगवी एकसो वर्ष आयु ॥ १७ ॥ मासे श्रावणे शैल समेत शृगे, वश्या श्वेत षष्टी दिने मुक्तिसगे ॥ प्रभु भीड भजन नामे भज ता, भाजे भीडने सुख आपे अनता ॥ १८ ॥ सेवो शुद्ध बुद्धे सदा बोध दाता, भजो भाव भक्ते प्रभु भूत त्राता ॥ सेव्यो हेजशु एह सहजे सधारे,

पूज्यो प्रेमशु पापना वध वारे ॥ १९ ॥ वधे वंदता संपदा जे वधारे, धखु ध्यानमा सेवकां वाहे धारे ॥ अर्च्यो उछटे आपदाथी उगारे, स्तव्यो त्रिविधे जेह संसार तारे ॥ २० ॥ नम्यो नेहशु जेह नवेनिद्धि आपे, कीजे चाकरी तो चारे गति कापे ॥ जोतां जेहनी आदि कोई न जाणे, कवि तेहना गुण केता वखाणे ॥ २१ ॥ नमो नाथ अनाथ समाथ कारी, नमस्ते अरूपी वहु रूपधारी ॥ नमो बुद्धि शुद्धा तमा सिद्धि नर्त्ता, नमो पारगामी नमो सोख्य कर्त्ता ॥ २२ ॥ नमो मुक्ति दाता नमो तु विधाता, नमो विश्वनेता नमो तु विख्याता ॥ नमो सर्व वेदी अवेदी नमस्ते नमो शकरो सर्वव्यापी नमस्ते ॥ २३ ॥ सेढी वेत्रवत्योपकठे दिदारु, खेरु हरीआलुं वसे गाम वारु ॥ राजे तत्र त्रेवीशमो तीर्थराय, जेहना नामथी कोटि कल्याण थाय ॥ २४ ॥ धरणेंद्र पद्मावतीने पसाय, सदा सघना विघ्न दूरे पलाय ॥ उदयरत्न भांखे गाता पार्श्वस्वामी, पूरी आजमेतो नवे निद्धिपामी ॥ २५ ॥

॥ अथ सरस्वती अष्टक प्रारभ ॥

॥ हरिगीत छद ॥

॥ बुद्ध विमलकर नाव बुधवर, निरूप रमनी, निर खिये ॥ वर देय न वाला, पद प्रवाला, मत्रमाला हर खियें ॥ स्थिर थानंत्रा, अति अचत्रा, रूप.

रंजा जलकती ॥ जजिये जवानी, जगत जानी, राज रानी सरस्वती ॥ १ ॥ सुरराज सेवित, देख देवत, पद्म पेखत, आसन ॥ सुखदाय सूरति, माय मूरति, दुख दुरति निवारन ॥ त्रिहु लोक नारक, विघ्न वारक, धरा धारक, धरपती ॥ जजिये० ॥ २ ॥ केविया कोपित, लोज लोपित, अवनि उपित, ईश्वरी ॥ शतोप धारन, विघन वारन, मदन मारन, महेश्वरी ॥ खल दल्लां खमन, ठिड ठडन, दुष्ट दमन, नरपती ॥ जजिये० ॥३॥ शिव शक्ति साची, रग राची, अज अजाची, योगिनी ॥ मद ऊरन मत्ता तरन तत्ता, धत्त धत्ता ध्वंगिनी ॥ जिनआणपति, मन रमति, धवल दति, वरमती ॥ जजिये० ॥ ४ ॥ जलथल जनानी पवन पानी, मति वखानी, वीजली ॥ गिरवरा गहन, वाघ वाहन, सर्प साहन, शीतली ॥ हदहाक धारी, हत हजारी, धनुप धारी, जगवती ॥ जजिये० ॥ ५ ॥ ऊणणाट ऊल्लरि, धिधिम धपवरि, रिरिरिधर, खड्गि ये॥धिधिधोकिधों, गमदि धिधिक धिरत, धिधिक धोग मदी गड्गियें ॥ ऊाकिडोडो रुरु मतिडां त्तत्तकि त्रात्रा दमकती ॥ जजिये० ॥ ६ ॥ रिरि रमकि रमि रिमि, ऊिऊिम ऊिमि ऊिमि ठमकि ठम पग रचियें ॥ घम घमकि घम घम ग्रहणिक ग्रहणि, गमश्रति अमग नृत्ति मचियें ॥ तत थेइय तांनन, मात मानन, अचल आनन दरसती ॥ जजियें ॥ ७ ॥ चव

चक्र चालन, कटिक कालन, गर्व गालन, गजनी ॥ विरदा विदारन, महिष मारन, दलिद्र दारन, भज नी ॥ चरचिये चंडी, खलांखंडी, मदन मंडी मलक ती ॥ भजियें ॥ ८ ॥ कविकरे अष्टक, टले कष्टक विसन पृष्टक कढ्यिये ॥ मणिमौलि मंडित, पढेपंडित, ए अखंडित पेखिये ॥ दयासुर देवी, सुरासेवी, नित नमेवी, जगपती ॥ भजियें० ॥ ए ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ क्रोध मान माया लोभनो छंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ पहेलां सरस्वतीनु लीजे नाम, चोवीश जिनने करु प्रणाम ॥ क्रोध मान मायाने लोभ, भाखुं अर्थ करी थिर थोभ ॥ क्रोधे तप कीधो [illegible] क्रोधे कर्म घणेरां फले ॥ क्रोधे करणी [illegible] क्रोधे समतारस सूकाय ॥ २ ॥ क्रोध तणे [illegible] नवि गणे, मातपिता गुरुने अवगणे ॥ क्रोधें [illegible] य मूंझाय, क्रोधे फेर घणेरो थाय [illegible] क्रोधें विकथा वाधे घणी, क्रोधे कर्म निकाचित [illegible] ॥ क्रोधे वे वधव आंफले, क्रोधे [illegible] ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधे अचकारी चटा, [illegible] टा ॥ क्रोधे अरजुन माळि [illegible] किधो सुठाम ॥ ५ ॥ क्रोधें [illegible] भुक्ति गति मेलवे ॥ क्रोधें [illegible] क्रोधे [illegible] मेलवे [illegible]

कठोर, ब्राह्मण डोला काढ्या जोर ॥ क्रोधें सासु थई नणद, सुभद्रासती शिर कीधो फद ॥ ७ ॥ क्रोधे काया कर्मनो वध, क्रोधे धरमा पेसे धध ॥ क्रोधें चेडो ते महाराय, हल विहल मामा घरजाय ॥ ८ ॥ क्रोधे कोणिक कटकी करे, भांगी विशाला पठो फरे ॥ क्रोधे लखमणने वलि राम, क्रोधे रावण टाल्यो ठाम ॥ ९ ॥ क्रोधतणी छे खोटी वात, कोईन करशो एहनी तात ॥ क्रोधे कर्म घणा वधाय, क्रोधे दुर्गति पकवा जाय ॥ १० ॥ तेह भणीसहु छडो क्रोध, सुख निरबाध लहो वलि बोध ॥ मान तणी हवे सुणजो वात, मानतजे ते सबल सुजात ॥ ११ ॥ माने मान तुरगे चडे, माने मोह जालमा पडे ॥ माने नीच कुलें अवतरें, माने विनय मूल नविजडे ॥ १२ ॥ माने चउगतिने अनुसरे, माने जबुक भव माहे फिरे ॥ शांब प्रद्युम्न कह्यो विचार, माने शियाल तणो अवतार ॥ १३ ॥ माने बलराजा निरधार, ब्राह्मण रूप धर्यो मोरार ॥ मान गयद तणोछे जोर, बाहुबले छाड्यो एकठोर ॥ १४ ॥ मान तणीछे वधती वेल, माने नमिया दुखनी रेल ॥ माने वीरमती ते नार, चदने कीधो कुर्कट सार ॥ १५ ॥ प्रेमला लछी हाथें चकी,सूरज कुडे कीधो नर फरी॥ माने दुर्योधन दु ख लहे, माने सर्पनी उपमा कहे ॥ १६ ॥ माने धर्म न पामे कदा, माने कर्म वधाये

सदा ॥ माने मान वधतो होय, माने जीव फरे सहु कोय ॥ १७ ॥ माने बुद्ध गलें नर सोय, मान तजे ते सुखियो होय ॥ माने गज असवारी करे, माने जीव अगोचर फिरे ॥ १८ ॥ मानतणी ते ए गति कही, धर्मी नरते सुणजो सही ॥ हवे मायानो कह विचार, माया नरक तणो छे द्वार ॥ १९ ॥ मायामोह तणोछे दोष, माया कर्म तणोछे पोष ॥ माया कपटे मल्लिनाथ, माया मोह तणोछे साथ ॥ २० ॥ माया ये कूड कपट केलवे, माहाये जुनी गति मेलवे ॥ माया मानव जूठोलवे, माया नरनारी शोषवे ॥ २१ ॥ माया आखाड जूति मुणींद, मायाये लाडु वोहोरया फद ॥ माया मोहो टो छे मकरद, माया पडिया सूरज चद ॥ २२ ॥ माया फद तणीजे जाल, माया सिह तणीछे फाल ॥ माया अधिक करे उफड, माया कर्म तणोछे कुड ॥ २३ ॥ माया माहे धर्म न थाय, माया पुण्य करे अनराय ॥ २४ ॥ छोहोटो महोटो माया धरे, माया सवल संसारें फिरे ॥ माया जालें वाध्यो जीव, मायाये प्राणी करतो रीव ॥ २५ ॥ अर्थ कह्यो मायानो सार, लोभ तणो हवे कहु विस्तार ॥ लोभे लक्षण जाये सहु, लोभे पमिया दाणव वहु ॥२६॥ लोभे लाभ घणेरो थाय, लोभे नरनारी उजाय ॥ लोभे गांडो घेलो होय, लोभे धर्म न जाणे कोय ॥ २७ ॥ लोभे सागर दत्त जलमां पड्यो, लोभ सुभुम चक्रीने

नड्यो ॥ लोभे सचय धननो करे, मारी जिम महू आलें फिरे ॥ २७ ॥ लोभे धन नवि खरचे धणी, वागुल भव पामशे कां फणी ॥ लोभे देश विदेशे जाय, लोभे नरनारी अफलाय ॥ २९ ॥ पुण्य होय तो पामे वली, वेठा धर्म करो मन रली ॥ क्रोध लोभनो ठांमोपास, श्रावक धर्म करी उल्लास ॥ ३० ॥ लोभे नाना मोटो जीव, लोभे अकार्य करे सदीव ॥ लोभ तणी गति ठको सार, तीर्थयात्र करो उदार ॥ ३१ ॥ अढार पांत्रीसा वरश मझार, वागडदेश वडो डुसार॥देवदर्शनकरोसुखकार, पामो जिम भव सायर पार ॥ ३२ ॥ क्रोध मान माया नो सग, वली ठाडो लोभ प्रसग ॥ कहे कवि सुणो पडित राय, कातिविजय हरखे गुण गाय ॥ ३३ ॥

॥ अथ श्रीमणिभद्रजीनो छद प्रारभ' ॥

॥ श्री मणिभद्र सदा समरो, उर बीचमे ध्यान अखड धरो ॥ जपिया जय जयकार करो, भजिया सहु नित्य भकार भरो ॥ १ ॥ जेकुशल करे नामज लिया, आनंद करे देव आश किया ॥ सौभाग्य वधे जग सहस्सगुणो, दिलसेव्यादे प्रभु जश डुगुणो ॥ २ ॥ अरियण सहु अलगा भागे, विरुआवैरी जन पाय लागे ॥ सकट शोक वियोग हरे, उण वेला आय सहाय करे ॥ ३ ॥ भूत भयकर सहु भागे, जक्ष रोगणी सायणी नवि लागे ॥ वाय चोराशी जायअ

लगी, लखमी सहु आय मले वेगी ॥ ४ ॥ गुल पा पडियां गुरुवार दिने, लापसिया लाडु शुद्ध मने ॥ धुप दिप नैवेद्य धरो, आठम दिन पूजा अवश्य करो ॥ ५ ॥ जेहने दिनप्रति जाप सदा, तस सुपनांतरमे प्रत्यक्ष कदा ॥ जपियां सहु जाये आपदा, कोइ मणा घरे रहे न कदा ॥ ६ ॥ मुहमद सारु तमे जस कर्यो, गुण सार जिस्यो तमें गुण कर्यो ॥ श्री दीना नाथजी दया करो, शिर उपर हाथ दियो सखरो ॥ ७ ॥ भवियण जे भावे भजशें, कारज सिद्धि आपणी करशे ॥ पूज्यां पुन्न वधे डुगणा, किणी वातें कदि रहें नहि उणा ॥ ८ ॥ श्री मणिभद्र मनमें ध्यावो, सुख सपत्ति भहु वेगें पावो ॥ लक्ष्मी कीर्त्तिवर आप लहे, शिवकीर्त्ति मुनि एम सुजस कहे ॥ ९ ॥

॥ अथश्रीमणिभद्रजीनी आरति प्रारभ्य ॥

॥ जय जय निधि, जय माणिक देवा ॥ जयमा० ॥ हरि हर ब्रह्म पुरंदर, करता तुज सेवा ॥ जयदेव जयदेव ॥ १ ॥ तु वीराधिप वीरा, तु वंछित दाता ॥ तुवं० ॥ माता पिता तु सहोदर, छो प्रभु जगत्राता ॥ जय दे० ॥ २ ॥ हरि करी वधन उदधी, फणिधर अरि अनला ॥ फणि० ॥ ए तुज नामे नासे, साते भय सघला ॥ जयदे० ॥ ३ ॥ भाक त्रिसुल फूल माला, पासांकुस छाजे ॥ पासा० ॥ एक कर दाणव मस्तक, एम षट् भुज राजे ॥ जयदे० ॥ ४ ॥ तु

भैरव तु किन्नर, तु जग महादीवो ॥ तुंज० ॥ काम कल्पतरु धेनु, तु प्रभु चिरजीवो ॥ जयदे० ॥ ५ ॥ तपगछपति सुरि,ध्यावे तुझ ध्यान ॥ ध्यावे० ॥ मणि भद्र भद्रकर, आशा विसरामं ॥ जयदे० ॥ ६ ॥ सवत् अढारहसें पासठ, श्री माधव मास ॥ श्रीमा० ॥ दीपविजय कविरायनी, पूरो सहु आस ॥ जयदे० ॥ ॥ ७ ॥ इति श्रीमणिभद्रजीनी आरति ॥

॥ अथ ज्वर (ताव) छद ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो आनंद पुरनगरे, अजयपाल राजान ॥ माता अजया जनमियो, ज्वर तु कृपा निधान ॥ १ ॥ सातरूप शक्ति हुउं, करवा खेल जगत्त ॥ नाम धरा वे जूजुवा पसर्यो तु छत्त उत्त ॥ २ ॥ एकातरो बेयातेरो, त्रइयो चोथो ताम, शीत उष्ण विषम ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ छद ॥

॥ ए साते तुज नाम सुरगा, जपता पूरे कोडि उमगा ॥ ते नाम्या जे जालिम जूगा, जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे भूपति सब रका, त्रिभूवनमा वाजे तुज डका ॥ माने नहि तु केहनी शका, तूठो आपे सोवन टका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडे ॥ दुष्ट धीठना कधर तोडे, नमीचाले तेहने तुं छोडे ॥ ६ ॥

आवतो थरहर कपावे, माह्याने जिम तिम वहकावे पहिलो तु केडमां थी आवे, सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥ हीं हीं हु हुकार करावे, पाशलिया हामा करुनावे ॥ उनाटो पण अमल जगावे, तापे पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो कार्त्तिकमा तुज जोरो, हठ्यो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश पमावे शोरो, करे सर्व तु तातो तोरो ॥ ९ ॥ तु हाथीनां हाडां भजे, पापीने ताडे करपजे ॥ भक्ति वत्सल भावे जो रजे, तो सेवकने कोय न गजे ॥ १० ॥ फोमक तोमक ममरु माक, सुरपति सरिखा माने हाक ॥ धमके धुसड धासम धाक, चढतो चाले चच ल चाक ॥ ११ ॥ पिशुन पठामण नहीको तोथी, तुज जस जीत्या जाय न कोथी ॥ शी अणखील करो ए थोथी, मेहर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ भक्त थकी एवमीकां खेमो, अवल अमिनां वांटा रेडो ॥ लाखा भक्तनो ए निवेमो, महाराज मूको मुज केमो ॥ १३ ॥ लाजवसोमा अजया राणी, गुरु आण मानो गुण खाणी ॥ घरे सिधावो करुणा आणी, कहुंतु नाके लींटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए ठंदजे पढशे, तेहने ताव कदी नव चढशे ॥ कांति बल देही नीरोग, लेहेशे लखमी लीला भोगं॥ १५ ॥

॥ ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम वदीजे ॥ आनंदपुर अवनीश, अजयपाल आखीजे ॥ अजया

जात अढार, वांचिये साते वेटा ॥ जपतां एहिज जाप, जक्तसु न करे खेटा ॥ उतरें अंग चढियो पल कमे, तारा वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदि, सार मंत्र गणिये सदा ॥ १६ ॥ इति ज्वरठंद समाप्त ॥ ए ठंद सात वार, अथवा एकवीश वार साज्ञ ले गणे तो ताप जतो रहे ॥

॥ अथ श्री यंत्र महिमा वर्णन ठंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ जिण चोवीशे पय प्रणमेवि, सद्द गुरु तणा वचन निशुणेवि ॥ यंत्र तणो महिमा अति घणो, जावे बोलु जवियण सुणो ॥ १ ॥ शोले कोठे लखिये वीश, सघला जय टाले जगदीश ॥ अठावीसमां रोग जय हरे, ठत्रीसें द्युति जय करे ॥ २ ॥ त्रीशे वलि सायणि नासति, वत्रीसे सुख प्रसवते हुति ॥ देवध्वजा जो लखिये इमें, परचक्र जय न होवे किमें ॥ ॥ ३ ॥ घर वारणे जो लखिये एह, कामण नव परा जवे तेह ॥ शाकणि सहारी न हुवे तिहा, चोत्रीसो यंत्र लखिये जिहा ॥ ४ ॥ चालिसे शीस रोग टले, पागे वयरी हेला दले ॥ अने वली ठाकरवे वहु मान वसुधा वलि वधारे वान ॥ ५ ॥ वासठे वध्या गर्भज धरे, एसा वयण सद्गुरु उच्चरे ॥ चोसठनो महीमा छे घणो, मागे जय न होय कोइ तणो ॥ ६ ॥ वारि जय रिपु शाकणि तणां, चोसठना महिमा नहिं म

णां ॥ बावत्तरीभूत भूरि जेह फूके नर जय पामे ते ह ॥ ७ ॥ पच्चाशी पथे भय हरे, अट्योतरशो शिव सुख करे ॥ वीसोत्तरशो नयणे निरखत, प्रवस वेद न ते नवि हुंत ॥ ८ ॥ बावनशोनो उली नीर, मुख धोवे हुवे वाहालो वीर ॥ सतरिसयनो महिमा अ नत, तुछ बुद्धि किम जाणे जत ॥ ९ ॥ एकसो बहु त्तरो यंत्र प्रभाव, बालकने टाले दुष्ट भाव ॥ विहुंसो नो यत्र लखिये बार, वाणिज्य घणा होय हाट मझा र ॥ १० ॥ त्रणशे नरनारीनो नेह, विणठो बाधे नही सदेह ॥ चारशे घर भय नवि होय, कण उत्प त्ति घणी खेत्रे जोय ॥ ११ ॥ पांचसे महिला गर्भज धरे, पुरुपहने पुत्र संतति करे ॥ छसे यत्र होये सुख कार, सातसे झगडे होये जय कार ॥ १२ ॥ नवसें पथे न लागे चोर, दशसें दुखन पराभवे घोर ॥ इग्यारसें छे जे जीव दुष्ट, तेहना भय टाले उत्कृष्ट ॥ १३ ॥ बदि मोक्ष बारसे होय, दश सहसे पुन ते हिजहोय ॥ वली सयलनीरक्षा करे, एमयत्र तणी महिमा विस्तरे ॥ १४ ॥ पच्चाससे राजादिक मान, शाकणि दोप निवारण ग्यान ॥ कठे तथा मस्तक जे धरे, अशुभ कर्मते शुद्धज करे ॥ १५ ॥ बावनना नो मस्तके तथा, कठे खेत्रपालनो हित सदा ॥ पण यालीस शिर कठे होय, सर्व वश्य थाय तस जोय ॥ ॥ १६ ॥ कुकुम गोरोचदन सार, मृगमदसों चौदश

रवि वार ॥ पवित्र पणे पुष्य मूल नक्षत्र, एकमनां जो लखिये यत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सव दूर पलाय ॥ पंडित अमर सुंदर इम कहे, पूजे परमारथ सव लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति शोहे क्षत्रियकुंडे, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामिनी मध्ये शोभतांरे, सुपनदेखे बाल ॥ मयगल रूप जने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंबार उज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मंगल पहेलु बोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमा नयरी राजगृही, श्रेणिक नामे नरेशरु ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहा, वसुभूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामे नार ॥ इंद्रभूति आदेअ छे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणे आदर्यु, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे तिहा समोसर्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेहनो साभली, लीधो संजमभार ॥ अगीयार गणधर

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥इन्द्रभूति गुरुजगतें थयो माहा लब्धिनो भंडार ॥ मंगल बीजु बोलीये, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पाडली पुरवरें, सकडाल नामे मंत्री सरू ए ॥ लाठलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवतमां शिरोमणि, थूलीभद्र जग विख्यात ॥ मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षजवार ॥ भोग भली पेरें भोगव्या, ते जाणे सहु ससार ॥ शुद्ध संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासे रह्यो निश्चल, कर्यो नहीं लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमा जे नर नार ॥ मंगल त्रीजुं बोलीए, श्रीथूलिभद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजेंझगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोभित, मध्य सिंहासन झगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ झगमगे जिन सिंहासने ए, वाजित्र कोडाकोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे वेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठशु रे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणे विश्वनायक, शोभे श्री भगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, वेठीते पर्षदा वार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना चारप्रकार॥दान शीयल तप भावना रे, टाले सघला कर्म ॥ मंगल चोथु बोलीयें, जगमांहे श्रीजिनधर्म ॥ ए

रवि वार ॥ पवित्र पणें पुष्य मूल नक्षत्र, एकमना जो लखिये यत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ॥ पंडित अमर सुद र इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ भूपति शोहे क्षत्रियकुंडे, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामिनी मध्ये शोभतांरे, सुपनदेखे बाल ॥ मयगल रूप जने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर ध्वजा सुदर, कलश मगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अबार उज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मगल पहेलु बोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमा नयरी राजगृही, श्रेणिक नामे नरेशरू ए ॥ धनवर गोबर गाम वसे तिहा, वसुभूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामे नार ॥ इंद्रभूति आदेश छे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणे आदर्यु, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे तिहा समोसर्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेहनो साभली, लीधो सजमभार ॥ अगीयार गणधर

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥इन्द्रभूति गुरुजगतें थयो माहा लब्धिनो भंडार ॥ मंगल बीजु बोलीये, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नद नरिंदनो पामली पुरवरें, सकडाल नामें मंत्री सरू ए ॥ लाठलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमा शिरोमणि, थूलीभद्र जग विख्यात ॥ मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षजवार ॥ भोग भली पेरे भोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासें रह्यो निश्चल, कर्यो नही लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमा जे नर नार॥ मगल त्रीजुं बोलीए, श्रीथूलिभद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजेंझगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोभित, मध्य सिंहासन झगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ झगमगे जिन सिंहासने ए, वाजिंत्र कोडाकोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे वेलुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठ, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वना[illegible] पे भे श्री भगवत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, [illegible] दा वार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, [illegible] र॥दान शीयल तप भावना रे, टाले [illegible] मगल चोथु बोलीये, जगमांहे श्री

रवि वार ॥ पवित्र पणे पुष्य मूल नक्षत्र, एकमनां जो लखिये यत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ॥ पंडित अमर सुंदर इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति शोहे क्षत्रियकुंडे, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामिनी मध्ये शोभतांरे, सुपनदेखे बाल ॥ मयगल रूप जने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंबार उज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मंगल पहेलु बोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामे नरेशरू ए ॥ धनवंत गोबर गाम वसे तिहां, वसुभूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामे नार ॥ इंद्रभूति आदेश ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणे आदर्यु, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणे समे तिहां समोसर्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेहनो सांभली, लीधो संजमभार ॥ अगीयार गणधर

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥इन्द्रभूति गुरुभगतें थयो माहा लब्धिनो भंडार ॥ मंगल बीजु बोलीये, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पाडली पुरवरे, सकडाल नामे मंत्री सरू ए ॥ लाठलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमां शिरोमणि, थूलीभद्र जग विख्यात ॥ मोह वशे वेश्या मंदिर, वस्या वर्षजवार ॥ भोग भली पेरे भोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासें रह्यो निश्चल, रह्यो नही लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार॥ मंगल त्रीजुं बोलीए, श्रीथूलिभद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजझगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोभित, मध्य सिंहासन झगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ झगमगे जिन सिंहासने ए, वाजित्र कोडाकोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे बेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठ[illegible], चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणे विश्वनाथ[illegible]ने श्री भगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, वे[illegible]पर्षदा वार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मन[illegible]प्रकार॥दान शीयल तप भावना रे, टा[illegible]ना कर्म ॥ मंगल चोथु बोलीये, जगमां[illegible]जिनधर्म

रवि वार ॥ पवित्र पणे पुष्य मूल नक्षत्र, एकमनां जो लखिये यत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सव दूर पलाय ॥ पंडित अमर सुद र इम कहे, पूजे परमारथ सव लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति शोहे क्षत्रियकुमे, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामिनी मध्ये शोभतांरे, सुपनदेखे बाल ॥ मयगल रूप जने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर ध्वजा सुदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अवार उज्व ल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजि त, सकल सुख दातार ॥ मगल पहेलु बोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमा नयरी राजगृही, श्रेणिक नामे नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहा, वसुभूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुट क ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामे नार ॥ इंद्रभूति आदेश ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणे आदरु, वहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे ति हा समोसर्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश दे नो साभली, लीधो सजमभार ॥ अगीयार गणधरे

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥इन्द्रभूति गुरुजगतें थयो माहा लब्धिनो भंडार ॥ मंगल बीजु बोलीये, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नद नरिंदनो पामली पुरवरें, सकडाल नामें मंत्री सरू ए ॥ लाठलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमां शिरोमणि, थूलीभद्र जग विख्यात ॥ मोह वशे वेश्या मंदिर, वस्या वर्षजवार ॥ भोग भली पेरे भोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासे रह्यो निश्चल, रह्यो नहीं लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार ॥ मंगल त्रीजु बोलीए, श्रीथूलिभद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजेंझगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोभित, मध्य सिंहासन झगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ झगमगे जिन सिंहासने ए, वाजित्र कोडाकोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे बहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठशुद्ध, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक शोभे श्री भगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, बेठी बेपर दा वार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना चरपकार॥दान शीयल तप भावना रे, टाले सघला कर्म ॥ मंगल चोथुं बोलीय, जगमांहे श्रीजिनधर्म ॥ ४

चार मंगल गावशेजे, प्रभातें धरी प्रेम ॥ ते कोडि मगल पामशे, उदयरत्न भांखेएम ॥ ४ ॥

॥ अथ जीडभजन पार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ फूलणा छंद प्रभाती ॥ जीभजन प्रभु जीभ भजन सदा, नहिकदा निष्फल थायसेवा ॥ भविजन भावशुं भजन मांही भजे, परमपद सपदा तखत लेवा ॥ १ ॥ काशी वणारसी जिनपद पुरे जयो, वामा अश्वसेन सुत विश्वदीवो ॥ सेढीवेत्रक तटे खेटकपुरतपे, कल्पनी कोड कृपाल जीवो ॥ २ ॥ जीभ भव त्रितिभय भावठ भजणो, भक्ति जनरज णोभावे भेट्यो ॥ आज जिनराज मुज काज सिद्धां सवे, मोह राजाननो मान मेट्यो ॥ ३ ॥ कोटि मन कामना सुजस घन गामना, शिवसुख वामना आज साध्या ॥ मगल मालिका आज दीपालिका, मुज मन मंदिरें मोजे वाध्या ॥ ४ ॥ पाछकें छाछमें कात्ति वद आछमे, सतर अठ्योत्तरें पासगायो ॥ उदयनिज दा सनो एह अरदास सुणि,हितधरी नाथजी हाथ सायो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गौतम गुरु प्रभात छंद ॥

जयोजयो गौतम गणधार, मोटी लब्धितणो भ डार ॥ समरे वछित सुख दातार जयो गौतम गणधार ॥ १ ॥ वीरवजी[illegible] मुनि शिर दार[illegible] ॥ ज[illegible]

यो० ॥ २ ॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र कल त्र सज्जन परिवार ॥ आपे कनक कोडि विस्तार ॥ जयो० ॥ ३ ॥ घरे घोडा पायक नहींपार, सुखासन पालखी उदार ॥ वेरी विकट थाये विसराल ॥ जयो० ॥ ४ ॥ प्रह उठी जपियें गणधार, ऋद्धि सिद्धि कमला दातार ॥ रूपरेख मयण अवतार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ कवि रूप चद गुरु केरो शिष्य, गौतम गुरू प्रणमो निशदिस ॥ कहे गुण चद ए शमता गार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथ छद ॥

॥ चोपाइ ॥ सकलसार सुरतरु जगजाण, जसु जस वास जगत परिमाण ॥ सकल देव शिरमुगुट सुचंगं, नमो नमो जिनपति मनरग ॥ १ ॥ पाम्धी छद ॥ जो जन मन रग, अकल अभग, तेज तुर ग नीलग ॥ सवि शोभा सग, दग्ध अनंग, शिश भुजंग चतुरग ॥ वहु पुण्य प्रसंग, नित्य उछरग, नव नव रग नारंग ॥ कीरति जलगग, देश कुरगं, सुरपति सगं सारग ॥ १ ॥ सारगा वक्र, पुण्य पवि त्र, रुचिर चरित्र जीवित्रं ॥ तेजो जित मित्र, पक ज पत्र, निर्मल नेत्र सावित्र ॥ जग जीवन मित्र, तरु सत सत्र, मित्रामित्र मावित्र ॥ विश्वत्रय चित्र, चामर छत्र, सीस धरित्र पावित्रं ॥ २ ॥ पावित्रा भरण, त्रिभुवन सरण मुगुटा भरण आचरणं ॥ सुर

अर्चित चरण, शिव सुख करण, दारिद्र हरणं, आवरण ॥ सुख सपत्ति भरण भवजल तरणं, अघ सहरण, उरूरण ॥ गोअमृत झरण, जन मन हरण, वरणावरण आदरण ॥ ३ ॥ आदरणा पाल, झाकझमाल, नित भूपाल अयुपालं ॥ अष्टमी शशि समभाल, देव दयाल, चैतन चाल सुकमालं ॥ त्रिभुवन रखवाल, महाकुकाल, महाविकराल, भय टाल ॥ शृंगार रसाल, महकेमाल, हृदयविशाल भूपाल ॥ ४ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ अकल रूप उदार, सार शिव सपत्ति कारक ॥ रोग सोग संताप, दुरिय दुह दुख निवारक ॥ चिहु दिश आण अखम, चम तप तेज दिणदह ॥ अमर अपछर कोडि, गावे जस नमे नरिंदह ॥ श्री शंखेश्वर सुर मणि, पाय अधिक मगल नीलो ॥ मुनि मेघराज कहे जिनवर जयो श्रीपार्श्वनाथ त्रिभुवन तिलो ॥ ५ ॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ धवलधिंग गोडी धणी, सेवक जन साधार ॥ पचम आरे पेखिये, साहिब जग आधार ॥ १ ॥ भुजग प्रयात वृत्त ॥ तजोमान माया भजो भाव आणी, वामानदनें सेविये सार जाणी ॥ जुवो नाग नागिणी नाथ ध्याने, पाम्या शक्रनी सपदा बोधि दाने ॥ २ ॥ वश्या पाटणे काल केतो धरामा, पधार्या पछे प्रेमशु पार करमां ॥ थलीमा

वली वास कीधो विचारी, पूरे लोकनी आश त्रैलो क्य धारी ॥ ३ ॥ धरी हाथमां लाल कव्वान रंगे, ॥ जिनी गातनी, रातनी नील अंगे ॥ चडी नीलके तेजीये विघ्न वारे, अराध्या थका पथ भूला सधारे ॥ ४ ॥ जेणे पाशगोनी तणा पाय पूज्या, शत्रु सर्वदा तेहना सर्व धूज्या ॥ सर्व देव देवी थयां आज छोटां, प्रभु पार्श्वना एक प्राक्रम मोहो टां ॥ ५ ॥ गोनी आप जोरे नव खंड गाजे, जेह थी शाकिनी डाकिनी दूर भाजे ॥ पुरे कामना पार्श्व गोडी प्रसिद्धो, हेलां मोहराज जेणें जेर कीधो ॥ ६ ॥ महा दुष्ट दुर्दंत जे भूत भूंडा, प्रभु नाम पामें सर्वत्रास गुमा, जरा जन्मने रोगनां मूल कापे, आरध्यो सदा सपदा सुख आपे ॥ ७ ॥ उदय रत्न भांखे नमो पार्श्व गोडी, नाखो नाथजी दुःखनी जाल त्रोडी ॥ ८ ॥

अथ चोत्रीस अतिशयनो छंद ॥

॥ श्री सुमति दायक, दुरित घायक, ज्ञान अनु भव श्रीवरी ॥ तस सुगुरु केरा, चरण प्रणमु, जुंग म कर जोडी करी ॥ १ ॥ वहु भाव भक्तें, थुणु जिनवर, चोत्रीसें अतिशये करी ॥ जे सुगुरु मुख थी, सुण्यांते कहुं, आगम शास्त्रें अनुसरी ॥ २ ॥ तिहां प्रथम अतिशयें, श्री जिन केरा, रोम नख वाधे नहीं ॥ नीरोग निर्मल गात्र अस्ति द्वितीय

कहु सार शिखामण एकखरी ॥ नर नारी सहुहिय डे धरियें, जिम आपद संकट उद्धरिये ॥ १ ॥ पर जात समे गुरु देव नमो, जिम दारिद्र दोहग दूरें गमो ॥ जगवंत सदा चरणां जजियें, कुलरीति कहू कबु ना तजियें ॥ २ ॥ लक्षियें नहि मायनें बापथकी, वढिये नहि कोयथी बाधि जकी ॥ विशवास न कीजे नारि तणो, गुरुराज समीपथी ज्ञान जणो ॥ ॥ ३ ॥ दरबार अलिकन ना जरिये, घरजींतर अक्षर नहि लखियें ॥ रखिये नहि चारु पडोस सदा, तरियें नहि नीर सजोर कदा ॥ ४ ॥ विवसाय सहू विधिसे करिये, ठग दाव रमी धन ना जरिये ॥ पर देशमा गांफिल नां फरिये, नरपति थकी डरता रहिये ॥ ५ ॥ जुगटा व्यसनी परि ना रमियें, कृपि साध अनाथकु ना दमिये ॥ करिये नहि आल अगन्नी तणी, वलि दीजियें सीख सुमित्त जणी ॥ ६ ॥ गुरु आसन उपरि ना धसिये, दुर्जनसे सगति ना वसिये ॥ वलि धीज न कीजिये कुठ किसी, घणीवार न कीजियें वात हसी ॥ ७ ॥ वयणा मुख बोलह ते पलियें, सज्जनथी स्नेह धरी मलिये ॥ परनारिनी सगति प्यार तजो, परमारथ कारज नित्य जजो ॥८॥ सुखकार शिखामण एम कहे, कवि उत्तमते जय माल लहे ॥ गुरु चार लहू अरु दीर्घ धरो, इम त्रोटक नामक छंद करो ॥ ए ॥ इति शिखामण छंद

॥ अथ श्रीअतरिक पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ प्रभु पासजी ताहरु नाम मीठु, त्रिहु लोकमां एटलु सार दीठु ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नीठु, मन माहरे ताहरुं ध्यान वेठू ॥ १ ॥ मन तुह्म पासे वसे रात दीसें, मुखपकज निरखवा हंस हींसे ॥ धन्य ते घडीजेघडी नयण दीसे, भली भक्ति भावे करीवीनवीसे ॥२॥ अहो एह ससार छे दुःख दोरी, इंद्रजालमां हित्त लागु ठगोरी ॥ प्रभु मानिये विनती एक मोरी, मुझ तार तु तार वलिहारि तोरी ॥ ३ ॥ सही स्वप्न जजालमा मन्न मोह्यो, घडी यालमां काल रमतां न जोयो ॥ मुधा एम ससारमा जन्म खोयों, अहो घृत तणे कारणें जल विलोयो ॥ ४ ॥ एतो भमरलो केसुआ भ्रांति धायो, जई शुक तणी चचुमाहे भरायो ॥ शुके जबु जाणी गह्यो दुःख पायो, प्रभु लालचे जीवको एम वाह्यो ॥ ५ ॥ भम्यो भर्म्म भूलो रम्यो कर्म्मभारी, दयाधर्म्मनी शर्म्म मे न विचारी ॥ तोरी नर्म्मवाणी परम सुख कारी, त्रिहु लोकना नाथ मे न सभारी ॥ ६ ॥ विषय वेलडी सेलडी करिय जाणी, भजी मोह तृष्णा तजी तुझ वाणी ॥ एहवो भलो भूको निज दास जाणी, प्रभु राखिये वांहिनी छांहि प्राणी ॥७॥ माहारा विविध अपराधनी कोडि सहीयें, प्रभु शरण आव्या तणी लाज वहीये ॥ वली घणी घणी वीएतिन

म कहीये, मुझ मानसरे परम हंस रहीये ॥ ८ ॥ कलश ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी, मुगतीगामी गाईये ॥ अति भक्ति भावे विपति नावे, परम सपद पाईये ॥ प्रभु महिम सागर गुण विरागर, पास अत रिक जे स्तवे ॥ तस सकल मगल जय जयारव, आनंद वर्द्धन वीनवे ॥

॥ अथ श्री शातिजिन विनतिरूप ठव ॥

॥ शारद माय नमु शिर नामि ॥ हुं गाउ त्रिभुव नको स्वामी ॥ शाति शाति जपे जो कोइ, ता घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शाति जपी जे कीजें काम, सोइ काम होवे अभिराम ॥ शाति जपी पर देश सिधावे, ते कुशलें कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ थकी प्रभु मारि निवारी, शातिजी नाम दियो हित कारी ॥ जे नर शाति तणा गुणगावे, ऋधि अचि ती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकू प्रभु शाति सहाइ, ता नरकू क्या आरति भाइ ॥ जो कछु वछे सोई पूरे, दारिद्र दुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरं जन ज्योत प्रकाशी, घट घट अतरके प्रभु वासी ॥ स्वामी स्वरूप कह्यु नवि जाय, कहेता मोमन अच रिज थाय ॥ ५ ॥ डार दीए सवही हथियारा, जीत्या मोह तणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवशु रग राचे, राज तज्यु पण साहेव साचे ॥ ६ ॥ महा बलवत कहिजें देवा, कायर कुथु न एक हणेवा ॥

ऋद्धि सयल प्रभु पास लहीजे, भिक्षा आहारी नाम कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककू सम भायक, पण सेवकहीकू सुख दायक ॥ तज्यो परिग्रह भये जगनायक, नाम अतित सवे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजे, नामदेव अरिहंत भणीजे ॥ सयल जीव हितवंत कहीजे, सेवक जाणी महापद दीजें ॥ ९ ॥ सायर जेसा होत गभीरा, दूषण एक न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन जी सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न पेखे ॥ रीश विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीश ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशुलय लाई ॥ लोभ विना गुणराशि ग्रहीजे, भिक्षु भये त्रिगको सेवीजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणें शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजें, करम सवेंको मूल खणीजे ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लछी घणी देखो नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे, न काहूकू शीश नमावे ॥ अकिंचनको विरुद धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ रागनहि पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा सग वारे ॥ तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ

चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहियें, तोरा गुनको पार न लहीये ॥ तु प्रभु समरथ साहेब मोरा, हु मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तु रे त्रिलोकतणो प्रतिपाल, हू रे अनाथ तु छे दयाल ॥ तु शरणागत राखणधीरा, तु प्रभु तारक छोवरु वीरा ॥ १८ ॥ तुहि समोवरु भागज्यु पायो,तोमेरो काज चड्यो रे सवायो कर जोडी प्रभु विनवू तोसु, करो कृपा जिनवरजी मोसु ॥ १९ ॥ जनम मरणना दोष निवारो भव सागरथी पार उतारो ॥ श्री हडिणाउरमन्डन सोहे, तिहा प्रभु शाति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया,श्री गुणसागरके मन भाया ॥जेनरनारी एक चित्ते गावे,ते मनोवंछित निश्चे पावे ॥ २१ ॥इति॥

॥ अथ पार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणताखिल मानवदेवगन ॥ जिनशासन मडन स्वामि जयो, तुम दरिसन देखी अनद भयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलांबर भानुनिभ, नव हस्तशरीर हरितप्रतिभ ॥ धर णेंद्र सुसेवित पादयुग, भर भासुरकांति सदा सुभग ॥ २ ॥ निजरूपविनिर्जित रभपति, वदनो द्युति शारद सोमतति ॥ नयनाबुज दीप्ति विशालतरा, तिल कुसुम सन्निभ नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कद समान सदा [illegible] अनार कली सुखदा ॥ अधरारुण [illegible] जय शखपुरा निध पार्श्व

जिन ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, कानें कुमल रवि शशि जीपे ॥ तुम महिमा महि मंमल गाजे, नित्य पच शब्द वाजा वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर विद्याधर आवे, नर नारी तोरा गुण गावे ॥ तुऊ सेवे चोशठ इंद्र सदा, तुऊ नामे नावे कष्ट कदा ॥ ॥ ६ ॥ जे सेवे तुऊने भाव घणे, नवनिधि थाये घर तेह तणे ॥ अकयडियां तु आधार कह्यो, समरथ सा हिब में आज लह्यो ॥ ७ ॥ डुखीयाने सुखमां तुं दा खे, अशरणने शरणे तु राखे ॥ तुऊ नामे सकट वि कट टले, वीठमीया वाला आवि मले ॥ ८ नट विट लंपट दूरे नासे, तुऊ नामे चोरचरम त्रासे ॥ रण राउल जय तुऊ नाम थकी, सघले आगल तुऊ सेवथकी ॥ ए ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा, करी केशरी दावानल विहगा ॥ वध बधन भय सघ लां जाये, जे एक मनां तुजने ध्याये ॥ १० ॥ भूत प्रेत पिशाच छली न शके, जगदीश तवाभिध जाप थके ॥ महोटा जोटिग रहे दूरे, दैत्यादिकना तु मद चूरे ॥ ११ ॥ डायणी सायणी जाय हटकी, भगवंत भयां तुऊ भजनथकी ॥ कपटी तुऊ नाम लीया कपे, डुर्जन मुखथी जीजी जपे ॥ १२ ॥ मानी मठ राला मुह मोडे, तेपण आगलथी कर जोडे ॥ डुर्मु ख डुष्टादिक तुही दमे, तुऊ जापे महोटा म्लेछ नमे ॥ १३ ॥ तुऊ नामें माने नृप सवाला तुज यश उ

ज्ज्वल जेम चद्रकला ॥ तुझ नामें पामे झ्रद्धि घ णी, जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिं तामणि कामगवी पामे, हयगय रथ पायक तुझ ना मे ॥ जन पद ठकुराइ तु आपे, दुर्जन जनना दारि द्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तु धनवंत करे, तूठो को ठार भ्रमार जरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो, ते सहु महिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि मा णक मोती रत्न जड्या, सोवन भूषण बहु सुघड घ ड्या ॥ वली पेहेरण नवरग वेश घणा, तुम नामें नवि रहे कांइ मणा ॥ १७ ॥ वैरी विरुद्ध नवि ताकि सके, वली चारु चुगल मनथी चमके ॥ छल छिद्र कदा केहनो नलगे, जिनराज सदा तुझ ज्योति जगे ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर कपे, पाखडी पण को नवि फरके ॥ लूटा दिक सहु नासी जाए, मा रग तुझ जपता जय थाए ॥ १९ ॥ जड मूरख जे मति हीन वली, अज्ञान तिमिर तसु जाय टली ॥ तुझ समरणथी काह्या थाये, पडित पद पामी पूजाये ॥ २० ॥ खस खाशि खयन पीडा नासे, दुर्बल मुख दीनपणु त्रासे ॥ गड गुवड कुष्ट जिके सबला, तुज जापे रोग सभे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा बहिरा य जिके, तुझ ध्याने गतदुख थाय तिके ॥ तनु कां ति कला सुविशेष वधे, तुज समरणशु नवनिधिसधे ॥ २२ ॥ करि केसरी अहि रण वध सय, जल जल

ण जलोदर अष्ट भय ॥ राघणी पमुहा सवि जाय टली, तुज नामे पामे रंग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीअर्हं श्रीपार्श्व नमो, नमिऊण जपंतां दुष्ट दमो ॥ चिंतामणि मंत्र जिके ध्याये, तिण घर दिन दिन दोलत थाये ॥ २४ ॥ त्रिकरण शुद्धें जे आराधे, तस जश कीर्ति जगमां वाधे ॥ वली कामित काम सवे साधे, समहित चितामणि तुझ लाधे ॥ २५ ॥ मद मछर मनथी दूर तजे, भगवंत भली परें जेहभजे ॥ तसघर कमला कल्लोल करे वली राज्य रमणी बहु लील वरे ॥ २६ ॥ भय वारक तारक तु त्राता, सज्जन मन गति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तु स्वामी; शिवदायक नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठाकुर तुं महारो, निशिवासर नाम जपु ताहारो, ॥ सेवकशु परम कृपा करजो, वालेसर वंछित फल देजो ॥ २८ ॥ जिनराज सदा जय जयकारी, तुज मूर्ति अति मोहन गारी ॥ गुर्जर जनपद मांहे राजे, त्रिभुवन ठकुराइ तुझ छाजे ॥ २९ ॥ इम भाव भले जिनवर गायो, वामासुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि मुनि शशि संवछर रंगे, जयदेवसूरिमहा सुख संगे ॥ ३० ॥ जय शखपुराधिप पार्श्व प्रभो, सकलार्थ समीहित देहि विभो ॥ बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा, तप लब्धि रुचि सुख दाय सदा ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इछ स्तुत सकलकामितसिद्धिदाता, यक्षाधिराजनत

शखपुराधि राज ॥ स्वस्ति श्रीहर्ष रुचि पकजसुप्र सादात्, शिष्येण लब्धि रुचिनेति मुदा प्रसन्न. ॥३२॥ ॥ ॥ सरसति संपति दिश्रो मुजसदा ॥ अलिय विघनन विश्रावेकदा ॥ नयरि उजेणी विक्रमराय ॥ सभापूरीनें बेठो ठाय ॥ १ ॥ जोतिषीया सभामां हिजा ण ॥ नवग्रहनाते करेवखाण ॥ एककहे शनिश्चर अ तिक्रूर ॥ देखाडे अति प्राणी नेंरुड ॥ २ ॥ निजदृष्टि शनिसर पागलो ॥ पितासारथी तुमेसाभलो ॥ राजा विक्रमबोलेइस्यु ॥ इणेराक बापडे चाले किस्यु ॥ ३ ॥ इणे अवसर सनीसरठे जठ ॥ अवधी ज्ञाने जोवे तठ ॥ जोतांमुज विक्रम अवगुणे ॥ वेगिआवी राय प्रते भणे ॥४॥ सांभल राजा माहराकाम ॥ हुरुठो टा ठु तुझ ठांम ॥ विहतो विक्रम बोले वाण ॥ समजो जे बोल्यु अज्ञान ॥ पुजी प्रणमी शनीस्वर पाय ॥ सतो ष्यो निज थानक जाय ॥ पिण सका मनमांहि पयठ ॥ केतेक काले शनिस्वर बेठ ६ निसदिन बीहतो जेहने नाम ॥ ते लाग्यो मुजशनीस्वर स्वांम ॥ तेडी मत्रीने आपेंराज ॥ मे जावु पर देसे आज ॥ ७ ॥ सुपीराज गयो परदेस ॥ चंपा नयरी करे प्रवेस॥श्रीपतीने हाटे जइ बेठ ॥ तव तस नयणें अमीय पयठ ॥ ८ ॥ सेठ ने हाटठे वस्तु अनेक ॥ थोडीवेला माहि वेची ठेक ॥ भाग्यवत नर जाण्यो जाम ॥ जिमवाने घर लाव्यो ताम ॥९॥ भोजन भक्ती भली साचवे ॥ सुख सज्याइ

सुवापाठवे ॥ पासे जींतठे ठोहित ठाम ॥ सारस हंसने मोर चित्रांम ॥ १० ॥ जोवेराजा कौतिक धरी ॥ नाहितव श्रीपति कुमरी ॥ हारघोमले मुकेजांम ॥ इणे अवसर शनि जोवेतांम ॥ ११ ॥ मुज उवेपी विक्रम राय ॥ चपा नगरी वेठोठाय ॥ सुख शज्या सुतो रगवरी ॥ तो प्राक्रम देखाडु करी ॥ १२ ॥ शनी संक्रम्यो हंस मुझार ॥ चुणी हारने वेठोठार॥ तेदेपीने वीहनो राय ॥ कलक जणीते नाठोजाय ॥ १३ ॥ पुत्री नाहि करे सिणघार ॥नवि देखे एकाव लहार॥श्री पतिजोवे घणोखपकरी ॥ रायजणे तव जा ल्योफरी ॥ १४ ॥ चोरजणी ते ठेवा हाथ ॥ चउटे पडीउं तवनरनाथ ॥ तेली एके दीठो जिसे ॥ काली हाथने आण्यो तिसे ॥१५॥ काष्टतणा तव कर जोडवे ॥ वलीवेठो घाणी फेरवे ॥ खायखोलने तेल रोटला॥ छत्रीस राग करे तिहां भला ॥१६॥ दु ख वीसरीउं नी जघरतणो॥सरलें सादे गावेघणो ॥नरपति पुत्री मंदिर पास॥ सुणी साद जोवा थइ आस ॥१७॥ तव तिंहाथी दासीनें कहे ॥ घाची घरपुरुप जे रहे ॥ वेगे तेडी तेह ने लाव्य ॥ आवे घाची घर तव धाव ॥१८॥ तेह पुरुप लावे सापास॥ तव उतरीउं शनिशरतास ॥ अद्भुत रूप देखी अतिघणु॥ वचन कहे तव वरवा तणु ॥ १९ ॥ कहे विक्रम कर माहरे नथी॥नवी परणांए मे तेहथी॥ चडी मंत्र कुयरीयें साधीउं॥सोवर मागीते कर लीउं॥

॥२०॥ ठानो परण्यो विक्रम राय ॥ केतलेकाले जाणे माय ॥ प्रगट परणावि तव पुत्रीका॥श्रीपती भेटी पड्या तत्र तिका ॥ २१ ॥ नरपतीनां प्रणमी त्यांपाय ॥ श्रीपती निजघर लेई जाय॥असन पान करी राजा सुए॥सेठ सहित नृप चित्रामण जुवे ॥२२॥ बोल्यावरस जव साढासात ॥ अविलोके शनी नृपनीवात ॥ आवी हंस मध्ये संक्रमी ॥हार घोमले मुक्यो वमी ॥२३॥ अढी संवछर मस्तके रहे ॥ अढी नाभि जोतीपीया कहे ॥ अढी सवत्सर चरणे वास॥हुउं सनी सर त्रीजो तास॥ ॥२४॥ जन्मद्वितिय चोथो आठमो ॥ द्वादसमो शनी सरवडो ॥ एह कथा सांजलस्ये जेह ॥ कुन रास फल पामे तेह ॥ २५ ॥ तेहने तुपीडेनही कदा ॥ ए वर आपो शनिसर सदा ॥ वर देई शनी थानकें गयो॥ हर्ष्योराय उजेणी गयो ॥ २७ ॥ चाल्यो चतुरगसे नाकरी ॥ आव्यो जिहा उजेणी पुरी ॥ निज नुवने विक्रम आवीउं ॥ अखिल लोक वधावो दिउं ॥२७॥ सिद्धसेन गुरु वचने करी॥लह्यो धर्म समकित आद री॥महाकाल तिरथ उद्धरी॥पर दुःखटालण दानेश्वरी ॥ २९ ॥ सुखे समाधे पालेराज ॥लहि समकित नर सारे काज ॥ निरयावली उपांगे कह्यो ॥ एका वतारी शनि सर लह्यो ॥ ३० ॥ एह कथा छे शनीस्वर तणी ॥ पीडा नकरे चोपई जणी ॥ सुख सपति ते सघली लहे ॥ पंडित ललित सागर इम कहे ॥३१॥

॥ एकादश गणधरना नाम, प्रह उठीनें करु प्रणाम ॥ इंद्रभूति पहेलो ते जाण, अग्निभूति वीजो गुणखाण ॥ १ ॥ वायुभूति त्रिजो जग सार, गण धर चोथो व्यक्त उदार ॥ शासनपति सुधर्मा सार, मंडित नामें छठो धार ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र ते सातमो जेह, अकपित अष्टम गुणगेह ॥ मुनिवरमाहे जे पर धान, अचल भ्रात नवमो ए नाम ॥ ३ ॥ नामथ की होय कोंडी कल्याण, दशमो मेतारज अविरल वाण ॥ एकादशमो प्रभास कहेवाय, सुखसंपत्ति जस नामें थाय ॥ ४ ॥ गाया वीर तणा गणधार, गुणमणि रयण तणा भंडार ॥ उत्तमविजय गुरुनो शिष्य, रत्नविजय वंदे निशदिस ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ गौतमप्रभातिस्तवनं ॥

॥ राग प्रभाती ॥ मात पृथ्वीसुत प्रात ऊठी नमो गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रहसमे प्रेमशु जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय वशवेलें ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुभूपति नदन विश्वजन वंदन, दुरित निकदन नाम जेहनु ॥ अभेद बुद्धि करी भविजन जे भजे, पूर्ण पोहोचे सहि भाग्य तेहनु ॥ मा०॥२॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण काम धेनु ॥ तेह गौतमनु ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधिक नही माहात्म्य केनु ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव आदे धरी माया वीजे करी, स्वमुखें गौतमनाम

ध्याये ॥ कोडि मनकामना सफल वेगे फले, विघ न वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ४ ॥ ज्ञान वल तेजने सकल सुखसंपदा, गोतमनामथी सिद्धि पा मे ॥ अखंड प्रचंड प्रताप होय अवनिमा, सुर नर जेहनें शीश नामे ॥ मा० ॥ ५ ॥ कुष्ट दूरें टले खज न मेलो मले, आधिउपाधिने व्याधि नासे ॥ भूत नां प्रेतना जोर भाजे वली, गोतमनाम जपता उल्ला सें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे जइ, पन्नरसें त्रणने दीक्षदीधी ॥ अठमनें पारणे तापस कारणे, क्षीरलब्धे करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ वरस पचास लगे गृहवासे वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ वार वरसां लगे केवल भोग व्यु, भक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियल गोतम गोत्रमहिमा निधि, गुणनिधि ऋद्धि ने सिद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला लहे, सुजस सौभाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ इति ॥

॥ अथ दोधक बावनी लिख्यते ॥ ॐयह अक्षर सारहें॥ऐसा अवरन कोय॥सिद्ध सरुप भगवान शिव सिरसा वदू सोय ॥ १ ॥ नमीयें देव जगतगुरु, नमी ये सद गुरुपाय॥दयायुक्त नमीयें धरम, शिव सुखलेय उपाय ॥ २ ॥ मनकी ममता दूरकर, समता धर घट माहिं, रमता रामपिछानके, शिव सुख ले क्युं नाहि ॥३॥ शिवमदिरकी चाह धर, अथिर अध तजि दूर ॥

लपट रह्यो क्या कीचमे, अशुचि जिहां भरपूर ॥ ४ ॥ धधाहीमे पचरह्यो ॥ आरभकीए अपार॥उठ चलेगो एकलो, शिरपर रहेंगो भार ॥ ५ ॥ अन्यायी जन देतधन, बहुत, रहित फल सोय ॥ दान स्वल्प फल पिण बहुत न्याय उपार्जित होय ॥ ६ ॥ आतम परहित आपकु, क्या परकु उपदेश, निज आतम समज्यो नही, किनो बहुत कलेस ॥ ७ ॥ इतनाही में समझलें, क्या बहुत पढेसो ग्रथ ॥ उपशम विवेक सवर लहें, याको शिव पुर पथ ॥ ८ ॥ इति भिति याथे गई, प्रगट भई सवरीत॥गीत मार्ग पेदाकीउं गाउं तिनके गीत ॥९॥ उदय भएरविके जसा,जावे सब अंधार ॥ त्योंसद गुरुके वचनथें, मिटे मिथ्यात अपार ॥ १० ॥ ऊगत बीज सुखेतमे, जसा सुजल संयोग॥त्योंसद गुरुके वचनथें, उपजत बोध प्रयोग ॥ ११ ॥ एक टेकधरीए जसा, निर्गुण निर्मम देह॥ दोपरोग जामें नही, करीयें ताकीसेव ॥ १२ ॥ ए विषम गति कर्मकी, लिखी नकाहु जात ॥ रकनथें राजाकरें, राजारंक दिखात ॥ १३ ॥ उंस बिंदु कुशअ ग्रथें, परत नलग्गे वार, आयु अथिर तेसे जसा, कर कछु धर्म विचार ॥ १४ ॥ ऊपध न मिलें मीत्त ज्यु जाथें मरें न कोय ॥ करउंपध एक धर्मको, जसा अमर तु होय ॥ १५ ॥ अध पगु ज्यो एक हे, जरे न पावक माहि ॥ ग्यान सहित क्रिया करे, जसा

अमर पुर जांहि ॥ १६ ॥ अमर जगतमें कोनही॥ मरें अमर सुर राज॥गढ मढ मंदिर ढह परे, अमर सुज स जस राज ॥ १७॥ कचनसें पीतर गहे, मूरख मुढ गिमार॥ तजे धर्म्म मिथ्यामती, भजे अधर्म असार ॥ १८ ॥ खल सगति तजियें जसा, विद्या सोभित तोय॥ पन्नग मणि सयुक्तसो॥ क्यों न भय कर होय ॥ १९ ॥ गाज सरदकी कारिमी, करतहे बहुत अ वाज॥ तनक न बरसे दान त्यों, कृपण नंद जसराज ॥ २० ॥ धरटी के दो पुरु विचे, कण चूरण ज्यों होय॥त्योंदो नारी विच पोट्यो, नर उगरें न कोय॥२१॥ नही ग्यान जामें जसा ॥ नही विवेक विचार॥ताको सगन कीजीइ, पर हरीइ निरधार ॥ २२ ॥ चपला कमला जानकें, कछु खरचो कछु खाउं॥इकदिन भोइ सुवो जसा॥ लावा करकें पाउं ॥२३॥ ठलकर बलकर बुधिकर, करकें जसा उपाय॥आतम वसकर आपनो दूर जन दूर तजाय ॥ २४ ॥ जुवती सब युगवस कीउं किसीन राखीमांम ॥ तासों जो न्यारारहे, ताको जसा प्रणाम ॥ २५ ॥ काकी वात न कीजीइ, थोडा हीमें आनि॥ जसा बराबर लेखवो, आप प्रानपर प्रान ॥ २६ ॥ नग दुहिता पति आभरण॥ ताको अरि जसराज ॥ तसपति नारी विनु पुरुष ॥ नवधे सोभा लाज ॥२७॥ टाणा टुणा ठोरदे, याथें न सरें काज॥ चोखे चित जिन धर्मकर, ज्यू काजसरे जसराज

॥ २८ ॥ ठगसो जो पर मनठगे, पर उपजावे रीझ ॥ जासकरें वस जगतकों॥ साचा ठग सोईज ॥ २९ ॥ करे कहा जस राज कहें,जो अपने मन साच॥क्षिण मे परगट होयगा, ज्यों प्रगटायो काच ॥ ३० ॥ ढहे कोट अग्यांनका,गोलाग्यांन लगाय॥मोहरायको मार लै, जसा लगें सब पाय ॥ ३१ ॥ नदी नखीनारी तणो॥नागन कुल जसराज॥नरस्त्री नरपति निर्गुणिन, आठे करें अकाज ॥ ३२ ॥ तारे ज्यों नरकों जसा भर सायरमें पोत ॥ त्यों गुरु तारें भव जलधि॥ करें ग्यान उद्योत ॥ ३३ ॥ थोड़ा लोभनहि जीउकों, जो लाख कोटिधन होत॥समता जो आवे जसा,सुखी सदा मन पोत ॥ ३४ ॥ दक्षिण उत्तर च्यारदिस, जसाभमे धन काज॥प्रापति विना नपाईये, कोकि करो सुउपाय ॥ ३५ ॥ धन पाया खाया नही, दीयाजि कछु नाहिं,सो बावुरी होयें धनमे जसा,ढुढतहै धन मांहि ॥ ३६ ॥ निर्गुन पतित नारी निलज, कूपक खारो नीर॥नीच मीत जसराज कहें,पांचो दहे शरीर ॥३७॥ पर उपगारी जगतमे ॥ अलप पुरुष जसराज, सीतल वचन दया मया, जाके मुख परलाज ॥ ३८॥ फोज दिसो दिस मिल गई, जसा घुरे निसाण॥फुकें सन मुख जायने, सूरगणे नहि प्राण ॥ ३९ ॥ वुव परे सब दोर है, लेले आयुध हाथ ॥ वदन मलिन कर है जसा, जब जाचे कोय अनाथ ॥ ४० ॥

भगति भली भगवतकी, सगति भली सुसाध ॥ उंर नकी संगति जसा, आठो पोहोर उपाध ॥ ४१॥ मूर ख मरण नदेखकें, करत बहुत आरंभ ॥ सात विसन सेवे जसा, करे धर्म विच दंभ ॥४२॥ याग करें प्राणी हणें, भापे धर्म उलंठ॥देखोग्यान विचारकें, क्यों पावे वैकुंठ ॥ ४३ ॥ रीस त्याग वैरागधर, होय जोगी अवधूत ॥ शिव नगरी पावे जसा, कर एसी कर तूत ॥४४॥ लहेणा देणा कछु नही, मुहकि मिठी वात ॥ हृदय कपट धर है जसा, ताके शिरपर लात ॥ ४५ ॥ वरसे वारधि अहोनिसें, खाखरतीनुपान॥भाग्य विना पावें नही, याचक दाता दान ॥४६॥ शखसरीखा ऊजला, नर फुटरा फरक ॥ जसा न सोभे दान विण, तुटी कान धरक ॥ ४७ ॥ परोपथ है सूरको, रणवि च मुड विहंड ॥ पाछा पाउं धरेनही, जो होई शतखंड ॥४८॥सायर मोती नीपजे, हीरा हीरा खांण ॥ ग्यान ध्यान त्या नीपजे, जसा सुगुरुकी वांण ॥ ४९ ॥ हस्त को मंडण दानहें,घर मंडण वर नार ॥ कुल मंडण अग ज जसा, धन मंडण ससार ॥ ५०॥ लठन निसपति श्यामरुचि, सूरज लठन ताप ॥ दाता लंठन धनवि ना, सबहु देत सराप ॥ ५१ ॥ छात्त दात समतार ती,हणे नही पट काय ॥ जसा ग्यांन किरिया गमन, सो साधु कहेवाय ॥ ५२ ॥ सतरसे तीसे समे, नव मी शुकल आषाढ ॥ दोधक बावनी जसमुनी, पुरन करी आगध ॥ इति षष्टम परिछेद समाप्त ॥

॥ सप्तमपरिछेद प्रारंभ ॥

साधुसाध्वीयोग्य आवश्यक क्रियाके सूत्रें

नमो अरिहंताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाण । नमो उवझायाण । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो सव्व पाव पणासणो । मंगलाण च सव्वेसि । पढमं हवइ मंगलं ॥

॥ १ ॥ श्री करेमिभंते ॥

॥ करेमि भंते सामाइय । सव्व सावज्ज जोगं पच्चक्खामि । जावज्जीवाए । तिविहं तिविहेण । मणेण वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

॥ २ ॥ श्री इछामि ठामि ॥

॥ इछामि ठामि काउस्सग्ग । जो मे देवसिउ अइयारो कउ । काइउ वाइउ माणसिउ । उस्सुत्तो । उम्मग्गो । अकप्पो । अकरणिज्जो । दुझाउ । दुविचिंतिउ । अणायारो । अणिच्छियव्वो । असमण पाउग्गो । नाणे दंसणे चरित्ते । सुए सामाइए । तिएहं गुत्तीणं । चउएहं कसायाण । पचएहं मह वयाण । छएह जीव निकायाण । सत्तएहं पिंडेसणाण । अठएहं पवयण माउण । नवएहं बंभचेरगुत्तीण । दस विहे समण धम्मे । समणाण जोगाण । ज खलिय जं विराहिय । तस्स मिछामिदुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियआलोउं। जो मे देवसिउ अइ यारो कउं॥ शेष उपर प्रमा णे॥

इच्छामि पडिक्कमिउ। जो मे देवसिउं अइयारो कउं॥ शेष उपर प्रमाणे

॥ ३ ॥ देवसिक अतिचार ॥

॥ ठाणे कमणे चंकमणे। आऊत्ते अणाऊत्ते। हरियकाय संघट्टे। बीयकाय संघट्टे। त्रसकाय संघट्टे। थावरकाय संघट्टे। उप्पइसघट्टे। ठाणाउं ठाण सकामीया। देहरे गोचरी मार्गे जातां आवतां स्त्री तीर्यंचतणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, दिवस माहि चार वार सज्झाय सात वार चैत्यवंदन कीधां नहिं, प्रतिलेखण आधी पछी भणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्याया नहीं, गोचरीतणा दोष उपजता जोया नहीं, पाच दोष मकलितणा टाल्या नहीं, मात्रु अणपुजे लीधु, अणपूजी भूमिकायें परठव्यु, देहरा उपाश्रयमाहिपेसता निसरतां निसिही आव स्सही कहेवी विसारी, जिनभुवने चोराशी आशा तना, गुरु प्रतें तेत्रिश आशातना, अनेरु जे काइ दिवस सबधीऊ पापदोष लाग्यु होय ते सवीहु मने वचने कायाए करीने तस्स मिछामि दुक्कड ॥

॥ ४ ॥ रात्रिक अतिचार ॥

। सथाराऊट्टणकी। परियट्टणकी। आऊटणकी।

पसारणकी । उप्पिय संघट्टणकी । संथारो उत्तरपट्टो टाली अधिकु उपगरण घाल्यु, अणपडि लेह्यु हला व्यु, मात्रु अणपडिलेह्युं लीधुं, अणपुजी भूमिए पर ठव्यु, परठवतां अणुजाणह जस्सगो कीधो नही, परठव्या पुठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे कीधुं नही, सथार पोरसी भणवी विसारी, पोरसी भणाव्या विना सुता, कुस्वप्न लाधुं सुपनातरमांहि शिलनी विराधना हुइ, आहट्ट दोहट्ट चितव्युं, संकल्प विकल्प कीधो, रात्रीसंबधीउं जे कोइ अतिचार लाग्यो होय, तेसवी मने वचने कायाए करी तस्स मिछामि दुक्कड ॥

॥ ५ ॥ श्री श्रमणसूत्र ॥

॥ नमो अरिहताण० ॥ करेमि भते सामाइ अ० ॥ चत्तारि मगल० ॥ अरिहता मगल । सिद्धा मगल । साहु मगल । केवली पन्नतो धम्मं मगल ॥ चत्तारी सरणं पवज्जामि। अरिहते सरण पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहु सरण पवज्जामि । केवली पन्नत्तोधम्मो सरण पवज्जामि॥चत्तारी लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा।सिद्धा लोगुत्तमा। साहु लोगुत्तमा केवली पन्नत्तो। धम्मो लोगुत्तमो॥इछामि पडिक्कमिउ जो मे देवसिउ० । इछामि पडिक्कमिउ । इरियावहियाए० । इछामि पडिक्कमिउ ॥ पगामसिज्जाए ॥ निगामसिज्जाए ॥ सथारा उवट्टणाए ॥ परियट्टणाए ॥ आउटण पसारणाए । उप्पइया सघट्टणाए ॥ कुइए ।

कक्कराइए छीए । जंभाइए ॥ आमोसे ॥ ससरक्खा मोसे ॥ आउलमाउलाए ॥ सोअणवत्तिआए ॥ इत्थी विप्परिआसिआए । दिट्ठीविप्परिआसिआए । मण विप्परिआसिआए । पाणभोअणविप्परिआसिआए। जो मे देवसिउं अइआरो कउं । तस्स मिछामि दुक्कडं॥ पडिक्कमामि गोअचरिआए ॥ भिक्खायरिआए॥उग्घा डकवाड उग्घाड णाए । साणावछादारा संघट्टणाए॥ मंडिपाहुडिआए ॥ बलिपाहुडिआए ॥ ठवणापाहु डिआए संकिए ॥ सहसागारिए । अणेसणाए पाणे सणाए ॥ पाणभोअणाए ॥ बीअभोअणाए ॥ हरि अभोअणाए ॥ पच्छेकम्मिआए ॥ पुरेकम्मिआए ॥ अदिठ्ठहडाए ॥ दगससठ्ठहडाए रयसंसठ्ठहडाए ॥ पारिसाडणिआए ॥ पारिठावणिआए ॥ उहासण भिक्खाए ॥ ज उग्गमेण उप्पायणेसणाए ॥ अपरि सुद्ध पडिगाहिअ ॥ परिभुत्त वा ॥ जं न परिठविअ तस्स मिछामि दुक्कड ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं सज्झा यस्स अकरणयाए ॥ उभउकाल भंडोव गरणस्स अप्पडिलेहणाए ॥ दुप्पडिलेहणाए ॥ अ प्पमज्जणाए ॥ दुप्पमज्जणाए ॥ अइक्कमे ॥ वइक्क मे । अइआरे ॥ अणायारे ॥ जो मे देविसिउं अइ यारो कउं ॥ तस्स [illegible] पडिक्कमामि एगविहे असजमे ॥ [illegible] बंधणे हिं । राग बधणेण ॥

मामि तिहि दंडेहिं ॥ मणदंडेणं । वयदंडेण । कायद डेण ॥ पडिक्कमामि तिहि गुत्तीहि ॥ मनगुत्तीए ॥ वयगुत्तीए ॥ कायगुत्तीए ॥ पडिक्कमामि तिहिं सल्ले हि ॥ माया सल्लेणं ॥ निआण सल्लेण ॥ मिछादंस ण सल्लेण ॥ पडि० ॥ तिहि गारवेहिं ॥ इड्ढी गार वेणं । रसगारवेण ॥ साया गारवेण ॥ पडि० ॥ तिहिं विराहणाहि ॥ नाण विराहणाए दंसण विरा हणाए । चरित्त विराहणाए ॥३॥ पडि०॥चउहि कसा एहि ॥ कोह कसाएण ॥ माण कसाएण ॥ माया कसाएणं ॥ लोभ कसाएणं ॥ पडि० ॥ चउहि सन्ना हिं ॥ आहार सन्नाए ॥ भय सन्नाए ॥ मेहुण सन्ना ए ॥ परिग्गह सन्नाए ॥ पडि० ॥ चउहि विकहा हिं ॥ इथिकहाए ॥ भत्तकहाए ॥ देसकहाए ॥ राय कहाए ॥ पडि० ॥ चउहिं झाणेहि ॥ अट्टेण झाणेण॥ रुद्देणं झाणेण ॥ धम्मेण झाणेण ॥ सुक्केण झाणेण॥४॥ ॥ प० ॥ पचहि किरिआहिं ॥ काइआए ॥ अहिग रणियाए ॥ पाउसिआए ॥ पारितावणिआए ॥ पाणा इवाय किरिआए ॥ प० ॥ पचहि कामगुणेहि ॥ ॥ सद्देण ॥ रूवेणं रसेणं ॥ गधेण ॥ फासेण ॥ ॥ प० ॥ पंचहि महव्वएहि पाणाइवायाउ वेरमण ॥ मुसावायाउ वेरमण ॥ अदिन्नादाणाउ वेरमण ॥ मेहु णाउ वेरमण ॥ परिग्गहाउ वेरमण ॥ प० ॥ पचहि समिइहि ॥ इरिआसमिइए ॥ भासासमिइए ॥

एसणासमिइए ॥ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणा समि
इए ॥ उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाण पारिठावणि
आ समिइए ॥५॥ प० ॥ छहि जीवनिकाएहिं॥पुढवि
काएण ॥ आउकाएण ॥ तेउकाएण ॥ वाउकाएण ॥
वणस्सइकाएण तसकाएण ॥ प० ॥ छहि लेसाहि ॥
किण्हलेसाए ॥नील लेसाए॥काउ लेसाए॥तेउलेसाए
पउमलेसाए ॥ सुक्क लेसाए ॥६॥प०॥ सत्तहि भयठाणे
हि ॥ अठहि मयठाणेहिं ॥ नवहिं बंभचेर गुत्तीहि ॥
दसविहे समणधम्मे ॥ इगारसहि उवासग पडिमा
हि ॥ बारसहि भिक्खुपडिमाहि ॥ तेरसहि किरिआ
ठाणेहिं ॥ चउद्दसहि ॥ भूअगामेहि ॥ पन्नरसहि ॥
परमाहम्मिहि ॥ सोलसहि गाहासोलसएहिं ॥ सत्त
रसविहे असजमे ॥ अठारसविहे अबंभे ॥ एगूण
वीसाए नायज्झयणेहिं ॥ वीसाए असमाहि ठाणेहिं॥
इक्कवीसाए सबलेहि ॥ बावीसाए परीसहेहि ॥ ते
वीसाए सुअगडज्झयणेहि ॥ चउवीसाए देवेहि ॥
पणवीसाए भावणाहिं ॥ छव्वीसाए दसाकप्पववहारा
ण उद्देसणकालेहि ॥ सत्तावीसाए अणगार गुणेहि ॥
अठावीसाए आयारपकप्पेहि ॥ एगुणतीसाए पाव
सुअपसगेहि ॥ तीसाए मोहणीअठाणेहिं ॥ इगती
साए सिद्धाइ गुणेहि ॥ बत्तीसाए जोग सगहेहिं ॥
तित्तीसाए आसायणाएहि ॥ अरिहंताण आसाय
णाए ॥ सिद्धाण आसायणाए आयरिआण आसा

यणाए ॥ उवझायाणं आसायणाए ॥ साहूण आसा
यणाए ॥ साहुणीण आसायणाए ॥ सावयाण आसा
यणाए ॥ सावियाण आसायणाए ॥ देवाण आसा
यणाए ॥ देवीण आसायणाए ॥ इहलोगस्स आसा
यणाए ॥ परलोगस्स आसायणाए ॥ केवलि
पन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए ॥ सदेवमणु
आसुरस्सलोगस्स आसायणाए ॥ सव्वपाणभूअ
जीवसत्ताण आसायणाए ॥ कालस्स आसायणाए ॥
सुअस्स आसाणाए ॥ सुअदेवयाए आसायणाए ॥
वायणारिअस्स आसायणाए ॥ ज वाइद्ध वच्चामेलिअं
हीणक्खर । अच्चक्खर । पयहीणं विणयहीण । घोस
हीण । जोगहीण । सुठुदिन्न डुठुपडिछिअ । अका
ले कउंसज्झाउं । काले न कउं सज्झाउं । असज्झाए
सज्झाइअं । सज्झाए न सज्झाइअ । तस्स मिछामिदु
क्कड० ॥ नमो चउवीसाए तिथयराण । उसभाइ
महावीर पज्जवसाणाण । इणमेव निग्गं थपावयण ।
सच्च । अणुत्तरं । केवलिअ । पडिपुन्न । नेआउअ ।
ससुद्ध । सल्लगत्तण। सिद्धिमग्ग । मुत्ति मग्ग निज्जा
ण मग्ग । निव्वाण मग्गं । अवितहमविसंधि । सव्व
दुक्खप्पहीण मग्ग। इठं ठिआ जीवा । सिज्झति ।
बुज्झति । मुच्चति । परिनिव्वायति । सव्वदुक्खाणमंतं
करति । त सद्दहामि । पत्तिआमि । र
फासेमि। णुपालेमि। तं धम्मं

श्रंतो । रोश्रतो । फासंतो । पालंतो । अणुपालंतो । तस्सधम्मस्स अपुठ्ठिउमि आराहणाए । विरउमि विराहणाए । असजम परिश्राणामि । सजमं उव सपज्जामि । अवन्न परिश्राणामि । वन्न उवसंपज्जा मि । अकप्प परिश्राणामि । कप्प उवसपज्जामि अनाण परि आणामि । नाण उवसपज्जामि। अकि रिश्र परिश्राणामि । किरिश्र उवसंपज्जामि । मिछ त्तपरिश्राणामि । सम्मत्त उवसपज्जामि । अबोहिं परिश्राणामि । बोहि उवसंपज्जामि।अमग्ग परिश्रा णामि । मग्ग उवसपज्जामि ।। ज सजरामि । जं च न सजरामि । जं पडिक्कमामि । जं च न पडिक्कमा मि तस्स सव्वस्स देवसिश्रस्स अईआरस्स पडिक्क मामिसमणोह सजय । विरय पडिहय पच्चक्काय पाव कम्मे । अनिश्राणो । दिठिसपन्नो । मायामोस विव जिउ । अढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु । पन्नरससु कम्म भूमीसु । जावत केइ साहू । रयहरण गुच्छपडिग्गह धारा । पचमहव्वय धारा । अठारससहस्स सीलग धारा । अक्कआयार चरित्ता । ते सव्वे सिरसा मणसा मठएण वंदामि ।खामेमि सव्व जीवे, सव्वेजीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु । वेर मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ एवमह आलोइ अ । निंदिअ गरहिअडुगठिअ सम्म ॥ तिविहेण पडिक्कतो । वंदामि जिणे चउवी स ॥ २ ॥ इतिश्री यतिप्रतिक्रमणसूत्र ॥

॥ ६ ॥ पाक्षिक अतिचार ॥

॥ नाणंमि दसणमि अ । चरणमि तवम्मि तहय विरयमि। आयरण आयारो। इय एसो पंचहा नणि उं । १ । ज्ञानाचार । दर्शनाचार । चारित्राचार । तपाचार । वीर्याचार । ए पचविध आचार मांहे जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि सूक्ष्म बादर जाणतां हुउं होय ते सविहु मन वचन कायाइं करी मिछामि दुक्कड । १ ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार। काले विणये बहुमाणे । उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए । अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल वेला माहि पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहीं । अकाले पढ्यो। विनयहीन बहुमानहीन योग उपधानहीनअ नेराकन्हे पढ्यो अनेरो गुरु कह्यो । देववंदण वांदणे । पडिक्कमणे सद्याय करतां । पढतां गुणतां कूडो अक्षर कानें मात्रें।आगलो उंठो नण्यो गुण्यो । सूत्रार्थ तदुभय कूडां कह्या । काजो अणउधर्या । माडा अण पडिलेह्यां वस्ति अणसोध्या अणपवेयां । असद्याइ । अणोद्या कालवेला मांहिं श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो । अविधे योगोपधान कीधा कराव्या । ज्ञानोपगरण । पाटी पोथी ठवणी ॥ कवली । नोकारवाली । सांपडां । सापडी । दस्ती वही । कागलिआ उंदिआप्रते । पग लाग्यो

थूकलाग्यो । थूके अक्षर भांज्यो । ज्ञानवंतप्रते द्वेष मछर वह्यो । अतराय अवज्ञा आशातना कीधी । कुणहिप्रते तोतलो वोवको देषी हस्यो वितक्यों । मतिज्ञान । श्रुतज्ञान । अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान । केवलज्ञान । ए पाच ज्ञानतणी आशातना कीधी । ज्ञानाचार विषइं । अनेरो जे कोइ अतिचार ० । २ ।

दर्शनाचारे आठ अतिचार । निस्सकिअ निक्कंखिअ । निव्वितिगिछाअमूढदिठ्ठीअ ॥ उववूयथिरीकरणे । वछल्ल पभावणे अठ ॥ २ ॥ देव गुरु धर्मतणे विषे निस्सकपणुं न कीधु । तथा एकांत निश्चय धर्युं नही । धर्म्म सवधिआ फलतणे विषे निस्संदेह बुद्धि धरी नही । साधु साध्वीतणी निंदा जुगुप्सा कीधी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी । सघमाहि गुणवंततणी अनुपवृहणाकीधी।अस्थिरीकरण अवात्सल्य अभक्ति निपजावी । तथा देवद्रव्यगुरुद्रव्य । भक्षित उपेक्षित । प्रज्ञापराधे विणास्यो । विणसतो उवेख्यो । उतीशक्ति सारसंभाल न कीधी । उवणायरिउं हाथथकी पाड्यो । पगिलेहवो विस्स्यो । जिनभुवनतणी चोरासी आशातना कीधी । दर्शनाचार विषइं । अनेरो जे कोइ अतिचार० । ३ ।

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाणजोग जुत्तो । पचहिं समिईहिं तिहि गुत्तिहि ॥ एस चरित्तायारो । अठविहो होइ नायवो ॥४॥ ईर्यासमिति, भा

पासमिति, एषणासमिति, आदानभंडमत्त निक्षेपणा समिति, पारिष्टापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता रूडी परे पाली नही, साधुतणे धर्मे सदैव, श्रावकतणे धर्म्मेसामायिक पोसह लीधे, जे कांइ खंडन विराधना कीधी होय, चारित्राचार विषइं अनेरो जेकोइ अतिचार ॥ ४ ॥

॥ विशेषतश्चारित्राचारे तपोधनतणे धर्मे ॥ वयछक्क कायछक्क, अकप्पो गिहि भायण ॥ पलिअंक निसिज्जाए, सिणाण सोभवज्जण ॥ ५ ॥

॥ व्रत षट्के, पहिले महाव्रते प्राणातिपात, सूक्ष्म बादर, त्रस थावर जीवतणी विराधना हूई, बीजे महाव्रते क्रोध लोभ हास्य भय लगे जूठु बोल्या, तीजे अदत्तादानविरमण महाव्रते ॥ सामिजीवादत्त, तित्थयरत्तं तहेवय गुरुहि ॥ एवमदत्तचउहा । पण्णत्तवीयराएहिं ॥ १ ॥ स्वामी अदत्त, जीव अदत्त, तीर्थंकर अदत्त, गुरु अदत्त, ए चतुर्विध अदत्तादान मांहि जेकांइ अदत्त परिभोगव्यु ॥ चोथे महाव्रते ॥ वसहीकह निसिज्जिंदिय, कुम्मित्तरपुव्वकीलिए पणिए॥ अइमायाहारविभूसणाइ, नववभचेरगुत्तिउ ॥ १ ॥ ए नववाडी सूधी पाली नही, सुहणे स्वप्नातरें दृष्टि विपर्य्यास हूउ ॥ पचमे महाव्रते, धर्मोपगरणने विषे इछा मूर्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिका उपगरण वावस्वार्या, पर्व तिथि पडिलेहवो विसार्यो ॥ छठे

रात्री भोजन विरमण व्रते, असूरां पाणी कीधां, ठारोद्गार आव्यो, पात्रे पात्रावंधे तक्रादिकनो ठांटो लाग्यो, खरड्यो रह्यो, लेप तेल उपधादिकतणो सनिधि रह्यो, अतिमात्राये आहार लीधा, ए छठा व्रत विषइ अनेरो जे कोइ अ० ॥ ६ ॥

॥ कायषट्के ॥ गामतणे पइसारे नीसारे पग पडिलेहवा विसार्या, माटी मीठु खडी धावडी अरणेटो, पाषाणतणी चातली उपर पग आव्यो, अप्पकाय वाधारी फूसणा हुवा, विहरवा गया, जल खो हाल्यो, लोटो ढोल्यो, काचा पाणीतणा छांटा लाग्या, तेउकाय वीज दीवातणी उंजेही हुइ, वाउ काय, उघाडे मुखे बोल्या, महावाय वाजता कपडा कांवली तणा छेडा साचव्या नही, फूक दीधी ॥ वनस्पतिकाय, नीलफूल सेवाल थडमूल फल फूलवृक्ष शाखा प्रशाखातणा सघट्ट परपर निरतर हूवा ॥ त्रसकाय, वेरिंडी तेरिंडी चउरिंडी पचेंडी काग वग उडाव्या, ढोर त्रासव्या वालक वीहाव्यां षट् काय विषइ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ ७ ॥

अकल्पनीय सय्या वस्त्र पात्र पिंड परिभोगव्यो, सिज्जातरतणो पिंड परिभोगव्यो, उपयोग कीधा पाखे विहर्या, धात्री दोष, त्रस वीजससक्त पूर्वक र्म्म पश्चात्कर्म उद्गम उत्पादना दोष चितव्या नही, गृहस्थतणो भाजन भाज्यो, फोड्यो, वली पाछो

आप्यो नहीं, सूतां संथारिया उत्तरपट्टा टलतो अधिको उपगरण वावर्यो, देशत स्नान मुखें त्रीनो हाथ लगाड्यो, सर्वत स्नानतणी वांछा कीधी, शरीरतणो मल फेड्यो, केश रोम नख समाख्या, अनेरी जे कांइ गाडाविभूषा कीधी, अकल्पनीय पिंडादि विपइउं अनेरो जे को० ॥ ७ ॥

आवस्सयसद्धाए, पडिलेहणद्धाए त्रिरक अन्न त्तठे ॥ आगमणे नीगमणे । ठाणे निसिअणे तु अट्टे ॥ १ ॥ आवश्यक उत्तयकाल व्याक्षिप्त चित्तपणे पडिक्कमणु कीधु, पडिक्कमणा माहि उघ आवी, वेठां पडिक्कमणु कीधुं, दिवस प्रते चार वार सद्धाय, सात वार चैत्यवंदन न कीधा, पडिलेहणा आधी पाछी त्रणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्याया, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्याया नहीं, गोचरी गयां वेंतालीश दोष उपजता चितव्या नहि, छती शक्तिए पर्व तिथे उपवासादिक कीधो नहि, उपासरा देहरामाहि पेसता निसिही निसरतां आवस्सही कहेवी विसारी, इछामिछादिक दशविध चक्रवाल समाचारी साचवी नहि, गुरुतणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यों नहि, अपराध आव्या मिछामि दुक्कड दीधा नहि, स्थानके रहेता हरियकाय वियकाय कीडी नगरा सोध्यां नहीं, उंघो मुहपत्ति चोलपट्टो सघट्या, स्त्री त° । सघट्ट अनतर परंपर हूवा,

वडा प्रतें पसाउं करी, लहुडां प्रतें इछाकार इत्या दिक विनय साचव्यो नहि, साधु सामाचारी वि० अ० पक्षि० सु० वा० जाणतां अजाणतां हुउं होय, ते सविहु मन वचन कायाये करी मिछामी डुक्कड ॥ ए ॥ इति साधु अतिचार सपूर्ण. ॥

७ ॥ पाक्षिक सूत्र ॥

तित्थकरे अतित्थे, अतित्थसिद्धेअ तित्थसिद्धेअ ॥ सिद्धेजिणे अ रिसी, महरिसी नाण च वंदा मि ॥ १ ॥ जे इम गुण रयण सायर, मविराहिऊण तिण्णसंसारा ॥ ते मगल करित्ता, अहमविआ राहणाजिमुहो ॥ २ ॥ मम मगल मरिहंता । सिद्धा साहु सुअ च धम्मोअ ॥ खती गुत्ती मुत्ती । अज्जा वया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगमि सजया ज करिति । परमरिसि देसियमुआर ॥ अहमवि उवठिउंतं । महव्वय उच्चारण काउ ॥ ४ ॥ से कि त महव्वय उ च्चारणा । महव्वय उच्चारणा पच विहा पण्णत्ता ॥ राइ भोअणवेरमण छठा । तजहा ॥ सव्वाउं पाणाइवाया उं वेरमण ॥ १ ॥ सव्वाउं मुसावायाउं वेरमण ॥ २ ॥ सव्वाउं अदिन्नादाणाउं वेरमण ॥ ३ ॥ सव्वाउं मेहुणा उं वेरमण ॥ ४ ॥ सव्वाउं परिग्गहाउं वेरमण ॥ ५ ॥ सव्वाउं राइभोअणाउं वेरमण ॥ ६ ॥

तत्थखलु पढमे भते महव्वए पाणाइवायाउं वेर मण सव्व भते पाणाइवाय पच्चक्खामि से सुहुम वा ।

वायरं वा । तसं वा । थावरं वा । नेवसय पाणे अइ वाइज्जा । नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा । पाणेअ इवायते वि। अन्ने न समणुजाणामि । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणमि । तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि आप्पाण वोसि रामि ॥ से पाणइवाए चउव्विहे पन्नत्ते । तंजहा । दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ । दव्वओणं पाणाइवाए छसु जीवनिकाएसु । खित्तओण पाणाइवाए सव्वलोए। कालओण पाणाइवाए दिआवा राओवा । भावओण पा णाइवाए रागेणवा दोसेणवा । ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवणियस्स उवसमप्पधाणस्स नववंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स निक्खावित्तिअस्स कुक्कीसवलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निव्वि त्तिलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असनिहिसचियस्स अविसवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगम णपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवयाए अ वोहिआए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग दोसपडिबद्धआए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्ड याए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएण पचिंदिउव सट्टेण पडिपुन्नभारिआए सायासुक्खमणुपालयतेण

इहवाजवे अन्नेसु वा जवग्गहणेसु पाणाइवाउं कउं वा। कराविउंवा कीरतोवा परेहिंसमणुन्नाउं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण अइअ निंदामि पडुप्पन्न संवरेमि अणागय पच्चरकामि सव्व पाणाइवाय जावज्जीवाए अणिस्सि उंह नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा त जहा अरिहंतसक्कि अ सिद्धसक्किअ साहुसक्किअ देवसक्किअ एवंज वइ निरूणीवा सजयविरयपडिहय पच्चरकाय पाव कम्मे दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सु त्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्स वेर मणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पार गामिए सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं भूआण सव्वेसिं जी वाण सव्वेसि सत्ताण असोअणयाए अजूरणयाए अ तिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्द वणयाए महछे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परम रिसिदेसिए पसछे तडुक्खकयाए कम्मरकयाए मुरकयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्ट उव सपज्जित्ताणविहरामि पढमेभंतेमहव्वए उवठ्ठिउंमि सव्वाउंपाणाइवायाउंवेरमण ॥ १ ॥

अहावरे दोच्चे भते महव्वए मुसावाउं वेरमणं। सव्व भते मुसा वाय पच्चरकामि से कोहा वा १ लोहा वा २ भया वा ३ हासा वा ४ नेवसय मुसवइज्जा ने

वन्नेहि मुसंवायाविज्जा मुसंवयतेवि अन्ने न समणु
ज्जाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेणं मणेण वा
याए काएण न करेमि न कारवेमि ॥ तस्स भंते प
डिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥
से मुसाए चउव्विहे पन्नत्ते । तं जहा । दव्वउ १ खित्तउ २
कालउ ३ भावउ ४ । दव्वउण मुसावाए सव्वेदव्वेसु ।
खित्तउणं मुसावाए लोएवा अलोएवा । काल
उण मुसावाए दिआवा राउवा । भावउण मुसा
वाए रागेणवा दोसेणवा । ज मए इमस्स धमस्स
केवलि पन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअ
स्स विणय मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसो
वण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नववभचेरगुत्तस्स अ
पय माणस्स निक्खावित्तिअस्स कुक्कि सवलस्स
निरग्गिसरणस्स सपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुण
ग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पच
महव्वयजुत्तस्स असनिहिसचियस्स अविसवाइअस्स
ससारपारगामिअस्स निव्वाणगमण पज्जवसा णफल
स्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अण
भिगमेणवा पमाएण रागदोसपडिवद्धयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएण
पचिंदिउवसट्टेणं पमिपुणं भारयाए सायासुक्खमणु
पालयतेण इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु
मुसावाउ भासिउ वा भासाविउ वा भासिजतोवा परेहि

समणुन्नाउं तं निंदामि गरिहामि तिविह तिविहेणं मणेण वायाए काएण अईअंनिंदामि पडुपन्नसंवरेमि अणागयपच्चक्खामि सव्वंमुसावाय जावज्जीवाए अणिस्सिउंहं नेवसय मुस वाइज्जा नेवन्नेहिमुसं वायाविज्जा मुसं वायतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा। तं जहा अरिहंतसक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहुसक्खिअ देवसक्खिअ अप्पसक्खिअ एवंहवइ जिरकुवा जिरकुणीवा सजय विरय पडिहय पच्चरखाय पावकम्मे दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु मुसावायस्सवेरमणे हिए सुहे। खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिपाणाण सव्वेसिभूआण सव्वेसिजीवाण सव्वेसि सत्ताण अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे त दुरकरकयाए कम्मरकयाए मुरकयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसपज्जिताण विहरामि दोच्चे भते महव्वए उवठ्ठिउंमि सव्वाउं मुसावायाउं वेरमण ॥ २ ॥

॥ अहावरेतच्चे भते महव्वए अदिन्नादाणाउं वेरमण। सव्वं भते अदिन्नादाण पच्चरकामि। से गामे वा नगरेवा रणेवा अप्पवा बहुवा अणुवा थुलवा चित्तमतवा अचित्तमतवा। नेवसय अदिन्न गिण्हि

ज्जा नेवन्नेहि अदिणं गिण्हाविज्जा अदिणंगिण्हतेवि अन्नेन समणुजाणामि जावजीवाए तिविह तिविहेण मणेणं वायाए काएण नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्न न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते । तं जहा । दव्वउं खित्तउं कालउं भावउं । दव्वउंण अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु, खित्तउंण अदिन्नादाणे गामेवानगरेवा रण्णेवा, कालउंण अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा, ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स उवसमप्पजवस्स नववजचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्किसवलस्स निरग्गिसरणस्स सपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निवियारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असनिहिसंचयस्स अविसवाइयस्स ससारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएण रागदोसपडिवद्धआए बालआए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएण पचिंदिअवसट्टेण पडिपुण्ण जारियाए सायासुक्खमणुपालयतेणं इहंवा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहिअवा गाहाविअंवा घिप्पंतवा परेहिं समणुन्नाउं तंनिंदामि गरिहामि तिविहं

तिविहेण मणेण वायाए काएण अईअ निंदामि पडुप्पन्नसवरेमि अणागय पच्चरकामि सव्वं अदिन्ना दाण जावज्जीवाए अणिस्सिउंहं नेवसय अदिन्न गिण्हिज्जा नेवन्नेहि अदिन्नगिण्हाविज्जा अदिन्न गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा। त जहा। अरिहंतसक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहुसक्खिअ देवस क्खिअ अप्पसक्खिअ एवं हवइ भिक्खुणीवा सजय विरयपडिहय पच्चरकाय पावकम्मे दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु अदिन्ना दाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसि पाणाण सव्वेसिं जीवाण सव्वेसि भूआणं सव्वेसि सत्ताण अदुक्ख णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अ पीरुणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महठे म हागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि दे सिए पसठे तंदुरकरकयाए कम्मरकयाए मुरकयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसपज्जि ताणं विहरामि तच्चे भते महव्वए उवठिउंमि स व्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउठे भते महव्वए मेहुणाउ वेरमणं। सव्व भते मेहुण पच्चरकामि। से दिव्वंवा माणुस्सवा तिरिक्खजोणिअवा। नेवसअ मेहुण सेविज्जा नेवन्नेहि मेहुण सेवाविज्जा मेहुण सेवतेवि अन्ने नसमणुजाणा

मि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नन समणुज्जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ से मेहुणे चउव्विहे पन्नते । तंजहा दव्वउं खित्तउं कालउं भावउं। दव्वउंण मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा। खित्तउंणंमेहुणे उड्ढलोएवा अहो लोएवा तिरियलोएवा कालउंण कालउंणं दिआवा राउंवा । भावउंण मेहुणे रागेणवा दोसेणवा । जमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठिअस्स विणयमूलस्स । खतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोअस्स उवसमप्पभवस्स नववभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स निक्खावित्तिअस्स कुक्खिसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंच महव्वयजुत्तस्स असनिहिसंचयस्स अविसवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउंवगएणं पचिदिउंवसट्टेण पडिपुन्न भारियाए सायासुक्खमणुपालयतेण इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुण सेविअवा सेवाविअवा सेविज्जतवा परेहिं समणुन्नाउं

तंनिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेणं वाया ए काएण अइय निदामि पडिपुन्न संवरेमि अणा गय पच्चरकामि सव्वंमेहुण जावज्जीवाए अणिस्सि उंहं नेवसय मेहुण सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुण सेवा विद्या मेहुण सेवतेवि अन्ने नसमणुजाणिद्या। तं जहा अरिहंत सक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहुसक्खिअ देवसक्खिअ अप्पसक्खिअ एवं हवइ भिक्खूवा भि क्खूणीवा सजयविरय पडिहय पच्चरकाय पावकम्मे दिआवा राउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं भूआण सव्वे सिं जीवाण सव्वेसि सत्ताण अदुक्खणयाए असोयण याए अजूरणआए अतिप्पणपाए अपीडणयाए अ परियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्ते महागुणे म हाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तदुक्खकखयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहि लाभाए ससारुत्तारणयाए उवसपज्जित्ताण विहरामि चउत्थेभंतेमहव्वए उवठिउमिसव्वाउ मेहुणाउवेरमण ४

अहावरे पंचमे भंते महव्वए परिग्गहाउवेरमण। सव भंते परिग्गह पच्चरकामि। अप्पंवा बहुवा अणुं वा थूलवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयपरिग्ग हं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गिह परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्नेन समणुजाणामि जाव

ज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेणवायाए काएण नकरे मि नकारवेमि करतपि अन्न नसमणुजाणामि तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि रामि ॥ सेपरिग्गहे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउं खित्तउं कालउं भावउं । दव्वउंण परिग्गहे सचि त्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु, खित्तउंण परिग्गहे सव्वलोए कालउंणं परिग्गहे दिआ वा राउं वा भावउंणं प रिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा ज मए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाहि ठिअस्स विणयमूलस्स खतिप्पहा णस्स अहिरन्नसोवन्निअस्स उवसमप्पभवस्स नव वभचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स कु क्किसंवलस्स निरग्गिसरणस्स सपरकालिअस्स चत्त दोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्ति ल क्खणस्स पचमहव्वय जुत्तस्स असनिहि सचयस्स अविसंवाअस्स ससारपारगामिअस्स निव्वाणगमणप ज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ बोहिआएअणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएणं रा गदोसपमि वद्धआए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुयाए चउक्कसाउंवगएण पचिं दिउंवसट्टेण पडिपुन्नभारियाए साया सुक्खमणुपालय तेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु परिग्गहो गहिउंवा गाहाविउं वा घिप्पतो वा परेहि समणु

न्नाउं तंनिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेण वायाएकाएण अईअ निदामि पडुप्पन्न सवरेमि अणागय पच्चरकामि सवं परिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सिउंहं नेवसय परिग्गहं पगिरिण्हिज्जा नेवन्नेहि परिग्गह परिगिण्हाविद्या परिग्गहं परिगिण्हतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसक्खिअ सिद्ध सक्खिअ साहु सक्खिअ देव सक्खिअ अप्प सक्खिअ एवं हवइ भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजय विरय पडिहय पच्चरकाय पावकम्मे दिआवा राउं वा एगउं वा परिसागउं वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु परिग्गहस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सवेसि पाणाण सवेसि भूआण सवेसि जीवाणं सवेसि सत्ताण अडुक्खणयाए असोणयाए अजूरणआए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महछे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि देसिए पसछे तंडुक्खयाए कम्मक्खयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणायाए तिकट्टु उवसपज्जित्ताण विहरामि पचमे भते महव्वए उवठिउंमि सवाउं परिग्गहाउं वेरमण ॥ ५ ॥

अहावरे छठे भते महव्वए राईअ भोअणाउं वेरमणे सव भते राईभोअण पच्चरकामि ॥ से असण वा पाणं वा खाइम वा साइम वा नेवसय राइ भोअण भुजिज्जा नेवन्नेहिं राइभोअण भुजाविद्या राइभोअ

णं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविण मणेण वायाए काएणं नकरेमि नका रवेमि करतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्सभंते प डिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि॥ से राइभोअणे चउविहे पन्नत्ते दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ॥दव्वउण राइभोअण असणे वा पाणे वा खाइमे साइमे वा खित्तउणं राईभोअणे समयखित्ते कालउ ण राइभोअणे, दिआ वा राउ वा,भावउण राइभोय णे, तित्ते वा कडुए वा कसायले वा अंबिले वा महु रे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा जमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाहि ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिंसणसो वलिअस्स उवसमप्पभवस्स नववभचेर गुत्तस्स अप यमाणस्स निक्खावित्तिअस्स कुक्किसवलस्स निरग्गि सरणस्स सपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअ स्स निव्विआरस्सनिव्वितिलखणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसचयस्स अविसवाइअस्स ससारपारगामि अस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिआए अणभिगमेण अभिगमेणं वा पमाएण रागदोस पडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मदयाए किडयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवएणं पचिदिअवसट्टेण पमिपुणभारिआए सायासुक्खमणुपा लयतेणं इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु वा राइभो

यण भुत्त वा भुजाविअं वा भुजंत वा परेहिं समणु न्नाउं त निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणे णं वायाए काएण अइअ निंदामि पडुप्पण संवरेमि अणागय पच्चक्खामि सव्व राइभोअणं जावज्जीवाए अणिस्सिउंहं नेवसअ राइंभुजिज्जा नेवन्नेहिं राइ भुजाविज्जा राइभुजते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा त जहा अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअ साहुसक्खिअ देवसक्खिअ अप्पसक्खिअ एव इवइ भिक्खूवाभिक्खू णी वा सजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआ वा राउं वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एसखलु राईभोअणस्स विरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं भूआण सव्वेसिं जीवाण सव्वेसि सत्ताण अदुक्खणयाए असोअणआए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआए वणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परम रिसि देसियपसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्म क्खयाए मुक्खयाए बोहि ला भाए ससारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसपज्जित्ताण विह रामि ॥ छठे भते मह वए अज्ज ठिउमि सव्वाउं राईभोयणाउं वेरमण ॥ इच्चेइ आइ पचमहव्वयाइ राईभोअणवेरमण छठाइ अत्तहिअठाइ उवसंप जित्ताण विहरामि ॥

अप्पसत्थाय जे जोगा । परिणामाय दारुणा ॥

पाणाइवायस्स वेरमणे ॥ एस वुत्तेअइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्व रागाय जा चासा । तिव्वदोसा तहेव य ॥ मुसा वायस्स वेरमणे ॥ एस वुत्ते अइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गहं सि अ जाइत्ता ॥ अविदिन्ने अ उग्गहे ॥ अदिन्नादा णस्स वेरमणे ॥ एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा रुवा रसा गधा ॥ फासाण पविआरणे ॥ मेहुणस्स वेरम णे ॥ एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ४ ॥ इछा मुछा य गेहीअ ॥ कंखा लोभेअ दारुणे ॥ परिग्गहस्स वेरमणे ॥ एस वुत्ते अइक्कमे ॥५॥ अइमत्ते अ आहारे ॥ सूरे खित्तमि संकिए ॥ राईभोयणस्स वेरमणे ॥ एस वु त्ते अइक्कमे ॥ ६ दसणनाण चरित्ते ॥ अविराहित्ता ठिउं समण धम्मे ॥ पढमंवयमणुरक्के ॥ विरयामो पाणाइवायाउं ॥ ७ ॥ दंसणनाण चरित्ते ॥ अविरा हित्ताठिउं समण धम्मे ॥ बीयवयमणुरक्के ॥ विरयामो मुसावायाउं ॥ ८ ॥ दसणनाण चरित्ते ॥ अविराहित्ता ठिउं समण धम्मे ॥ तइअ वयमणुर क्के ॥ विरयामो अदिन्नदाणाउं ॥ ९ ॥ दंसण नाण चरित्ते ॥ अवराहित्ता ठिउं समण धम्मे ॥ चउत्थ वयमणुरक्के ॥ विरयामो मेहुणाउं ॥१०॥ दसण नाण चरित्ते ॥ अविराहित्ता ठिउं समणधम्मे ॥ पचम वयमणुरक्के ॥ विरयामो परिग्गहाउं ॥ ११ ॥ दंसण नाण चरित्ते ॥ अविरहित्ता ठिउंसमणधम्मे छठ व यमणुरक्के ॥ राइभोयणा आलयवि ॥ १२ ॥

विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥ पढ
मंवयमणुरक्के । विरयामो पाणाइ वायाउं ॥ १३ ॥
आलय विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥
बीय वय मणुरक्के ॥ विरयामो मुसावायाउं ॥१४॥ आ
लयवियारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे। तीय
वयमणुरक्के विरयामोअदिण्णा दाणाउं ॥१५॥ आलय
विचारसमिउं। जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे। चउत्थवय
मणुरक्के। विरयामो परिग्गहाउं ॥१६॥ आलय विया
रसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ पचम
वयमणुरक्के । विरयामो परिग्गहाउं ॥ १७ ॥ आलय
विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ छठ्ठव
यमणुरक्के ॥ विरयामो राईजोयणाउं ॥ १८ ॥ आलय
विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥
तिविहेण अप्पमत्तो । रक्खामि महव्वए पच ॥ १९॥
सावज्जजोगमेग ॥ मिछत एगमेव अन्नाण ॥ परिव
ज्जतो गुतो ॥ रक्खामि महव्वए पच ॥ २० ॥ अणवज्ज
जोगमेग ॥ सम्मत्त एगमेवनाणं तु ॥ उवसपन्नो जु
त्तो ॥ रक्खामि महव्वएपच ॥ २१ ॥ दो चेव रागदो
से ॥ दुसिअ झाणाइअट्टरुद्दाइ ॥ परिवज्जतो गुत्तो ।
रक्खामि महव्वएपच ॥ २२ ॥ दुविह चरित्त धम्मं ।
दुन्निअ झाणाइ धम्मसुक्काइ ॥ उवसपन्नो जुत्तो ॥
रक्खामि महव्वए पच ॥ २३ किण्हा नीला काउ ॥
तिन्निअ लेसाउं अप्पसत्थाउं ॥ परिवज्जंतो गुतो र

रक्कामि महव्वए पच ॥ २४ ॥ तेउ पह्मा सुक्का ॥ ति
न्निअ लेसाउ सुप्पसत्थाउ ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ र
क्कामि महव्वए पच ॥ २५ ॥ मणसा मणसच्चविउ ॥
वायासच्चेण करण सच्चेण ॥ तिविहेण सच्चविउ
॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २६ ॥ चत्तारि अ सुह
सिज्झा ॥ चउरो सन्ना तहाकसायाय ॥ परिवद्यतो
गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पच ॥ २७ ॥ चत्तारि अ
सुह सिज्झा ॥ चउविहं सवर समाहिठाण ॥ उवस
पन्नो जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पच ॥ २८ ॥ पंचेवय
काम गुणे ॥ पंचेवय अएहवे महादोसे ॥ परिवद्यतो
गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २९ ॥ पचिदिअ स
वरण ॥ तहेव पंच विहमेव सद्याय ॥ उवसपन्नो
जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३० ॥ छज्जीवनिकाय
वहं ॥ छप्पिअ जासाउ अप्पसत्थाउ ॥ परिवद्यतो
गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पच ॥ ३१ ॥ छविहमप्पित
रय ॥ वप्पपिअ छविह तवो कम्म ॥ उवसपन्नो
जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पच ॥ ३२ ॥ सत्त य भय
ठाणाइ ॥ सत्तविह चेव नाणविज्जंग ॥ परिवज्जतो
गुत्तो ॥रक्कामि महव्वए पच ॥३३॥ पिडेसण पाणेसण
उग्गह सत्ति कया महप्पयणा ॥ उवसपन्नो जुत्तो ॥
रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३४ ॥ अठय मयठाणाइ अ
ठय कम्मइ तेसि वंधच ॥ परिवद्यतो गुत्तो ॥ रक्कामि
महव्वए पंच ॥ ३५ अठय पवयण माया ॥ दिठा अठ

विह निठिअठेहिं॥उवसपन्नो जुत्तो । रक्खामि महव्व ए पंच ॥३६॥ नव पाव निआणाइं ॥ संसारठाय न ववविहा जीवा ॥ परिवद्यतो गुत्तो । रक्खामि महव्वए पच ॥ ३७ ॥ नव वंभचेर गुत्तो ॥ दुनववविहं वभचे र परिसुद्ध ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ उवसंपन्नो जुत्तो । रक्खामि महव्वए पच ॥ ३५ ॥ उवघायं च दसविह॥ असंवर तहय संकिलेसं च ॥ परिवद्यतागुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥३९॥ सच्च समाहिठाणे ॥ दसचेव दसउ समण धम्मंच ॥ उव संपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि म हव्वए पच ॥ ४० ॥ आसायण च सव्व ॥ तिगुण इक्कारस विवज्जंतो ॥ परिवद्यतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पच ॥ ४१ ॥ एवंतिदुक विरउं ॥ तिगरण सुद्धो तिसल्ल निसल्लो ॥ तिविहेण पडिक्कतो ॥ रक्खामि महव्वए पच ॥ ४२ ॥

इच्चेइअ महव्वय उच्चारण थिरत्त सल्लुद्धरण । धिइ बलं ववसाउं । साहणठो पाव निवारण । निकाय णा चाव विसोही पडागाहरण । निज्जूहणाराहणा गुणाण । संवरजोगो पसत्थाणो । वउत्तया जुत्तयाय नाणे परमठो उत्तमठोय । एसखलु तित्थकरेहिं । रइ राग दोस महणेहि । देसिउं पवयणस्ससारो । छज्जीवनीकाय सजम । उवएसिअ । तेलुक्क सक्कअ ठाण । अपुवगया नमोहु ते । सिद्ध बुद्ध मुत्त निरय। निसग माणभूरण । गुण रयण । सायर । मणत

मप्पमेअ । नमोत्थुते महइ महावीर वद्धमाण सामि स्स । नमोत्थते अरहंत । नमोत्थुते भगवंत । तिकट्टु । एसाखलु । महव्वय उच्चारणाकया ॥

इछामो सुत्त कित्तण काउ । नमोतेसि खमासम णाणं । जेहिं इमं वाइअ । छविह मावस्सय । भग वंतं तंजहा । सामाइअ ॥ १ ॥ चउवीसछउ ॥ २ ॥ वंदणय ॥ ३ ॥ पडिक्कमण ॥ ४ ॥ काउसग्गो ॥५॥ पच्चक्काण ॥ ६ ॥ सव्वेहिंपि एअमि । छविहे आव स्सए । भगवंते ससुत्ते । सअत्थे सगये सनिज्जुत्ती ए । ससंगहणिए जेगुणावाभावावा । अरिहंतेहिंभग वंतेहिं । पण्णत्तावा । परूविआवा । तेभावेसद्दहामो । पत्तियामो । रोएमो फासेमो । पालेमो । अणुपाले मो । तेभावेसद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहि । रोअंतेहिं । फासं तेहिं । पालतेहिं । अणुपालतेहि । अतोपरकस्स जंवा इअ । पढिअ परिअट्टिअ । पुछिअ अणुपालिअ । तडुक्करकयाए कम्मक्कयाए । मुक्कयाए । बोहिला भाए । ससारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसपज्जित्ताण विहरामि । अंतोपरकस्स । जनवाइअ नपढिअ नप ढिअ नपरिअट्टिअ । नपुछिअ । नाणुपेहिअ । नाणु पालिअ सतेबले संतेवीरिए । सतेपुरिसकारपरिक्कमे। तस्सआलोएमो । पडिक्कमामो । निंदामो गरिहामो। विउट्टेमो । अकरणयाएअभुठेमो । अहा रिहंतवो कम्म । पायछित्तपडिवज्जामो। तस्समिछा मिडुक्कड ।

नमोतेसिंघमासमणाणं । जेहिंइमंवाइअ । अंग बाहिर उकालिअजगवंतं । तंजहा । दसवेआलिअ । कप्पिआकप्पिअ । चुल्लकप्पसुअ । महाकप्पसुअ । उवाइअ रायप्पसेणिअ । जीवाजिगमो । पणवणा । महापन्नवणा। नंदी अणुउगदाराइ देविंदथ्थउ । तंदुल विआलिअ चदाविज्झियापमायप्पमाय। पोरिसिमडलं। मडलप्पवेसो गणिविद्या। विद्याचारणविणीछउ। झाण विजत्ती । मरणविजत्ती । आयविसोही । सलेहणा सुअ । वीयरायसुअ । विहारकप्पो । चरणविहि । आउरपच्चक्काणं । महापच्चक्काण ॥ २० ॥ सवेहिपि एअमि । अगबाहिरे उकालिए । जगवते समुत्ते । सअठे । सगथे । सनिज्जुत्तिए । ससगहणिए जेगुणावा जावाना । अरिहतेहिं । जगवंतेहिं । पन्नत्ता वा । परूविआवा । तेजावे सद्दहामो पत्तिआमो । रोएमो फासेमो । पालेमो अणुपालेमो । तेजावे सद हंतेहि । पत्तिअतेहिं । रोअतेहिं । फासतेहिं पालते हि । अणुपालतेहिं । अतोपरकस्स । जवाइअ पढि अ । परीअट्टिअ । पुछिअ । अणुपेहिअ । अणुपालि अ । तडुरकरकयाए । कम्मक्खयाए । मुरक्खयाए । बोहिलाजाए संसारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसप चित्ताणविहरामि । अतोपरखस्स । जनवाइअ नप ढिअ नपरिअट्टिअ । नपुछिअ । नाणुपेहिअ । नाणु पालिअ । सतेवले सतेविरिए । संतेपुरिसकारपरिक

मे। तस्सआलोएमो। पडिक्कमामो। नीदामो। गरिहामो। विउट्टेमो। विसोहेमो। अकरणयाएअब्भुठेमो। अहारिह तवोकम्म। पायछित्त पडिवज्जामो। तस्स मिछा मिदुक्कडं।

नमोतेसिखमासमणाण। जेहिइमंवाइअं अंगवा हिरंकालिअंजगवंत। तंजहा। उत्तरज्झयणाइं। द साकप्पो। ववहारो। इसिभासिआइ। निसीहं। महानिसीहं। जंबुद्दीवपणत्ती। सूरपणत्ती। चदपन्न त्ती। दीवसागरपन्नत्ती। खुड्डयाविमाणपविभत्ती। महल्लिआविमाण पविभत्ती। अगचूलिआए। वंग चूलिआए। विवाहचूलिआए अरुणोववाए। वरुणो ववाए गरुलोववाए। धरणोववाए। वेलंधरोववाए। वेसमणोववाए। देविंदोववाए। उठाणसुए। समुठा णसुए। नागपरिआवलिआणं। निरयावलिआण। कप्पिआण। कप्पवडिंसिआणं। पुप्फिआणं। पुप्फ चूलिआणं। वण्हीयाण। वण्हीदसाण आसीविस भावणाण। दिठि विसभावणाणं। चारणसुमिण भा वणाण। महासुमिणभावणाणं। तेअग्गिनिसग्गाणं ॥३६॥ सव्वेहिं पिएअंमि। अगवाहिरे कालिए भग वते। ससुत्ते। सअत्थे सगंथे। सणिज्जुत्तिए। ससं गहणिए जेगुणावां भावावा। अरिहतेहि। भगवंते हि। पण्णत्तावा परूवीआवा तेभावेसद्दहामो। पत्ति आमो रोएमो। फासेमो पालेमो। अणुपालेमो। ते भावेसद्दहतेहि। पत्तिअतेहि। रोयतेहि फासंतेहि।

पालंतेहि । अणु पालंतेहिं । अतोपरस्स जंवाइअं पडिअ परिअट्टिअ पुछिअं अणुपेहिअं अणुपालिअ तंछुरस्सरखयाए । कम्मरखयाए॥ मुरखयाए। बोहि लाभाए। ससारुत्तारणयाए । त्तिकट्ट।उवसपज्जित्ताण विहरामि । अतोपरस्स। जनवाइअ नपडीअ नप रियट्टिअ नपुछिअ । नाणुप्पेहिअ नाणुपालिअ । स तेवले । सतेवीरिए । सतेपुरिसकारपरिक्कमे। तस्सअ आलोएमो।पडिक्कमामो। निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो विसोहेमो । अकरणयाए । अपुठेमो।अहारिहंतगो कम्म । पायछित्तपडिवज्जामो । तस्समिछामिदुक्कडं ॥

नमोतेसिरसमासमणाण । जेहिंइमंवाइअ । दुवा लसंगगणिपिडग । जगवत । तजहा । आयारो सुअ गडो ठाण । समवाउं । विवाहपन्नत्ती । नायाधम्मक हाउं । उवासगदसाउं अंतगडदसाउं । अणुत्तरोववा इअदसाउं । पण्हावागरण ।विवागसुअ दिठिवाउं॥ सव्वेहिंपि एअमि । दुवालसंगे गणिपिडगे । जगवते। सअठे । ससुत्ते । सगथे । सणिज्जुत्तिए । ससग ह णिए । जे गुणा वा । भावा वा । अरिहतेहिं । जग वतेहि । पन्नत्ता वा । परूविआ वा । ते भावे सद्द हामो । पत्तिआमो । रोएमो । फासेमो । पालेमो । अणुपालेमो । ते भावे सद्दहतेहि । पत्तिअतेहिं । रोयतेहि । फासतेहिं । पालतेहि । अणुपालतेहि । अतोपरकस्स । जवाइअ । पडिअ । परिअट्टिअ । पु

छिअ । अणुपेहिअं । अणुपालिअं । तंडुकरकयाए । कम्मरकयाए । मुरकयाए । वोहिलाभाए । संसारुत्तारयाए । तिकट्ट । उवसपज्जित्ताण विहरामि । अतो परकस्स ज न वाइअ । न पढिअं । न परिअट्टिअ । न पुछिअ । नाणुपेहिअ । नाणुपालिअं । सते वले । सते वीरिए । सते पुरिसक्कारपरिक्कमे । तस्स आलोएमो पडिक्कमामो । निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो विसोहेमो । अकरणयाए । अभुठेमो । अहारिहं तवोकम्मं । पायछित्तं पडिवज्जामो । तस्स मिछामि डुक्कड ॥ ७ ॥ नमो तेसिं खमासमणाण । जेहि इमं वाइअ डुवा लसग गणिपिडग । भगवतं । तं जहा सम्मं काएण । फासति । पालंति । पूरंति । तीरति । किट्टति । सम्म आणाए । आराहंति । अह च नाराहेमि । तस्स मिछामिडुक्कड ॥ ८ ॥

सुअदेवआ भगवई । नाणावरणीअकम्मसंघाय । तेसिं खवेउ सयय । जेसि सुअ सायरे भत्ति ॥ ७ ॥

इति पाक्षिक सूत्र समाप्त ॥

पाक्षिकक्षामणा. ॥

इछामि खमासमणो पिअं च मे जन्ने । इछाणं तुछाण अप्पायंकाणं । अभग्गजोगाणं । सुसीलाणं । सुव्वयाण । सायरिउवज्झायाणं । नाणेणं । दंसणेण । चरित्तेण । तवसा । अप्पाण । भावेमाणाणं । वहुसुभेण भे दिवसो पोसहो । पक्को वइक्कंतो । अन्नो भे

कल्लाणेणं । पज्जुवासिए । सिरसा मणसा । मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥ तुम्हेहिं सम ॥

इछामि खमासमणो । पुव्वि चेइआइं वंदित्ता । नमंसित्ता । तुम्हाण पायमूले । विहरमाणेणं । जे केइ बहुदेवसिआ । साहुणो । दिठा समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं । दुइज्जमाणा वा । राइणिआ संपुछति । उमराइणिआ वंदंति । अज्जया वंदंति अज्जियाउ वंदति । सावया वंदंति । सावियाउ वंदंति अहपि निस्सल्लो । निक्कसाउ । त्तिकट्टु । सिरसा मणसा । मत्थएण वंदामि ॥२॥ अहमवि वदामि चेइआइ॥

इछामि खमासमणो । अप्पुछिउंहं । तुम्हाणहं । सतिअ । अहाकप्प वा । वत्थ वा । पडिग्गह वा । कंबल वा । पायपुछण वा । रयहरण वा । अक्कर वा । पय वा । गाहं वा । सिलोगं वा । सिलोगद्ध वा । अठ वा । हेउ वा । पसिण वा । वागरण वा । तुम्हेहि । चिअत्तेण दिन्न । मए । अविणएण । पडिछिअं । तस्समिछामिदुक्कड ॥ ३ ॥ आयरियसंतिअ ॥

इछामि खमासमणो । अहमपुव्वाइ । कयाइं च मे । किइकम्माइ । आयारमतरे । विणयमंतरे । सेहिउं । सेहाविउं । सगहिउं । उवग्गहिउं । सारिउं । वारिउं चोइउं । पडिचोइउं । चिअत्ता मे । पडिचोयणा । अप्पुछिउंह । तुम्हाणह तवतेयसिरीए । इमाउं चाउरत ससारकताराउं । साहट्टु । निठारिस्सामि

तिकट्टु । सिरसा मणसा । मत्थएण वंदामि ॥ ४ ॥
निठारगपारगाहोह ॥ इति पाक्षिक क्षामणा ॥

साधुउंको दैवसिक और रात्रिक प्रतिक्रमणमे
अतिचारकी आठ गाथाके स्थानपर
गुणनेकी एक गाथा

सयणासन्न पाणे, चेइ जइ सिज्ज काय उच्चारे ।
समिइ भावणा गुत्ती, वितहायरणे य आइयारो॥१॥

यह गाथा गुण तेत्तिस्मे कहिहुइ बातें संबंधी जो कुछ अतिचार लगां होसो सांधुने याद करना सामान्य साधुसें गुरुको अटप व्यापार होनेसें गुरुने ढोवार यह गाथा अर्थ सह विचारनी

(प्रात: पडिलेहणकी विधि),

इरिआवही पडिक्कमी, खमासमण देके, इछाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करु? 'इछ' कही मुहपत्ति ५० बोलसें, उंघो १० बोलसें, कटासण २५ बोलसें, कंदोरा १० और चोलपट्टा २५ बोलसें पडिलेहना पिछे इरियावही पडिक्कमके, खमासमण देके, इछकारी भगवन् पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहवोजी, एसा कहके स्थापनाचार्यकी पडिलेहणा करनीसो नीचे प्रमाण

प्रथम कामली पडिलेही संकेलके तिस उपर स्थापनाचार्य रखणी पिछे थापनाजी ढोकीके प्रथम उपरकी एक मुहपत्ति पडिलेहे पिछे "गुरुस्वरूपके

धारक गुरु ज्ञानमयी दर्शनमयी चारित्रमयी, शुद्ध श्रद्धामय, शुद्ध प्ररुपणामय, शुद्ध स्पर्शनामय, पंचाचार पाले पलावे, अनुमोदे, मनगुप्ति वचनगुप्ति, कायगुप्तिसे गुप्ता" यह तेरह बोल बोलके पांचोंस्थापनाजीकी पृथक् पृथक् पडिलेहणा करे पिछे स्थापनाजी सबधी डुसरी मुह पत्तिये पडिलेहे (सांजकी पडिलेहण वखत पडेली स्थापनाजीकी सब मुहपत्तिये पडिलेहना पिछे स्थापनाजी बांधके ठवणी उपर रखके खमा समण देके इछा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? इछ कही मुहपत्ति पडिलेही, खमा० इछा० उपधि संदिसाहु? इछ, खमा० इछा० उपधि पडिलेहु? इछ कही दूसरे सबवस्त्रें पडिलेहने अंतमे रुडक पडिलेहना पिछे डमासण लेके पडिलेही, इरिआवही पडिक्कमी, काजा लेना पिछे इरिआवही पडिक्कमी काजा परठवना पिछें इरिआवही पडिक्कमी, खमासण देके इछा० सज्झाय करु? इछ कही एक नवकार गणी 'धम्मो मंगल मुक्किठ, ए सज्झाय कहेना इतिप्रात पडिलेहणविधि

(सध्या पडिलेहणविधि)

खमासमण देके इछा० बहु पडिपुन्ना पोरिसि? खमासमण देके इरियावही पडिक्कमी खमासमण देके इछा० पडिलेहण करु? इछ खमा० इछा० वस्ती प्रमार्जु? इछ कहके उपवास कीया होय तो मुहप

त्ति, उंघो, कटासण पडिलेहना नहीं तो पूर्ववत् पाच चीजें पडिलेहना. पिछे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देके, इछाकारी भगवन् पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी यों कहके पूर्वोक्त रीत स्थापनाजीनी पडिलेण करनी पिछे खमा० इछा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहु? इछ कही मुहपति पहिलेहि खमा० इछा० सज्झाय करूं? इछ कही एक नवकार गुणके "धम्मो मंगल मुक्किठ" एसज्झाय कहे पिछें आहार कीया होयतो वांदणा देके योग्य पच्चख्काण करना उपवास किया होयतो खमसमण देके इछकारी भगवन् पसाय करी पच्चख्काण आदेशदिजीये योंकहके पच्चख्काण करे पिछे खमा०इछा० उपधि सदिसाहु? इछं खमा० इछा० उपधि पडिलेहु? इछ कही सर्व वस्त्र पडिलेहे पिछे पूर्वोक्त रीत इरियावही पडिक्कमी, काजा लेके, इरियावही पडिक्कमी, काजा परठवना ॥ इति ॥

(पोरसिविधि)

छ घडी दिवस चडे पिछे खमासमण देके इछा० वहु पडिपुन्ना पोरिसि? इछ कही खमासमण देके इरियावही पडिक्कमना पिछे खमासमण देके इछा० पडिलेहण करु? इछ कही मुहपति पडिलेहनी इति

पच्चख्काण पानेकी विधि

खमासमण देके इरियावही पडिक्कमी, खमासम

ण देके इछा० चैत्यवंदन करु? इछ कही जगचिं
मणीका चैत्यवंदन जयवियराय सपुर्ण पर्यंत करु
(स्तवन स्थान उव सग्गहर कहेना) पिछे खमा
मण देके इछा० सज्झाय करु? इछ कही एक न
कार गणी धम्मो मंगलमुक्किठ सज्झाय कहेना ख
समण देके इछा० मुहपति पडिलेहुं? इछ क
मुहपत्ति पहिलेहणी पिछे खमा० इछा० पच्चक्का
पारु 'तहत्ति' कही जमणा हाथ उंचा उपर स्थाप
करके एक नवकार गुणके आंबिल पर्यंतके पच्चक्का
नीचे प्रमाणे कह करपारणा

"उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअ पोरिसि साढ
रसि सूरेउग्गए पुरिमड्ढ मुठि सहिअं पच्चक्का
कीया चउविहार ॥ आंबील, नीवी, एकासण प
क्खाण किया तिविहार ॥ पच्चक्खाण फासिअ, पा
अं सोहिअ, तीरिअं किट्टिअ, आराहिअं जं च
आराहिअ तस्स मिछामि दुक्कड ॥

इस्मे जो पच्चक्खाण कीया होय उहांतक बोलन
आगेकेपाठ न बोलवा तिविहार उपवासवालो
नीचे प्रमाणे कहेना

"सूरे उग्गए पच्चक्खाण किया तिविहार, पा
हार पोरिसि साढपोरिसि पुरिमड्ढ मुठि सहिअ
पच्चक्खाण किया पाणहार, पच्चक्खाण फासिअं० पूर्ववा
ए प्रमाणे पच्चक्खाण पार्या पिछे नीचे प्रमाणे ॥ १७

गाथा कहेनी

धम्मो मंगल मुक्किठ । अहींसा सञ्जामो तवो देवावि तं नमंसति । जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥ जहा डुमस्स पुप्फेसु । भमरो आवियइ रस । नय पुप्फ किलामेइ । सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणा मूत्ता । जे लोए संति सोहुणो । विहगमाव पुप्फेसु । दाण भत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वय च विंत्ति ल प्रामो । न य कोइ उवहम्मई । अहा गडेसुरीयते । पुप्फेसु भमरी जहा ॥ ४॥ महुकार समा बुद्धा । जे भवति अणिस्सिया । नाणापिंडरया दंता ॥ तेणवुच्च ति साहुणो त्तिवेमि ॥५॥डुम्म पुप्फिआ अज्झयणम् ॥१॥ कहन्नु कुद्या सामण । जो कामे न निवारए । पए पए विसीयतो । सकप्पस्स वसगउं । ६ । वत्थ गधमलंकारं । इत्थिउं सयणाणि य।अछदा जे न भुज ति । न से चाइत्तिवुच्चई । ७ । जे अ कंते पिए भोए। लद्धेवि पिठि कुव्वई । साहीणे चवइ भोए । सेहु चाइत्ति वुच्चई ॥ ८ ॥समाइपेहाइ परिव्वयतो । सिआ मणो निस्सरई वहिद्धा ॥ न सामहं नो वि अहपि तीसे । इच्चेव ताउं विणइज्ज रागं ॥ ९ ॥ आयावया हीचयसोगमल्ल । कामेकमाहीकमि य खु डुक्क । छि दाहिदोसं विणइज्ज राग । एवंसुही होहिसि संपरा ए ॥१० ॥ पक्कदे जलिय जोइ । धूमकेउ डुरासय । निछति वंतय भोत्त । कुले जाया अगंधणे ॥ ११ ॥

धिगत्थु ते जसो कामी। जोतं जीवियकारणा। वंतं इ च्छसिआवेउं। से अते मरण भवे ॥ १२ ॥ अहं च भोग रायस्स। न चसि अधगवन्हिणो। माकुले गध णाहो मो। सजमं निहुउंचर ॥ १३ ॥ जइ त काहि सि भावं। जा जा दिछसि नारीउं। वायाविरुव्वह मो। अहि अप्पा भविस्ससि ॥ १४ ॥ तीसे सो व यण सुच्चा। संजयाइसु भासियं। अंकुसेण जहा ना गो। धम्मे संपडिवाइउं ॥ १५ ॥ एव करंति सबुद्धा। पडिआ पवियरकणा। विणिअट्टति भोगेसु। जहा से पुरिसुत्तमो। त्तिबेमि ॥ १६ ॥ सजमे सुठियप्पा ण। विप्पमुक्काण ताइणं। तेसिमेय मणाइन्न। निग्ग थाण महेसिण ॥ १७ ॥ इतिसामन्नपुव्वियद्धयणम् ॥

गोचरी आलोयण विधि

निसिही कहके उपाश्रयमें प्रवेश करके गुरु स न्मुख आके नमो खमासमणाण मछएण वंदामी' कहके पिछें पग भूमि प्रमार्जी शुरू करके गुरु स न्मुख खडे रहके काये पग उपर कांमा रखके दक्षिण हाथमे मुहपत्ति रखके खडेखडे खमासमण देय पिछे आदेश मागके इरिआवही पडिक्कमे एक लोगस्सका काउसग्ग करे काउसग्गमें जो क्रमसें गोचरीकी जो जो वस्तुये लीनी होय सो यादकरे तिस्मे जहां जहा जो जो दोष लागे होय सो याद करे पिछे नमो अरि हताण कह पारके क्रम प्रमाण

गुरुको कह बतावे. पिछे गुरुको आहार दिखावे पिछें गोचरी आलोवे सो ए प्रमाणे–

पडिक्कमामि गोअरचरिआएसे मिछामिदुक्कड पर्यंत (श्रमण सूत्र पगाम सज्झाय) मे आवे सो आलावा कहे पिछे तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहके काउसग्ग करे सो काउसग्गमे नीचेकी गाथा तिन वार विचारे

अहो जिणेहीं असावज्जा, वित्ती साहुण देसिया।
मुक्खसाहण हेउस्स, साहु देहस्स धारणा ॥ १ ॥

पिछे काउस्सग्ग पारके लोग्गस्स कहे ॥ इति ॥

स्थंडिल शुद्धिका विधि

सायकाले देवसिक प्रतिक्रमणके प्रारंभमे इरिआवही पडिक्कमी पच्चखाण करे पिछे खमा० इछ० स्थंडिल पडिलेहुं? इछ कही मंडला करे सो ए प्रमाणे–

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे

दूसरे ७ मांडलेमे अणहियासेके वदल अहियासे' कहेना तत्पश्चात् दूसरी वारमे आघाडेके वदल आणाघाडे कहेना शेष उपर प्रमाणे कहेना एकदर २४ मंडले करना

पिछे इरियावही पडिक्कमी, चैत्यवदन करके प डिक्कमणा शरु करे ॥ इति ॥

सथारा पोरिसीकी विधि

पहोर रात्री पर्यंत सज्झाय ध्यानकिये पिछे सथा रा करनेके अवसर खमा० इच्छा० बहु पडिपुन्ना पोरि सि कही खमासमेण देके इरियावही पडिक्कमे पिछे खमा० इच्छा० 'बहु पडिपुन्ना पोरिसि राइय संथारए ठाउ ?' यों कहके चउक्कसायका चैत्यवंदन जय विय रायपर्यंत करना पिछे खमा० इच्छा० सथारा विधि ज णनेकी मुहपत्ति पडि लेहु? इछ कही मुहपत्तिपडि लेना 'निसिही निसिही नमो खमासमणाण गोयमा इण महामुणीण' इतना पाठ, कहके नवकार तथा करेमिभंते–त्रणवार कहना पीछे संथारा पोरसि बो लना (प्रतिक्रमणकी चुकमें छपगयाहे)

तिम्मे चौदमी गाथा तीनवार कहना पिछे तीन नवकार गुणना पिछे छेल्ली तीन गाथा कहेनी तत्प श्चात् निद्रा न आवे तहातक सज्झाय ध्यानकरना

पाक्षिक प्रतिक्रमणमें कोइको ठींक आवे तो करनेकी विधि

जो पाक्षिक अतिचारके पहिले ठीक आवेतो सब पुन करना तत्पश्चात वृहशाति तकमे ठीक आवे तो डुक्करकडेके काउसग्गके पहिले इरियावही पडिक्कमी लोगस्स कही खमासण देके इच्छा० छुडो

पद्रव उंडावणार्थं काउसग्ग करु? इछ कही अन्नत्थ कही चार लोगस्सका काउसग्ग सागरवरगंभिरा त क करना नीचेकी गाथा कहके पारना

सर्वे यक्षांबिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने ॥
क्षुद्रोपद्रव संघातं, ते द्रुतं द्रावयतु न ॥ १ ॥

पिछे प्रगट लोगस्स कहेना

ठमासि काउस्सग करनेकाविधि

चैत्र सुदि ११–१२–१३ तथा आसो सुदि ११–१२–१३ ए तीनतीन दिवसोमे हररोज देवसिक प्रतिक्रमणमे सज्झाय कहे पिछे ए काउस्सग्ग करना प्रथम खमासमण देके इछा० सचित्त अचित्तरज उंडावणत्थ काउस्सग्ग करुं? इछ करेमि काउस्सग्ग अन्नत्थ कही चार लोगस्सका सागरवर गंभिरा तक काउस्सग्ग करना पारके लोगस्स कहेना

लोच करनेके समय काउस्सग्ग करनेका विधि

लोच करना होय तिस दिन लोचकिये अगाउ इरिआवही पडिक्कमी खमा० इछा० सचित्तअचित्त रज उंडावणत्थ काउस्सग्ग करु? इछा करेमी काउस्सग्ग अन्नत्थ०कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग सागरवरगंभिरा तक करना पारके प्रगट लोगस्सकहेना

कोइ साधु काल करे तव साधुकों करनेका विधि

जो साधुने काल किया होय तिनके पास आके एक साधु नीचेप्रमाण कहे–'कोटिक गण, वज्रीशा

खा, चंद्रकुल, अमुक आचार्य, उपाध्याय, स्थवीर, अमुक पंडितके शिष्य (अमुक मुनि) महा पारिठाव णीआ करेमि काउस्सग्गं' अन्नथ० कही एक नव कार कहे पिठे तीन वार 'वोसिरे' कहे पिठे श्रावक संस्कार करनेको ले जाय तत्पश्चात् जीर्ण काचली प्रमुख नांगना जीर्ण वस्त्र परठवना पवित्र अचित्त पाणीसे भूमिशुद्धि हस्तपाद वस्त्र शुद्धि कर ना पिठे श्रावक पास गोमूत्रादि ठटायके अवले देव वंदाने तिसकी विधि नीचे प्रमाणे—

अंतिम देव वंदन विधि

काल करने वाले साधुके एक शिष्य अथवा ल घु पर्यायवाला कोइ शिष्य प्रथम उलटा काजा (द्वारसे आसन तरफ) लेवे वस्त्रादि पहेरे उलटा पिठे काजा सवधी इरिआवही पडिक्कमके उलटा देव वंदन करे सो इस प्रमाणे

प्रथम कल्लाणकदकी एक थोइ पिठे एक नवकारका काउस्सग्ग, पिठे अन्नत्थ० अरिहंत चे० जयवि० उव सग्ग० नमोर्हत्० जावंति के० खमासमण० जावंतीचे० नमुथ्थुण० चैत्यवदन० लोग्गस्स० एक लोगस्सका० काउस्सग्ग० अन्नत्थ० तस्सउ० इरिआ वही० खमा समण देके अविधि आशातना मिछामि दुक्कड कहे पिठे सीधा काजा लेके इरियावही पडिक्कमे

पिठे सभा समक्ष सर्व साधु साध्वीने आठ

थोइसें सीधे देववंदन करना तिस्मे स्तवनके स्थान अजीसंता कहना और देव पूरा होनेसें खमा० इछा० छुडोपडव उंमावणह काउस्सग्ग करुं? इछ करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग सागरवर गंभीरा तक करना स्तुतिके स्थान वृद्ध शांति कहना पिछे प्रगट लोगस्स कहना

दूसरे गामसें स्वसमाचारीवाले साधुके काल धर्म का समाचार मिलनेसेंभी उपर प्रमाणे आठ थोइसे, सीधे देव वांदने तथा अजीसता वृध्धशांति कहना साध्वीने समाचार आनेसे साध्वीओने देव वंदन करना कोइ साधु कालधर्म पामे तव श्रावककों करनेका विधि

प्रथम स्नान करना केश होय तो प्रथम उतरा ना जरा पगकी अगुलीको छेदकरना हाथ पगकी आगलीयोको वध करना शरीरपर चदन केशर व रासकाविलेपनकरना मृत्यु स्थानके तथा स्नान क रायके वेठानेके स्थानक लोखडकी खीली ठोकनी नये वस्त्र पहेनाना. दक्षिण तर्फ रजोहरण (चरव ली) मुहपत्ति रखना. मांही तर्फ कोली, उस्मे न श पात्र एक लकु सहित रखना. रोहिणी, विशाखा पुनर्वसु तिन उत्तरा ए ठ नक्षत्र मे दो पुतले दर्भ के करके रखना ज्येष्टा, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा, भरणी अश्लेषा ए ठ नक्षत्रे पुतलें न करणा दूसरे १५ नक्षत्रेमे एक पुतला करणा वो पुतलेके जमणे

हाथमे उंघा (चरवला) मुहपत्ति देना उंर वाम हाथमे नग्न पात्र तथा एक लकु सहीत झोली देनी दो पुतले होय तो दोनोकों देना पिठें शोकयुक्त चित्तसें महोत्सव सहित योग्य स्थानके ले जाके चंदनादि काष्टोसे अग्नि संस्कार करना प्रातमें सर्व अग्नि शात कर रक्षा योग्य स्थानकमे परठवणी पिठे गुरु पास आयके लघुशांति वा वृद्धशांति सुनके अनित्यताका उपदेश श्रवण कर स्वस्थानक जाना साधु दररोज सात चैत्यवंदन करे सो नीचे प्रमाण

१ राइपडिक्कमणाके प्रारंभमें जग चिंतामणीका
२ राइपडिक्कमणाके अंतमें विशाल लोचनका
३ मंदरजीमे दर्शन करने जाय उहां करे
४ पच्चक्खाण पारते जगचिंतामणीका.
५ आहार कररहे पिठे जगचिंतामणीका
६ दैवसिक प्रतिक्रमके प्रारंभमे.
७ सथारा पोरिसी भणावणमें चउक्कसायका

२४ साधु दररोज चारवार सज्झाय करे सोइस प्रमाणे,

१ सवेरकी पडिलेहणके अंतमे धम्मो मंगल० की
२ साजकी पडिलेहण मध्यमे धम्मो मंगल० की
३ दैवसिक प्रतिक्रमणके अंतमे कहतें हे सो
४ राइ पडिक्कमणाके प्रारंभमे जरहेसर की

सप्तम परिछेद समाप्त

॥ अथ अष्टम परिछेद प्रारंभः ॥

॥ अथ षोडश संस्कार प्रारंभ ॥

तत्व ज्ञान मयो लोके, य आचारं प्रणीतवान् ॥
केनापि हेतुना तस्मै, नम आद्याययोगिने ॥
गर्भाधानं पुसवनं जन्मचन्द्रार्कदर्शनम् ॥
क्षीराशनं चैव षष्ठी तथा च शुचि कर्म च ॥
तथा च नामकरणमन्नप्राशनमेव च ॥
कर्णवेधो मुण्डन च तथोपनयन परम् ॥
पाठारम्भो विवाहश्च व्रतारोपोन्तकर्म च ॥
अमी षोडशसंस्कारा गृहिणां परिकीर्त्तिता. ॥

भावार्थः—गर्भाधान १, पुसवन २, जन्म ३, चंद्र सूर्यदर्शन ४, क्षीराशन ५, षष्ठी ६, शुचिकर्म ७, नामकरण ८, अन्नप्राशन ९, कर्णवेध १०, मुडन ११, उपनयन १२, विद्यारंभ १३, विवाह १४, व्रतारोप १५, अंतकर्म १६ येह सोलां संस्कार गृहस्थीको करने चहिये व्रतारोपसंस्कारको वर्जके, शेष १५ पंदरां संस्कार, साधुउने नही करणे

संस्कार कराने वाले गुरु विषे

अर्हन्मंत्रोपनीतश्च ब्राह्मण परमार्हत. ॥
क्षुल्लको वाऽऽप्तगुर्वाज्ञो गृहिसंस्कारमाचरेत् ॥१॥

अर्थ—अर्हन्मत्रोपनीत परमश्रावक, ब्राह्मण, और प्राप्त करी है गुरुकी आज्ञा जिसने ऐसा क्षुल्लक

(श्रावक विशेष) जिसका स्वरूप आगे लिखेंगे इन दोनोंमेंसे कोइ एक गृहस्थोंको संस्कार करावे

प्रथम गर्भाधान संस्कारका विधि

जब गर्भधारण को पाच मास होवे, तब गर्भाधानविधि, गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणो ने कराना गर्भाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, नाम ४ और अन्न ५, इन पाच संस्कारोंमें अवश्य कर्मके वास्ते मास दिनादिकोंकी शुद्धि न देखनी । श्रवण, हस्त, पुनर्वसु, मूल, पुष्य, मृगशीर्ष, येह नक्षत्र और रवि, मंगल, बृहस्पति, येह वार पुंसवनादिकर्मोंमें कहे है । इसवास्ते पाचमे मासमें शुभ तिथि, वार, नक्षत्रके दिनमे पतिको बलवान् चंद्रादि देखकर, देशविरतिगुरु जिसने स्नान करा है, चोटी बांधी है, उपवीत और उत्तरासंग धारण करा है, श्वेतवस्त्र पहिना है, पंचकक्षा धारण करा है, मस्तकमे चंदनका तिलक करा है, सुवर्णमुद्रासहित दक्षिणकर सावित्रीक प्रकोष्ठबद्ध पंचपरमेष्ठि मंत्रोद्दिष्ट पांच ग्रंथियुक्त दर्भसहित कौसुंभ सूत्रका कंकण है जिसके, तथा जिसने रात्रिमें ब्रह्मचर्य पाला है, जिसने उपवास, आचाम्ल, निर्विकृति, एकाशनादि प्रत्याख्यान करा है, संप्राप्तकरी है आजन्मसें यतिगुरुकी आज्ञा जिसने, ऐसे पूर्वोक्त विशेषणयुक्त, जैनब्राह्म

ण, अथवा क्षुल्लक, गृहस्थोंके संस्कारकर्म करणेके योग्य होता है ॥

उक्त च ॥

शातो जितेंद्रियो मौनी दृढसम्यक्त्ववासन ॥
अर्हत्साधुकृतानुज्ञ. कुप्रतिग्रहवर्जित. ॥

भावार्थ –शात, जितेंद्रिय, मौनी, दृढसम्यक्त्ववान्, अर्हन् और साधुकी आज्ञा करनेवाला, बुरा दान न लेवे, क्रोध मान माया लोभका जीपक, कुलीन, सर्व शास्त्रोका जानकार, अविरोधी, दयावान्, राजा और रंकको समदृष्टिसे देखनेवाला, प्राणोके नाश होते भी अपने आचारको न त्यागे सुदर चेष्टावाला होवे, अगहीन न होवे, सरल होवे, सदा सद्गुरुकी सेवा करने वाला होवे, विनीत, बुद्धिमान्, क्षांतिमान्, कृतज्ञ, दोप्रकारसे द्रव्यभावसें शुचि होवे, गृहस्थोंके सस्कार करनेमे ऐसा गुरु चाहिये

सो पूर्वोक्त विशेषणविशिष्ट गुरु, गर्भाधान कर्ममे प्रथम गर्भवंतीके पतिकी आज्ञा लेवे । और सो गर्भवतीका पति, नखसें लेके शिखा (चोटी) पर्यंत स्नान करके, शुचि वस्त्र पहिनके निज वर्णानुसार उपवीत उत्तरीय वस्त्र उत्तरासग करके, प्रथम शास्त्रोक्त बृहत्स्नात्रविधिसे अर्हत्प्रतिमाका स्नात्र करे. और तिस स्नात्रके पाणीको शुभ भाजनमे स्थापन करे. । तिसपीछे शास्त्रोक्त विधिसें गध, पुष्प, धूप,

दीप, नैवेद्य, गीत, वादित्रोंकरके जिनप्रतिमाकी पूजा करे । पूजाके अंतमें गुरु, गर्भवतीको, अविधवायोंके हाथोंकरी स्नात्रोदककरके सिंचनरूप अभिषेक करवावे । पीछे सर्व जलाशयोंके जलोंके जलोंको एकत्र मिलाके, सहस्रमूलचूर्ण तिसमें प्रक्षेप करके, तिस जलको शांतिदेवीके मंत्रकरके, अथवा शांतिदेवीके मंत्रगर्भित स्तोत्रकरके मंत्रे ॥

शांतिदेवीमंत्रो यथा ॥

"ॐ नमो निश्चितवचसे । भगवते । पूजामर्हते । जयवते । यशस्विने । यतिस्वामिने । सकलमहासंपत्तिसमन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय । सर्वासुरामरस्वामिपूजिताय । अजिताय । भुवनजनपालनोद्यताय । सर्वदुरितौघनाशनकराय । सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाचशाकिनीप्रमथनाय । यस्येतिनामसंस्मरणतुष्टा । भगवती । तत्पदभक्ता । विजयादेवी ॐ ह्रीं नमस्ते । भगवति । विजये । जय श । परे । परापरे । जये । अजिते । । अपराजिते । जयावहे । सर्वसंघस्य भद्रकल्याणमंगलप्रदे । साधूनां शिवतुष्टिपुष्टिप्रदे । जय श भव्यानां कृतसिद्धे । सत्वानां निर्वृतिनिर्वाणजननि । अभयप्रदे । स्वस्तिप्रदे भक्तानां जंतूनां शुभप्रदानाय नित्योद्यते । सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदे । जिनशासनरतानां शांतिप्रणतानां जनानां श्रीसंपत्कीर्त्तियशोव

र्द्धिनि । सलिलात् रक्ष २ । अनिलात् रक्ष २ । वि पात् रक्ष २ । विषधरेभ्यो रक्ष २ । दुष्टग्रहेभ्यो रक्ष २ । राज भयेभ्यो रक्ष २ । रोग भयेभ्यो रक्ष २ । रण भयेभ्यो रक्ष २ । राक्षसेभ्यो रक्ष २ । रिपुगणेभ्यो रक्ष २ । मारिभ्यो रक्ष २ । चौरेभ्यो रक्ष २ । ईतिभ्यो रक्ष २ । श्वापदेभ्यो रक्ष २ । शिव कुरु २ । शांति कुरु २ । तुष्टि कुरु २ । पुष्टि कुरु २ । स्वस्ति कुरु २ । भगवति । गुणवति । जनाना शिवशांतितुष्टिपुष्टि स्वस्ति कुरु २ । ॐ नमो क्रूं क्ष य क्षः क्रीं फुट् २ स्वाहा ' ॥ इति ॥

शांतिदेवी स्तोत्र ॥

"ॐ नमो भगवतेऽर्हते । शांतिस्वामिने । सकला तिशेषकमहासपत्समन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय । नम शांतिदेवाय । सर्वामरसमूहस्वामिसंपूजिताय । भुवनपालनो द्यताय । सर्वदुरितविनाशनाय । सर्वा शिवप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहभूतपिशाचमारिडाकिनी प्रमथनाय । नमो भगवति । विजये । अजिते । अ पराजिते । जयति । जयावहे । सर्वसंघस्य । भद्रक ल्याणमंगलप्रदे । साधूना शिवशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्ति दे । भव्याना सिद्धिवृद्धिनिवृतिनिर्वाणजननि । सत्वा ना अभयप्रदाननिरते । भक्तानां शुभावहे । सम्यग् दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते । जिनशासन निरतानां श्रीसंपत्यशोवर्द्धिनि । रोगजलज्वलनविष

विषधरदुष्टज्वरव्यंतरज्वरराक्षसरिपुमारि चौरेतिश्वापदोपसर्गादिभयेभ्यो रक्ष २। शिवं कुरु २। शांति कुरु २। तुष्टि कुरु २। पुष्टि कुरु २। स्वस्ति कुरु २। भगवतिश्रीशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्ति करु २। ॐ नमो नमो ह्रुं ह्रः य क्ष ह्रीं फट् २ स्वाहा" ॥ इति ॥

इस स्तोत्र करके अथवा पूर्वोक्त मंत्र करके सहस्र मूल चूर्ण सर्व जलाशयोंके जलको सातवार मंत्रके, पुत्रवाली सधवा स्त्रीयोंके हाथेंकरी मंगलगीतोंके गातेहुए गर्भवंतीको स्नानकरावे, सुगंधका अनुलेपन करी सदृश वस्त्र (विवाह समय पहिरनेका वस्त्र) पहिराके, संपत्तिअनुसार आभरण धारण करवाके, पतिके साथ वस्त्राचलका ग्रंथिबंधन करके, पतिके वामेपासे शुभ्र आसनके ऊपर स्वस्तिक मंगलकरके, गर्भवतीको बिठलावे ग्रंथियोजनमंत्रो यथा ॥

ॐ अर्हं। स्वस्ति संसारसंबंधबद्धयो पतिभार्ययो॰॥
युवयोरवियोगोस्तु भववासातमाशिषा ॥ १ ॥

विवाहको वर्जके, सर्वत्र इसीमंत्रकरके दंपतीका (स्त्रीभर्त्ताका) ग्रंथिबंधन करना। तदपीछे गुरु, तिस गर्भवंतीके आगे शुभ्र पट्टे ऊपर पद्मासन लगाके बैठके, मणिस्वर्णरूप्यताम्रपत्रके पात्रोमे जिनस्नात्रके जलसंयुक्त तीर्थोदकको स्थापन करके, आर्यवेदमंत्र पढके, कुशाग्र बिंदुयोकरके, गर्भवतीको सींचन करे

आर्यवेदमंत्रो यथा ॥

" ॐ अर्हं । जीवोसि । जीवतत्त्वमसि । प्राण्यसि । प्राणोसि । जन्मासि । जन्मवानसि । संसार्यसि । संसरन्नसि । कर्मवानसि । कर्मवद्धोसि।भवभ्रांतोसि । भवविभ्रमिपुरसि । पूर्णाङ्गोसि । पूर्णपिण्डोसि । जातोपाङ्गोसि । जायमानोपांङ्गोसि । स्थिरो भव नन्दिमान् भव । वृद्धिमान् भव । पुष्टिमान् भव । ध्यातजिनो भव । ध्यातसम्यक्त्वो भव । तत्कुर्या येन न पुनर्जन्मजरामरणसंकुलं संसारवास गर्भवास प्राप्नोपि । अर्हं ॐ ॥'

इस मंत्रकरके दक्षिणहाथमे धारण करे कुशाग्र तीर्थोदक विंदुयोंकरके गर्भवंतीके शिर और शरीर ऊपर सातवार सींचन करे. । तदपीछे पंच परमेष्ठिमंत्र पठनपूर्वक दंपतीको आसनसे उठायकरके, जिनप्रतिमाके पास लेजाके शक्रस्तव पाठ करके जिनवंदन करवावे । यथाशक्ति फलमुद्रा वस्त्र स्वर्णादि जिनप्रतिमाके आगे ढोवे तदपीछे गर्भवती स्वसंपत्तिके अनुसार वस्त्राभरण द्रव्य सुवर्णादिदान गुरुको देवे. । तदपीछे गुरु, पतिसहित गर्भवंतीको आशीर्वाद देवे यथा ॥

ज्ञानत्रय गर्भगतोपि विंदन् संसारपारैकनिवद्ध चित्त ॥ गर्भस्य पुष्टि युवयोश्च तुष्टि युगादिदेव' प्रकरोतु नित्यम् ॥ १ ॥

तदपीछे आसनसें उठायके ग्रंथिवियोजन करे ग्रथिवियोजनमंत्रो यथा ॥
ॐ अर्हं । ग्रथौ वियोज्यमानेऽस्मिन् स्नेहग्रथि स्थिरो स्तु वां॥ शिथिलोस्तु भवग्रंथि कर्मग्रथिदृढीकृत'॥१॥

इस मत्रकरके ग्रथि खोलके धर्मागारमे दंपतीको लेजाके गुरु को वंदना करवावे, और साधुयोंको नि र्दोष भोजन वस्त्र पात्रादि दिलवावे ॥

तदपीछे स्वकुलाचारयुक्तिकरके कुलदेवता, गृह देता, पुरदेवतादि पूजन जानना

॥ जैन वेद मत्रोत्पत्ति ॥

यहां जो कहाहै कि,जैनवेदमंत्र,सो कथन करतेहैं यथा आदिदेव (ऋषभदेव) का पुत्र,अवधिज्ञानवान्, आदिचक्री, भरत राजा,श्रीमदादिजिनरहस्योपदेशसें प्राप्त किया है सम्यक् श्रुतज्ञान जिसने–सो भरत राजा–सांसारिक व्यवहारसस्कारकी स्थितिकेवास्ते, अर्हन्की आज्ञा पाकरके, धारे है ज्ञानदर्शनचारि त्ररत्नत्रय, करणा करावणा अनुमतिसें त्रिगुणरूप तीनसूत्र–मुद्राकरके चिन्हितवक्ष स्थलवाले ब्राह्म णोंको (माहनोंको) पूज्यतरीके मानता हुआ, और तिस अवसरमे अपनी वैक्रियलब्धिसें चार मुखवा ला होके, चार वेदोंको उच्चारण करता भया. तिन के नाम–सस्कारदर्शन १, सस्थापनपरामर्शन २, त त्त्वावबोध ३, विद्याप्रबोध ४, । सर्व नयवस्तु कथन

करनेवाले इन चारो वेदोको, माहनोको पठ न कराता हुआ । तदपीछे वह माहन, सात तीर्थ करोके तीर्थतक अर्थात् चऽप्रभतीर्थंकरके तीर्थतक सम्यक्त्वधारी रहें, और आर्हतश्रावकोंको व्यवहार दिखाते रहें, तथा धर्मोपदेशादि करते रहे । तदपी छे नवमे तीर्थंकर श्रीसुविधिनाथपुष्पदंतके तीर्थके व्यवछेद हुए, तिस बीचमे तिन माहनोंने परिग्र हके लोभी होके, स्वच्छंदसें तिन आर्यवेदों कि ज गे कुछकसुनी सुनाइ बातो लेके नवीन श्रुतिया र ची, तिनमें हिंसक यज्ञादि और अनेक देवतायोंकी स्तुति (प्रार्थना) रची (क्रमसे ऋग्, यजु साम, अथ र्व,) नाम कल्पना करके, मिथ्यादृष्टिपणेको प्राप्तकरे तब व्यवहारपाठसें पराङ्मुख अर्थात् परमार्थरहि त मन कल्पित हिंसक यज्ञप्रतिपादकशास्त्रोंसें परा ङ्मुख, ऐसे श्रीशीतलनाथादिके साधुयोंने तिन हिं सक वेदोंको छोडके, जिनप्रणीत आगमकोही प्रमा णभूत माने । तिन ब्राह्मणोमेंसें भी, जिन माहनोने (ब्राह्मणोंने) सम्यक्त्व न त्यागन करा, अर्थात् जे माहन पुन तीर्थंकरोके उपदेशसें सम्यक्त्व पाके दृढ रहे,तिनोके सप्रदायमे आजभी भरत प्रणीत वेदका लेश कर्मांतरव्यवहार गत सुनते है, सोही यहां कहते है

यत उक्तमागमे ॥

सिरिभरहचक्कवट्टी आरियवेयाण विस्सुउं कत्ता ॥
माहणपढणट्ठमिण कहिअ सुहझाणववहार ॥ १ ॥
जिणतिठे वुछिन्ने मिछत्ते माहणेहि ते ठविया ॥
असंजयाण पूया अप्पाण कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्या,—श्रीभरतचक्रवर्त्ती आर्यवेदोंका कर्त्ता प्रसिद्ध है भरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके पढनेके वास्ते, शुभ ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहार केवास्ते । जिन तीर्थंकरके तीर्थके व्यवछेद हुए वह आर्यवेद तिन माहनोंने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे, और असयतिहोके तिनोंने अपनी पूजा जगत्में करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्त्वादर्शग्रंथसे जानना ॥

इस गर्भाधानसस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥ पचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३, दर्भ ४, कौसुभसुत्र ५, द्रव्य ६, फल ७, नैवेद्य ८, सदशवस्त्र दो (चुनरी) ९, शुभआसन १०, शुभपट्ट ११,स्वर्णताम्रादिभाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली स्त्रीयां१४ और गर्भवंतीका पति १५,

इति गर्भाधान सस्कार विधि

॥ अथ पुंसवन सस्कार वर्णन ॥

गर्भसें आठ मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपाग गर्भके उत्पन्न हुए, तिसके श रीरमें पूर्णीभाव प्रमोदरूप स्तनोंमे दूधकी उत्पत्तिका सूचक, पुसवन संस्कार करना। मूल पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र, और मंगल, गुरु आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्मम संमत है। रिक्ता दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अवम् (टूटी तिथी) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथियां वर्जके, गर्कांत और अशुभ नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चद्रमाके बल हुए, पुंसवनका आरंभ करे, सो ऐसें है। पूर्वोक्त वेष,और स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा न हुए गर्भाधान कर्मके अनतर, जो वस्त्रवेष औरकेशवेष धारण करे है, तिसही वस्त्रवेष और केशवेषवाली गर्भवंतीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे तब मगलगीतगानपूर्वक आभरणसहित अविधवा स्त्रीयोंकरके,अभ्यग उद्वर्तन जलाभिषेकोंकरके स्नान करावे। तदपीछे प्रभात हुए नवीन वस्त्र गधमाल्यभूषित गर्भवतीको साक्षिणी करके, घरदेहरामे अर्हत्प्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पचामृतकरके वृहत्स्नात्रविधिसे स्नात्र करावे। तदपीछे सहस्रमूलीस्नात्र प्रतिमाको करे। पीछे तीर्थोदक स्नात्रकरे पीछे सर्वस्नात्रोदकोको सुवर्णरूप्यताम्रादि भाजनमे

स्थापन करके, शुभासन ऊपर बैठी हुई साक्षीभूत करे हैं पतिदेवरादि कुलज जिसने, ऐसी गर्भवंतीको, दक्षिणहस्तमें कुशा धारण करके, कुशाग्रविंदुयोंकरके स्नात्रोदकसे गर्भवंतीके शिरस्तनउदरको सिंचन करता हुआ, इस वेदमंत्रको पढे ॥

"॥ ॐ अर्हं । नमस्तीर्थंकरनामकर्मप्रतिबंधसंप्राप्तसुरासुरेंद्रपूजायार्हते । आत्मन् त्वमात्मायु कर्मबंधप्राप्य मनुष्यजन्मगर्भावासमवाप्तोपि तद्भव जन्मजरामरणगर्भवासविच्छित्तये प्राप्तार्हद्धर्मे अर्हद्भक्त सम्यक्त्वनिश्चल कुलभूषण सुखेन तव जन्मास्तु । भवतु तव त्वन्मातापित्रो कुलस्याभ्युदय । तत शांति पुष्टि तुष्टिर्वृद्धिर्ऋद्धि कांति सनातनी अर्हंॐ॥

इस वेदमंत्रको आठवार पढता हुआ, गर्भवंतीको अभिषेचन करे । तदपीछे गर्भवती आसनसें ऊठके सर्वजातिके आठ २ फल, स्वर्णरूप्यमयी मुद्रा आठ, प्रणाम (नमस्कार) पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे ढोवे । तदपीछे गुरुके चरणोंको नमस्कार करके, दो वस्त्र, सोनेरूपेकी आठ मुद्रा, और तबोलसहित आठ सुपारी गुरुको देवे । तदपीछे धर्मागार (पोषधशाला) में जाकर साधुयोंको वंदना नमस्कार करे, और साधुयोंको यथाशक्तिसे शुद्ध अन्न वस्त्र पात्र देवे । कुलवृद्धोंको नमस्कार करे ॥ तदपीछे स्वकुलाचारकरके कुलदेवतादिपूजन जानन.

पचामृत १, स्नात्रवस्तु २, स्त्रीके नवीन वस्त्र ३, नवीन वस्त्रयुगल ४, स्वर्णकी आठ मुद्रा ५ रूपेकी आठ मुद्रा ६, सोनेकी ७, और रूपेकी ७ एवं षोडश (१६) मुद्रा और ७, फलकी जाति ७, मूलसहित दर्भाए, तांबूल १०, सुगध पदार्थ ११, पुष्प १२, नैवेद्य १३, सधवा स्त्रीया १४, गीत मंगल १५, इतनी वस्तु पुसवनसंस्कारमे चाहिये ॥

इति द्वितीय पुसवन सस्कार विधि

अथ तृतीय जन्मनामा संस्कार वर्णन ॥

जन्मसमय हुए, ज्योतिषि सहितगुरु,सूतिकागृह के निकट गृहमे एकांतस्थानमे जहा रौला न सुनाइ देवे, स्त्री, बाल, पशु, जहां न आवे, तहा घटियत्र (घडी–कलाक) सहित उपयोगसहित चित्तवाला होकर, परमेष्टिजापमे तत्पर हुआ थका रहे । यहां पहिलां तिथि वार नक्षत्रादि देखना न चाहिये क्यो कि, यह जीव कर्म और कालके अधीन है ॥

बालकके जन्म हुए समीप रहा हुआ गुरु, ज्यो तिषिको जन्मक्षण जाननेके वास्ते आज्ञा करे तिसने भी सम्यक् जन्मकाल, करगोचर करके धारण करना तदपीछे बालकके पिता, पितृव्य (चाचा-काका) पितामहोनें, नाल विना छेद्या गुरुका, और ज्योति षिका बहुत वस्त्र आभूषणवित्तादिसें पूजन करना. क्योंकि, नाल छेद्यांपीछे सूतक हो जाता है. । गुरु

बालके पिता, पितामह (दादा) आदिकको आशीर्वाद देवे ॥

यथा ॥

'ॐ अर्हं कुलं वो वर्द्धता । संतु शतशः पुत्रप्रपौत्रा । अक्षीणमस्त्वायुर्द्धनं यश च अर्हं ॐ ॥' इति वेदाशी ॥

यो मेरुशृंगे त्रिदशाधिनाथैर्दैत्याधिनाथैस्सपरिच्छदैश्च ॥ कुंभामृतै सस्नपितस्सदेव आद्यो विदध्यात् कुलवर्द्धनच ॥ १ ॥

ज्योतिषिकाशीर्वादो यथा शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

आदित्यो रजनीपति क्षितिसुत सौम्यस्तथा वाक्पति शुक्र सूर्यसतो विधुतुदशिखिश्रेष्ठा ग्रहा पांतुव ॥ अश्विन्यादिक्षमण्डल तदपरो मेषादिराशिक्रम कल्याण पृथुकस्य वृद्धिमधिका सतानसप्यस्य च ॥१

तदपीठे लग्न धारण करके, ज्योतिषिके स्वघर गये हुए, गुरु सूतिकर्मकेवास्ते कुलवृद्धा स्त्रीयोको, और दाईयोको निर्देश करे । अन्य घरमें रहाही बालकको स्नान करानेवास्ते जलको मंत्रके देवे ॥

जलाभिमंत्रणमंत्रो यथा ॥

॥ॐ अर्हं । नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥ क्षीरोदनीरैः किल जन्मकाले, यैर्मेरुशृङ्गे स्नपितो जिनेन्द्र ॥ स्नानोदक तस्य भवत्विदं च,शिशोर्महामङ्गल सपुण्यवृद्धै ॥ १ ॥

इस मत्रकरके सात वार जलको मंत्रे, तिस जल करके कुलवृद्धा स्त्रीयो वालकको स्नान करावे । और अपनेश्कुलाचारके अनुसार नालछेद करे तदपीछे गुरु स्वस्थानमे वैठाही चदन, रक्तचदन, विल्वका ष्ठादि दग्ध करके तिनकी भस्म श्वेतसर्पप और लव ण मिश्रित करके पोट्टलिका वाधे

रक्षाभिमत्रणमत्रो यथा ॥

" ॐ ह्रीं श्रीअवे जगदवे शुभे शुभकरे अमुं वा लं भूतेभ्यो रक्ष २ । ग्रहेभ्यो रक्ष २ । पिशाचेभ्यो रक्ष २ । वेतालेभ्यो २। शाकिनीभ्यो रक्ष २। गगनदे वीभ्यो रक्ष २ । दुष्टेभ्यो रक्ष २ । शत्रुभ्यो रक्ष २ । कार्मणेभ्यो रक्ष २ । दृष्टिदोषेभ्यो रक्ष । २ जय कुरु विजय कुरु । तुष्टि कुरु । पुष्टि कुरु । कुलवृद्धि कुरु । श्रीं ह्रीं ॐ भगवति श्रीअविके नम ॥

इस मंत्रकरके सातवार मत्रित रक्षापोट्टलीको काले सूत्रसें वाधके, लोहेका टुकडा, वरुणमूलका टुकडा, रक्तचंदनका टुकडा और कौडी, इनोसहित रक्षापोट्टलिको कुलवृद्धा स्त्रीयोके पास वालकके हा थ ऊपर वधावे ॥

सावत्सर(पंचाग)घटीपात्र, चदन, रक्तचदन, समी पमे एकांत गृह,सरसव,लवण कौशेय कृष्णसूत्र,कौमी गीतमंगल, लोहा,रक्षा,वस्त्र,दक्षिणावास्ते धन, सूति का, कुलवृद्धा, सर्व जलाशयका जल, जन्मसंस्कारमें

इतनी वस्तु चाहिये. ॥ इतिजन्म सं० विधि, ॥ अथ कदाचित् अश्लेषामें,ज्येष्टामें,मूलमें,गंडातमें जडामें बालकका जन्म होवे तो बालकको,बालकके मातापिताको, बालकके कुलको, दुःख, दारिद्र, शोक, मरणादि कष्ट होवे, इसवास्ते बालकका पिता और कुल ज्येष्ट (कुलका वडा) शांतिकविधिमें कहे विधानके करेविना बालकका मुख न देखे ॥

इति जन्मसंस्कार विधि

अथ चतुर्थ सूर्यचंद्रदर्शन संस्कार वर्णन

तीसरे दिन गुरु समीपके घरमें अर्हत् पूजन पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्वर्णताम्रमयी वा रक्त चंदनमयी सूर्यकी प्रतिमा स्थापन करे तदपीछे स्नान करके अलंकृत बालककी माताको जिसने दोनों हाथोंमें बालकको धारण किया है ऐसी माताको प्रत्यक्ष सूर्यके सन्मुख लेजाके, वेदमंत्रको उच्चारण करता हुआ, गुरु पुत्रको सूर्यका दर्शन करावे ॥

सूर्यवेदमंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं । सूर्योऽसि । दिनकरोऽसि । सहस्रकिरणोऽसि । विभावसुरसि । तमोपहोऽसि । प्रियकरोऽसि । शिवकरोऽसि । जगच्चक्षुरसि । सुरवेष्टितोऽसि । विततविमानोऽसि । तेजोमयोऽसि । अरुणसारथिरसि । मार्तंडोऽसि । द्वादशात्माऽसि । वक्रबाध

वोऽसि । नमस्ते भगवन् प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टि पुष्टि प्रमोदं कुरु २ सन्निहितो भव अर्हं ॥"

ऐसें गुरुके पठन करे हुए, सूर्यको देखके, माता पुत्रसहित, गुरुको नमस्कार करे गुरु पुत्रसहित माताको आशीर्वाद देवे ।

यथा । आर्या ॥

सर्वसुरासुरवंद्य कारयिता सर्वधर्मकार्याणाम् ॥
भूयात्त्रिजगच्चक्षुर्मंगलदस्ते सपुत्राया ॥ १ ॥

सूतकमें दक्षिणा नही है । तदपीछे गुरु स्वस्थानमे आयकर जिन प्रतिमाको और स्थापित सूर्यको विसर्जन करे माता और पुत्रको सूतकके भयसें तहा जिनप्रतिमाके पास न लावे तिस दिनमे ही संध्याकालमें गुरु जिनपूजापूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्फटिकरूप्यचंदनमयी चंद्रमाकी मूर्ति स्थापन करे, तिस चंद्रमाकी मूर्तिका शांतिकादिक प्रक्रमोक्त विधिकरके पूजन करे तदपीछे तैसेंही सूर्य दर्शनरीतिसें चंद्रमाके उदय हुए प्रत्यक्ष चंद्रसन्मुख माता और पुत्रको ले जाके, वेदमंत्र उच्चार करता हुआ, मातापुत्र दोनोको चंद्रका दर्शन करावे ॥ चंद्रस्य वेदमंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं । चंद्रोऽसि । निशाकरोऽसि । सुधाकरोऽसि । चंद्रमा असि । ग्रहपतिरसि । नक्षत्रपतिरसि । कौमुदीपतिरसि । निशापतिरसि । मदनमि

त्रमसि । जगज्जीवनमसि । जेवातृकोऽसि । क्षीरसागरोद्भवोऽसि । श्वेतवाहनोऽसि । राजाऽसि । राजराजोऽसि । ओषधीगणोऽसि । वंद्योऽसि । पूज्योऽसि । नमस्ते भगवन् अस्य कुलस्य ऋद्धिं कुरु । वृद्धिं कुरु । तुष्टिं कुरु । पुष्टिं कुरु जय विजयं कुरु । भद्रं कुरु । प्रमोदं कुरु । श्रीशशाकाय नमः । अर्हं ॥"

ऐसे पढता हुआ, माता पुत्रको चंद्र दिखलाके खडा रहे । माता पुत्र सहित गुरुको नमस्कार करे । गुरु आशीर्वाद देवे ॥

यथा । वृत्तम् ॥

सर्वौषधीमिश्रमरीचिजालः सर्वापदां संहरणप्रवीणः ॥
करोतु वृद्धिं सकलेऽपि वंशे युष्माकमिन्दुः सततं प्रसन्नः ॥

तदपीठे गुरु जिनप्रतिमा, और चंद्रप्रतिमा दोनोंको विसर्जन करे । इसमें इतना विशेष है । कदाचित् तिस रात्रिके विषे चतुर्दशी अमावास्याके वशसें वा बादलसहित आकाशके होनेसें चंद्रमा न दिखलाइ देवे तो भी पूजन तो तिस रात्रिकीही संध्यामे करना, और दर्शन तो और रात्रिमें भी चंद्रमाके उदय हुए हो सक्ता है ॥ सूर्य और चंद्रमाकी मूर्ति, तिसकी पूजाकी वस्तु, सूर्यचंद्रदर्शनसंस्कारमे चाहिये ॥

इति चंद्रसूर्यदर्शनसंस्कारविधि ॥

॥ अथक्षीराशननामा पांचमा संस्कार ॥

तिसही जन्मसे तीसरेदिन, चन्द्रसूर्यके दर्शनके दिन मेही, बालकको क्षीराशनसस्कार करना। तद्यथा। पूर्वोक्त वेषधारी गुरु, अमृतमत्रकरके एकसौ आठ वार मंत्रित तीर्थोदकसें बालकको, और बालककी माताके स्तनोको अभिषेक करके, माताकी गोदी (अक) मे स्थित बालकको दूध पावे पूर्णागना शिकासंबंधि स्तन्य पहिलां चुधावे, स्तन्य (दूध) पीते हुए बालकको गुरु आशीर्वाद देवे ॥

यथा वेदमत्र ॥

"॥ ॐ अर्हं जीवोऽसि। आत्माऽसि। पुरुषोऽसि। शब्दज्ञोऽसि। रूपज्ञोऽसि। रसज्ञोऽसि। गधज्ञोऽसि। स्पर्शज्ञोऽसि। सदाहारोऽसि। कृताहारोऽसि। अन्य स्ताहारोऽसि। कावलिकाहारोऽसि। लोमाहारोऽसि। औदारिकशरीरोऽसि। अनेनाहारेण तवाग वर्द्धता। बलं वर्द्धता। तेजोवर्द्धतां। पाटव वर्द्धतां। सौष्ठवं वर्द्धतां पूर्णायुर्भव। अर्हं ॐ ॥'

इस मत्रकरके तीन वार आशीर्वाद देवे ॥

अमृतमत्रो यथा ॥

"ॐ ॥ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं श्रावय २ स्वाहा ॥"

इति क्षीराशनसंस्कार विधि ॥

अथ षष्ठमं षष्ठीसंस्कारस्वरूप ॥

छठे दिनमे संध्याके समयमे गुरु प्रसूतिघरमें आकरके षष्ठीपूजन विधिका आरंभ करे, षष्ठीपूजनमे सूतक नही गिणना यत उक्तम् ।

स्वकुले तीर्थमध्ये च तथावश्ये बलादपि ॥
षष्ठीपूजनकाले च गणयेन्नैव सूतकम् ॥ १ ॥

इसवचनसें ॥ सूतिकागृहकी भीत और भूमि दोनोको सधवायोके हाथसे गोवरसें लेपन करावे, । तदपीछे दश्य शुक्रबृहस्पतिके वर्त्तनेवाली दिशाके भीतभागको खडी आदिसे धवल (श्वेत) करावे, और भूमिभागको चोकमडित करावे । तदपीछे श्वेत भीतभागके ऊपर सधवाके हाथेकरी कुकुम हिंगुलादिवर्णोसें आठमाताओंको उर्द्धा, (खडीयां) आठ बैठी, और आठ सुती, लिखवावे कुलक्रमातरमे गुरुकर्मांतरमे षट् (६) षट् (६) लिखनीया । तदपीछे सधवा स्त्रीयोके गीतमगल गाते हुए चोकमें शुभासनके ऊपर बैठा हुआ गुरु, अनतरोक्त पूजाक्रम करके मातायोंको पूजे यथा ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हसवाहने श्वेतवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ स्वाहा ॥ '

तीनवार पढके पुष्पकरके आह्वान करे।।तदपीछे॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्त

कपद्माक्षसूत्रकरे। हंसवाहने। श्वेतवर्णे। मम सन्निहिता भव २ स्वाहा ॥"

तीनवार पढके सन्निहित करे ॥ पीछे ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । इह तिष्ठ २ स्वाहा ॥ '

इति । तीनवार पढके स्थापन करे ॥ पीछे ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । गंध गृह्ण २ स्वाहा ॥"

चंदनादि गंध चढावे ॥

"ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । पुष्प गृह्ण २ स्वाहा ॥"

इसीतरे मंत्रपूर्वक ।

"धूप गृह्ण २ ।' दीप गृह्ण २ ।' 'अक्षतान् गृह्ण २ ।' 'नैवेद्य गृह्ण २ स्वाहा ॥"

ऐसे एकएकवार मंत्रपाठपूर्वक इन पूर्वोक्त गंधादिवस्तुयोंकरके भगवतीको पूजे ॥ ऐसेही अन्य सात मातायोंकी पूजा करणी ।

विशेष मंत्रोंमें है, सो लिखते हैं ॥

"ॐ ह्रीं नमो भगवति । माहेश्वरि । शूलपि [illegible] । चंद्रार्द्धललाटे । गजचर्मावृते।

शेषाहिवरूकांचीकलापे । त्रिनयने । वृषभवाहने । श्वेतवर्णे। इह षष्ठीपूजने आगच्छ २॥" शेषपूर्ववत्२

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । कौमारि । षण्मुखि । शूलशक्तिधरे । वरदाभयकरे । मयूरवाहने गौरवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २॥' शेषपूर्ववत्३

"ॐ ह्रींनमो भगवति।वैष्णवि । शखचक्रगदा। सारगखड्गकरे । गरुडवाहने । कृष्णवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ४ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । वाराहि । वराह मुहि । चक्रखड्गहस्ते । शेषवाहने श्यामवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ५ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । इंद्राणि । सहस्र नयने । वज्रहस्ते । सर्वाभरणभूषिते । गजवाहने । सुरागनाकोटिवेष्टिते । काचनवर्णे इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्वत् ॥ ६ ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । चामुंडे । शिराजालकरालशरीरे । प्रकटितदशने । ज्वालाकुतले । रक्त त्रिनेत्रे । शूलकपालखड्गप्रेतकेशकरे । प्रेतवाहने । धूसरवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ७ ॥

' ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । त्रिपुरे । पद्मपुस्तक वरदाभयकरे । सिंहवाहने । श्वेतवर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ८ ॥

एवं जैसें ऊर्ध्व (खडी) मातृका पूजन करे, तैसेंही वेठी और सुप्त मातृयांका भी पूर्वोक्त मत्रो सेंही तीनवार पूजन करे, । कितनेक चामुंडा, त्रिपुरा, दोनोंको वर्जके षट्मातृकाही पूजन करते है ॥

मातृका पूजन करके ऐसें पढे ॥

ब्राह्माद्यामातरोप्यष्टौ स्वस्वास्त्रबलवाहना ॥
षष्ठीसंपूजनात्पूर्वं कल्याण ददता शिशो. ॥ १ ॥

तदपीछे मातृस्थापनाकी अग्रभूमिमें चंदनलेप स्थापना करके, अवारूप षष्टीको स्थापन करे. । और तिस स्थापनाको दधि, चदन, अक्षत, दूर्वा दिकरके पूजे ।

तदपीछे गुरु हस्तमें पुष्प लेके ॥

"॥ ॐ ऐं ह्रीं षष्टि । आम्रवनासीने । कदंबवन विहारे । पुत्रद्वययुते । नरवाहने । श्यामाङ्गि । इह आगच्छ २ स्वाहा ॥ '

मातृवत् इसकी भी पूजा करणी । तदपीछे बाल कमातासहित अविधवा कुलवृद्धा स्त्रीया मंगलगीतगानमें तत्पर वाजंत्रोंके वाजते हुए षष्टीरात्रिको जागरणा करे । तदपीछे प्रात कालमें ॥

"॥ ॐ भगवति माहेश्वरि पुनरागमनाय स्वाहा ॥ '

ऐसें प्रत्येक नामपूर्वक गुरु, मातृको और षष्टीको विसर्जन करे । तदपीछे गुरु, बालकको पंचपरमेष्टि-

मंत्रपवित्रित जलकरके अभिषेक करता हुआ, वेद मंत्रकरके आशीर्वाद देवे ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं जीवोऽसि । अनादिरसि । अनादि कर्मभागसि । यत्त्वया पूर्वं प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैरा श्रववृत्त्या कर्मवद्ध तद्बन्धोदयोदीरणासत्ताभिः प्रति शुद्धद्व । माशुभकर्मोदयफलभुक्तेरुछेक दध्या. । नचा शुभकर्मफलभुक्त्या विषादमाचरेः । तवास्तु संवर वृत्त्या कर्मनिर्जरा अर्हं ॐ ॥"

सूतकमें दक्षिणा नही है ॥ चदन, दधि, दूर्वा, अक्षत, कुकुम, लेखिनी, हिंगुलादिवर्ण, पूजाके उप करण, नैवेद्य, सधवा स्त्रीयां, दर्भ, भूमिलेपन, इत नी वस्तु षष्टीजागरणसस्कारमें चाहिये ॥

इति षष्टी संस्कारविधि समाप्त ॥

॥ अथ शुचिकर्मसंस्कार ॥

यहा शुचिकर्म स्वस्ववर्णानुसार करके दिनोंके व्यतीत हुए करणा, तद्यथा ॥

शुध्येद्विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन बाहुज' ॥
वैश्यस्तु पोडशाहेन शूद्रो मासेन शुध्यति ॥१॥
कारूणा सूतक नास्ति तेषा शुद्धिर्न चापिहि ॥
ततो गुरुकुलाचारस्तेषु प्रामाण्यमिष्यति ॥ ॥

तिस कारणसें स्वस्ववर्णकुलानुसार करके दिनोके व्यतीत हुए, गुरु सर्वही, सोला पुरुषयुगसें उरे,

तिस कुलवर्गकों बुलवावे. क्योंकि, सूतक सोलां पुरुषयुगसें उरे ग्रहण करिये है ॥ यदुक्तं ॥

नृपोडशकपर्यन्त गणयेत् सूतक सुधी· ॥
विवाहं नानुजानीयाद्गोत्रे लक्षनृणां युगे ॥१॥

भावार्थ.—सोलां पुरुषपर्यंत (बुद्धीवंत) पुरुष सूतक गिणे, । परंतु एकगोत्रमें लक्ष पुरुषयुग व्यतीत हुए भी, विवाह नही करे, । तिसवास्ते अपने गोत्रजको बुलवायके तिन सर्वको सांगोपांग स्नान और वस्त्रक्षालन करनेको कहे. । स्नान करके शुचि वस्त्र पहिनके गुरुको साक्षी करके, वे सर्व गोत्रज विविध प्रकारकी पूजासे जिन प्रतिमाका पूजन करे । तदपीछे बालकके माता पिता पंचगव्यकरके अंतस्नान करे । पुत्रसहित नखछेदनकरके गांठ जोडी दंपती जिनप्रतिमाको नमस्कार करे, सधवा स्त्रीयांके मंगलगीत गाते वाजंत्रोंके वाजते हुए । और सर्व चैत्योंमें पूजा नैवेद्य ढौकन करे । साधुयोंको यथाशक्ति चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र देवे, । और संस्कार करनेवाले गुरुको वस्त्र तांबूल भूषण द्रव्यादिदान देवे तथा । जन्म,चंद्रसूर्यदर्शन, क्षीराशन, षष्ठी, इनसंबंधिनी दक्षिणा तिस दिनमें संस्कारगुरुकेताइ देणी । और सर्व गोत्रज स्वजन मित्र वर्गोंको यथाशक्ति भोजन तांबूल देनां । तथा गुरु तिस कुलके आचारानुसारकरके पंचगव्य, जिनस्ना

त्रोदक, सर्वौषधिजल और तीर्थजल, इनोंकरके स्नान कराये हुए बालकको वस्त्राभरणादि पहिनावे. ॥ तथा स्त्रीयोको सूतकदिनोंके पूर्ण हुएभी,आर्द्र नक्षत्रोंमे, और सिंह गजयोनि नक्षमोंमे सूतकस्नान नही करावणा । आर्द्र नक्षत्र दश है । कृत्तिका १, भरणी २, मूल ३, आर्द्रा ४, पुष्य ५, पुनर्वसु ६, मघा ७, चित्रा ८, विशाखा ९, श्रवण १०, ये दश आर्द्र नक्षत्र हैं, इनमे स्त्रीको सूतकस्नान न करावे यदि स्नान करे तो, फिर प्रसूति न होवे ॥ धनिष्ठा १, पूर्वाभाद्रपदा २, ये दो सिंहयोनि नक्षत्र जाणने, और भरणी १, रेवती २, ये दो नक्षत्र गजयोनि जाणने ॥ कदाचित् सूतक पूर्ण हुए दिनमे इन पूर्वोक्त नक्षत्रोंमेंसे कोइ नक्षत्र आवे, तब एक एक दिनके अतरे शुचिकर्म करणा ॥ पूजावस्तु, पंचगव्य, स्वगोत्रज जन, तीर्थोदक, शुचिकर्मसंस्कारमें चाहिये ॥

इति सप्तमशुचिकर्मसंस्कार विधि

अथ नामकरणसंस्कार विधि ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र और चर, इन नक्षत्रोंमें पुत्रका जातकर्म करना अथवा गुरु वा शुक्र, चतुर्थ स्थित होवे, तब नाम करना, सज्जन पुरुषोको सम्मत है ॥ शुचिकर्मदिनमे अथवा तिसके दूसरे वा तीसरे

शुभ दिनमे बालकको चंद्रमाके बल हुए, ज्योतिषिकसहित गुरु तिसके घरमे शुभस्थानमे शुभासनके ऊपर बैठा हुआ, पंचपरमेष्ठिमंत्रको स्मरण करता हुआ रहे. । तिस अवसरमे बालकके पिता, पितामहादि, पुष्प फलकरके हाथ परिपूर्ण करके ज्योतिषिकसहित गुरुको साष्टांग नमस्कार करके ऐसें कहे हे भगवन् ! पुत्रका नामकरण करो । तब गुरु तिन पिता, पितामहादिको, तिसके कुलके पुरुषोंको, और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको, आगे बैठाके, ज्योतिषिको जन्म लग्न कहनेकेवास्ते आदेश करे । तब ज्योतिषिक शुभपट्टेऊपर खटिका (खडी) करके तिस बालकके जन्मलग्नको लिखे, स्थान २ में ग्रहोंको स्थापन करे तब बालकके पितापितामहादि जन्मलग्नकी पूजा करे । तिसमे स्वर्णमुद्रा १२. रूप्यमुद्रा १२, ताम्रमुद्रा १२, क्रमुक (सुपारी) १२, अन्य फल जाति १२, नालिकेर १२, नागवल्लीदल (पान) १२. इनोंकरके द्वादश लग्नका पूजन करे । इनही नव नव वस्तुयोंकरी नव ग्रहोंका पूजन करे ऐसें लग्नके पूजे हुए, तिनोंके आगे ज्योतिषिक लग्न विचार कहे वेनी उपयोगसहित सुणे । तदपीछे व्यावर्णनसहित लग्नको ज्योतिषिक कुंकुमाक्षरोंकरके पत्रेमे लिखके, कुलज्येष्टको सौंप देवे । बालकके पितादिकोंने ज्योतिषिका अपनी संपदानुसार वस्त्र

स्वर्णदान करके सन्मान करणा और ज्योतिषिक जी तिनोके आगे जन्मनक्षत्रानुसारे, नामाक्षरको प्रकाश करके, स्वघरको जावे तदपीछे गुरु, सर्व कुलपुरुषोंको और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको आगे स्थापन करके (बिठलाके) तिनोंकी सम्मतिसें हाथमें दूर्वा लेके परमेष्टिमंत्रपठनपूर्वक (कुलवृद्धाके) कानमें जातिगुणोचित नाम सुणावे । तिसपीछे कुलवृद्धा नारीयां गुरुकेसाथ पुत्र गोदीमें लीया तिसकी माता शिविकादि नरवाहनमे बैठी हुई, वा पादचारिणी अविधवायोके गीत गाते हुए, जिनमंदिरमे जावे । तहां मातापुत्र दोनों जिनको नमस्कार करे, माता चौवीस २ सुवर्णमुद्रा, रूप्यमुद्रा, फलनालिकेरादि करके जिनप्रतिमाके आगे ढौकनिका करे । तदपीछे देवके आगे कुलवृद्धा स्त्रीया बालकका नाम प्रकाश करें चैत्य न होवे तो, घरदेरासरकी प्रतिमाके आगे यह विधि करना तदपीछे तिसही रीतिसे पौषध शालामें आवे, तहां प्रवेश करके जोजनमंडली स्थानमें मंगलीपट्ट स्थापन करके तिसकी पूजा करे मंगलीपूजाका विधि यह है पुत्रकी माता "श्रीगौतमाय नम" ऐसा उच्चार करती हुई, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य करके मंडलीपट्टकी पूजा करे मंगलीपट्टोपरि स्वर्णमुद्रा १०, रूप्यमुद्रा १०, क्रमुक १००, नालिकेर २९, वस्त्रहस्त २९, स्थापन

करे. । तदपीछे पुत्रसहित माता तीन प्रदक्षीणा करके यतिगुरुको नमस्कार करे । नव सोनेरूपेकी मुद्रा करके गुरुके नवांगकी पूजा करे । निरुछना और आरात्रिका (आरती) करके क्षमाश्रमणपूर्वक हाथ जोडके, "वासक्षेवंकरेह" ऐसा पुत्रकी माता कहे तब यतिगुरु वासक्षेपको, ॐकार ह्रीं कार श्रींकार सन्निवेशकरके कामधेनुमुद्राकरके, वर्द्धमान विद्याकरके जपके, मातापुत्र दोनोके शिरपर क्षेप करे तहां भी तिनके शिरमें ॐ ह्रीं श्रीं अक्षरोंका सन्निवेश करे । तदपीछे बालकको अक्षतसहित चंदनकरके तिलक करके, कुलवृद्धाके अनुवाद करके, नाम स्थापन करे । तदपीछे तिसही युक्ति करके सर्व अपने घरको आवे । यतिगुरुयोंको शुद्ध आहार वस्त्र पात्रका दान देवे । गृहस्थगुरुको वस्त्र अलंकार स्वर्णदान देवे ॥ नांदी, मंगलगीत, ज्योतिषिकसहित गुरु, प्रभूत फल, और मुद्रा, विविधप्रकारके वस्त्र, वास, चंदन, दूर्वा, नालिकेर, धन, इतनी वस्तु नामसंस्कार कार्यमें चाहिये ॥

इति अष्टम नामकरणसंस्कार विधि

॥ अथ नवमं अन्नप्राशनविधि ॥

रेवती, श्रवण, हस्त, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी, चित्रा, रोहिणी, उत्तरात्रय, धनिष्ठा, पुष्य, इन निर्दोष नक्षत्रामे और रवि, चंद्र, बुध, शुक्र, गुरु

वारोमे पुरुषोंको नवीन अन्नप्राशन (खाना) श्रेष्ट है. और बालकोंको अन्नभोजनरिक्तादि कुतिथीयां और कुयोगोंको वर्जके श्रेष्ट है । पुत्रको छठे मासमें, और कन्याको पाचमे मासमें अन्नप्राशन, सत्पुरुषो ने कहा है । जे नक्षत्र कहे तिनमे और पूर्वोक्त वारमे सग्रहोंके विद्यमान हुए अमावासी और रिक्ता, तिथीको वर्जके शुभ तिथीमें करणा. क्यो कि, लग्नमे रवि होवे तो, कुष्टी होवे, मंगल होवे तो, पित्तरोगी होवे, शनि होवे तो, वातव्याधि होवे, क्षीणचंद्र होवे तो, भीख मागनेमे रत होवे, बुध होवे तो, ज्ञानी होवे, शुक्र होवे तो, भोगी होवे, बृहस्पति होवे तो, चिरायु होवे, और पूर्ण चंद्रमा होवे तो, पूजा करनेवाला और दान देनेवा ला होवे कटक ४ । ७ । १० । अस्त १२ । निधन ८ । त्रिकोण ५ । ९ । इन घरोंमें पूर्वोक्त ग्रह होवे तो, शरीरमे शुभफल देते है । छठे और आठमे घरमे चद्रमा अशुभ होता है, । केंद्र १ । ४ । ७ । १० । त्रिकोण ५ । ९ । इन घरोंमे सूर्य होवे तो, अन्ननाश होवे ॥ तिसवास्ते छठे मासमे बालकको, और पाचमे मासमे कन्याको पूर्वोक्त तिथी वार नक्षत्र योगोमें बालकको चद्रबलके हुए अन्नप्राश नका आरभ करे । तद्यथा । पूर्वोक्त वेषधारी गुरु, तिसके घरमे जाके सर्वदेशोत्पन्न अन्नोको एकत्र

करे; देशोत्पन्न और अन्य नगरोंमेंसें जे प्राप्त होवे, तिन सर्व फलोंको, और षट्विकृयोंको ग्रहण करे । तदपीछे सर्व अन्नोंको, सर्व शाकोंको, सर्व विकृतीयोंको, घृत, तैल, इक्षुरस, गोरस, जल, इत्यादिकों से पकाये हुए बहुतप्रकारके पदार्थोंको पृथक् न्यारे २ करे । तदपीछे अर्हत्प्रतिमाका बृहत्स्नात्रविधि सें (प्रतिष्ठा विधिमें लिखेंगे) पचामृतस्नात्र करके पृथक् पात्रोंमें तिन अन्न शाक विकृति पाकादिकोंको जिनप्रतिमाके आगे अर्हत्कल्पोक्त विंशोपचारी नैवेद्यमंत्रकरके ढोवे सर्वजातके फलभी ढोवे । तदपीछे बालकको अर्हत्स्नात्रोदक पिलावे । फिर जिनप्रतिमाके नैवेद्यसें उद्धरित बची (हुइ) तिन सर्ववस्तुयोंको सूरिमंत्रके मध्यगत अमृताश्रवमंत्रकरके श्रीगौतमप्रतिमाके आगे ढोवे, । तिससे उद्धरित वस्तुयोंको कुलदेवताके मंत्रकरके गोत्रदेवीकी प्रतिमाके आगे चढावे, । तदपीछे कुल देवीके नैवेद्यमेंसें योग्य आहार मंगलगीत गाते हुए माता पुत्रके मुकमें देवे । और गुरु यह वेद मंत्र पढे ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं भगवानर्हन् त्रिलोकनाथस्त्रिलोक पूजित. सुधाधारधारितशरीरोपि कावलिकाहारमा हारितवान् । तपस्यन्नपि पारणाविधाविक्षुरसपरमान्न भोजनात् परमानंदादापकेवलं तद्देहिन्नौदारिकशरी

रमातस्त्वमप्याहारय आहारं तत्ते दीर्घमायुरारो ग्यमस्तु अर्हं ॐ ॥ ”

यह मंत्र तीनवार पढे. । तदपीछे साधुयोंको षट् विकृतियांकरके षट्रससंयुक्त आहार देवे, यतिगुरुके मंडलीपट्टोपरि परमान्नपूरित सुवर्णपात्र चढावे, गृहस्थगुरुको द्रोण द्रोण प्रमाण सर्वजातका अन्न दान करे, । तुला २ प्रमाण सर्व घृत, तैल, गुड लवणादि दान करे, । सर्वजातके एक सौ आठ १ फल देवे, । तांबेकाचरु, कांसेका थाल, और वस्त्रयुगल देवे । सर्वजातिके अन्न, सर्वजातिके फल, सर्व विकृतियां, स्वर्ण, रूप्य, ताम्र, काश्य, इनोंके पात्र (भाजन) इतनी वस्तुयां इस संस्कारमें चाहिये ॥

इति नवमान्नप्राशनसंस्कार विधि

अथ दशमं कर्णवेधसंस्कारविधि ॥

उत्तरात्रय, हस्त, रोहिणी, रेवती, श्रवण, पुनर्वसू मृगशीर्ष, पुष्य, इन नक्षत्रोंमें । रेवती श्रवण, हस्त, अश्विनी, चित्रा, पुष्य, धनिष्ठा, पुनर्वसू, अनुराधा, चंद्रसहित इन नक्षत्रोंमें कर्णवेध करना, । लाभ ११, तृतीय ३, घरमें शुभ ग्रहोंकरके संयुक्त होवे, शुभ राशि लग्नमें क्रूर ग्रहोंकरकेरहित बृहस्पतिके लग्नाधिप, वा लग्नमे हुए कर्णवेध करणा जिसमे चंद्र नक्षत्र, पुष्य, चित्रा, श्रवण, रेवती, जानने । मग

शुक्र, सूर्य, बृहस्पति, इन वारमें शुभ तिथीमें शुभ योगमे कर्णवेध करणा ॥ इन निर्दोष तिथि वार नक्षत्रमे बालकको चंद्रबलके हुए कर्णवेध आरंभ करे । उक्त च । "गर्भाधान, पुसवन, जन्म, सूर्यदर्शन, क्षीराशन, षष्ठी, शुचि, नामकरण, अन्नप्राशन, मृत्यु, इन सस्कारोंमें अवश्य कार्य होनेसें पंडित पुरुषोंने वर्षमासादिकी शुद्धि न देखणी । कर्णवेधादिक अन्य संस्कारोंमे विवाहकीतरें वर्ष मास दिन नक्षत्रादिकोकी शुद्धि अवश्यमेव विलोकन करणी। यथा । तीसरे पांचमे सातमे निर्दोष वर्षमें बालकको और बालककी माताको अमृतामंत्र अभिमंत्रित जलकरके मंगलगानपूर्वक अविधवायोके हांथेकरी स्नान करावे । और तथा कुलाचारसंपदा अतिशय विशेषकरके तैलनिषेकसहित तीन पांच सात नव इग्यारह दिनांतक स्नानका विधि जाणना, । तिसके घरमें पौष्टिकको करणा, षष्ठीको वर्जके मात्रष्टकपूजन पूर्ववत् करणा, । तदपीछे स्व २ कुलानुसार अन्य ग्राममें कुलदेवताके स्थानमे पर्वतउपर नदीतीरे वा घरमे कर्णवेधका आरंभ करे । तहां मोदक नैवेद्य करण गीतगान मंगलाचारादि स्व २ कुलागत रीति करके करणा. तदपीछे बालकको पूर्वाभिमुख आसनऊपर बिठलाके तिसके कर्णवेध करे तहां गुरु यह वेदमंत्र पढे । यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं श्रुतेनाङ्गोपाङ्गे कालिकेरुत्कालिके पूर्वगतैश्चूलिकाभि. परिकर्मभि सूत्रै पूर्वानुयोगै छन्दोभिर्लक्षणैर्निरुक्तैर्धर्मशास्त्रैर्विरूकर्णो भूयात्अर्हं ॐ ॥"

शुद्रादिकोको ॥ '॥ ॐ अर्हं तव श्रुतिरूप हृदयं थम?विरूनस्तु ॥' ऐसें कहना ॥

तदपीछे बालकको यानमें बैठाके, वा नर नारी उत्संगमें लेके धर्मागारमें लेइ जावे, तहा पूर्वोक्त विधिसें मंडलीपूजा करके बालकको गुरुके चरणां आगे लोटावे तब यतिगुरु विधिसें वासक्षेप करे । तदपीछे बालकको घरमें ल्याके गृहस्थगुरु कर्णाभरण पहिनावे । यतिगुरुयोंको शुद्ध चार प्रकारका आहार वस्त्र पात्र देवे । गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्णदान देवे ।

इति दशमकर्णवेधसंस्कारवर्णनं

अथ क्षौर करणसंस्कारविधि

हस्त, चित्रा, स्वाति, मृगशीर्ष, ज्येष्ठा, रेवती, पुनर्वसू, श्रवण, धनिष्ठा, इन नक्षत्रोंमें ।१।२।३।५।७। १३।१०।११। इन तिथियोंमें । शुक्र, सोम, बुध, इन वारोंमें चद्र वा तारेके बल हुए, क्षौरकर्म करणा । क्षौरनक्षत्रोंमें स्वकुलविधिकरके चूडाकरण करना मुनींद्र कहते हैं, पर गुरु, शुक्र और बुध यह तीन

ग्रह केंद्रमे १।४।७ । १० होने चाहिये । यदि केंद्रमे सूर्य होवे तो ज्वर होवे मंगल होवे तो शस्त्रसे नाश होवे । षष्टी (६), अष्टमी (८), चतुर्थी (४), सिनीवाली (चतुर्दशीयुक्तअमावास्या) चतुर्दशी (१४), नवमी (९), इन तिथीयोंमें और रवि, शनि, मगल, इन वारोमे क्षौरकर्म न करावणा । धन २, व्यय १२, त्रिकोण ५ । ९, इन गृहोमें असद्ग्रह होवे तो, मृत्यु हुए भी क्षुरक्रिया सुंदर नही होवे, और इनही घरोमे शुभ ग्रह होवे तो क्षुरक्रिया पुष्टिकी करणहार जाणनी । तिसवास्ते बालकको सूर्यबलयुक्त मासके हुए, चंद्रताराबलयुक्त दिनमें, पूर्वोक्त तिथिवार नक्षत्रमे कुलाचारानुसार कुलदेवताकी प्रतिमाके पास अन्य ग्राममे, वनमें, पर्वतके ऊपर, वा घरमें शास्त्रोक्त रीतिसे प्रथम पौष्टिक करे । तदपीछे षष्टीपूजावर्जित मात्र अष्टपूजा पूर्ववत् । तदपीछे कुलाचारानुसार नैवेद्य देवपक्वान्नादि करणा. । तदपीछे सुस्नात गृहस्थगुरु बालकको आसनऊपर बैठाके बृहत्स्नात्रविधिकृत जिनस्नात्रोदकसें शांतिदेवीके मंत्रकरके सिचन करे. तदपीछे कुलक्रमागत नापित (नाइ) के हाथसें मुंडन करावे । तीन वर्णके शिरके मध्यभागमें शिखा स्थापन करे और शुद्रको सर्वमुंडन । चूडाकरण करते हुए यह वेदमंत्र पढे ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं ध्रुवमायु, ध्रुवमारोग्य, ध्रुवा. श्रीयो, ध्रुवं कुलं, ध्रवं यशो, ध्रुवं तेजो ध्रुवं कर्म्म, ध्रुवा च गुण संतति रस्तु अर्हं ॐ ॥"

यह सातवार पढता हुआ बालकको तीर्थोदकक रके सींचे । गीत वाजंत्र सर्वत्र जाणने।तदपीछे पच परमेष्टिपाठपूर्वक बालकको आसनसें उठायकर स्ना न करावे । चदनादिकरके लेपन करे । श्वेतवस्त्र पहिनावे । भूषणोकरके भूषित करे । तदनंतर धर्मागारमे लेजावे तदपीछे पूर्वरीतिसे मडलीपूजा गुरुवंदना वासक्षेपादि । तदपीछे साधुयोको शुद्ध वस्त्र, अन्न, पात्र और पकरस विकृति दान देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्ण दान देवे । नापितको वस्त्र कंकण दान देवे. ॥

॥ इति दशमचूडाकरणसस्कारवर्णनं ॥

अथ उपनयनसंस्कारविधि लिख्यते

तिहा उपनयन नाम मनुष्योको वर्णक्रममे प्रवेश करणेवास्ते संस्कारही वेषमुद्राके उद्वहनसें स्व २ गुरुयोके उपदेशे धर्ममार्गमें प्रवेश करना यदुक्तं ।

धम्मायारे चरिए वेसो सवह कारण पढमं ॥
संजमलज्जाहेऊ साहूण तहय साहूणं ॥ १ ॥

अर्थ –धर्माचारके आचरण करते हुए वेष जो

है, सो सर्वत्र प्रथम कारण है श्रावक तथा साधुयोंको संजमलज्जाका हेतु है ॥

तथा च श्रीधर्मदासगणिपादैरुपदेशमालायामप्युक्तम् ॥ यथा

धम्मं रक्खइ वेसो संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं
उम्मग्गेण पडंतं रक्खइ राया जणवओव्व ॥ १ ॥

अर्थ –वेष धर्मकी रक्षा करता है क्योंकि, वेष होनेसें अकार्य करता हुआ मनमें शंका करता है कि, मैं दीक्षितवेषवाला हूं.मुझको देखके लोक निंदा करेंगे, इसवास्ते उन्मार्गमें पडते हुएकी भी वेष रक्षा करता है, जैसें राजा देशकी रक्षा करता है॥ तथा इक्ष्वाकुवंशी, नारदवंशी, वैश्य, प्राच्य, उदीच्य, इन वंशोंके जैन ब्राह्मणको उपनयन और जिनोपवीत धारण करणा । तथा क्षत्रीयवंशमें उत्पन्न हुए जिन, चक्रि, बलदेव, वासुदेवोंको, श्रेयांसकुमार दशार्णभद्रादि राजायोंको, हरिवंश, इक्ष्वाकुवंश, विद्याधरवंश, इन वंशोंमें उत्पन्न हुएको भी, उपनयन जिनोपवीतधारणविधि है । जिसवास्ते कहा है. । आगममें,

"देवाणुप्पिआ, न एअं भूअं, न एअं भव्वं, न एअं भविस्सं, जन्न, अरहंता वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा, अंतकुलेसु वा, तुच्छकुलेसु वा, दरिद्दकुलेसु वा, भिरकागकुलेसु वा, माहणकुलेसु वा, आयाइंसु

वा आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, एवं खलु, अरहंता वा, चक्कवलवासुदेवा वा उग्रकुलेसु वा, भोगकुलेसु वा, राइन्नकुलेसु वा, खत्तियकुलेसु वा, इरकागकुलेसु वा, हरिवंशकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तहप्पगारेसु विसुद्ध जाइकुलवंसेसु आयाइसु वा, आयाइंति वा, आयाइस्सति वा, अथि पुण एसेवि भावे, लोगछेय भूए, अणताहि उसप्पिणि उसप्पिणीहिं वइक्कंताहि समुपज्जइ, नागगुत्तस्स, वा, कम्मस्स, अरकीणस्स, अवेइयस्स, अणिधिणस्स, उदएण, जन्नं, अरहता वा, चक्कवलवासुदेवा वा, अतकुलेसु वा, पतकिविण तुछदरिद्द भिरकागमाहणकुलेसु वा, आयाइसु वा, आयाइति वा, आयाइस्सति वा, नो चेवण, जोणी जम्मणनिरकमिसु वा, निरकमंति वा, निरकमिस्सति वा, त जीअमेअ, तीअपच्चुप्पन्नमणागयाण सक्काण, देविंदाण, देवराईण, अरहते भगवंते, तहप्पगारे हितो, अतकुलेहितो, पंतकुलेहितो, तुछदरिद्दकिविण भिरकागमाहणकुलहितो, तहप्पगारेसु उग्रभोगराय न्नखत्तियइरकागहरिवंसकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तह प्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवसेसु साहरावित्तए. ॥"* तिसवास्ते कार्तिकशेठ कामदेवादिवैश्योको भी उप

* इस पाठका भावार्थ यह है कि पुर्वोक्त अतादिकुलमें अरिहतादि नही उत्पन्न होते है, किंतु उग्रादि उपनयनादिसयुक्त कुलमें उत्पन्न होते हैं, शुद्ध होनेसें. ॥

नयन जिनोपवीत धारण करणा । आनंदादि शुद्रो को भी उत्तरीय धारण करणा । शेष वणिगादिकों को उत्तरासंगकी अनुज्ञा है जिनोपवीत जो है सो भगवान् जिनकी गृहस्थपणेकी मुद्रा है । सर्व वाह्य अभ्यंतर कर्मविमुक्त निर्ग्रंथ यतियोंको तो, नव ब्रह्मगुप्तिगुप्ताज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रयी, हृदयमेंही है क्योंकि, ॥ मुनिजन सर्वदा तद्भावनाभावितही होते हैं. इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तियुक्तरत्नत्रयी सूत्ररूप वाह्य मुद्राको नही धारण करते है, तन्मय होनेसें. नही समुद्र, जलपात्रको हस्तमें करता है । नही सूर्य दीपकको धारण करता है यदुक्तं ॥

अग्नौ देवोस्ति विप्राणां हृदि देवोस्ति योगिनाम् ॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धीनां सर्वत्र विदितात्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थ –अग्निहोत्रि ब्राह्मणोंका तो अग्निही देव है, अर्थात् अग्निविषेही देवबुद्धि है, और योगिजनोंके हृदयमेंही देव है, क्योंकि, योगाभ्यासी मुनिजन तो, अपने पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत, ध्यानके वलसें अपने हृदयमेंही देवका स्वरूप ध्याय सकते हैं, और जो अल्पबुद्धि अर्थात् गृहस्थधर्मी श्रावकादि हैं, तिनोंको भगवान्की प्रतिमाही देव है; और तिसकेही पूजन, ध्यान, प्रभावना, उत्सव, रथयात्रा, करनेसें कल्याण है और जिनोंने आत्म स्वरूप जाना है, ऐसें यति, ऋषि, मुनियोंको तो

सर्वजगें देव मालुम होता है, अर्थात् ध्याता, ध्येय, ध्यान, ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान रूपकरके सर्व देवस्वरूपही है ॥ इसवास्ते शिखासूत्रविवर्जित ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रय करण कारण अनुमतिमें सदैव आदरवाले यतिजन हैं । और गृहस्थी, ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयलेशश्रवणस्मरण मात्रसें ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयकोसूत्रमुद्राकरके हृदयमें धारण करते हैं । 'प्रतिमा स्वल्पबुद्धीनां इसवचनसें' ॥

तदात्मकत्वके न हुए मुद्राका धारण है । जैसें छद्मस्थको बाह्य अभ्यंतर तप का करणा है । तथा नवततुगर्भितसूत्रमय एक अग्र ऐसें तीन अग्र ब्राह्मणको, दो अग्र क्षत्रियको, एक अग्र वैश्यको, शूद्रको उत्तरीयक, और अपरको उत्तरासंगकी अनुज्ञा है । ऐसा विशेष क्यों है ? सोही कहते हैं. ब्राह्मणोंने नवब्रह्मगुप्तियुक्त ज्ञान दर्शनचारित्ररूप रत्नत्रय आप पालन करणे, अन्योंसें करावणे, अन्य करताको अनुमति देणी ॥ ब्रह्मगुप्तियुताइति । ब्राह्मण आप रत्नत्रयीको ध्ययन सम्यक्दर्शन चारित्र क्रियायोकरके आचरते है, अन्योसें अध्यापन सम्यक्त्वोपदेश आचार प्ररूपणा करके रत्नत्रयीका आचरण करवाते हैं, और ज्ञानोपाशन सम्यगदर्शन धर्मोपाशनादिकों करकें श्रद्धा करने वाले और अनुज्ञा मागनेवासे अन्योको अनुज्ञा देते हैं, इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तिगर्भि रत्नत्रय करण कारण

अनुमतिवाले ब्राह्मणोको जिनोपवीतमे तीन अग्र । और क्षत्रियोंको आप रत्नत्रयका आचरण करणा और निजशक्तिसें न्याप्रवृत्तिकरके अन्योसें आचरण करावणा योग्य है परंतु तिन क्षत्रियोंको अन्य जनोको अनुज्ञा देनी योग्य नही है क्योकि वे ठकुराइवाले प्रभुहोंनेसें अन्योविषे नियमादिकी अनुज्ञा नही देते हैं इसवास्ते क्षत्रियोको जिनोपवीतमे दो अग्र । वैश्योंने ज्ञानभक्तिकरके सम्यक्त्व धृतिकरके उपासकाचारशक्तिकरके स्वयमेव रत्नत्रय आचरणा । तिन वैश्योको असामर्थ्य होंनेसे अनुपदेशक होनेसे रत्नत्रयका करावणा और अनुमतिका देणा योग्य नही है, इसवास्ते वैश्योंको जिनोपवीतमें एक अग्र । शूद्रोको तो ज्ञानदर्शनचारित्र रूप रत्नत्रयके करणेमें आपही अशक्त है तो करावणा और अनुमतिका देणा तो दूरही रहा तिनोंको अधमजाति होनेसें, नि सत्व होनेसें, अज्ञान होनसे, तिनोको जिनाज्ञानरूप उत्तरीयका धारण है । तिनसें अपर वणिगादिकोको देवगुरुधर्मकी उपासनाके अवसरमें मात्र जिनाज्ञानरूप उत्तरासंग मुद्राहै ॥ जिनोपवीतका स्वरूप यह है ॥ स्तनांतर मात्रको चौराशी गुणा करिये तव एकसूत्र होवे तिसको त्रिगुणा करणा, तिसको भी त्रिगुणा करके वर्त्तन करणां, (वटना) ऐसें एक तंतु हुआ

इसी रीतिसें दो तंतु और योजन करिये, तवतीनो तंतु मिलाके एक अग्र होवे है । तहा ब्राह्मणको तीन अग्र, क्षत्रियोको दो और वैश्योंको एक । परम तमें तो ऐसा कथन है ॥

॥ कृते स्वर्णमय सूत्रं त्रेतायां रौप्यमेव च ॥
द्वापरे ताम्रसूत्र च कलौ कर्पासमिष्यति ॥ १ ॥

कृतयुगमें स्वर्णमयसूत्र, त्रेतायुगमें रूपेका, द्वाप रयुगमें तावेका और कलियुगमे कर्पासका यज्ञोपवीत करना ॥ ' परतु जिनमतमे तो, सर्वदा ब्राह्मणोंको सोवर्णसूत्र, और क्षत्रियवैश्योंको सर्वदा कार्पाससूत्र हीहै ॥ इतिजिनोपवीतयुक्ति ॥

अथ उपयनविधि कहते है.—उपनीयते वर्णक मारोहयुक्तिकरके प्राणीको पुष्टिको प्राप्त करिये, इत्युपनयन । श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, मृगशिर, अ श्विनी, रेवती, स्वाति, चित्रा, पुनर्वसू । तथा च । मृगशिर, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, स्वाति, चित्रा, पुष्य, अश्विनी, इन नक्षत्रोंमें मेखलावध, और मोक्ष करणा, आचार्यवर्य्य कहते है । गर्भाधानसें वा जन्मसें आठमे वर्षमे ब्राह्मणोको मौंजीवध उप नयनका प्रारभ कथन करते है, क्षत्रियोको इग्या रह (११) वर्षमें, और वैश्योंको वारमे वर्षमें । वर्णा धिपके वलवान हुए उपनीतिक्रिया हितकारिणी होती है, अथवा सर्व वर्णोंको गुरु चद्र सूर्य वल

वान् हुए, हित है । वृहस्पतिवार होवे, वृहस्पति बलमान् होवे, वा केंद्रगत होवे, तो, द्विजोंको उपनयन श्रेष्ठ है और वृहस्पति तथा शुक्र नीच घरमें होवे, शत्रुके घरमें होवे, वा पराजित होवे तो श्रवणविधीमें स्मृतिकर्म हीन होवे । लग्नमे वृहस्पति होवे, त्रिकोणमें शुक्र होवे, और शुक्रांशमे चंद्रमा होवे तो जैनवेदवित् होवे, शुक्रसहित सूर्य लग्नमे शनिके अंशमे स्थित होवे, तदा सीखा हुइ विद्या भूल जावे ऐसा कृतघ्न होवे । केंद्रमे वृहस्पति होवे तो, स्वअनुष्ठानमें रक्त होवे, प्रवरमतियुत होवे शुक्र होवे तो, विद्या सौख्य अर्थ युक्त होवे, बुध होवे तो, अध्यापक होवे, सूर्य होवे तो, राजाका सेवक होवे, मंगल होवे, तो, शूरवीर होवे चंद्रमा होवे तो, व्यापारी होवे शनि होवे तो, नीच जातीका सेवक होवे । शनिके अंशमें मूर्खता उदय होवें, सूर्यकेभागमे क्रूरपणा होवे, मंगलके अंशमे पाप बुद्धिहोवे,चंद्रांशमे अति जडपणा होवे,बुधांशमे अति पटुपणा होवे, गुरु शुक्रके भागमे सुज्ञपणा होवे, सुर्य सहित वृहस्पति होवे तो निर्गुण होवे, अर्थ हीन होवे, मंगल सहित सूर्य होवे, तो क्रूर होवे, बुध सहित होवे तो पटु होवे, शनि सहित होवे तो आलसु और निर्गुण होवे, चंद्र सहित शुक्र होवे तो अर्थहीन जाणना, पूर्वोक्त निर्दोष नक्षत्रो

मे मगलविना अन्य वारोमे दिनशुध्धीमे, शुभग्रह युक्त लग्नमे, विवाह वत् त्याज नक्षत्रदिन मासा दिकको वर्जके, ग्रह निर्मुक्त पाचमें व्रत आचरे

" प्रथम यथा संपत्ति करके उपनेय (जिनोपवीत लेनेवाले) पुरुषकों सात, नव, पाच, वा तीन दिनतक सतैल निपेक स्नान (पीठी मर्दन) करावे तदपीछे लग्नदिनमे गृहस्थ गुरु तिसके घरमे ब्राह्य मूहुर्तमें पौ ष्टिक करे तद नतर उपनेयके शिरपर शिखा वर्जके मु डन करावे,पीछे वेदी स्थापन करे तिसके मध्यमे चोकी (वाजोट) स्थापन करे, वेदी प्रतिष्टा विवाहा धिकारसें जाणनां वाजोटके उपर समव सरणकी रीति मुज ब चोमुख (चारजिन विव) स्थापन करना, तिन की पूजा करके गृहस्थ गुरु, जिसने श्वेतवस्त्र पहि नाहे, वस्त्रका उत्तरासग करा हे, अक्षत श्रीफल सुपारी हाथमे लिएहे, एसे उपनेयको समवसरण को तीन प्रदक्षणा करावे, तदपीछे गुरु उपनेयको वामे पासे स्थापके पश्चिमदिशाके सन्मुख जिसका मुखहे तिस जिन विवके सन्मुख वेठके प्रथम ऋष भ देवके स्तोत्र सहित शक्रस्तव (नमुथ्थुण) पढे फेर तीन प्रदक्षिणा करके उत्तराभिमुख जिनविंवके सन्मुख तेसेहि शक्रस्तव पढे एसेहि त्रिप्रदक्षिणा तरित पूर्वाभिमुख, दक्षिणा भिमुख जिन विवोके आगेभी शक्रस्तव पढे मगल गीत वाजित्रादिकों

का तिसवखत विस्तार रखणा उन वखत आचार्य उपाध्याय साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप श्री सकल संघकों एकत्र करना। पीछे प्रदक्षिणा शक्र स्तव पाठके अनतर गृहस्थ गुरु उपनयनके प्रारंभ वास्ते जैन वेद मंत्रका उच्चार करे उपनेय (जिनोप वीतलेनेवाला) अपने हाथमे दुर्वा फलादीकसे पूर्ण हस्त अजलिकरके खमाखमासुने

उपनयारंभ जैनवेद मंत्रोयथा

ॐ अर्हं अर्हद्भ्योनम, सिद्धेभ्योनम., आचार्ये भ्योनम, उपाध्यायेभ्योनम, साधुभ्योनम, ज्ञाना यनम, दर्शनायनम, चारित्रायनम, संयमायनम, सत्यायनम., शौचायनम, ब्रह्मचर्यायनम., आकिंच न्यायनम, तपसेनम, शमायनम., मार्दवायनमः, आर्जवायनम, मुक्तयेनम, धर्मायनम, संघायनम, सैध्धातिकेभ्योनम., धर्मोपदेशकेभ्योनम, वादिल ब्धिभ्योनम, पर्कांग निमित्तेभ्योनम', तपस्वीभ्यो नम, विद्याधरेभ्योनम, इहलोकसिद्धेभ्योनम, कवि भ्योनमः, लब्धिभ्योनम., ब्रह्मचारीभ्योनम', निष्प रिग्रहेभ्यो नम । दयालुभ्यो नम, । सत्यवादिभ्यो नम । नि स्पृहेभ्यो नम । एतेभ्यो । नमस्कृत्याय प्राणी प्राप्तमनुष्यजन्मा प्रविशति वर्णक्रमं अर्हं ॐ ॥,,

ऐसे वेदमंत्रका उच्चार करके फिर भी पूर्ववत् तीन तीन प्रदक्षिणा करके चारो दिशामें युगादिदेव

स्तवसंयुक्त शक्रस्तव पाठ करे। तिस दिनमें, जल जवान्न भोजन करके आचाम्लका प्रत्याख्यान उपनेयको करावे। तदपीछे उपनेयको वामे पाने स्थापके सर्वतीर्थोंदकोंकरके अमृताजलमंत्रकरके कुशाग्रोंसे सिंचन करे।

तदनंतर परमेष्ठिमंत्र पढके

"नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व्वसाधुभ्य"

ऐसा कहके, जिन प्रतिमाके आगे उपनेयको पूर्वाभिमुख बैठावे, तदपीछे गृहीगुरु, चंदनमंत्रकरके अभिमंत्रण करे॥ चंदनमंत्रो यथा॥

"॥ ॐ नमो भगवते. चंद्रप्रभजिनेंद्राय, शशांकहारगोक्षीरधवलाय, अनंतगुणाय, निर्म्मलगुणाय, भव्यजनप्रबोधनाय, अष्टकर्म्ममूलप्रकृतिसंशोधनाय, केवलालोकावलोकितसकललोकाय, जन्मजरामरणविनाशनाय सुमंगलाय, कृतमंगलाय, प्रसीद भगवन् इह चंदनेनामृताश्रवण कुरु २ स्वाहा॥"

इस मंत्रकरके चंदनको मंत्रके हृदयमें जिनोपवीतरूप, कटिमें मेखलारूप और ललाटमें तिलकरूप, रेखाकरे, तदपीछे उपनेय "नमोस्तु २ ऐसें कहता हुआ, गुरुके चरणोंमें पडके खडा होके हाथ जोडके ऐसें कहे।

"॥ भगवन् वर्णरहितोऽस्मि। आचाररहितोऽस्मि। मंत्ररहितोऽस्मि। गुणरहितोऽस्मि। धर्म्मरहितोऽस्मि।

शौचरहितोऽस्मि । ब्रह्मरहितोऽस्मि । देवर्षिपितृतिथिकर्म्मसु नियोजय मां ॥"

ऐसें कहकर फिर "नमोस्तु २" ऐसें कहता हुआ, गुरुके चरणोंमे पडे, गुरु जी इस मंत्रको पढके उपनेयको चोटीसें पकडके खडा करे। मंत्रो यथा ॥

'ॐ अर्हं देहिन् निमग्नोऽसि भवार्णवे तत्कर्षति त्वांभगवतोऽर्हत प्रवचनैकदेशरज्जुना गुरुस्तदुत्तिष्ट प्रवचनादानाय श्रद्धाधाहि अर्हं ॐ ॥"

ऐसे पढके उपनेयको खडा करके अर्हत्प्रतिमाके आगे पूर्वाभिमुख खडा करे तदपीठे गृहीगुरु, त्रितंतुवर्त्तित—तीन ततुकी बुणी, एकाशीति (८१) हाथ प्रमाण, मुंजकी मेखलाको अपने दोनो हाथोमें लेके, इस वेदमंत्रको पढे

"॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् ज्ञानावरणेन बद्धोऽसि। दर्शनावरणेन बद्धोऽसि। वेदनीयेन बद्धोऽसि। मोहनीयेन बद्धोऽसि। आयुषा बद्धोऽसि। नाम्ना बद्धोऽसि। गोत्रेण बद्धोऽसि। अंतरायेण बद्धोऽसि कर्माष्टकेन प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैश्च बद्धोऽसि। तन्मोचयति त्वां भगवतोर्हत प्रवचनचेतना तद्बुद्ध्यस्व मामुह'मुच्यतां तव कर्म्मबंधनमनेन मेखलाबंधेन अर्हं ॐ ॥"

ऐसा पढके उपनेयकी कटिमें नवगुणी मेखला को बांधे। तदपीठे उपनेय 'नमोस्तु ३' कहता

हुआ, गृहीगुरुके पगोंमे पडे । मेखलाको एकाशी (८१) हाथपणा विप्रको एकाशीतंतुगर्भ जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, क्षत्रियको चौपन (५४) हाथ तावत्प्रमाणततुगर्भ जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, और वैश्यको सत्ताऽस (२७) हाथ तद्गर्भसूत्रसूचनके वास्ते है । ब्राह्मणको नवगुणी क्षत्रियको छगुणी और वैश्यको त्रिगुणी, मेखला बांधनी । तथा मौंजी, कौपीन, जिनोपवीत, इनोंका पूजन, गीतादिमंगल, निशाजागरण, तिसके पूर्वदिनकी रात्रिमें करणा । मेखलाबधनके पीछे फेर गृहस्थगुरु, उपनेयके बिलस्त (वेत) प्रमाण पृथुल (चौडा) और तीन बिलस्त प्रमाण दीर्घ (लबा) कौपिन दोनो हाथोमें लेके ॥

" ॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् मतिज्ञानावरणेन श्रुतज्ञानावरणेन अवधिज्ञानावरणेन मन.पर्यायावरणेन केवलज्ञानावरणेन इंद्रियावरणेन चित्तावरणेन आवृतोऽसि तन्मुच्यतां तवावरणमनेनावरणेन अर्हं ॐ ॥ "

इस वेदमंत्रको पढता हुआ, उपनेयके अत कटकों कौपीन पहरावे । तदपीछे उपनेय 'नमोस्तु २' कहता हुआ, फिर भी गुरुके पगोंमे पडे । फिर तीन २ प्रदक्षिणा करके चारो दिशामे शक्रस्तव पाठ करे ॥

तदनंतर लग्नवेलाके हुए गुरु, पूर्वोक्त जिनोपवी तको अपने हाथमे लेवे पीछे उपनेय फेर खडा होकर हाथ जोडके ऐसें कहे ॥

"॥ भगवन् वर्णोचितोऽस्मि । ज्ञानोचितोस्मि । क्रियोचितो । तज्जिनोपवीतदानेन मा वर्णज्ञानक्रियासु समारोपय ॥ '

ऐसें कहके 'नमोस्तु २, कहता हुआ गुरुके पगों में पडे गुरु फिर पूर्वोक्त उत्थापनमंत्रकरके तिसको उठाके खडा करे । तदपीछे गुरु दक्षिण हाथमें जिनोपवीत रखके ॥

"॥ ॐ अर्हं नवब्रह्मगुप्ती स्वकरणकारणानुमती र्धारये. तदक्षयमस्तु ते व्रतं स्वपरतरणतारणसमर्थो भव अर्हं ॐ ॥ ' क्षत्रियको

' ॥ करणकारणाभ्या धारये स्वस्य तरणसमर्थो भव ॥ " वैश्यको

" ॥ करणेन धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो भव ॥ ' शेष पूर्ववत् ॥

इस वेदमंत्रकरके पच परमेष्टिमंत्र पढता हुआ उपनेयके कठमे जिनोपवीत स्थापन करे । पीछे उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके 'नमोस्तु २' कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे गुरु जी "निस्तारगपारगो भव" ऐसा आशीर्वाद कहे । तदपीछे गुरु पूर्वाभिमुख होके, जिनप्रतिमाके आगे शिष्यको

वामेपासे बैठाके, सर्व जगत्में सार, महा आगम रूप क्षीरोदधिका माखण, सर्ववांछितदायक, कल्प द्रुम कामधेनु चितामणिके तिरस्कारका हेतु, निमे षमात्र स्मरण करनेसें मोक्षका दाता, ऐसें पचपरमे ष्ठिमंत्रको गधपुष्पपूजित शिष्यके दक्षिणकानमें तीनवार सुणावे पीछे तीनवार तिसके मुखसे उच्चा रण करावे ॥ यथा ॥

" ॥ नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाणं । नमो उवझायाण । नमो लोए सव्व साहूण ॥ " पीछे उपनेयको मंत्रका प्रभाव सुणावे ॥ तद्यथा ॥

सोलससु अक्खरेसु, इक्किक्क अक्खरं जगुज्जोअं ॥
नवसयसहस्स महणो, जम्मि ठिउं पच नवकारो॥१॥
थभेइ जल जलण चिंतियमत्तो इ पच नवकारो ॥
अरिमारिचोरराउलघोरुवसग्ग पणासेइ ॥ २ ॥

एकत्र पचगुरुमंत्रपदाक्षराणि । विश्वत्रय पुनरनं तगुण परत्र ॥ यो धारयेत्किल तुलानुगतं ततोऽपि । वदे महागुरुतर परमेष्टिमत्रम् ॥ ३ ॥ ये केचनापि सुखमाद्यरका अनंता । सत्सर्पिणीप्रभृतय प्रययुर्वि वर्त्ता ॥ तेष्वप्यय परतर प्रथित पुराऽपि । लब्ध्वै नमेव हि गता. शिवमत्र लोका ॥ ४ ॥ जग्मुर्जि नास्तदपवर्गपद यदेव । विश्व वराकमिदमत्र कथ विनास्मान् ॥ एतद्विलोक्य भुवनोद्धरणाय धीरै. ।

मंत्रात्मकं निजवपुर्निहितं तदाऽत्र ॥ ५ ॥ इंदुर्दिवा करतया रविरिंदुरूप । पातालमंबरमिलासुरलोक एव ॥ किंजल्पितेन बहुना भुवनत्रयेऽपि तन्नास्ति यन्न विषमं च समं च तस्मात् ॥ ६ ॥ सिद्धातोदधि निर्म्मथान्नवनीतमिवोद्धृतम् ॥ परमेष्टिमहामंत्र धारयेत् हृदि सर्वदा ॥ ७ ॥ सर्वपातकहर्त्तार सर्ववांछितदायकम् ॥ मोक्षारोहणसोपाने मंत्रे प्राप्नोति पुण्यवान् ॥ ८ ॥ धार्योयं भवता यत्नात् न देयो यस्य कस्यचित् ॥ अज्ञानेषु श्रावितोयं शपत्येव न संशयः ॥ ९ ॥ ❀ न स्मर्त्तव्योऽपवित्रेण न जने नाऽन्यसंश्रये ॥ नाऽविनीतेन नो दीर्घशब्देनाऽपि कदाचन ॥ १० ॥ न बालाना नाऽशुचीनां नाऽधर्म्माणा नदुर्द्दशाम् ❀ नप्लुतानां न दुष्टानां दुर्जातीनां न कुत्रचित् ॥ ११ ॥ अनेन मंत्रराजेन भूयास्त्व विश्वपूजित ॥ प्राणातेऽपि परित्यागमस्य कुर्यान्न कुत्रचित् ॥ १२ गुरुत्यागे भवेद्दःख मंत्रत्यागे दरिद्रता ॥ गुरुमंत्रपरित्यागे सिद्धोऽपि नरक व्रजेत् ॥ १३ ॥ इति

---

* न स्मर्त्तव्योपचित्तेन न शठेनान्यसंश्रये इति पुस्तकांतरे ॥ तथा अन्येषु श्राद्धदिनकृतश्राद्धविधिकौमुदीपचाशकादिषु शास्त्रेष्वेवमुक्त यथा सा काप्यवस्था नास्ति यस्या नमस्कारो न स्मर्त्तव्य इति ॥

* नाऽप्लुताना न दुष्टाना दुर्जनाना न कुत्रचित् । इति पुस्तकांतरे ॥

ज्ञात्वा सुगृहीतं कुर्या मत्रममुं सदा ॥ सेत्स्यंति सर्वकार्याणि तवाम्मान्मंत्रतो ध्रुवम् ॥ १४ ॥

गुरुने ऐसे शिक्षा दिया हुआ उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके "नमोस्तु २" ऐसें कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे पीछे गुरुको स्वर्णका जिनोपवीत, सुवर्णमौंजी, श्वेत वस्त्र रेशमी स्वसपदानुसारें देवे और सर्वसघको भी तांबूल वस्त्रादि देवे ॥ इत्युप नयने व्रतवयविधि. ॥

अथ व्रतादेशविधि लिख्यते हैं ॥ तिसही अवसरमे, तिसही सघके संगममें, तिसही गीतवाजंत्रादि उत्सवमे, तिसही वेदचतुष्किकामें प्रतिमास्थापन सयोगमें, व्रतादेशका आरत्न करे तिसका यह क्रम है । गृहस्थगुरु, उपनीत पुरुषके कार्पास रेशमी अतरीय (उत्तरीय)वस्त्र दूर करके मौंजी, जिनोपवीत कौपीन, येह वस्तुयों तिसकी देहमे तैसेही स्थापके, तिसके ऊपर कृष्णसाराजिन (कालामृगचर्म) वा, वृक्षके वल्कलका वस्त्र पहिरावे । हाथमें पलाशका दमा देवे और इस मंत्रको पढे

"॥ ॐ अर्हं ब्रह्मचार्यसि । ब्रह्मचारिवेषोऽसि अवधिब्रह्मचर्योसि । धृतब्रह्मचर्योसि । धृताजिनदमोसि । बुद्धोऽसि । प्रबुद्धोऽसि । धृतसम्यक्त्वोऽसि दृढसम्यक्त्वोसि । पुंमानसि । सर्वपूज्योऽसि । तदवधिब्रह्मव्रत आगुरुनिदेश धारये अर्हं ॐ ॥"

ऐसें पढके व्याघ्रचर्ममय आसनके ऊपर, वा कल्पित काष्टमय आसनके उपर उपनीतको बिठलावे तिसके दक्षिण हाथकी प्रदेशिनी अंगुलीमें दर्भसहित काचनमयी षोडश १६ मासे प्रमाण (पांच गुंजाका एक मासा जाणना) पवित्रिका मुद्रा पहरावे । पवित्रिका परिधापनमंत्रो यथा ॥

"पवित्र दुर्लभ लोके सुरासुरनृवल्लभम् ॥
सुवर्णं हंति पापानि, मालिन्य च न संशय ॥ १ ॥

तदपीछे उपनीत, मुखसे पंचपरमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, गंध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यकरके चारो दिशामें जिनप्रतिमाको पूजे । तदपीछे जिनप्रतिमाको प्रदक्षिणाकरके और गुरुको प्रदक्षिणा करके 'नमोस्तु २' कहता हुआ, हाथ जोडके ऐसें कहे ॥ "भगवन् उपनीतोहं" गुरु कहे "सुष्ठूपनीतो भव।" फेर उपनीत 'नमोस्तु, कहता हुआ नमस्कार करके कहे । "कृतो मे व्रतबंध ।" गुरु कहे । "सुकृतोऽस्तु ।" फेर 'नमोस्तु' कहके नमस्कार करके शिष्य कहे । "भगवन् जातो मे व्रतबंध ।" गुरु कहे । "सुजातोऽस्तु ।" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जातोऽहं ब्राह्मण । क्षत्रियो वा । वैश्यो वा ।" गुरु कहे । "दृढव्रतो भव । दृढसम्यक्त्वो भव ।" फेर शिष्य नमस्कार करके कहे। "भगवन् यदि त्वया कृतो ब्राह्मणोऽहं तदादिश

कृत्य।" गुरु कहे अर्हंमिरा दिशामि। " फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "भगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्भं रत्नत्रयमादिष्टं।" गुरु कहे। "आदिष्टं। फेर नमस्कार करके शिष्य। "भगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्भं रत्नत्रय मम समादिश।" गुरु कहे। "समादिशामि।' फेर नमस्कार करके शिष्य भगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्भं रत्नत्रय मम समादिष्ट।' गुरु कहे। "समादिष्ट।" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "भगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्भं रत्नत्रय ममानुजानीहि"। गुरु कहे। "अनुजानामि" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "भगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्भं रत्नत्रय ममानुज्ञातं।" गुरु कहे। "अनुज्ञात"। फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "भगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्भं रत्नत्रय मया स्वय करणीय।" गुरु कहे। "करणीय।" फेर नामस्कार करके शिष्य कहे। "भगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्भं रत्नत्रय मया अन्ये कारयितव्यं।" गुरुकहे"कारयितव्य" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "भगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्भं रत्नत्रयं कुर्वतोऽन्ये मया अनुज्ञातव्या" गुरु कहे। "अनुज्ञातव्या.' क्षत्रियको यह विशेष है 'भगवन् अह क्षत्रियो जात' आदेश समादेश दोनो कहने, अनुज्ञा न कहनी करणकारणमे 'कर्त्तव्य' 'कारयितव्य' ऐसे कहना, 'अनुज्ञातव्यं' ऐसे न कहना। और वैश्यको

आदेश ही कहना, समादेश अनुज्ञा यह दोनों न कहने । 'कर्त्तव्य' कहना, 'कारायितव्य' अनुज्ञातव्य यह न कहने । तदपीछे उपनीत हाथ जोड़ के कहे । 'हे भगवन् ! आदिश्यता व्रतादेशः ।' तब गुरु आदेश करे अर्थात् व्रतादेश कथन करे । तहा प्रथम ब्राह्मणप्रति व्रतादेश कहते हैं यथा ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्ठिमहामंत्रो विधेयो हृदये सदा ॥
निर्ग्रंथानां मुनींद्राणा कार्यं नित्यमुपासनम् ॥ १ ॥
त्रिकालमर्हत्पूजा च सामायिकमपि त्रिधा ॥
शक्रस्तवैस्सप्तवेलं वंदनीया जिनोत्तमा ॥ २ ॥
त्रिकालमेककालं वा स्नान पूतजलैरपि ॥
मद्यं मांसं तथा क्षौद्र तथोदुंबरपंचकम् ॥ ३ ॥
आमगोरससंपृक्त द्विदल पुष्पितौदनम् ॥
सधानमपि संसक्त तथा वै निशि भोजनम् ॥ ४ ॥
शूद्रान्न चैव नैवेद्य नाश्नीयान्मरणेऽपि हि ॥
प्रजार्थं गृहवासेऽपि सभोगो न तु कामत ॥ ५ ॥
आर्यवेदचतुष्कं च पठनीयं यथाविधि ॥
कर्षण पाशुपाल्य च सेवावृत्तिं विवर्ज्जये ॥ ६ ॥
सत्य वच प्राणिरक्षामन्यस्त्रीधनवर्ज्जनम् ॥
कषायविषयत्याग विदध्या शौचभागपि ॥ ७ ॥
प्राय. क्षत्रियवैश्यानां न भोक्तव्य गृहे त्वया ॥
ब्राह्मणानामार्हतानां भोजनं युज्यते गृहे ॥ ८ ॥

स्वज्ञातेरपि मिथ्यात्ववासितस्य पलाशिन ॥
न भोक्तव्य गृहे प्राय स्वयपाकेन भोजनम् ॥ ९ ॥
आमान्नमपि नीचाना न ग्राह्यं दानमंजसा ॥
भ्रमता नगरे प्राय कार्य स्पर्शो न केनचित् ॥१०॥
उपवीत स्वर्णमुद्रा नातरीयमपि त्यजे ॥
कारणातरमुत्सृज्य नोष्णीष शिरसि व्यधा ॥ ११ ॥
धर्मोपदेश प्रायेण दातव्य सर्वदेहिनाम् ॥
व्रतारोप परित्यज्य संस्कारान् गृहमेधिनाम् ॥ १२ ॥
निर्ग्रंथगुर्वनुज्ञात कुर्या पचदशापि हि ॥
शांतिक पौष्टिकं चैव प्रतिष्टामर्हदादिषु ॥ १३ ॥
निर्ग्रंथानुज्ञया कुर्या प्रत्याख्यान च कारये ॥
धार्यं च दृढसम्यक्त्वं मिथ्याशास्त्र विवर्ज्जये ॥१४॥
नानार्यदेशे गतव्य त्रिशुद्ध्याशौचमाचरे ॥
पालनीयस्त्वया वत्स व्रतादेशो भवावधि ॥ १५ ॥

॥ इतिब्राह्मणव्रतादेश ॥

(भावार्थ) परमेष्टिमहामंत्र सदा हृदयमें धारण करना, निर्ग्रंथ मुनींद्रोकी नित्य उपासना करनी। तीन कालमें अरिहंतकी पूजा करनी, तीनवार सामायिक करनी, शक्रस्तवमे सातवार चैत्यवंदना करनी ठाने हुए शुद्ध जलसें त्रिकालमे वा, एककालमे स्नान करना, मदिरा, मास, मधु, मारवण पाच जातिके उडुवरफल, आमगोरससयुक्त अर्थात्

कच्चे विना गरम करे गोरस दूध दही छाछके साथ द्विदल अन्न, जिसपर नीली फूली आजावे सो अन्न, जीवोत्पत्तिसंयुक्त सधान अर्थात् तीन दिन उपरां तका आचार, रात्रिभोजन, शूद्रका अन्न, देवके आगे चढा नैवेद्य इन पूर्वोक्त वस्तुयोंको मरणांतमें भी न खाना। संतानोत्पत्तिकेवास्ते गृहवासमें स्त्रीसें संभोग करना न तु कामासक्त होके। चारों आर्य जैन वेद विधिसें पढने खेती, पशुपालपणा और सेवा वृत्ति (नौकरी) येह नही करने। शुचिमान् होके सत्य वचन बोलना, प्राणिकी रक्षा करनी, अन्य स्त्री और अन्य धन येह वर्जने, कषाय विषयको त्यागने, प्राय क्षत्रिय और वैश्योंके घरमें तेरे भोजन न करना, आर्हत् ब्राह्मणोंके घरमे भोजन करना तुझको योग्य है। अपनी ज्ञातिका जो मिथ्यात्ववासित होवे, और मांसाहारी होवे तिसके घरमें भी भोजन नही करणा। प्राय आपही पकाके भोजन करना। कच्चे अन्नका भी दान नीचोंके हाथका न ग्रहण करणा, नगरमें भ्रमण करतां किसीका भीप्राय. स्पर्श न करना। उपवीत, स्वर्णमुद्रा और अंतरीय, इनको त्याग न करने कारणांतरको वर्जके शिरके ऊपर उष्णीष (पगडी) धारण न करना। प्राय सर्व मनुष्योंको धर्मोपदेश देना, व्रतारोपको वर्जके निर्ग्रंथ गुरुकी आज्ञासें पचदश १५ संस्कार

गृहस्थांको करने तथा शांतिक, पौष्टिक, जिनप्रतिमाकी प्रतिष्टादि करावने। निर्ग्रंथकी आज्ञासें प्रत्याख्यान करना, और अन्यको करावना, सम्यक्त्वको दृढ धारण करना, मिथ्याशास्त्रकी श्रद्धा वर्जनी। अनार्य देशमें जाना नही, तीनों शुद्धिया गरके शौच आचरण करना, हे वत्स! तैनें पूर्वोक्त व्रतादेश जबतग ससारमें रहे तबतक पालना ॥ १५ ॥

इतिब्राह्मणव्रतादेश ॥ अथक्षत्रियव्रतादेश ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्टिमहामत्र स्मरणीयो निरंतरम् ॥
शक्रस्तवैस्त्रिकाल च वंदनीया जिनेश्वरा ॥ १ ॥
मद्यं मास मधु तथा सधानोदुंबरादि च ॥
निशि भोजनमेतानि वर्ज्जयेदतियत्नत ॥ २ ॥
दुष्टनिग्रहयुद्धादिवर्जयित्वा वधोंगिनाम् ॥
न विधेय स्थूलमृषावादस्त्यक्तव्य एव च ॥ ३ ॥
परनारी परधन त्यजेदन्यविकत्थनम् ॥
युक्त्यासाधूपासन च द्वादशव्रतपालनम् ॥ ४ ॥
विक्रमस्याविरोधेन विधेय जिनपूजनम् ॥
धारण चित्तयत्नेन स्वोपवीतातरीययो ॥ ५ ॥
लिंगिनामन्यविप्राणामन्यदेवालयेष्वपि ॥
प्रणामदानपूजादि विधेय व्यवहारत ॥ ६ ॥
सांसारिक सर्वकर्म्म धर्मकर्म्मापि कारयेत् ॥
जैनविप्रैश्च निर्ग्रंथैर्दृढसम्यक्त्ववासित ॥ ७ ॥

रणे शत्रुसमाकीर्णे धार्यो वीररसो हृदि ॥
युद्धे मृत्युञ्जय नैव विधेयं सर्वथापि हि ॥ ८ ॥
गोब्राह्मणार्थे देवार्थे गुरुमित्रार्थ एव च ॥
स्वदेशभंगे युद्धेत्र सोढव्यो मृत्युरप्यलम् ॥ ९ ॥
ब्राह्मणक्षत्रियोर्नैव क्रियाभेदोस्ति कश्चन ॥
विहायान्यव्रतानुज्ञाविद्यावृत्तिप्रतिग्रहान् ॥ १० ॥
दुष्टनिग्रहण युक्त लोभ भूमिप्रतापयो ॥
ब्राह्मणव्यतिरिक्त च क्षत्रियोदानमाचरेत् ॥ ११ ॥

॥ इतिक्षत्रियव्रतादेश ॥

अथ क्षत्रियव्रतादेश कहते हैं ॥ परमेष्ठिमहा मंत्र निरंतर स्मरण करना शक्रस्तवोंकरके त्रिकाल जिनेश्वरको वंदन करना । मद्य, मांस, मधु, सधा न, पांच उंडुंबरादि, (आदिशब्दसें अमगोरससंयु क्त द्विदल, पुष्पितौदन,) और रात्रिभोजन, इनको यत्नसें वर्जे । दुष्टका निग्रह करना, और युद्धादि वर्जके प्राणियोंका वध न करना, स्थूलमृषावाद न बोलना, परस्त्रीका और परधनका त्याग करना, पर की निंदाका त्याग करे, युक्तिसें साधुयोंकी उपास ना करे, और बारा व्रत पालन करे । अपनी शक्ति अनुसार जिनपूजन करना चित्तयत्नसें अर्थात् उप योगसें खउपवीत, और अंतरीयको धारण करना । लिंगियोंको, अन्य ब्राह्मणोंको, और अन्यदेवालयो में भी, प्रणाम दान पूजादि काम पडे तो, लोक

व्यवहारसें करने । संसारिक सर्व कर्म जैनब्राह्मणों और धर्म कर्म निर्ग्रंथों करके करावे. दृढसम्यक्त्वकी वासनावाला होवे । शत्रुयोंकरके समाकीर्ण रणमें हृदयके विषे वीररस धारण करना, युद्धमे मृत्युका भय सर्वथा नही करना । गो ब्राह्मणके अर्थे, देवके अर्थे, गुरु और मित्रके अर्थें, स्वदेशके भग होते, और युद्धमें, मृत्यु भी सहन करना योग्य है । ब्राह्मण और क्षत्रियकी क्रियामें कुछ भी भेद नही है, पर अन्यको व्रतअनुज्ञा देनी विद्यावृत्ति, दान लेनेमे भेद है दुष्टोंका निग्रह करना योग्य है, भूमि और प्रतापका लोभ करना, ब्राह्मणसे व्यतिरिक्त क्षत्रिय दान आचरण (गृहण) करे ॥११॥
इति क्षत्रियव्रतादेश ॥ अथ वैश्यव्रतादेश ॥

॥ मूलम् ॥

त्रिकालमर्हत्पूजा च सप्तवेल जिनस्तव ॥
परमेष्टिस्मृतिश्चैव निर्ग्रंथगुरुसेवनम् ॥ १ ॥
आवश्यक द्विकाल च द्वादशव्रतपालनम् ॥
तपोविधिर्गृहस्थार्हो धर्मश्रवणमुत्तमम् ॥ २ ॥
परनिंदावर्जनं च सर्वत्राप्युचितक्रम ॥
वाणिज्यपाशुपाल्याभ्यां कर्षणेनोपजीवनम् ॥ ३ ॥
सम्यक्त्वस्यापरित्याग प्राणनाशेपि सर्वथा ॥
दान मुनिभ्य आहारपात्राच्छादनसद्मनाम् ॥ ४ ॥

कर्म्मादानविनिर्मुक्त वाणिज्यं सर्वमुत्तमम् ॥
उपनीतेन वैश्येन कर्त्तव्यमिति यत्नत॰ ॥ ५ ॥

॥ इतिवैश्यव्रतादेश॰ ॥

अथ वैश्यव्रतादेश कहते हैं ॥ त्रिकाल अर्हत् पूजा करनी, सातवार जिनस्तव चैत्यवंदन करना, पंचपरमेष्टिमत्रका स्मरण करना, निर्ग्रंथ गुरुकी सेवा करनी । दो कालमें (प्रात॰ कालमें और साय कालमें) आवश्यक (प्रतिक्रमणादि) करना बारां व्रत पालने, गृहस्थोचित तपोविधि करना, उत्तम धर्म श्रवण करना, परकी निंदा वर्जनी, सर्वत्र उचित काम करना, वाणिज्य, पशुपालन और खेती करके आजीविका करनी । सर्वथाप्रकारे प्राणोंका नाश होवे तो भी, सम्यक्त्व नही त्यागना, मुनियोंको अहार, पात्र, वस्त्र, मकान (उपाश्रय) का दान करना । कर्मादानसें रहित सर्व उत्तम वाणिज्य (व्यापार) करना, उपनीत वैश्यको ये पूर्वोक्त यत्नसें करणे योग्य है ॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥ अथ चातुर्वर्ण्यस्य समानो व्रतादेश॰ ॥

॥ मूलम् ॥

निजपूज्यगुरुप्रोक्त देवधर्म्मादिपालनम् ॥
देवार्चन साधुपूजा प्रणामोविप्रलिंगिषु ॥ १ ॥
धनार्जनं च न्यायेन परनिंदाविवर्जनम् ॥
अवर्णवादो न क्वापि राजादिषु विशेषत॰ ॥ २ ॥

स्वसत्त्वस्यापरित्यागो दानं वित्तानुसारतः ॥
आयोचितो व्ययश्चैव काले काले च जोचनम् ॥ ३ ॥
न वासोऽल्पजले देशे नदीगुरुविवर्जिते ॥
न विश्वासो नरेन्द्राणां नागरीयनियोगिनाम् ॥ ४ ॥
नारीणां च नदीना च लोजिनां पूर्ववैरिणाम् ॥
कार्यं विना स्थावराणामहिंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥
नासत्याहितवाक् चैव विवादो गुरुजिर्न च ॥
मातापित्रोर्गुरोश्चैव माननं परतत्त्ववत् ॥ ६ ॥
शुजशास्त्राकर्णन च तथा नाऽजक्ष्यजक्षणम् ॥
अत्याज्यानां न च त्यागोप्यऽघात्यानामघातनम् ॥ ७ ॥
अतिथौ च तथा पात्रे दीने दान यथाविधि ॥
दरिद्राणां तथांधानामापद्गारजृतामपि ॥ ८ ॥
हीनाङ्गानां विकलानां नोपहास कदाचन ॥
समुत्पन्नक्षुत्पिपासाघृणाक्रोधादिगोपनम् ॥ ९ ॥
अरिषड्वर्गविजय पक्षपातो गुणेषु च ॥
देशाचाराऽऽचरण च जय पापापवादयो ॥ १० ॥
उद्वाह सदृशाचारै समजात्यन्यगोत्रजै ॥
त्रिवर्गसाधन नित्यमन्योन्याप्रतिवधत ॥ ११ ॥
परिज्ञान स्वपरयोर्देशकालादिचिंतनम् ॥
सौजन्य दीर्घदर्शित्व कृतज्ञत्वं सलज्जता ॥ १२ ॥
परोपकारकरण परपीडनवर्जनम् ॥
पराक्रम परिज्ञवे सर्वत्र क्षांतिरन्यदा ॥ १३ ॥
जलाशयश्मशानाना तथा दैवतसद्मनाम् ॥

निद्राहाररतादीनां सध्यासु परिवर्जनम् ॥ १४ ॥
प्रवेशोल्लघनं चैव तटे शयनमेव च ॥
कूपस्य वर्जनं नद्यालघनं तरणीं विना ॥ १५ ॥
गुर्वासनादिशय्यासु तालवृक्षे कुभूमिषु ॥
दुर्गोष्टिषु कुकार्येषु सदैवासनवर्जनम् ॥ १६ ॥
न लघन च गर्त्तादेर्नदुष्टस्वामिसेवनम् ॥
न चतुर्थीदुनभस्त्रीशक्रचापविलोकनम् ॥ १७ ॥
हस्त्यश्वनखिनां चापवादिना दूरवर्जनम् ॥
दिवासंभोगकरण वृक्षस्योपासनं निशि ॥ १८ ॥
कलह तत्समीपं च वर्जनीय निरतरम् ॥
देशकालविरुद्धं च भोज्य कृत्य गमागमौ ॥ १९ ॥
भाषितं व्यय आयश्च कर्त्तव्यानि न कर्हिचित् ॥
चातुर्वर्ण्यस्य सर्वस्य व्रतादेशोयमुत्तम ॥ २० ॥

॥ इतिचातुर्वर्ण्यस्यसमानोव्रतादेश ॥

अथ चारो वर्णोंका समान व्रतादेश कहते हैं ॥ अपने पूज्य गुरुके कहे देवधर्मादिकापालना, देव पूजा करनी, साधुकी यथायोग्य पूजा करनी, ब्राह्मण और लिंगधारीको प्रणाम करना । न्यायसें धन उपार्जन करना परकी निंदा वर्जनी, किसीका भी अवर्णवाद न बोलना, राजादिविषयक तो विशेषसें अवर्णवाद न बोलना । अपने सत्वको छोडना नही, धनके अनुसार दान देना, लाभानुसार खरच करना, भोजनके कालमे भोजन करना. । थोडे जल

स्वसत्त्वस्यापरित्यागो दानं वित्तानुसारतः ॥
आयोचितो व्ययश्चैव काले काले च जोचनम् ॥ ३ ॥
न वासोऽल्पजले देशे नदीगुरुविवर्जिते ॥
न विश्वासो नरेन्द्राणां नागरीयनियोगिनाम् ॥ ४ ॥
नारीणा च नदीनां च लोजिनां पूर्ववैरिणाम् ॥
कार्यं विना स्थावराणामहिंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥
नासत्याहितवाक् चैव विवादो गुरुजिर्न च ॥
मातापित्रोर्गुरोश्चैव माननं परतत्त्ववत् ॥ ६ ॥
शुजशास्त्राकर्णन च तथा नाऽजक्ष्यजक्षणम् ।
अस्याज्यानां न च त्यागोप्यऽघात्यानामघातनम्
अतिथौ च तथा पात्रे दीने दानं यथाविधि
दरिद्राणां तथांधानामापन्नारजृतामपि ॥ ७ ।
हीनाङ्गानां विकलानां नोपहास कदाचन ॥
समुत्पन्नक्षुत्पिपासाघृणाक्रोधादिगोपनम् ॥ ८
अरिषड्वर्गविजय पक्षपातो गुणेषु च ॥
देशाचाराऽऽचरण च जय पापापवादयो ॥
उद्वाह सदृशाचारे समजात्यन्यगोत्रजै ॥
त्रिवर्गसाधन नित्यमन्योन्याप्रतिवधत ॥ ९
परिज्ञानं स्वपरयोर्देशकालादिचिंतनम् ॥
सौजन्य दीर्घदर्शित्वं कृतज्ञत्वं सलज्जता ॥
परोपकारकरण परपीडनवर्जनम् ॥
पराक्रम परिज्ञे सर्वत्र क्षातिरन्यदा ॥
जलाशयश्मशानाना तथा दैवतसद्मनाम् ।

लादिका चितन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जालु होना परोपकार करना, परको पीडा न करनी, अपना परिभव (तिरस्कार) होवे तब पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र क्षांति करनी । जलाशय, श्मसान, देवल, इनमे और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना । कूपमे प्रवेश, कूपका उल्लघन, कूपकांठेपर शयन, इन सर्वको वर्जना, तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, तालवृक्षके हेठें, बुरी भूमिमे, दुर्गोष्टिमें, कुकार्यमे, बेठना सदा ही वर्जना । खाल कूदनी नही, लोभी स्वामीकी सेवा, नही करनी, चौथका चद्र, नग्न स्त्री, इंद्रधनु, इनको देखना नही । हाथी, घोडा, नखोवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसें वर्जना । दिनमे सभोग (मैथुन) न करना, रात्रिको वृक्षका सेवन न करना । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना । देशकाल विरुद्ध, भोजन, कार्य, गमन, आगमन, भाषण, व्यय (खरच) और आय (लाभ) ये कदापि न करने यह पूर्वोक्त धर्म व्रतादेश चारों वर्णोंका है. ॥ २० ॥ इति वीर्यस्य समानोव्रतादेश ॥

गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसें शिष्यको व्रतादेश करके, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन प्रदक्षिणा

वाले देशमें वसना नही, नदी और धर्मगुरुवर्जित देशमें भी नही वसना । राजा, राज्याधिकारी, स्त्री, नदी, लोभी, पूर्ववैरी, इनोका विश्वास नही करना । कार्यविना स्थावर जीवोंकी भी हिंसा नही करनी । असत्य अहितकारि वचन नही बोलना, गुरुओं (वडो) के साथ विवाद नही करना. माता पिता और गुरु, इनका उत्कृष्ट तत्त्वकीतरें मान सत्कार करना । शुभ अष्टादश दूषणरहित सर्वज्ञोक्त शास्त्रका श्रवण करना, अभक्ष्य (नही खाने योग्य) का भक्षण नही करना, जे त्यागने योग्य नही है, उनका त्याग नही कर ना, जे मारणे योग्य नही हे, तिनको मारणा नही अतिथि, सुपात्र, और दीन, इनको यथाविधि यथा योग्य दान देना, दरिद्र, अंधे, दुःखी, इनको भी यथाशक्ति दान देना । हीन अंगवालोंको, और विकलोंको कदापि हसना नही । भूख, तृष्णा,(तृषा,) घृणा, क्रोधादि उत्पन्न हुए भी, गोपन करने । षट् (६) अरिवर्गका विजय करना, गुणोंमे पक्षपात करना, देशाचार आचरण करना, पाप और अपवादका भय करना । सदृश आचारवाले, समजाति, और अन्य गोत्रजोंके साथ विवाह करना, धर्म अर्थ कामको निरतर परस्पर अप्रतिबंधसें साधन करना । अपने और परायेका ज्ञान करना, देशका

लादिका चिंतन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जालु होना परोपकार करना, परको पीडा न करनी, अपना परिभव (तिरस्कार) होवे तब पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र क्षांति करनी. । जलाशय, श्मसान, देवल, इनमें और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना । कूपमें प्रवेश, कूपका उल्लंघन, कूपकाठेपर शयन, इन सर्वको वर्जना, तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, तारुवृक्षके हेठें, बुरी भूमिमें, दुर्गोष्टिमें, कुकार्यमे, बैठना सदा ही वर्जना । खाम कूदनी नही, लोभी स्वामीकी सेवा, नही करनी, चौथका चंद्र, नग्न स्त्री, इंद्रधनु, इनको देखना नही । हाथी, घोडा, नखोंवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसें वर्जना । दिनमें संभोग (मैथुन) न करना, रात्रिको वृक्षका सेवन न करना । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना । देशकाल विरुद्ध, भोजन, कार्य, गमन, आगमन, भाषण, व्यय (खरच) और आय (लाभ) ये कदापि न करने यह पूर्वोक्त उत्तम व्रतादेश चारों वर्णोंका है ॥ २० ॥ इति चातुर्वर्ण्यस्य समानोव्रतादेश ॥

गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसें शिष्यको व्रतादेश करके, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन प्रदक्षिणा

करावे फिर पूर्वाभिमुख होके शक्रस्तव पढे । उस पीछे गृहस्थगुरु, आसन ऊपर बैठ जावे, और शिष्य 'नमोस्तु' कहता हुआ गुरुके पगोंमें पडके ऐसे कहे, "भगवन् भवद्भिर्मम व्रतादेशो दत्त." तब गुरु कहे, "दत्त सुगृहीतोस्तु सुरक्षितोस्तु स्वयं तर पर तारय संसारसागरात्" ऐसें कहके नमस्कार पढता हुवा ऊठके दोनों (गुरु शिष्य) चैत्यवंदन करें उसपीछे ब्राह्मणने, विप्र क्षत्रिय वैश्यके घरमें भिक्षाटन करना, क्षत्रियने शस्त्र ग्रहण करना, और वैश्यने अन्नदान करना ॥

इत्युपनयने व्रतादेश॰ ॥

अथ व्रतविसर्ग कथ्यते॰—अथ व्रतविसर्ग कहते हैं ॥ ब्राह्मणने आठ वर्षसें लेके सोलां वर्षपर्यंत, दर्भ और अजिन धारण करके, भिक्षावृत्ति करके भोजन करना, यह उत्तम पक्ष है क्षत्रियने दर्भ अजिन धारण करके दश वर्षसें लेके सोलां वर्ष पर्यंत आपहि पाक करके, देवगुरुकी सेवामें तत्पर होके, भोजन करना, और वैश्यने दर्भ अजिन धारण करके स्वकृत भोजन करके बारां वर्षसें लेके सोलां वर्ष पर्यंत भोजन करना, यह उत्तम पक्ष है । यदि कार्यव्यग्रतासें तितने दिन न रह सके तो, छ (६) मास पर्यंत रहना तदभावे एक मास पर्यंत, तदभावे पक्ष पर्यंत, तदभावे तीन दिन रहना यदि तीन दिन भी न

रह सके तो, तिसही उपनयनव्रतादेशके दिनमेंही विसर्ग करिये, सोही कहने हैं । उपनीत, तीन ३ प्रदक्षिणा करके चारों दिशायोंमे जिनप्रतिमाके आगे पूर्ववत् युगादिजिनस्तोत्र सहित शक्रस्तव पढे तदपीठे आसनपर बैठे गुरुके आगे नमस्कार करके हाथ जोरुके ऐसें कहे ॥ "भगवन् देशकालापेक्षया व्रतविसर्गमादिश" ॥ गुरु कहे ॥ "आदिशामि ॥" फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ "भगवन्ममव्रतविसर्गं आदिष्ट ॥ गुरु कहे ॥ "आदिष्ट ॥' फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ "भगवन् व्रतबंधो विसृष्ट ॥' गुरु कहे ॥ "जिनोपवीतधारणेन अविसृष्टोस्तु स्वजन्मत षोडशाब्दीं ब्रह्मचारी पाठधर्मनिरतस्तिष्ठ ॥ उसपीठे पंचपरमेष्ठिमंत्र पढता हुआ शिष्य, मौंजी, कौपीन, वल्कल, दंड, इनको दूर करके, गुरुके आगे स्थापन करे; और आप जिनोपवीतधारी श्वेतवस्त्र उत्तरीय होके गुरुके आगे नमस्कार करके बैठे, तब गुरु तिस वारां तिलकधारी उपनीतके आगे उपनयनका व्याख्यान करे ।

तद्यथा ॥ आठ वर्षके ब्राह्मणको दश वर्षके क्षत्रियको, और बारां वर्षके वैश्यको, उपनयन करना तिसमें गर्भमास भी बीचमेंही गणने । तथाच ॥ "जिनोपवीतमिति जिनस्य उपवीतं मुद्रासूत्रमित्यर्थः."

जिनका उपवीत अर्थात् मुद्रासूत्र सो कहावे जिनोपवीत. । नवब्रह्मगुप्ति गर्भरत्नत्रय, येह पुरा, श्रीयुगादिदेवने गृहस्थीवर्णत्रयको अपनी मुद्राका धारण करना यावत् जीवतांइ कहा था । तदपीछे तीर्थके व्यवछेद हुए, मिथ्यात्वको प्राप्त ब्राह्मणोंने हिंसा प्ररूपणेसे चारों वेदको मिथ्या पथमें प्राप्त करे हुए, पर्वत और वसुराजासे प्राय' हिंसक यज्ञके प्रवृत्त हुए, 'यज्ञोपवीत' ऐसा नाम धारण करा मिथ्या दृष्टि यथेछासें प्रलाप करो । परतु जिनमतमे तो, जिनोपवीतही नाम है, नतु यज्ञोपवीत तिसवास्ते तेने इस जिनोपवीतको अछीतरे धारण करना मासमासपीछे नवीन धारण कराना, प्रमादसें जिनो, पवीत जाता रहे, वा टुट जावे तो, तीन उपवास करके नवीन धारण करना प्रेतक्रियामे दक्षिण स्कधके ऊपर, और वाम कक्षाके हेठें, ऐसे विपरीत धारण करना क्योंकि, सो विपरीत कर्म है । मुनि जी, मृत मुनिके त्यागनेमे तथाविध विपरीतही वस्त्र पहेनते हैं, जिसवास्ते, तू जन्मकरके शूद्र आजतक था साप्रत सस्कारविशेषकरके ब्रह्मगुप्तिके धारणेसें ब्राह्मण, वा क्षतात्राणेन–रक्षणकरनेसे क्षत्रिय, वा न्यायधर्ममे प्रवेश करनेसे वैश्य हुआ है, तिसवास्ते, क्रियासहित इस जिनोपवीतको अछीतरे ग्रहण करना अछीतरें रखना तेरेको सद्धर्मवासना उपन

यनविधि क्षयरहित हो एसे व्याख्यान करके पर मेष्ठिमंत्र पढकर दोनों गुरु शिष्य खडे होवे पीछे चैत्यवंदन, और साधुवंदन करे ॥ इत्युपनयने व्रत विसर्ग्गविधिः ॥ अथ गोदानविधिर्यथा ॥

अथ गोदानविधि लिखते है ॥ तदा व्रतविसर्गके अनंतर शिष्यसहित गुरु, जिनको तीन ३ प्रदक्षिणा करके पूर्ववत् चारो दिशामे शक्रस्तवका पाठ करे पीछे गृहस्थगुरु, आसनपर बैठे तब शिष्य गुरुको तीन प्रदक्षिणा करके नमस्कार करके हाथ जोडके खडा होके, गुरुको विज्ञापना करे यथा ॥

"॥ भगवन् तारितोह, निस्तारितोह, उत्तम कृतोहं, सत्तम कृतोहं, पूत कृतोहं, पूज्यकृतोह, तद्भगवन्नादिश, प्रमाद बहुले गृहस्थधर्म्मे, मम किंच नापि रहस्यभूत सुकृत ॥"

हे भगवान् ! तारा मुझको, निस्तारा मुझको, उत्तम करा मुझको, अतिशयसाधु (श्रेष्ठ) करा मुझको, पवित्रकरा मुजको, पूज्य करा मुझको, तिसवास्ते, हे भगवन् ! प्रमादबहुल गृहस्थधर्ममे मेरेको कुछभी रहस्यभूत सुकृत कथन करो ॥ तब गुरु कहे ॥

"॥ वत्स ! सुष्ठ्वनुष्ठितं सुष्ठु पृष्टं तत श्रूयताम् ॥"

हे वत्स ! अच्छा करा, भला पूछा, तिसवास्ते तूं श्रवण कर ॥

दानं हि परमो धर्म्मो दानं हि परमा क्रिया ॥
दानं हि परमो मार्ग्गस्तस्माद्दाने मनः कुरु ॥ १ ॥
दया स्यादभय दानमुपकारस्तथाविधः ॥
सर्वो हि धर्म्मसंघातो दानेन्तर्भावमर्हति ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी च पाठेन भिक्षुश्चैव समाधिना ॥
वानप्रस्थस्तु कष्टेन गृही दानेन शुद्ध्यति ॥ ३ ॥
ज्ञानिन परमार्थज्ञा अर्हन्तो जगदीश्वराः ॥
व्रतकाले प्रयच्छन्ति दान सांवत्सरं च ते ॥ ४ ॥
गृह्णता प्रीणनं सम्यक् ददतां पुण्यमक्षयम् ॥
दानतुल्यस्ततो लोके मोक्षोपायोऽस्ति नाऽपर ॥ ५ ॥

अर्थ—दानही परम उत्कृष्ट धर्म है, दानही परमा क्रिया है, दानही परम मार्ग है, तिसवास्ते दान देनेमे मन कर । अभयदानसे दया होवे है, दानसेही तथाविध उपकार होवे है, सर्वही धर्म समूह दानमें अंतर्भाव हो सक्ता है। ब्रह्मचारी पाठ करके, साधु समाधि करके, वानप्रस्थ कष्ट करके, और गृहस्थी दान करके शुद्ध होता है । तीन ज्ञानके धर्त्ता परमार्थके जाणकार, ऐसें अर्हंत भगवंत जगदीश्वर भी व्रतसमयमे सांवत्सर दान देते है । दान ग्रहण करनेवालेको तो, दान तृप्त करता है, और देनेवालेको अक्षय पुण्य प्राप्त करा ता है, तिसवास्ते दानके समान दूसरा कोई मोक्ष का उपाय लोकमे नही है ॥ ५ ॥ जिसवास्ते है

वत्स ! तैनें ब्राह्मणपणा, वा क्षत्रियपणा, वा वैश्य पणा प्राप्त करा है, अंगीकार करा है, तिसवास्ते हे वत्स ! तू गृहस्थधर्ममें मोक्षके सोपानरूप दान देनेका प्रारंभ कर । तब नस्कार करके शिष्य कहे, हे भगवन् ! मुझको दानका विधी कहो । गुरु कहे 'आदिशामि' कहता हू । यथा ॥

गावो भूमि सुवर्णं च रत्नान्यन्नं च नक्तका ॥
गजाश्वाइति दानं तदष्टधा परिकीर्त्तयेत् ॥ १ ॥
एतच्चाष्टविध दानं विप्राणा गृहमेधिनाम् ॥
देयं न चापि यतयो गृह्णन्त्येतच्चनि स्पृहा ॥ २ ॥
यतिभ्यो भोजनं वस्त्र पात्रमौषधपुस्तके ॥
दातव्य द्रव्यदानेन तौ द्वौ नरकगामिनौ ॥ ३ ॥

अर्थ –गौ १, भूमि २, सुवर्ण ३, रत्न ४, अन्न ५, नक्तक वस्त्रविशेष ६, हाथी ७, और घोडा ८, येह आठ प्रकारका दान कहाहे । यह पूर्वोक्त आठ प्रकारका दान, गृहस्थी ब्राह्मणगुरुयोको देना और नि स्पृह यति साधु मुनिराज, इस दानको नही लेते है । साधवोको तो, भोजन, वस्त्र, पात्र, औषध पुस्तक, इनका दान देना साधुको द्रव्य (धन) का दान देनेसें, देनेलेनेवाले दोंनोंही नरकगामी होते हैं ॥ ३ ॥ तिसवास्ते प्रथम गोदान ग्रहण करना. उपनीत, वछडेसहित कपिला, वा पाटला, वा श्वेत रंगकी, स्नापित, चर्चित, भूषित, धेनुको, आगे ल्या

यके पूठसे पकडके, रूप्यमय खुरा है जिसके, स्वर्ण मय शृंग है जिसके, ताम्रमय पृष्ठ है जिसकी, कांस्य मय दोहपात्र है जिसका, ऐसी धेनु, गृहस्थगुरुके तांइ देवे। गुरु तिस गौकी पूठको हाथमें धारण करकें, यह वेदमंत्र पढे। यथा॥

"॥ ॐ अर्हं गोरिय धेनुरिय प्रशस्यपशुरिय सर्वोत्तमक्षीरदधि घृतेय पवित्रगोमयमूत्रेय सुधास्त्रा विणीय रसोद्भाविनीय पूज्येयं हृद्येयं अग्निवाद्येय तद्दत्तेय त्वया धेनु कृतपुण्यो भव प्राप्त पुण्यो भव अक्षयं दानमस्तु अर्हं ॐ॥"

यह कहकर गृहीगुरु धेनुको ग्रहण करे शिष्य तिस गौकेसाथ द्रोणप्रमाण सात धान्य, तुलामात्र षट् (६) रस और पुरुषतृप्तिमात्र षट् (६) विकृती (विगय) देवे॥ इतिगोदानम्॥ अन्य सर्व भूमिर त्नादिदानोविषे यह मंत्र पढना। यथा॥

"॥ ॐ अर्हं एकमस्ति दशमकमस्ति शतमस्ति सहस्रमस्ति अयुतमस्ति लक्षमस्ति प्रयुतमस्ति कोट्यस्ति कोटिदशकमस्ति कोटिशतकमस्ति कोटिसहस्रमस्ति कोट्ययुतमस्ति कोटिलक्षमस्ति कोटिप्रयुतमस्ति कोटाकोटिरस्ति संख्येयमस्ति असंख्येयमस्ति अनतानतमस्ति दान फलमस्ति तदक्षय दानमस्तु ते अर्हं ॐ॥" इति परेषा दानानां मत्रपाठ॥

यहा उपनयनमे गोदानकाही निश्चय है, शेष दान क्रमकरके अन्यदा भी देना गोदानादि दान गृहस्थगुरु ब्राह्मणोंकोही देना निस्पृह यतियोंको न देना तथा तिन यतियोंको, अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, भेषज, वसति, पुस्तकादि दानमें 'धर्मलाभ.' यही मंत्र जाणना । अथ गृहस्थगुरु, उपनीतसें गोदान लेके, पर्णालुझा देके, चैत्यवंदन, और साधु वंदन करायके, तैसेंही सघके मिले हुए, मंगलगीत वाजत्रोंके वाजते हुए, शिष्यको साधुयोंकी वसतिमें (उपाश्रयमें) ले जावे तहां मंडलीपूजा, वासक्षेप, साधुवंदनादि सर्व पूर्ववत् करना । पीछे चतुर्विध सघकी पूजा, और मुनियोंको वस्त्र, अन्न, पात्रादि दान करे ॥ इति गोदानविधि ॥

सपूर्णोय चतुर्विधउपनयनविधि ॥

अथ शूद्रको उत्तरीयक देनेकी विधि लिख हें ॥ सात दिन तैलनिषेकस्नान पूर्ववत् जाणना । तदनंतर यथाविधि पौष्टिक, सर्व शिरका मुंडन, वेदिकरण, चतुष्किकाकरण, जिनप्रतिमास्थापन, पूर्ववत् । पीछे गृहस्थगुरु, जिनेश्वरकी अष्टप्रकारी पूजा करे चारोदिशायोंमें शक्रस्तव पाठ करे पीछे गुरु आसनऊपर बैठ जावे तब शिष्य श्वेत वस्त्र पहिरके, उत्तरासगकरके समवसरण और गुरुको, प्रदक्षिणा करके, 'नमोस्तु श' कहता हुआ, गुरुको

नमस्कार करके हाथ जोडके, खडा होयके कहे "॥ भगवन् प्राप्तमनुष्यजन्मार्यदेशार्यकुलस्य मम बोधिरूपा जिनाज्ञां देहि ॥" गुरु कहे "॥ ददामि ॥' शिष्य फिर नमस्कार करके कहे "॥ न योग्योहमुपनयनस्य तज्जिनाज्ञां देहि ॥' गुरु कहे ददामि ॥" पीछे द्वादश (१२) गर्भततुरूप, जिनोपवीतप्रमाण दीर्घ (लंबा) कार्प्पासका, वा रेशमका, उत्तरीयक, परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, जिनोपवीतवत् पहिरावे पीछे गुरु, पूर्वाभिमुख शिष्यको चैत्यवंदन करावे । पीछे शिष्य 'नमोस्तु २" कहता हुआ, सुखसें बैठे गुरुके पगोंमें पडके, फिर खडा होके, हाथ जोडके, ऐसें कहे "॥ भगवन् उत्तरीयकन्यासेन जिनाज्ञामारोपितोह ॥" गुरु कहे "सम्यगारोपितोसि तर भवसागरम् ॥" पीछे गुरु सन्मुख बैठे शूद्रके आगे व्रतानुज्ञा देवे ॥ यथा ॥

सम्यक्त्वेनाधिष्ठितानि व्रतानि द्वादशैव हि ॥
धार्याणि भवता नैव कार्यं कुलमदस्त्वया ॥ १ ॥
जैनर्षीणां तथा जैनब्राह्मणानामुपासनम् ॥
विधेयं चैव गीतार्थाचीर्णं कार्यं तपस्त्वया ॥ २ ॥
न निंद्य कोपि पापात्मा न कार्यं स्वप्रशंसनम् ॥
ब्राह्मणेभ्यस्त्वया मानं दातव्यं हितमिच्छता ॥ ३ ॥
शेषं चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकव्याख्यानमाचरेत् ॥
उत्तरीयपरिभ्रंशे भंगे वाप्युपवीतवत् ॥ ४ ॥

कार्यं व्रतं प्रेतकर्मकरणं वृषल त्वया ॥
युक्तिरेषोत्तरासंगानुज्ञाया च विधीयते ॥ ५ ॥
क्षत्राणामथ वैश्याना देशकालादियोगत ॥
त्यक्तोपवीतानां कार्यमुत्तरासगयोजनम् ॥ ६ ॥
धर्मकार्ये गुरोर्दृष्टौ देवगुर्वालयेऽपि च ॥
धार्यस्तथोत्तरासंग सूत्रवत् प्रेतकर्मणि ॥ ७ ॥
अन्येषामपि कारूणां गुर्वानुज्ञां विनापि हि ॥
गुरुधर्मादिकार्येषु उत्तरासंग इष्यते ॥ ८ ॥

अर्थ.—सम्यक्त्वके सयुक्त द्वादश व्रत तैने धारण करने, और कुलका मद न करना । जैन ब्राह्मणोकी उपासना करनी, तथा गीतार्थाचीर्ण तप करना । किसी पापात्माको निंदना नही, अपनी प्रशसा नकरनी, हित इच्छके ब्राह्मणको मान देना । शेष चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकमे कहे आचारको आचरण करना, (उत्तरीयके परिभ्रंशमे, वा जगन्ने उपवीतवत् जाणना । व्रत करना, प्रेतकर्म करना,) हे वृषलशूद्र ! उत्तरासगकी अनुज्ञामें तैने यह युक्ति करनी । देशकालादियोगसें त्याग किया है उपवीत जिनोंने, वैसे क्षत्रिय और वैश्योको, उत्तरासग योजन करना । धर्मकार्यमें, गुरुकी दृष्टिमें, देव और गुरुके मकानमे, तथा प्रेतकर्ममे, सूत्रकी तरें उत्तरासग धारण करना । और भी कारुओंको गुरुकी आज्ञाके विना भी गुरुधर्मादिकार्योंमे उत्त

रासंग इच्छते हैं । ऐसा व्याख्यान करके गुरु शिष्य को चैत्यवंदन करावे । परमेष्ठिमंत्रका उच्चार और मंत्रव्याख्यान पूर्ववत् । इतना विशेष है शूद्रादि कोको 'नमो' के स्थानमे 'णमो' उच्चारण कराना इतिगुरुसंप्रदाय । पीछे शिष्यसहित गुरु, उत्सव करते हुए धर्मागारमे जावे तहां मंगलीपूजा, गुरु नमस्कार, वासक्षेपादि पूर्ववत् । पीछे मुनियोको अन्न, वस्त्र, पात्र दान देवे और चतुर्विध संघकी पूजा करे ॥ इति उपनयने शूद्रादीना उत्तरीयक न्यासोत्तरासंगानुज्ञोविधि ॥

अथ वटूकरणविधि —अथ वटूकरणविधि लिखते हैं ॥ जिसवास्ते सम्यक् उपनीत, वेदविद्यासयुक्त, दुष्प्रतिग्रहवर्जित, अशूद्रान्नभोजन करनेवाले, माह नोंके आचारमे रक्त, सर्व गृहस्थोकेसस्कारप्रतिष्ठादिक मोंके करानेवाले, ऐसें ब्राह्मण, पूज्य होते है । परंतु क्षत्रियादि राजायोको, सेवा, अन्नपाक, तिसकी आज्ञा करनी, अभ्युत्थान, चाटु —मनोहर वचन, प्रशसा, विना नमस्कारके आशीर्वाद देना, विज्ञानकर्म, कृषि वाणिज्यकरण, तुरंगवृषभादि शिक्षाकरण, इत्यादि कर्म करनेवाले ब्राह्मणयोग्य नहीहे इसवास्ते एसे ब्राह्मणो वा हरकोइ को शुद्ध ब्राह्मण बनानेके लिए "वटू करण" विधि करनाचहिये सो बतातेंहे उक्तं च यत ॥

च्युतव्रताना व्रात्यानां तथा नैवेद्यभोजिनाम् ॥
कुकर्म्मणामवेदानामजपानां च शस्त्रिणाम् ॥ १ ॥
ग्राम्याणा कुलहीनाना विप्राणां नीचकर्म्मणाम् ॥
प्रेतान्नभोजिनां चैव मागधानां च वदिनाम् ॥ २ ॥
घाटिकाना सेवकानां गधतांबूलजीविनाम् ॥
नटाना विप्रवेषाणा पर्शुरामान्वयायिनाम् ॥ ३ ॥
अन्यजात्युद्भवानां च वदिवेषोपजीविनाम् ॥
इत्यादिविप्ररूपाणां वटूकरणमिष्यते ॥ ४ ॥

अर्थ –व्रतसे भ्रष्ट हुए, संस्कारहीन, नैवेद्यका भोजन करनेवाले, कुकर्मके करनेवाले,जैन वेदको नही जाणनेवाले, वेद मंत्रोका जप न करनेवाले, शस्त्रको धारण करनेवाले, कुग्रामके वसनेवाले,कुलहीन, नीच कर्मके करनेवाले, प्रेतके अन्नका भोजन करनेवाले, मागध–स्तुतिपाठ पठनेवाले वदीराजादिकी स्तुति पढनेवाले, घंटिका वजानेवाले, सेवा करनेवाले, गधतांबूलकरके आजीविका करनेवाले, विप्रवेष धारण करनेवाले नट, पर्शुरामके सतानीय, अन्य जातिसे उत्पन्न हुए, वंदिवेषसे आजीविका करनेवाले, इत्यादि विप्ररूपको वटूकरण इच्छते हैं । तिस का यह विधि है प्रथम तिसके घरमे गृहस्थगुरु, यथोक्त विधिसें पोष्टिक करे पीछे तिसको शिखा वर्जके मुंडन करावे, पीछे तिसको तीर्थोदक

मंत्रोंकरके मंत्रित जलकरके स्नान करावे । तिर्थो दकाभिमंत्रणमंत्रोयथा ॥

" ॥ ॐ वं वरुणोसि वारुणमसि गांगमसि यामुनमसि गौदावरमसि नार्म्मदमसि पौष्करमसि सारस्वतमसि शातद्रवमसि वैपाशमसि सैंधवमसि चाद्रभागमसिवैतस्तमसि ऐरावतमसि कावेरमसि कारतोयमसि गौमतमसि शैतमसि शैतोदमसि रोहितमसि रोहितांशमसि सारेयवमसि हारिकातमसि हारिसलिलमसि नारिकांतमसि नारकांतमसि रौप्यकूलमसि सौवर्णकूलमसि सालिलमसि रक्तवतमसि नेमग्नसलिलमसि उन्मग्नसलिलमसि पाद्मसि महापाद्मसि तैगिछमसि केशरमसि जीवनमसि पवित्रमसि पावनमसि तदमु पवित्रय कुलाचाररहितमपि देहिनं॥

इस मत्रसे कुशाग्रकरी सात वार अभिसिचन करे पीछे नदीकाठे वा तीर्थऊपर, वा मदिरमे, वा पवित्र गृहस्थानमे तिस वटूकरण योग्यको, प्रथम तीनगुणी कुशमेखला, तीन प्रकारसे बांधे । मेखला बधमत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ पवित्रोसि प्राचीनोसि नवीनोसि सुगमोसि अजोसि शुद्धजन्मासि तदमुं देहिन धृतव्रत मव्रतं वा पावय पुनीहि अब्राह्मणमपि ब्राह्मणं कुरु ॥ "

इस मत्रका तीन वार पाठ करे ॥ पीछे कौपीन पहिरावे । कौपीनमत्रों यथा ॥

ॐ अब्रह्मचर्यगुप्तोपि ब्रह्मचर्यधरोपि वा ॥
व्रत कौपीनवधेन ब्रह्मचारी निगद्यते ॥ १ ॥

ऐसे तीन वार पढके कौपीन पहिरावणा. । पीछे पूर्वोक्त ब्राह्मणसमान उपवीत, मंत्रपूर्वक पहिरावे । मत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ सधर्म्मोसि अधर्मोसि कुलीनोसि अकुलीनोसि सब्रह्मचर्योसि सुमनाअसि दुर्म्मनाअसि श्रद्धालुरसि अश्रद्धालुरसि आस्तिकोसि नास्तिकोसि आर्हतोसि सौगतोसि नैयायिकोसि वैशेषिकोसि सांख्योसि चार्वाकोसि सलिगोसि अलिगोसि तत्त्वज्ञोसि अतत्त्वज्ञोसि तद्भव ब्राह्मणोऽमुनोपवीतेन भवंतु ते सर्वार्थसिद्धय ॥ "

इस मत्रको नव वार पढके उपवीत स्थापन करे. । पीछे तिसके हाथमें पलाशका दंड देवे, और मृग चर्म तिसको पहिरावे, और भिक्षा मागनी करावे भिक्षामार्गणकेपीछे उपवीतको वर्जके, मेखला, कौपीन, चर्मदंडादि दूर करे. । दूरकरनेकामंत्र यथा ॥

" ॥ ॐ ध्रुवोसि स्थिरोसि तदेकमुपवीत धारय ॥ '

ऐसे तीन वार पढे । पीछे गुरु, धारण किया है श्वेतवस्त्रका उत्तरासंग जिसने, ऐसे ब्राह्मणको, आगे बिठलाके, शिक्षा देवे । यथा ॥

परनिंदां परद्रोहं परस्त्रीधनवांछनम् ॥
मांसाशन म्लेछकदन्नक्षण चैव वर्जयेत् ॥ १ ॥

वाणिज्ये स्वामिसेवायां कपट मा कृथाः क्वचित् ॥
ब्रह्मस्त्रीभ्रूणगोरक्षां दैवर्षिगुरुसेवनम् ॥ २ ॥
अतिथीना पूजनं च कुर्याद्दानं यथा धनम् ॥
अथात्मघात मा कुर्या मा वृथा परतापनम् ॥ ३ ॥
उपवीतमिदं स्थाप्यमाजन्मविधिवत्त्वया ॥
शेष शिक्षाक्रम कथ्यश्चातुर्वर्ण्यस्य पूर्ववत् ॥ ४ ॥

अर्थ –परनिंदा, परद्रोह, परधनकी वांछा, मांस भक्षण, म्लेच्छकंद लशुनादिभक्षण, इनको वर्जना। वाणिज्यमें स्वामीकी सेवामे, कदापि कपट न करना, ब्राह्मण, स्त्री, गर्भ और गौ, इन चारोंकी रक्षा करनी देव ऋषि और गुरुकी सेवा करनी । अतिथीयोंका पूजन करना, धनके अनुसार दान देना, आत्मघात नही करना, परको पीडा न करनी । जन्मपर्यंत यावज्जीवे तबतक विधिपूर्वक उपवीत धारण करना, शेष शिक्षाक्रम पूर्ववत् चारों वर्णोंका कथन करना ॥ पीछे सो वटुकृत, गुरुको स्वर्ण, वस्त्र, धेनु, अन्न, दान करे । यहा वटुकरणमें वेदी, चतष्किका, समवसरण, चैत्यवदन, व्रतानुज्ञा, व्रतविसर्ग, गोदान,वासक्षेपादि नही है ॥ इति वटुकरणविधि ॥ इति द्वादशमोपनयनादिसंस्कारवर्णं समाप्तम् ॥

॥ अथ अध्ययनारंभ संस्कार लिख्यते ॥

अश्विनी, मूल, पूर्वा ३, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, हस्त, शतभिषा, स्वाति, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, येह नक्षत्र और बुध, गुरु, शुक्र, येह वार विद्यारंभमें शुभ हे अर्थात् इनोंमें प्रारंभ करी विद्या प्राप्त होती है रवि और चंद्र, मध्यम हैं मंगल और शनिवार, त्यागने योग्य है । अमावास्या, अष्टमी, प्रतिपत् (एकम,) चतुर्दशी, रिक्ता, षष्ठी, नवमी, येह तिथिये विद्यारंभमें सदाही वर्जनी ।

अथ उपनयनसदृश दिन और लग्नमें विद्यारंभ संस्कारका आरंभ करिये, तिसका यह विधि है. । गृहस्थगुरु प्रथम विधिसें उपनीत पुरुषके घरमे पौष्टिक करे, पीछे गुरु, मंदिरमें, वा उपाश्रयमें, वा कदंबवृक्षकेतले, कुशाके आसनउपर आप बैठके, शिष्यको वामेपासे कुशासनोपरि बिठलाके तिसके दक्षिण कानको पूजके तीनवार सारस्वत मंत्र पढे पीछे गुरु, अपने घरमे, वा पाठ शालामे वा पौषधागारमें, शिष्यको पालखी, वा घोडेपर चढायके मंगलगीतोंके गाते हुए, दान देते हुए, वाजंत्र वाजते हुए, यति गुरु केपास लेजाके मस्तीपूजापूर्वक वास क्षेप करवाके, पाठशालामें लेजावे पीछे गुरु शिष्यको आगे येह शिक्षाश्लोक पढे. । यथा ॥

अज्ञानतिमिरांधानां, ज्ञानांजनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥
यासां प्रसादादधिगम्य सम्यक्, शास्त्राणि विंदन्ति
परं पदज्ञाः ॥ मनीषितार्थप्रतिपादकाभ्यो नमोस्तु
ताभ्यो गुरुपादुकाभ्यः ॥ २ ॥
सत्येतस्मिन्नरतिरतिदं गृह्यते वस्तु दूरा, दप्यासन्नेप्य
सति तु मनस्याप्यते नैव किंचित् ॥ पुंसामित्यप्यवग
तवतामुन्मनीभावहेतो, विच्छा वाढं भवति न कथं
सद्गुरूपासनायाम् ॥ ३ ॥
इति मत्वा त्वया वत्स ! त्रिशुद्धोपासनं गुरोः ॥
विधेयं येन जायते गोधीकीर्तिधृतिश्रियः ॥ ४ ॥

ऐसें शिष्यको शिक्षा देके, और तिससें स्वर्ण वस्त्र दक्षिणा लेके, गुरु अपने घरको जावे पीछे उपाध्याय, सर्वको पहिले मातृका पढावे, पीछे विप्रको प्रथम आर्यवेद पढावे, पीछे पुराणी, पीछे न्याय व्याकर्ण धर्मशास्त्र पढावे, क्षत्रियको भी ऐसेंही चतुर्दश विद्या पढावे पीछे आयुर्वेद, धनुर्वेद, दंड नीति और आजीविकाशास्त्र पढावे वैश्यको धर्म शास्त्र, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र और अर्थशास्त्र पढावे शूद्रको नीतिशास्त्र और आजीविकाशास्त्र पढा वे, कारुयोंको तिनके उचित विज्ञानशास्त्र पढावे पीछे सा धुयोंको चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र पुस्तक दान देवे ।

इति त्रयोदशमविद्यारंभसंस्कारवर्णन समाप्त ॥

अथ विवाह संस्कार विधिलिख्यते ॥

विवाह जो है सो समानकुलशीलवालोकाही होता है यतउक्त ॥

ययोरेव समं शील, ययोरेव समं कुलम् ॥
तयोर्मैत्री विवाहश्च, न तु पुष्टविपुष्टयोः ॥ १ ॥

तिसवास्ते समकुलशील, समजाति, जाने है देशकृत्य जिनोंके, तिनका विवाहसवध जोडना योग्य है, तिसवास्ते जो अविकृत है, तिसनें विकृतकुलकी कन्या ग्रहण नही करनी । विकृतकुल यथा । जिनकेकुलमें शरीरऊपर रोम वहुत होवे, अर्शरोग होवे, दाद होवे, चित्रकुष्टि होवे, नेत्ररोग होवे, उदररोग होवे, ऐसे वंशोंकी कन्या न ग्रहण करनी विकृत कुल होनेसें । कन्या विकृता यथा । वरसें लंवी होवे, हीन अगवाली होवे, कपिला होवे, ऊची दृष्टिवाली होवे, जिसका नापण और नाम भयानक होवे, ऐसी कन्या विचक्षणोंको त्याग ने योग्य है तथा देवता, ऋषि, ग्रह, तारा, अग्नी नदी, वृक्षादिकके नामसें जो कन्या होवे, तथा जिसके शरीरऊपर वहुत रोम होवे, पिगाक्षी और घरघराखरवाली, ऐसी कन्या भी पाणिग्रहणमें वर्जनी ॥ कन्यादाने वरस्य विकृत कुल यथा ॥ हीन होवे, क्रूर होवे, वधूसहित होवे, दरिद्री होवे,

व्यसन (कष्ट) संयुक्त होवे, कन्यादानमे ऐसें कुल और पुरुषको वर्जना मूर्ख, निर्धन, दूर देशमे रहनेवाला, शूर, योद्धा, मोक्षाभिलाषी, कन्यासें तीन गुणासे अधिक उमरवाला, इनको भी कन्या न देनी तिसवास्ते दोनों अविकृत कुलोंका, और दोनों विकृत कुलवालोंका विवाहसंबध योग्य है तथा पांच शुद्धिये देखके वधूवरका संयोग करना, सोही दिखावे है राशि १, योनि २, गण ३, नाडी ४, और वर्ग ५, येह पांच शुद्धियें दोनोकी देखके वरवधूका सयोग करना । कुल १, शील २, स्वामिपणा ३, विद्या ४, धन ५, शरीर ६, और वय ७, येह सातो गुण वरमें देखने, अर्थात् येह सात गुण वरमेंदेखके कन्या देनी आगे जो होवे, सो कन्याका भाग्य है गर्भसे आठ वर्षसें लेके इग्यारह वर्ष तांइ कन्याका विवाह करना * तिसके ऊपरांत रजस्वला होती है तिसको राका भी कहते हैं तिसका विवाह शीघ्र होना चाहिये वरको पाकरके

* यह कथन प्राय लौकिकव्यवहारानुसार है क्योंकि, जैनागममें तो " जोवणगमणमणुपत्ता " इतिवचनात्, जब वरकन्या योवनको प्राप्त होवे, तब विवाह करना और ' प्रवचनसारोद्धार ' में लिखा है कि, सोला वर्षकी स्त्री, और पच्चीस वर्षका पुरुष, तिनके सयोगसें जो सतान उत्पन्न होवे, सो बलिष्ठ होवे है इत्यादि मूलागमसें तो बाललग्नका और वृध्धके विवाहका निषेध सिद्ध होता है ॥

चंद्रबलके हुए, तुच्छ महोत्सवके भी हुए, विवाह करना उचित है यतउक्तम् ॥

वर्षमासदिनादिनां शुद्धि राकाकरग्रहे ॥
नालोकयेच्चंद्रबलं वर प्राप्य विधापयेत् ॥ १ ॥

पुरुषका आठ वर्षसें लेके ८० वर्षके बीच २ विवाह होना चाहिये क्योंकि, अस्सीवर्ष उपरात प्राय' पुरुष शुक्ररहित होता है ।

विवाह दो प्रकारके होते हैं, आर्यविवाह १, और पापविवाह २ । आर्य विवाहके चार भेद हैं ब्राह्मविवाह १, प्राजापत्यविवाह २, आर्षविवाह ३, और दैवतविवाह ४ ये चारों विवाह मातापिताकी अज्ञासें होनेसें लौकिक व्यवहारमे धार्म्मिक विवाह गिने जाते हैं पापविवाहके भी चार भेद हैं गांधर्वविवाह १, आसुरविवाह २, राक्षसविवाह ३, और पैशाचविवाह ४ ये चारों स्वेच्छानुसार करनेसें पापविवाह गिने जाते हैं ।

प्रथम ब्राह्मविवाहविधि लिखते हैं । शुभ दिनमें, शुभ लग्नमें, पूर्वोक्त गुणसयुक्त वरको बुलवाके स्नान अलंकार करके सयुक्त हुए तिस वरकों अलंकृत कन्या देवे ॥ मंत्रो यथा ॥

" ॐ अर्हं सर्वगुणाय सर्वविद्याय सर्वसुखाय सर्वपूजिताय सर्वशोभनाय तुभ्य वस्त्रगंधमाल्यालं

कारालंकृतां कन्यां ददामि प्रतिगृह्णाप्व नऊं नवतु ते अर्हं ॐ ॥"

इस मंत्रकरके वऊांचलदंपती–स्त्रीभर्ता, अपने घरमे जावे ॥ इति धार्म्यो ब्राह्मयविवाह ॥ १ ॥

प्राजापत्य विवाह जगत्में प्रसिऊ है, इसवास्ते विस्तारसें कहेगे ॥

आर्ष विवाहमे वनमें रहनेवाले मुनि, ऋषि, गृहस्थ अपनी पुत्रीको, अन्यऋषिके पुत्रकों, गौ वैलके साथ देते है तहां अन्य कोइ उत्सवादि नही होते है, इस विवाहका मंत्र जैनवेदोमे नही है जैनी मंत्र जैन वेदकरके वर्णादि आश्रित हुए जैनोंके आचार कथन करनेवाले है और ऐसें विवाह अकृत्य होनेसें जैनोकों कथन करनेकी जरुर नही है दैवत। विवाहमे नी ऐसेंही जाणना। इन दोनो विवाहोके मत्र पर समयसें जाणने ॥ इति धार्म्य आर्षविवाह ॥ ३ ॥

दैवत विवाहमें तो, पिता, अपने पुरोहितकों इष्ट पूर्त्त कर्मके अतमे अपनी कन्याको दक्षिणाकी तरें देवे यह कार्य नी जैनोंकों सम्मत नही होनेसें इस्के मंत्रनी कथन करतें नही हैं ॥ इति दैवत धार्म्य विवाह ॥ ४ ॥ ये चार धार्म्यविवाह हैं ॥

पितादिकोंकी सम्मतीविना, अन्योन्यप्रीतिकरके जो विवाह होता है, सो गाधर्वविवाह ॥१॥

पणवंध, सो आसूरविवाह ॥ २ ॥ हठसे कन्या ग्रहण करे सो राक्षस विवाह ॥ ३ ॥

सुप्त, और प्रमत्तकन्याको ग्रहण करनेसे, पैशाच विवाह कहा जाता है ॥ ४ ॥ माता, पिता, गुरु, आदिकी आज्ञा न होनेसे इन चारो विवाहोको विवाहज्ञ पुरुष पापविवाह कहते हैं. ॥ तथा ब्रह्माय १ आर्ष २, और दैवत ३, येह तीन विवाह दु खमका लकलियुगमें प्रवर्त्तते नही हैं । चारों पापविवा होका वेदोक्तविधि जी नही है अधर्म होनेसे ॥

संप्रति वर्त्तमान प्राजापत्य विवाहका विधि कह ते है ॥ मूल, अनुराधा, रोहिणी, मघा, मृगशिर, हस्त, रेवती, उत्तरा ३, स्वाति, इन नक्षत्रोंमे लग्न करना । वेध, एकार्गल, लत्ता, पात, उपग्रहसयुक्त नक्षत्रोंमें विवाह नही करना । तथा युति, क्राति, साम्य, दोपमें जी नही करना । तीन दिनको स्पर्श नेवाली तिथिमें, (अवम् क्षय तिथिमे,) क्रूर तिथि में, दग्ध तिथिमे,) रिक्ता तिथिमें, अमावास्या, अष्टमी, षष्टी, द्वादशी इनमे विवाह नही करना । जद्रामे, गर्कांतमें, दुष्टनक्षत्र तिथि वार योगो, व्यतिपातमें, वैधृतिमे और निद्यसमयमें विवाह नही करना सूर्यके क्षेत्रमे वृहस्पति होवे और वृहस्पतिके क्षेत्रमे सूर्य होवे तो, दीक्षा, प्रति ष्ठा, विवाह प्रमुख वर्जने । चौमासेमे, अधिकमा

भोगोपभोगांतरायव्यवच्छेदाय, इमां अमुकनाम्नीं कन्यां अमुकगोत्रां अमुकनाम्ने वराय अमुकगोत्राय ददाति गृहाण अर्हं ॐ ॥ "

पीछे सर्व लोकोंकेतांइ कन्याके पक्षी तांबूल देवे । तथा दूर रहे विवाहकालमें वरके जीते हुए, सो कन्या अन्यको न देवे

उक्तच ॥

" सकृज्जल्पन्ति राजानस्सकृज्जल्पन्ति पण्डिताः ॥ सकृत् प्रदीयते कन्या त्रीण्येतानि सकृत् सकृत्॥१॥ "

राजाओ एकवार बोलते हैं, पंडित जन एक वार बोलते हैं, कन्या एकवार दिइजाती है पूर्वोक्त तीन कार्य एकएकहीवार होते हैं ॥ तथा वर भी, तिस कन्याको वस्त्र, आभरण, गधादिउत्सवसहित, तिसके पिताके घरमें देवे । कन्याका पिता भी, परिजनसयुक्त वरको, महोत्सवसहित वस्त्र मुद्रिकादिक देवे ॥

लग्नदिनसें पहिले मासमें, वा पक्षमें, अवकासानुसारें दोनों पक्षोके स्वजनोको एकठे करके, सांवत्सर–ज्योतिषिकको उत्तम आसनऊपर बिठलाके, तिसके हाथसें विवाहलग्न भूमिके ऊपर लिखवावे, और रूप्य, स्वर्णमुद्रा, फल, पुष्प, दूर्वा करके जन्म लग्नवत् विवाहलग्नको पूजे । पीछे ज्योतिषिको

दोनों पक्षोंके वृद्धनें वस्त्रालंकार तांबूलदान देना इति विवाहारंभ ॥

पीछे कोरे शरावलोंमें यव बोवने। पीछे कन्या के घरमें मातृस्थापना, और षष्ठीस्थापना, षष्ठी पूजनविधिके प्रकारसें करना । वरके घरमें मातृ स्थापन, और कुलकरस्थापन करना । परमतमे गण पति, कंदर्प स्थापन करते हैं सो सुगम, और लोक प्रसिद्ध है ॥

अथ कुलकर स्थापनविधि कहते हैं ॥ गृहस्थ गुरु भूमिपर नही पडे गोमय (गोबर) करके लीपी हुई भूमिमें, स्वर्णमय, रूप्यमय, ताम्रमय, वा श्रीप र्णीकाष्ठमय, पट्टा, स्थापन करे । पट्टकस्थापन मंत्र.

"॥ ॐ आधाराय नम आधारशक्तये नम. ।

इस मंत्रकरके एकवार मंत्रके पट्टेको स्थापन करके, तिस पट्टेको अमृतामंत्रकरके तीर्थजलोंसें अभिषिचन करके । पीछे चदन, अक्षत, दूर्वाकरके पट्टेको पूजे । पीछे आदिमें

"॥ ॐ नमः प्रथमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्या मवर्ण चंद्रयश प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रोच्चा रख्यापितन्याय्यपथाय, विमलवाहनाभिधानाय, इह विवाहमहोत्सवादौ आगछ २, इह स्थाने तिष्ट २, सन्निहितो भव २, क्षेमदो भव २, उत्सवदो भव २, आनंददो २, भोगदो भव २, कीर्तिदो

अपत्यसंतानदो भव २, स्नेहदो भव २, राज्यदो भव २, इदमर्घ्यं पाद्य बलि चर्चां आचमनीय गृहाण २, सर्वोपचारान् गृहाण ॥ " २, पीछे ॥

" ॥ ॐ गंध नम । ॐ पुष्प नमः । ॐ धूपं नम. । ॐ दीप नम. । ॐ उपवीतं नम । ॐ भूषणं नम । ॐ नैवेद्यं नम । ॐ तांबूलं नम ॥ "

पूर्वोक्त मंत्रकरी आव्हान संस्थापन करके, इस मंत्रसे अर्घ्य, पाद्य, बलि, चर्चा, आचमनीय, दान देवे. यह छोटे मंत्रोंसें गंधके दो तिलक, दो पुष्प, दो धूप, दो दीप, एक उपवीत, दो स्वर्णमुद्रा, दो नैवेद्य, दो तांबूल, चढावे. ॥१॥ पीछे दूसरे स्थानमें ॥

" ॥ ॐ नमो द्वितीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णचद्रकांता प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, चक्षुष्मदभिधानाय, ॥ " शेष पूर्ववत् ॥ २ ॥

" ॥ ॐ नमस्तृतीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णसुरूपाप्रियतमासहिताय माकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, यशस्वअभिधानाय ॥ " ॥ शेष पूर्ववत् ॥

" ॥ ॐ नमश्चतुर्थकुलकराय, श्वेतवर्णाय, श्यामवर्णप्रतिरूपाप्रियतमासहिताय, माकरमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, अभिचद्राभिधानाय ॥." शेष पूर्ववत् ॥

" ॥ ॐ नम. पचमकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णचक्षु कांताप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्या

पितन्याय्यपथाय प्रसेनजिदभिधानाय ॥" शेष पूर्ववत् ॥ ५ ॥

" ॥ ॐ नम षष्ठकुलकराय, स्वर्णवर्णाय, श्यामवर्णश्रीकांताप्रियतमासहिताय,धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय मरुदेवाभिधानाय, ॥ " शेष पूर्ववत् ॥ ६ ॥

" ॥ ॐ नमः सप्तमकुलकराय, काचनवर्णाय, श्यामवर्णमरुदेवाप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, नाभीअभिधानाय ॥ " शेष पूर्ववत् ॥ ॥ ७ ॥ इतिकुलकरस्थापन पूजनविधि ॥

यह कुलकरस्थापना और परसमयमें गणेशमदन स्थापना, विवाहके पीछे भी सात अहोरात्रपर्यंत रखनी चाहिये । पीछे वरके घरमें शांतिक, पौष्टिक करे और कन्याके घरमे मातृपूजा पूर्ववत् । पीछे विवाहकालसें पूर्व सात, नव, इग्यारह, वा तेरह, दिनोंमे वधूवरको अपने २ घरमे, मंगलगीतवाजंत्र पूर्वक, तैलाभिषेक और स्नान, नित्य विवाहपर्यंत कराना. । प्रथमतैलाभिषेकदिनमें, वरके घरसें कन्याके घरमें, तैल, शिर प्रसाधनगधद्रव्य, द्राक्षादि खाद्य, शुष्कफल, भेजने । नगरकी औरतें वरके घरमें और कन्याके घरमें, तैल, धान्य, ढौकन करें । वधूवरके घरकी वृद्ध नारीयों तिन तेल धान्यढौकने वाली नारीयोंको, पूडे आदि पक्वान्न देवें । तहां धारणादि देशाचार, कुलाचारोंसें करना । तैलाभि

पेक, कुलकर गणेशादि स्थापन, कंकणबंध, अन्य विवाहके उपचारदिक सर्व, वधूवरको चद्रबलके हुए, विवाहवाले नक्षत्रमें करना । तथा धूलिभक्त, कोर भक्त, सौभाग्यजलल्यावन प्रमुख, कर्म, मंगलगीत वाजंत्रादिसहित देशाचार कुलार विशेषसें करना । पीछे जेकर, वर, अन्य ग्रामांतर, नगरांतर, वा देशांतरमे होवे तो, तिसकी गमनयात्रा (जान जनेत वरात) कन्याके निवासस्थानप्रति करनी, तिसका विधि यह है ॥

प्रथम एक दिनमें मातृपूर्वक सर्व लोकोंको भोजन देना, पीछे दूसरे दिन सुस्नात होके, चदन का लेपन करके, वस्त्रगधमाल्यादिकरके अलंकृत होके, मुकुट भूषित शिरको करके, घोडेपर, वा हाथी पर, वा पालखीमें आरूढ होके, वर चले. । तिसके समीप, अच्छे वस्त्रोंवाले, प्रमोदसहित, पानबीडे चावे हुए, सबधी ज्ञातिजन, अपनी २ सपदानुसार घोडेआदि ऊपर चढे हुवे, वा पगोसें चलते हुए, वरकेसाथ चलें । दोनों पासे, मंगलगानमे तत्पर ऐसी ज्ञातिकी नारीयां चलें और आगे जैन ब्राह्मणलोक, गृहशातिमत्र पढते हुए चलें ॥

"ॐ अर्हं आदिमोर्हन्, आदिमो नृप, आदिमो यता, आदिमो नियता, आदिमो गुरु, आदिम स्रष्टा, आदिम कर्त्ता, आदिमो भर्त्ता, आदिमो

जयी, आदिमो नयी, आदिम. शिल्पी, आदिमो विद्वान्, आदिमो जल्पक, आदिम. शास्ता, आदिमो रौद्र, आदिम. सौम्य, आदिम. काम्य, आदिम, शरण्य, आदिमो दाता, आदिमो वंद्य', आदिम स्तुत्यः, आदिमो ज्ञेय, आदिमो ध्येय., आदिमो भोक्ता, आदिम सोढा, आदिम एक, आदिमोऽनेकः, आदिम स्थूल, आदिम कर्म्मवान् आदिमोऽकर्म्मा, आदिमो धर्म्मवित्, आदिमोऽनुष्टेय., आदिमोऽनुष्ठाता, आदिम सहज, आदिमो दशावान् आदिम सकलत्र., आदिमो निकलत्र, आदिमो विवोढा, आदिमः व्यापक, आदिमो ज्ञापक, आदिमो विदुर, आदिम कुशल, आदिमो वैज्ञानिक, आदिम सेव्य, आदिमोगम्य., आदिमो विमृश्य, आदिमो विभ्रष्टा, सुरासुरनरोरग प्रणत., प्राप्तविमलकेवलो यो गीयते, सकलप्राणिगणहितो, दयालुरपरापेक्षापरात्मा, परंज्योति, परं ब्रह्मा, परमैश्वर्यभाक्, परंपर, परापरो, जगदुत्तम, सर्वग', सर्ववित्, सर्वजित्, सर्व्वीय., सर्व्वप्रकास्य सर्ववंद्य, सर्वपूज्य, सर्वात्माऽससारोऽव्ययोऽवार्यवीर्य, श्रीसंश्रय, श्रेय, सश्रय, विश्वावश्यायहृत्, संशयहृत्, विश्वसारो, निरजनो, निर्मम्मो, निकलको, निपाप्मा, नि.पुण्य', निर्मना, निर्वाचा, निर्देहो, निसशयो,निराधारो,निरवधि प्रमाणं,प्रमेय,प्रमाता,

जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्जरावंधमोक्षप्रकाशकः, स एव भगवान्, शान्तिं करोतु, तुष्टिं करोतु, पुष्टिं करोतु, ऋद्धिं करोतु, वृद्धिं करोतु, सुखं करोतु, सौख्यं करोतु, श्रियं करोतु, लक्ष्मीं करोतु अर्हं ॐ ॥

ऐसें आर्यवेदके पाठी ब्राह्मण, आगे चलें। पीछे इसी विधिसें महोत्सवकरके, चैत्यपरिपाटी, गुरुवंदन, मंगलीपूजन, नगरदेवतादिपूजन, करके, नगरके समीप रहे, पीछे पथमे चलें। तथा इसी रीतिसें कन्याधिष्ठित नगरमें प्रवेश करना। तिसही नगरमें विवाहकेवास्ते चले हुए वरका भी, यही विधि जाणना। तथा नित्यस्नानके अनंतर कौसुंभ सूत्रकरके वधूवरके शरीरका माप करना। पीछे विवाहदिनके आये हुए, विवाहलग्नसें पहिले, तिस ही नगरका वासी, वा अन्यदेशसे आया वर, तिस ही पूर्वोक्त विधिसें, पाणिग्रहणकेवास्ते चले तिस की बहिन विशेषकरके लूणआदि उत्तारण करे। पीछे वर, आमवर और गृहस्थगुरुसहित कन्याके घरके द्वारमें आवे तहा खडे हुए वरको, तिसके सासुजन, कर्पूरदीपकादिकरके आरात्रिक (आरति) करे। पीछे अन्य स्त्री, जलते हुए अगारे, और लवणकरके सयुक्त, त्रम त्रम ऐसे शब्द करते हुए, सरावसंपुटको, वरको निरुछन करके, प्रवेशमार्गके वामे पासे स्थापन करे। पीछे अन्य स्त्री कौसु

नसूत्रसें अलंकृत, मंथानको लाके, तिससें, तीन वार वरके ललाटको स्पर्श करे । पीछे वर, वाहन सें नीचे उतरके, वामे पगसे तिस अग्निलवण संयुतसंपुटको खंडित करे (तोडे) पीछे वरकी सासु, वा कन्याकी मामी, वा कन्याका मामा, कौसु नवस्त्रको वरके कठमें घालके, खेचता हुआ वरको मातृघरमें ले जावे तहा विभूपाकरके, कौतुकमग लकरके, प्रथम आसनऊपर बैठी हुई कन्याके वामे पासे, मातृदेवीके सन्मुख, वरको विठलावे । पीछे गृहस्थगुरु लग्नवेलामे शुभांशके हुए, पीसी हुई सनी (खेजडी) की ठाल, और पीपलिकी ठाल, चंदनद्रव्यमिश्रितकरके, तिससें लीपे हुए, वधूवरके दोनों दक्षिण हाथ जोडे । उपर कौसुंभसूत्रसे बांधे ॥ हस्तबंधनमंत्र ॥

"॥ ॐ अर्हं आत्मासि, जीवोसि, समकालोसि, समचित्तोसि, समकर्म्मासि, समाश्रयोसि, समदेहोसि, समक्रियोसि, समस्नेहोसि, समचेष्टितोसि, समाभिलाषोसि, समेच्छोसि, समप्रमोदोसि, समविषादोसि, समावस्थोसि, समनिमित्तोसि, समवचाअसि, सम क्षुत्तृष्णोसि, समगमोसि, समागमोसि, समविहारोसि, समविषयोसि, समशब्दोसि, समरूपोसि, समगंधोसि, समस्पर्शोसि, समेंद्रियोसि, समाश्रवोसि, समबंधोसि, समसंवरोसि, समनिर्जरोसि, सम

मोक्षोसि, तत् एहि एकत्वमिदानी अर्हं ॐ ॥" इति हस्तवधनमंत्र ॥

यहा समयातरमे (वैदिक मतमें) मधुपर्क भक्षण, देशातरमे वरको दो गोयां देनी, और कुलांतरमें कन्याको आभरण पहिरावणे, इत्यादि करते हैं। पीछे वधुवरको मातृघरमें बैठे हुए, कन्याके पक्षी, वेदिकी रचना करें, तिसका विधि यह है ॥ कितनेक काष्टस्तभ काष्टाच्छादनोकरके चौकूणी वेदी करते हैं, और कितनेक चारो कूणोमे स्वर्ण, रूप्य, ताम्र, वा माटीके सात सात कलशोको ऊपर लघु, लघु, अर्थात् प्रथम बडा उसके ऊपर छोटा, उसके ऊपर फिर छोटा, एव स्थापन करके चारों पासे चार चार आर्द्र वांसोसें बाधके वेदि करते हे चारों वारणोमें वस्त्रमय, वा काष्टमय तोरण, और चदन मालिका बांधते हे, और अंदर त्रिकोण अग्निका कुड करते हैं। वेदी बनाया पीछे गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त वेष धारण करके वेदिकी प्रतिष्ठा करे। तिसका विधि यह है ॥

वास पुष्प अक्षतों सें हाथ भरके ॥

"॥ ॐ नमः क्षेत्रदेवतायै शिवायै क्रॉ क्रीं क्रुं क्रौं क्र इह विवाहमडपे आगच्छ २ इह वलिपरिभोग्य गृह २ भोग देहि, सुख देहि, सतति देहि यशोदेहि,

ऋद्धि, देहि, वृद्धि देहि, बुद्धि देहि, सर्वसमीहितं देहि, श स्वाहा ॥"

ऐसे पढके चारो कोणोमे न्यारेन्यारे वास, माल्य, अक्षत, क्षेप करना, तोरणकी प्रतिष्ठाभी ऐसेंही करनी तन्मंत्रो यथा ॥

"ॐ ह्रीं श्रीं नमो हारश्रिये, सर्वपूजिते, सर्व मानिते, सर्वप्रधाने, इह तोरणस्थासर्वसमीहितं देहि श स्वाहा ॥"॥ इतितोरणप्रतिष्टा ॥

पीछे वेदिके मध्यमे अग्निकोणेमे अग्निकुण्डमे मंत्रपूर्वक अग्निको स्थापन करे । अग्निस्थापन मंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ रां रीं रूं रौं र नमोऽग्नये, नमो बृह ज्ञानवे, नमोनततेजसे, नमोनतवीर्याय, नमोनंतगु णाय, नमो हिरण्यरेतसे, नमछागवाहनाय, नमो हव्यासनाय, अत्र कुंडे आगच्छ श अवतर श तिष्ट श स्वाहा ॥"

समयांतरमे, देशांतरमें वा कुलांतरमे, वेद्यंतर मेंही, हस्तलेपन करते है देश कुलाचारादिमें मधु पर्क प्राशनके अनंतर, वेदि, और हस्तलेपसे पहि ले परस्पर कंकायुद्ध, वधूवरास्फालन, वेणानयन, मणिग्रथन, स्नान, नाष्टकर्म, पर्याणकर्म्म, वस्त्रकोसु नसूत्रात कर्पणप्रमुख, कर्म्म करते है वे देशविशे षलोकोंसें जाण लेने व्यवहार शास्त्रोंमें नही कहे

हे परंतु स्त्रीयोको सौभाग्यप्राप्तिवास्ते, शौक आदि न होवे तिसके वास्ते, वरको वशीभूत करनेके वास्ते करते हे ॥

पीछे युक्त हाथवाले, नारी और नरकी कटी उपर चढे हुए वधूवर दोनोको, गीतवाजत्रादि बहुत आडंबरसे दक्षिण द्वारसें प्रवेश कराके वेदिके मध्यमे लावे । पीछे देशकुलाचारसे काष्टासनोंके ऊपर, वा वेत्रासनोके ऊपर, वा सिंहासनके ऊपर, वा अधोमुखी शरमय खारीके ऊपर, वधूवरको पूर्व सन्मुख बिठलावे । तथा हस्तलेपमें, और वेदिकमेमे कुलाचारके अनुसार दसियां सहित कौरवस्त्र, वा कौसुंभवस्त्र, वा स्वभाववस्त्र वधूवरको पहिरावे पीछे गृहस्थगुरु, उत्तरसन्मुख मृगचर्म ऊपर बेठाहुआ, शमी, पिप्पल, कपित्थ (कवठ–एतवेल) कुटज (कुडची–जिस वृक्षका फल इंद्रयव होता हे,) बिल्व, आमलकके इंधनकरके अग्निको जगाके, इस मंत्रकरके घृत मधु तिल यव नाना फलोंका हवन करे ॥ मंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ अर्हं अग्ने प्रसन्न , सावधानो भव, तवाय मवसर , तदाहारयेद्र यम नैऋत वरुण वायु कुवेरमी शानं नागान् ब्रह्माण लोकपालान् ग्रहांश्च सूर्यशशि कुजसौम्यबृहस्पतिकविशनिराहुकेतून् सुरांश्चअसुरनागसुपर्णविद्युदग्निद्वीपोदधिदिक्कुमारान् भुवनपतीन्

पिशाचभूतयक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषमहोरगगंधर्वान् व्यंतरान् चंद्रार्कग्रहनक्षत्रतारकान् ज्योतिष्कान् सौधर्मेशान् सनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलांतकशुक्रसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरभवान् वैमानिकान् इंद्रसामानिकपार्षद्यत्रायस्त्रिंशल्लोकपालानीकप्रकीर्णकलोकांतिकाभियोगिकभेदभिन्नांश्चतुर्णिकायानपि सभार्यान् सायुधबलवाहनान् स्वस्वोपलक्षितचिह्नान् अप्सरसश्च परिगृहितापरिगृहितभेदभिन्ना सखिका सदासिका साभरणा रुचकवासिनीर्दिक्कुमरिकाश्च सर्वा समुद्रनदीगिर्याकरवनदेवतास्तदेतान् सर्वान् सर्वाश्च इदमर्घ्यं पाद्यमाचमनीयं बलिं चरुं हुतं न्यस्तं ग्राह्य २ स्वयं गृहाण २ स्वाहा अर्हं ॐ॥"

पीछे अछीतरे हुत करके प्रदीप्त अग्निके हुए, गृहस्थगुरु, तहांसें उठके दक्षिणपासे स्थित हुई वधूके सन्मुख बैठके, ऐसा कहे ॥

"॥ ॐ अर्हं इदमासनमध्यासीनौ, स्वध्यासीनौ, स्थितौ, सुस्थितौ, तदस्तु वां, सनातनं संगमं, अर्हं ॐ ॥'

ऐसें कहके कुशाग्रतीर्थोदककरके दोनोंको सींचन करे । पीछे वधूका पितामह, वा पिता, वा चाचा, वा भाइ वा मातामह, वा कुलज्येष्ठ, धर्मानुष्ठान करके उचित वेषवाला, वधूवरके आगे बैठे । शांतिक पौष्टिकसें आरंभके विवाहसें मासपर्यंत मंगल

गान, वादित्रवादन, भोजन तांबूल वस्त्र सामग्री सदैव करनेचहिये ॥ पीछे गुरु ॥

"॥ ॐ नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य. ॥"

ऐसे कहके, प्रथम अक्षतपूर्ण हाथवाला होके वधूवरके आगे ऐसा कहे ॥

"विदितं वां गोत्रं संबंधकरणेनैव ततःप्रकाश्यतां जनाग्रत."

जाना है तुमारा गोत्र, सबध करनेसेंही, तिस वास्ते प्रकाश करो, लोकोंके आगे। तब प्रथम वरके पक्षीय, अपने गोत्र, अपनी प्रवर, ज्ञाति और अपने अन्वय-वंशको प्रकाश करे,। पीछे वरकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, और वंशको प्रकाश करे। पीछे कन्याके पक्षीय, अपने गोत्र, प्रवर ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे। फिर कन्याकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे.। पीछे गुरु ॥

"॥ ॐ अर्हं अमुकगोत्रीय, श्यत्प्रवर, अमुक ज्ञाति, अमुकान्वय, अमुकप्रपौत्र, अमुकपौत्र अमुकपुत्र, अमुकगोत्रीय, श्यत्प्रवर अमुकज्ञातीय, अमुकान्वय, अमुकप्रदौहित्र, अमुकदौहित्र, अमुक सर्ववरगुणान्वितो, वरयिता, अमुकगोत्रीया, श्यत्प्रवरा, अमुकज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रपौत्री, अमुक पौत्री, अमुकपुत्री अमुकगोत्रीया, श्यत्प्रवरा, अमुक

ज्ञातीया,अमुकान्वया, अमुकप्रदौहित्री, अमुकदौहित्रीअमुका वर्य्या तदेतयोर्वर्य्यावरयोर्वरवर्य्ययोर्नि वि मो विवाहसंबधोस्तु शांतिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, धृतिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, अर्हं ॐ ॥" ऐसें कहे ॥

पीछे गुरु, वरवधूके पाससें गध, पुष्प, धूप, नैवेद्य करके अग्निकी पूजा करावे । पीछे वधू लाजांजलिको अग्निमें निक्षेप करे । पीछे फिर तैसेंही दक्षिण पासे वधू, और वामे पासे वर बैठे । पीछे गुरु वेदमत्र पढे

" ॥ ॐ अर्हं अनादिविश्वमनादिरात्मा, अनादि काल , अनादिकर्म्म, अनादिसंबधो, देहिनां, देहानु मतानुगतानां, क्रोधोहंकारछद्मलोभै , संज्वलनप्रत्या ख्यानावरणाप्रत्याख्यानानतानुबधिभि शब्दरूपरस गंधस्पर्शैरिष्टानिष्टापरिसकलितैः संबधो अनुबध. प्रतिबध सयोग सुगम सुकृत स्वनुष्टित सुनिवृत्त. सुप्राप्त सुलब्धो द्रव्यभावविशेषेण अर्हं ॐ॥ " यह मंत्र पढके फेर ऐसा कहे

" ॥ तदस्तु वा सिद्धप्रत्यक्षं केवलिप्रत्यक्षं चतु र्णिकायदेवप्रत्यक्षं विवाहप्रधानाग्निप्रत्यक्षं नागप्रत्यक्षं नरनारीप्रत्यक्षं नृप्रत्यक्ष जनप्रत्यक्ष मातृप्रत्यक्ष पितृप्रत्यक्ष, मातृपक्षप्रत्यक्ष पितृपक्षप्रत्यक्ष ज्ञाति

"॥ अद्य अमुकसंवत्सरे, अमुकायने, अमुकऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवारे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुकमुहूर्त्ते, पूर्वकर्मसवधानुवरूवस्त्रगंधमाल्यालकृतां सुवर्णरूप्यमणिभूषण भूषिता ददात्यय प्रतिगृह्णीष्व ॥"

ऐसें कहके वधूवरके योजित हाथमे जलक्षेप करे। तव वर कहे "प्रतिगृह्णामि" तदनंतर गुरु कहे "सुप्रतिगृहीतास्तु, शातिरस्तु, पुष्टिरस्तु, ऋद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धनसतानवृद्धिरस्तु, ॥"

पीछे प्रथम तीन लाजामे कन्याके हाथ ऊपर थे अव कन्याके हाथको नीचे करे, और वरके हाथको ऊपर करे, पीछे वरवधूको आसनसें ऊठाकर वरको आगे करे, और वधूको पीछे करे । पीछे लाजाकी मुष्टि अग्निमे प्रक्षेप करकेगुरु ऐसे कहे "प्रदक्षिणीक्रियता विभावसु" वर वधूको प्रदक्षिणा करते हुए, कन्याका पिता, यावत् कन्याका कुलज्येष्ट, वरवधूके देनेयोग्य वस्त्र, आभरण, स्वर्ण, रूप्य, रत्न, ताम्र, कांश्य, भूमि, निष्क्रय, हाथी, घोडा, दासी, गौ, वैल, पल्यक, तूलिका, उत्सीर्षक, दीप, शस्त्र, पाकके भांडे, आदि सर्व वस्तुको वेदिमे ल्यावे । और भी तिसके भाइ, संवधी, मित्रादि, स्वसंपदाके अनुसारसे देने योग्य वस्तुयें वेदिमे ल्यावे । पीछे प्रदक्षिणाके अतमे वरवधू, तैसेंही आसन

ऊपर बैठें नवर इतना विशेष है कि, चतुर्थ लाजा के अनंतर वरका आसन दक्षिण पासे, और वधू, का आसन वामे पासे करणा । पीछे गुरु, कुश दूर्वा अक्षत वास करके हस्त पूर्ण हुआ थका, ऐसें कहे.

" ॥ शक्रादिदेवकोटिपरिवृतो जोग्यफलकर्मजोगाय संसारिजीवव्यवहारमार्गसदर्शनाय, सुनंदासुमंगले पर्यणेपीत्,ज्ञातमज्ञात वा तदनुष्टानमनुष्टितमस्तु '

ऐसें कहके वास, दूर्वा, अक्षत, कुशको वरवधूके मस्तक ऊपर क्षेप करे । पीछे गुरुके कहनेसें वधूका पिता, जल, यव, तिलका तेल हाथमें लेके, ऐसे कहे सुदायंददामि, प्रतिग्रहाण तब वर कहे " प्रतिगृह्णामि प्रतिगृहीत परिगृहीतं " गुरु कहे " सुगृहीतमस्तु सुपरिगृहीतमस्तु " पुन तैसेंह। वस्त्र, भूषण, हस्ति, अश्वादि दाय, देनेमें वधूके पिताका, और वरका यही वाक्य, और यही विधि है.। पीछे सर्व वस्तुके दीए हुए गुरु ऐसें कहे

" ॥ वधूवरौवां, पूर्वकर्म्मानुबंधेन, निबिडेन, निकाचितवद्धेन, अनुपवर्त्तनीयेन, अपातनीयेन, अनुपायेन, अक्षयेन, अवश्यजोग्येन, विवाह प्रतिबद्धो बभूव, तदस्त्वखमितोऽक्षयोऽव्ययो, निरपायो, निर्व्याबाध , सुखदोस्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु,ऋद्धिरस्तु,वृद्धिरस्तु, धनसंतान वृद्धिरस्तु ॥ '

ऐसा कहके तीर्थोदकोंकरके कुशाग्रसे सिंचन

पूर्वोक्त रीतिसें अचलग्रथन करके अनेक वस्तुदान पूर्वक तिसही आमवरसे स्वगृहको पहुंचावे । पीछे सात रात्रिपर्यंत, वा मासपर्यंत, वा ७ मासपर्यंत, वा वर्षपर्यंत स्वकुलसंपत्तिदेशाचारानुसार महोत्सव करना सात रात्रिके अनतर, वा मासअनंतर, कुलाचारानुसारकरके कन्याके पक्षमे पूर्वोक्त रीतिकरके मातृविसर्जन करना –गणपतिमदनादिविसर्जन विधि लोकमे प्रसिद्ध है –और वरपक्षमे कुलकर विसर्जनविधि लिखते हैं । कुलकरस्थापनानंतर, नित्य कुलकरकी पूजा करनी । विसर्जनकालमे कुलकरोंका पूजन करके, गुरु पूर्ववत् " ॐ अमुककुलकराय " इत्यादि संपूर्णमत्र पढके " पुनरागमनाय स्वाहा " ऐसें सर्वकुलकरोंको विसर्जन करे ॥ पीछे यह पढे,

" आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मत्रहीन च यत्कृतं ॥
तत्सर्वं कृपया देव क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥ '

इतिकुलकरविसर्जनविधि. ॥

पीछे मडलीपूजा, गुरुपूजा, वासक्षेपादि पूर्ववत् । साधूओंको वस्त्र पात्र देना । ज्ञानपूजा करणी । जैन ब्राह्मणोको याचकोकों अपर मागनेवालोको यथासपत्तिसें दान करणा ।

तथा देशकुलसमयातरमें विवाहलग्नके प्राप्त हुए, वरको श्वशुरके घरको प्राप्त हुए, षट् (६) आचार करते हैं प्रथम अगणमें आसन देना । श्वशुर कहे

"विष्टरं प्रतिगृहाण" तब वर कहे "ॐ प्रतिगृह्णामि" ऐसे कहके आसन ऊपर बैठे ॥ १ ॥ पीछे श्वशुर वरके पग प्रक्षालन करे ॥ २ ॥ पीछे दहि चंदन अक्षत दूर्वा कुश पुष्प श्वेतसरसों और जल करके श्वशुर जमाइको अर्घ देवे ॥ ३ ॥ पीछे आचमन देवे ॥ ४ ॥ पीछे गंधअक्षतसे तिलक करे ॥५॥ पीछे वरको मधुपर्क प्राशन करावे ॥ ६ ॥ पीछे गृहके अंदर वधूवरका परस्पर दृष्टिसंयोग और परस्पर दोनोंका नामग्रहण, शेष पूर्ववत् ॥

इति चतुर्दशम विवाह संस्कार समाप्त ॥

अथ पंचदशम व्रतारोप संस्कार प्रारभ्यते ।

इहां जैनमतमे गर्भाधानसे लेके विवाहपर्यंत चतुर्दश १४ संस्कारोंकरके संस्कृत भी पुरुष, व्रतारोपसंस्कारविना इस जन्ममे प्रशंसा पात्र नही होता है और परलोकमे आर्यदेशादिभावपवित्रित मनुष्य जन्म स्वर्गमोक्षादिका भाजन नही होता है इस वास्ते व्रतारोपही, मनुष्योंको परमसंस्कार है यत उक्तमागमे ।

"बंभणो खत्तिउ वावि, वेसो सुद्दो तहेवय ॥
पयई वादि धम्मेण, जुत्तो मुक्खस्स भायण॥१॥"

अर्थ —ब्राह्मण, वा क्षत्रिय, वा वैश्य, वा शूद्र, धर्मसें युक्त हुआ, मोक्षका भाजन होता है ॥ १ ॥

बहत्तर कलाकुशल भी, विवेकसहित भी होवे, तो भी वो नर कुशल नही हैं, जो, सर्वकलायोंमे प्रधान जो धर्मकला तिसको नही जाणताहो ॥ १ ॥ परमतमे भी कहा है । 'उपनीतोपि पूज्योपि कलावानपि भार्गव । न परत्रेह सौख्यानि प्राप्नोति च कदाचन ॥ १ ॥' इसवास्ते सर्वसंस्कार मे प्रधान व्रतसंस्कार कहते हैं । तिसका विधि यह है

पीछले विवाहपर्यंत संस्कार गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणने वा क्षुल्लकने कराने परंतु व्रतारोपसस्कार तो, निर्ग्रंथ यतिनेही करावणा प्रथम गुरुकी गवेषणा करणी

गुरू कैसे होना ।

पांच महाव्रतयुक्त, ५, पाच प्रकारके आचार पालनेमें समर्थ, ५, पाच समिति, ५, और तीन गुप्ति सहित, ३, एवं छत्तीस गुणोंवाला गुरु होता है । प्रतिरूप, तेजस्वी, युग प्रधान, आगमका जानकार, मधुर वाक्यवाला, गंभीर, बुद्धिमान्, उपदेश देनेमें तत्पर, ऐसा आचार्य होना है । किसीका आलोचित दूषण अन्यआगे प्रकाशे नही, सोमप्रकृतिवाला होवे, शिष्यादिका सग्रह करनेवाला होवे, द्रव्यादि अभिग्रहमे जिसकी मति होवे, किसीके दूषण न बोले, चपल न होवे, प्रशांतहृदयवाला होवे, ऐसे गुणोंयुक्त गुरु होता है । कितनेही जिनवरेंद्र अजरामर पदका पथ दिखाके मोक्षको प्राप्त

हुए है, परं संप्रति कालमें तो, जिनप्रवचन, आचार्य नेही धारण करा है ॥

अब प्रकारांतरकरके गुरुके छत्तीस गुण कहते हैं । आचारविनय, श्रुत विनय, विक्षेपनाविनय, दोषका परिघात, एवं चार प्रकारके विनयकी प्रतिपत्ति कर नेवाले गुरु होवे । अथवा सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र, इनप्रत्येकके आठ ८ भेद हैं, एवं २४, और तपके द्वादश १२ भेद हैं, ऐसें आचार्यके छत्तीस गुण होते हैं ।

अथवा आचारादि आठ ८, और दश प्रकारका स्थितकल्प १० द्वादश १२ तप और षडावश्यक ६ ये छत्तीस गुण आचार्यके हैं ।

अथवा संविग्न १, मध्यस्थ २, शांत ३, मृदु–कोमलस्वभाववाला ४, सरल ५, पंडित ६, सुसंतुष्ट ७, गीतार्थ ८, कृतयोगी ९, श्रोताके भावको जानने वाला १०, व्याख्यानादिलब्धिसंपन्न ११, उपदेशदेनेमें निपुण १२, आदेयवचन १३, मतिमान् १४, विज्ञानी १५, निरुपपाति १६, नैमित्तिक १७, शरीरका बलिष्ट १८, उपकारी १९, धारणाशक्तिवाला २०, बहुत कुछ जिसने देखा २१, नैगमादि नयमतमें निपुण २२, प्रियवचनवाला २३, अच्छे मधुर गंभीर स्वरवाला २४, तप करणेमें रक्त २५, सुंदर शरीर वाला २६, शुभ भली प्रतिभावाला २७, वादियोंको

जीतनेवाला २८, परिषदादिको आनंदकारक २९, शुचि–पवित्र ३०, गंभीर ३१, अनुवर्त्ती ३२, अंगीकार करेका पालनेवाला ३३, स्थिरचित्तवाला ३४, धीर ३५, उचितका जाननेवाला ३६, ये पूर्वोक्त ३६, गुण आचार्यके सूत्रमें कहे हैं ॥

ऐसें पितापरपरायसें माने गुरुके प्राप्त हुए, वा, तिसके अभावमे पूर्वोक्त गुणयुक्त अन्यगच्छीय गुरुके प्राप्त हुए, गृहस्थको व्रतारोपणविधि योग्य है, सो विधि यह है ॥ चतुर्दश संस्कारोकरके संस्कृत ऐसा गृहस्थी गृहस्थधर्मको अंगीकार करने योग्य होता है ।

कहा है की

अक्षुद्र १, रूपवान् २, प्रकृतिसौम्य ३, लोकप्रिय ४, अक्रूरचित्त ५, भीरु ६, अशठ ७, सुदाक्षिण्य ८, लज्जालु ९, दयालु १० मध्यस्थ सोमदृष्टि ११, गुणरागी १२, सत्कथी १३, सुपक्षयुक्त १४, सुदीर्घदर्शी १५, विशेषज्ञ १६, वृद्धानुग १७, विनीत १८, कृतज्ञ १९, परहितार्थकारी २०, और लब्धलक्ष २१ इकीस गुणोंवाला श्रावक धर्मरत्नके योग्य होता है, अर्थात् इकीस गुण जिस जीवमे होवे, अथवा प्राय नवीन उपार्जन करे, तिस जीवमें उत्कृष्ट योग्यता माननी और थोडेसें थोडे इकीस गुणोंमेंसें चाहे कोइ दश गुण जीवमे होवे, तिसको जघन्य योग्य

तावाला जानना, ११–१२–१३–१४–१५–१६–१७–१८–१९–२० शेष गुणवालेको मध्यमयोग्यतावाला जानना इन इकीस गुणोका विस्तारसहित वर्णन अज्ञानतिमिरभास्करके द्वितीय खंडके ४६ पृष्ठसें लेके ७३ पृष्ठपर्यंतहे उहांसे देख लेना

योगशास्त्रमे श्रीहेमचंद्राचार्यजी एसाहि कहाहै की

न्यायसें धन उपार्जन करनेवाला, शिष्टाचारकी प्रशंसा करनेवाला, जिनका कुलशील अपने समान होवे, ऐसे अन्य गोत्रवालेके साथ विवाह किया है जिसने, पापसे डरनेवाला, प्रसिद्ध देशाचारको करनेवाला, अर्थात् देशाचारका उल्लंघन नही करनेवाला, किसी जगे भी अवर्णवाद नही बोलनेवाला, राजादिकोंमे विशेषसें अवर्णवाद वर्जनेवाला, । अतिप्रकट, वा अति गुप्त स्थानमे नही रहनेवाला, अछा पाडोसी होवे तिस घरमें रहनेवाला, जिस मकानके अनेक आनेजानेके रस्ते होवे तिस घरको वर्जनेवाला, । सदाचारोसे संग करनेवाला, मातापिताकी पूजा भक्ति करनेवाला, उपद्रवसंयुक्त स्थानको त्यागनेवाला, जगत्में जो कर्म निंदनीक होवे तिसमे प्रवृत्त नही होनेवाला, । अपनी आमदनीअनुसार खर्च करनेवाला, अपने धनके अनुसार वेष रखनेवाला, बुद्धिके आठ गुणोसे संयुक्त निरंतर धर्मोपदेश श्रवण करनेवाला, अजीर्णमे भोजनका त्यागी

वखतसर साम्यतासें भोजन करनेवाला, एक दूसरेकी हानी न होवे इस रीतिसें धर्म अर्थ कामको सेवने वाला, । यथायोग्य अतिथि साधु और दीनकी प्रतिपत्ति करनेवाला, सदा आग्रहरहित, गुणोंका पक्षपाती, । देशकालविरुद्धचर्या त्यागनेवाला, । कोइ भी कार्य करनेमे अपना वलावल जाननेवाला, जे पांच महाव्रतमे स्थित होवे और ज्ञानवृद्ध होवे तिनकी पूजा भक्ति करनेवाला, पोषणेयोग्यका पोषण करने वाला, । दीर्घदर्शी, विशेषज्ञ, कृतज्ञ, लोकवल्लभ, लज्जालु, दयालु, सौम्य, परोपकार करणेमें समर्थ, काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, हर्ष, इन षट ६ अंतरंग वैरियोंके त्याग करनेंमे तत्पर, पाच इंद्रियोंके समूहको वश करनेवाला, ऐसा पुरुष गृहस्थधर्मके वास्ते कल्पता है ॥ १० ॥

ऐसे पुरुषको व्रतारोप करना चहिये । प्राय करके व्रतारोपमे गुरु शिष्यके वचन प्राकृत भाषामे होते हैं, क्यों कि गर्भाधानादि विवाहपर्यंत संस्कारोंमें प्राय करके गुरुकेही वचन है, शिष्यके नहीं और गुरु प्राय शास्त्रविद् होते हैं, इसवास्ते संस्कृतही बोलते है । इहां व्रतारोपमे बाल, स्त्री, मूर्ख शिष्यों का क्षमाश्रमणदानपूर्वक वचनाधिकार है, तिस वास्ते तिनको संस्कृत उच्चार असामर्थ्य होनेसे प्राकृत वाक्य है तिसकी साहचर्यतासें तिसके

प्रबोधवास्ते, गुरुके वचन भी, प्राकृतही है ॥ यत उक्तमागमे ॥

' ॥मुत्तूण दिठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धत ॥
थीबालवायणठपाश्यमुश्यं जिणवरेहि ॥ १ ॥'

अर्थ'—दृष्टिवादको वर्जके कालिक उत्कालिक अंगसिद्धांतको स्त्रीबालकोंके वाचनार्थ जिनवरोंने प्राकृत कथन करे है ॥ यथाच ॥

बालस्त्रीवृद्धमूर्खाणा नृणां चारित्रकांक्षिणाम् ॥
अनुग्रहाय तत्त्वज्ञै सिद्धात प्राकृत कृतः ॥ १ ॥

और दृष्टिवाद बारमा अंग, परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वानुयोग ३, पूर्वगत ४, चूलिकारूप ५ पचविध सस्कृतमेंही होता है, सो बालस्त्रीमूर्खको पठनीय नही है संसारपारगामी तत्त्वउपन्यासके वेत्ता गीतार्थोंकोंही पठनीय है शेष एकादशांग कालिक उत्कालिकादिशास्त्र योगवाहि साधु साध्वी और संयमी बालकोंके पढने योग्य हैं इसवास्तेही अरिहंत भगवतोंने एकादशांगादि शास्त्र प्राकृतमे करे है. तिसवास्ते, व्रतारोपमे भी, गृहस्थ बाल स्त्री मूर्ख जनोके उपकारार्थ और, तैसे यतियोंकेभी, वचन, प्राकृतमें कहे है ॥

अथ मृदु, ध्रुव, चर, क्षिप्र नक्षत्रोंमें प्रथम भिक्षा, तप, नदी, आलोचनादि कार्य करणे शुभ है और मंगल, शनि, विना सर्व वारोमे । वर्ष,

मास, दिन, नक्षत्र, लग्न शुद्धिके हुए, विवाहदीक्षा प्रतिष्ठावत्, शुभ लग्नमे गुरु तिसके घरमें शांतिक पौष्टिक करके, फेर देवघरमे, शुभ आश्रममे, अन्यत्र, वा, यथाकल्पित समवसरणको स्थापन करे । पीछे स्नान करके स्वघरमे महोत्सवसहित आये हुए श्रावकको पूर्वाभिमुख गुरु, अपने वामे पासें स्थापके ऐसें कहे—कैसे श्रावकको—सकल श्वेत वस्त्र और श्वेत उत्तरासग धारण किया है जिसने, तथा मुखवस्त्रिका हाथमें धारण करी है जिसने, तथा जिसकी चोटी बांधी हुई है, चदनका मस्तकमे तिलक करा है जिसने, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत वा उत्तरीय, वा उत्तरासग धारण किया है जिसने ऐसे श्रावकको—क्या कहे सो कहते हैं ।

"सम्मत्तमि उलद्धे, थइयाइ नरयतिरियदाराइ ॥
दिवाणि माणुसाणि अ, मुक्कसुहाइं सहीणाइ ॥ १ ॥"

अर्थ—सम्यक्त्वके लाभ हुए, नरकतिर्यचगतिके द्वार ढाके है, और देवता मनुष्य मोक्षके सुख स्वाधीन है । पीछे गुरुकी आज्ञासें श्राद्धजन, नालिकेर अक्षत सुपारीसें पूर्ण हस्त करके परमेष्ठिमत्र पढता हुआ समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे । पीछे गुरुके पास आयकर, गुरु श्राद्ध दोनोही ईर्यापथिकीपडिक्कमे । पीछे आसन उपर बैठे गुरुके आगे, श्राद्धजन ऐसें कहे ॥

"इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ भगवन् इच्छाकारेण तुम्हे अह्मं सम्मत्ताइतिगारोवणिअनंदिकहावणिय वासक्खेवं करेह ॥"

पीछे गुरु, वासांको, सूरिमंत्रसें, वा, गणिविद्या अर्थात् वर्द्धमान विद्यासें, अग्निमंत्रके, परमेष्ठि और कामधेनु दोनों मुद्राकरके, पूर्वाभिमुख खडा होके, वामे पासे रहे श्रावकके शिरमे निक्षेप करे । तिस के मस्तकके उपर हाथ रखके, गणधर विद्यासें रक्षा करे गुरु आसनउपर बैठ जावे, और श्रावक पूर्ववत् समवसरणको प्रदक्षिणा करके, गुरु आगे क्षमा श्रमण देके कहे

"॥ इच्छाकारेण तुम्हे अह्म सम्मत्ताइतिगारोवणिअ चेइआइ वदावहे ॥"

पीछे गुरु और श्रावक दोनो, चार वर्द्धमानस्तुतियो करके चैत्यवंदन करें । जो छदसें वर्द्धमान होवे, और चरम जिनकी प्रथम स्तुतिवाली होवे, तिनको वर्द्धमानस्तुति कहते हे । पीछे चारस्तुतिके अतमें "श्रीशांतिदेवाराधनार्थ करेमि कासग्गं वदणवत्तियाण पूअणवत्तियाण सक्कारव० स० जावअप्पाण वोसिरामि" सत्ताइस उछ्वासप्रमाण अर्थात् 'सागरवरगंभीरा' तक चतुर्विंशतिस्तव चितवन करे. । पीछे 'नमो अरिहताण' कहके पारे । पार

केहे ' नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ' यह कहके स्तुति पढे । सोलिखतेहैं ।

" श्रीमते शांतिनाथाय, नम शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥१॥" अथवा " शांति शांतिकर, श्रीमान् शांति दिशतु मे गुरु ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥१॥" पीछे

" ॥ श्रुतदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्न ठ उससिएणयावत्अप्पाण वोसिरामि ॥ "

कायोत्सर्गमे एक नवकार चितन करे पीछे 'नमो अरिहंताण ' कहके पारे, पारके ' नमोर्हत् कहके स्तुति ॥ यथा ॥

' ॥ सुअदेवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघाय ॥, तेसिं खवउ सयय, जेसि सुयसारे भत्ती ॥ १ ॥ " अथवा

" श्वसितसुरभिगधालब्धभृगी कुरंगं, मुखशशि नमजस्त्र बिभ्रति या बिभर्ति ॥ विकचकमलमुच्चै सास्त्वर्चित्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुतागी ॥ १ ॥ "

" क्षेत्रदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्नत्थ उससिएणयावतआप्पाण वोसिरामि ॥ "

कायोत्सर्गमे एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे ' नमो अरिहंताण ' कहके पारे, पारके ' नमोर्ह कहके थूई पढे ॥

यस्या क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ॥
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

" ॥ भुवनदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्न छ उससिएण–यावत्–अप्पाण वोसिरामि ॥ "

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे 'नमोअरिहंताण' कहके पारे, पारके ' नमोर्हत् कह के स्तुति पढे ॥

"ज्ञानादिगुणयुक्तानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥"

" शासनदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्न छ० " कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चितन करे, पीछे 'नमोअरिहंताण ' कहके पारे, पारके ' नमोर्हत्सि द्धा० ' कहके स्तुति पढे

" या पाति शासने जैन, सद्य प्रत्यूहनाशिनी ॥
सान्निध्येतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥ १ ॥ "

" समस्तवैयावृत्त्यकराराधनार्थं करेमि काउसग्ग अन्नछ० ' कायोत्सर्गमे एक नमस्कार चितन करे, पीछे ' नमो अरिहताण ' कहके पारे, पारके ' नमो र्हत्सिद्धा ' कहके स्तुति पढे

" ये ये जिनवचनरता वैयावृत्त्योद्यताश्च ये नित्यम् ॥
ते सर्वे शांतिकरा भवंतु सर्वाणुयक्षाद्याः ॥ १ ॥ "

' नमो अरिहनाणं ' कहके बैठके " नमुथ्थुणं०

जावंतिचेइयाइ० " और ' अर्हणादिस्तोत्र " पढे सो लिखते हे

अरिहाण नमो पूअ, अरहताण रहस्स रहिआणं ॥
पयओ परमिठ्ठिण, अरुहताण धुअरयाण ॥ १ ॥
निद्दड्ढ अठकम्मिधणाण, वरनाणदंसणधराणं ॥
मुत्ताण नमो सिद्धाण, परमपरमिठ्ठिभूयाण ॥ २ ॥
आयारधराण नमो, पचविहायारसुठ्ठियाण च ॥
नाणीणायरियाण, आयारुवएसयाण सया ॥ ३ ॥
वारसविह अपूव्वं, दिताण सुअ नमो सुअहराण ॥
सययमुवज्झायाण, सज्झायज्झाणजुत्ताणं ॥ ४ ॥
सव्वेसि साहूण, नमो तिगुत्ताण सव्वलोएवि ॥
तवनियमनाणदसण, जुत्ताण वजयारीण ॥ ५ ॥
एसो परमिठ्ठीण पचन्हवि जावओ नमुक्कारो ॥
सव्वस्स कीरमाणो, पावस्स पणासणो होइ ॥ ६ ॥
भुवणेवि मंगलाण, मणुयासुरअमरखयरमहियाण ॥
सव्वेसिमिमो पढमो, होइ महामगल पढम ॥ ७ ॥
चत्तारि मगलं मे, हुतु अरहा तहेव सिद्धा य ॥
साहू य सव्वकालं, धम्मो य तिलोयमगल्लो ॥ ८ ॥
चत्तारि चेव ससुरा, सुरस्स लोगस्स उत्तमा हुति ॥
अरिहत सिद्ध साहू, धम्मो जिणदेसियमुयारो ॥९॥
चत्तारिवि अरिहते, सिद्धे साहू तहेव धम्म च ॥
ससारघोररक्कस, जएण सरण पवज्जामि ॥ १० ॥
अह अरहओ भगवओ, महइ महा वद्धमाणसामिस्स

पणयसुरेसरसेहर, नियलिकुसुमुच्चयकमस्स ॥ ११ ॥
जस्स वरधम्मचक्क, दिणयरबिंबव्व भासुरच्छाय ॥
तेएण पज्जलतं, गच्छइ पुरओ जिणदस्स ॥ १२ ॥
आयास पायालं, सयलं महिमंडलं पयासतं ॥
मिच्छत्तमोहतिमिरं, हरेइ तिएहपि लोयाणं ॥ १३ ॥
सयलमिवि जियलोए, चिंतियमित्तो करेइ सत्ताण ॥
रक्ख रक्खसकाइणि, पिसायगहभूअजक्खाण ॥ १४ ॥
लहइ विवाए वाए, ववहारे भावओ सरंतो अ ॥
जूए रणे अ राय, गणे अ विजय विसुद्धप्पा ॥ १५ ॥
पच्चूसपओसेसु, सयय भव्वो जणो सुहज्झाणो ॥
एअं जाएमाणो, मुक्क पइ साहगो होइ ॥ १६ ॥
वेआलरुद्दाणव, नरिंदकोहंमिरेवईण च ॥
सव्वेसिं सत्ताण, पुरिसो अपराजिओ होइ ॥ १७ ॥
विज्जुव्व पज्जलती, सवेसुवि अक्करेसु मत्ताओ ॥
पचनमुक्कारपए, इक्किके उवरिमा जाव ॥ १८ ॥
ससिधवलसलिलनिम्मल,आयरसहं च वन्निय विहु॥
जोयणसहप्पमाण, जालासयसहस्सदिप्पतं ॥ १९ ॥
सोलसमु अक्करेसु, इक्किक्क अक्कर जगज्जोअ ॥
भवसयसहस्समहणो, जमि ठिओ पच नवकारो॥२०॥
जो गुणइ हु इक्कमणो, भविओ भावेण पच नवकारं ॥
सो गच्छइ सिवलोय, उज्जोअतो दसदिसाओ ॥२१॥
तवनियमसजमरहो, पचनमोक्कारसारहिनिउत्तो ॥
नाणतुरंगमजुत्तो, नेइ फुड परमनिवाणं ॥ २२ ॥

पणयसुरेसरसेहर, वियलिकुसुमुच्चयकमस्स ॥ ११ ॥
जस्स वरधम्मचक्क, दिणयरविवव्व भासुरच्छाय ॥
तेएण पज्जलतं, गच्छइ पुरओ जिणदस्स ॥ १२ ॥
आयास पायालं, सयलं महिमण्डलं पयासतं ॥
मिच्छत्तमोहतिमिरं, हरेइ तिएहपि लोयाण ॥ १३ ॥
सयलमिवि जियलोए, चितियमित्तो करेइ सत्ताणं ॥
रक्क रक्कसमाइणि, पिसायगहभूअजक्काण ॥ १४ ॥
लहइ विवाए वाए, ववहारे भावओ सरंतो अ ॥
जूए रणे अ राय, गणे अ विजय विसुरूप्पा ॥ १५ ॥
पच्चूसपओसेसु, सयय भव्वो जणो सुहज्झाणे उपा
एअं झाएमाणो, मुक्क पइ साहगो हवेइ शक्रस्तव
वेआलरुद्दाणव, नरिंद दोनोंही करे । चैत्यवंदनके
सव्वेसि सत्ताइं, क्षमाश्रमणदानपूर्वक कहे
विज्जुव पतंगवन् सम्यक्त्वसामायिकश्रुतसामायिकदे
पचनसतसामायिकआरोवणिअ नदिकहावणिअं काउ
सग्गि करेमि ॥ "

गुरु 'कहे करेह" तब श्रावक "सम्मत्ताइतिगारोव
णिअ करेमि काउसग्ग अनत्थ०" इत्यादि कहके
सत्ताइस उच्छ्वास प्रमाण अर्थात् 'सागरवरगंभीरा
लग कायोत्सर्ग करे । पीछे नमो अरिहंताण कहके
गडेपुरुषविंशतिस्तव अर्थात् लोगस्स संपूर्ण पढे ।
पारके ॥ १ ॥ प्रतिलेखनपूर्वक श्रावक द्वादशा
पीछे मुखार फेर क्षमाश्रमण "भग

वन् सम्मत्ताइतिग आरोवेह" गुरु कहे "आरो वेमि" पीछे श्रावक गुरुके आगे खडा होके, अंजलि करके, मुखवस्त्रिकासें मुखाछादन करके, तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढे। पीछे सम्यक्त्वदंडक पढे सयथा॥

"॥ अहण भंते तुह्माणं समीवे मिछत्ताओ पडीक्कमामि सम्मत्त उवसंपज्जामि। तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। दव्वओण मिछत्तकारणाइ पच्चक्खामि सम्मत्तकारणाइ उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अद्यप्पभिई अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थिअदेवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइआणि वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्वि अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसि असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा। खित्तओण इहेव वा अन्नत्थ वा। कालओण जाव जीवाए। भावओण जाव गहेण न गहिज्जामि जाव ठलेण न ठलिज्जामि जाव सन्निवाएण नाभिभविस्सामि जाव अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परिणामो मे न परिवडइ ताव मे एअ[illegible]
अन्नत्थ रायाभिओगेण बला[illegible]
गेण देवयाभिओगेण [illegible]
वोसिरामि॥"

ऐसे तीनवार दंडक पढ[illegible]

"॥ अहण भते तुह्माण समीवे मिछत्ताओ पडि क्कमामि सम्मत्त उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अज्ज प्पभिई अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्न उत्थियपरिग्ग हियाणि चेइआणि वदित्तए वा नमं सित्तए वा पुव्विं अणालत्तेण आलवित्तए वा संल वित्तए वा तेसिं असण वा पाण वा खाइम वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउ वा अन्नत्थ रायाभि ओगेण गणाभिओगेण वलाभिओगेण देवयाभि ओगेण गुरुनिग्गहेण वित्तीकतारेण त चउव्विहं । तंजहा । दवओखित्तओ कालओ भावओ । दव्वओ ण दसणदव्वाइ अगीकयाइ । खित्तओण उड्ढलोए वा अहोलोए वा तिरिअलोए वा । कालओण जाव जीवाए । भावओण जाव गहेण न गहिज्जामि जाव ठलेण न ठलिज्जामि जाव सन्निवाएण नाभि भविस्सामि अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परि णामो मे न परिवडइ ताव मे एसा दसणपडिवत्ती ॥

इति गुरुविशेषेण द्वितीयो दण्डक. ॥ प्रथम दण्ड क दोनोमेंसें कोइ एक दण्डक तीन वार उच्चारण करे पीछे गाथा ॥

"इअ मिछत्ताओ विरमिअ सम्मं उवगम्म भण इ गुरुपुरओ ॥ अरिहंतो निस्संगो, मम देवो दक्ख णा साहू ॥ १ ॥"

गुरु तीन वार यह गाथा पढके श्राद्धके मस्तको

परि वासक्षेप करे । पीछे गुरु, आसन ऊपर बैठके गध अक्षत वासांको सूरिमंत्रसें, वा गणिविद्यासें मंत्रे । पीछे गधाक्षत वासाको हाथमे लेके जिन चरणोको स्पर्श करावे । पीछे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओको देवे ते साधुआदि, मुठीमें लेवे वे । पीछे श्राद्ध गुरुके आगे क्षमाश्रमण देके कहे ॥ ' जयवं तुप्पे अह्म सम्मत्ताइयतीअ आरोवेह ।" गुरुकहे " आरोवेमि " फिर श्रावक क्षमाक्षमण देके कहे " संदिसह कि भणामि " गुरु कहे " वंदित्तु पवेयह " फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "जयव तुज्झेहि अह्म सामाइयतिअमारोविअ " गुरु कहे " आरोविय २ खमासमणेण हट्ठेण सुत्तेणअट्ठेण तदुभएण गुरुगुणेहि वड्ढाहि निठारगपारगो होहि" श्रावक कहे " इच्छामो अणुसठि " पुन श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे ' तुह्माण पवेइय सदिसह साहूणं पएवेमि" गुरु कहे " पवेयह " पीछे श्रावक परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, समयसरणको प्रदक्षिणा करे । और सघ पूर्वे दिये हुए वासांको, तिसके मस्तकोपरि क्षेपण करे । गुरु आसनऊपर बैठे, वहासें लेके वासक्षेपपर्यंत क्रिया, तीन वार इसहि रीतिसें करना । फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "तुह्माण पवेइय' फिर क्षमाश्रमण देके कहे ' साहूण पवेइय सदिसह काउसग्ग करेमि" मत्र

"करेह" पीछे श्रावक-सम्मत्ताइतिगस्सथिरीकर णत्थ करेमि काउसग्ग अन्नत्थ०-सागरवरगंभीरातक कायोत्सर्ग करे पारके सपूर्ण लोगस्स कहे । पीछे चारथुइवर्जित शक्रस्तवसें चैत्यवदन करे । पीछे श्रावक, गुरुको तीन प्रदक्षिणा देवे पीछे आसन ऊपर बैठा हुआ गुरु, श्रावकको आगे बिठाके नियम देवे ॥ नियमयुक्तिर्यथा ॥

गुलर, प्लक्षण, काकोडुवरि, वट और पिप्पल, ये पाच जातिके फल ५ मास, मदिरा, माखण और मधु, ये चार विकृति ४-एव ९-अज्ञात फल १० , अज्ञात पुष्प ११, हिम (बरफ) १२, विष १३, करहे (ओले-गडे) १४, सर्वसच्चित्तमट्टी १५, रात्रिभोजन १६, घोलवडा-काचे दूध दहि छाछमे गेरा हुआ बिदल १७, बइगण १८, पपोटा-खसखसका दोडा १९, सिंघाडे २०, वायगण २१, और कायबाणि २२, येह बावीस द्रव्य श्रावकोको भक्षण करने योग्य नही है अन्य प्रकारसे २२ अभक्ष्य यह है की पाच जातिके उबरादि फल ५ चार महा विगइए, हिम १०, विष ११, करह १२, सर्व मृत्तिका १३, रात्रि भोजन १४, बहुबीज वाले फल १५, अनंत काय १६, अचार १७, घोलवडा १८, बेइगण १९, अज्ञात फल फूल २०,तुछ फल२१,चलितरस २२ ऐसें नियम देके यह गाथा उच्चारण करावे ॥

" अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥
जिणपण्णत्त तत्त, इअ समत्त मए गहिअ ॥ १ ॥"

तदनंतर अरिहंतको वर्जके अन्यदेवको नमस्कार करनेका, जैनयति महाव्रतधारी शुद्ध प्ररूपकको वर्जके अन्य लिंग विप्रादिकोंको जावसें अर्थात् मोक्षलाभ जानके वंदना करनेका, और जिनोक्त सत्त तत्त्वको वर्जके तत्वांतरकी श्रद्धा करनेका, नियम करना

अन्य देव और अन्य लिंगि विप्रादिकोंको नमस्कार और दान,लोकिकव्यवहारकेवास्ते करना और अन्यमतके शास्त्रका श्रवण पठन जी, ऐसेंही जानना । पीछे गुरु सम्यक्त्वकी देशना करे ॥ सोव ताते हे ॥

मानुष्यमार्यदेशश्च जाति. सर्वाक्षपाटवम् ॥
आयुश्च प्राप्यते तत्र कथचित्कर्मलाघवात् ॥ १ ॥
प्राप्तेषु पुण्यत श्रद्धा, कथक. श्रवणेष्वपि ॥
तत्त्वनिश्चयरूप तद्बोधिरत्न सुदुर्लभम् ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

कुसुमयसुईण महण सम्मत्त जस्स सुठिअं हियए ॥
तस्स जगुज्जोयकरं नाण चरण च जवमहण ॥ १ ॥

अर्थ —मनुष्यजन्म १, आर्यदेश २, उत्तमजाति ३, सर्वइंद्रि सपूर्ण ४, आयु ५, ये कथचित् कर्मकी लाघवतासें प्राप्त होते है पूर्वोक्त

प्राप्ति हुये जी श्रद्धा १, शुद्ध प्ररूपकका योग २, और सुणनेसें तथानिश्चयरूप बोधिरत्न सम्यक्त्व ३, ये अतिही दुर्लभ हैं ॥ कुत्सितसमयएकांतवादियोंके शास्त्र और तिनकी श्रुतियोंको मथन करनेवाला सम्यक्त्व, जिसके हृदयमें अछीतरे स्थित है, तिस पुरुषको जगत्के उद्योत करनेवाले, और भव–संसारको मथनेवाले, ज्ञान और चारित्र प्राप्त होते हैं ॥

॥ श्लोका ॥

या देवे देवताबुद्धिर्गुरौ च गुरुतामति ॥
धर्मे च धर्मधी शुद्धा सम्यक्त्वमिदमुच्यते ॥ १ ॥
अदेवे देवबुद्धिर्या गुरुधीरगुरौ च या ॥
अधर्म्मे धर्म्मबुद्धिश्च मिथ्यात्वं तद्विपर्ययात् ॥ २ ॥
सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजित ॥
यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वर ॥ ३ ॥
ध्यातव्योयमुपास्योयमय शरणमिष्यताम् ॥
अस्यैव प्रतिपत्तव्य शासन चेतनाऽस्ति चेत् ॥ ४ ॥
ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादिरागाद्यककलंकिता ॥
निग्रहानुग्रहपरास्ते देवा स्युर्न मुक्तये ॥ ५ ॥
नाट्याट्टहाससंगीताद्युपप्लवविसंस्थुला ॥
लंघयेयु पद शांतं प्रपन्नान् प्राणिन कथ ॥ ६ ॥
महाव्रतधरा धीरा भैक्ष्यमात्रोपजीविन ॥
सामायिकस्था धर्मोपदेशका गुरवो मता. ॥ ७ ॥
सर्वाभिलाषिण सर्वभोजिन सपरिग्रहा. ॥

अब्रह्मचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥ ८ ॥
परिग्रहारंभमग्नास्तारयेयु कथ परान् ॥
स्वय दरिद्रो न परमीश्वरी कर्तुमीश्वरः ॥ ९ ॥
दुर्गतिप्रपतत्प्राणिधारणाद्धर्म उच्यते ॥
संयमादिर्दशविध सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ १० ॥
अपौरुषेय वचनमसंभवि भवेद्यदि ॥
न प्रमाण भवेद्वाचां ह्यासाधीना प्रमाणता ॥ ११ ॥
मिथ्यादृष्टिभिरारव्यातो हिंसाद्यै कलुषीकृत ॥
स धर्म इति चित्तोपि भवभ्रमणकारणम् ॥ १२ ॥
सरागोपि हि देवश्चेद्गुरुरब्रह्मचार्यपि ॥
कृपाहीनोपि धर्म स्यात् कष्ट नष्ट हहा जगत्॥ १३ ॥
शमसवेगनिर्वेदानुकपास्तिक्यलक्षणै. ॥
लक्षणै पचभि सम्यक् सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥ १४ ॥
स्थैर्य प्रभावनाभक्ति. कौशल जिनशासने ॥
तीर्थसेवा च पचास्य भूषणानि प्रचक्ष्यते ॥ १५ ॥
शका कांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रशसनम् ॥
तत्सस्तवश्च पचापि सम्यक्त्व दूषयत्यमी ॥ १६ ॥

अर्थ—साचे देवमे जो देवपणेकी बुद्धि, साचे गुरुके विषे गुरुपणेकी बुद्धि और साचे धर्मके विषे धर्मकी बुद्धि, कैसी बुद्धि ? शुद्धा सूधी निश्चल सदेहरहित, इसको सम्यक्त्व कहते है । ऐसी सम्यक्त्वकी बुद्धि थोडे वखत भी जिसको आजावेगी, सो प्राणि अर्द्धपुद्गलपरावर्तकालमेही ससार

से निकलके मोक्षको प्राप्त होगा, यह निश्चय जाणना यत उक्तम् ॥

अतोमुहुत्तमित्तपि फासिय जेहि हुज्ज सम्मत्तं ॥
तेसि अवड्ढ पुग्गलपरिअट्टो चेव ससारो ॥ १ ॥

भावार्थ –अतर्मुहूर्तमात्र भी जिनोंने सम्यक्त्व स्पर्श किया है, तिनोंका अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तही उत्कृष्ट संसार जाणना, तदनतर अवश्यमेव मोक्षको प्राप्त होवे इति सम्यक्त्वस्वरूपम् ॥ १ ॥

अथ मिथ्यात्वस्वरूपमाह ॥ जिसमे देवके गुण नही है, ऐसे अदेवमे देवकी बुद्धि–जैसें तममे उद्योतकी बुद्धि । जिसमे गुरुके गुण नही है, ऐसें अगुरुमे गुरुकी बुद्धि–जैसें नींबमें आम्र की बुद्धि । अधर्म यागादि, जीवहिंसादिक के विषे धर्म की बुद्धि–जैसें सर्पके विषे पुष्पमालाकी बुद्धि, सो मिथ्यात्व है सम्यक्त्वसें विपर्यय होनेसें, अर्थात् साचे देवके ऊपर अदेवपणेकी बुद्धि, जैसें कौशिक (घूअड) की सूर्यके तेजऊपर अधकारकी बुद्धि, साचे गुरुऊपर अगुरुपणेकी बुद्धि, जैसें श्वेतशखके ऊपर काचकामलरोगवालेकी नीलशखकी बुद्धि । तिसको मिथ्यात्व कहतेहै । सो मिथ्यात्व पाच प्रकारका है १ आभिग्रहिक, २ अनाभिग्रहिक, ३ आभिनिवेशिक, ४ साशयिक, ५ अनाभोगिक ॥

(१) प्रथम आभिग्रहिकमिथ्यात्व, सो, जिस्को

मिथ्या कुशास्त्रोंके पढनेसें कुदेव कुगुरु कुधर्मके ऊप र आस्था दृढ है, जिससें ऐसा जानता है कि, जो कुछ मैने समझा है सोही सत्य है, औरोंकी समझ ठीक नही है, जिसको सत्यासत्यकी परीक्षा करने का अब मन भी नहीं है, और जो सत्यासत्यका विचार भी नही करता है यह मिथ्यात्व, दीक्षित शाक्यादि अन्यमतममत्वधारीयोको होता है वे अपने मनमे ऐसें जानते हैं कि, जो मत हमने अगिकार किया है, वोही सत्य है, और सर्व मत झूठे हैं ऐसे जिसके परिणाम होवे, सो आभिग्र हिक मिथ्यात्व है

(२) दूसरा अनाभिग्रहिकमिथ्यात्व, सो सर्व मतोंको आच्छा जाणे, सर्व मतोसें मोक्ष है, इस वास्ते किसीको बुरा न कहना सर्व देवोको नम स्कार करना, ऐसी जो बुद्धि, तिसको अनाभिग्र हिक मिथ्यात्व कहते हैं यह मिथ्यात्व जिनोंने कोइ दर्शन ग्रहण नहीं करा ऐसे जो गोपाल बाल कादि तिनको है क्योंकि, यह अमृत और विषको एकसरिखे जाननेवाले हैं

(३) तीसरा अभिनिवेशिक मिथ्यात्व, सो जो पुरुष जानकरके झूठ बोले, प्रथम तो अज्ञानसें किसी शास्त्रार्थको भूल गया, पीछे जब कोइ विद्वा न् कहे कि, तुम इस विषयमें भूलते हो, तब अप

ने मनमें सत्य विषयको जाणता हुआ भी, झूठे पक्षका कदाग्रह, ग्रहण करे, जात्यादि अभिमानसें कहना, न माने, उलटी स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियो बनाकरके अपने मनमाने मतको सिद्ध करे, वादमें हार जावे तो भी न माने, ऐसा जीव, अतिपापी, और बहुल संसारी होता है ऐसा मिथ्यात्व, प्राय. जो जैनी, जैन मतको विपरीतकथन करता है, उस मे होता है, गोष्ठमाहिलादिवत् ॥

(४) चौथा साशयिकमिथ्यात्व, सो देव गुरु धर्म जीव काल पुद्गलादिक पदार्थोंमें यह सत्य है कि, यह सत्य है ? ऐसी बुद्धि, तिसको सांशयिक मिथ्यत्व कहते हैं तथा क्या यह जीव असख्य प्रदेशी है ? वा नही है ? इसतरे जिनोक्त सर्व पदार्थमें शका करनी । " सांशयिक मिथ्यात्वं तदशेषया शका सदेहो जिनोक्ततत्त्वेष्वितिवचनात् ॥ "

(५) पांचमा अनाभोगिकमिथ्यात्व, सो जिन जीवोंको उपयोग नही कि, धर्म अधर्म क्या वस्तु है ? ऐसें जे एकेंद्रियादि विशेषचैतन्यरहित जीव, तिनको अनाभोगमिथ्यात्व होता है ॥ २ ॥

अथदेवलक्षणमाह ॥ देव सो कहिये, जो सर्वज्ञ होवे, परतु जैसें लौकिक मतमे विनायकका मस्तक ईश्वरने छेदन कर दिया, पीछे पार्वतीके आग्रहसें सर्वत्र देखने लगा, पर किसी जगे भी

मस्तक न देखा, तब हाथीके मस्तकको लायके विनायकके मस्तकके स्थानपर चेप दिया, जिसवास्ते विनायकका (गणेशका) नाम "गजानन" प्रसिद्ध हुआ इत्यादि—यदि ईश्वर (महादेव) सर्वज्ञ होता तो, पार्वतीका पुत्र जाणके विनायकका मस्तक कभी न छेदन करता यदि छेदा, तो जगत्में विद्यमान तिस मस्तकको क्यों न देखा? इसवास्ते ऐसें अधूरेज्ञानवालेको देव न कहिये। तथा 'जित रागादिदोष' जे संसारके मूलकारण राग द्वेष काम क्रोध लोभ मोहादिक दोष, तिन सर्वको जिसने जीते है, निर्मूल किये हैं, तिसको देव कहिये जिस में रागादि दोष होवे, तिसको अस्मदादिवत् संसारी जीवही कहिये, तिसमें देवपणा न होवे। तथा 'त्रैलोक्यपूजित' स्वर्गमर्त्यपातालके स्वामी इंद्रादिक परम भक्तिकरके जिसको वांदे, पूजे, नमस्कार करे, सेवे, सो देव कहिये परंतु कितनेक इसलोकके अर्थीयोंके वांदनेसे, वा पूजनादिकसे देवपणा नही होता है। तथा 'यथा स्थित सत्यपदार्थका वक्ता, सो देव कहिये, परंतु जिसका कथन पूर्वापरविरोधि होवे, और विचारते हुए सत्य २ मिले नही, सो देव न कहिये॥ देवो हैत् परमेश्वर ये पूर्वोक्त चार गुण पूर्ण जिसमें

होवे, सो अरिहंत, वीतराग, परमेश्वर, देव, कहिये, इससें अन्य कोइ देव नही है ॥ ३ ॥

ऐसा पूर्वोक्त साचा देव, पिछानके आराधना, सोही कहतें है । ध्यातव्योयमित्यादि—पूर्व जो देवके लक्षण कहे, तिन लक्षणो सयुक्त जो देव, तिसको एकाग्र मनसे ध्यावना, जैसें श्रेणिक महाराजने श्रीमहावीरजीका ध्यान किया । तिस ध्यानके प्रभावसें आगमी चउवीसीमे श्रेणिक, वर्ण, प्रमाण, संस्थान, अतिशयादिकगुणोंकरके श्रीमहावीरस्वामिसरिखा 'पद्मनाभ,' नाम प्रथम तीर्थंकर होगा इसीतरे औरोनें भी तल्लीनपणे देवका ध्यान करना, तथा 'उपास्योयम्' ऐसे पूर्वोक्त देवकी सेवा करनी श्रेणिकादिवत् । तथा इसी देवका, ससारके भयको टाल नहार जाणके, शरण वांछना । इसी देवका शासन, मत, आज्ञा, धर्म, अंगीकार करना । 'चेतनास्ति चेत्' जो कोइ चेतना चैतन्यपणा है तो, सचेतन सजाण जीवको उपदेश दिया सार्थक होवे, परंतु अचेतन अजाणको दिया उपदेश क्या काम आवे ? इसवास्ते 'चेतनास्ति चेत्' ऐसें कहा ॥ ४ ॥

अथादेवत्वमाह ॥ अथ अदेवके लक्षण कहतें है ॥ ये स्त्री० ॥ जिनके पास स्त्री (कलत्र) होवे तथा खड्ग धनुष्य चक्र त्रिशूलादिक शस्त्र (हथियार) होवे, तथा अक्षसूत्र जपमाला आदि शब्द

से कमण्डलुप्रमुख होवे, ये कैसें है ? रा० रागादिकके अक–चिन्ह है, सोही दिखावे हैं स्त्री रागका चिन्ह है, । जो पासे स्त्री होवे तो जाणना कि, इसमें राग है । शस्त्र द्वेषका चिन्ह है, जो पासें हाथियार देखीए तो, ऐसा जाणिये कि तिसने किसी वैरीको मारना चूरना है, अथवा किसीका भय हैं, जिस वास्ते शस्त्रधारण किये है । अक्ष सूत्र असर्वज्ञपणाकाचिह्न है यदि होवे तो, मणके विना गिणतीकी संख्या जाणलेवे अथवा तिससें अधिक वडा अन्य कोइ है, जिसका वो जाप करता है ? । कमण्डलु अशुचिपणेका चिन्ह है, यदि हाथ में कमण्डलु पाणीका भाजन देखीए तो, ऐसा जाणिये की, यह अशुचि है शौच करणेके वास्ते यह कमंडलु धारण करता है यतउक्तं ॥

स्त्रीसगः काममाचष्टे द्वेष चायुधसंग्रह ॥
व्यामोहं चाक्षसूत्रादिरशौच च कमंडलु ॥ १ ॥

इन पूर्वोक्त दोषोंकरके जे दूषित है, तथा निग्रहा० जिसके उपर रुष्टमान होवे, तिसको निग्रह (वधनमरणादिक) करें, और, जिसके उपर तुष्टमान होवे, तिसको अनुग्रह (राज्यादिकके वर) देवे, तेदेवा० वे देव, मुक्तिके हेतु नही होते हैं ॥५॥

ऐसे पूर्वोक्त देव अपने सेवकोको मोक्ष नही दे सकते है, सोही वात फिर कहते हैं । नाट्याट्ट० जे

देव नाटकके रसमें मग्न है, अट्टाट्टहास करते हैं, इत्यादि संसारकी चेष्टा जो अस्थिर हैं, लक्षयेयु —जे आपही ऐसे हैं, वे देव, अपने आश्रित सेवकोंको शातपद, (ससार चेष्टारहित मुक्ति, केवलज्ञानादि कपद,) कैसें प्राप्त कर सकते हैं? जैसे एरंडवृक्ष कल्प वृक्ष कीतरे इच्छा नही पूर सकता है, यदि किसी मूढ पुरुषने एरंडको कल्पवृक्ष मान लिया तो, क्या वो कल्पवृक्षकीतरें मनोवाछित दे सकता है ? ऐसेंही कीसी मिथ्या दृष्टीने पूर्वोक्त दूषणोंवाले कुदेवोंकों देव मान लिये तो, क्या वे देव परमेश्वर मोक्ष दाता हो सकते हैं ? कदापि नही हो सकते है ॥६॥

अथगुरुलक्षणमाह ॥ अथ गुरुके लक्षण कहते है ॥ महाव्र० अहिंसादि पाच महाव्रतके धारने पालनेवाले और आपदामे भी धीर साहसिक होके अपने व्रतोंको विराधे नहीं वेतालीश (४२) दूषण रहित भिक्षावृत्ति (माधुकरी वृत्ति) करके अपने चारित्रधर्मके तथा शरीरके निर्वाहवास्ते भोजन करे, भोजन भी ऊनोदरतासयुक्त करे, भोजनकेवास्ते अन्न पाणी रात्रिको न राखे, धर्मसाधनके उपकरण विना और कुछ भी सग्रह न करे, तथा धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, मणि मोती, प्रवालादि परिग्रह, न राखे । सामा० रागद्वेषके परिणामरहित मध्यस्थ वृत्ति होकर सदा सामायिकमें वर्त्ते । धर्मोप० जो

धर्मी जीवोंके उद्धारवास्ते सम्यग् ज्ञानदर्शनचारित्ररूप भगवंतके स्याद्वाद अनेकांतस्वरूप निरूपण किया है, तिस धर्मका उपदेश करे, परंतु ज्योतिषशास्त्र, अष्टप्रकारका निमित्त शास्त्र, वैद्यकशास्त्र, धन उत्पन्न करनेका शास्त्र, राजसेवादि अनेकशास्त्र, जिनसे धर्मको बाधा पहुचे तिनका उपदेश न करे, ऐसे गुरु कहियें । काष्ठमय बेडीसमान आप भी तरें, और औरोंको भी तारें. ॥ ७ ॥

अथ अगुरुलक्षणमाह॥ अथ अगुरुके लक्षण कहते हैं ॥ सर्वा० स्त्री, धन, धान्य, हिरण्य, रूपादि सर्व धातु, क्षेत्र, हाट, हवेली, चतु पदादिक अनेक प्रकारके पशु, इन सर्वकी अभिलाषा है जिनको, सर्व भोजिन । मधु, मांस, माखण, मदिरा, अनतकाय, अभक्ष्यादिक सर्व वस्तुके भोजन करनेवाले, सपरिग्रहा । जे पुत्र, कलत्र, धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, क्षेत्रादि सहित हैं, । अब्रह्म० तथा अब्रह्मचारी है । मिथ्यो० मिथ्या धर्मका उपदेश करे, ज्योतिष, निमित्त, वेदक, मंत्र तंत्रादिकका उपदेश देवे, वे गुरु नही लोहमय बेडी (नावा) समान, आप भी डुबें, औरोंको भी डुबावे ॥ ८ ॥

पूर्वोक्त बातही कहते है ॥ परिग्रहा० स्त्री, घर, लक्ष्मी आदि परिग्रह, और क्षेत्र, कृषी, व्यवसायादि आरंभ इनमे जे मग्न है, आपही भवसमु

ऊमें डुबे हुए, हैं, ता० वे, किसतरेंसें दूसरे जीवोंको संसारसागरसें तार सकते हैं ? इसवातमें दृष्टात कहते हैं । जो पुरुष आपही दरिद्री है, सो परको ईश्वर लक्ष्मीवत करनेको समर्थ नही है; तैसेंही वे कुगुरु, आपही ससारमें डुबे हुए, पर अपने सेवकोंको कैसें तार सके ? ॥ ए ॥

धर्मलक्षणमाह ॥सत्य धर्मका स्वरूप कहते है॥ दुर्गति० नरक, तिर्यंच, कुमनुष्य, कुदेवत्वादि दुर्गति में गिरते हुए प्राणिकी रक्षा करे, गिरने न देवे, इस वास्ते धारण करनेसें धर्म कहिये, सो, संयमादि दशप्र कार सर्वज्ञ कथित धर्म, पालनेवालेको मोक्षकेवास्ते होता है । सयमादि दश प्रकार ये है संयम जीवदया १, सत्यवचन २, अदत्तादानत्याग ३, ब्रह्म चर्य ४, परिग्रहत्याग ५, तप ६, क्षमा ७, निरहंका रता ८, सरलता ए, निर्लोभता १०, ॥ इससे उलटा हिसादिमय असर्वज्ञोक्त धर्म, दुर्गतिकाही कारण है ॥ १० ॥

अधर्मत्वमाह ॥ अपौरुषेय० अपौरुषेय वचन, असत्रवि—सत्रवरहित है क्योंकि, जो वचन है सो किसी पुरुषके बोलनेसेंही है, विना बोले नही वचू परिभाषणे इति वचनात् और अक्षरोत्पत्तिके आठ स्थान नियत है, सो भी पुरुषकोंही होते हैं. इस वास्ते वचन पुरुषके विना संभवे नही । भवेद्य

॥ अथ सम्यक्त्वके पांच भूषण कहते हैं ॥ स्थैर्य०–स्थैर्य जिनधर्मकेविषे स्थिरता । १ । जिन धर्मकी प्रभावना । २ । जिनधर्ममें भक्ति । ३ । जिन शासनमें कुशलता । ४ । और तीर्थसेवा । ५ । ये पांच सम्यकत्व के भुषण है ॥ १५ ॥

अथ सम्यक्त्वके पांच दूषण कहते है ॥ शं का० शका धर्म है, वा नही ? इत्यादि सदेह । १ । आकांक्षाअन्य २ धर्मकी अभिलाषा । २ । विचि कित्साधर्मके फलका संदेह । ३ । मिथ्यादृष्टिकी प्रशसा । ४ । और मिथ्यादृष्टियोंका परिचय । ५ । ये पांच सम्यक्त्वको दुषित करते हैं ॥ १६ ॥
ऐसे पूर्वोक्त उपदेशकरके श्रेणिक, सप्रति, दशार्ण भद्रादि सम्यक्त्वमें दृढ राजायोंके व्याख्यान करे । उस दिनमे श्रावक एकभक्त आचाम्लादि तप करे । साधुयोको अन्न, वस्त्र, पुस्तक, वसति, यथायोग्य देवे । मगलीपूजा करनी । चतुर्विधसघवात्सल्य करना । और सघपूजा करनी ॥

इतिव्रतारोपसस्कारे सम्यक्त्वसामायिकारोपणविधि ।

देशविरतिसामायिकारोपणविधि

सम्यक्त्व सामायिकारोपणानंतर तत्कालही, तिस की वासनानुसारें, वा मास वर्षादिके

देशविरतिसामायिक आरोपण करना है । तहां नदि, चैत्यवंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमणआदि, सर्व विधि पूर्ववत् जाणनी।

परतु सर्वत्र सम्य क्त्वसामायिकके स्थानमें देशविरतिसामायिककानाम ग्रहण करना । सर्वत्र तेसे करके फिर दूसरी नंदि दमकोच्चारकालमें नमस्कार तीन पाठानंतर, हाथमें ग्रहण करे परिग्रह परिमाण टिप्पनक(फहरिस्त–नोंध) ऐसे श्रावकको गुरु, देशविरतिसा मायिकदमक उच्चरावे ॥ सयथा ॥

" ॥ अहण भते, तुह्माण समीवे, थुलग, पाणाइवाय, संकप्पओ, वीइदिआइजीवनिकायनिग्गहनियट्टिरूवं, निरावराहं, पच्चक्खामि जावज्जीवाए, दुविहं तिविहेण, मणेण, वायाए, काएण, न करेमि, न कार वेमि, तस्स भते पडिक्कमामि, निदामि, गरिहामि, अप्पाण, वोसिरामि, ॥ '

यह पाठ तीनवार कहना ॥ १ ॥ इसीतरे सर्व व्रतोंमे तीन ३ वार पाठ पढना ॥

" ॥ अहण भते, तुह्माण, समीवे, थूलग, मुसावाय, जीहाछेयाइनिग्गहहेऊअ, कन्ना, गोभूमि, निरकेवावहार, कूड सक्खाइ, पचविह, दरिकिन्नाइ अविसए, अहागहिअ भगएण, पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, दुविहं तिविहेण, मणेण वायाए, काएण० ॥ २ ॥ "

" ॥ अहण, भंते, तुह्माण, समीवे, थूलग, अदिन्नादाण, खत्तखणणाइचोरकारकर, रायनिग्गहकरं, सच्चित्ताचित्त वत्थुविसय, पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, दुविहं तिविहेण० ॥ ३ ॥ "

' ॥ अहण, भंते, तुह्माण, समीवे, थूलगमेहुणं, उरालिय, वेउव्वियभेअं, अहागहिअ भगएणं, तव दुविहं तिविहेणं दिव्वं, एगविहं तिविहेण तेरिछ, एगविहमेगविहेणं माणुस्स, पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, दुविहं तिविहेण० ॥ ४ ॥ "

" ॥ अहण भंते तुह्माण, समीवे, अपरिमिअं, परिग्गहं, धणधन्नाइनवविहवत्थुविसयं, पच्चक्खामि, इछापरिमाण, अहागहिअ भगएण, उवसंपज्जामि, जावज्जीवाए, दुविह, तिविहेण० ॥ ५ ॥ "

"अहण भंते, तुह्माण, समीवे, पढम गुणव्वयं, दिसिपरिमाणरूवं, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविहं, तिविहेण ॥ ६ ॥ '

" ॥ अहण भंते, तुह्माणं, समीवे, उवभोगपरिभोगवय, भोयणउ, अणतकाय, बहुबीय राईभोयणाइबावीसवत्थुरूव, कम्मणा, पन्नरस, कम्मादाण, इंगालकम्माइबहुसावज्जं, खरकम्माइ, रायनिउंग च, परिहरामि, परिमिअ, भोगउवभोग, उवसपज्जामि, जावज्जीवाए, दुविह, तिविहेण० ॥ ७ ॥'

" ॥ अहण भंते, तुह्माण समीवे, अणत्थदंडगु

णव्वय, अट्टरुद्दझाण, पावोवएस, हिंसोवयारदाण,पमा यकरणरूव, चउविहं, जहासत्तीए, पडिवज्जामि, दुविहं तिविहेण ॥ ८ ॥ '

" ॥ अहण भंते तुह्माण समीवे, सामाइय, जहासत्तीए, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविहं, तिविहेण ॥ ए ॥ "

" ॥ अहण भंते, तुह्माण समीवे, देसावगासिअ, जहासत्तीए पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविह तिविहेण० ॥ १० ॥ '

" ॥ अहणं भंते, तुह्माण समीवे, पोसहोववास, जहासत्तीए, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविहं, तिविहेणं० ॥ ११ ॥ "

" ॥ अहणं भंते, तुह्माण समीवे, अतिहिसंवि भाग, जहासत्तीए, पडिवज्जामि' जावज्जीवाए, दु विहं' तिविहेण० ॥ १२ ॥ "

" ॥ इच्चेय सम्मत्तमूलं पचाणुव्वय, तिगुणव्वय, चउसिक्खावय, दुवालसविहं, सावगधम्म, उवसं पज्जित्ताण, विहरामि ॥ इति ॥

दंडकोच्चारणानतर कायोत्सर्ग, वंदनक, क्षमाश्र मण, प्रदक्षिणा, वासक्षेपादिक पूर्ववत् ॥

परिग्रहप्रमाणटिप्पनकयुक्तिर्यथा ॥

भावार्थ —अमुक जिनेंद्रको नमस्कार करके, अमु

क श्राविका, वा अमुक श्रावक अमुक गुरुके पास, गृहस्थ धर्मको अंगीकार करता है. ॥ १ ॥

श्री अरिहंतको वर्जके अन्य देवको नमस्कार न करु, जिनमतके सुसाधुकों छोडके अन्य लिंगिको धर्मार्थे नमस्कार न करु ॥ २ ॥ जिन वचन स्याद्वादयुक्त सत वा नव तत्व को सत्य कर जानता हु, मिथ्याशास्त्रोंके श्रवण पठन लिखनेका मुझको नियम हो । ३। परतीर्थिको प्रणाम, गुणानुवाद, स्तवन, भक्ति, राग, सत्कार, सन्मान, दान, विनय, वर्जु–न करु । ४ । धर्मकेवास्ते अन्य तीर्थमें तप, स्नान, होमादिक नही करु तिनके उचित करने योग्य कर्ममें जयणा मुझको हो । ५ । तीन, वा पांच, वा सातवार यथाशक्तिसें चैत्यवंदन करुं, एक, वा दो वा तीन वार, प्रतिदिन सुसाधुको नमस्कार करुं, और तिसकी सेवा करु । ६ । एक, वा दो, वा तीनवार प्रतिदिन जिनपूजा करु, और पर्व दिनमें स्नात्रादि अधिक अधिकतर पूजा करु इति सम्यक्त्वम् ।

कुलाचार विवाहादि कृत्यमें जीववध होते जयणा करु । ७ । विना प्रयोजन एकेंद्रियका भी वध न करुं, प्रयोजनके हुए जयणा करु, । इतिप्रथमव्रतम् ।

कन्या आदि पांच प्रकारका मृषावाद, नियमकरके वर्जता हु । इतिद्वितीयव्रतम् ।

जिससें चोर नाम पडे, और राजदंड होवे, ऐसा धन वर्जुं, अर्थात् चोरी वर्जुं । इतितृतीयव्रतम् ।

दो करण तीन योगसें देवतासंबधि, एकविध त्रिविधे करी तिर्यंच संबधि, मैथुनका नियम करता हुं । ९ । अनुभव करके स्तनसमान ब्रह्मव्रतको अपने मनमे धारण करु, और जावजीव मनुष्य संबधि मैथुनकायाकरके वर्जुं । १० । परनारीको, और परपुरुषको (स्त्री व्रतग्राहिता आश्रित) वर्जुं इनके उपरात अन्यक्रियाकी मुझकों जयणा । इति चतुर्थव्रतम् ॥

नव प्रकारके परिग्रहमे परिग्रहकी संख्याका प्रमाण यह है । ११ । इतने मात्र रूपय्ये, इतने मोहोर, इतने मात्र गिणतिमें । १२ । इतने गिणतिमें रूपय्ये, यह गणिमवस्तुका ग्रहण है इतनी वस्तु तोलमे और मापसें इतनी वस्तु ।१३। हाथ अंगुलसें मेय वस्तुका इतने प्रमाण मात्रसें मुझको संग्रह करना कल्पे, तथा दृष्टिसें देखके जिनका मोल करा जावे ऐसे पदार्थ इतने रूपइयोंके मोलके रखने । १४ । इतनी खांडी अन्नकी एक वर्षमे रखनी, इतनी मुझको परिग्रहमें भूमि रखनी कल्पे, इतने पुर, इतने गाम, इतने हाट्ट, इतने घर, और इतने प्रमाण क्षेत्र, मुझको कल्पे । १५ । इतने सेर, वा इतने तोले प्रमाण सोना, इतना मात्र रूपा,

इतना कांसा, इतना तांवा, इतना लोहा, इतना तरुया, इतना सीसा, अपने घरमे रखना । १६ । इतने दास, इतनी दासी, इतने सेवक–नौकर और इतने दासचेटकोकी संख्यां मुझको रखनी कल्पे । १७ । इतने हाथी, इतने घोडे, इतने बलद, इतने ऊट, इतने गाडे, इतनी गौ, इतनी महिषी (भैंस) । १८ । इतनी बकरी, इतनी भेंके, और इतने हल रखने मुझको कल्पे और अमुक अमुक कर्मका मुझको नियम हो । १९ । इति पचमव्रतम् ॥

दसोंही दिशायोंमे अपने वशसे इतने योजन प्रमाण जावजीव गमन करना, और तीर्थयात्रामें जानेकी जयणा । २० । इतिषष्ठव्रतम् ।

कर्ममें भोगोपभोगमे, खरकर्ममे, पदरा कर्मादानमे, डुप्पोल आहार अज्ञात फूल फल इनको वर्जुं । २१ । पाच ऊवर ५, चार महाविगइ ४, हिम १०, विष ११, कारक १२, सर्व जातकी मट्टी १३, रात्रिभोजन १४, बहुवीजा १५, अनंतकाय १६, सधान (बोल आचार) १७ । २२ । घोलवडा (विदल) १८, वृताक १९, अज्ञात फल फूल २० तुछ फल २१ और चलितरस २२, ये बावीस वस्तुओको वर्जुं । २३ । वर्जके अन्य फल फूल पत्रमेसें अमुक अमुक प्राणातमें जी, भक्षण न करू २४ । इतने मात्र प्रासुक अनतकायकी मुझको जयणा हो, इतने

अपक्व फल और अखंडित भी भक्षण न करु ।२५। आ जन्मतक इतनी सचित्त वस्तुओ मेरेको भक्षण करने योग्य है, इतने पुष्टिकारक द्रव्य और इतने व्यजन शाकादि मुझको कल्पे, तथा घृत, दुग्ध दहि प्रमुख ।२६। इतनी विगइ मुझको कल्पे इतने पियादे, इतने गज, इतने तुरग और इतने प्रधान रथोंकी मुझको जयणा हो ।२७। इतनी सुपारी, इतने लवंग, इतने एलाफल (इलायची) जायफल आदि मेरेको नित्य इतने प्रमाण कल्पे सूतके, रेशमके,ऊनके,औरके,इन चार प्रकारके।२८। वस्त्रोमें भी इतने वस्त्र पहिरने मुझको कल्पे, और इतनी जातिके फूल मेरे अंगके भोगवास्ते कल्पे । २९ । आसन, सिंहासण, पीठ, पट्टे, बाजोठ, पल्लंक, गदेला, रजाइ, और खाट आदि ये सर्व इतने प्रमाण मुझकों कल्पे ।३०। कर्पूर, अगर, कस्तूरी, चदन केशरादि मात्र मेरे अगके वास्ते इतने कल्पे, और पूजामे जयणा ।३१। इतनी नारी मेरे सजोगमे इतने कालमात्र, इतने घडे, ठाणे हुए जलके और प्रासुक जलके मेरेको स्नान वास्ते कल्पे ।३२। इतनी वार दिनमें इतनी जातिके तेल मर्दन के वास्ते, इतने प्रकारके भात रोटी आदिक भोजन, और दिनमे इतनी वार भोजन न करना. ।३३। [illegible] आदिका भोग परिभोग

जावजीवतक है, इनका जी फेर प्रमाण दिनदिनमें करुं, * । ३४ । इतने मात्र मणि, कनक, रूपा, मोती भूषण, अंगऊपर धारण करुं इतने मात्र गीत, नृत्य, वाजत्र, मुझको उपभोगवास्ते कल्पे । ३५ । इतिसप्तमव्रतम् ॥

वैरिका घात, वैर लेना, इत्यादिक आर्त्त, रौद्र, ध्यान, अदाक्षिण्यताविषे पापोपदेशका देना, इनको वर्जु । ३६ । अदाक्षिण्यताविषे हिंसाकारी गृहोप करणादि देना तथा कामशास्त्रकापढना, जूआ खेलना, मद्य पीना, इनको परिहरु । ३७) हिंडोलेका विनोद, भक्त (भोजन), स्त्री, देश, और राजा, इनकी स्तुति, वा निंदा, पशु पक्षीका युद्ध, अकालमें नींद लेनी, संपूर्ण रात्रिमे सोना, । ३८ । इत्यादि प्रमाद स्थानक, अनर्थादंडनामक गुण व्रत में वर्जु । इति अष्टमव्रतम् ॥

एक वर्षमें इतने सामायिक करुं । इतिनवमव्रतम् ॥

इतने योजन मेरेको दिन, वा रात्रिमे दशोदिशा ओमे जाना आना कल्पे । इतिदशमव्रतम् ।

एक वर्षमें इतने पौषध करु इत्येकादशव्रतम् ॥

साधुओंको संविभाग भोजन वस्त्र आदिकसे करु ४० । प्रथम यतिको देके और नमस्कार करके पीछे

---

* दिन २ में जो प्रमाण करना है, सो दशम देसावकाशिकव्रतांतर्गत जाणना ॥

आप पारणा करुं; जो सुविहित साधुओंका योग न होवे तो, दिशावलोकन करके भोजन करुं । ४१ । इतिद्वादशव्रतम् ॥

यह द्वादश व्रतरूप श्रावकधर्म, पूर्वोक्त विधिसें पालु, विना छाएया जलका पान और स्नान, मरणांतमें भी न करु । ४२ । कदर्प, दर्प, थूकना, सोना, चार प्रकारका आहार करना, विकथा, कलह, इत्यादि जिनसंकपमे वर्जुं । ४३ ।

अमुक महागछमे, अमुक गुरु सूरिके संतानमे, अमुकके शिष्यके पास, अमुक सूरिके पादातमें ४४ । अमुक सवत्सरमे, अमुक मासमें, अमुक पक्षमे, अमुक तिथिमें, अमुक वारमें, अमुक नक्षत्रमे, अमुक नगरमें । ४५ । अमुकका पुत्र, अमुक नामका श्रावक, यहां गृहस्थधर्म ग्रहण करता है अमुककी पुत्री आमुककी भार्या, अमुक नामकी श्राविका, वा व्रत ग्रहण करती है । ४६ ।

नवरं क्षत्रियकेवास्ते प्राणातिपात स्थानमे प्रथम व्रतमें ४७ । ४८ । यह दो गाथा, अधिक जाननी । युद्धमें, कोइ गौको चुरा लेजाता होवे तिसके हटानेमे, चैत्य, गुरु, साधु, सघको उपसर्ग देनेवालेको हटानेमे, तथा दुष्टके निग्रहमे, जीवके वध हुए मुझको दोष नही । ४९ । जनोंके, और देशके रक्षणवास्ते सिह, व्याघ्र, शत्रुओंके हननेमे मुझको

दोष नही, अर्थात् इन कामोके लिए हिंसा करनेसें मेरा व्रत भंग न होवे । जल पीनेमे ठाणना, अन्यत्र स्नाना दिमे यथाशक्ति । ४८ । इनमे प्रमादके होनेसें, गुरुके वचनसें यह तप करुं, अल्प बहुत भांगेसें, तिससें मेरी विशुद्धि होवे । ४९ ॥ इति परिग्रह प्रमाणटिप्पनकविधि ॥

इन बारह व्रतोमेंसें कोइ कितनेही व्रत अंगीकार करे, तिसको तितनेही उच्चार करावने । जिसको ७ मासिक सामायिक व्रत अरोपते हैं, तिसका यह विधि है ॥ चैत्यवंदना, नदि, क्षमाश्रमणादि सर्वपूर्ववत् सामायिकके अभिलाप करके, । और विशेषयह है, । कायोत्सर्गके अनंतर तिसके हस्तगत नूतन मुखवस्त्रिकाके ऊपर वासक्षेप करना । तिसही मुखवस्त्रिकाकरके षट्ट (६) मासपर्यंत उभयकाल सामायिक ग्रहण करे । पीछे तीनवार नमस्कारका पाठ करके दमक पढावे सयथा ॥

" ॥ करेमि भंते सामाइय, सावज्ज जोग पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेण वायाए काएण, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं, वोसिरामि, । से सामाइए चउविहे तंजहा दव्वउं खित्तउं कालउं भावउं दव्वउंण सामाइअं पडुच्च, खित्तउंण इहेव वा अन्नत्थ वा, कालउंण जाव छम्मास, भाव

उंण जाव गहेण न गहिज्जामि,जाव ठलेणं न ठलि ज्जामि, जाव सन्निवाएण नाज्जिजविज्जामि, ताव मे एसासामाइय पडिवत्ती ॥ "

ऐसे तीनवार पढावना । मस्तकोपरि वासक्षेप करना, अक्षतवासाको अभिमंत्रणा, और संघके हाथ मे वासक्षेप देना, यहां नही है परतु प्रदक्षिणा तीन, करावनी । इतिपाएमासिक सम्यक्त्वारोपणविधिः ॥

इसीतरें सम्यक्त्वका, और द्वादश व्रतोंका भी इसही दंडकसें तिस २ अभिलापसें मास, षट् (६) मास वा वर्ष पर्यंत, सम्यक्त्व व्रतोंका उच्चारण करना । नवरं सम्यक्त्वका सम्यक्त्वदंडसें उच्चार करना नवरं इतना विशेष है कि, सम्यक्त्वकी अव धिमे 'जावज्जीवाए' यह पाठ न कहना किंतु, 'मास छम्मासं वरिस' इत्यादि कहना शेष व्रतोंमें भी जावज्जीवाएके स्थानमे 'मास छम्मास वरिस' इत्यादि कहना ॥

अथ प्रतिमोद्वहनविधि ॥ यावज्जीवतक नियम स्थिरीकरण प्रतिज्ञा जो है, तिसको प्रतिमा कहते है तिनमें कालादिमे नियमव्यवछेद नही है । ते प्रतिमा एकादश (११) गृहस्थोंकी है । तद्यथा ॥

" ॥ दसण १, वय २, सामाइय ३, पोसह ४ पडिमाय ५, बंभ ६, अचित्ते ७, ॥ आरंभ ८, पेस ९, उद्दिठ, वज्जए १०, समणभूए य ११, ॥ १ ॥ "

अर्थः–तहां जिस प्रतिमामें मासतक श्रावक नि शकितादि सम्यग् दर्शनवाला होवे, सा प्रथम दर्शनप्रतिमा १ व्रतधारी द्वितीया २ कृतसामायिक तृतीया ३ अष्टमी चतुर्दश्यादिमें चतुर्विध पौषध करना, चतुर्थी ४ पौषधकालमें, रात्रिकी आदि प्रतिमा, अगीकार करनी, अस्नान, प्रासुकभोजी, दिनमें ब्रह्मचारी, रात्रिमें परिमाण करे और कृत पौषध तो, रात्रिमें भी ब्रह्मचारी, इति पचमी ५ सदा ब्रह्मचारी षष्ठी ६ सचित्ताहारवर्जक सप्तमी ७ आप आरभ नही करना, अष्टमी ८ नौकरोंसें आरभ नही करावना, नवमी ९ उद्दिष्टकृताहारव र्जक, क्षुरमुडित, शिखासहित, वा निराधारीकृतध नका, पुत्रादिकोंको बतलानेवाला, इति दशमी १० क्षुरमुंडित, लुचितकेश, वा रजोहरणपात्रधारी, साधु समान, निर्ममत्व, अपनी जातिमें आहारादिकेवास्ते विचरे, इतिएकादशी ॥ ११ ॥

यहा पहिली एक मास, दूसरी दो मास, तीस री तीन मास, एवं यावत् इग्यारहमी इग्यारह मास पर्यंत तथा जो अनुष्ठान, पूर्व प्रतिमामें कहा है, सोही अनुष्ठान, आगेकी सर्व प्रतिमायोंमें जानना. इनमें वितथ प्ररूपणा श्रद्धानादि करना, सो अति चार है । तिनमें पहिली 'दर्शन प्रतिमा' तिसमें नदि, चैत्यवदन, क्षमाश्रमण, वासक्षेप, इनोंका विवि

दर्शनप्रतिमाके अभिलापसें सोही पूर्वोक्त रीतीसें जानना. और दंडक ऐसें हैं ।

"॥अहण भते तुह्माण समीवे, मिछत्त, दवभा वभिन्न,पच्चरकामि, दंसणपडिम, उवसंपज्जामि, नो मे कप्प इज्जप्पभिई अन्नउत्थिए वा, अन्नउत्थिअदेवयाणि वा, अन्नउत्थिअपरिग्गहिआणि वा, अरिहतचेइआणि वा, वंदित्तए वा, नमसित्तए वा, पुव्विअणालत्तेणं आलवित्तए वा, संलवित्तए वा, तेसि असण वा पाण वा खाइमं वा दाउ वा, अणुप्पयाउ वा, तिविहं तिविहेण, मणेण वायाए काएण, न करेमि न कारवेमि, करंतपि अन्न न समणुजाणामि, तहा अईअं निंदामि, पडुप्पन्न सवरेमि, अणागय पच्चइखामि, अरिहंतसक्खिअं, सिद्धसक्खिअं, साहुसक्खिअं, अप्पसक्खिअ, वोसिरामि, तहा दवओ खित्तओ कालओ भावओ, दवओण एसा दसणपडिमा, खित्तओण इहेव वा अन्नत्थ वा, कालओण जाव मास, भावओणं जाव गहेण न गहिज्जामि, जाव ठलेण न ठलिज्जमि, जाव सन्निवाएणं नाभिभविजामि, ताव मे एसा दसणपडिमा ॥"

शेप पूर्ववत् । प्रदक्षिणात्रयादिक, दर्शनप्रतिमा स्थिरीकरणार्थ कायोत्सर्गादि. यहा अभिग्रह मासातिक यथाशक्ति आचाम्लादि प्रत्याख्यान करना, तीनो सध्यामे विधिसें देवपूजन करणा पार्श्व

स्यादिवंदनका परिहार करना शकादि पाच अतिचारोंका त्याग करना राजाभियोगादि ७ (६) कारणोंसें भी यह दर्शन प्रतिमा नही त्यागनी. ॥ इतिदर्शनप्रतिमा. ॥ १ ॥

अथ दूसरी व्रतप्रतिमा, सा, मास दो तक यावत् निरतिचार पांच अणुव्रत पालनविषया, गुणव्रत ३, शिक्षाव्रत ४, इनका पालना भी साथही जानना. अर्थात् दो मासपर्यंत निरतिचार द्वादश (१२) व्रतोंका पालना यहां नंदिक्षमाश्रमणादि तिसतिस प्रतिमाके अभिलापसें पूर्ववत्। प्रत्याख्यान नियम चर्यादि सर्व तेसेंही जानने दरूक भी तिसके अभिलापसें सोही जानना ॥ इतिव्रतप्रतिमा ॥ २ ॥

अथ तीसरी सामायिक प्रतिमा, सा, तीन मास तक उभयसध्यामें सामायिक करनेसें होती है शेष नदिनियम व्रतादिविधि सोइ अर्थात् पूर्वोक्तही जानना और दंडक सामायिकके अभिलापसें कहना ॥ इतिसामायिकप्रतिमा ॥ ३ ॥

अथ चौथी पौषधप्रतिमा, सा, चार मास यावत् अष्टमी चौदशको चार प्रकारके आहारके त्यागमें रक्तको चार [illegible] नेसें होती है द्रव्यादिभेदसें दो [illegible] कथनसें यथाशक्ति सूचन कि[illegible]

दिविधि सोही और दंमक तिसके (पौषधप्रतिमाके) अभिलापसें कहना ॥ इतिपौषधप्रतिमा ॥ ४ ॥

ऐसें पांचमासादिकालवाली शेषप्रतिमायोमे भी यही पूर्वोक्त विधि है नदिक्षमाश्रमण दंमकादि तिसतिस प्रतिमाके अभिलापसे व्रतचर्या सोही है, पर संप्रतिकालमे, पर्यायसें, वा सहननकी शिथिलतासें, पांचमी प्रतिमासें लेके इग्यारहमीतक प्रतिमाके अनुष्ठानका विधि शास्त्रोंमे नहि दिखताहे प्रतिमाका आरंभ शुभ सुहुर्तमें करना.॥ इति देशविरतिसामायिकारोपणविधि ॥

उपधान विधि ॥

श्रुतसामायिकारोपणविधि कहते है ॥ तहां यतियोकों श्रुतसामायिकारोपण, योगोद्वहनविधिसें होता है उनका श्रुतारोपण, आगम पाठसें होता है और योगोद्वहन आगमपाठ रहित एसे गृहस्थोंको, श्रुतसामायिकारोपण, उपधानोद्वहनसें होता है सो श्रुतारोपण, परमेष्टिमंत्र, ईर्यापथिकी, शक्रस्तव, चैत्यस्तव, चतुर्विंशतिस्तव श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि पाठकरके होता है. ॥

उपधीयते ज्ञानादि परीक्ष्यते अनेनेत्युपधानं—जिससें ज्ञानादिकी परीक्षा करिये, तिसको उपधान कहते है अथवा चार प्रकारके संवर समाधिरूप सुखशय्यामें उत्तम होनेसें उत्सीर्पक स्थानमें उप

धीयते स्थापन करिये, तिसको उपधान कहिये तिस उपधानमे छ (६) श्रुतस्कधोंका उपधान होता है, सोही दिखाते है परमेष्ठिमंत्रका १, ईर्यापथिकीका २, शक्रस्तवका ३, अर्हत् चैत्यस्तवका ४, चतुर्विंशतिस्तवका ५ श्रुतस्तवका ६

सिद्धस्तवकी वाचना उपधानविना होती है

प्रथम परमेष्ठिमंत्र महाश्रुतस्कधके पांच अध्ययन है, और एक चूलिका है दो दो पदके आलावे पांच है, सात २ अक्षरके अर्हत् आचार्य उपाध्याय नमस्कार रूप तीन पद है सिद्धनमस्कृति रूप दूसरा पद पांच अक्षरोका है, साधुओंको नमस्काररूप पांचमा पद नव अक्षरोंका है, एवं पांच पद तिसके पीछे चूलिका, तिसमें दो पदरूप प्रथम आलापक सोला (१६) अक्षरोंका है, तृतीय पदरूप दूसरा आलापक आठ (८) अक्षरोंका है, और चौथे पदरूप तीसरा आलापक नव (९) अक्षरोंका है तहा पचपरमेष्ठिमंत्रमें पाचो पदोंमें तीन उद्देशे है, और चूलिकामें भी उद्देशे एवं उद्देशे ६ ॥ प्रथमके पैंती अक्षर है, और चूलिकामें तेत पाच अध्ययन ऐसें है ॥

नमो अ[illegible]

आयरिआण ३ । नमो उवझायाणं ४ । नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एका चूलिका यथा ॥

एसो पच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मगलं ॥ १ ॥ दो दो पदके आलापक यह है ॥

नमो अरिहंताण । नमोसिद्धाण ॥ १ ॥ „

नमो आयरिआण ।नमो उवझायाण ॥ २ ॥ „

नमो लोए सव्वसाहूण ॥ ३ ॥ „

एसो पच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो ॥ ४ ॥„

मंगलाणं च सव्वेसि । पढमं हवइ मगल ॥ ५ ॥„

सात २ अक्षरके तीन पद यह है ॥

नमो अरिहंताण । ७ । नमोआयरिआण । ७ । नमो उवझायाण । ७ । ॥ १ ॥ „

पांच अक्षरोंका तीसरा पद "नमो सिद्धाणं । „२ पांचमां पद नव अक्षरप्रमाण "नमो लोएसव्वसाहूण।३„

चूलिकामें (१६) अक्षरप्रमाण प्रथम आलापक॥ एसो पच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणा सणो ॥ १ ॥ चूलिकामें आठ अक्षर प्रमाण दूसरा आलापक„ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ २ ॥„

चूलिकामे नव अक्षर प्रकार तीसरा आलापक "पढमं हवइ मंगलं ॥ ३ ॥„

सर्व अक्षर अडसठ (६८) तिसका उपधान ऐसें है ॥

नदि, देववंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमण, वंदनक, प्रमुख नमस्कारश्रुतस्कंधके अभिलापसें पूर्ववत् जाणना और अभिमंत्रित वासक्षेप भी पूर्ववत् जाणना. । तहां पूर्वसेवामे एकभक्तके अंतरे उपवास पांच, एव दिन ११, तहां प्रथम नंदिदिनमे एकभक्त, वा निविगइ, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकभक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकभक्त, छठे दिन उपवास, सातमे दिन एकभक्त, आठमे दिन उपवास, नवमे दिन एकभक्त, दशमे दिन उपवास, एकादशमे दिन एकभक्त ऐसें द्वादशम तप पूर्व सेवामें करना । तहां पंचपरमेष्ठि पदोंकी वाचना नंदिविना भी देनी शक्रस्तवका पढना, वासक्षेपपूर्वक तीन नमस्कारोका पढना, सर्व वाचनाओंमें जाणना । तहां श्रेणिवड आठ आचाम्ल करने, ऐसें एकोनविंशति (१९) दिन पीछे वीसमे दिन एकभक्त, इकवीसमे दिन उपवास, बावीसमे दिन एकभक्त, तेइवीसमे दिन उपवास, चौवीसमे दिन एकभक्त, पच्चीसमे दिन उपवास । ऐसें अष्टम तप उत्तर सेवामें. । पीछे चूलिकाकी वाचना एसो पच यहांसें लेके इवइ मगलं ॥

इति नमस्कारस्योपधानं ॥ पीछे तिसकी वाचना, तिसका विधि यह है ॥ पहिला सामाचारीका पुस्तक पूजना, पीछे मुखवस्त्रिकासें मुख ढांकके

ऐर्यापथिकी (इरियावहिय) पडिक्कमके क्षमाश्रमण पूर्वक कहैं ॥

"॥ भगवन् नमुक्कारवायणासंदिसावणिय वायणालेवावणिय वासरक्खेवं करेह। चेइयाइ च वंदावेह ॥'

ऐसें नंदि करके उवीसमें दिन एकभक्त करें,वाचना देनी चूलिकाके चारों पदोंके सर्व उपधानोंमें प्रति दिन अव्यापार पौषध करना, सवेरे २ पौषध पारके पुन. २ नित्य पौषध ग्रहण करना, और नमस्कार सहस्र गुणना ॥ इतिप्रथममुपधानम् ॥ १ ॥

ऐर्यापथिकीका भी उपधान ऐसेंही है आदिकी, और अंतकी, दोनोंही नंदि तिसके–ऐर्यापथिकीके अभिलापसें करनी । तहां वाचनामें आठ अध्ययन, और वाचना दो,–एक पाच पदोंकी और दूसरी तीन पदोंकी, पांच पदोंकी एक चूलिका ॥

"॥ इछामि पडिक्कमिउ इरिआवहिआए विराहणाए। १। गमणागमणे। २। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे हरीयक्कमणे ।३। ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासताणासकमणे । ४ । जे मे जीवा विराहिया ।५। यह एक वाचना, द्वादशम तपके पीछे देते है ॥ १ ॥

"॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया । ६ । अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाण सकामिया, जीवियाओ ववरोविया,

तस्स मिछामि दुक्कड । ७ । तस्सउत्तरीकरणेण, पायछित्तकरणेण, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाण कम्माण निग्घायणछाए, ठामि काउस्सग्ग।८। यह दूसरी वाचना, आठ आचाम्लके अतमे देनी ॥ २ ॥ इसके पीछे ॥

" ॥ अन्नथ्थ उससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण, जभाइएणं उडूएण, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुछाए, ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं।२। एवमाइएहिं, आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । ३ । जाव अरिहंताण, भगवंताण, नमुक्कारेण, न पारेमि । ४ । ताव काय, ठाणेणं, मोणेण, झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि । ५ ।" यह चूलिकाकी वाचना, अंत दिनमें देनी ॥ इतिऐर्यापथिक्याउपधानम् ॥ २ ॥

अथ शक्रस्तवका उपधान कहते हैं ॥ तहां नंदिआदि सर्व शक्रस्तवके अभिलापसें पूर्ववत् । तथा प्रथम दिनमें एकभक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकभक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकभक्त, छठे दिन उपवास,॥सातमे दिन एक भक्त, । तहां तीन सपदायोंकी प्रथम वाचना देते हैं ॥ यथा ॥

"॥ नमुथ्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । १ । आइगराण तिथ्थयराण सयसंबुद्धाण । २ । पुरिसुत्तमाण पुरिससीहाण पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं । ३ । इत्येका वाचना ।

यह एक वाचना । नमुथ्थुण । यह पद भिन्न है । तीनोंही संपदा अनुक्रमे दो, तीन, चार पद वाली है । पीछे एकश्रेणिकरके निरंतर सोलां (१६) आचाम्ल करने । तिसमें पांच २ पदोंवाली तीन सपदाकी वांचना देते हैं ॥ यथा ॥

॥ लोगुत्तमाण लोगनाहाण लोगहिआण लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराण । ४ । अभयदाण चक्खुदयाण मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ।५। धम्मदयाण धम्मदेसियाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं । ६ । यह दूसरी वाचना।२।

पीछे फिर भी तिसही श्रेणिकरके सोलां आचाम्ल करने । तिसमें दो तीन पदोंवाली तीन सपदाकी वाचना देनी- ॥ यथा ॥

॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराण विअट्टछउमाणं । ७ । जिणाणं, जावयाण तिन्नाणं तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाणं । ८ । सव्वन्नूण सव्वदरिसिण सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति,सिद्धिगइनामधेय,ठाणं संपत्ताण,नमो जिणाणं जिअभयाण । ९ ।" यह तीसरी वाचना ॥ ३ ॥

"॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणा गए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥" इस अंतिमगाथाकी वाचना भी, तीसरी वाचनाके साथही देनी ॥ इतिशक्रस्तवोपधानम्॥३॥

अथ चैत्यस्तवका उपधान कहते हैं ॥ नंदिआदिपूर्ववत् । प्रथम दिने एक भक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एक भक्त, पीछे श्रेणिकरके तीन आचाम्ल करने अंतमें तीनोंही अध्ययनोंकी सम कालें एक वाचना देनी ॥ यथा ॥

"॥ अरिहंतचेइआण, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । १ । सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामिकाउस्सग्ग । २ । अन्नत्थउससिएणं–यावत्–वोसिरामि ॥ ३ ॥" यह एकही वाचना है. ॥ इति चैत्यस्तवोपधानम् ॥ ४ ॥

अथ चतुर्विंशतिस्तवका उपधान कहते हैं ॥ नंदि, दो पूर्ववत् । प्रथम दिने एकभक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकभक्त, चौथे दिन उपवास, पाचमे दिने एकभक्त, छठे दिन उपवास, सातमे दिन एकभक्त । एसें अष्टम तप । अंतमें प्रथम गाथाकी एक वाचना यथा ॥

"॥ लोगस्स उज्जोअगरे,

अरिहंते कित्तइस्स, चउवीसंपि केवली । १ ।" यह एक वाचना ॥ १ ॥

पीछे श्रेणिकरकेही वारां (१२) आचाम्ल करने तिसके अतमें तीन गाथाकी वाचना. ॥ यथा ॥

॥ उसभमजिय च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइ च। पउमप्पहं सुपासं, जिण च चंदप्पहं वंदे ।२। सुविहिं च पुप्फदंत, सीअलसिज्जास वासु पुज्ज च ॥ विमल मणतं च जिणं, धम्मं सतिंच वंदामि ।३। कुथु अरं च मल्लिं, वंदे मुणि सुव्वय नमिजिणं च ॥ वंदामिरिठनेमिं, पासं तह वद्ध माणं च ।४। यह दूसरी वाचना. ॥२॥

पीछे तिस श्रेणिकरकेही तेरा (१३) आचाम्ल करने तिसके अतमें तीसरी वाचना ॥ यथा ॥

॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजर मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु । ५ । कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु । ६ । चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयास यरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥" यह तीसरी वाचना ॥ ३ ॥ इति चतुर्विंशतिस्तवोपधानम् ॥ ५ ॥

अथ श्रुतस्तवका उपधान कहते हैं । नंदि, दो पूर्ववत् । प्रथमदिने एकभक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकभक्त, पीछे श्रेणिकरके पांच आचाम्ल

करने तिसके अंतमें दो गाथाओंकी और दोनों वृत्तों की समकालही वाचना । तिसमें पांच अध्ययन है.। तिसमें प्रथमकी दो गाथाओंके दो अध्ययन ॥ यथा ॥

" ॥ पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवेअ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि । १ । तम तिमिरपडलविद्धंसणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स । २ । तीसरा अध्यायन वसततिलका वृत्तसें ॥ यथा ॥

॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स । को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं । ३ । चौथा अध्ययन शार्दूलविक्रीडितवृत्तके पूर्वार्द्धसें। यथा

॥ लोगो जह पइट्ठिउं जगमिण तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासउं विजयउं धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ ॥५॥" इति श्रुतस्तवोपधानम् ॥६॥ इति षडुपधानानि ।

तथा सिद्धस्तवमें प्रथम तीन गाथाकी वाचवा यथा

" सिद्धाण बुद्धाण, पारगयाण परपरगयाण । लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाण । १ । जो देवाणविदेवो, ज देवा पजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअ, सिरसा वंदे महावीरं । २ । इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । ससार सागराउं, तारेइ नर व नारि वा ॥ ३ ॥ " शेष दो गाथा ॥ यथा ॥

॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं च निसीहि आ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टि, अरिट्ठनेमि नमंसामि । ४ । चत्तारि अट्ठ दस दो अ, वंदिआ जिणवरा चउवीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥" इत्युपधानवाचना स्थिति' ॥ अथ विस्तार, निशीथसिद्धातसें उधृत उपधानप्रकरणसें जानना ॥

भावार्थ.—पांच नमस्कारमे पांच उपवासका उपधान होता है, आठ आचाम्ल तथा अंतमें एक अष्टमतप, और बत्तीस आचाम्ल चैत्यस्तवमे एक उपवास, और तीन आचाम्ल करणे । चतुर्विशतिस्तवमें एक षष्टतप, एक उपवास, और पचवीस (२५) आचाम्ल करणे । श्रुतस्तवमे एक उपवास, और पांच आचाम्ल । तीर्थंकर गणधरोंने चैत्यवंदनादि सूत्रमे यह उपधान कथन करा है ॥ ५ ॥ व्यापाररहित, विकथाविवर्जित, रौद्र ध्यान रहित, विश्राम रहित उपयोगसहित, उपधान करे, ॥ ६ ॥ यह उत्सर्ग कहा अब अपवाद कहते हैं अथ कदापि उपधानवाही बालक होवे, वा वृद्ध होवे, वा शक्तिरहित तरुण होवे तो, अपनी शक्तिप्रमाण उपधान प्रमाण पूर्ण करे । रात्रिभोजनकी विरति, चतुर्विधाहार, वा त्रिविधाहार, वा द्विविधाहार प्रत्याख्यानरूप करे; नवकारसहिआदि पच्चक्काण कर

के । एक शुद्ध आंबिलकरे, अथवा इतर दो आंबिलकरनेसें, एक उपवास होता है पणतालीस (४५) नवकारसहि करनेसें एक उपवास होता है चौवीस (२४) पोरसि करनेसें, और दश (१०) साढपोरसी करनेसे, एक उपवास होता है तीन निवि करनेसे, और चार एकलठाणे करनेसें, एक उपवास होता है आचरणासे सोलां (१६) पुरिमढ कर नेसें उपवास होता है चार एकासनेसें, और आठ बियासणे करनेसे भी, उपवास होता है. अर्थात् उपवासका जो फल है, सोही प्राय पूर्वोक्त तपका फल है इसवास्ते जिसकी पूर्वोक्त उपधानकी शक्ति न होवे सो, इन तपोमेसें किसी भी तपके करनेसे उपधान प्रमाण पूर्ण करे ॥ ११ ॥

गौतमस्वामी कहते हैं हे भगवान् ! ऐसें करते हुए प्राणीको बहोत काल होवे तो, कदापि नवकारवर्जित भि, तिसका मरण हो जावे, तो नवकार वर्जित सो प्राणी, अनुत्तर, निर्वाण, कैसे प्राप्त करे ? तिसवास्ते नवकार प्रथमही ग्रहण करो, उपधान होवे, वा न होवे ॥ १३ ॥

महावीर स्वामी कहते हैं हे गौतम ! जो प्राणी जिस समयमें व्रतोपचार (उपधानारंभ) करे, तिसही समयमें, तू जिनाज्ञाकरके ग्रहण करा है व्रतार्थ जिसने, ऐसा तिसको जाण ॥ १४ ॥ ऐसें जिसने

उपधान करा है, सो प्राणी भवांतरमे सुलभबोधि होतेंहें और उपधानके अध्यवसायवाले भी, हे गौतम ! आराधक होतें है परतु हे गौतम ! भक्ति वाला भी प्राणी, जो उपधानविना श्रुतको ग्रहण करे, तिसको नही ग्रहण करनेवालेके सदृश जाणना तथा सो जीव, तीर्थंकरकी, तीर्थंकरके वचनोंकी, संघकी, और गुरुजनकी, आशातना करता है सो आशातना बहुल प्राणी, हे गौतम ससारमें भ्रमण करता है उपधानवीना नवकार जिसने पढ लिया है, तिसको भी उपधान पीछेसेभी करनेसें बोधि, (जिनधर्मप्राप्ति) सुलभ कही है यह उपधानकरके प्रधान, निपुण, सपूर्ण भी वंदन विधान, जिनपूजा, पूर्वकही श्रुतोक्त नीतिकरके पढना तिस पच मंगलको स्वर, व्यजन, मात्रा, बिंदु, पदछेद, स्थानोंकरके शुद्ध पढके, चैत्यवंदन सूत्रको, और अर्थको विशेषकरके जाणना तिसमे जहा सूत्रविषे, वा अर्थविषे, सदेह होवे तो, तिसको बहुश विचारके संपूर्ण संदेहरहित करना ॥२१॥

अथ शुभतीथि, करण, मुहूर्त्त, नक्षत्र, जोग, लग्नमें, चद्रबलके अनुकूल हुए, कल्याणकारी प्रशस्त समयमें, अपने विभवानुसार भगवान्‌का पूजन कर, परम भक्तिसें विधिपूर्वक साधुवर्गको प्रतिलाभके, अतिसमूह [illegible], हर्षवशसें खडे हुवे हे,

पुलक (रोम) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निर्विरागद्वेषमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उल्लसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिभुवनगुरु जिन भगवानकी प्रतिमामे स्थापन किये है, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसें मैं धन्य हू ऐसें मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको भावते (विचारते) हुए, ऐसें पूर्वोक्त विशेषणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गंभीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुभचारित्रसंयुक्त, अप्रमादादि बहुविध गुण सयुक्त, ऐसें गुरुके साथ, चतुर्विध संघसयुक्त, विशेषसें निजबंधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनबिंबको वंदना करनी ॥ ३० ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम भक्तिसें वंदना करे तथा साधर्मिओंको यथायोग्य प्रणामादि करे पीछे बहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक भक्ति करके उपधानवाहिने, श्रीसंघका भारी सन्मान करना ॥ ३१ ॥

इस अवसरमें अछीतरे जान्या है गंभीर सिद्धांतका सार जिसने, ऐसे गुरुने, आक्षेपिणी, विक्षेपिणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, यह चार प्रकारकी

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण जारी प्रवध करके करनी ॥ ३३ ॥

पीछे तिस जव्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

जो जो देवानुप्रिय ! निज जन्म साफल्यताको प्राप्त करके तैंनें आजसें लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी क्योंकि, क्षणजगुर मनुष्यपणेमें यही सार है, तहां तैंने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोंको वंदना करकेही जोजन करना कल्पे, और अपराहमें जी फिर वंदना कर केही सोना कल्पे, अन्यथा नही ॥ ३७ ॥

ऐसें अजिग्रहवधन करके पीछे वर्द्धमान विद्यासें अजिमंत्रके गुरु सात मुष्टीप्रमाण गध (वासक्षेप) ग्रहण करे पीछे तिस उपधानवाहीके मस्तकऊपर " निथ्यारगपारगो हविज्ज तुम " ऐसें उच्चारण कर ता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे (झाले) इस विद्याके प्रजावके जोगसे निश्चय यह जव्य प्रारंजित कार्योंका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघजी, तू, निस्तारक पारग हो,

तूं धन्य है सलक्षण है, इत्यादि बोलता हुआ, तिसके मस्तकऊपर वासक्षेप करे ॥ ४३ ॥

पीछे जिनप्रतिमाके पूजादेशसें सुरभिगंधसंयुक्त अम्लान श्वेतमाला ग्रहण करके, गुरु अपने हाथों सें तिस उपधानवाहीके दोनों खंधोऊपर आरोपण करता हुआ, शुद्ध चित्तकरकेनिसंदेह ऐसा वच न कहे ॥ ४४ ॥

अहीतरें प्राप्त किया निज जन्म जिसने, तथा संचय करा है अतिभारी पुण्यका समूह जिसने, ऐसें जो जो भव्य ! तेरी नरकगति, और तिर्यग् गति, अवश्यमेव बंद होगई हे सुंदर ! आजसें लेके, तु, अपयस, नीच गोत्रोंका बंधक नही है तथा जन्मांतरमें भी, यह पंचनमस्कार तुझको दुर्लभ नही है पांच नमस्कारके प्रभावसें जन्मांतरमे भी तुझको प्रधान जाति, कुल, आरोग्य संपदाए प्राप्त होवेगी और इसके प्रभावसें मनुष्य कदापि संसारमें दास, प्रेष्य, दुर्भग, नीच और विकलें द्रिय नही होते हैं किं बहुना जोइस विधिसें इस श्रुतज्ञानको पढके श्रुतोक्त विधिसें शुद्ध आचारमें–क्रिया करे, वे, यदि तिसही भवमें उत्तम निर्वाणको प्राप्त न होवे तो, अनुत्तर ग्रैवेयकादि देवलोकोंमें चिरकाल क्रीडा करके उत्तम कुलमें उत्कृष्ट प्रधान सर्वांगसुंदर प्रकट सर्वकला प्राप्त करी

हैं जिनोंने, ऐसेलोकोंके मनको आनंद देनेवाले होके, देवेंद्रसमान ऋद्धिवाले, दयामें तत्पर, दानविनयसें युक्त, कामभोगोंसें विरक्त, सपूर्ण धर्मके अनुष्ठानसें, शुभ ध्यानरूप अग्निसें चार घातिकर्मरूप इधन को दग्ध किये हैं–जिनोंनें, ऐसें महासत्त्व, निर्मल केवल ज्ञान, सर्व मलकर्मसें रहित, होकर शीघ्र सिद्ध होते हैं ॥ ५३ ॥ यह निर्मल फल जाणके बहोत मान देने योग्य जो देव, सोही भये सूरि, ऐसें जो जिन तिनके वचनसें यह उपधान महानिशीथ सूत्रसें सिद्ध करो –इस अतिम गाथामे प्रकरणकर्त्ता श्रीमान देवसूरिने भगवान्के 'महमाणदेवसूरिस्स' इस विशेषणद्वारा अपना भी नाम, सूचन करा है ॥ ५४ ॥ इत्युपधानप्रकरणभावार्थ.॥

॥ इत्युपधानविधि ॥

अथ मालारोपण विधि कहते हैं ॥ तहां पिठलाही नंदि क्रम जाणना । और इतना विशेष है कि, मालारोपनतपके पूर्ण हुए तत्कालही, वा दिनातरमे होता है तहा यह विधि है ॥ मालारोपणसें पहिले दिनमे साधुओंकों अन्न पान वस्त्र पात्र वसति पुस्तक दान देवे, सघको भोजन देवे, वस्त्रादिकसें सघकी पूजा करे, शुभ तिथि वार नक्षत्र लग्नमें, दीक्षाके उचित दिनमें, परम युक्तिसें बृहत्स्नात्र विधिसें जिनपूजा करे, माता पिता परिजन साधर्मि

कादिकोंको एकठे करे, पीठे मालाग्राही कृतउचित वेष, कृतधम्मिल, उत्तरासंगवाला, निजवर्णानुसारसें जिनोपवीत उत्तरीयादिधारी, सज करके प्रचुरगंधादि उपकरण अक्षत नालिकेर हाथमें लेके पूर्ववत् समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे । पीठे गुरुके समीपे क्षमाश्रमणपूर्वक कहे ॥ "इछाकारेण तुझे अम्हं पंचमंगलमहासुअखंध इरिआवहिआ सुअखंध, सक्कथयसुअखंध,चेइअथयसुअखंध,चउवीसथयसुअखंध, सुयथयसुअखंध,अणुजाणावणिअ,वासखेवं करेह" ॥ पीठे गुरु जी अभिमंत्रित वासक्षेप करे । फिर श्राद्ध क्षमाश्रमणपूर्वक कहे "चेइआइ च वंदावेह" पीठे वर्द्धमानस्तुतियोंसें चैत्यवंदन कराना, शांतिदेवादि स्तुति पूर्ववत् फिर शक्रस्तव अर्हणादि स्तोत्र कहना पूर्ववत् । पीठे ऊठके "पंचमंगलमहासुअखंध पडिक्कमणसुअखंध नावारिहंतथयं ठवणारिहंतथयं चउवीसथयं नाणथयं सिद्धथयं अणुजाणावणिअ करेमि काउस्सग्ग अन्नथ्थ उससिएण–यावत्–अप्पाण वोसिरामि कहके चतुर्विंशतिस्तव चिंतन करे, पारके प्रकट चतुर्विंशतिस्तव पढे । गुरु तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढके आसन ऊपर बैठ जावे, सघ और परिजनसहित श्राद्धको जो देवाणुपिया, संपाविअ नियजम्मसाफल्ल ॥ तुमए अज्जप्पभिई, तिक्काल जावजीवाए ॥ १ ॥

वंदे अवाइ चेइआइ, एगग्गसुथिरचित्तेण ॥
खणभंगुराओ मणुअ, त्तणाउं इणमेव सारंति ॥ २ ॥
तथ्य तुमे पुव्वण्हे, पाणपि न चेव ताव पायव्वं ॥
नो जाव चेइआइ, साहूविअ वंदिआ विहिणा ॥ ३ ॥
मज्झण्हे पूणरवि, वंदिऊण निअमेण कप्पए भुत्तु ॥
अवरण्हे पुणरवि, वंदिऊण निअमण सुअणंति ॥ ४ ॥

इत्यादि महानिशीथमध्यगत वीस गाथामें कही हुई देशना देके, तीन सध्यामे चैत्यवंदन साधुवंदन करनेके अभिग्रह विशेषोंको देवे पीछे वासमंत्रके सात गधकी मुष्ठी " निव्वारगपारगो होहि " ऐसें कहता हुआ गुरु, तिसके शिरमें प्रक्षेप करे । पीछे अक्षतसहित वासक्षेपको मत्रे । तिस समयमें सुर भिगध अम्लान श्वेत पुष्पोंके समूहसें ग्रथन करी हुई मालाको जिनप्रतिमाके पगोंऊपर स्थापन करे। सूरि खडा होके अभिमंत्रित वासको जिनचरणोंके ऊपर क्षेप करे, पास रहे साधु साध्वी श्रावक श्राविका सबको गधाक्षत देवे. । श्राद्ध नमस्कारअनुज्ञा केवास्ते तीन प्रदक्षिणा देवे । तब गुरु ' निठारग पारगो होहि गुरुगुणेहि वुड्ढाहि " ऐसे कहे और जन (सघ) " पूर्णमनोरथवाला तू हुआ है, तू धन्य है, तू पुण्यवान् है " ऐसें कहते हुए उनके उपर गुरुसंघादि वासक्षेप करे। पीछे फिर श्राद्ध समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे। पीछे गुरु और

सम वसरणको तीन प्रदक्षणा देवे, पीछे गुरुसंघसहित समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे, पीछे नमस्कारादिश्रुतस्कंधअनुज्ञापनार्थ कायोत्सर्ग करे, एकलोगसकाकाउसग करें, पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे माला धारण करनेवाला तिसके स्वजनोकेसाथ प्रतिमाके आगे जाके शक्रस्तव पढके "आणुजाणउ मे भयवं अरिहा' ऐसें कहके जिनपादऊपरि पूर्व स्थापित मालाको लेके निजबधुके हाथमे स्थापन करके नदिके समिप आय कर, श्राद्ध, मालाको गुरुसें मंत्रित करावे, । पीछे गुरु खडा होकर उपधानविधिका व्याख्यान करे सो श्राद्ध जी, खडा होके श्रवण करे "परमपयपुरिपत्थि" इत्यादि मालाकी गाथा महिमां दर्शकसें गुरु देशना करे ।

तत्तो जिणपडिमाए, पूआदेसाओ सुरजिणवद्ध ॥
अभिलाण सिअदाम, गिण्हिअ गुरुणा सहत्थेण॥१॥
तस्सोभयखधेसु, आरोवंतेण सुद्धचित्तेण ॥
निसदेहं गुरुणा,वत्तव एरिस वयण ॥ २ ॥
जो जो सुलद्धनिअजम्म, निचिअअइगरुअपुन्नपब्भार॥
नारयतिरिअगईओ, तुझावस्सं निरुद्धाओ ॥ ३ ॥
नो वधगोसि सुदर, तुममित्तो अकयनीअगुत्ताण ॥
नो दुल्लहो तुह जम्म, तरेवि एसो नमुक्कारो ॥ ४ ॥
पंचनमुक्कारजावओ अ जम्मंतरेवि किर तुझ ॥
जाईकुलरूवग्ग, सपयाओ पहाणाओ ॥ ५ ॥

अन्न च इमाओ चिअ,न हुंति मणुआ कया वि जीअलोए
दासा पेसा कुजगा,नीआ विगलिंदिआ चेव ॥ ६ ॥
किं बहुणा जे इमिणा, विहिणा एअ सुअ अहिजित्ता॥
सुअजणिअ विहाणेणं, सुद्धे सीले अजिरमिज्जा॥७॥
नो ते जइ तेणचिअ, भवेण निव्वाणमुत्तम पत्ता ॥
तोणुत्तर गेविज्जाइएसु सुइरं अन्निरमेउ ॥ ८ ॥
उत्तमकुलम्मि उक्किठ,लठसव्वगसुदरापयमा ॥
सव्वकलापतठा, जणमणआणदणा होउं ॥ ९ ॥
देविंदोवमरिद्धी, दयावरा दाणविणयसंपन्ना ॥
निव्विणकामभोगा, धम्म सयल अणुठेउ ॥ १० ॥
सुहझाणानलनिदड्ढ, घाइकम्मिंधणा महासत्ता ॥
उप्पन्नविमलनाणा, विहुयमला जत्ति सिझति ॥११॥

यह गाथा तीनवार गुरु कहे । इन गाथायोका भावार्थ उपधानप्रकरणभावार्थमें लिख दिया है ॥

पीछे तिसके स्कधमें मालाप्रक्षेप करनी ॥ पीछे श्राद्धवर्ग आरात्रिक (आरती) गीतनृत्यादि बहुत करे । उपधानवाही श्रावकने तिस दिनमें आचाम्लादि तप करना, यदि पौषधशालामे मालारोपण होवे, तदा संघसहित जिनमंदिरमे जावे, चैत्यवंदना करके फिर पौषधागामें आयकर भगवतीपूजा दि करे ॥ इस उपधानविधिको निशीथ, महानिशीथ, सिद्धांतके पढनेवालोंनेश्रुतसामायिकसमान माना है और निशीथ महानिशथके तिरस्कार

करनेवालोंने नहीं अंगीकार करा है तिनोंने तो प्रतिमोद्वहनविधिकोही श्रुतसामायिक कथन करा है ॥ माला जी कितनेक कौशेय पट्टसुत्रमयी (रेशमी) स्वर्ण, पुष्प, मोति, माणिक्य गर्भित, आरोपते हैं और कितनेक श्वेत पुष्पमयी आरोपते हैं तिसमें तो, अपनी सपत्तिही प्रमाण है

॥ इति श्रुतसामायिक विधि ॥

॥ अथ श्रावक दिन चर्या ॥

दो मुहुर्त्त शेष रात्रि रहे श्रावक सूता ऊठे, मल मूत्रकी शका दूर करे, और शुचि होकर पवित्र आसनऊपर स्थित हुआ यथाविधिसे परमेष्ठि महा मत्रका जाप करे पीछे कुल, धर्म, व्रत, श्रद्धाका, विचार करके, और स्तोत्रपाठसंयुक्त चैत्यवंदन कर के, अपने घरमे, वा पौषधशालादि मे स्थित होकर, प्रतिक्रमणादि करे । पीछे प्रत्युष कालमे अपने घरमे स्नान करके, शुचि होके, शुचि वस्त्र पहिरके, ससारिक सुख, और मोक्ष देनेवाले, अरिहंतकी पूजा करे । तिसवास्ते [illegible] अर्हत्कल्पके कथनानुसारें कहते हैं

॥ अर्हत् कल्पो[illegible]

श्राद्ध [illegible]
रमे, शि[illegible]

करी, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत उत्तरीय उत्तरासग धारी, मुखकोश बांधी, एकाग्रचित्त, एकातमें जिन पूजन, करे । प्रथम जल, पत्र, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, अग्नि, दीपक, गधादिकोको नि पापता करे ॥

॥ जलादिकोकी शुद्धीके मत्र ॥

' ॥ ॐ आपोऽप्काया एकेंद्रिया जीवा निरव द्यार्हत्पूजाया निर्व्यथाः सतु, निरपाया संतु, सद्व तय सतु, न मेस्तु संघट्टनहिसापापमर्हदर्च्चने ॥ ' इति जलाग्निमंत्रणम् ॥

' ॥ ॐ वनस्पतयो, वनस्पतिकाया जीवा, एकेंद्रि या, निरवद्यार्हत्पूजायां, निर्व्यथा संतु, निरपाया सतु, सद्गतय सतु, न मेस्तु सघट्टनहिसापापमर्हद र्च्चने ॥ " इतिपत्रपुष्पफलधूपचदनाद्यग्निमंत्रणम् ॥

' ॥ ॐ अग्नयोऽग्निकायाजीवा, एकेंद्रिया, निरव द्यार्हत्पूजायां निर्व्यथा सतु, निरपाया सतु, सद्गतय सतु, नमेस्तु सघट्टनहिसा पापमर्हदर्च्चने ॥ ' इति व न्हिदीपाद्यग्निमंत्रणम्॥ सर्वका अग्निमत्रण वासक्षेपसे तीनवार करना ॥ पीछे । पुष्पगधादि हाथमें लेके ॥

" ॥ ॐ त्रसरूपोह, ससारिजीव ,सुवासन., सुमेध एकचित्तो, निरवद्यार्हदर्च्चने निर्व्यथो भूयासं, नि पा पो भुयासं, निरुपद्रवो भुयास, मत्सं श्रिता अन्येपि ससारिजीवा निरवद्यार्हदर्च्चने निर्व्यथा भूयासु ,नि पा पाभूयासु ॥ '

ऐसे कहके अपने आपको तिलक करना, पुष्पादिकरके अपना शिर अर्चन करना ॥ फिर पुष्प अक्षतादि हाथमे लेके ॥

" ॐ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसकाया एकद्वित्रिचतु पचेंद्रियास्तिर्यद्मनुष्यनारकदेवगतिगताश्च तुर्दशरज्वात्मकलोकाकाशनिवासिन इह जिनार्चने, कृतानुमोदना, संतु, नि पापा संतु, निरपाया. सतु, सुखिन सतु प्राप्तकामा सतु, मुक्ता संतु, बोध माप्नुवंतु ॥ '

ऐसे पढके दशोदिशाओंमे गध, जल, अक्षतादि क्षेप करना पीछे ।

शिवमस्तु सर्वजगत , परहितनिरता भवंतु भूतगणा ॥
दोषा प्रयांतु नाश, सर्वत्र सुखीभवंतु लोका ॥ १ ॥
सर्वेपि सतु सुखिन , सर्वे संतु निरामया ॥
सर्वे भद्राणि पश्यतु, मा कश्चिद्दु खभाग् भवेत् ॥२॥

यह आर्या और अनुष्टुप् छद पढने ॥ पीछे ॥

" ॐ भूतधात्री पवित्रास्तु अधिवासितास्तु सुप्रोषितास्तु ॥ " ऐसें पढके प्रथम लीपी हुई भूमिमे जलसें सेचन करे ॥ पीछे ॥

" ॐ स्थिरायशाश्वताय निश्चलाय पीठाय नम ॥"

ऐसे पढके धोयके चदनसें लेपन करके स्वस्तिकसे अकित ऐसा पूजापट्ट (स्थालादि) स्थापन करे, और चैत्यमें तो स्थिरबिंब होनेसे इन दोनों

मंत्रोंसें भूमिजलपट्टादि अधिवासन करने पीछे ॥

" ॥ ॐ अत्र क्षेत्रे, अत्र काले, नामार्हतो, रूपार्हतो, द्रव्यार्हतो, भावार्हत समागता, सुस्थिता., सुनिष्ठिता, सुप्रतिष्ठिता संतु ॥ '

ऐसे पढके अर्हत् प्रतिमाको स्थापन करे निश्चलविवके हुए, चरण अधिवासन करे ॥ पीछे अंजलि में पुष्प लेके ॥

" ॥ ॐ नमोर्हद्भ्य सिद्धेभ्यस्तीर्णेभ्यस्तारकेभ्यो बुद्धेभ्यो बोधकेभ्य सर्वजतुहितेभ्य इह कल्पनविवे भगवंतोर्हतः सुप्रतिष्ठिता संतु ॥ '

ऐसे मौन करके कहके भगवत्के चरणोपरि पुष्प स्थापन करे । फिर भी जलार्द्र फूलोंसे पूजापूर्वक कहे ॥ यथा ॥

" ॥ स्वागतमस्तु सुस्थितमस्तु सुप्रतिष्ठास्तु ॥ ' पीछे फिर पुष्पाभिषेक करके ॥

" ॥ अर्घ्यमस्तु, पाद्यमस्तु आचमनीय मस्तु, सर्वोपचारे पूजास्तु ॥ ' इन वचनोंकरके वारवार जिनप्रतिमाके ऊपर जलार्द्र पुष्पारोपण करे ॥ पीछे जल लेके ।

ॐ अर्हं वं । जीवन तर्पण हृद्य, प्राणद मलनाशन ॥
जल जिनार्चनेत्रेव, जायता सुखहेतवे ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जलसें प्रतिमाको अभिषेक करे

पीठे चंदन कुंकुम कर्पूर कस्तूरी आदि सुगंध हाथमें लेके ॥

ॐ अर्हंलं । इदं गंध महामोदं, बृंहणं प्रीणन सदा ॥
जिनार्चने च सत्कर्म्म, संसिद्धये जायतां मम ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके विविध गंध जिनप्रतिमाको विलेपन करे ॥ पीठे पुष्पपत्रादि हाथमे लेके ॥

ॐ अर्हं क्ष । नानावर्णं महामोदं, सर्वत्रिदशवल्लभ
जिनार्चनेत्र संसिद्धयै, पुष्प भवतु मे सदा ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर सुगंधमय विविध वर्णके पुष्प चढावे ॥

ॐ अर्हं त । प्रीणन निर्मलं बल्य, मांगल्य सर्वसिद्धिदं॥
जीवन कार्यसंसिद्धयै, भूयान्मे जिनपूजने ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर अक्षत आरोपण करे ॥ सुपारी प्रमुख फल हाथमे लेके

जायफल स्वर्गफल, पुण्यमोक्षफल फल ॥
दद्याज्जिनार्चनेत्रेव, जिनपादाग्रसंस्थितम् ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनपादाग्रे फल ढोवे ॥ पीठे धूप लेके ॥

ॐ अर्हं र । श्रीखंडागरुकस्तूरी, द्रुमनिर्यासससंभव ॥
प्रीणन सर्व देवाना, धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥

यह पढके अग्निमे धूपक्षेप करे ॥ पीठे फूल लेके ।

" ॥ ॐ अर्हं भगवद्भ्योर्हद्भ्यो जलगंधपुष्पाक्षत फलधूपदीपे सप्रदानमस्तु ॐ पुण्याह प्रीयंता भग

वंतोर्हतस्त्रिलोकस्थिता नामाकृतिद्रव्यभावयुता स्वा हा ॥ ' यह पढके फिर जिनपूजन करे ॥ पीछे वासक्षेप लेके ॥

" ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रनैश्चरराहुकेतु मुखाग्रहा' इह जिनपादाग्रे समायांतु पूजा प्रतीछ तु ॥ " ऐसें पढके जिनपादसें नीचे स्थापित ग्रहोंके ऊपर, वा स्नानपट्टके ऊपर वासक्षेप करे ॥ पीछे ॥

" ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षत मस्तु फलमस्तु धुपोस्तु दीपोस्तु ॥ " ऐसें पढके क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें ग्रहोंका पूजन करे ॥ पीछे अंजलिमें फूल लेके ।

" ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रशनैश्चरराहुके तुमुखाग्रहा सुपूजिता सतु, सानुग्रहा संतु, तुष्टिदा सतु, पुष्टिदा सतु, मांगल्यदा सतु, महोत्सवदा. सतु ॥ " ऐसें कहके ग्रहोंके ऊपर पुष्पारोपण करे. ॥ फिर इसी रीतिकरके ।

" ॥ ॐ इंद्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुवेरेशानना गब्रह्मणो लोकपाला सविनायका सक्षेत्रपाला इह जिनपादाग्रे समागछतु पूजा प्रतिछंतु ॥ " ऐसें कहके पूजापट्टो परि लोकपालोंको वासक्षेप करे ॥ पीछे ॥

" ॥ आचामनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षत मस्तु फलमस्तु धुपोस्तु दीपोस्तु ॥ " ऐसें पढके

क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें लोकपालोंका पूजन करे ॥ पीछे अंजलिमें पुष्प लेके।

" ॥ ॐ इंद्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशाननाग ब्रह्माणो लोकपाला. सविनायका' सक्षेत्रपाला सुपूजिता संतु, सानुग्रहा संतु, तुष्टिदा सतु, पुष्टिदा संतु, मांगल्यदा. सतु, महोत्सवदा सतु ॥ ' यह पढके लोकपालोपरि पुष्पारोहण करे ॥ पीछे पुष्पांजलि लेके ॥

" ॥ अस्मत्पूर्वजा गोत्रसंभवा देवगतिगता सुपूजिता' सतु, सानुग्रहा संतु, तुष्टिदा संतु, पुष्टिदा सतु, मांगल्यदा सतु, महोत्सवदा संतु ॥ " ऐसें कहके जिनपादाग्रे पुष्पांजलिक्षेप करे ॥ पीछे फिर भी पुष्पांजलि लेके ॥

" ॥ ॐ अर्हं अर्हद्भक्तिष्टनवत्युत्तरशतदेवजातय सदेव्य पूजा प्रतिष्ठतु सुपूजिता संतु, सानुग्रहा. सतु तुष्टिदा. संतु, पुष्टिदा सतु, मांगल्यदा सतु, महोत्सवदा सतु ॥ " ऐसें कहके जिनपादाग्रे अंजलिक्षेप करे ॥

पीछे अंजलिके अग्रभागमे पुष्प धारण करके अर्हन्मंत्र स्मरण करके तिस फूलसें जिनप्रतिमाको पूजे ॥ अर्हन्मंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ अर्हं नमो अरहंताण, ॐ अर्हं नमो सय सबुद्धाण, ॐ अर्हं नमो पारगयाण ॥ "

यह त्रिपद मत्र श्रीमत् अर्हन् जगवंतोके आगे नित्य स्मरण करे कैसा है मत्र ? देवलोकादि सुख और मोक्षका, देनेवाला, सर्व पापोंका नाश करने वाला है.। विशेष इतना है कि, यह मत्र अपवित्र पुरुषोंने, उपयोगरहित पुरुषोंने, नही स्मरण करना तथा उच्चशब्दसें नही स्मरण करना, नास्तिकोंको और मिथ्यादृष्टियोंको नही सुनाना । यह पूर्वोक्त अर्हन्मंत्र एकसोआठ (१०८) वार, वा तदर्द्ध ५४ वार जपना ॥ पीछे दो पात्रोमे नैवेद्य धरे पीछे एक पात्रमे जल लेके ।

'ॐ अर्हं । नानापड्रससंपूर्णं, नैवेद्य सर्वमुत्तमं।
जिनाग्रे ढौकित सर्व, सपदे मम जायता ॥ १ ॥

यह पढके जलढोकना ॥ फिर दूसरा जल लेके।

" ॥ ॐ सर्वेगणेशक्षेत्रपालाद्या सर्वेग्रहा सर्वे दिक्पाला. सर्वेऽस्मत्पूर्वजोद्भवादेवा सर्वे अष्टनवत्युत्तरशत देवजातयः सदेव्योऽर्हद्भक्ता अनेन नैवेद्येन संतर्पिता सतु, सानुग्रहा सतु, तुष्टिदा' सतु, पुष्टिदा सतु, मांगल्यदा सतु, महोत्सवदा' सतु ॥ "

ऐसें कहके दूसरे नैवद्यके पास जल ढोकन करे ॥

यो जन्मकाले पुरुषोत्तमस्य, सुमेरुशृंगे कृतमज्जनैश्च ॥
देवै प्रदत्त कुसुमाजलिस्स,ददातुसर्वाणिसमीहितानि
राज्याभिषेकसमये त्रिदशाधिपेन ।
तत्रध्वजाक तलयो पदयोर्जिनस्य ॥

क्षिप्तोतिभक्तिभरतः कुसुमांजलिर्यः ।
स प्रीणयत्वनुदिनं सुधिया मनांसि ॥ २ ॥
देवेंद्रै कृतकेवले जिनपतौ सानंदभक्त्यागतै ।
सदेहव्यपरोपणक्षमशुभव्याख्यानबुद्ध्याशयै ॥
आमोदान्वितपारिजातकुसुमैर्यः स्वामिपादाग्रतो ।
मुक्तस्स प्रतनोतु चिन्मयहृदां भद्राणि पुष्पांजलि ।३।

इन तीनो घृत्तोंकरके तीन वार पुष्पांजलिक्षेप करे ॥

लावण्यपुण्यागभृतोर्हतोय,स्तद्वृष्टिभावं सहसैव धत्ते।
सविश्वभर्त्तुर्लवणावतारो, गर्भावतार सुधिया विहतु।१।

लावण्यैकनिधेर्विश्व, भर्त्तुस्तद्वृद्धिहेतुकृत् ॥
लवणोत्तारण कुर्या, भवसागरतारणम् ॥ २ ॥

इन दो घृत्तोंकरके दो वार लवण उत्तारना ॥

साक्षारतां सदासक्तां, निर्हंतुमिव सोद्यमः ॥
लवणाब्धिर्लवणाबु, मिपात्ते सेवते पदौ ॥१॥

यह पढके लवणमिश्र जल उत्तारना ॥

भुवनजनपवित्रिताप्रमोदप्रणयनजीवनकारण गरीयः ॥ जलमविकलमस्तु तीर्थनाथक्रमसस्पर्शिसुखावहं जनानाम् ॥ १ ॥

यह पढके केवल जलक्षेप करे ॥

सप्तभीतिर्विघाताहं सप्तव्यसननाशकृत् ॥
यत् सप्तनरकद्वारसप्तारिरितुला गतम् ॥ १ ॥
सप्तांगराज्यफलदानकृतप्रमोद ।
सत्सप्ततत्त्वविदनतकृतप्रबोधम् ॥

तच्छक्रहस्तधृतसगतसप्तदीप, ।
मारात्रिक भवतु सप्तमसद्गुणाय ॥ २ ॥

यह पढके आरात्रिकावतारण करे ॥

विश्वत्रयभवैर्जीवै, सदेवासुरमानवै ॥
चिन्मंगल श्रीजिनेन्द्रात्, प्रार्थनीय दिने दिने ॥ १ ॥
यन्मंगल भगवत प्रथमार्हत श्री,
संयोजने प्रतिबभूव विवाहकाले ॥
सर्वासुरासुरवधूमुखगीयमान ।
सर्वर्षिभिश्च सुमनोभिरुदीर्यमाणम् ॥ २ ॥
दास्यगतेषु सकलेषु सुरासुरेषु ।
राज्येर्हत प्रथमसृष्टिकृतो यदासीत् ॥
सन्मंगलं मिथुनपाणिगतीर्थवारि ।
पादाभिषेक विधिनात्युपचीयमानम् ॥ ३ ॥
यद्विश्वाधिपते समस्ततनुभृत्ससारनिस्तारणे ।
तीर्थे पुष्टिमुपेयुषि प्रतिदिनं वृद्धिं गतं मगलम् ॥
तत् संप्रत्युपनीतपूजनविधौ विश्वात्मनामर्हता ।
भूयान्मंगलमक्षय च जगते स्वस्त्यस्तु सघाय च ॥४॥

इन चारों वृत्तोंकरके मगल प्रदीप करे । पीछे शक्रस्तव पढे ॥ इति कल्पोक्त जिनपूजन विधि

॥ अथ स्नात्र विधि ॥

अथ अतिशय अर्हद्भक्तिवाला श्रावक, नित्य, वा पर्वदिनमे, वा कीसी कार्यांतरमे, जिनस्नात्र कर नेकी इछा करे, तिसका विधि यह है ।

प्रथम स्नात्रपीठके ऊपर, दिक्पालग्रह अन्य देवतपूजन वर्जके, पूर्वोक्त प्रकारकरके जिनप्रतिमा को पूजके, मगलदीप वर्जित आरात्रिक करके, पूर्वोपचारयुक्त श्रावक, गुरुसमक्ष सघके मिले हुए, चार प्रकारके गीतवाद्यादि उत्सवके हुए पुष्पाजलि हाथमे लेके।

"॥ नमो अरहताण नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य ॥" यह पढके दो छद पढे।

कल्याण कुलवृद्धिकारि कुशलं श्लाघार्हमत्यद्भुतं।
सर्वाघप्रतिघातन गुणगणालंकारविभ्राजितम् ॥
कातिश्रीपरिरजणं प्रतिनिधिप्रख्य जयत्यर्हता।
ध्यान दानवमानवैर्विरचितं सर्वार्थससिद्धये ॥ १ ॥

भुवनभविकपापध्वातदीपायमान।
परमतपरिघातप्रत्यनीकायमानम्
धृतिकुवलयनेत्रावश्यमंत्रायमानं।
जयति जिनपतीना धाममत्युत्तमानाम् ॥ २ ॥

यह पढके पुष्पाजलिक्षेपण करे. ॥ इतिपुष्पाजलिक्षेप ॥

कर्पूरसिल्हाधिककाकतुरु,कस्तुरिकाचदनवदनीय ॥
धूपो जिनाधीश्वरपूजनेऽत्र, सर्वाणि पापानि दहत्व जस्रम् ॥ १ ॥

यह पढके सर्वपुष्पाजलियोंके बीचमे धूपोत्

क्षेप करे ॥ और शक्रस्तव पढे ॥ पीछे जलपूर्ण कलश लेके, दो श्लोक पढे ॥

केवली भगवानेक, स्वाद्वादी मंगनैर्विना ॥
विनापि परिवारेण, वदित प्रभुतोर्जित' ॥ १ ॥
तस्येशितु प्रतिनिधि सहजश्रियाढ्य. ।
पुष्पैर्विनापि हि विना वसनप्रतानैं ॥
गंधैर्विना मणिमयाभरणैर्विनापि ।
लोकोत्तरं किमपि दृष्टिसुख ददाति ॥ २ ॥

यह पढके प्रतिमाको कलशाभिषेक करे ॥ इति प्रतिमाया कलशाभिषेक ॥ पुष्प अलंकारादि उत्तारके, कलशाभिषेक करके, पीछे फिर पुष्पांजलि लेके, दो काव्य पढे ।

विश्वानदकरी भवांबुधितरी सर्वापदा कर्तरी ।
मोक्षाध्वैकविलंघनाय विमला विद्या परा रोचरी ॥
दृष्टया भावितकल्मषापनयने वज्राप्रतिज्ञा दृढा ।
रम्यार्हत्प्रतिमा तनोतु भविनां सर्वं मनोवाञ्छितम्॥१॥
परमतररमासमागमोत्थप्रसृमरहर्षविभासिसन्निकर्षा
जयति जगति जिनेशस्य दीप्ति. प्रतिमा कामितदा
यिनी जनानाम् ॥ २ ॥

यह पढके फिर पुष्पांजलिक्षेप करे पीछे पूर्वोक्त 'कर्पूरसिल्हा' वृत्तकरके धूपोत्क्षेप करे, और शक्रस्तव पढे । पीछे फिर पुष्पांजलि हाथमें लेके, दो काव्य पढे. ॥ यथा ॥

न हु खमतिमात्रकं न विपदां परिस्फूर्जितं ।
न चापि यशसां क्षितिर्न विषमा नृणां हुस्थता ॥
न चापि गुणहीनता न परमप्रमोद क्षयो ।
जिनार्चनकृता भवे भवति चैव नि संशयम् ॥ १ ॥
एतत्कृत्य परममसमानंदसपन्निदानं ।
पातालौक' सुरनरहितं साधुजि' प्रार्थनीयम् ॥
सर्वारिभापचयकरण श्रेयकां सं निधान ।
साध्य सर्वैर्विमलमनसा पूजनं विश्वभर्तु ॥ २ ॥

यह पढके फिर पुष्पांजलिक्षेप करे । पीछे धूप हाथमें लेके पढे ।

कर्पूरागरुसिल्हचदनवलामांसीशशैलेयक ।
श्रीवासद्रुमधूपरालघुसृणैरत्यतमामोदितः ॥
व्योमस्थप्रसरछशाककिरणज्योति प्रतिष्ठादको ।
धूपोत् क्षेपकृतो जगत्रयगुरोस्सौभाग्यमुत्तसतु ॥ १ ॥
सिद्धाचार्यप्रभृतीन्, पच गुरून् सर्वदेवगणमधिकम् ॥
क्षेत्रे काले धूप. प्रीणयतु जिनार्चने रचित. ॥ २ ॥

यह पढके धूपोत्क्षेप करे । शक्रस्तव पढे ॥ पीछे फिर पुष्पांजलि लेके ॥

जन्मन्यनतसुखदे भुवनेश्वरस्य ।
सुत्रामभि कनकशैलशिर शिलायाम् ॥
स्नात्रं व्यधायि विविधांबुधिकूपवापी ।
कासारपल्वलसरित्सलिलै सुगधैः ॥ १ ॥

ता बुद्धिमाधाय हृदीहकाले, स्नात्र जिनेंद्रप्रतिमाग णस्य ॥ कुर्वंति लोका शुभभावभाजो, महाजनो येन गत स पथा. ॥ २ ॥ यह पढके पुष्पांजलि क्षेप करे ॥ २ ॥

परिमलगुणसारसगुणाढ्या, बहुसंसक्तपरिस्फुरद्धिरे फा ॥ बहुविधबहुवर्णपुष्पमाला, वपुषि जिनस्य भव त्वमोघयोगा ॥ १ ॥

यहवृत्त पढके पगोंसे लेके मस्तकपर्यंत जिनप्रति माको पुष्पारोपण करे। पीछे 'कर्पूरसिद्धाधि०' इसकरके धूपोत्क्षेप करे । पीछे शक्रस्तव पढे । पीछे फिर पुष्पांजलि हाथमें लेके ।

साम्राज्यस्य पदोन्मुखे भगवति स्वर्गाधिपैर्गुंफितो । मंत्रित्वं बलनाथतामविकृतिं स्वर्णस्य कोशस्य च ॥ बिभ्रद्भि कुसुमाजलिर्विनिहितो भक्त्या प्रभोः पाद योर्डु.खौघस्य जलांजलि सतनुतादालोकनादेव हि।१। चेत. समाधातुमनिंद्रियार्थं, पुण्यं विधातु गणनाद्व तीतम् ॥ निक्षिप्यतेर्हत्प्रतिमापदाग्रे, पुष्पाजलि. प्रोज्झ लभक्तिभावै ॥ २ ॥

यह पढके पुष्पांजलिक्षेप करे । सर्व पुष्पांजलि योंके अंतमें धूपोत्क्षेप, और शक्रस्तवपाठ अवश्य करना ॥ तदनंतर पुष्पादिकरके प्रतिमा पूजे । पीछे मणि, स्वर्ण, ताम्र, मिश्रधातु, माटीमय, कलशो स्नात्रकी चौकीऊपरि स्थापन करना. तिनमें गगो

दकमिश्रित सर्व जलाशयोके पानी स्थापन करे चदन केसर कर्पूरादि सुगधी द्रव्य करके वासित करे. चदनादि और पुष्पमालासें, कलशोंको पूजे. जल पुष्पादिअग्निमंत्रणकेमत्र पूर्वे कहे हैं सो जानने। पीछे एक श्रावक, अथवा बहुत श्रावक, पूर्वोक्त वेष शौचवाले गधसें हस्तको लेपन करके, मालाज्पित कठवाले तिन कलशोको हाथऊपरि रखे पीछे स्वस्वबुद्धिअनुसारसें जिनजन्माभिषेकचिन्हित स्तोत्रो को जिनस्तुतिगर्भित षट्पदादि (छप्पयआदि) को पढे। पीछे शार्दूलवृत्त पढे।

जाते जन्मनि सर्वविष्टपपतेरिंद्रादयो निर्झरा।
नीत्वा तं करसपुटेन बहुभि सार्द्ध विशिष्टोत्सवै ॥
शृंगे मेरुमहीधरस्य मिलिते सानददेवीगणे।
स्नात्रारंभमुपानयति बहुधा कुंभांबुगधादिकम् ॥ १ ॥
योजनमुखान् रजतनिष्कमयान् मिश्रधातुमृद्रचितान्
दधते कलशान् सख्या तेषा युगषट्खदतिमिता ॥ २ ॥
वापीकूपह्रदावुधितडागपल्वलनदनिझरादिभ्य ॥
आनीतैर्विमलजलै स्नानाधिक पूरयति च ते ॥ ३ ॥
कस्तूरीघनसारकुंकुममुराश्रीखंडकक्कोलकै।
ह्रीवेरादिसुगधवस्तुभिरलंकुर्वंति तत्सवरम् ॥
देवेंद्रा वरपारिजातबकुलश्रीपुष्पजातीजपा।
मालाभि कलशाननानि दधते सप्रासहारस्रज ॥ ४ ॥
ईशानाधिपतेर्निजाककुहरे सस्थापित स्वामिन।

सौधर्माधिपतिर्म्मिताद्भुतचतु'प्रांशुक्षृगोद्भतै. ॥
धारावारिचरै शशांकविमलै. सिचत्यनन्याशयः ।
शेषाश्चैव सुराप्सरस्समुदयाः कुर्वंतिकौतूहलम् ॥ ५ ॥

वीणामृदंगतिमिलार्द्धकटार्द्धनूर ।
ढक्कदुंदुभिकपणवस्फुटकाहलाद्यि. ॥
सद्वेणुझर्झरकडुंडुजिपुपुणीजि-
र्वाद्यै सृजति सकलाप्सरसो विनोदन् ॥ ६ ॥

शेषा सुरेश्वरास्तत्र, गृहीत्वा करसपुटे ॥
कलशास्त्रिजगन्नाथ, स्नपयति महामुद ॥ ७ ॥

तस्मिंस्तादृशउत्सवे वयमपि स्वर्लोकसवासिनो ।
भ्रांता जन्मविवर्त्तनेन विहितश्रीतीर्थसेवाधिय. ॥
जातास्तेन विशुद्धबोधमधुना सप्राप्य तत्पूजनं ।
स्मृत्वैतत्करवाम विष्टपविजो स्नात्र मुदामास्पदम्॥८॥

वालत्तणम्मि सामिअ, सुमेरुसिहरम्मि कणयकल सेहि ॥ तियसासुरेहि एहविओ, ते धन्ना जेहिं दिठोसि ॥ ९ ॥

यह पढके कलशोंकरके जिनप्रतिमाको अभि षेक करे । पीछे वडे छोटेके क्रमकरके सर्व पुरुष स्त्री जी गधोदकोंसें स्नात्र करे । पीछे अभिषेकके अतमें गधोदकपूर्ण कलश लेके वसततिलकावृत्त पढे । संघे चतुर्विध इह प्रतिभासमाने, श्रीतीर्थपूजनकृत प्रतिभासमाने ॥ गधोदके पुनरपि प्रभवत्वजस्र, स्नात्र जगत्रयगुरोरतिपूतधारै ॥ १ ॥

यह पढके जिनपादोपरि कलशाभिषेक करके स्नात्रनिवृत्ति करे पीछे पुष्पाजलि लेके पढे ।

इंद्राग्ने यम निर्ऋते जलेश वायो
वित्तेशेश्वर भुजगा विरंचिनाथ ॥
सघट्टाधिकतमभक्तिभारभाज
स्नात्रोस्मिन् भुवनविभो. श्रीय कुरुध्वम् ॥ १ ॥

यह पढके स्नात्रपीठके पास रहे कल्पित दिक्पालपीठऊपरि, पुष्पाजलिक्षेप करे । पीछे प्रत्येक दिशामें यथाक्रमकरके दिकपालोको स्थापन करे । पीछे एकैक दिक्पालका पूजन करे ।

सुराधीश श्रीमन् सुदृढतरसम्यक्त्ववसते ।
शचीकातोपातस्थितविबुधकोट्यानतपद ॥
ज्वलद्वज्राघातक्षपितदनुजाधीशकटक ।
प्रभो. स्नात्रे विघ्न हर हर हरे पुण्यजयिनाम् ॥ १ ॥

"ॐ शक्र इह जिनस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ । इदं जल गृहाण २ । गध गृहाण २ । पुष्प गृहाण २ । धूप गृहाण २ । दिप गृहण २ । नैवेद्य गृहाण २ । विघ्न हर २ । दुरितं हर २ । शांतिं कुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । पुष्टि कुरु २ । ऋद्धिं कुरु २ । वृद्धिं कुरु २ । स्वाहा ॥" इति पुष्पगधादिभिरिंद्रपूजनम् ॥ १ ॥

बहिरतरनंततेजसा विदधत्कारणकार्यसगति ॥
जिनपूजनआशुशुक्षणे, करु विघ्नप्रतिघातमजसा॥१॥

"॥ ॐ अग्ने इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इत्यग्निपूजनम् ॥ २ ॥

दीप्तांजनप्रचतनो तनुसंनिकर्षे।
वाहारिवाहनसमुद्भुरदक्षपाणे ॥
सर्वत्र तुल्यकरणीयकरस्थधर्म ॥
कीनाश नाशय विपद्भिसरं क्षणेत्र ॥ १ ॥

"ॐ यम इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति यमपूजनम् ॥ ३ ॥

राक्षसगणपरिवेष्टितचेष्टितमात्रप्रकाशहतशत्रो ॥
स्नात्रोत्सवेत्र निर्ऋते, नाशय सर्वाणि दु खनि ॥ १ ॥

"॥ ॐ निर्ऋते इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति नैर्ऋतपूजनम् ॥ ४ ॥

कल्लोलानीतलोलाधिककिरणगणस्फीतरत्नप्रपच ।
प्रोद्भूतौर्वाग्निशोच वरमकरमहापृष्टदेशोक्तमानम् ॥
चचच्चीरिल्लिशृगिप्रभृतिकषगणैरचितं वारुण नो ।
वर्ष्मछिद्यादपाय त्रिजगदधिपते. स्नात्रसत्रे पवित्रे॥१॥

"॥ ॐ वरुण इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति वरुणपूजनम् ॥ ५ ॥

ध्वजपटकृतकीर्त्तिस्फूर्त्तिदीप्यद्विमान ।
प्रसृमरबहुवेगत्यक्तसर्पमान ॥
इह जिनपतिपूजासन्निधौ मातरि-

"॥ ॐ वायो इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति वायु पूजनम् ॥ ६ ॥

कैलासवास विलसत्कमलाविलास ।
सद्गुरुहासकृतदौस्थ्यकथानिरास ॥
श्रीमत्कुवेरजगत्स्नपनेत्र सर्वं ।
विघ्न विनाशय शुभाशय शीघ्रमेव ॥ १ ॥

"॥ ॐ कुवेर इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति कुवेर पूजनम् ॥ ७ ॥

गंगातरंगपरिखेलनकीर्णवारि, प्रोद्यत्कपर्दपरिमंडित पार्श्वदेशम् ॥ नित्य जिनस्नपनहृष्टहृद. स्मरारे, विघ्न निहतु सकलस्यजगत्त्रयस्य ॥ १ ॥

"ॐ ईशान इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इतीशान पूजनम् ॥ ८ ॥

फणमणिमहसा विभासमाना । कृतयमुनाजलसंश्रयोपमानाः ॥ फणिन इह जिनाभिषेककाले । बलि भवनादमृतंसमानयंतु ॥ १ ॥

"ॐ नागा इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति नाग पूजनम् ॥ १ ॥

विशदपुस्तकशस्तकरद्वय । प्रथितवेदतया प्रमदप्रदः॥ भगवत स्नपनावसरे चिर । हरतु विघ्नभरं द्रुहिणो विभु ॥ १ ॥

"॥ ॐ ब्रह्मन् इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति ब्रह्मण' पूजनम् ॥ १० ॥

ऐसे क्रमसें दिकपालपूजन करे। पीछे फिर भी हाथमे पुष्पांजलि लेकर आर्या पढे ॥

दिनकरहिमकरभूसुत, शशिसुतबृहतीशकाव्यरवित नया ॥ राहो केतो क्षेत्रप, जिनार्चने भवत सन्निहिता. ॥ १ ॥

यह पढके ग्रहपीठोपरि पुष्पांजलिक्षेप करे। पीछे पूर्वादिक्रमसें सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चद्र, बुध, बृहस्पति, इनको स्थापन करे हेठ केतु को, और उपर क्षेत्रपालको स्थापन करे पीछे प्रत्येक ग्रहकका पूजन करे।

विश्वप्रकाशकृतभव्यशुभावकाश ।
ध्वांतप्रतानपरिपातनसद्विकाश ॥
आदित्य नित्यमिह तीर्थकराभिषेके ।
कल्याणपल्लवनमाकलय प्रयत्नात् ॥ १ ॥

" ॥ ॐ सूर्य इह० शेष पूर्ववत् ॥ " इति सूर्य पूजनम् ॥ १ ॥

स्फटिकधवलशुक्लध्यानविध्वस्तपाप ।
प्रमुदितदितिपुत्रोपास्यपादारविंद ॥
त्रिभुवनजनशर्मजंतुजीवानुविद्य ।
प्रथय भगवतोर्चा शुक्र हे वीतविघ्नाम् ॥ १ ॥

" ॥ ॐ शुक्र इह० शेष पूर्ववत् ॥ " इति शुक्र पूजनम् ॥ २ ॥

प्रबलबलमिलितबहुकुशल, लालनाललितकलित

विघ्नहृते । भोमजिनस्नपनेऽस्मिन् विघटय विघ्नागमं सर्वम् ॥ १ ॥

" ॥ ॐ मंगल इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति मंगलपूजनम् ॥ ३ ॥

अस्ताह सिंहसंयुक्त, रथ विक्रममंदिर ॥
सिंहिकासुत पूजाया, मत्र संनिहितो भव ॥ १ ॥

" ॐ राहो इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति राहुपूजनम् ॥ ४ ॥

फलिनीदल लीलयात., स्थगितसमस्तवरिष्ठविघ्नजात । रवितनय प्रबोधमेतात् जिनपूजाकरणैकसावधानान् ॥ १ ॥

" ॐ शने इह० शेष पूर्ववत् ॥ इति शनिपूजनम् ॥ ५ ॥

अमृतवृष्टिविनाशितसर्वदो, पचितविघ्नविष शशलाछन ॥ वितनुतात्तनुतामिह देहिनां, प्रसृततापन रस्य जिनार्चने ॥ १ ॥

" ॥ ॐ चंद्र इह० शेष पूर्ववत ॥ " चंद्रपूजनम् ॥ ६ ॥

बुधविबुधगणार्चितांघ्रियुग्म, प्रमथितदैत्य विनीतदुष्टशास्त्र ॥ जिनचरणसमीपगोधुनात्वं, रचय मति भवघातनप्रकृष्टाम् ॥ १ ॥

" ॥ ॐ बुध इह० शेष पूर्ववत् ॥ " इति बुधपूजनम् ॥ ७ ॥

सुरपतिहृदयावतीर्णमंत्रप्रचुर, कलाविकलप्रकाश भास्वन् ॥ जिनपतिचरणाभिषेककाले, कुरु वृहती वर विघ्नविप्रणाशम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ गुरो इह० शेष पूर्ववत् ॥" इति गुरु पूजनम् ॥ ८ ॥

निजनिजोदययोगजगत्त्रयी, कुशलविस्तरकारण तां गत ॥ भवतुकेतुरनश्वरसंपदा, सततहेतुरवारि तविक्रम ॥ १ ॥

"॥ ॐ केतो इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति केतु पूजनम् ॥ ९ ॥

कृष्णसितकपिलवर्ण, प्रकीर्णकोपासितांघ्रियुग्मस दा ॥ श्रीक्षेत्रपाल पालय, भविकजनं विघ्नहरणेन॥१॥

" ॥ ॐ क्षेत्रपाल इह० शेष पूर्ववत् ॥ ' इति क्षेत्रपालपूजनम् ॥ १० ॥

पीछे गंध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपसें पूर्व कहे मंत्रोंसेंही जिनप्रतिमाकी पूजा करे पीछे हाथमें वस्त्र लेके वसततिलकावृत्तपाठ पढे ।

त्यक्त्वाखिलार्थवनितादिकभूरिराज्य
नि सगतामुपगतो जगतामधीश ॥
भिक्षुर्भवन्नपि स वर्ष्मणि देवदूष्य-
मेकं दधाति वचनेन सुरेश्वराणाम् ॥ १ ॥

यह पढके वस्त्र चढावे इति वस्त्रपूजा ॥

पीछे नानाविध खाद्य, पेय, भक्ष्य, लेह्यसंयुक्त

नैवेद्य दो स्थानमें करके तिनमेंसें एक पात्र जिनके आगे स्थापके, श्लोक पढे ।

सर्वप्रधानसङ्कृत, देहिदेहिसुपुष्टिदम् ॥
अन्नं जिनाग्रे रचितं, दुःखं हरतु न सदा ॥ १ ॥

यह पढके जलचुलुककरके जिनप्रतिमाको नैवेद्य देवे पीछे दूसरे पात्रमें चुलुककरकेही, ग्रहदिक्पालादिकोको श्लोक पढके नैवेद्य देवे ।

जोजो सर्वे ग्रहालोक, पाला सम्यग्दृश सुरा ॥
नैवेद्यमेतद्गृह्णन्तु, जवतो जयहारिण ॥ १ ॥

स्नात्र करायाविना जी पूजामें जिनप्रतिमाको इसही मंत्रकरके नैवेद्य देना ॥ पीछे आरात्रिक मंगलदीपक पूर्ववत् । और शक्रस्तव जी पढना ॥ जिस प्रतिमाका स्थानस्थितहीका स्नपन कराया जावे, तिसके वास्ते सर्वकुछ तहांही करना ॥

श्रीखंडकर्पूरकूरगनाजि, प्रियंगुमासीनखकाकतुंडे ॥ जगत्त्रयस्याधिपते सपर्या, विधौ विदध्यात्कुशलानि धूप ॥ १ ॥

इस वृत्तकरके सर्वपूष्पांजलियोके विचाले धूपोत्क्षेप करना, और शक्रस्तवपाठ पढना ॥

प्रतिमा विसर्जन यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं नमो जगवतेर्हते समये पुन पूजां प्रतीछ स्वाहा ॥" इति पुष्पन्यासेन प्रतिमाविसर्जन ॥

"॥ ॐ ह्रं इंद्रादयोलोकपाला सूर्यादयो ग्रहा

सक्षेत्रपाला सर्वदेवा सर्वदेव्य पुनरागमनाय स्वा हा ॥ ' इति पूष्पादिभिर्दिक्पाल ग्रहविसर्जनम् ॥
आज्ञाहीन क्रियाहीन, मत्रहीन च यत्कृतम् ॥
त्सर्वं कृपया देवा, क्षमंतु परमेश्वरा ॥ १ ॥
आव्हाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ॥
पूजां चैव न जानामि त्वमेव शरणमम ॥ २ ॥
कीर्त्ति श्रियो राज्यपदं सुरत्वं, न प्रार्थये किंचन देव देव ॥ मत्प्रार्थनीय जगवत्प्रदेय स्वदासता मां नय सर्वदापि ॥ ३ ॥
इति सर्वकरणीयाते जिनप्रतिमादेवादिविसर्जनविधि

अर्हत् अर्चनविधिमे भी ऐसेंही विसर्जन जानना ॥ इति लघुस्नात्रविधि ॥

पीछे (गृहचैत्यपूजानतर) बडे देवमंदिरमे जाकर, शक्रस्तवादिस्तोत्रोंकरके जिनराजकी स्तवना करके, और जिनराजका पूजन करके, प्रत्याख्यान चितवन करे । पीछे चैत्यको प्रदक्षिणा करके, पौषधशाला (उपाश्रय) मे जाकर, देवकीतरे बडे आनंदसें साधुउंको वंदन करे सुंदरबुद्धिवाला होकर, पूजा सत्कार करे । पीछे एकाग्रचित्त होकर साधुके मुख से धर्मदेशना श्रवण करे पीछे मनमे धारा हुआ प्रत्याख्यान करे पीछे गुरुको नमस्कार करके कर्मादानको अतीतरें त्यागके, धन उपार्जन करे यथा योग्य स्थानमे कुत्सित बुरा

प्राणोंके नाश हुए भी न करे । पीछे अपने घरदेह रामें अर्हत्की मध्यान्हपूजा करके, अन्नपानी समा चरे भक्तिसें साधुओंको दान देके, अतिथीयोंकी पूजा आदरसत्कार करके, और दीन अनाथ मार्ग णगणको संतोषके, अपने व्रतऔर कुलके उचित भोज्य वस्तुका भोजन करे ॥ साधुको आमंत्रण ऐसें करे ॥ क्षमाश्रमण पूर्वक गृहस्थ कहे ।

"॥ हे भगवन् फासुएण एसणिज्जेण असण पाणखाइमसाइमेण वत्थकंबलपायपुछणपडिग्गहेणं ओसहभेसज्जेण पाडिहेररूवेण सिज्जासंथारएण भयवं मम गेहे अणुग्गहो कायव्वो ॥"

भोजनानंतर गुरुके पास शास्त्रका विचार करे, पढे, सुने । पीछे धन उपर्जन करके घरको जाकर संध्यापूजा करके सूर्यके अस्त होनेसें दो घडी पहिले, निजवांछित भोजन करे सायकालमें धर्मागार मे सामायिककरके पडावश्यक प्रतिक्रमण करे पीछे अपने घरमें आके शांतबुद्धिवाला हुआ, जब एक पहर रात्रि जावे तब अर्हत्स्तवादिक पढके प्राय ब्रह्मचर्यव्रतधारी होके सुखसे निद्रा लेवे जब निद्राका अंत आवे तब परमेष्ठिमंत्रस्मरणपूर्वक जिन, चक्री, आदिके चरित्रोंको चिंतन करे और व्रता दिकोंके मनोरथ अपनी इच्छासें करे, ऐसें अहोरा त्रिकी होके हुआ, और

यथावत् कहे व्रतमें रहा हुआ, गृहस्थ भी कल्याण भागी होता है. । इति व्रतारोपसस्कारे गृहिणा दिनरात्रिचर्या ॥

वासनागुरुसामग्री, विभवो देहपाटवम् ॥
संघश्चतुर्विधो हर्षो, व्रतारोपे गवेष्यते ॥ १ ॥
वरकुसुमगधअरुय, फलजलनेवज्जधूवदीवेहि ॥
अठविहकम्ममहणी, जिणपूआ अठाहा होई ॥२॥

इति व्रतारोप संस्कार

॥ अथ अंत्य संस्कार विधि. ॥

श्रावक यथावत् व्रतोकरके निज भवको पालके कालधर्मके प्राप्त हुए, उत्कृष्ट आराधना करे, तिस का विधि यह है । जिन अरिहंतोंके कल्याणक स्थानोंमे, निर्जीव शुचि पवित्र स्थंडिल—जगामे, वा अरण्यमे, वा अपने घरमे, विधिसें अनशन करना । तहां शुभस्थानमें ग्लानको पर्यंत आराधना करावनी । तथा अवश्यमेव अमुकवेला निकट मरण होवेगा ऐसें ज्ञानके हुए, तिथिवारनक्षत्रचंद्रबलादि न देखना । तहां सघका मीलना करना । गुरु, ग्लान को जैसें सम्यक्त्वारोपणमे तैसेंही नंदि करे । नवरं इतना विशेष है सर्व नदि देववंदन कायोत्सर्गादि पूर्वोक्त विधि 'सलेहणा आराहणा' इस नाम करके करावणा और वैयावृत्य कर कायोत्सर्गानंतर।

"॥ [illegible] आराधनार्थं करेमि [illegible]

स्सग्ग अन्नत्थउससिएणं० जाव—अप्पाण वोसिरामि ॥" कहके कायोत्सर्ग करना कायोत्सर्गमे चार लोगस्स चितवन करना, पारके आराधना स्तुति कहनी ॥ सा यथा ॥

यस्या सान्निध्यतो भव्या, वांछितार्थप्रसाधका श्रीमदाराधना देवी, विघ्नव्रातापहास्तु व ॥ १ ॥ शेष पूर्ववत् ॥

पीछे तिसही पूर्वोक्तविधिसें सम्यक्त्वदंडकका उच्चारण, द्वादशव्रतोंका उच्चारण करावणा । वास देपकायोत्सर्गादि भी, 'सलेखना आराधना' के आलापककरके तैसेही जाणना । प्रदक्षिणा करनी, ग्लानकी शक्तिके अनुसार होवे भी, और नही भी होवे । दंडकादिमें 'जावनियमपज्जुवासामि' के स्थानमे 'जावज्जीवाए' ऐसें कहना । पीछे सर्व जीवो केसाथ अपराधकी क्षामणा करनी । पीछे श्रावक परमेष्ठिमत्रोच्चारपूर्वक गुरुके सन्मुख हाथ जोडके कहे खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमतु मे ॥
मित्ती मे सव्वभूएसु वेर मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ गुरु कहे "॥ खामेह जो खमइ तस्स अत्थी आराहणा जो न खमइ तस्स नत्थि आराहणा ॥" पीछे श्रावक क्षमाश्रमणपूर्वक कहे । "भयव अणुजाणह ।" गुरु कहे "। अणुजाणामि ।" श्रावक परमेष्ठिमत्र पाठपूर्वक कहे ।

"॥ जे मए अणंतेणं भवभ्रमणेणं पुढविकाइआ आउकाइआ तेउकाइआ वाउकाइआ वणस्सइकाइआ एगिंदिआ सुहमा वा, बायरा वा, पज्जत्ता वा, अपज्जत्ता वा, कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण पंचिंदिअट्टेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, घाइआ वा, पीडिआ वा, मणेण वायाए काएण, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ जो मेरे जीवने अनंत भव भमते थके पृथिवी अप तेउ वायु वणस्पतीके एकेंद्रिय जीव, सुक्ष्महो बादरहो पर्यासेहो अपर्यासेहो क्रोधसें, मानसे, मायासें, लोभसें, पंचेंद्रियपणे, रागसें, द्वेषसें, घातित किएहों, पीडित किएहों, तिसका मन वचन काया करके मिछामि दुक्कड हो ॥" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"॥ जे मए अणंतेण भवभ्रमणेण बेइंदिआ वा सुहमा वा बायरा वा० शेष पूर्ववत् ॥' जो मेरे जीवने अनंत भव भमते थके बेरिंद्रिय जीव, सुक्ष्म मबादर क्रोधादिकसे घातित पीडित कीए होय तिनका त्रिकोटी मि०" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"॥ जे मए अणंतेण भवभ्रमणेण तेइंदिया सुहमा वा, बायरा वा,० शेष पूर्ववत् ॥" जो मेनें अनंत भव भमते थके तेरिंद्रि जीव सुक्ष्म वा बादर क्रोधादिकसे घातित वा पीडित किए होय सो त्रिकोटी मि० ॥ फिर परमेष्टिमंत्र पाठपूर्वक कहे

जे मए अणंत भवभमणेण चउरिंदिया जीवा, सुहमा वा बायरावा, शेष पूर्ववत् । जो मेनें अनत भव भमते थके चउरिंदिय जीव, क्रोधादिकसें, घातित पीडित किए होय तिनका त्रिकोटी मिछा मि डुक्कड हो "॥ जे मए अणतेणभवभ्रमणेणं पचिंदिआ देवावा मणुआ वा, नेरइआ वा, तिर क्खजोणिआ वा, जलयरा वा, थवलयरा वा, खयरा वा, सन्निआ वा, असन्निआ वा, सुहमा वा, बायरा वा०शेष पूर्ववत् ॥ जो मेने अनंत भव भमते थके पचेंद्रिय जीव, देव, मनुष्य, नारकी, तिर्यंच, जलच र थलचर, खेचर, संज्ञी,असज्ञी, सुक्ष्म बादर, क्रोधा, दिकसें घातित पीडित किए होय सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृत हो ॥ फिर परमेष्ठिमत्र पाठपूर्वक श्रावक कहे ।

"॥ ज मए अणतेणं भवभ्रमणेण अलिअं भणि अ कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण वा, पचिदिअदेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मणेण वायाए काएण तस्स मिछामि डुक्कड ॥ जो मेंने अन त भव भमते थके असत्य भाषण कियाहो, क्रोधा दिक करके सो त्रिकोटी मिथ्याडुष्कृतहो ॥" फिर परमेष्ठिमत्र पढके कहे ।

"॥ ज मए अणतेण भवभ्रमणेण अदिन्नं गहि अ कोहेण वा, माणेण वा० शेष पूर्ववत् ॥ जो मेनें

अनंत भव भमते थके अदत्त ग्रहण कियाहो क्रोधा दि करके सो त्रिकोटीसे मिथ्याडुष्कृतहो ॥ फिर परमेष्ठिमत्र पढके ।

"॥ ज मए अणंतेण भवभ्रमणेण दिव माणुस्सं तिरिछं मेहुण सेविअ कोहेण वा माणेण वा० शेष पूर्ववत् ॥ जो मेने अनत भव भमते थके देव संबधी, मनुष्य सबधी, तिर्यंच सबधी, क्रोधादि कसें मैथुन सेवन किया हो सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृतहो ॥" फिर परमेष्ठिमत्र पढके ।

"॥ ज मए अणतेण भवभ्रमणेण अठारस्स पावठाणाइ कयाइं 'कोहेण वा, माणेण वा,० शेष पूर्ववत् जो मेने अनत भव भमते थके अठारह पापस्थानक सेवन किए हो सो त्रिकोटी मिथ्याडु ष्कृत हो ॥" फिर परमेष्ठिमत्र पढके ।

"॥ ज मं पुढविकायगयस्स सिलालेठुसक्करास न्हावालुआगेरिअसुवन्नाइमहाधाउरूवं सरीर पाणि वहे पाणिसघट्टणे पाणिपीलणे पाववद्दणे मिछत्तपो सणे ठाणे सलग्ग त निदामि गरिहामि वोसिरामि॥" जो मेराजीव पृथवी कायगत होके शिला पछर काक रे रेती वालुका मट्टी सुवर्णादि सत धातु रूप शरी र वान् होके, प्राणिवध, प्राणि संघात, प्राणि पीलन, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थानमे लगा होय

तिनको निंदताहु गर्हा करताहुं और तिन पापोको त्याग करताहु "

" ॥ ज मे पुढविकायगयस्स सिलालेठुसक्करासन्हा वालुआगेरिअसुवन्नाईमहाधाउरूवं सरीर अरिहत चे इएसु अरिहंतबिंबेसु धम्मठाणेसु जतुरक्खणठाणेसु धम्मो वगर णेसु सलग्ग त अणुमोआमि कल्लाणेण अभिनंदेमि ॥ जो मे पृथ्वीकायगत शिला पथर कांकरे वालुकारेती माटी सुवर्णादि सप्तधातु रूप शरीर हो के अरिहत चैत्यमे अरिहत बिंबमे, धर्म स्थानमे, जीव रक्षण स्थानमे, धर्मोपकरणमे, लगा होउ तो तिनको अनुमोद ताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हु ॥" फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

" ॥ ज मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआ ओस्साहिमहरतणुरूव सरीर पाणिवहे पाणिसघ ट्टणे पाणिपीलणे पाववद्धणे मिछत्तपोसणे ठाणे संल ग्ग त निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ "

जो में अपकायगत पानी करा हिम छार ओस हेम हर तनुरूप शरीर होके प्राणि वध, प्राणि संघात, प्राणि पीलक, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थान में, लगा होउ तो तिनपापको निंदा गर्हा करके त्यागताहु '

" ॥ ज मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआओस्साहिमहरतणुरूवं सरीर अरिहतचेइएसु अरिह

तविंवेसु धम्मठाणेसु जतुरक्खणठाणेसु धम्मोवगर णेसु जिणन्हाणेसु तन्हदाहावहरणेसु संलग्ग तं अणु मोआमि कल्लाणेण अजिनदेमि ॥ जो में उपरोक्त अप्काय होके अर्हत् चैत्यमे, अर्हत् विवमे, धर्म स्थानमें, जीव रक्षाकाममे, धर्मोप करण कार्यमें, स्नात्रानिपे कर्मे, तृपादाह शमनमे, लगा होउ तो तिनकों अनुमोदताहु ॥ ' फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

" ॥ ज मे तेउकायगयस्स अगणिइगालमम्मुर जालाअलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि संघट्टणे पाणिपीडणे पाववद्धणे मिछत्तपोसणे ठाणे संसग्ग तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ " " जो में अग्नी कायगत अग्नि इगाला मुर्मुर ज्वाला धूम्र सहित विद्युत उल्का रूप शरीर होके प्राणिवधमे, प्राणि सघातनमे, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व पोपकके स्थानमें, लगा होउ तिनकों, निदा गर्हासें त्यागताहु "

" ॥ ज मे तेउकायगयस्स अगणिइगालमम्मुर जाला अलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीर सीआवहारे जिणपूआधूवकरणे नेवेज्जपाए दुहाहरणाहारपाए संलग्ग तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अजिनदेमि ॥ " " जो में अग्नीकाय गत अग्नि इगाला मुर्मुर ज्वाला धूम्रसहित विद्युत् उल्का रूप शरीर होके, ठंडी दूर करनेमे, जिनराजके आगे धूप करनेमे, पूजाके उप

योगमे, नैवेद्य काममे, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमे, लगा होउ तिनकां अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनदित होताहुं " फिर परमेष्ठि मंत्र पढके ।

" ॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउऊसासासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसघट्टणे पाववट्टणे मिछत्तपोसणे ठाणे संलग्ग त निदामि गरिहामि वोसिरामि

" जो मे वायु कायगत शुद्धवायु ऊसावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि सघातनमे, पापवर्द्धनमे, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउ तिनकों निदा गर्हा करके त्यागताहु ॥ "

" ॥ ज मे वाउकायगयस्स वाउऊसासासरूवं सरीर पाणिरक्खणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे सलग्ग त अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनदेमि ॥ जो मे वायुकायगत, शुद्धवायु ऊसावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमे, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममे, गर्मीकी शातिके कारणमे, लगाहोउ तिनको अनु मोदताहु, कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हु " फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

" ॥ ज मे वणस्सइकायगयस्स मूलकठ्ठछिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूव सरीर पाणिवहे पाणिसघट्टणे पाणिपीलणे पाववट्टणे मिछत्तपोसणे ठाणे

संलग्ग तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मे वनस्पती कायगत मूल ठाल काष्ट पत्र पुष्प फल वीज रस थक रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोमें, लगा होउं तिनको निंदा गर्हा करके त्याग करता हु"

"॥ ज मे वणस्सइकायगयस्स मूलकठ्ठछिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूवं सरीर तुहाहरणेसु अरिहंतचेइअपूयणेसु धम्मठाणेसु नेवज्जकरणेसु जंतुरक्खणठाणेसु सलग्ग त अणुमोएमि कल्लाणेण अभिनंदेमि॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ट ठाल पत्र पुष्प फल वीज रस थक रूप शरीर होके क्षुधादूर करनेंमे, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैवद्य करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होउ तिनकों अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हु" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठिमज्जा सुक्कचम्मरोमनहनसारूव सरीर पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीडणे पाववड्ढणे मिच्छत्तपोसणे ठाणे सलग्ग तनिदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मे त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नख नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमे, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व

योगमे, नैवेद्य काममे, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमे, लगा होउ तिनकां अनु मोदताहुं कल्या ण कारक जाणके आनदित होताहुं ' फिर परमेष्ठि मंत्र पढके ।

" ॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउऊसासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसघट्टणे पावबट्टणे मिछत्तपो सणे ठाणे संलग्ग तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि

" जो में वायु कायगत शुद्धवायु ऊंचावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि सघातनमे, पापवर्द्धनमे, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनको निंदा गर्हा करके त्यागताहु ॥ "

" ॥ ज मे वाउकायगयस्स वाउऊसासरूवं सरीर पाणिरक्खणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे सलग्ग त अणुमोएमि कल्लाणेण अत्ति नदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु ऊंचावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमे, प्राणि जीवनके कारणमे, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममें, गर्मीकी शातिके कारणमें, लगाहोउ तिन को अनु मोदताहु, कल्याण कारक जाणके आनं दित होता हुं " फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

" ॥ ज मे वणस्सइकायगयस्स मूलकठ्ठछिपत्त पुप्फफलबीअरसनिज्झासरूवं सरीर पाणिवहे पाणि सघट्टणे पाणिपीलणे पावबट्टणे मिछत्तपोसणे ठाणे

संलग्ग तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल छाल काष्ट पत्र पुष्प फल बीज रस थरू रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोमे, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्याग करता हुं"

"॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकंदछल्लिपत्त पुप्फफलबीअरसनिज्जासरूवं सरीरं दुहाहरणेसु अरिहंतचेइअपूयणेसु धम्मठाणेसु नेवज्जकरणेसु जंतुरक्खणठाणेसु संलग्ग तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ट छाल पत्र पुष्प फल बीज रस थरू रूप शरीर होके क्षुधादूर करनेमे, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैवद्य करनेमे, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होउ तिनकों अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हु" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअट्ठिमज्जासुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीर पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीडणे पाववड्ढणे मिच्छत्तपोसणे ठाणे संलग्ग तंनिंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नख नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व

पोषणमे लगा होउं तिनकों निंदापूर्वक त्यागताहुं"

" जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठि मज्जासुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीर अरिहंतचेइ एसु अरिहंतविंबेसु धम्मठाणेसु जंतुरक्खणठाणेसु धम्मोवगरणेसु संलग्ग तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभि नंदेमि ॥ जो मे त्रस काय गत रस रुधीर मांस हाड चरबी शुक्र चर्म रोम नखरूप शरीर होके अर्हच्चैत्यमें, अर्हत् बिंबमे, धर्म स्थानमे, जंतु रक्षा मे, धर्मोपकरणमें लगा होउं तिनको अनु मोदके आनंदित होता हु ॥" फिरपरमेष्टिमंत्र पढके।

"॥ ज मए इह भवे, मणेण वायाए काएणं दुठ चिंतिअ, दुठ भासिअ, दुठं कय, तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मेनें इह भवमें अनंत भव भ्रमणमें मन वचन काया करके दुष्ट विचार कियाहो दुर्वचन बोलेहो, दुष्ट प्रवृत्ति करीहो तिन कों निंदा पूर्वक त्याग करताहु"

"॥ ज मए इह भवे, मणेण वायाए काएणं सुठु चिंतिअ, सुठु भासिअ, सुठु कय, तं अणुमोणुमो एमि कल्लाणेण अभिनंदेमि ॥ जो मेने इह भवमें, अनंत भव भ्रमणमें, मन वचन काया करके श्रेष्ट विचार कियाहो, श्रेष्ट भाषा बोली हो, श्रेष्ट प्रवृत्ति करीहो तिनकी अनु मोदना करताहु, कल्याण कार क जानके आनंदित होताहु ॥"

यहां पहिलां समारोपितसम्यक्त्व व्रतको भी फिर सम्यक्त्व व्रतारोप करना और जिसको पहिलें सम्यक्त्व व्रतारोप न करा होवे, तिसको भी अतकालमे सम्यत्व व्रतारोप करना योग्य है । जिस को पहिलां व्रतारोप करा होवे, तिसको इस अत समयमे एकशोचौवीस अतिचारोंकी आलोचना करा नी । वे अतिचार आवश्यकादि सूत्रोंसें जान लेने ' पीछेआलोचनाविधि करना, सो प्रायश्चित्तविधिसें जानना । पीछे गुरु सर्व सघसहित वासअक्षतादि ग्लानके शिरमे निक्षेप करे ॥

॥ इति अंत्य संस्कारे आराधना विधिः ॥

पीछे ग्लान (रोगी—बीमार) क्षमाश्रमण परमेष्टिमंत्र पाठपूर्वक कहें ॥

आयरियउवझाए, सीसे साहिम्मिए कुलगणे अ ॥
जे मे कया कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सवस्स समणसघस्स, भगवओ अजलि करियसीसे॥
सव खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयपि ॥ २ ॥
सवस्स जीवरासिस्स,भावउ धम्म निहियनियचित्तो॥
सव खमावइत्ता, खमामि सवस्सअहयपि ॥ ३ ॥

" ॥ भयवं ज मए चउगइगएण देवा तिरिआ मणुस्सा नेरइआ चउकसाओवगएण पचिंदिअवसट्टेण इहम्मि भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मणेणं वायाए काएणं दूमिआ सताविआ अजिताइया तस्स

मिछामि डुक्कडं जेहि अहं अजिदूमिओं संताविओ अजिहओ तमहंपि खमामि ॥ "

पीछे गुरु दंडकसहित इन तीनो गाथाका विस्तारसे व्याख्यान करे। पीछे ग्लान, गुरु साधु साध्वी श्रावक श्राविकायोंको प्रत्येकक्षामणा करे । यहां गुरुओंको वस्त्रादि दान, और संघको पूजासत्कार जानना ॥ इत्यतसंस्कारे क्षामणाविधि ॥

अथ मृत्युकालके निकट हुए, ग्लान, पुत्रादिकोसें जिनचैत्योमें महापूजा स्नात्रमहोत्सव ध्वजारोपादि करावे, चैत्यधर्मस्थानादिमे धन लगावे.। पीछे परमेष्ठिमंत्रोच्चारपूर्वक पढे ।

जे मे जाणंतु जिणा, अवराहा जेसु २ ठाणेसु ॥
तेह आलोएमि, उवठिओ सव्वकालपि ॥ १ ॥
उउमठो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संजरइ जीवो ॥
जं च न सुमरामि अहं, मिछामि डुक्कडं तस्स ॥२॥
ज ज मणेण बद्ध, ज ज वायाइ भासिअ किंचि ॥
ज जं काएण कयं, मिछामि दुक्कड तस्स ॥ ३ ॥
खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४ ॥

पीछे तीन नमस्कार पाठपूर्वक कहे ।

" ॥ चत्तारि मंगल, अरिहंता मंगल, सिद्धा मंगल, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो, मंगल । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगु

त्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरण पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्त धम्मं, सरण, पवज्जामि ॥'

यह पाठ तीन वार पढे। पीछे गुरुके वचनसें अष्टादश (१८) पापस्थानकोको वोसरावे यथा

"॥ सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि। सव्व मुसावाय पच्चक्खामि। सव्व अदिन्नादाण प०। सव्व मेहुण प०। सव्व परिग्गहं प०। सव्व राईजोअणं प०। सव्व कोहं प०। सव्व माणं प०। सव्व माय प०। सव्व लोह प०। पिज्जं प०। सव्व दोस कलहं अब्भक्खाण अरईरईपेसुन्न परपरिवाय मिछादसंणसल्ल इच्चेइआइं अठारस पावठाणाइ दुविहं तिविहेण वोसिरामि अपछिमम्मि ऊसासे तिविहं तिविहेण वोसिरामि॥"

पीछे गीतार्थगुरु, श्रीयोगशास्त्रके पाचमे प्रकाशके कथनसें, और कालप्रदीपादिशास्त्रके कथनसें, ग्लानके आयुका क्षय जानके* (जक्तप्रत्याख्यानप्रकीर्णक शास्त्रमें लिखा है कि, यदि कोइ तथ्यज्ञानी कहे, अथवा कोइ सम्यग्दृष्टी देवता कहे कि, अमुकदिन तेरा अवश्य मरण है, तवतो अपना संहननधृतिवल जानके यावत् जीवका अनशन करना. परतु, जो कोइ मरणदिनके निश्चयविना यावत् जीवका अनशन करे, करावे, सो आत्मघाती साधुश्रावक

घाती पचेंद्रियघाती है,) (कालज्ञानके विषयमे कितने क शास्त्रोमे एसे लक्षण लिखेहें कि निरंतर पंदरे दिन सूर्यनाडी प्रात काल वहे तो पनरे दिनका आयु एक मास तक प्रात.काल सूर्यनाडी वहे तोपट् मासायु. पांचदिन अखंड सूर्य नाडी वहे तो ७ मासायु वायु की नाडि पित्तके स्थानमे, पित्तकी नाडी कफके स्थानमे,कफ कठमे आवे तो रोगी बचेगा नही मस्तक गरम हृदय, नाभि, नाशिका हाथ पग ठंडे रहे तो मरण उश्वास गरम व नीश्वास ठंडा वहे तो मर ण अंग कप, गतिभंग, शरीरका वर्णका बदलना, स्वाद वा गंधकों न समजे तो अवश्य करण जाणना, हाथ पावकी घुटी,कपोल,गलेके पासकी नाडी चलनी रुक जाय वा मद पडजाय तो मरण कहना जो अपनी जिव्हाग्र, नासाग्र, भ्रुकुटी, न देखेतो मरण अपनी तीन अंगुली मुखमें न जावे तो मरण भ्रुकुटी न दीखे तो सातदिन, कर्णश्वर न सूने तो पाच दिन कों मरण होना समजना जिव्हा काली पडे वा, मुख लाल हो जाय तो मरण पिसावकी धारामे बिंदु होजाय वा वीर्यपात हो जाय तो सातमे दिन मरण नाडीयोंका मंद पडना, इंद्रियोंके विषयका न समजना,गतीका भंग होना,कंठमें कफका रुकना, नाशिकाके पवनका ठंडा वहना, नाशिका टेडी होना, जमणी भूजा मे उर्द्ध श्वासका वहना यह

तात्कालिक मरणके चिन्ह जाणने ॥ रोगी दर्पणमे अपना मस्तक न देखे तो अवश्य मरे भरणी, मघा, अश्लेषा, मूल, कृत्तिका, जेष्टा, आर्द्रा, शत भिषा, तीनपूर्वा, यह नक्षत्रमे मांदा पडेतो रोगी न बचे जिस्का बलगम चिकना होके गलेसें छुटे नही तो समजो कि अब आयुष्य बिलकुल कम हे जिस्को ठीक आनेके साथ झाडा पेसाब हो जावे तो, जिस्की जबानपर कांटे आ जावे, वा काली पडजावे व अवाज न देशके तो, जानो तीन रोजका जीनाहे जिस्की नेत्रोंकी एकवा दोनोहि पुतली फिरजाय वा नेत्रो सें दिखाइ न देवे तो जानो कि मरना नजीक हे जिस्के हाथ फेरके वीसोनख काले पडजाय, हाथ पेरमें ठंडाइ होके शिरमे गरमी आजाय तो जानो मरना नजीक आया जिस्का उच्चार शुद्ध न हो, नेत्रोमे रोशनी नहो, कानोंसे सुनना, नाकसें खुश बो लेना, बंध हो जाय, अनामीका उची नउपड शके, तो जानोकी अवश्य अपना काल समय नजीक हे यद्यपि यह लक्षणोंसे प्राय मरणका निश्चय होजोता हि हे तथापि कोइ अतिशय ज्ञानी वा देवादिकोके यथातथ्य वचन सिवाय अनागर अणशन उच्चराने कि आज्ञानहीहे इसलिये सागारी अनशन कराना उचितहे) सघ की, ग्लानके संबधियोकी, तथा नगरके राजादिकी अनुमति लेके, अनशनका उच्चार कराना.

ग्लान, शक्रस्तव पढके तीनवार परमेष्ठिमंत्रको पढके गुरुके मुखसें उच्चरे । यथा

" ॥ भवचरिमं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइम अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥" इति सागारानशनम् ॥

अंतर्मुहूर्त्त शेष रहे हूए, निरागार अनशन कराना ॥ यथा ॥

" ॥ भवचरिमं निरागार पच्चक्खामि, सव्व असणं, सव्व पाण, सव्व खाइमं, सव्व साइमं, अन्नाभणाभोगेण, सहसागारेण, अइय निदामि, पडिपुन्न संवरेमि, अणागय पच्चक्खामि, अरिहंतसक्खिय, सिद्धसक्खिय, साहु सक्खिय देवसक्खियं, अप्पसक्खिय, वोसिरामि ॥"

जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्स इमाइ वेलाए ॥ आहारमुवहिदेह, तिविहं तिविहेण वोसिरिअं ॥१॥

तब गुरु "निठारगपारगो होहि" ऐसें कहता हुआ संघसहित वासअक्षतादि ग्लानके सन्मुख क्षेप करे । शांतिके वास्ते 'अठावयमि उसहो' इत्यादि स्तुति पढे और, 'चवण जम्मणभूमी' इत्यादि स्तव पढे । गुरु निरंतर ग्लानके आगे तीनभुवनके चैत्योंका व्याख्यान करे, अनित्यतादि बारा भावनाका व्याख्यान करे, अनादिभवस्थितिका व्याख्यान करे, अनशनके फलका व्याख्यान करे. । और

संघ गीतनृत्यादि उत्सव करे । ग्लान जीवितमरण की इछाको त्यागके समाधिसहित रहे. । पीछे अतर्मुहूर्त्तके आयां, ग्लान "सव्व आहारं, सव्वं देहं, सव्वं उवहि, वोसिरामि" ऐसें कहें । पीछे ग्लान पचपरमेष्टिस्मरणश्रवणयुक्त शरीरको त्यागे ॥

॥ इति अनशनविधि ॥

॥ अग्निसंस्कार विधि. ॥

मरणकालमे ग्लानको कुशकी शय्याऊपर स्थापन करना । " । जन्ममरणे भूमावेव इति व्यवहारः । "

अथ सर्वभावके भोक्ता कर्मके जोगनेवाले चेतनारूप जीवके गये हुए, अजीव पुद्गलरूप तिसके शरीरको सनाथता ख्यापनार्थ, तिसके पुत्रादिकोंके वास्ते, तीर्थसंस्कारविधि कहते हे । सर्व ब्राह्मणको शिखा वर्जके शिर दाढी मूछ मुडन कराना चाहिये, कितनेक क्षत्रियवैश्यको भी कहते हे । तथा शवका सस्कार सर्व स्ववर्ण ज्ञातियोंने करना, अन्यवर्ण ज्ञातिवालोंने तिसका स्पर्श नही करना । पीछे गंध तैलादिसें और भले गंधोदकसें शवको स्नान करना, गंधकुंकुमादिसें विलेपन कराना, मालापहिराना स्वस्वकुलोचित वस्त्राभरणासे विभूषित करना शूद्र जातिकों सर्वथा मुडन नही । पीछे नवीन काष्टकी पगविनाकी कुश सथरी भले वस्त्रसें ढांकी

हुई शय्याके ऊपर, शय्याके उपकरणसहित, शवको स्थापन करना। यहांगृहस्थके मृत्युनक्षत्रके नक्षत्रपूत लेका विधान, कुशपुत्रादिविधि यतिकीतरे जानना न वरं कुशपुत्रक गृहस्थवेषधारी करणे * वर्णानुसार तिसके ऊपर नानाविध वस्त्र सुवर्ण मणि विचित्र वस्त्रका करा प्रासाद (मांडवी) स्थापन करना। पीछे स्वज्ञातीय चारजणे परिजनके साथ स्कंधऊपर उठाए शवको, स्मशानमे ले जावे । तहां उत्तरभागमें शवका शिर रखके चितामे स्थापन करके, पुत्रादि अग्निसें संस्कार करे । अन्न नही खानेवाले बालकोंको भूमिसंस्कार करना । तहां प्रेतप्रतिग्राहियोंको दान देना। पीछे सर्व स्नान करके, अन्यमार्ग होकर अपने घरको आवे तीसरे दिनमें चिताभस्मका, पुत्रादि नदीमे प्रवाह करावे । तिसके हाड तीर्थोंमें स्थापन करे। तिसके अगले दिनमे स्नान करके शोक दूर करे । जिनचैत्योंमे जाके, परिजनसहित जिनबिंबको विना स्पर्शे, चैत्यवंदन करे । पीछे उपाश्रयमे जाके गुरुको नमस्कार करे गुरु जी संसारकी अनित्यता

* रोहिणी, विशाखा, पुनर्वसु, उत्तराषाढा, नी, उत्तरा भाद्रपद, ए ७ नक्षत्रमेंसे कोइभी एक नक्षत्र मरण समय होय तो दर्भके दो पुतले बनाके नीनामीके साथ रखणा जेष्टा, आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा, भरणी त्रमेंसें कोइभी होय तो पुतले न करना मेंसें कोइ नक्षत्र होय तो एक पुतला